श्री उदयप्रभदेव सूरि विरचित

आरंभसिद्धि.

श्री हेमहंस गणि विरचित टीका सहित–

श्री हरिभद्र सूरि विरचित

लग्नशुद्धि.

श्री रत्नशेखर सूरि विरचित

दिनशुद्धि.

ए त्रणे ग्रंथो सर्वोपयोगी जाणी गुर्जर भाषानुवाद
छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक.

पुस्तको प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार.

मांडवी, मुंबइ.

संवत् १९७४. वीर संवत् २४४४. सने १९१८.

rinted by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya Sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 225-231 Mandvi, Sackgalli, Bombay

प्रस्तावना.



आ अपार संसारसागरमां मग्न थयेला प्राणीगणो चोराशी लक्ष योनिरूप तरंगोमां भ्रमण कर्या करे छे. तेमां दैवयोगे मानुष्यादिक सामग्रीरूप फलकादिकनुं अवलंबन मळ्या छतां पण केटलाएक अभव्यत्वादिक दुर्भाग्यने योगे असत्कर्मरूप विपरीत वायुना आकर्षणथी पुनः पुनः अरघट्टघटीना न्याये तेज योनितरंगोमां अनंत काळ सुधी भ्रमण कर्या करे छे, अने केटलाएक भव्यो सद्भाग्यने योगे संयमादिक सत्कर्मरूपी अनुकूळ वायुनी प्रेरणाथी मुक्तिरूपी तीरे पहोंची निर्भय परमानंदने पामे छे. आ मुक्तिज सर्व कोइ पण दर्शनने इष्टतम छे, कारण के अन्य गतित्रय (देव, नारक अने तिर्यंच) सिवाय एक मनुष्यगतिमांज अने तेमां पण कर्मभूमिना मनुष्योने माटेज धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार पुरुषार्थ साधवानी फरज शास्त्रमां कहेली छे अर्थात् ते मनुष्योज चारे पुरुषार्थो साधी शके छे. तेमां मोक्ष पुरुषार्थने इष्टतम गणेलो छे एटले के मोक्ष साध्या पछी बीजुं कांइ पण साधवानुं अवशेष रहेतुं नथी. ते मोक्षने साधवानुं एकांत साधन धर्मज छे, एटले के धर्मनुं मुख्य फळ मोक्षज छे, अने अर्थ तथा काम ए आनुषंगिक फळ छे. आ उपरथी सिद्ध थाय छे के मनुष्य अने तिर्यंचना प्राणित्व जाति अने आहारादिक धर्मो (संज्ञाओ) समान छतां पण मात्र एक धर्म पुरुषार्थने आश्रीनेज मनुष्यभव श्रेष्ठ गणयो छे. कह्युं छे के—

"आहारनिद्राभयमैथुनं च, समानमेतत्पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको नराणां, धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥ १ ॥"

"आहार, निद्रा, भय अने मैथुन आ चार पशुओनी साथे मनुष्योने समान छे. तेमां मनुष्योने एक धर्मज अधिक छे, ते धर्म वडे रहित होय तो ते पशु समानज छे."

आ धर्म भिन्न भिन्न दर्शनोमां अन्यान्य प्रकारे वर्णन कर्यो छे. तेमां सर्वथा प्रकारे धर्मनी शुद्धता जैन दर्शनना जेवी कोइ पण दर्शनमां नथी एम घणी रीते सिद्ध थाय छे, परंतु ते अत्र अप्रस्तुत होवाथी कहेवामां आवतुं नथी.

अहीं धर्म शब्दनो सामान्य अर्थ फरज—कर्तव्य थइ शके छे. ते लौकिक अने लोको-र भेदे करीने बे प्रकारनो छे. तेमां पित्रादिक पुत्रादिकनुं पोषण करे, जन्मोत्सवादिक स्कार करे, विद्याध्ययन करावे, लग्न करे तथा व्यापारादिकमां योजना करे, ए तेमनी रज—धर्म छे. तेज रीते पुत्रादिक पित्रादिकनी सेवा—भक्ति करे, तथा अंते और्ध्वदेहिका-देक क्रिया करे, ते तेमनी फरज—धर्म छे. एज रीते पति—पत्न्यादिक अन्योन्यना हितकार्यमां वर्ते तथा निर्वाहादिकने कारणे कृषि, व्यापार अने राजसेवादिक कार्यमां प्रवर्ते, ए वगेरे धर्म—फरज कहेवाय छे. आ सर्वनो लौकिक धर्ममां समावेश थाय छे अने केवळ

---

१ उपरनी युक्तिथी अर्थ, काम अने मोक्षनो धर्ममांज समावेश थाय छे.

आत्माना मोक्ष पर्यन्तना पारलौकिक हितने माटेज नित्यकर्म, देवपूजा, गुरुशुश्रूषा, दान, शीळ, तप, भाव, संयम (देशविरति अने सर्वविरति) विगेरे सत्क्रियामांज जे प्रवर्तवु ते सर्व लोकोत्तर धर्म कहेवाय छे आ बन्ने प्रकारना धर्ममा जेम बाह्य सामग्री एटले पुरुषसपद्, धन, नीरोगता, आत्मवीर्य, सद्बुद्धि अने चित्तोत्साह विगेरेनी आवश्यकता छे तेज रीते सन्मुहूर्त्तरूप आभ्यंतर-दैवी सामग्रीनी पण अत्यंत आवश्यकता छे. लौकिक अथवा लोकोत्तर कोइ पण शुभ कार्य करती वखते कुतूहळी क्षुद्र देवोनो अनेक प्रकारे उपद्रव संभवे छे. कह्युं छे के—

"श्रेयासि बहुविघ्नानि, भवन्ति महतामपि ।
अश्रेयसि प्रवृत्ताना, क्वापि यान्ति विनायकाः ॥ १ ॥"

"महापुरुषोने पण कल्याणकारी कार्यो घणां विघ्नवाळां थाय छे, अने अशुभ कार्यमां प्रवर्तेला पुरुषोना विघ्नो कोइ पण ठेकाणे चाल्यां जाय छे."

अयोग्य काळे करेला विवाहादिक तथा दीक्षा-प्रतिष्ठादिक कार्यो उत्तर काळे उलटा अशुभ फळने आपनारां दृष्टिपथमा आवे छे अयोग्य काळे करेला प्रयाण, वेपार विगेरेना विपरीत परिणामो नीपजे छे. ए विगेरेने दूर करवा माटे दैवी सामग्री सिवाय बीजी कोइ पण सामग्री समर्थ नथी एटलुंज नहीं, परंतु परवशताने लीधे थयेलां जन्म, व्याधि अने मरणादिक पण अयोग्य काळे थयां होय तो ते पण शांति-पुष्टि आदि दैवी सामग्रीथी निर्दोष थाय छे आवा अनेक हेतुने लइने दरेक शुभ कार्यमां शुभ मुहूर्त्तनी जरुर छे, अने तेने प्रतिपादन करनार ज्योतिष् शास्त्र छे

अन्य शास्त्रोनी जेम आ ज्योतिष् शास्त्रनो विषय पण अत्यंत सूक्ष्म अने उत्सर्ग-अपवादादिक वडे अति गहन तथा सुविस्तृत छे. जेम अध्यात्मादिकनुं रहस्य समजवुं अति कठिन छे तेम आ ज्योतिषनु तत्त्व पण अति गहन छे. अन्य शास्त्रोनी जेम ज्योतिषनुं तत्त्व पण अति गहन छे. अन्य शास्त्रोनी जेम आ ज्योतिष् शास्त्र पण अनेक दर्शनीओए भिन्न भिन्न प्रकारे स्वस्वशास्त्रीय भाषामा रचेलुं छे. जो के दर्शननी भिन्नता लइने प्राये आ शास्त्रना विषयमा भिन्नता नथी, तोपण गणित सिवायना सर्व विषयोमा एकज दर्शनना ग्रंथकार आचार्योना पण मतांतरो छे ते सर्व विषयोनुं सूक्ष्म ज्ञान जो होय तो ते अमुक अपेक्षाए केवळी जेटलुं ज्ञान धरावे छे तेम सामान्य मनुष्यने प्रतीत थाय छे, कारण के अष्टांग निमित्तने जाणनार गोशाळक श्रीमहावीर स्वामीने समान बनी पोताना सेवकोमा तीर्थंकर जेटलो पूज्य थयो हतो. वराहमिहिर के जें

१ आ शास्त्र केवळ काळने प्रतिपादन करनार होवाथी सर्व कार्यमा काळनेज हेतुरूप गणे छे करीने द्रव्य, क्षेत्रादिकनो निषेध थइ शकतो नथी.

प्रथम जैनी दीक्षा अंगीकार करीने अनेक शास्त्रोमां प्रवीणता मेळवी हती ते पोताना भाइ भद्रबाहुने गुरुए आचार्यपद आपेलुं जोइने ईर्ष्याने लीधे चारित्रनो त्याग करी प्रतिष्ठानपुरना जितशत्रु राजानो पूज्य पुरोहित थयो हतो. एकदा वराहमिहिरे अमुक ठेकाणे कुंडाळुं करीने राजाने कह्युं के आ कुंडाळामां आकाशमांथी अमुक वखते बावन पळनो मोटो मत्स्य पडशे. ते वखते भद्रबाहु स्वामीए कुंडाळानी बहार पडवानुं कह्युं अने तोलमां तेथी ओछो पडवानुं कह्युं. तेज प्रमाणे कुंडाळा बहारज अने ओछा तोलवाळो पड्यो. त्यारपछी एकदा राजानी राणीए पुत्र प्रसव्यो. तेनी जन्मकुंडळी करीने वराह-मिहिरे कुंवरनुं सो वर्षनुं आयुष्य कह्युं, भद्रबाहु स्वामीए बिलाडी थकी सातमे दिवसे मरण थशे एम कह्युं. ते सांभळी राजाए गाममांथी सर्वे बिलाडीओने बहार कढावी अने घणी चोकसीथी मक्षिकानो पण प्रवेश न थइ शके तेवा एकांत महेलमां ते पुत्रने राख्यो. दैवयोगे सातमे दिवसे बारणाना उंबरामां बेठेली धात्रीना उत्संगमां रहेला पुत्रना माथा पर द्वारनी अर्गला पडी, तेथी तेनुं मरण नीपज्युं. ते जाणी राजाने अत्यंत शोक थयो. पछी तेणे गुरु पासे जइने पूछ्युं के आपना कहेवा प्रमाणे पुत्रनुं सातमे दिवसे मरण थयुं, परंतु ते मरण बिलाडीथी थयुं नहीं, तेनुं शुं कारण ? गुरुए कह्युं के द्वारनी अर्गला उपर बिलाडीनुं चित्र छे, तेमज अर्गलाने बिलाडी कहे छे, तेथी ते बिलाडीथीज मरण थयुं छे. ते सांभळी राजाए ते वातनी खात्री करीने गुरुना ज्ञाननी प्रशंसा करी. आ प्रमाणे जैन ज्योतिषमां रहेला अपूर्व ज्ञाननी यथार्थता शास्त्रप्रसिद्ध छे.

आवा विस्तार ज्ञानवाळा ज्योतिष् शास्त्रमां आखी खगोळ विद्यानो पण समावेश थाय छे. श्रीसूर्यप्रज्ञप्ति अने चंद्रप्रज्ञप्ति विगेरे गणित शास्त्रने आधारे वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, रात्रि दिवस विगेरे काळक्रनो विभाग नियमित रीते जाणी शकाय छे. तेज रीते तिथि तथा मासनी वृद्धि अने क्षय, ग्रहो, नक्षत्रो, ताराओ विगेरेनो उदय, अस्त, वक्र गति अने ऋजु गति, तथा उल्कापातादिक उत्पातो आगळथी जाणी शकाय छे, अने फळप्रतिपादक ग्रंथोने आधारे पृथ्वी पर थता सुकाळ, दुष्काळ विगेरे शुभाशुभ फळ पण जाणी शकाय छे. एक मनुष्यना जन्मादिक काळने आश्रीने तेनी आखी जींदगी

---

१ वराहमिहिरे ज्योतिषना विषय उपर वाराहीसंहिता रची छे, ते लोकमां प्रसिद्ध छे. आ भद्रबाहु स्वामी चौद पूर्वधर होवाथी श्रुतकेवळी हता अने तेथी करीने केवळीना जेटली थन करवानी शक्ति हती. तेमणे आचारांग निर्युक्ति, सूत्रकृतांग निर्युक्ति, बृहत्कल्प मूळ तथा तेनी र्युक्ति, व्यवहार मूळ, आवश्यक निर्युक्ति, दशवैकालिक निर्युक्ति, उत्तराध्ययन निर्युक्ति, पिंड र्युक्ति, ओघ निर्युक्ति, दशाश्रुतस्कंध मूल तथा तेनी निर्युक्ति, संसक्त निर्युक्ति, उपसर्गहर स्तोत्र तथा योतिषमां भद्रबाहु संहिता अने द्वादश भाव जन्मप्रदीप विगेरे ग्रंथो रच्या छे.

संबंधी दरेक शुभाशुभ फळ जाणी शकाय छे एटलुंज नहीं, परंतु तेना आभ्यंतर गुण दोषो अने मनमां करेला गुप्त विचारो तथा पूर्व अने पश्चात् भवनुं पण ज्ञान थइ शके छे. अमुक मनुष्यने आश्रीने अमुक मास, तिथि, वार, नक्षत्र विगेरेना संयोगे कार्य करवाथी अमुक शुभाशुभ फळ प्राप्त थवानुं जाणी शकाय छे विगेरे विगेरे आ ज्योतिष् शास्त्रमां अत्यंत सूक्ष्म ज्ञान समायेलुं छे, परतु आवा पडता काळमां तेवा ज्ञानना संपूर्ण ज्ञाता अत्यंत दुर्लभ छे, तोपण तेना उंडावत्ता ज्ञानवाळा तरतमताए करीने साम्प्रत काळे पण जोवामा आवे छे ज्योतिष् शास्त्रने आधारे कोइ पण निमित्त कहेलुं होय ते करता जो ते विपरीतपणे परिणाम पामेलुं जोवामां आवे तो तेमां शास्त्रनो के अध्यापक गुरुनो दोष होतो नथी, परंतु ज्ञाताने तेनुं रहस्य यथार्थ समजवामां आव्युं न होवाथी तेनी विपरीत बुद्धिनोज दोष होय छे जेमके–कोइ गुरुना बे शिष्यो समान ज्ञानवाळा हता, तेओ कार्यप्रसंगे ग्रामांतर गया. ग्राम बहार नदीतीरे तेओ विश्रांतिने माटे बेठा ते वखते गामनी एक वृद्धा स्त्री नदीमांथी पाणी भरी पाणीनो घडो माथे लइ चाली. तेणीए आ बन्ने ब्राह्मणोने विद्वान् जाणीने पूछ्युं के 'हे पंडितो ! मारो पुत्र परदेश गयो छे तेना काइ पण खबर नथी. तो ते क्यारे आवशे ?' आवो प्रश्न पूछती वेळाएज ते वृद्धाना मस्तक परथी पाणीनो घडो पडी गयो अने तेना कटका थइ गया, तथा तेमांनुं पाणी नदीमा मळी गयुं ते जोइने एके कह्यु के 'हे वृद्धा ! तमारो पुत्र मृत्यु पाम्यो छे' ते साभळीने बीजाए कह्युं के–'हे बधु ! एम न बोल तेनो पुत्र अत्यारे घेर आव्यो छे हे वृद्धा ! तमे शोक करशो नहीं घेर जाओ तमारो पुत्र घेर आव्यो छे' ते साभळीने वृद्धा उतावळी उतावळी घेर गइ अने पुत्रने जोयो. आ बन्ने विद्यार्थीओ एकज गुरु पासे सरखा ग्रंथो भण्या हता छता पहेलाए विनयहीन होवाथी तेनुं रहस्य जाण्युं नहोतु अने बीजाए विनयवत होवाथी जाण्युं हतुं, तेथी तेनुं ज्ञान यथार्थ हतु. अहीं विरुद्ध फळ कहेवानो हेतु ए छे जे पहेलाए घडो फुटी जवाथी पुत्रनुं पण मरण कल्प्यु अने बीजाए घडो पोतानी उत्पत्ति (माटी)मां मळी जवाथी तथा पाणी साथे पाणी मळी जवाथी पुत्रने पोतानी उत्पत्तिस्थाने आवेलो कल्प्यो.

आ उपरथी एम सिद्ध थाय छे के शास्त्र तो मात्र दिग्दर्शनज करावे छे, अने पछी ग्राहकनी बुद्धिना परिणाम प्रमाणेज ते परिणमे छे, तेथी करीनेज आगममा कह्युं छे के–सम्यक् शास्त्र पण मिथ्यादृष्टिने विपरीत परिणमे छे, अने मिथ्या शास्त्र पण सम्यक् दृष्टिने सम्यक् परिणमे छे तेज रीते आ ज्योतिष् शास्त्रना विषयमा पण समजवुं जे ज्योतिषना ग्रंथो जेवा के–अर्थकाण्ड, अष्टांगहृदय संहिता, आयज्ञानतिलक वृत्ति, आय प्रश्न, आय सद्भाव, गणिततिलक वृत्ति, चन्द्रराज, चक्रविवरण, जन्मप्र... ...चार, जन्मपत्री विचार, जन्मपत्री पद्धति, जन्माम्भोधि, जातकाभिधान, ज...

दीपिका, ज्योतिष्चक्र विचार, ज्योतिषसार संग्रह, ताजिकसार वृत्ति, तिथ्यादि सारणी, द्वादश भाव जन्म प्रदीप, नरपति जयचर्या विगेरे विगेरे एटला बधा छे के मात्र प्रसिद्ध ग्रंथोनां पण नामो अत्रे लखतां अति विस्तार थइ जाय. आ विषयना ग्रंथो बीजा विषयोना ग्रंथोनी अपेक्षाए बहु ओछा छपाया छे एम कहीए तो ते कांइ अतिशयोक्ति भरेलुं नथी, माटे तेवा ग्रंथोनी खास जरुर जणायाथी हालमां आ आरंभसिद्धि, लग्नशुद्धि अने दिनशुद्धि नामना त्रण ग्रंथो भाषांतर सहित छपावीने प्रसिद्ध कर्या छे.

आ आरंभसिद्धि नामना मूळ ग्रंथना कर्ता नागेंद्र गच्छना श्रीउदयप्रभदेव सूरि छे. दरेक शुभाशुभ प्रारंभोनी सिद्धि करनार होवाथी आ ग्रंथनुं "आरंभसिद्धि" ए अन्वर्थ नाम छे. आ नाम उपरथीज तेनो विषय समजी शकाय छे के आ ग्रंथ केवळ मुहूर्त्तनाज विषयवाळो छे. कोइ पण कार्यना मुहूर्त्तनो निश्चय करवा माटे अनेक ग्रंथोनी अपेक्षा पडती होवाथी तेना विद्वानोने अति प्रयास थतो जोइ पूज्यपाद श्रीउदयप्रभदेव सूरिए मुहूर्त्त अने तेने लगता योग, करण, गणित, फळ विगेरे सर्व आपेक्षिक विषयोनो संग्रह आ ग्रंथमां करेलो छे, एम टीकाकारे पण प्रारंभे पीठिकामां स्पष्ट जणाव्युं छे, तेथी आ ग्रंथनी पहेलां मुहूर्त्त संबंधी आवो कोइ पण ग्रंथ हतो नहीं एम सिद्ध थाय छे.

ग्रंथकार श्रीउदयप्रभदेव सूरिए ग्रंथमां पोतानो सत्तासमय, जन्मभूमि, मातापिता, दीक्षागुरु विगेरे कांइ पण हकीकत जणावी नथी. तेमज पोते बीजा कया कया ग्रंथो रच्या छे ? ए विगेरे कांइ पण लख्युं नथी, परंतु ग्रंथना प्रारंभमां टीकाकारे पीठिकामां जणाव्युं छे के "(श्रीवस्तुपाळ नामना) मंत्रीश्वरे श्रीनागेंद्र गच्छना गुरु सत्ज्ञान सत्क्रिया अने सद्गुणोए करीने शोभता एवा श्रीमान् उदयप्रभदेव सूरिने आचार्यपद पर स्थापन कर्या हता." आ लेखने अनुसारे शोध करतां आ सूरीश्वर संबंधी केटलीक हकीकत अन्यान्य ग्रंथोमांथी मळी आवी छे. तेमां श्रीवस्तुपाळचरित्र प्रस्ताव सातमामां—

ततोऽनेकपुरग्राम–वास्तव्यार्हतसन्ततिम् ।
आहूय बहुमानेन, श्रीधवलक्कपत्तने ॥ ३६० ॥
श्रीनागेन्द्रगणाधीशै–र्विधा मंत्री क्षमाभृताम् ।
प्रत्यक्षं कारयामास, सविशेषमहोत्सवम् ॥ ३६१ ॥
उदयप्रभसूरीणां, पूरिताङ्गिमनोरथम् ।
श्रीआचार्यपदारोप–प्रतिष्ठां विष्टपाद्भुताम् ॥ ३६२ ॥ त्रिभिर्विशेषकम् ॥
शतानि त्रीणि सूरीणां, तदुत्सवदिदृक्षया ।
समं स्वकीयसंघेन, तदापुर्मंत्रिवेश्मनि ॥ ३६३ ॥
तेषां सपरिवाराणां, संघपूजामहोत्सवम् ।
विधिवद्विदधे मंत्री, विशुद्धसिचयादिभिः ॥ ३६४ ॥ इत्यादि

"त्यारपछी वस्तुपाळ मंत्रीए अनेक पुर अने ग्रामना रहेवाशी श्रावकोना समूहने घणा मानपूर्वक श्रीधवलक पत्तनमां बोलावीने श्रीनागेंद्र गच्छना सूरीश्वर पासे विशेष प्रकारना महोत्सवपूर्वक बन्ने प्रकारे क्षमाने धारण करनार श्रीउदयप्रभ सूरिनी जगतमां अद्भुत एवी आचार्यपदनी प्रतिष्ठा करावी. ते वखते (दान वडे) सर्व प्राणीओना मनोरथ तेणे (मंत्रीए) पूर्ण कर्या. ते महोत्सव जोवानी इच्छाथी त्रणसो आचार्यो पोतपोताना गच्छ अने संघ सहित मंत्रीना आमंत्रणथी त्यां पधार्या हता. परिवार सहित ते सर्व आचार्योना समूहनी पूजानो महोत्सव मंत्रीए शुद्ध वस्त्रादिक वडे विधिपूर्वक कर्यो हतो." इत्यादि.

आ उदयप्रभ सूरिए धर्माभ्युदय नामनुं महाकाव्य, सुकृतकीर्तिकल्लोलिनी तथा उपदेशमाळा उपर कर्णिका नामनी वृत्ति (टीका) रची छे. ते विषे कर्णिका वृत्तिनी प्रशस्तिमां आ प्रमाणे लख्युं छे.—

"श्रीमद्विजयसेनस्य, सौमनस्यं न मन्यते ? ।
यद्वासिता धृताः कैर्न, गुणाः शिष्याश्च मूर्धसु ॥ १२ ॥
शिष्यस्तस्य च लक्षणक्षणचणः साहित्य सौहित्यवा-
नुद्यत्तार्किकतर्ककर्कशमतिः सिद्धान्तशुद्धान्तरः ।
श्रीधर्माभ्युदये कविः प्रविलसद्दुर्वादिगोत्रे पवि-
स्तामेतामुदयप्रभोऽस्य गणभृद्वृत्तिं व्यधात्कर्णिकाम् ॥ १३ ॥
सेयं पुरे धवलके तिलके धरित्र्या,
मंत्रीशपुण्यवशतो वसतौ वसद्भिः ।
वर्षे निध्यङ्कनयनेन्दुमिते (१२९९) वितेने,
श्लोकैः शिवोदधिशिवैः प्रमितेऽद्भुतश्रीः ॥ २१ ॥"

"श्रीमान् विजयसेन गुरुना चित्तनी प्रसन्नताने कोण नथी मानता ? ते गुरुथी वासित थयेला तेना गुणो अने शिष्यो कोणे मस्तक पर धारण नथी कर्या ? ते गुरुना शिष्य लक्षण शास्त्रमां निपुण, साहित्यना विषयमां विद्वान्, विकास पामता तार्किक लोकोना तर्कनो पराजय करवामां कर्कश मतिवाळा, सिद्धांतना ज्ञानथी शुद्ध हृदयवाळा, श्रीधर्माभ्युदय काव्यना कवि (रचनार) अने विकास पामता दुष्ट वादीओरूपी पर्वतने भेदवामां वज्र समान श्रीउदयप्रभ सूरिए आ उपदेशमाळानी कर्णिका नामनी वृत्ति करी छे

१ आ काव्यमां वस्तुपाळ मंत्रीनुं चरित्र आवे छे २ कर्णिका वृत्तिनी प्रत मळी शकी नथी, परंतु आ उदयप्रभ सूरिना शिष्य श्रीमल्लिषेण सूरिए रचेली स्याद्वादमंजरी (टीका)नी प्रस्तावनामांथी आ श्लोको मळी आव्या छे

पृथ्वीरूप स्त्रीना तिलक समान धवलकपुरमां मंत्रीश (वस्तुपाळ)ना पुण्यवशथी तेना उपाश्रयमां वसता आ सूरिए संवत् १२एए ना वर्षे ११४११ श्लोक प्रमित आ कर्णिका नामनी वृत्ति रची छे."

आ उपरथी आ ग्रंथकार सूरि श्रीविजयसेन सूरिना शिष्य हता तथा तेमनो सत्तासमय संवत् १२एए मां हतो एम सिद्ध थाय छे. श्रीविजयसेन सूरिना गुरु कलिकाळ गौतम श्रीहरिभद्र सूरि, तेमना गुरु श्रीआनंद सूरि अने अमरचंद्र सूरि हता, तेमना गुरु श्रीशांति सूरि अने तेमना गुरु श्रीमहेंद्रप्रभ सूरि हता.

आ ग्रंथमां पांच विमर्शो पाडेला छे अने तेनुं सर्व मळीने एकंदर अनुष्टुप्नी गणत्रीए ४६० श्लोक पूरतुं प्रमाण छे. श्लोको नाना मोटा छंद तथा वृत्तमां घणा रसिक अने उच्च संस्कृत भाषामां बनावेला होवाथी विद्वानोना हृदयने रंजन करे तेवा छे. आ पांचे विमर्शमां थइने अगीयार द्वार पाडेलां छे. तेमां पहेला विमर्शमां तिथिद्वार १, वारद्वार २, नक्षत्रद्वार ३ अने योगद्वार ४, ए चार द्वार छे. बीजा विमर्शमां राशिद्वार ५ अने गोचरद्वार ६, ए बे द्वार कहेलां छे. त्रीजा विमर्शमां कार्यद्वार ७ एकज कहेलुं छे चोथा विमर्शमां गमद्वार ८ तथा वास्तुद्वार ए ए बे द्वार कहेलां छे, अने पांचमा विमर्शमां विलग्नद्वार १० तथा मिश्रद्वार ११ ए बे द्वार कहेलां छे. ते ते द्वारोमां ते ;

---

१ जैन धर्मना प्राचीन इतिहासमां पृष्ठ २१ मां उदयप्रभ सूरिनो सत्तासमय १२२० थी १२८७ लख्यो छे, परंतु कर्णिकानी प्रशस्तिमां लखेलो संवत् १२९९ छे. ते वधारे मानवा योग्य छे तेमज जैन ग्रंथावळीमां पण पृष्ठ १७१ मां कर्णिका रचवानो काळ संवत् १२९९ ज लखेलो छे २ आ हरिभद्र सूरि सिवाय बीजा त्रण एज नामना सूरि थइ गया छे. तेमां एक याकिनीमहत्तरासूनुना नामथी महान् प्रसिद्ध छे, तथा बीजा बे बृहद्गच्छमां थयेला छे. आ हकीकत हरि० सूरि चरित्र (छापेल)ना पहेला पृष्ठमां फुटनोटमां सविस्तर आपेली छे. ३ आ वंशावळी जैन धर्मना प्राचीन इतिहासमां आपेली छे (पृष्ठ २१) तेमज उपर्युक्त हरिभद्र सूरि चरित्र उपरथी पण खात्री थइ शके तेम छे. ४ आ सर्व उपर लखेली हकीकत तथा फुटनोटो उपरथी आ ग्रंथकारनो सर्व हेवाल सिद्ध थाय छे, परंतु जैन ग्रंथावळीमां हकीकत संगत थती नथी. तेमां पृष्ठ ७६ मां फुटनोटमां उदयप्रभ सूरि नामना बे आचार्य थयानुं लखे छे. तेमां आ ग्रंथकारने पहेला कह्या छे, ते संबंधी लखेली हकीकत मळती आवे छे, परंतु बीजा उदयप्रभ सूरि रविप्रभ सूरिना शिष्य अने मणि पेण सूरि के जे स्याद्वादमंजरीना टीकाकार हता तेना गुरु हता एम जे लख्युं छे ते संगत नथी. तेमज उदयप्रभ सूरिना रचेला घणा ग्रंथो जैन ग्रंथावळीमां लख्या छे, परंतु तेमांथी कया उदयप्रभ सूरिए कया कया ग्रंथो रच्या ? तथा बीजा उदयप्रभ सूरिनो सत्ताकाळ कयो हतो ? ए विगेरे नो पण चोकस थइ शकतुं नथी.

पयोने विस्तारथी संपूर्ण रीते वर्णव्या छे. आ बाबत अनुक्रमणिकामां सविस्तर आपेली वाथी अत्रे लखवी उचित धारी नथी

ग्रंथनी प्रांते टीकाकारे पोतानी प्रशस्तिने पहवामे "ग्रंथकारनो अभिप्राय" एवा ामथी मोटा वृत्तमां तेर श्लोको आप्या छे. ते सर्व श्लोको आ ग्रंथना जिज्ञासु सर्व नुष्ये प्रथम अवश्य वाचीने ग्रथकारना अभिप्रायने आज्ञारूपे मानवो एम अमो खास लामण करीए छीए, कारण के वृत्तिकारे वृत्तिरूप ग्रंथ बनाव्या पछी अत्यंत सावद्य ार्यथी भीरुपणाने लीधे आ ग्रंथने जळशरण करवो उचित धार्यो हतो, परंतु भिन्न भिन्न ग्रंथोमांथी उद्धृत वृत्तिए एकत्र करेला दुष्प्राप्य विषयोनो नाश करवो ते पण योग्य नहीं लागवाथी मात्र पोताना गच्छमा गुप्त रीते राखवाना हेतुथी आ ग्रंथने जाळवी राखवामा आव्यो छे, परतु सर्वविरतिने धारण करनार साधुए कोइ पण जातनां (चैत्यादिकना) मुहूर्तो आपवाथी तेना व्रतनी हानि थाय छे, तेथी मुहूर्त्त कहेनार साधुने अने ग्रंथकारने महा पापना भागी कह्या छे अहीं शंका करी छे के—ज्यारे चैत्या- दिकना मुहूर्तो साधुए आपवा न जोइए तो भिन्न भिन्न ग्रामोमा वसता श्रावकोने ण्यनी वृद्धि शी रीते थाय अने साधुने पण पुण्यनो लाभ शी रीते थाय? आ शंकाना मां ग्रंथकारे कह्युं छे के—चैत्यादिक करावनामा यतिओने अनुमोदना करवाथीज ण्य थाय छे, परंतु गृहस्थीओने विवाहादिकनी जेम चैत्यादिकना मुहूर्तो पण जोशीज ापे छे, तथा ज्योतिषना ज्ञानवाळा मुनिओ तो मात्र जोशीओने समग्र संवाद बतावे अर्थात् मुहूर्त्तोमा दोष होय तो ते सूचना आपे छे आ रीते सर्व सुस्थ थइ शके छे म छता कोइ मूढ भारे कर्मी आ शास्त्रने आधारे मुहूर्त्त आपशे तो आरंभना समूहथी पन्न थतु पाप तेनेज हो, अने मने ग्रंथकारने ते पापनो लेश पण न हो एम शुद्ध त:करणना उद्गारो ग्रंथकारे प्रगट कर्या छे आ उपरथी ग्रंथकार सावद्य कार्यथी टलावधा भीरु छे ते स्पष्ट जणाइ आवे छे, माटे ग्रंथकारना अभिप्रायने आज्ञारूप ानवा दरेकने अमो प्रार्थना करीए छीए

१आ ग्रंथ उपर श्रीहेमहंस गणिए सुधीशृंगार नामनी वृत्ति (टीका) संवत् १ र रची छे तेनु अनुष्टुप्नी गणत्रीए ५०५३ श्लोकनुं प्रमाण छे आ टीका- नो स्थितिकाळ तथा गुर्वावळी प्रशस्तिना अंतमा लखेल छे त्यांथीज जाण वाना विस्तृत थवाना कारणथी अहीं लखेल नथी आ टीकाकारे संवत् १५ करणना विषयवाळो न्यायसंग्रह नामनो ग्रंथ, तेना पर न्यायार्थमंजूषा न ी वृत्ति (टीका) तथा तेना पर न्यास पण रच्यो छे. ते विषे तेनी प्रशस्तिना आ प्रमाणे छे —

चिन्मयानां मयाऽमीषां, ऋषीणां सुप्रसादतः ।
हेमहंसाभिधानेन, वाचनाचार्यताजुषा ॥ १३ ॥
श्रीमद्विक्रमवत्सरे तिथितिथौ (१५१५) शुक्लद्वितीयातिथौ,
पूर्वाह्ने मृगलाञ्छने मृगशिरः शृङ्गाग्रशृङ्गारिणि ।
शुक्रस्याहनि शुक्रमासि नगरे श्रीसागरेऽहम्मदा-
वादे निर्मितपूर्तिरेष जयताद्ग्रन्थः सुधीवल्लभः ॥ १४ ॥

"ज्ञानवंत आ (चारित्ररत्न गणि नामना विद्यागुरु)ना सुप्रसादथी वाचनाचार्यनी पदवीने पामेला में हेमहंस गणिए विक्रम संवत् १५१५ ना जेठ सुदि द्वितीया शुक्रवारने दिवसे पूर्वाह्न काळे मृगशिर नक्षत्रना शृंगना अग्र भागने चंद्र शोभावतो हतो त्यारे (मृगशिर नक्षत्रमां चंद्र हतो त्यारे) लक्ष्मीना सागर समान अमदावाद नगरमां पंडितोने प्रिय एवो आ ग्रंथ समाप्तिने पाम्यो, ते जयवंत वर्तो."

तेमज आ टीकाकारे संवत् १५१० वर्षे षडावश्यकनो बाळावबोध पण कर्यो छे. ते बाळावबोधने अंते आ प्रमाणे लख्युं छे.—

"इति श्रीतपागच्छनायकसकलसुविहितपुरन्दरश्रीसोमसुन्दरसूरि–श्रीमुनिसुन्दरसूरि–श्रीजयचन्द्रसूरिपदकमलसेविना शिष्यपण्डितहेमहंसगणिना श्राद्धवराभ्यर्थनया कृतोऽयं षडावश्यकबालावबोध आचन्द्रार्कं नन्द्यात् । संवत् १५१० वर्षे" ॥

आ सिवाय बीजा ग्रंथो आ पूज्य गणिए रच्या छे के नहीं ? ते कही शकातुं नथी. षडावश्यकनो बाळावबोध जोतां तेमनुं आगमज्ञान, न्यायसंग्रह जोतां तेमनुं व्याकरण-ज्ञान, तेनी न्यायार्थमंजूषा टीका जोतां न्यायशास्त्रनुं ज्ञान अने आ आरंभसिद्धिनी टीका जोतां तेमनुं ज्योतिषनुं ज्ञान अद्वितीयज मालम पडे छे.

आ टीकामां टीकाकार महाराजाए प्राये मूळ श्लोकना दरेक पदनो सविस्तर अने सरळ अर्थ करेलो छे. ते उपरांत मूळ कारना वचनने सुदृढ करवा माटे स्व–पर दर्शनना ग्रंथो तथा ग्रंथकारोनां वचनोनी साक्षी आपी छे. केटलेक स्थळे ग्रन्थांतरोनां गूढ वचनोनी पण सविस्तर टीका करी छे. केटलेक स्थळे मूळकारे नहीं कहेला मतांतर तथा अपवादो पण वर्णव्या छे. केटलेक ठेकाणे मूळ कारना विषयने लगता विषयांतरो पण विस्तार-पूर्वक वर्णव्या छे. तथा केटलेक स्थाने प्रसंगानुप्रसंगने लइने नवीन विषयोनां मुहूर्त्तो पण कह्यां छे. आ सर्व कार्योनां मुहूर्त्तोनी साथे प्राये तेनां शुभाशुभ फळो पण बताव्यां छे. तेमज केटलेक स्थळे मूळना अने ग्रंथांतरना विषयो स्पष्ट समजाववा माटे यंत्रो पण आपेलां छे. आ सर्व हकीकत ग्रंथांतरोनां वचनो आपीनेज सिद्ध करी छे. एकंदर आ आखा ग्रंथमां लगभग सीतेर ग्रंथो अने ग्रंथकारोनां वचनो आप्यां छे. तेनां नाम नीचे प्रमाणे.—

श्रीपति
लह्ल
रत्नमाळा
यतिवह्लभ
नारचंद्र
पूर्णचन्द्र
दैवज्ञवह्लभ
दिनशुद्धि
व्यवहारप्रकाश
नरपतिजयचर्या
हर्षप्रकाश
पा(लो)कश्रीग्रंथ
व्यवहारसार
सारंग
केशवार्क
विवाहवृंदावन
त्रिविक्रम
लघुजातक
वृहज्जातक
ताजिक
प्रश्नशतक वृत्ति
यवनेश्वर

लग्नशुद्धि
होरामकरंद
भुवनदीपक
त्रैलोक्यप्रकाश
मुहूर्त्तसार
सप्तर्पि
वाराहसंहिता
ज्योतिपसार
रत्नमालाभाष्य
नक्षत्रसमुच्चय
रुद्रयामल
प्रश्नप्रकाश (कर)
शौनक
गदाधर
महादेव
भोज
हरि
दुर्गसिंह
कल्पाख्य छेद ग्रंथ वृत्ति
गौतम
यवन
स्थानाग वृत्ति

चंद्रप्रज्ञप्ति वृत्ति
वास्तुविद्या
स्वरोदयवित्
भास्करव्यवहार
योगयात्रा ग्रंथ
वास्तुशास्त्र
ब्रह्मशंभु टीका
विद्याधरी विलास
काळनिर्णय
ब्रह्मसिद्धांत
कालगृह्य
खंडखाद्य भाष्य
गर्ग
विवाहपटल
भीमपराक्रम ग्रंथ
करणकुतूहल—भास्कर सिद्धांत
सत्यसूरि
वृहस्पति
लक्ष्मीधर
देवलमुनि
अध्यात्मशास्त्र

आ उपरथी वाचकवृंदने स्पष्ट समजाशे के टीकाकारने ज्योतिपना विपयमां केटलुं अथग अने केवुं असाधारण ज्ञान हतुं ? आ एकज ग्रंथ साद्यंत उपस्थित होय तो ते वर्तमान समयमा उच्च विद्वाननी पंक्तिमा गणाय ए निर्विवाद छे टीकाना पण दरेक विपयो अनुक्रमणिकामा सविस्तर आप्या छे, तेथी आ स्थळे विस्तारना भयथी लखता नथी आ ग्रंथ दरेकने उपयोगी थाय एवा हेतुथी भाषांतर करावीने छपाव्यो छे तेमा प्रथम मूळ श्लोक अने तेनी नीचे मूळ श्लोकनो अर्थ लखेलो छे तेनी नीचे श्लोकनी टीकानु मात्र भाषांतरज लख्युं छे, परतु टीकामा ग्रथांतरोना जेटलां वचनो टीकाकारे आप्या छे तेनु मूळ पण भाषांतर सहित आप्यु छे मूळ तथा ग्रंथांतरोना वचनोने नि जेटली समजुती तथा उदाहरणो विगेरे टीकाकारे आप्या छे तेनुं अक्षरशः

मात्र न्नाषांतरज सरळ रीते लख्युं छे. मात्र कोइक स्थळेज टीकाकारना संक्षिप्त अने दिगूदर्शन करेला विषयने स्पष्ट समजाववा माटे थोमोक विस्तार न्नाषांतरमां कर्यो छे.

आ ग्रंथनुं तेमज नीचे लखेला लग्नशुद्धि तथा दिनशुद्धि नामना ग्रंथोनुं न्नाषांतर भावनगरनिवासी शेठ कुंवरजी आणंदजी मारफत शास्त्री जेठालाल हरिभाइ पासे कराव्युं छे. तेमां प्रवर्तक महाराज श्रीकांतिविजयजीना शिष्य मुनिराज श्रीभक्तिविजयजी महाराजे सारी मदद आपी छे. तथा आ न्नाषांतरनुं मेटर अने छपातां फारमो साद्यंत तपासी आपनार पन्यासजी महाराज श्रीदानविजयजी महाराजाए घणी कृपा करी छे. तेमज आ ग्रंथनी परम शुद्ध एक प्रति पूज्यपाद श्रीविजयानंद सूरीश्वर (आत्मारामजी महाराज)नी तथा बीजी तेमनाज प्रशिष्य उपर्युक्त मुनिवर श्रीन्नक्तिविजयजी महाराजनी मळी हती, जेथी आ स्थळे ते सर्व पूज्योनो अमो अंतःकरणपूर्वक आन्नार मानीए छीए.

आ ग्रंथ पूर्ण थया बाद पाछळ लग्नशुद्धि तथा दिनशुद्धि के जे मात्र मूळज उपलब्ध थया छे ते पण न्नाषांतर सहित छपाव्या छे. जो के आ बन्ने ग्रंथो अति लघु होवाथी आरंन्नसिद्धि करतां वधारे उपयोगी नथी, तोपण तेमांथी केटलांक चालतां मुहूर्तो सहेलाइथी अल्प प्रयासे मळी शके तेम छे, तथा कोइ कोइ नवीन विषयो पण तेमां छे, तेथी आ बे ग्रंथो कायमने माटे वधारे उपयोगी होवाथी तेमनुं प्राकट्य दुरस्त धार्युं छे. ते बन्ने ग्रंथोमां कया कया विषयो छे, ते माटे जिज्ञासुए अनुक्रमणिका वांचीनेज जिज्ञासा पूर्ण करवी.

आमांनो लग्नशुद्धि नामनो ग्रंथ १४४४ ग्रंथना कर्ता श्रीहरिभद्र सूरि के जेओ याकिनीमहत्तरासूनुना नामथी प्रसिद्ध छे तेमणे रचेलो छे. तेमां मात्र १३३ गाथाओ प्राकृत न्नाषामांज छे, तोपण अल्प शब्दोमां प्रन्नूत अर्थनो समावेश होवाथी सूत्ररूपे आ ग्रंथ छे. आ ग्रंथमां मात्र लग्ननीज शुद्धि छे, तेमां पण दीक्षा, उपस्थापना अने प्रतिष्ठानांज लग्न विषे छे. आ ग्रंथ पर नानी मोटी टीका छे के नहीं? ते विषे कांइ निश्चय थयो नथी. आ ग्रंथकार पूज्यपादनो संपूर्ण इतिहास तथा तेमनुं माहात्म्य सुप्रसिद्ध होवाथी वाचकवर्गना समयनो व्यर्थ व्यय करवा इच्छता नथी.

दिनशुद्धि ग्रंथना कर्ता श्रीहेमतिलक सूरिना शिष्य श्रीरत्नशेखर सूरि छे. एम ग्रंथनी छेल्ली गाथामां स्पष्ट लखेलुं छे. तेओनो सत्तासमय संवत् १४२० मां हतो. तेमने दिल्हीना

---

१ आ नामना बीजा श्रीरत्नशेखर सूरि आ सूरिनी पछी एटले संवत् १४५७ मां जन्म, संवत् १४६३ मां दीक्षा, संवत् १५०२ मां सूरिपद अने १५१७ मां पोष वदि छठने दिवस स्वर्गवास विगेरे जैन धर्मना प्राचीन इतिहास उपरथी थयेलो जणाय छे. ते सूरीश्वरे श्राद्धप्रतिक्रमण

राजा फिरोजशाह तुघलके घणुं मान आप्युं हतुं आ सूरीश्वरे श्रीपाळचरित्र, गुणस्थानक्रमारोह अने लघुक्षेत्रसमास विगेरे अनेक ग्रंथो रचेला छे एम जैन धर्मना प्राचीन इतिहासमां आपेलुं छे. तेमज जैन ग्रंथावळीमां पृष्ठ १३२ मा गुणस्थानक्रमारोहना कर्ता रत्नशेखर सूरि लखेला छे अने रच्यानो संवत् १४४७ नो छे तथा पृष्ठ २३४ मा श्रीपाळचरित्रना कर्ता पण तेज लख्या छे. तेनो संवत् १४२८ लख्यो छे. ते सिवाय बीजा ग्रंथो पण आ सूरिना रचेला हशे के नहीं तेनो निश्चय थइ शकतो नथी, कारण के गुरुगुणषट्त्रिंशिका वृत्तिना रचनार रत्नशेखर सूरि ग्रंथावळीना पृष्ठ १४० मां लख्या छे, पण तेनो संवत् विगेरे काइ पण नहीं होवाथी बेमाथी कया सूरि आना कर्ता छे ते सिद्ध थइ शकतुं नथी तथा पृष्ठ १०७ मा गुरुगुणषट्त्रिंशिका कुलक उपर दीपिका नामनी टीकाना कर्त्ता रत्नशेखर सूरि लख्या छे, तेमा पण संवत् लखेलो नथी, परंतु तेनी फुटनोटमा नागपुरीय शाखाना हेमतिलक सूरिना शिष्य अने वज्रसेन सूरिना प्रशिष्य तथा श्रीपाळचरित्रना कर्ता लखेला होवाथी आ प्रकृत सूरि मालम पडे छे. विगेरे. विगेरे.

आ दिनशुद्धि ग्रंथ पण संक्षिप्तज छे एटले के तेमां १४४ गाथाओ छे. आ ग्रंथ पर पण नानी मोटी टीका छे के नहीं ते उपलब्ध थयुं न होवाथी मात्र मूळ ग्रथज भाषांतर सहित प्रगट कर्यो छे, तोपण केटलेक स्थळे स्पष्ट समजुतीने माटे प्रतिमा नहीं छता यंत्रो दाखल कर्या छे आ ग्रंथमा वार, तिथि, करण, नक्षत्र, ताराबळ, योगो, प्रयाण, चैत्य करणादिक, मृतक्रिया, दीक्षा, प्रतिष्ठा विगेरेना मुहूर्त्तो तथा लोच, विद्यारंभ विगेरे विषयो लीधा छे. एकदर आ लघु ग्रंथ छता पण अति उपयोगी छे. आ ग्रंथना विस्तृत विषयो पण अनुक्रमणिकामा दाखल करेला होवाथी अत्रे विस्तारता नथी.

छेवट आ ग्रंथोना जिज्ञासु जनोने आ ग्रथना सदुपयोगमा प्रवृत्ति अने दुरुपयोगथी निवृत्ति करवानी सूचना आपी आ प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे अने आशीर्वाद आपीए छीए के आ ग्रंथोमा बतावेला शुभ कार्योना शुभ मुहूर्त्तोने लीधे शुभ फळ प्राप्त करी सज्जनो आनद पामो इति शम् । तथाऽस्तु ॥

वृत्ति, श्राद्धविधि वृत्ति तथा आचारप्रदीप विगेरे ग्रथो रच्या छे आ सूरिना गुरु श्रीमुनिसुदर सूरि हता. आ उपरथी आ बन्ने सूरि भिन्न छे एम सिद्ध थाय छे, अने उपर लखेला ग्रथावळीना आधारे पण जूदा सिद्ध थाय छे, केमके ग्रथावळीना पृष्ठ ९६ मा लक्षणसग्रहना कर्ता रत्नशेखर लख्या छे, अने नीचे फुटनोटमा सवत् १५०२ थी १५१७ नो सत्तासमय लख्यो छे (आ सूरिपदनो सत्तासमय जाणवो) तोपण ग्रथावळीमा रत्नशेखर नामना एकज सूरि थया होय एम धारीने लखेलु जणाय छे, परतु बन्ने भिन्न मानवा योग्य छे

सवत् १९७४ आषाढ पूर्णिमा { ली प्रकाशक.

अनुक्रमणिका.

पृष्ठ.

प्रथम विमर्श. १ — १६९

तिथिद्वार. १

वारद्वार. २.

विमर्श ४

गमद्वार ८.

विमर्श. २.

राशिद्वार. ५.

ગોચરદ્વાર. ૬.

विमर्श. ३

कार्यद्वार ७

लग्नशुद्धि. ३.

दिनशुद्धिनी अनुक्रमणिका.

वास्तुद्वार. ए

विमर्श. ९.

विलग्नद्वार. १०.

मिश्रद्वार. ११.

लग्नशुद्धिनी अनुक्रमणिका.

परंतु ते तिथि प्रयाणमां अथवा प्रवेशमां बिलकुल लेवी नहीं. आ व्यवस्था शुभ एटले सौम्य कार्यमां जाणवी, अशुभ कार्यमां तो अशुभ तिथि ज विशेष सिद्धिकारक गणाय छे. आ उपरनी सर्व तिथिओ पक्षछिद्र नामे होवाथी अशुभ छे. कह्युं छे के—

"षष्ठ्यष्टमीचतुर्थीचतुर्दशीद्वादशीकुहूनवमीः ।
पक्षच्छिद्राण्याहुर्लभते नैतेषु संसिद्धिम् ॥"

"छठ, आठम, चोथ, चौदश, बारश, अमास अने नोम आटली तिथिओ पक्षछिद्र नामे कहेवाय छे. आ तिथिए करेला कार्यनी सिद्धि थती नथी. तेमां पण छठ अने बारश ए बे तिथिओ यात्रामां विशेष अशुभ छे; परंतु ध्रुव कार्यमां ते बे तिथिओ शुभ छे, एम लल्ल कहे छे. "चौदश पण यात्रामां विशेष अशुभ छे" एम श्रीपति कहे छे.

त्रीन् वारान् स्पृशती त्याज्या त्रिदिनस्पर्शिनी तिथिः ।
वारे तिथित्रयस्पर्शिन्यवमं मध्यमा च या ॥ ५ ॥

अर्थ—जे तिथि वृद्धि होवाने लीधे त्रण वारने स्पर्श करती होय ते त्रिदिनस्पर्शिनी तिथि कहेवाय छे. हर्षप्रकाश ग्रंथमां आने फल्गु नामे तिथि कही छे, तथा तिथिना क्षयने लीधे एक वारमां त्रण तिथिनो स्पर्श थतो होय तो ते त्रण तिथिमांनी वचली तिथि अवम नामे (क्षय) कहेवाय छे. आ त्रिदिनस्पर्शिनी तथा अवम ए बन्ने तिथि शुभ कार्यमां वर्जवी. कह्युं छे के—

"दिनक्षये भवेत्कार्यक्षयस्तेन शुभं न तत् ।
प्रकृत्यन्यत्वमुत्पातस्त्र्यहस्पृक् तदतोऽशुभम् ॥"

"दिवस (तिथि)नो क्षय होय तो कार्यनो क्षय थाय छे, माटे क्षय तिथि शुभ नथी; तथा प्रकृतिनुं अन्यपणुं एटले विकार होय तो ते उत्पात कहेवाय छे, तेथी त्रण दिवसने स्पर्श करनारी तिथि पण अशुभ छे.

हवे दग्धा तिथि कहे छे.

दग्धामर्केण संक्रान्तौ राश्योरोजयुजोस्त्यजेत् ।
भूत ५ दृग् २ युक्तयोः शेषां शोधिते भगणे १२ तिथिम् ॥ ६ ॥

अर्थ—सूर्यनी संक्रांतिमां जे राशि चालती होय ते जो विषम (एकी) होय तो तेमां पांच उमेरवा, अने जो सम (बेकी) होय तो तेमां बे उमेरवा. पछी तेनो बारे भाग लेतां जे अंक शेष रहे ते तिथिने दग्धा तिथि जाणवी. बारे भाग लेतां जो शून्य शेष रहे तो बारशने दग्धा जाणवी, अने बारे भाग लई न शकाय तो ते ज तिथि दग्धा जाणवी. आ दग्धा तिथि शुभ कार्यमां वर्जवानी छे.

एटले के—मेप १, मिथुन ३, सिंह ५, तुला ७, धन ए अने कुंज ११ ए विपम राशि ठे आमानी कोइ पण राशिमां सूर्यसंक्रांति होय तो ते राशिना अंकमां पाच उमेरी वारे जाग लेतां जे शेप रहे ते अकवाळी तिथि ते संक्रांतिमां सूर्यदग्धा जाणवी, तथा वृप २, कर्क ४, कन्या ६, वृश्चिक ट, मकर १० अने मीन १२ ए सम राशि ठे आमांनी कोइ पण राशिमां सूर्यसंक्रांति होय तो ते राशिना अंकमां वे उमेरी वारे जाग लेतां जे शेप रहे ते तिथि ते संक्रांतिमा सूर्यदग्धा जाणवी

उदाहरण—मेप राशि पहेली ठे, तेथी एकमा पांच उमेरता ठ थाय तेनो वारे जाग नहीं चालवाथी ठ ज वाकी रह्या, तेथी मेपराशिनो सूर्य होय त्यारे ठठ्ठने दग्धा जाणवी तुला राशि सातमी ठे, तेथी सातमा पांच नाखवाथी वार थाय तेनो वारे जाग लेता शून्य वधे ठे, तेथी तुला राशिनो सूर्य होय त्यारे वारशने दग्धा जाणवी धन राशि नवमी ठे, तेथी नवमा पांच नाखवाथी चौद थाय तेनो वारे जाग लेता वे शेप रहे ठे, माटे धन राशिनो सूर्य होय त्यारे वीजने दग्धा जाणवी. ए रीते वीजी पण विपम राशिमा जाणवु वृप राशि वीजी ठे, तेथी तेमा वे उमेरी वारे जाग लेता जाग चालतो नथी, तेथी चारना चार वाकी रह्या, माटे वृप राशिनो सूर्य होय त्यारे चोथने दग्धा जाणवी. मकर राशि दशमी ठे, तेमा वे उमेरवाथी वार थाय तेनो वारे जाग लेता शून्य रहे ठे, तेथी मकर राशिनो सूर्य होय त्यारे वारश दग्धा जाणवी मीन राशि वारमी ठे, तेमा वे उमेरता चौद थाय तेनो वारे जाग लेता वाकी वे रहे ठे, माटे मीन राशिनो सूर्य होय त्यारे बीजने दग्धा जाणवी ए ज रीते वीजी सम राशिउमा पण जाणवु ते दग्धा तिथिने ते संक्रांतिना आखा मासमा तजवी योग्य ठे

दग्धा तिथिने ज स्पष्टताथी कहे ठे—

दग्धाऽर्केण धनुर्मीने २ वृपकुंजे ४ ऽजकर्किणि ६ ।
द्वन्द्वकन्ये ट मृगेन्द्रालौ १० तुलैणे १२ स्यादियुक्तिथिः ॥ ७ ॥

अर्थ—धनुप अने मीननी संक्रांतिमा वीजने दग्धा तिथि जाणवी. वृप अने कुंजनी संक्रांतिमा चोथ, मेप अने कर्कनी संक्रांतिमा ठठ्ठ, मिथुन अने कन्यानी संक्रांतिमा आठम, सिंह अने वृश्चिकनी संक्रांतिमा दशम तथा तुला अने मकर राशिनी संक्रांतिमा वारश दग्धा तिथि कहेवाय ठे आ रीते सूर्यदग्धा तिथि जाणवी

२४–
प्रसंगोपात्त चन्द्रदग्धा तिथिने कहे ठे (हर्पप्रकाश)—
२७
"कुंजधणे २ अजमिहुणे ४ तुलसीहे ६ मयरमीण ट विसकक्के ।
२८–२९ सिद्धि मियकन्नासु १२ कमा वीआई समतिही उ ससिदड्ढा ॥"
३०–३३ बीजा । —नना चंद्र होय त्यारे बीजने दग्धा तिथि जाणवी, मेप अने मिथुनना

॥ श्रीउदयप्रभदेवसूरिविरचित ॥

॥ आरंभसिद्धि ॥

॥ भाषान्तर ॥

॥ अथ प्रथमो विमर्शः ॥

॥ ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥

श्रीधर्मन्यायसम्यग्व्यवहृतियुवतेर्जीवलोकेन भर्त्रा,
श्रेष्ठे तादृग्मुहूर्त्ते परिणयनमिहाचीकरद्यो युगादौ ।
लीलायेते यथैतौ सततमवियुतौ सत्फलाढ्यौ स दत्तां,
वस्तुं नः सिद्धिसौधे सुसमयमृषभस्वामिदैवज्ञराजः ॥

अर्थ—जे ऋषभदेव स्वामीए युगना प्रारंभमां तेवा कोइ श्रेष्ठ मुहूर्त्ते श्रीधर्म अने न्यायपूर्वक सम्यक् प्रकारनी व्यवहृति (व्यवहार)रूप युवति (स्त्री)नो जीवलोकरूपी भर्ता साथे विवाह कराव्यो छे, ते श्रीऋषभस्वामीरूपी श्रेष्ठ दैवज्ञ (नैमित्तिक) जे प्रकारे आ बन्ने दंपती सत् फळे करीने व्याप्त एवा थइने निरंतर वियोग रहित क्रीडा करे ते प्रकारे सिद्धिरूपी सौधमां निवास करवा माटे अमने सारुं मुहूर्त्त आपो.

आदर्शेषु पुरापि सन्ति कतिचिद्व्याख्यालवाः केऽपि च,
प्राप्ताः श्रीवरसोमसुन्दरगुरोः पादप्रसादान्नवाः ।
उक्तानुक्तदुरुक्तमर्थमथ तैरारंभसिद्धेरहं,
व्याकर्तुं स्वपरोपकारविधये तद्वार्तिकं प्रस्तुवे ॥

अर्थ—आ आरंभसिद्धि नामना ग्रंथनी व्याख्याना केटलाक लवो (नानी व्याख्याओ) पहेलां पण केटलांक पुस्तकोमां छे, अने केटलाक नवा लवो मने उत्तम एवा श्रीसोमसुंदर गुरुना चरणकमळना प्रसादथी प्राप्त थया छे, माटे ते सर्व लवोए करीने पोताना अने परना उपकारने माटे उक्त, अनुक्त अने दुरुक्त अर्थने स्पष्ट करवा माटे हुं आ आरंभसिद्धिनी व्याख्या करुं छुं.

आ भरतक्षेत्रमां समग्र त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ अने काम)नुं इच्छा प्रमाणे उपार्जन करवाथी गर्जना करतो गुर्जर (गुजरात)नामे देश छे. तेना स्वामी श्रीवीरधवल नामना राजाए संघपति (संघवी) श्रीवस्तुपाळने सर्व राज्यना व्यापारनो अधिकार आप्यो हतो. ते मंत्रीश्वरे श्रीशत्रुंजय, उज्जयंत (गिरनार) अने अर्बुद (आबु) विगेरे मोटां तीर्थोमां

पोताना अर्बुद, अंबुज अने खर्व विगेरे संख्यावाळा द्रव्यनो व्यय करीने कलियुगनो अहंकार नाश पमाड्यो हतो. भिन्न भिन्न देशमां निवास करनारा कविजनोए करेली स्तुतिओना समूहने सहन करनार अने तेवा प्रकारना धीर, उदात्त अने मनोहर गुणनी श्रेणिए करीने उपार्जन करेला तथा जगतने व्यापीने रहेला यशरूपी शरीरनी संपत्तिए करीने कदापि नाश नहीं पामनार ते मंत्रीश्वरे श्रीनागेंद्र गच्छना गुरु, सत् ज्ञान, सत् क्रिया अने सद्गुणोए करीने शोभता एवा श्रीमान् उदयप्रभदेव सूरिने आचार्यपद पर स्थापन कर्या हता तेमणे अन्य अन्य (भिन्न भिन्न) ग्रंथोमां त्रुटक त्रुटक रहेला लौकिक अने लोकोत्तर कर्मना विषयवाळा ज्योतिषनां मुहूर्त्तादिक होवाथी जोशी लोकोने अत्यंत प्रयास थतो जोइने तेमना उपकारने माटे निरंतर उपयोगी, सत् अर्थनी प्राप्ति माटे देवहट्टी समान आ ग्रंथ रच्यो छे "आ ग्रंथने भणनाराओनुं संरु पांडित्य (अपूर्ण ज्ञान) न थाओ" एवा हेतुथी पोतानी कृतिनुं सर्व ज्योतिषना विषयमां समर्थपणुं जणाववा माटे आ पूज्य आचार्य महाराजे केटलांएक सावद्य कर्मो पण संपूर्ण रीते कह्यां छे तथा केवळ धर्मनां कार्योमां ज एकांतपणे अभ्युदयने इच्छता अमोए पण ते (धर्मक्रिया)-नां मुहूर्त्तो अने लग्नोना विषयमां घणा जोशीओना विवादने पामेला गुण दोषना निर्णयने स्पष्ट करवा माटे घणा घणा ज्योतिषना अभिप्रायो देखाडवापूर्वक आ टीका करेली छे, तोपण पूर्वे कहेला हेतुथी ज ते सावद्य कर्मोना विषयमां पण व्याख्या करी छे, परंतु सत् अने असत्ना विवेकमां (विवेचन करवामा) चतुर एवा डाह्या पुरुषोए ते सावद्य क्रियाओना मुहूर्त्तादिको मात्र जाणवा योग्य ज छे, पण सावद्य कर्ममां प्रवर्तेला जनोने कहेवा लायक नथी. ते विषे कह्युं छे के—

"यदेव साधकं धर्मे तद्वक्तव्यं वचस्विना ।
न त्वीषदपि बाधाकृदेषैव हि वचस्विता ॥"

"धर्मनुं ज जे साधक होय, ते ज डाह्या पुरुषे बोलवुं जोइए, परंतु धर्मने बाधा करनारुं लेश पण बोलवुं नहीं एज डाह्या पुरुषनुं डहापण छे"

अहीं कोइ शंका करे के—"ज्यारे सावद्य कर्मोनां मुहूर्त्तादिक जाणवा योग्य ज मात्र छे, पण कहेवा योग्य नथी, त्यारे तेवां कर्मोने आ ग्रंथमां लखवानुं शुं फळ छे ? अर्थात् तेवा कर्मो ग्रंथमां लखवां ज नहोतां" आनो जवाब ए छे जे—"तेवां कर्मोनुं ज्ञान ज अहीं लखवानुं फळ छे" फरीथी शंका करे छे के—"ज्ञान क्रियाए करीने ज फळवाळुं छे (एटले ज्ञाननुं फळ क्रिया ज छे) क्रिया रहित ज्ञान तो वंध्या गायनी जेम प्राप्त करवा लायक नथी" आनो जवाब ए छे के—"मात्र क्रिया करवाथी ज ज्ञान फळवाळु थाय छे एवो काइ नियम नथी, परंतु अकृत्योमां (न करवा योग्य क्रियाओमा) जे न प्रवर्तवुं ते पण ज्ञाननुं फळ छे नहीं तो चोरी अने परस्त्रीसेवनादिक पापने जाणनारा (ज्ञान-

वाळा) विवेकीने पोतानुं ज्ञान सफळ करवा माटे ते चौर्यादिक कर्ममां प्रवृत्ति करवानुं प्राप्त थशे, तेथी करीने अहीं पण सावद्य कर्ममां प्रवर्तनना निवर्तन वडे ज सावद्य कर्मना ज्ञाननुं सफळपणुं कल्पवुं योग्य छे. आ ज कारणने लइने कह्युं छे के—

"ये सुविहिताः पदस्थाः प्रौढाः सावद्यवचनतो विरताः ।
तेषामेव ग्रन्थः सदायमुपयोगितां लभताम् ॥"

"जेओ सत्कार्यने करनारा, प्रौढतावाळा अने सावद्य वचनथी निवृत्ति पामेला पदस्थो (आचार्यादिक पदने धारण करनारा) छे, तेओने ज आ ग्रंथ सदा उपयोगी थाओ."

वळी श्रीजिनशासननी प्रभावनादिक विशेष फळना लाभने जोइने कोइवार अपवाद मार्गने आश्रीने सावद्य कर्मनी प्ररूपणा करवानुं पण आगममां कहेलुं होवाथी असुक वखते सावद्य कर्मनां मुहूर्त्तादिकनुं ज्ञान पण उपयोगी छे. अत्यंत विस्तारथी सर्युं. प्रस्तुतने ज कहीए छीए.—

"तत्त्वार्थमेव वक्ष्ये क्वचन विशेषं च सोपयोगमिह ।
तत्तदनुसारतोऽक्षरघटना सूत्रे स्वयं कार्या ॥"

"हुं आ ग्रंथनी टीकामां तात्त्विक अर्थने ज कहीश, अने कोइ स्थळे उपयोगी एवा विशेषने पण कहीश, माटे ते ते तात्त्विक अने विशेष अर्थने अनुसारे सूत्रमां (मूळ ग्रंथना श्लोकमां) अक्षरघटना (अक्षरार्थ) पोतानी मेळे करी लेवी."

प्रथम शास्त्रना आरंभमां मंगल, अभिधेय, संबंध अने प्रयोजन कहेवां जोइए एवुं वचन होवाथी प्रथम मंगळने माटे उचित एवा देवताना नमस्कारने ग्रंथकार कहे छे.—

ॐ नमः सकलारंभसिद्धिनिर्विघ्नवेधसे ।
अर्हणामर्हते साक्षादुपलंभाय शंभवे ॥ १ ॥

अर्थ—समग्र शुभ कर्मना आरंभनी सिद्धिमां निर्विघ्नता करनार, पूजा करवा योग्य, प्रत्यक्ष ज्ञानवाळा तथा सुखने उत्पन्न करनारा जिनेश्वरने मारो नमस्कार थाओ.

आ श्लोकमां "शं" एटले सुखने माटे "भवति" एटले थवाना स्वभाववाळा ए अर्थने लइने "शंस्वयंविप्राद्भुवो डुः" आ व्याकरणना सूत्रवडे डु प्रत्यय लागवाथी शंभु शब्द थइ शंभवे ए चतुर्थी विभक्तिना एकवचननुं रूप थयुं छे. आवा शंभुने एटले जिनेश्वरने नमस्कार थाओ. आ ग्रंथ सर्व दर्शनीओने उपयोगी होवाथी शंभु एवो [1]श्लेषवाळो शब्द लख्यो छे. ते शंभु केवा छे ? तो तेनुं विशेषण "ॐ" छे, ते "अव्" एटले रक्षण करवुं ए धातु उपरथी उणादिनुं सूत्र लागी "म" प्रत्यय तथा "ऊट्" आगम आवी गुण

१ एक ज शब्दने जूदा जूदा अर्थमां लइ शकाय ते श्लेष कहेवाय छे, तेथी शंभु एटले महादेव तथा जिनेश्वर एम बन्ने अर्थ लइ शकाय छे, माटे ए श्लेष कहेवायो.

थवाथी ॐ शब्द सिद्ध थयो छे. ते अव्ययना प्रकरणमां गणावेलो होवाथी अव्यय छे, अने तेनो अर्थ "परमब्रह्मरूप" थाय छे आ श्लोकमां मातृकावर्णनी जेम "ॐ नमः" ए सिद्धमंत्र लख्यो छे तेनु प्रयोजन विघ्न रहित इष्ट अर्थनी सिद्धि थाय ते छे. तथा समग्र शुभ आरंभो (कार्यो)नी सिद्धिमां विघ्नरहितपणाना उत्पन्न करनार आ विशेषणवडे युक्तिए करीने "आरंभसिद्धि" एवुं आ ग्रंथनुं नाम पण सूचव्यु छे तथा पूजा करवाने योग्य ए पण शंभुनुं विशेषण छे त्यां कोइ ठेकाणे "अर्हाणामर्हते" एवो पाठ होय तो "पूज्यना पण पूज्य" एवो अर्थ करवो तथा प्रत्यक्ष ज्ञानवाळा एटले जेने प्रत्यक्ष ज्ञान छे अने जेनाथी अन्यने प्रत्यक्ष ज्ञान थाय छे एवा शंभुने नमस्कार हो.

हवे बीजा सूत्र (श्लोक) मां अभिधेय, संबंध अने प्रयोजन कहे छे—

दैवज्ञदीपकलिकां व्यवहारचर्या-
मारम्भसिद्धिमुदयप्रभदेव एताम् ।
शास्ति क्रमेण तिथि १ वार २ भ ३ योग ४ राशि ५-
गोचर्य ६ कार्य ७ गम ८ वास्तु ९ विलग्न १० मिश्रैः ॥ २ ॥

अर्थ—श्रीउदयप्रभ आचार्य जोशीओने दीपकनी ज्योत जेवी अने शुभ व्यवहारना कार्योने आचरण करनारी आ आरंभसिद्धिने अनुक्रमे तिथि १, वार २, नक्षत्र ३, योग ४, राशि ५, गोचर ६, विद्यारंभादिक कार्य ७, गम (प्रयाण) ८, वास्तु ९, लग्न १० अने मिश्र ११ आ अग्यार द्वारवडे कहे छे

स्पष्ट अर्थने प्रकाश करवाथी आ आरंभसिद्धि जोशीओने दीपकनी ज्योत समान छे व्यवहार एटले शिष्ट (सारा) जननो शुभ तिथि, शुभ वार अने शुभ नक्षत्रादिकमा शुभ कार्य करवारूप सदाचार आवा सदाचारनी चर्या एटले अमुक रीते करवापणुं, ते चर्या अभिधेयपणाए करीने जेमा रहेली छे आ प्रमाणे "व्यवहारचर्या" एम कहेवाथी आ ग्रथनुं अभिधेय जणाव्युं छे, अने आम कहेवाथी आ ग्रथ वाचक थयो अने व्यवहारचर्या वाच्य थइ, तेथी वाच्यवाचक भाव नामनो संबंध पण सूचव्यो छे एम जाणवुं तेमज "व्यवहारचर्या" एवुं आ ग्रंथनुं बीजुं नाम पण छे एम जाणवु अहीं प्रयोजन बे प्रकारनुं छे—एक अनतर अने बीजु परंपर तेमा श्रोताओने व्यवहारनी कुशळतानी सिद्धि थाय ए आ आरंभसिद्धिनु अनतर प्रयोजन छे, तथा यथार्थ रीते व्यवहारनी प्रवृत्तिए करीने धर्म, अर्थ अने काम ए त्रण पुरुषार्थनी सिद्धि थाय, तथा अनुक्रमे मोक्षरूप पुरुषार्थनी पण सिद्धि थाय ए परंपर प्रयोजन छे हवे पूर्वोक्त व्यवहारचर्या नामना [illegible] अग्यार द्वारवडे विभाग पाडीने बतावे छे—प्रतिपद् विगेरे तिथिओ १,

रवि आदिक वारो २, अश्विनी आदि नक्षत्रो ३, सिद्धियोगादिक योगो ४, मेष विगेरे राशिओ ५, गायनी जेम चरवुं ते गोचर कहेवाय छे. "चरेराङस्त्वगुरौ" ए सूत्रथी य प्रत्यय करीने गोचर्य शब्द सिद्ध थयो छे. एनो अर्थ "पूर्व पूर्वनी राशिथी उत्तर उत्तर राशिमां ग्रहोनुं जवुं" एवो थाय छे ६, विद्यारंभादिक कार्यो ७, गम एटले यात्रा ८, वास्तु एटले घर, हाट, प्रासाद विगेरे अने तेना संबंधथी तेमां प्रवेश करवो ते पण जाणवुं ए, आ गम अने वास्तु नामनां बन्ने द्वारोनो कार्यद्वारमां समावेश थइ शके छे, परंतु आ बे द्वारोमां वधारे कहेवानुं होवाथी जूदां जूदां द्वार कर्यां छे. विलग्न एटले लग्न नामनुं द्वार १०, तथा मिश्र एटले कहेलां अने नहीं कहेलां एवां घणां द्वारोए करीने कहेवा लायकनो एक द्वारमां संग्रह करवो ते ११, आ अग्यार द्वारोवडे व्यवहारचर्याने कहे छे.

प्रथम तिथिद्वारने कहे छे.

नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा चेति त्रिरन्विता ।
हीना मध्योत्तमा शुक्ला कृष्णा तु व्यत्यया तिथिः ॥ ३ ॥

अर्थ—प्रतिपदथी आरंभीने नंदा, भद्रा, जया, रिक्ता अने पूर्णा ए प्रमाणे अनुक्रमे पांच तिथि जाणवी. ए रीते त्रण वार गणवाथी पंदर तिथि पूरी थाय छे. एटले के १-६-११ ए तिथिओने नंदा जाणवी, २-७-१२ ए तिथिओ भद्रा जाणवी, ३-८-१३ जया, ४-९-१४ रिक्ता अने ५-१०-१५ ए तिथिओने पूर्णा जाणवी. आ नंदा विगेरे नाम सार्थक छे, एटले के पोतानां नाम प्रमाणे फळ आपनारी छे. ते विषे श्रीपतिए कह्युं छे के—चित्र, उत्सव, वास्तु, क्षेत्र अने नृत्यादिक आनंदवाळां कार्यो नंदा तिथिए करवामां आवे छे. विवाह, अलंकार, वाहन, प्रयाण तथा शांतिपौष्टिकादिक भद्र कर्मोने भद्रा तिथिए करवामां आवे छे. युद्ध तथा सैन्य उपर हुमलो करवो विगेरे विजयवाळां कामो जया तिथिए करवामां आवे छे. वध, बंध, घात, विष, अग्नि अने शस्त्रादिक संबंधी कार्यो रिक्ता तिथिए करवामां आवे छे. तथा विवाह, दीक्षा, यात्रा विगेरे मांगलिक कार्यो पूर्णा तिथिए करवामां आवे छे. सामान्य रीते तो अमावास्या अने रिक्ता तिथिने वर्जीने प्राये सर्व तिथिए शुभ कार्य करवामां आवे छे. तथा अमावास्याने दिवसे ते ज तिथिए अवश्य करवा योग्य कार्य सिवाय बीजां कार्य करवानो निषेध छे. लल्ल कहे छे के—

"स्युर्यंत्रमंत्ररक्षादीक्षाक्षुरेषु कर्मसु स्नाने । रिक्तादर्शाष्टम्यः शस्ताः ॥"

"जंत्र, मंत्र, रक्षा, दीक्षा, क्षुर कार्य अने स्नान एटलां कार्यमां रिक्ता तिथि तथा अमावास्या अने अष्टमी ए पांच तिथिओ शुभ छे."

शुक्ल पक्षनी पहेली पांच तिथिर्ड हीन कहेवाय छे, तथी दशम सुधीनी बीजी पांच तिथिर्ड मध्यम छे, अने अग्यारशथी पूर्णिमा सुधीनी त्रीजी पांच तिथिर्ड उत्तम छे; परंतु कृष्ण पक्षमां एथी उलटुं जाणवुं. एटले के कृष्ण पक्षमां पहेली पाच तिथिर्ड उत्तम, बीजी पांच मध्यम अने त्रीजी पांच तिथिर्ड हीन जाणवी

रत्नमाळामां तिथिना स्वामी आ प्रमाणे कह्या छे —

"तिथिपाश्चतुर्मुख १ विधातृ २ विष्णवो ३, यम ४ शीतदीधिति ५ विशाख ६ वज्रिणः ७। वसु ८ नाग ९ धर्म १० शिव ११ तिग्मरश्मयो १२, मदनः १३ कलि १४ स्तदनु विश्व १५ इत्यपि॥"

"चतुर्मुख (ब्रह्मा) १, विधाता २, विष्णु ३, यमराज ४, चंद्र ५, विशाख (कार्तिक स्वामी) ६, इंद्र ७, वसु ८, नाग ९, धर्म १०, शिव ११, सूर्य १२, कामदेव १३, कलि १४ अने विश्व १५ आ पंदर स्वामीर्ड प्रतिपदूथी पंदर तिथिना अनुक्रमे जाणवा."

"तिथौ हि दर्शसंज्ञके पितृनुशन्त्यधीश्वरान् ।
त्रयोदशीतृतीययोः स्मृतस्तु चित्तपोऽपरैः ॥"

अमावास्यानी तिथिने विषे पितृदेवने स्वामी कहेला छे एने बीजा आचार्योए त्रीज अने त्रयोदशीनो चित्तप एटले कामदेव स्वामी छे एम कह्युं छे"

"वह्नि १ विरञ्चो २ गिरिजा ३ गणेशः ४, फणी ५ विशाखो ६ दिनकृ ७ न्महेशः ८। दुर्गा ९ न्तको १० विश्व ११ हरि १२ स्मराश्च १३, शर्वः १४ शशी १५ चेति पुराणदृष्टाः॥"

"अग्नि १, ब्रह्मा २, पार्वती ३, गणपति ४, शेषनाग ५, कार्तिकस्वामी ६, सूर्य ७, महेश ८, दुर्गा ९, यमराज १०, विश्व ११, हरि १२, कामदेव १३, शर्व १४ अने चंद्र १५, आ प्रमाणे पण अनुक्रमे तिथिना स्वामीर्ड पुराणने विषे जोयेला छे" आ देवोनी प्रतिष्ठा विगेरे कार्यमां ते ते तिथिनो उपयोग छे एटले के जे देवनी जे तिथि होय ते तिथिए ते देवनी प्रतिष्ठा विगेरे करवामां आवे छे ए ज प्रमाणे आगळ नक्षत्र, करण अने मुहूर्त्तना स्वामीओ कहेवामां आवशे त्यां पण ते ते देवनी प्रतिष्ठादिकमां पोतपोताना नक्षत्रादिकनो उपयोग करवामा आवे छे एम रत्नमाळाना भाष्यमां कह्युं छे जिनेश्वरनी प्रतिष्ठा विगेरेमा तो सर्व शुद्ध तिथि, नक्षत्र, करण अने मुहूर्त्त उपयोगी छे, कारण के जिनेश्वर सर्व देवोना पण अधिदेव छे

हवे खराब एटले वर्ज्य तिथिर्ड कहे छे —

रिक्ताः ४-९-१४ पक्ष्यष्टमीद्वादश्यमावास्याः शुभे त्यजेत् ।
स्वीकुर्यान्नवमीं क्वापि न प्रवेशप्रवासयोः ॥ ४ ॥

अर्थ—शुभ कार्यमा रिक्ता (४–९–१४), छठ, आठम, बारश अने अमावास्या आ त्याग करवा लायक छे कोइक शुभ कार्यमा नवमीने पण लेवामा आवे छे,

चंद्र होय त्यारे चोथ दग्धा तिथि जाणवी, तुला अने सिंहना चंद्र होय त्यारे छठ, मकर अने मीनना चंद्र होय त्यारे आठम, वृषभ अने कर्कना चंद्र होय त्यारे दशम तथा वृश्चिक अने कन्याना चंद्र होय त्यारे बारशने दग्धा तिथि जाणवी." दग्धा तिथिमां जन्मेलुं बाळक प्राये अल्प आयुष्यवाळुं होय छे.

दग्धा तिथिनुं फळ यतिवल्लभ नामना ग्रंथमां आ प्रमाणे कह्युं छे.

"कुष्टं क्षौरेऽम्बरे दौःस्थ्यं गृहवेशे तु शून्यता ।
आयुधे मरणं यात्राकृष्युद्वाहा निरर्थकाः ॥"

दग्धा तिथिने दिवसे क्षौर कराववाथी कुष्ट रोग थाय छे, नवुं वस्त्र पहेरवाथी दुःस्थिति थाय छे, नवा घरमां प्रवेश करवाथी शून्यता थाय छे, नवुं शस्त्र धारण करवाथी मरण थाय छे, अने यात्रा, खेती तथा विवाह करवाथी ते निष्फळ थाय छे.

हवे क्रूर तिथि कहे छे.—

त्रिशश्चतुर्णामपि मेषसिंहधन्वादिकानां क्रमतश्चतस्रः ।
पूर्णाश्चतुष्कत्रितयस्य तिस्रस्त्याज्या तिथिः क्रूरयुतस्य राशेः ॥ ८ ॥

अर्थ—मेषथी, सिंहथी अने धनथी आरंभीने राशिनां त्रण चतुष्क करवां. तेमां प्रतिपद्थी आरंभीने अनुक्रमे चार तिथिओ तथा पहेली पूर्णा एटले पांचम ए तिथिओने पहेला चतुष्कमां क्रूर तिथि जाणवी. ए रीते बीजा चतुष्कमां छठथी आरंभी नोम सुधी तथा बीजी पूर्णा एटले दशम क्रूर तिथि जाणवी. तथा त्रीजा चतुष्कमां अग्यारशथी आरंभीने चौदश सुधी तथा त्रीजी पूर्णा एटले पूर्णिमा ए तिथिओने क्रूर तिथि जाणवी. (आ क्रूर तिथि सर्व शुभ कार्यमां तजवानी छे.) एटले के मेष राशिमां (रवि, मंगळ, शनि के राहु एमांथी) कोइ पण क्रूर ग्रह होय तो एकम अने पांचम, वृष राशिमां कोइ पण क्रूर ग्रह होय तो बीज अने पांचम, मिथुनमां क्रूर ग्रह होय तो त्रीज अने पांचम, तथा कर्कमां क्रूर ग्रह होय तो चोथ अने पांचम आ तिथिओ क्रूर जाणवी. एवी रीते सिंह राशिमां छठ अने दशम, कन्यामां सातम अने दशम तथा वृश्चिकमां नोम अने दशम ए तिथिओ क्रूर जाणवी. ए रीते धनमां अग्यारश अने पूर्णिमा, मकरमां बारश अने पूर्णिमा, कुंभमां तेरश अने पूर्णिमा तथा मीनमां चौदश अने पूर्णिमा ए तिथिओ क्रूर जाणवी. आ राशिओ केवळ क्रूर ग्रह सहित होय तो ज ते तिथिओ क्रूर थाय छे, पण सौम्य ग्रहनी साथे होय तो ते तिथिओ शुभ ज जाणवी. "जे माणसनी नामराशि क्रूर ग्रहे आक्रांत होय ते माणसे शुभ कार्यमां ते राशि संबंधी तिथि वर्जवी" एम केटलाक कहे छे. वळी बीजा कोइ आचार्य कहे छे के—मेष राशि क्रूर ग्रह सहित होय त्यारे एकम अने पांचमनी पहेली पंदर घडीनो त्याग करवो, वृष राशि क्रूर ग्रह सहित होय त्यारे

बीज अने पांचमनी बीजी पंदर घमीनो त्याग करवो, मिथुन राशि क्रूर ग्रह सहित होय तो त्रीज तथा पाचमनी त्रीजी पंदर घमीनो त्याग करवो, तथा कर्क राशि क्रूर ग्रह सहित होय तो चोथ अने पांचमनी चोथी एटले छेल्ली पदर घमीनो त्याग करवो ए रीते सिंहादिक चतुष्कमा तथा धनादिक चतुष्कमां पण ते ज प्रमाणे जाणवुं

हवे तिथिने आश्रीने करणो कहे छे —

करणान्यथ शकुनि १ चतुष्पद् २ नागानि ३ क्रमाच्च किंस्तुघ्नम् ४।
असितचतुर्दश्यर्धात्तिथ्यर्धेषु ध्रुवाणि चत्वारि ॥ ए ॥

अर्थ—ज्यारे जेटला प्रमाणवाळी तिथि होय त्यारे तेना अर्ध प्रमाणवाळां सर्व करणो होय छे, केमके "तिथिनो अर्ध जाग करण कहेवाय छे," एवुं वचन छे ते आ प्रमाणे—कृष्णपक्षनी चतुर्दशीना अर्धा जागथी एटले रात्रिथी आरंजीने अर्धां अर्धां तिथिमां अनुक्रमे शकुनि १, चतुष्पद २, नाग ३, अने किंस्तुघ्न ४, ए चार करणो ध्रुव जाणवां. (कारण के ते करणो नियमित स्थाने रहेलां होवाथी ध्रुव कहेवाय छे.) अर्थात् कृष्णपक्षनी चतुर्दशीनी रात्रिए शकुनि करण होय छे अमावास्याए दिवसे चतुष्पद अने रात्रिए नाग, तथा शुक्ल प्रतिपद्ना दिवसे किंस्तुघ्न करण होय छे.

वाकीनां करणो कहे छे —

अथ वव १ वालव २ कौलव ३ तैतिल ४ गर ५ वणिज ६ विष्टयः ७ सप्त।
मासेऽष्टशश्चराणि स्युरुज्ज्वलप्रतिपदन्त्यार्धात् ॥ १० ॥

अर्थ—वव १, वालव २, कौलव ३, तैतिल ४, गर, ५, वणिज ६, अने विष्टि ७, आ सात करणो छे, अने ते शुक्ल प्रतिपद्नी रात्रिथी आरंजीने एक मासमां आठ वार आवृत्ति करवाथी चर कहेवाय छे अर्थात् शुक्ल प्रतिपद्नी रात्रिए वव करण होय छे, बीजने दिवसे वालव अने रात्रिए कौलव होय छे, त्रीजने दिवसे तैतिल अने रात्रिए गर होय छे (तैतिलनुं बीजुं नाम स्त्रीविलोचन पण छे). चोथने दिवसे वणिज अने रात्रिए विष्टि (जद्रा) होय छे. आ एक आवृत्ति थइ ए प्रमाणे पाचमने दिवसे वव, रात्रिए वालव, छठ्ने दिवसे कौलव अने रात्रिए तैतिल, सातमने दिवसे गर अने रात्रिए वणिज, तथा आठमने दिवसे विष्टि, आ बीजी आवृत्ति थइ. ए प्रमाणे आठमनी रात्रिए वव, ते छेवट शुक्ल एकादशीनी रात्रिए विष्टि आवे आ त्रीजी आवृत्ति थइ पछी बारशने दिवसे वव ते यावत् पुनमने दिवसे विष्टि आ चोथी आवृत्ति थइ पछी पुनमनी रात्रे वव, कृष्णपक्षनी प्रतिपद्ने दिवसे वालव, यावत् कृष्णपक्षनी त्रीजनी रात्रे विष्टि ए पाचमी आवृत्ति थइ पछी चोथने दिवसे वव यावत् सातमने दिवसे विष्टि ए छठी आवृत्ति थइ पछी सातमनी रात्रिए वव यावत् दशमीनी रात्रिए

विष्टि आवे ते सातमी आवृत्ति थइ. पछी अग्यारशने दिवसे बव यावत् कृष्ण चतुर्दशीए दिवसे विष्टि आवे ते आठमी आवृत्ति थइ. आ आठ आवृत्ति तथा पछीनां चार ध्रुव करणोए करीने आखो मास पूर्ण थाय छे. अहीं जे दिवस तथा रात्रिना विभाग कह्या छे, तेमां तिथि ज्यारथी शरु थाय त्यारथी त्रीश घडी सुधी दिवस (पूर्वदळ) जाणवो, अने बीजी त्रीश घडी रात्रि (पश्चिमदळ) जाणवी. एटले के तिथिनी जेटली घडी होय तेना बे भाग करी पहेला भागने दिवस अने बीजा भागने रात्रि समजवी.

प्रसंगने लीधे आ करणोना स्वामी कहे छे.—

"इन्द्रो १ विधि २ मित्रा ३ र्यम ४ भू ५ श्री ६ शमना ७ श्चलेषु करणेषु ।
कलि १ वृष २ फणि ३ मरुतः ४ पुनरीशाः क्रमशः स्थिरेषु स्युः ॥"

इंद्र १, ब्रह्मा २, मित्र ३, सूर्य ४, पृथ्वी ५, लक्ष्मी ६ अने यम ७ आ अनुक्रमे बव विगेरे चळ करणोना स्वामी छे. तथा कलि १, वृषभ २, सर्प ३ अने वायु ४ आ शकुनि विगेरे चार ध्रुव करणोना अनुक्रमे स्वामी जाणवा."

करणोनुं फळ कहे छे.—

दशामूनि विविष्टीनि दिष्टान्यखिलकर्मसु ।
रात्र्यहर्व्यत्ययाद्भद्राऽप्यदुष्टैवेति तद्विदः ॥ ११ ॥

अर्थ—विष्टि विनानां बाकीनां दशे करणो सर्व कार्यमां शुभ छे. अर्थात् एक विष्टि (भद्रा) करण ज अशुभ छे. तथा भद्रा पण रात्रि अने दिवसना विपर्यासथी अदूषित छे एटले शुभ छे एम तेना विद्वानो कहे छे. अर्थात् रात्रिनी (तिथिना पश्चिमदळनी) भद्रा जो दिवसे आवे अथवा दिवसनी (तिथिना पूर्वदळनी) भद्रा जो रात्रिए आवे तो ते अशुभ नथी.

भद्राना अशुभपणा माटे ग्रंथांतरमां कह्युं छे के.—

"यदि भद्राकृतं कार्यं प्रमादेनापि सिध्यति ।
प्राप्ते तु षोडशे मासे समूलं तद्विनश्यति ॥"

"जो कदाच भद्रामां करेलुं कार्य भूलथी पण सिद्ध थइ गयुं होय तोपण सोळमो मास प्राप्त थये ते कार्य मूळ सहित नाश पामे छे."

कोइ वखत भद्राने प्रशस्य पण कही छे. ते विषे नारचंद्रना टिप्पनकमां कह्युं छे के—

"दाने चानशने चैव घातपातादिकर्मणि ।
खराश्वप्रसवे श्रेष्ठा भद्रान्यत्र न शस्यते ॥"

"दानमां, अनशनमां, घात अने पात विगेरे कर्ममां, तथा गधेडा अने घोडानी प्रसूतिमां भद्रा श्रेष्ठ छे, अन्य कार्यमां श्रेष्ठ नथी."

भद्रा रात्रि अने दिवसना विपर्यासथी अदूषित छे ते विषे कह्युं छे के—

"रात्रिभद्रा यदाऽह्नि स्यादह्नर्भद्रा यदा निशि ।
न तत्र भद्रादोषः स्यात् सर्वकार्याणि साधयेत् ॥"

"रात्रिनी भद्रा जो दिवसे होय अने दिवसनी भद्रा जो रात्रे होय तो ते वखते भद्रानो दोष नथी. ते सर्व कार्योने साधे छे."

वळी "या विष्टिरक्रमप्राप्ता स्यात्" "अन्य दिवसनी भद्रा अन्य दिवसे एटले तेथी बीजे दिवसे आवी होय अथवा अन्य रात्रिनी भद्रा अन्य रात्रिए आवी होय तो ते अदूषित छे (शुभ छे)" आम पण कोइक कहे छे आ बन्ने वचनोनो अभिप्राय ए छे जे पोताना स्थानथी भ्रष्ट थवाने लीधे ते भद्रा निर्बळ छे, परंतु आ बन्ने वचनो बहु संमत नथी, केमके अन्य स्थाने गयेला (रहेला) विषादिकनुं पण मारणस्वरूप नाश पामतु नथी. एम त्रिविक्रम कहे छे अहीं आ प्रमाणे विशेष जाणवो.

"सुरभे वत्स या भद्रा सोमे सौम्ये सिते गुरौ ।
कल्याणी नाम सा प्रोक्ता सर्वकार्याणि साधयेत् ॥"

"हे वत्स (शिष्य)! देवगणना नक्षत्रमां सोम, बुध, शुक्र के गुरुवारे भद्रा आवे तो ते कल्याणी नामनी भद्रा कहेली छे, ते सर्व कार्योने साधनारी छे" वळी—

"स्वर्गेऽजोक्षेणकर्केष्वधः स्त्रीयुग्मधनुस्तुले ।
कुंभमीनालिसिंहेषु विष्टिर्मर्त्येषु खेलति ॥"

"मेष, वृष, मकर अने कर्कना चंद्र होय त्यारे विष्टि (भद्रा) स्वर्गमां क्रीडा करे छे, कन्या, मिथुन, धन अने तुलाना चंद्र होय त्यारे विष्टि पातालमां क्रीडा करे छे, तथा कुंभ, मीन, वृश्चिक अने सिंहना चंद्र होय त्यारे विष्टि मनुष्यलोकमां क्रीडा करे छे."

भद्रानो काळ (समय) स्पष्ट रीते बतावे छे.—

रात्रौ चतुर्थ्येकादश्योरष्टमीराकयोर्दिवा ।
भद्रा शुक्ले तिथौ कृष्णे त्वेकैकोने यथाक्रमात् ॥ १२ ॥

अर्थ—शुक्लपक्षमां चतुर्थी तथा एकादशीनी रात्रिए (पश्चिमदळमां) अने अष्टमी तथा पूर्णिमाए दिवसे (पूर्वदळमा) भद्रा होय छे, अने कृष्णपक्षमा अनुक्रमे एक एक ओछी तिथिए होय छे एटले के कृष्णपक्षमा तृतीया अने दशमीनी रात्रिए (पश्चिमदळमा अने सप्तमी तथा चतुर्दशीए दिवसे (पूर्वदळमा) भद्रा होय छे

अहीं कोइने शंका थाय के—"विष्टि अशुभ होवाथी तेने वर्जवा माटे विष्टि नामनुं एक ज करण कहेवु योग्य छे, परंतु बीजा बव विगेरे करणोनुं वर्णन कर्यु तेनो क्या उपयोग थशे?" आनो जवाब ए छे जे—"संक्रांति विगेरेमा आ सर्व करणोनो उपयोग" कह्युं छे के—

"शकुनिचतुष्पदनागे किंस्तुघ्ने कौलवे वणिज्ये च ।
ऊर्ध्वं संक्रमणं गरतैतिलविष्टिषु पुनः सुप्तम् ॥
ववबालवे निविष्टं सुभिक्षं चोर्ध्वसङ्क्रमे ।
उपविष्टो रोगकरः सुप्तो दुर्भिक्षकारकः ॥"

"शकुनि, चतुष्पद, नाग, किंस्तुघ्न, कौलव अने वणिज्य एटलां करणमां जो संक्रांति बेठी होय तो ते ऊर्ध्व (उभेलुं) संक्रमण कहेवाय छे. गर, तैतिल अने विष्टिमां संक्रांति बेठी होय तो ते सुप्त (सुतेली) कहेवाय छे अने बव तथा बालवमां संक्रांति बेठी होय तो ते बेठेली संक्रांति कहेवाय छे. तेमां जो ऊर्ध्व (उभेली) संक्रांति होय तो सुकाळ थाय, बेठेली होय तो रोगने उत्पन्न करे अने सुतेली होय तो दुकाळ थाय." तथा—"शीतोष्णवर्षर्तुषु सूर्यसंक्रमाः, क्रमेण सुप्तोर्ध्वनिवेशिनः शुभाः ।" "शीत ऋतुमां, उष्ण ऋतुमां अने वर्षा ऋतुमां अनुक्रमे करी सुतेली, ऊर्ध्व अने बेठेली संक्रांति होय तो ते शुभ छे, एटले शीत ऋतुमां सूर्यसंक्रांति सुप्त होय तो ते शुभ छे, उष्ण ऋतुमां सूर्यसंक्रांति ऊर्ध्व होय तो ते शुभ छे अने वर्षा ऋतुमां सूर्यसंक्रांति बेठेली होय तो ते शुभ छे." तथा "पूर्व अने उत्तर एवां बे करणनी संधिमां (एक करणनी समाप्तिमां अने बीजा करणना प्रारंभमां) रहेली संक्रांति सुप्तोत्थिता (सुइने उठेली) नामे कहेवाय छे, ते सर्वदा अशुभ ज छे." एम पूर्णभद्र कहे छे.

विष्टिनां मुखादिक अंगो अने तेना फळने कहे छे.—

बाण ५ द्वि २ दिग् १० जलधि ४ षट् ६ त्रिक ३ नाडिकासु,
वक्त्रं १ गलो २ हृदय ३ नाभि ४ कटी ५ श्च पुच्छम् ६ ।
विष्टेर्विदध्युरिह कार्य १ वपुः २ स्व ३ बुद्धि ४—
प्रेम ५ द्विषां क्षय ६ मिमेऽवयवाः क्रमेण ॥ १३ ॥

अर्थ—विष्टिनी पहेली पांच नाडिका (घडी)ने विष्टिनुं मुख जाणवुं, त्यारपछीनी बे घडीने कंठ जाणवो, त्यारपछीनी दश घडीने हृदय जाणवुं, त्यारपछीनी चार घडीने नाभि जाणवी, त्यारपछीनी छ घडीने कटि जाणवी अने त्यारपछीनी त्रण घडीने पुच्छ जाणवुं. तेमां जो विष्टिने मुखे कार्य कर्युं होय तो ते कार्यनो नाश थाय छे, कंठे कर्युं होय तो शरीरनो नाश (मरण) थाय छे, हृदये कर्युं होय तो द्रव्यनो नाश थाय छे, नाभिए बुद्धिनो नाश थाय छे, कटिए प्री[illegible]य छे, अने पुच्छे अवश्य जयनी प्राप्ति थाय छे. आ विषे लल्ल कहे छे

"शुभाशुभानि कार्याणि
नाडीत्रयमिते पुच्छे

"आ पृथ्वी पर शुभ अथवा अशुभ जे कोइ कार्य असाध्य होय ते त्रण घमीना प्रमाणवाळा विष्टिना पुछे करवाथी सिद्ध थाय छे." तेनुं पुछ आ प्रमाणे कह्युं छे—

"दशम्यामष्टम्यां प्रथमघटिकापञ्चकपरं,
हरिद्यौ ११ सप्तम्यां त्रिदश १३ घटिकान्ते त्रिघटिकम्।
तृतीयायां राकासु च गतसविंशैक २१ घटिके,
ध्रुवं विष्टेः पुच्छं शिवतिथि १४ चतुर्थ्योश्च विगलत् ॥"

"दशम अने आठमे प्रथमनी पांच घमी पछी विष्टिनुं पुछ आवे छे, एटले के ते तिथिए विष्टिनो कटिनी बीजी घमीथी प्रारंभ थाय छे, तेथी पाच घमी पछी पुछ आवे अने त्यारपछी मुख विगेरे कटि पर्यत अंगो आवे छे. अग्यारश अने सप्तमीने दिवसे हृदयनी छेल्ली त्रण घमीथी विष्टिनो प्रारंभ थाय छे, तेथी विष्टिनी तेर घमी गया पछी तेनुं त्रण घमी प्रमाण पुछ आवे छे त्रीज अने पुनमने दिवसे विष्टिनो कंठनी बीजी घमीथी प्रारंभ थाय छे, तेथी विष्टिनी एकवीश घमी गया पछी तेनुं पुछ आवे छे, तथा चोथ अने चौदशने रोज विष्टिनो मुखथी प्रारंभ थाय छे, तेथी विष्टि उतरता छेल्ली त्रण घमी पुछ आवे छे" भद्रा (विष्टि)नो आकार आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"सर्पिणी वृश्चिकी भद्रा दिवारात्र्योः स्मृता क्रमात् ।
सर्पिण्या वदनं त्याज्यं वृश्चिक्याः पुच्छमेव च ॥"

"दिवसनी भद्रा सर्पिणी कही छे, अने रात्रिनी भद्रा वृश्चिकी (वींछण) कही छे. तेमां सर्पिणीनुं मुख अने वृश्चिकीनुं पुछ तजवा योग्य छे" आ प्रमाणे केटलाक कहे छे. वळी बीजा कोइ एम कहे छे के—"शुक्लपक्षनी भद्रा सर्पिणी छे अने कृष्णपक्षनी भद्रा वृश्चिकी छे"

अहीं विष्टिना मुख विगेरे अंगो पांच विगेरे घमीवाळां कह्यां छे ते मात्र व्यवहारथी
सामान्य रीते साठ घमीनी तिथि होय तो त्रीश घमीनी अर्धी तिथि थाय अने
अर्थ—ज आ कहेली घमीनी व्यवस्था घटी शके छे, परंतु तिथि साठ घमीथी न्यून के
तथा पूर्णिमध्य त्यारे अर्धी तिथि पण न्यूनाधिक होय ते वखते मुखादिकनी पांच विगेरे
ओठी तिथि-न्यूनाधिक थाय छे. दाखला तरीके कोइ तिथि जघन्यथी ५४ घमी होय
दळमा अने उत्कृष्टथी २७ घमीनी होय, माटे विष्टि पण २७ घमीनी होय, तथा कोइ तिथि
अहीं कोइने शंका होय त्यारे ३३ घमीनी अर्धी तिथि होय, माटे विष्टि पण ३३ घमीनी
एकज करण कहेवुं य मान मध्यम होय त्यारे विष्टि पण मध्यम प्रमाणवाळी होय छे
योग थशे?" आनो जवा साठ पळ होवाथी तेने विष्टिनी घमी ३० होवाथी त्रीशे भाग
छे" कह्युं छे के— टे विष्टि त्रीश घमीथी जेटली घमी न्यून के अधिक होय तेटली

घमीथी बमणा पळ दरेक अंगनी घमीउंमांथी न्यून के अधिक करवा. जेमके कोइ तिथिए विष्टि २ए घमीनी होय त्यारे जङाना मुखनी पांच घमीमांथी दश पळ न्यून करवा, तेटलुं विष्टिनुं मुख समजवुं. ए ज रीते विष्टिनुं गळुं वे घमीनुं छे तेथी वे घमीमांथी चार पळ न्यून करवा, तेटलुं विष्टिनुं गळुं जाणवुं. ए ज प्रमाणे विष्टिनुं हृदय दश घमीनुं छे तेथी तेमांथी वीश पळ न्यून करवा, तथा नाजि चार घमीनी छे माटे चार घमीमांथी आठ पळ न्यून करवा, तथा कटि छ घमीनी छे माटे तेमांथी बार पळ न्यून करवा, अने पुछ त्रण घमीनुं छे तेथी तेमांथी छ पळ न्यून करवा. आ मान त्रीश घमीमांथी एक घमी न्यून एटले २ए घमीनी विष्टि होय त्यारे समजवुं, पण ज्यारे विष्टि त्रीश घमीमांथी वे घमी न्यून होय एटले के २७ घमीनी होय, त्यारे उपर कहेलुं हानिनुं प्रमाण बमणुं करीने न्यून करवुं. जेमके विष्टि एक घमी उंछी हती त्यारे पांच घमीना प्रमाणवाळा मुखमांथी दश पळ न्यून कर्या हता, तेथी ज्यारे विष्टि वे घमी ओछी छे त्यारे तेथी बमणा एटले वीश पळ न्यून करवा, अने ज्यारे विष्टि त्रीश घमीमांथी त्रण घमी न्यून होय एटले के सत्यावीश घमी होय त्यारे ते ज हानिनुं प्रमाण त्रण गणुं ओछुं करवुं. जेम एक घमी न्यून हती त्यारे विष्टिना मुखमां दश पळ न्यून कर्या हता तेम त्रण घमी न्यून होवाथी त्रीश पळ न्यून करवा जोइए. ए ज प्रमाणे विष्टि त्रीश घमी उपर एक, वे के त्रण घमी विगेरेनी वृद्धि होय त्यारे पण ते ज प्रमाणे विष्टिना ते ते अंगनी घमीथी बमणा करेला पळो ते ते अंगनी घमीमां वधारवा. जेमके विष्टि एकत्रीश घमी होय तो तेना मुखनी पांच घमी छे, तेथी तेमां दश पळ वधारे समजवा विगेरे.

विष्टिनुं मुख एकांतपणे तजवा योग्य छे, माटे यात्रादिक समयमां ते विष्टि जे प्रकारे सन्मुख थाय छे ते कहे छे.—

जद्रेन्द्रा १४ ष्टा ७ श्व ७ तिथ्य १५ छिध ४ दशे १० शा ११ ग्नि ३ मिते तिथौ।
दिग् ७ यामा ७ ष्टकयोर्नेष्टा संमुखी पृष्ठतः शुजा ॥ १४ ॥

अर्थ—चतुर्दशीने दिवसे पहेले पहोरे विष्टि पूर्व दिशामां होय छे, अष्टमीना बीजा प्रहरे अग्नि खूणामां होय छे, सप्तमीना त्रीजे प्रहरे दक्षिणमां होय छे, पूर्णिमाना चोथा प्रहरे नैरुत्य खूणामां होय छे, चतुर्थीना पांचमे प्रहरे पश्चिममां होय छे, दशमीने छठे प्रहरे वायव्यमां होय छे, एकादशीने सातमे प्रहरे उत्तर दिशामां होय छे अने तृतीयाना आठमा प्रहरे ईशान खूणामां होय छे. आ विष्टि प्रयाणादिक कार्यमां सन्मुख होय तो ते अशुज जाणवी, अने पाछळ होय तो ते शुज जाणवी. आ विष्टिनी दिशा विगेरे जोवानी बीजी रीत—

"घुजाद्रणी सिते पक्षे गृठिजूढ सितेतरे ।
व्यञ्जनैस्तिथयो ज्ञेयाः स्वरैश्च प्रहरा दिशः ॥"

शुक्लपक्षमां घु, जा, द्र अने णी तथा कृष्णपक्षमां गृ, ठि, जू अने ढ ए अक्षरोमां व्यंजने करीने तिथि जाणवी अने स्वरे करीने प्रहर तथा दिशा जाणवी. एटले के घु ए चोथो व्यंजन अने पांचमो स्वर छे तेथी चोथने दिवसे पांचमी दिशा (पश्चिम) मा पाचमा प्रहरे प्रयाण करनारने विष्टि सन्मुख आवे छे, एज प्रमाणे जा ए आठमो व्यंजन अने बीजो स्वर होवाथी आठमने दिवसे बीजी दिशामां एटले अग्नि खूणामा बीजे प्रहरे प्रयाण करनारने भद्रा सन्मुख थाय छे द्र एमां द ए अग्यारमो व्यंजन अने ऋ ए सातमो स्वर होवाथी अग्यारशने दिवसे सातमे प्रहरे सातमी दिशा (उत्तर) मां प्रयाण करनारने विष्टि सन्मुख आवे छे णी एमां ण ए पंदरमो व्यंजन अने ई ए चोथो स्वर होवाथी पूर्णिमाने दिवसे चोथा प्रहरे चोथी दिशा (नैर्ऋत्य) मां प्रयाण करनारने विष्टि सन्मुख होय छे. ए ज प्रमाणे गृ, ठि, जू अने ढ ए अक्षरोमां पण जाणी लेवुं

॥ इति तिथिद्वारम् ॥ १ ॥

॥ अथ वारद्वारम् ॥ २ ॥

हवे बीजुं वारद्वार कहे छे, तेमा वारनो आरंभ क्यारे थाय छे? ते कहे छे.—

वारादिरुदयादूर्ध्वं पलैर्मेषादिगे रवौ ।
तुलादिगे त्वधस्त्रिंशत्तद्द्युमानान्तरार्धजैः ॥ १५ ॥

अर्थ—मेषादिक छ राशिमा सूर्य रह्यो होय त्यारे सूर्योदयनी पछी ते दिवसना दिनमान अने त्रीशनी वच्चेना आंतराना अर्ध पळवडे वारनो आरंभ थाय छे, अने तुलादिक छ राशिमा सूर्य रह्यो होय त्यारे सूर्योदयनी पहेला तेटला पळे वारनी प्रवृत्ति थाय छे जेमके गुर्जर देशमा कर्क संक्रातिए उत्कृष्ट दिनमान घडी ३३ पळ ४८ नुं होय छे, तेमाथी त्रीश बाद करतां बाकी घडी ३ पळ ४८ रह्या तेनो अर्ध भाग करता घडी १ पळ ५४ रह्या एटले के कुल ११४ पळ रह्या, माटे ते दिवसे सूर्योदय पछी ११४ पळे वारनो आरंभ जाणवो ते ज प्रमाणे मकर संक्रातिमा जघन्य दिनमान घडी २६ पळ १२ नुं होय छे तेने त्रीशमाथी बाद करता बाकी घडी ३ पळ ४८ रह्या. तेने प्रथमनी जेम अर्धु करता ११४ पळ रह्या, माटे ते दिवसे सूर्योदय पहेला ११४ पळे वारनी प्रवृत्ति जाणवी. ए ज प्रमाणे मध्यम दिनमान होय त्यारे पण आ रीते ज जाणवुं. आ वारना आरंभनो समय कहेवानु प्रयोजन ए छे जे आगळ जे काळहोरा तथा अर्ध प्रहर विगेरे कहेवामा आवशे तेनी गणतरी वारना आरंभथी करवानी छे. दिनमान लाववानो स्थूल उपाय–सामान्य उपाय आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"रसद्वि २६ नाड्योऽर्कपला १२ मृगे स्युः, सचापकुंभेऽष्टकृतैः पलैस्ताः २६–४८ ।
अलौ च मीनेऽष्टयमाः सशक्रा २८–१४, मेषे तुलायामपि त्रिंशदेव ३० ॥
कन्यावृषे नृशिखिनो ३१ऽङ्गवेदैः ४६, सार्कास्त्रिरामा मिथुने च सिंहे ३३–१२ ।
कर्के त्रिरामा वसुवेदयुक्ता ३३–४८, एषा मितिः संक्रमवासराणाम् ॥"

"मकर संक्रांतिने पहेले दिवसे घडी २६ पळ १२ नुं दिनमान होय छे, धन अने कुंभ संक्रांतिए घडी २६ पळ ४८ नुं दिनमान होय छे, वृश्चिक अने मीन संक्रांतिए घडी २८ पळ १४ नुं दिनमान होय छे, मेष अने तुला संक्रांतिए ३० घडीनुं दिनमान होय छे, कन्या अने वृष संक्रांतिए घडी ३१ पळ ४६ नुं दिनमान होय छे, मिथुन अने सिंह संक्रांतिए घडी३३ पळ १२ नुं दिनमान होय छे, तथा कर्क संक्रांतिना पहेले दिवसे घडी ३३ पळ ४८ नुं दिनमान होय छे. आ प्रमाणे ते ते संक्रांतिने पहेले दिवसे दिनमान होय छे, अने त्यारपछी—

"एकार्क १–१२ पञ्चद्विशरा २–५२ स्त्रिदन्ता ३–३२–
स्त्रिदन्त ३–३२ पञ्चद्विशराः २–५२ कुसूर्याः १–१२ ।
मृगादिषट्केऽहनि वृद्धिरेवं, कर्कादिषट्केऽपचितिः पलाद्या ॥"

"मकर संक्रांतिमां दरेक दिवसे पळ १ विपळ १२ एटलुं दिनमान वृद्धि पामे छे, कुंभ संक्रांतिमां पळ २ विपळ ५२ दरेक दिवसे वृद्धि पामे छे, मीन संक्रांतिमां पळ ३ विपळ ३२ वृद्धि पामे छे, मेष संक्रांतिमां पळ ३ विपळ ३२, वृष संक्रांतिमां पळ २ विपळ ५२ तथा मिथुन संक्रांतिमां पळ १ विपळ १२ एटलुं दिनमान दरेक दिवसे वृद्धि पामे छे. ए ज रीते कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक अने धन संक्रांतिमां अनुक्रमे उपर प्रमाणे तेटलुं तेटलुं दिनमान हानिने पामे छे. दिनमान जेटलुं वृद्धि पामतुं होय तेटली रात्रिना माननी हानि जाणवी अने दिनमाननी जेटली हानि होय तेटली रात्रिना माननी वृद्धि जाणी लेवी. ए प्रमाणे वृद्धि हानि करवाथी कुल पळनी संख्या आ प्रमाणे आवे छे—

"वड्ढइ छसु मयराइसु पलाण छत्तीस ३६ छलसि ८६ छहिअसयं १०६ ।
कमउक्कमओ हायइ तहेव कक्काइरासीसु ॥"

"मकर विगेरे छ संक्रांतिमां ३६, ८६ अने १०६ पळ क्रमे तथा उत्क्रमे वृद्धि पामे एटले के मकर संक्रांतिमां ३६, कुंभमां ८६, मीनमां १०६, मेषमां १०६, वृषमां ८६ ने मिथुन संक्रांतिमां ३६ पळनी दिनमानमां वृद्धि थाय छे. ते ज प्रमाणे कर्क विगेरे क्रांतिमां ३६, ८६ अने १०६ पळ क्रमे तथा उत्क्रमे हानि पामे छे.

दिनमाननुं यंत्र—

	संक्रांतिना प्रथम दिवसनुं मान		मासावधि प्रतिदिन मान			आखा मासमां वृद्धि हानिना कुल पळ.
	घमी	पळ		पळ	विपळ	
मकर	२६	१२	वृद्धि	१	१२	३६
कुंज	२६	४८	वृद्धि	२	५२	८६
मीन	२८	१४	वृद्धि	३	३२	१०६
मेप	३०	०	वृद्धि	३	३२	१०६
वृप	३१	४६	वृद्धि	२	५२	८६
मिथुन	३३	१२	वृद्धि	१	१२	३६
कर्क	३३	४८	हानि	१	१२	३६
सिंह	३३	१२	हानि	२	५२	८६
कन्या	३१	४६	हानि	३	३२	१०६
तुला	३०	०	हानि	३	३२	१०६
वृश्चिक	२८	१४	हानि	२	५२	८६
धन	२६	४८	हानि	१	१२	३६

दिनशुद्धि ग्रंथमा आ प्रमाणे विशेप कह्यो ठे —

"विछिअकुंजाइतिए निसि मुहि विस धणुहककतुलिमझे ।
मिगमिहुणकन्नसीहे निसि अंते संकमइ वारो ॥"

"वृश्चिक, कुंज, मीन अने मेप आ चार संक्रातिमां रात्रिना प्रारंज वखते वारनो प्रारंज थाय ठे, वृपज, धन, कर्क अने तुला संक्रांतिमां अर्ध रात्रिए वारनो प्रारंज थाय ठे, मकर, मिथुन, कन्या अने सिंह संक्रातिमा रात्रिना अंतमा वारनो प्रारंज थाय ठे."

"राम ३० रस ६० नन्द ए० वाणा ५० वेदा ४० ष्टौ ८० सप्त ७० दशहताः कार्याः।
मन्दादीनां दिनतः क्रमेण जोगस्य नाड्यः स्युः ॥"

"शनिवारनी जोगघमी दिवसना प्रारंजथी ३० घमी सुधी ठे, त्यारपठीनी ६० घमी रविनी जोगनामी (घमी) ठे, त्यारपठीनी ए० घमी सोमनी, पठी ५० घमी मंगळनी, पठीनी४० घमी बुधनी, पठीनी ८० घमी गुरुनी अने त्यारपठीनी ७० घमी शुक्रवारनी जोगनामी ठे (शनिवारनी सवारथी आरंजीने आवता शनिवारनी सवारे आ सर्व घमीउं पूर्ण थाय ठे) माटे ज शनिवार सुतो होय तो तेने शुज कह्यो ठे, केमके शनिवारे दिवसनी त्रीश घमी पूरी थये रात्रे रविनी जोगघमी होवाथी शनि सुतेलो कहेवाय ठे, माटे ते शुज ठे.

हवे वारनां नामो तथा तेमनुं फळ कहे छे—

रविचन्द्रमंगलबुधा गुरुशुक्रशनैश्चराश्च दिनवाराः ।
रविकुजशनयः क्रूराः सौम्याश्चान्ये पदोनफलाः ॥ १६ ॥

अर्थ—रवि, सोम, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए सात वार छे. तेमां रवि, मंगल अने शनि ए त्रण वार क्रूर छे अने बाकीना चार वार सौम्य छे. आ सर्वे वारो $\frac{3}{4}$ शुभाशुभ फळ आपनारा छे. एटले के वीश वसानी अपेक्षाए पंदर वसा जेटलुं फळ आपे छे. क्रूर वारमां करेलुं कार्य पंदर वसा अशुभ फळ आपे छे, अने सौम्य वारमां करेलुं कार्य पंदर वसा शुभ फळ आपे छे. कह्युं छे के—

"रविमन्दारवारेषु यस्मिन् संक्रमते रविः ।
तस्मिन्मासि भयं विद्याद्दुर्भिक्षावृष्टितस्करैः ॥"

"रवि, शनि के मंगळवारे जो सूर्यनी संक्रांति थइ होय तो ते मासमां दुकाळ, अनावृष्टि तथा चोरादिकनो भय थाय छे एम जाणवुं;" परंतु आ त्रण वारोनी क्रूरता जेटली दिवसे गणाय छे तेटली रात्रिए गणाती नथी. कह्युं छे के—"न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ" "रात्रिए वारना दोष समर्थ थता नथी." वारोने विषे आ प्रमाणे कार्यो करवानां कह्यां छे.—राज्याभिषेक, नोकरी, विचार, शस्त्र, औषध, विद्या, संग्राम, प्रयाण, सुवर्ण, तांबु, ऊन, अलंकार, शिल्प (कारीगरी), पुण्यकर्म तथा उत्सवादिक कार्यो रविवारे करवाथी सिद्ध थाय छे. रूपुं, गायन, भोजन, खेती तथा वेपार विगेरे कार्यो सोमवारे करवाथी सिद्ध थाय छे. सर्व क्रूर कर्म, रक्तस्राव, सुवर्ण, परवाळा, खाण, धातु, सेना निवेशादिक कार्यो मंगलवारे करवाथी सिद्ध थाय छे. अक्षर शीखवा, कान विंधवा, कविता करवी, कसरत करवी, तर्क करवो, वाद विवाद करवो तथा कळाभ्यास ए विगेरे कार्यो बुधवारे सिद्ध थाय छे. सर्वे शुभ मांगलिक कार्य, दीक्षा, विद्या, यात्रा, औषध विगेरे गुरुवारे सिद्ध थाय छे. दीक्षाने वर्जीने बुध अने गुरुमां कहेलां सर्व कार्यो शुक्रवारे सिद्ध थाय छे, अने दीक्षा, घरप्रवेश, घरनो आरंभ विगेरे स्थिर कार्य तथा क्रूर कार्य शनिवारे करवाथी सिद्ध थाय छे. एम कह्युं छे, सामान्य रीते कहीए तो—

"सर्वार्थसाधका वारा गुरुशुक्रबुधेन्दवः ।
प्रोक्तमेव कृतं कर्म भौमार्कार्किषु सिध्यति ॥"

"गुरु, शुक्र, बुध अने सोम ए वारो सर्व कार्यना साधक छे, अने मंगळ, रवि तथा शनिवारे जे कार्य करवानुं कह्युं होय ते ज करवाथी सिद्ध थाय छे." आ दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे. तथा—

"लाक्षाकुसुंभमंजिष्ठारागे काञ्चनभूषणे ।
शस्तौ भौमरवी लोहोपलत्रपुविधौ शनिः ॥"

"लाख, कसुंबो अने मजिठ ए रंगने विषे तथा सुवर्णना भूषणने विषे मंगळ तथा रवि सारा छे, अने लोढुं, पत्थर तथा सीसाने विषे शनिवार सारो छे" तथा—

"द्रव्यादिदानग्रहणे निधाने, वाणिज्यसेवागुरुराजयोगे।
कलाकृषिस्त्रीशुभकर्मवित्तन्यासौषधेष्वारशनी न शस्तौ॥"

"द्रव्यादिक लेवा देवामा, निधानमां, वेपारमा, नोकरीमां, गुरु अने राजना दर्शनमा, कळा शीखवामां, खेती करवामां, स्त्रीना समागममां, शुभ कार्यमा, द्रव्यनी थापण मूकवामां अने औषध खावामा आटला कार्यमां मगल तथा शनि सारा नथी" एम यतिवल्लभमा कह्युं छे

आ विषे विशेषमां लल्ल आ प्रमाणे कहे छे —

"उपचयकरस्य कुर्याद्ग्रहस्य वारे स्ववारविहितं यत्।
अपचयकरग्रहदिने कृतमपि सिद्धिं न याति पुनः॥"

"पोतपोताना वारमा करवाना जे कार्य कह्या छे ते उपचय (वृद्धि) करनारा ग्रहन वारने विषे करवामां आवे छे, पण अपचय (हानि) करनारा ग्रहना वारने विषे करवाम आवता नथी, कारण के ते वारमा करेलुं कार्य कोइ पण प्रकारे सिद्ध थतुं नथी आगळ कहेवामां आवता गोचरादिक विधिए करीने ज्यारे जे ग्रह जेने अनुकूळ होय ते ग्रह तेने ते वखते उपचय करनार कहेवाय छे अने प्रतिकूळ होय तो ते अपचय करनार कहेवाय

हवे वारोने आश्रीने काळहोरा कहे छे —

होराः पुनरर्कसितज्ञचन्द्रशनिजीवभूमिपुत्राणाम्।
सार्धघटीद्वयमानाः स्ववारतस्तास्तु पूर्णफलाः॥ १७॥

अर्थ—अढी घडीनी एक होरा होय छे तेमा जे दिवसे जे वार होय तेनी पहेली होरा जाणवी पछी पोताना वारथी जे छठो वार होय ते वारनी बीजी होरा, तेनाथी जे छठो वार होय तेनी त्रीजी होरा जाणवी कह्यु छे के—"अर्कसितज्ञचन्द्रशनिजीवभूमिपुत्राणां" "रविथी छठो शुक्र छे, तेथी छठो बुध छे, तेथी छठो सोम छे, तेथी छठो शनि, तेथी छठो गुरु अने तेथी छठो मंगळवार छे" ए प्रमाणे एक अहोरात्रिमां चोवीश होरा आवे छे जेमके रविवारथी छठो शुक्र छे, तेनाथी छठो बुध छे अने तेनाथी छठो सोम छे, ए प्रमाणे गणवुं एटले के रविवारे पहेली होरा रविनी, बीजी शुक्रनी, त्रीजी बुधनी, चोथी चंद्रनी, पाचमी शनिनी, छठी गुरुनी, सातमी मंगळनी अने आठमी रविनी ए प्रमाणे अनुक्रमे वारंवार गणवुं ते छेवट अहोरात्रिने अंते साठ घडीमां थइने चोवीश होरा थाय ते ज प्रमाणे सोमवारे पहेली चंद्र होरा आवे छे तेने पण छठा छठा वारनी होरा ए प्रमाणे चोवीश सुधी गणवु मंगळवारे पहेली होरा मंग-

ळनी आवे छे. ए प्रमाणे साते वारनी होरा जाणवी. आगळ अर्धी राशिने होरा नामथी कहेवामां आवशे, माटे आनुं नाम काळहोरा कहेवाय छे. आ काळहोरानां नाम चोघडीयां प्रमाणे जाणवां एम नारचंद्रमां लख्युं छे. अहीं घंटालाला न्याये करीने वार शब्दनो बन्नेमां संबंध होवाथी पोताना वारने दिवसे ते ज वारनी होराने समये जो कार्य करवामां आवे तो कार्य करनारने पूर्ण फळ एटले के वारनुं पोतानुं पंदर वसा फळ अने पांच वसा होरानुं मळी वीश वसा शुभ के अशुभ फळ मळे छे. ते विषे लल्ल कहे छे के— "वारफलं होरायां" "वारोनुं फळ होरामां पूर्ण मळे छे." आ होरा कहेवानुं कारण ए छे के—

"यस्य ग्रहस्य वारे यत्किञ्चित्कर्म प्रकीर्तितम् ।
तत्तस्य कालहोरायां पूर्णं स्यात्पूर्णमेव हि ॥"

"जे ग्रहना वारने विषे जे कार्य करवानुं कह्युं होय ते कार्य ते वारनी काळहोराने वखते करवाथी तेनी शीघ्र सिद्धि थाय छे." एम यतिवल्लभमां कह्युं छे. वळी—

"होराफलवारफले निन्द्ये द्वे अपि न जातु गृह्णीत ।
एकस्मिन् शुभफलदे तयोश्च कार्यं शुभं कुर्यात् ॥"

"होरानुं फळ तथा वारनुं फळ ए बन्ने जो निंद्य (अशुभ) होय तो ते कदापि ग्रहण करवुं नहीं एटले ते समये कांइ पण कार्य करवुं नहीं, अने ते बन्नेमांथी जो एक शुभ फळ आपनार होय तो ते समये शुभ कार्य करवा लायक छे." एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

हवे वारने विषे कुवेळा कहे छे.—

त्याज्योऽर्धयामो वेदा ४ द्रि ७ द्वि २ पञ्चा ५ ष्ट ८ त्रि ३ षट्
सूर्यादौ कालवेलार्धयामाङ्कात्सैकपञ्चमी ॥ १८ ॥

अर्थ—रविवारथी आरंभीने अनुक्रमे चोथो, सातमो, बीजो, पांचमो, आठमो, त्रीजो अने छठ्ठो अर्ध प्रहर (चोघडीयुं) शुभ कार्यमां तजवा लायक छे. एटले रविवारे चोथुं चोघडीयुं, सोमवारे सातमुं चोघडीयुं, मंगळवारे बीजुं, बुधवारे पांचमुं, गुरुवारे आठमुं, शुक्रवारे त्रीजुं अने शनिवारे छठ्ठुं चोघडीयुं शुभ कार्यमां तजवुं. आ विषे दिनशुद्धिमां आ प्रमाणे कह्युं छे के—

"सोल १६ ऋ ८ दसण ३२ दुग २ इग १ चउ ४ ...
जत्ताइसु अइअहमा पुवाइ छछ छछ दिसि ..."

जे अर्ध प्रहर वारने आश्रीने त्याग करवाना कह्या छे ते अनुक्रमे सोळ, आठ, बत्रीश, बे, एक, चार अने ... छठ्ठी दिशाए यात्रादिक कार्यमां अत्यंत तजवा ... प्रहारनी मध्यनी सोळ पळ पूर्व दिशामां अत्यंत ... पूर्व दिशामां यात्रादिक करवानो निषेध छे.

आवदार्थ ... कारन ... अष्टमांश ... आटलो अष्ट...
...रतः ।
...स्तु सः ॥ २० ॥
...णा करवाथी जे संख्या आवे
... ते ज संख्यामांथी एक छठो
जेमके रविवारथी शनिवार सा-
...क थयो, अने रात्रिए तेरमुं मुहूर्त
...टे छने वमणा करवाथी वार थया,
रात्रिए अग्यारमुं मुहूर्त कुलिक कहे-
... मुहूर्त शब्द आप्यो छे, अने ते मुहूर्त
... ठेकाणे (कुलिकमां) दिनमान अ...
...टले के जघन्य दिनमान होय त्यारे घडी
होय त्यारे घडी २ पळ १७ ...

अश्विनी नक्षत्रथी आरंभीने अनुक्रमे हयवदनादिक आकारवाळां नक्षत्रो कहेलां : एटले के अश्विनी नक्षत्र अश्वना मुखना आकारवाळुं छे १, भरणी भग (योनि)न आकारवाळुं छे २, कृत्तिका क्षुर (अस्त्र)ना आकारवाळुं छे ३. ए प्रमाणे अनुक शकट (गाडुं) ४, मृगनुं मस्तक ५, मणि ६, घर ७, बाण ८, चक्र ९, किल्लो १०, शय ११, पर्यंक १२, हाथ १३, मोती १४, परवाळा १५, तोरण १६, मणि १७, कुंडळ १८ सिंहनां पगलां १९, स्वपन (शय्या) २०, हस्तिनी चाल २१, शृंगाटक २२, त्रिविक्रम २३ मृदग २४, वृत्त (गोळ) २५, द्वियामल २६, पर्यंक २७ अने मुरज (वाजित्र विशेष २८. आवा आकारवाळां कहेलां छे.

दिशाओनो क्रम आ प्रमाणे छे —चित्रा अने स्वाति नक्षत्रना उदयना मध्य भाग पूर्व दिशा छे, ते बन्नेना अस्तना मध्यमा पश्चिम दिशा छे, ध्रुवनो तारो ज्या होय ते उ दिशा छे अने तेनी सन्मुखनी दिशा दक्षिण छे

जे जे नक्षत्रो जे जे दिशामां चालनारा छे ते कहे छे —

दक्षिणमार्गेऽश्लेपा १ ब्राह्मत्रय ४ करयुगे ६ द्विपतिपङ्क्रम् १२।
उत्तरतः पुनरभिजित्त्रय ३ मश्वित्रय ६ यौनयुगलानि ८ ॥ १ ॥
आजपादद्वयं १० स्वात्या ११ दित्ये १२ चेति भ्रमन्ति खे।
मध्यमार्गे शतभिषक् १ पुष्य २ पौष्ण ३ मघा ४ इति ॥ २ ॥

अश्लेपा, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूळ, पूर्वापाढा, उत्तरापाढा आ बार नक्षत्रो दक्षिण मार्गमा चाले छे अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, स्वाति, पुनर्वसु आ बार नक्षत्रो उत्तर मार्गमा चाले छे तथा शतभिषक्, पुष्य, रेवती, मघा ए चार नक्षत्रो मध्य भागे चालनारां छे (आ सर्व हकीकत व्यवहार प्रकाशमा छे)

चंद्रथी कइ कइ दिशामा नक्षत्रो रहेला छे ते कहे छे —

वे फग्गुणि २ भद्दवया ४ सवण ५ धणिष्ठा ६ य रेवइ ७ भरणी ८।
असिणि ९ सयभिस १० साई ११ अभिजु १२ त्तरजोइणो चदे ॥ १ ॥
पुणवसु १ रोहिणि २ चित्ता ३ मह ४ जिठ ५ णुराह ६ कत्तिअ ७ विसाहा ८।
चदस्स उभयजोगा अह दक्खिण जोइणो चंदे ॥ २ ॥

पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, भरणी, अश्विनी, शतभिषक्, स्वाति अने अभिजित् आ बार नक्षत्रो चंद्रथी उत्तर तरफ रहे छे, एटले आ नक्षत्रोथी दक्षिण तरफ रहीने चंद्र गति करे छे पुनर्वसु, रोहिणी, चित्रा, मघा, ज्येष्ठा, अनुराधा, कृत्तिका अने विशाखा ए आठ नक्षत्रो चंद्रनी बन्ने

एटले उत्तर तथा दक्षिण बाजुए रहे छे, एटले के कोइ वखत दक्षिण तरफ अने कोइ वखत उत्तर तरफ रहे छे. तथा बाकीनां एटले पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, हस्त, मूळ, अश्लेषा, मृगशिर, आर्द्रा अने पुष्य ए आठ नक्षत्रो चंद्रथी दक्षिणमां रहे छे.

तिथि तथा नक्षत्रनुं संपूर्ण बळ कइ वखते होय छे ते कहे छे.—

तिथिर्धिष्ण्यं च पूर्वार्द्धे बलवद्दुर्बलं ततः ।
नक्षत्रं बलवद्रात्रौ दिने बलवती तिथिः ॥ १ ॥ (व्यवहारसार)

दिवसना पूर्वार्ध भागमां तिथि तथा नक्षत्र संपूर्ण बळवान् होय छे, अने त्यारपछी दुर्बळ थाय छे. रात्रिए केवळ नक्षत्रनुं ज बळ होय छे, अने दिवसे केवळ तिथि ज बळवान् होय छे.

॥ इति नक्षत्रद्वारम् ॥ ३ ॥

॥ अथ योगद्वारम् ॥ ४ ॥

रवि विगेरे वारने विषे तिथि तथा नक्षत्रने आश्रीने शुभ तथा अशुभ योग कहे छे. तेमां प्रथम रविवारे शुभ योग कहे छे.—

भानौ भूत्यै करादित्यपौष्णब्राह्ममृगोत्तराः ।
पुष्यमूलाश्विवासव्यश्चैकाष्टनवमी तिथिः ॥ ३९ ॥

अर्थ—रविवारे हस्त, पुनर्वसु, रेवती, रोहिणी, मृगशिर, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, पुष्य, मूळ, अश्विनी अने धनिष्ठा नक्षत्र होय तथा पडवो, आठम अने नोम तिथि होय तो ते शुभ योगने माटे छे. अहीं वार अने तिथि, तथा वार अने नक्षत्र एम बन्नेनो योग होय तो द्विक शुभ योग जाणवो, अने वार, नक्षत्र तथा तिथि ए त्रणे मळतां होय त्यारे त्रिक शुभ योग जाणवो. ए प्रमाणे अशुभ योगमां पण जाणवुं. ३९.

रविवारे अशुभ योग कहे छे.

न चार्के वारुणं याम्यं विशाखात्रितयं मघा ।
तिथिः षट्सप्तरुद्रा ११ र्क १२ मनु १४ संख्या तथेष्यते ॥ ४० ॥

अर्थ—रविवारे वारुण (शतभिषक्), याम्य (भरणी), विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा अने मघा नक्षत्र होय, तथा छठ, सातम, अग्यारश, बारश अने चौदश, ए तिथिओमांनी कोइ पण तिथि होय तो ते इच्छाती नथी, अर्थात् ते दिवसे अशुभ योग जाणवो. अहीं विशाखा त्रितय लख्युं छे तेथी अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग थाय छे. एटले के रविवारे विशाखा नक्षत्र होय तो उत्पात योग, अनुराधा होय तो मृत्यु योग

अने ज्येष्ठा होय तो काण योग जाणवो. ए प्रमाणे आगळ पण कुयोगना श्लोकमां ज्यां त्रिक शब्द आवे त्यां पण उत्पात विगेरे त्रण योग अनुक्रमे जाणवा. ४०.

सोमवारे शुभ योग कहे छे—

सोमे सिद्ध्यै मृगब्राह्ममैत्राण्यार्यमणं करः ।
श्रुतिः शतभिषक् पुष्यस्तिथिस्तु द्विनवाभिधा ॥ ४१ ॥

अर्थ—सोमवारे मृगशिर, ब्राह्म (रोहिणी), मैत्र (अनुराधा), आर्यमण (उत्तराफाल्गुनी), कर (हस्त), श्रुति (श्रवण), शतभिषक् अने पुष्य नक्षत्र होय तथा बीज के नोम तिथि होय तो ते दिवसे शुभ योग जाणवो ४१.

सोमवारे अशुभ योग कहे छे.—

न चन्द्रे वासवाषाढात्रयार्द्राश्विद्विदैवतम् ।
सिध्ध्यै चित्रा च सप्तम्येकादश्यादित्रयं तथा ॥ ४२ ॥

अर्थ—सोमवारे वासव (धनिष्ठा), पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित्, आर्द्रा, अश्विनी अने द्विदैवत (विशाखा) अने चित्रा नक्षत्र होय, तथा सातम, अग्यारश, बारश अने तेरश तिथि होय तो ते दिवसे अशुभ योग जाणवो. अहीं षाढात्रय एटले पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा अने अभिजित् नक्षत्र होय तो अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग पण जाणवा ४२

मंगळवारे शुभ योग कहे छे—

भौमेऽश्विपौष्णाहिर्बुध्नमूलराधार्यमाग्निभम् ।
मृगः पुष्यस्तथाश्लेषा जया षष्ठी च सिद्धये ॥ ४३ ॥

अर्थ—मंगळवारे अश्विनी, पौष्ण (रेवती). आहिर्बुध्न (उत्तराभाद्रपद), मूल, राधा (विशाखा), अर्यम (उत्तराफाल्गुनी), अग्निभ (कृत्तिका), मृगशिर, पुष्य अने अश्लेषा नक्षत्र होय तथा जया एटले त्रीज, आठम अने तेरश तथा छठ तिथि होय तो ते सिद्धिने माटे छे, एटले ते दिवसे शुभ योग जाणवो ४३

मंगळवारे अशुभ योग कहे छे.—

न भौमे चोत्तराषाढामघार्द्रावासवत्रयम् ।
प्रतिपद्दशमी रुद्रमिता च मता तिथिः ॥ ४४ ॥

अर्थ—मंगळवारे उत्तराषाढा, मघा, आर्द्रा, वासवत्रय एटले धनिष्ठा, शतभिषक् अने [illegible] नक्षत्र होय तथा पडवो, दशम अने अग्यारश तिथि होय तो ते दिवसे अशुभ

योग जाणवो. अहीं पण वासवत्रय एटले धनिष्ठा, शतभिषक् अने पूर्वाभाद्रपद होय तो अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग पण जाणवा. ४४.

बुधवारे शुभ योग कहे छे.—

बुधे मैत्रं श्रुतिज्येष्ठापुष्यहस्ताग्निभत्रयम् ।
पूर्वाषाढार्यमर्क्षे च तिथिर्भद्रा च भूतये ॥ ४५ ॥

अर्थ—बुधवारे मैत्र (अनुराधा), श्रवण, ज्येष्ठा, पुष्य, हस्त, अग्निभ (कृत्तिका) विगेरे त्रण एटले कृत्तिका, रोहिणी अने मृगशिर, पूर्वाषाढा तथा अर्यम एटले उत्तराफाल्गुनी आमांनुं कोइ नक्षत्र होय तथा भद्रा एटले बीज, सातम अने बारश एमांनी कोइ तिथि होय तो ते दिवसे शुभ योग जाणवो. ४५.

बुधवारे अशुभ योग कहे छे.—

न बुधे वासवाश्लेषारेवतीत्रयवारुणम् ।
चित्रामूलं तिथिश्चेष्टा जयैकेन्दुनवांकिता ॥ ४६ ॥

अर्थ—बुधवारे धनिष्ठा, अश्लेषा, रेवती, अश्विनी, भरणी, वारुण (शतभिषक्), चित्रा अने मूळ नक्षत्र होय, तथा जया एटले त्रीज, आठम अने तेरश, तथा पडवो, चौदश अने नोम एमांनी कोइ पण तिथि होय तो ते दिवसे अशुभ योग जाणवो. अहीं पण रेवती, अश्विनी अने भरणी होय तो अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग जाणवा. ४६.

गुरुवारे शुभ योग कहे छे.—

गुरौ पुष्याश्विनादित्यपूर्वा ३ श्लेषाश्च वासवम् ।
पौष्णं स्वातित्रयं सिद्धयै पूर्णाश्चैकादशी तथा ॥ ४७ ॥

अर्थ—गुरुवारे पुष्य, अश्विनी, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद, अश्लेषा, वासव (धनिष्ठा), पौष्ण (रेवती), स्वातित्रय एटले स्वाति, विशाखा अने अनुराधा नक्षत्र होय तथा पूर्णा एटले पांचम, दशम अने पूनम तथा अग्यारश होय तो शुभ योग जाणवो. ४७.

गुरुवारे अशुभ योग कहे छे.—

न गुरौ वारुणाग्नेयचतुष्कार्यमणद्वयम् ।
ज्येष्ठा भूत्यै तथा भद्रा तुर्या षष्ठ्यष्टमी तिथिः ॥ ४८ ॥

अर्थ—गुरुवारे वारुण (शतभिषक्), आग्नेयचतुष्क एटले कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर अने आर्द्रा, अर्यमणद्वय एटले उत्तराफाल्गुनी अने हस्त, तथा ज्येष्ठा आ नक्ष-

त्रीमांथी कोइ एक होय तथा भद्रा एटले बीज, सातम अने बारश, तथा चोथ, छठ अने आठम आमानी कोइ तिथि होय तो ते दिवसे अशुभ योग जाणवो अहीं पण रोहिणी मृगशिर अने आर्द्रा होय तो अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग जाणवा, अने कृत्तिका नक्षत्र होय तो यमघंट नामनो योग थाय छे. ४८

शुक्रवारे शुभ योग कहे छे.—

शुक्रे पौष्णाश्विनाषाढा मैत्रं मार्गं श्रुतिद्वयम् ।
यौनादित्ये करो नन्दात्रयोदश्यौ च सिद्धये ॥ ४९ ॥

अर्थ—शुक्रवारे पौष्ण (रेवती), अश्विनी, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, मैत्र (अनुराधा), मार्ग (मृगशिर), श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, पुनर्वसु अने हस्त नक्षत्र होय तथा नंदा एटले पडवो, छठ अने अग्यारश, तथा तेरश तिथि होय तो ते दिवसे शुभ योग थाय छे. ४९

शुक्रवारे अशुभ योग कहे छे.—

न शुक्रे भूतये ब्राह्म पुष्यं सार्पं मघाभिजित् ।
ज्येष्ठा च द्वित्रिसप्तम्यो रिक्ताख्यास्तिथयस्तथा ॥ ५० ॥

अर्थ—शुक्रवारे ब्राह्म (रोहिणी), पुष्य, सार्प (अश्लेषा), मघा, अभिजित् अने ज्येष्ठा नक्षत्र होय, तथा बीज, त्रीज, सातम तथा रिक्ता एटले चोथ, नोम अने चौदश होय तो ते दिवसे अशुभ योग जाणवो अहीं पण पुष्य, अश्लेषा अने मघा होय ते दिवसे अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग पण थाय छे ५०.

हवे शनिवारे शुभ योग कहे छे —

शनौ ब्राह्मश्रुतिद्वन्द्वाश्विमरुद्गुरुमित्रभम् ।
मघा शतभिषक् सिद्धै रिक्ताष्टम्यौ तिथी तथा ॥ ५१ ॥

अर्थ—शनिवारे ब्राह्म (रोहिणी), श्रुतिद्वंद्व एटले श्रवण अने धनिष्ठा, अश्विनी, मरुत् (स्वाति), गुरुभ (पुष्य), मित्रभ (अनुराधा), मघा अने शतभिषक् नक्षत्र होय तथा रिक्ता एटले चोथ, नोम अने चौदश तथा अष्टमी तिथि होय तो ते दिवसे शुभ योग थाय छे ५१.

हवे छेवट शनिवारे अशुभ योग कहे छे —

न शनौ रेवती सिद्धै वैश्वमार्यमणत्रयम् ।
पूर्वा ३ मृगश्च पूर्णाख्या तिथिः षष्ठी च सप्तमी ॥ ५२ ॥

अर्थ—शनिवारे रेवती, वैश्व (उत्तराषाढा), आर्यमणत्रय एटले उत्तराफाल्गुनी,

हस्त अने चित्रा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद अने मृगशिर नक्षत्र होय तथा पूर्णा एटले पांचम, दशम अने पूनम, तथा छठ अने सातम होय तो ते दिवसे अशुभ योग थाय छे. अहीं पण उत्तराफाल्गुनी, हस्त अने चित्रा होय तो उत्पात, मृत्यु अने काण योग पण अनुक्रमे थाय छे. ५२.

अहीं विशेष एटलो छे के सुयोगना सात श्लोकोमां जे पहेलां पहेलां नक्षत्र आप्यां छे ते नक्षत्र जो ते ज वारे होय तो अमृतसिद्धि योग थाय छे. ते विषे कह्युं छे के.—

"हस्त १ सौम्या २ श्विनी ३ मैत्र ४ पुष्य ५ पौष्ण ६ विरंचितैः ७ ।
भवत्यमृतसिद्ध्याख्यो योगः सूर्यादिवारगैः ॥ १ ॥"

"रवि आदि वारने विषे अनुक्रमे हस्त, सौम्य (मृगशिर), अश्विनी, मैत्र (अनुराधा), पुष्य, रेवती अने विरंचित (रोहिणी) होय तो ते दिवसे अमृतसिद्धि योग थाय छे. एटले के रविवारे हस्त नक्षत्र होय, सोमवारे मृगशिर होय, मंगळवारे अश्विनी, बुधवारे अनुराधा, गुरुवारे पुष्य, शुक्रवारे रेवती अने शनिवारे रोहिणी नक्षत्र होय तो ते दिवसे अमृतसिद्धि योग थाय छे." आ योगने विषे कार्य करवाथी अवश्य ते कार्यनी सिद्धि थाय छे, एम रत्नमाळाना भाष्यमां कह्युं छे.

श्री हर्षप्रकाशमां पण कह्युं छे के—

"भद्रासंवर्त्तकाद्यैश्चेत्सर्वदुष्टेऽपि वासरे ।
योगोऽस्त्यमृतसिद्ध्याख्यः सर्वदोषक्षयस्तदा ॥ १ ॥"

"भद्रा अने संवर्त्तक विगेरे अशुभ योगोवडे दूषण पाम्या छतां पण ते दिवसे जो अमृतसिद्धि योग होय तो सर्व दूषणनो क्षय थाय छे."

"शुक्रवारे जो रेवती नक्षत्र होय तो ते दिवसे शत्रु योग थाय छे, अने उत्तराभाद्रपद होय तो अमृतसिद्धि योग थाय छे," एम लोकश्री ग्रंथमां कह्युं छे.

कोइ आचार्य कहे छे के—"शरतिथितः सप्ततिथिष्वेते सप्तापि मृत्युदाः क्रमशः"। "पांचमथी सात तिथि सुधी अनुक्रमे आ साते अमृतसिद्धि योगोवाळा वारो मृत्यु देनारा छे. एटले के रविवारे अमृतसिद्धि योग होय, पण ते दिवसे पांचम होय, सोमवारे अमृतसिद्धि योग होय, पण छठ होय, मंगळवारे सातम, बुधवारे आठम, गुरुवारे नोम, शुक्रवारे दशम अने शनिवारे अमृतसिद्धि योग सहित अग्यारश होय तोपण ते मृत्युदायी जाणवा."

वळी कह्युं छे के—

"विशाखादिचतुष्केषु रविवारादिसप्तके ।
उत्पातमृत्युकाणाश्च सिद्धियोगाश्च कीर्तिताः ॥ १ ॥"

"विशाखादिक चार चार नक्षत्रोवडे रविवारादिक सात वारने विषे उत्पात, मृत्यु, काण अने सिद्धि योग कह्या छे नीचेनुं कोष्टक जुओ —

	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उत्पात	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी
मृत्यु	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषक्	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त
काण	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
सिद्धि	मूळ	श्रवण	उत्तराभाद्रपद	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाति

अहीं उत्पात, मृत्यु अने काणने ठेकाणे अनुक्रमे प्रवास, मरण अने व्याधि एवां नाम पण पूर्णभद्रे कहेला छे

यमघंट योग आ प्रमाणे थाय छे —

"मघा १ विशाखा २ र्द्रा ३ मूल ४ कृत्तिका ५ रोहिणी ६ करः ७ ।
रव्यादिवारसंयुक्तैर्यमघंटो भृशोऽशुभ ॥ १ ॥

"रविवारे मघा, सोमवारे विशाखा, मंगळवारे आर्द्रा, बुधवारे मूळ, गुरुवारे कृत्तिका, शुक्रवारे रोहिणी अने शनिवारे हस्त नक्षत्र होय तो ते दिवसे यमघंट नामे योग थाय छे ते घणो ज अशुभ फळदायक छे ' अहीं पाकश्री ग्रंथकार हस्त नक्षत्रने ठेकाणे पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढाने कहे छे

वज्रमुशळ योग आ प्रमाणे थाय छे —

"भर १ चित्तु २ त्तरसाढा ३ धणि ४ उत्तरफग्गु ५ जिट्ठ ६ रेवइआ ७ ।
सूराइजम्मरिक्खा एएहिं वज्जमुसल पुणो ॥ १ ॥"

"रविवारे भरणी, सोमवारे चित्रा, मंगळवारे उत्तराषाढा, बुधवारे धनिष्ठा, गुरुवारे उत्तराफाल्गुनी, शुक्रवारे ज्येष्ठा अने शनिवारे रेवती नक्षत्र होय तो वज्रमुशळ नामे अशुभ योग थाय छे आ रवि विगेरे ग्रहोना जन्मनक्षत्र छे अहीं भरणीने ठेकाणे लोकश्री ग्रंथमा अश्विनी कहेल छे

अरि (शत्रु) योग आ प्रमाणे थाय छे —

"भर १ पुस्सु २ त्तरसाढा ३ अद्द ४ विसाहा ५ य रेवई ६ सभिसा ७ ।
अक्काऽआएएहिं अरिजोगा गुरुभिणिद्दिठ्ठा ॥ १ ॥"

"रविवारे भरणी, सोमवारे पुष्य, मंगळवारे उत्तराषाढा, बुधवारे आर्द्रा, गुरुवारे विशाखा, शुक्रवारे रेवती अने शनिवारे शतभिषक् नक्षत्र होय तो ते अरि योग कहेवाय छे, एम गुरुजने बताव्युं छे " प्रीतिना कार्यमा आ योग वर्जवामा आवे छे.

अस्थिर (चर) योग आ प्रमाणे थाय छे.—

"मह १ मूलु २ त्तरसाढा ३ अद्द ४ विसाहा य ५ रोहिणी ६ सन्निसा ७ ।
सुक्काइआण कमसो जहाकमं अत्थिरो जोगो ॥ १ ॥"

"शुक्रवारे मघा, शनिवारे मूळ, रविवारे उत्तराषाढा, सोमवारे आर्द्रा, मंगळवारे विशाखा, बुधवारे रोहिणी अने गुरुवारे शतभिषक् होय तो ते अस्थिर (चर) योग कहेवाय छे." स्थिर कार्योमां आ योग वर्जवा योग्य छे.

क्रकच (कर्क) योग आ प्रमाणे थाय छे.—

"अक्काइसु कक्को वारसी उ पच्छकमेण जा छट्ठी ।
कक्कय नामा जोगो ”

रविवारादिकमां बारशथी पश्चानुपूर्वीए छठ सुधी आववुं एटले क्रकच (कर्क) योग थाय छे. अर्थात् रविवारे बारश, सोमवारे अग्यारश, मंगळवारे दशम, बुधवारे नोम, गुरुवारे आठम, शुक्रवारे सातम अने शनिवारे छठ होय तो क्रकच (कर्क) योग थाय छे.

बीजी रीते आ प्रमाणे पण छे.—

"यत्र संख्या युतौ वारतिथ्योर्जातास्त्रयोदश ।
ज्ञेयः क्रकचयोगोऽयं हेयश्च शुभकर्मणि ॥ १ ॥"

"रविवारादिक वारनी अने तिथिनी संख्या भेगी करवाथी ज्यारे तेरनी संख्या थाय त्यारे तेने क्रकच योग जाणवो. आ योग शुभ कार्यमां वर्ज्य छे. जेमके रविवारनी एक संख्या तेमां बार नाखवाथी तेरनी संख्या थाय छे, माटे रविवारे बारश होय त्यारे क्रकच योग थाय. ए प्रमाणे गणवाथी पण उपरनी गाथा प्रमाणे मळतुं आवे छे."

संवर्तक योग आ प्रमाणे.—

"पडिवय तिज्ज बुहेणं छट्ठी जीवेण बिज्ज सुक्केण ।
सत्तमि सणिसूरेसुं एए संवट्टया जोगा ॥ १ ॥"

"बुधवारे पडवो अथवा त्रीज होय, गुरुवारे छठ होय, शुक्रवारे बीज होय तथा शनि अने रविए सातम होय तो ते संवर्तक योग कहेवाय छे." हर्षप्रकाश विगेरे ग्रंथमां "बुधवारे मात्र पडवो ज होय अने सातमने दिवसे रविवार ज होय तो संवर्तक योग थाय," एम कह्युं छे. बाकी सर्व उपर प्रमाणे.

प्रथमथी आरंभीने अहीं सुधीना जे जे योगो कह्या तेना पांच वर्ग थइ शके छे, ते आ प्रमाणे–विरुद्ध योग १, सामान्य योग २, सुयोग ३, सिद्धि योग ४ अने अमृतसिद्धि योग. आ योगोमां कार्य करवाथी तेनुं फळ अनुक्रमे आ प्रमाणे जाणवुं.—

अत्यंत असिद्धि १, दैवयोगे सिद्धि २, विलंबे सिद्धि ३, इच्छित सिद्धि ४ तथा इच्छितथी अधिक सिद्धि ५. आ प्रमाणे त्रिविक्रमे कह्युं छे.

फरीथी ग्रंथकार बीजा योगो कहे छे. तेमां प्रथम कुमार योग कहे छे.

योगः कुमारनामा शुभः कुजज्ञेन्दुशुक्रवारेषु ।
अश्वाद्यैर्द्व्यन्तरितैर्नन्दादशपञ्चमीतिथिषु ॥ ५३ ॥

अर्थ—मंगळ, बुध, सोम अने शुक्र, एमांना कोइ वारे अश्विनीथी आरंभीने बे आंतरावाळां नक्षत्र एटले अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, हस्त, विशाखा, मूळ, श्रवण अने पूर्वाभाद्रपद, एमांनु कोइ एक नक्षत्र होय, तथा नंदा एटले पडवो, छठ अने अग्यारश, तथा पांचम अने दशम, एमानी कोइ पण तिथि होय तो कुमार नामनो शुभ योग थाय छे आ योग स्थिर कार्यमा एटले मैत्री, दीक्षा, व्रत, विद्या अने शिल्पनुं ग्रहण करवुं विगेरे कार्यमा तथा गृहप्रवेशादिकमां विशेषे करीने शुभ छे, परंतु ते वखते विरुद्ध योग होवो न जोइए. अर्थात् मंगळवारे दशम अने पूर्वाभाद्रपद, सोमवारे अग्यारश अने विशाखा, बुधवारे पडवो अने मूळ अथवा अश्विनी तथा शुक्रवारे रोहिणी होय तो ते दिवसे कुमार योग पण शुभकारक नथी, कारण जे ते ते द कर्क, संवर्तक, काण अने यमघंट योगनी उत्पत्ति होय छे आ प्रमाणे श्रीहरिभद्रसूरिकृत लग्नशुद्धि प्रकरणमा कहेलु छे ५३

हवे राज योग कहे छे.—

राजयोगो भरण्याद्यैर्द्व्यन्तरैर्भैः शुभावहः ।
भद्रातृतीयाराकासु कुजज्ञभृगुभानुषु ॥ ५४ ॥

अर्थ—मंगळ, बुध, शुक्र अने रवि, आमांना कोइ वारे तथा भद्रा एटले बीज, सातम अने बारश तथा त्रीज अने पूनम, एमानी कोइ पण तिथिए भरणी विगेरे बे आतरावाळां नक्षत्र एटले भरणी, मृगशिर, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा अने उत्तराभाद्रपद, एमानुं कोइ पण नक्षत्र होय तो शुभकारक राज योग थाय छे आ योग मांगलिक कार्यमा, धर्मकार्यमा, पौष्टिकमा, अलंकार पहेरवामा तथा क्षेत्रना आरंभादिक कार्यमा विशेषे करीने श्रेष्ठ छे "आ योग तरुण योग नामे पण कहेवाय छे" एम पूर्णभद्रे कह्युं छे. आ योग पण विरुद्ध योग न होय त्यारे लेवो एम संभवे छे, तेथी रविवारे सातम अथवा बारश अने भरणी होय, मगळवारे धनिष्ठा होय, बुधवारे भरणी के धनिष्ठा होय अने शुक्रवारे बीज के सातम तथा पुष्य होय, ते दिवसे राज योग होय तोपण इष्ट (शुभकारक) नथी, केमके ते ते दिवसोमां संवर्तक, कर्क, वज्रमुशळ, ...पात तथा काण विगेरे कुयोगनी उत्पत्ति थाय छे ५४

हवे स्थिर (स्थविर) योग कहे छे.—

स्थिरयोगः शुभो रोगोच्छेदादौ शनिजीवयोः ।
त्रयोदश्यष्टरिक्तासु द्व्यन्तरैः कृत्तिकादिभिः ॥ ५५ ॥

अर्थ—गुरुवारे अथवा शनिवारे तेरश, आठम के रिक्ता एटले चोथ, नोम अने चौदश होय, तथा कृत्तिकादिक द्व्यंतर नक्षत्र एटले कृत्तिका, आर्द्रा, अश्लेषा, उत्तराफाल्गुनी, स्वाति, ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, शततारका के रेवती होय तो ते रोगादिकना नाशमां शुभकारक एवो स्थिर योग थाय छे. आ योगनुं फळ पाकश्री ग्रंथमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"अणसण खित्त वाहि रिणं रिउ रण दिवं जलासए वंधो ।
कायव्वो थिरजोगे जस्स य करणं पुणो नत्थि ॥ १ ॥"

"जे कार्यनुं फरीथी करवापणुं नथी एवां कार्य जेवां के अनशन, क्षेत्रशुद्धि, व्याधिहरण, ऋण (देणुं) देवुं, शत्रुनो वध, लडाइ, दिव्य करवुं, जळाशय बंधाववुं, ए विगेरे (मंत्रभेद, स्नेहभेद विगेरे) कार्यो स्थिर योगमां कराय छे." ५५.

हवे यमल तथा त्रिपुष्कर योग कहे छे.—

यमलाख्यो द्विपादर्क्षे त्रिपादर्क्षे त्रिपुष्करः ।
जीवारशनिवारेषु योगो भद्रातिथौ स्मृतः ॥ ५६ ॥

अर्थ—गुरु, मंगळ अने शनिवारे बीज, सातम के बारश होय अने जो द्विपाद नक्षत्र एटले मृगशिर, चित्रा अने धनिष्ठा होय तो ते दिवसे यमल नामे योग कहेवाय छे. तथा ते ज तिथि वारने विषे त्रिपाद नक्षत्र एटले कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढा अने पूर्वाभाद्रपद होय तो त्रिपुष्कर नामनो योग कहेवाय छे. ५६.

हवे पंचक कहे छे.—

पञ्चके वासवान्त्यार्धात्तृणकाष्ठगृहोद्यमान् ।
याम्यदिग्गमनं शय्यां मृतकार्यं च वर्जयेत् ॥ ५७ ॥

अर्थ—धनिष्ठाना पश्चार्धथी एटले बे पाया गया पछी रेवतीना अंत सुधी पंचक कहेवाय छे. तेमां तृण, काष्ठ, गृहारंभ, दक्षिण दिशामां गमन, नवी शय्या (पलंग विगेरे) तथा प्रेत कार्य वर्ज्य कहेलां छे. ते विषे व्यवहारसारमां कह्युं छे के—

"धनिष्ठा धननाशाय प्राणघ्नी शततारका ।
पूर्वायां दंडयेद्राजा उत्तरा मरणं ध्रुवम् ॥ १ ॥
अग्निदाहश्च रेवत्यामित्येतत्पंचके फलम् ।"

---

१ नारचंद्रमां गुरुवारने स्थाने रविवार कहेल छे.

धनिष्ठामां कार्य करवाथी धननो नाश थाय, शततारकामां करवाथी प्राणनो नाश थाय, पूर्वाभाद्रपदमां करवाथी राजदंड थाय, उत्तराभाद्रपदमां करवाथी निश्चे मरण थाय, अने रेवतीमा करवाथी अग्निदाह थाय ए प्रमाणे पंचकनुं फळ जाणवुं उपर मृतकार्य करवानो निषेध कर्यो छे, परंतु कोइ अकस्मात् पंचकमां ज मरण पामे तो ते मृतकना हाथ पग छेदीने वांधवा एम लहे कह्युं छे, पण गरुड पुराणमां तेने दहन करवानो विधि आ प्रमाणे कह्यो छे —दर्भनां चार पूतळां करीने शवनी साथे राखवां, पछी ते शवनी साथे ज पूतळां पण बाळवां. एम न करे तो पुत्र अथवा बीजा सगोत्रीनो नाश थाय ५७

पंचक विषे मतांतर कहे छे —

पञ्चकं श्रवणादीनि पञ्च ऋक्षाणि निर्दिशेत् ।
केचित्पुनर्धनिष्ठादिपञ्चकं पञ्चकं विदुः ॥ ५८ ॥

अर्थ—श्रवणथी आरंभीने पाच नक्षत्र सुधी पंचक कहेवुं तथा कोइक आचार्य धनिष्ठाथी आरंभीने पाच नक्षत्रने पंचक कहे छे (सर्वेना मतमां रेवतीने अंते पंचक समाप्त थाय छे) नारचंद्र ग्रंथमां श्रवण अने रेवतीमा सर्व दिशाए गमन करवानी अनुमति आपीने दक्षिण दिशामां पण गमन करवानुं स्वीकार्युं छे ते आ प्रमाणे.—

"सर्वदिग्गमने हस्तः श्रवणं रेवतीद्वयम् ।
मृगः पुष्यश्च सिद्ध्यै स्युः कालेषु निखिलेष्वपि ॥ १ ॥"

"हस्त, श्रवण, रेवतीद्वय एटले रेवती अने अश्विनी, मृगशिर तथा पुष्य आटलां नक्षत्रो सर्व काळे सर्व दिशामा गमन करवाने लायक छे अर्थात् सिद्धि आपनारा छे "५८

यमल, त्रिपुष्कर अने पंचक, एवां नामो सार्थक छे एटले के नाम प्रमाणे फळदायक छे ते कहे छे —

हानिवृद्ध्यादिकं सर्वं योगे स्याद्यमले द्विशः ।
त्रिशस्त्रिपुष्कराख्ये तु पञ्चशः पञ्चकेऽपि च ॥ ५९ ॥

अर्थ—यमल योगमा करेलुं हानि वृद्धिवाळुं सर्व कार्य बमणुं थाय छे, त्रिपुष्कर योगमा करवाथी त्रण गणु थाय छे अने पचकमा करवाथी पांच गणुं थाय छे, तेथी आ योगोमा इष्ट कार्य ज करवा लायक छे, अनिष्ट कार्य करवा लायक नथी ए आनो अभिप्राय छे. ५९

हवे गंडात योग कहे छे —

गंडान्तं च त्यजेत्त्रेधा लग्न ४-८-१२ तिथ्यु ५-१०-१५-डुपु ९-८-२७ त्रिपु ।
त्रित्रिभागांतरैकद्विघटीमितम् ॥ ६० ॥

अर्थ—लग्न गंडांत, तिथि गंडांत अने नक्षत्र गंडांत ए त्रण प्रकारनो गंडांत योग सर्व शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे. ते त्रणे प्रकारनो गंडांत पोतपोताने त्रीजे त्रीजे भागे अनुक्रमे अर्ध घडी, एक घडी अने बे घडीना प्रमाणवाळो छे. एटले के लग्न (राशि) बार छे तेने त्रीजे त्रीजे भागे चोथुं कर्क, आठमुं वृश्चिक अने बारमुं लग्न मीन आवे. तेमां कर्कनी छेल्ली पंदर पळ तथा सिंह लग्ननी प्रथमनी पंदर पळ ए बन्ने मळी त्रीश पळ एटले अर्ध घडी गंडांत योग थाय छे. ए रीते वृश्चिकनी छेल्ली पंदर अने धननी पहेली पंदर पळ तथा मीननी छेल्ली पंदर अने मेषनी पहेली पंदर पळ गंडांत योग जाणवो. आ लग्न गंडांत कहेवाय छे. तिथि पंदर छे, तेनो त्रीजो त्रीजो भाग गणतां पांचम, दशम अने पूनम आवे छे. तेमां पांचमनी छेल्ली अर्ध घडी अने छठनी पहेली अर्ध घडी मळीने एक घडीनो गंडांत योग जाणवो. ए रीते दशमनी छेल्ली अर्ध घडी अने अग्यारशनी पहेली अर्ध घडी तथा पूनमनी छेल्ली अर्ध घडी अने पडवानी पहेली अर्ध घडी गंडांत योग जाणवो. आ तिथि गंडांत कहेवाय छे. नक्षत्र सत्यावीश छे, तेनो त्रीजो त्रीजो भाग गणतां नवमुं अश्लेषा, अढारमुं ज्येष्ठा अने सत्यावीशमुं रेवती छे, तेथी अश्लेषानी छेल्ली एक घडी अने मघानी पहेली एक घडीने गंडांत योग जाणवो. ए ज रीते ज्येष्ठानी छेल्ली घडी अने मूळनी पहेली घडी तथा रेवतीनी छेल्ली घडी अने अश्विनीनी पहेली घडी एम बबे घडीनो गंडांत योग जाणवो. आ नक्षत्र गंडांत योग कहेवाय छे. जन्म, गर्भाधान, यात्रा, विवाह, व्रत, गृहनो आरंभ तथा प्रवेश, अने क्षौर विगेरे सर्व कार्यमां आ योग अशुभ कहेलो छे. ६०.

"आ त्रणे गंडांत उपर कह्याथी बमणा बमणा प्रमाणवाळा छे" एम श्रीपति कहे छे. सारंग कहे छे के—"नक्षत्र गंडांत आठ घडीनो छे." केशवार्क कहे छे के—"नक्षत्र गंडांतनी ज रीते विष्कंभादिक सत्यावीश योगने मध्ये रहेलो गंडांत पण पांच पांच घडीनो छे."

गंडांत योगनुं फळ नीचे प्रमाणे कह्युं छे.—

"नक्षत्रो मातरं हन्ति तिथिजः पितरं तथा ।
लग्नस्थो बालकं हन्ति गंडान्तो बालदूषकः ॥ १ ॥"

"बाळकनो जन्म नक्षत्र गंडांतमां थयो होय तो ते माताने हणे छे, तिथि गंडांतमां थयो होय तो पिताने हणे छे, अने लग्न गंडांतमां थयो होय तो ते बाळकनो ज हणनार थाय छे."

"जातो न जीवति नरो मातुरपथ्यो भवेत्स्वकुलहन्ता ।
यदि जीवति गंडान्ते बहुगजतुरगो भवेद्भूपः ॥ १ ॥"

"गंडांतमां जन्मेलो मनुष्य जीवतो नथी अने माताने अहितकारक तथा पोताना

कुळनो नाश करनार थाय छे, परंतु जो कदाच ते बाळक जीवे तो घणा हाथी घोमा-वाळो राजा थाय छे."

"नठं न लब्भइ इत्थ अहिदठो न जीवई ।
जाउं वि मरई पायं पत्थिउं न निअत्तई ॥ १ ॥"

"गंमांतमां खोवायेली वस्तु पाछी आवती नथी, सर्पदंश थयो होय तो ते मनुष्य जीवे नहीं, जन्मेलुं बाळक पण प्राये मरण पामे छे, तथा तेमां प्रयाण कर्युं होय तो ते पण प्राये पाछो आवतो नथी "

विवाह वृंदावनमां संधि नामनो पण दोष कह्यो छे ते आ प्रमाणे —
"नक्षत्रयोगतिथिसंधिषु नाडिकैका तिथ्यष्टविंशतिपलैः सहितोज्झयत्र" ।

"सर्व नक्षत्र, योग अने तिथिनी संधिने विषे बन्ने बाजु अनुक्रमे एक घमी उपर पंदर, आठ अने वीश पळ सहित एक एक घमी संधिदोष कहेवाय छे एटले के नक्ष-त्रोनी संधिमा पहेला नक्षत्रना अंतनी एक घमी अने पंदर पळ तथा पछीना नक्षत्रनी आरंभनी एक घमी अने पंदर पळ मळी कुल अढी घमीनो संधिदोष कहेवाय छे । ए रीते बे योगनी संधिमा पूर्व योगना अंतनी एक घमी अने आठ पळ तथा पछीना योगनी पण आरंभनी एक घमी अने आठ पळ मळी बे घमी अने सोळ पळ संधिदोष कहेवाय छे ए रीते बे तिथिनी संधिमा पूर्व तिथिनी अंतनी एक घमी अने वीश पळ तथा पछीनी तिथिनी आरंभनी एक घमी अने वीश पळ मळी बे घमी अने चाळीश पळनो संधिदोष कहेवाय छे आ संधिदोष मांगलिक कार्यमा तजवा योग्य छे "

संधिदोष विषे विक्रमनो मतांतर आ प्रमाणे छे —

"नक्षत्रराश्यो रविसंक्रमे स्यु,–रर्वाक् परत्रापि रसेन्दु १६ नाड्यः ।
एका घमी षट्पलसंयुतेन्दो,– र्नाड्यश्चतस्र• सपलाः कुजस्य ॥ १ ॥
बुधस्य तिस्रो मनवः १४ पलानि, सार्धाश्चतस्रः पलसप्त जीवे ।
द्व्यशीतिनाड्यः पलसप्त शौरे', शुक्रस्य हेयाः सपलाश्चतस्रः ॥ २ ॥"

नक्षत्र अथवा राशिने आश्रीने सूर्यनुं संक्रमण होय एटले एक नक्षत्रथी बीजा नक्ष-त्रमा अथवा एक राशिथी बीजी राशिमा सूर्यनुं संक्रमण होय तो पूर्व नक्षत्र अथवा राशिनी अंतनी सोळ घमी तथा पछीना नक्षत्र अथवा राशिनी प्रारंभनी सोळ घमीने संधि नामनो दोष कहे छे ए रीते चन्द्रना संक्रमणमा एक एक घमी अने छ छ पळ, मंगळना संक्रमणमां चार चार घमी अने एक एक पळ, बुधना संक्रमणमा त्रण त्रण घमी अने चौद चौद पळ, गुरुना संक्रमणमा सामी चार चार घमी अने सात सात पळ, संक्रमणमा व्याशी व्याशी घमी अने सात सात पळ अने शुक्रनी संक्रांतिमा

चार चार घमी अने एक एक पळ सुधी संधिदोष कहेवाय छे. आ दोष पण सर्व शुभ कार्यमां वर्ज्य छे.

हवे वज्रपात योग विषे कहे छे.—

वज्रपातं त्यजेद्वित्रिपञ्चषट्सप्तमे तिथौ ।

मैत्रे २ ऽथ त्र्युत्तरे ३ पैत्र्ये ५ ब्राह्मे ६ मूलकरे ७ क्रमात् ॥६१॥

अर्थ—बीजने दिवसे मैत्र (अनुराधा) होय, त्रीजने दिवसे त्रण उत्तरा एटले उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा के उत्तराभाद्रपद होय, पांचमने दिवसे पैत्र्य (मघा) होय, छठने दिवसे ब्राह्म (रोहिणी) होय, अने सातमने दिवसे मूळ के हस्त होय तो वज्रपात नामनो योग थाय छे. ते शुभ कार्यमां तजवा लायक छे. ६१.

"वज्रपात योगमां कार्य कर्युं होय तो छ मासमां कार्यकर्तानुं मरण थाय छे" एम हर्षप्रकाशमां कह्युं छे. वळी "तेरशने दिवसे चित्रा के स्वाति नक्षत्र होय तोपण वज्रपात योग थाय छे" एम नारचंद्रनी टिप्पणीमां कह्युं छे. वळी "सातम ने भरणी, नोम ने पुष्य तथा दशम ने अश्लेषा होय ते पण तजवा योग्य छे" एम कह्युं छे.

वळी नारचंद्रनी टिप्पणीमां काळमुखी नामनो योग आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"चउ रुत्तर पंच मघा कत्तिअ नवमीइ तइअ अणुराहा ।
अट्ठमि रोहिणिसहिआ कालमुही जोगि मास छगि मच्चू ॥ १ ॥"

"चोथने दिवसे त्रण उत्तरा होय, पांचम ने मघा होय, नोम ने कृत्तिका, त्रीज ने अनुराधा तथा आठम ने रोहिणी होय, तो ते काळमुखी नामनो योग कहेवाय छे. आ योगमां कार्य करे तो छ मासे कर्तानुं मरण थाय."

दिनशुद्धि ग्रंथमां नक्षत्र मृत्युयोग आ प्रमाणे कहेल छे.—

"मूलद्दसाइचित्ताअसेससयभिसयकत्तिरेवइआ ।
नंदाए भद्दाए भद्दवया फग्गुणी दो दो ॥ १ ॥
विजयाए मिगसवणापुस्सऽस्सिणिभरणिजिट्ठ रित्ताए ।
आसाढदुग विसाहा अणुराह पुणवसु महा य ॥ २ ॥
पुन्नाइ कर धणिट्ठा रोहिणि इअमयगऽवत्थनक्खत्ता ।
नंदिपइट्ठापमुहे सुहकज्जे वज्जए मइमं ॥ ३ ॥"

"नंदा तिथिए एटले पडवो, छठ अने अग्यारशे मूळ, आर्द्रा, स्वाति, चित्रा, अश्लेषा, शतभिषक्, कृत्तिका अने रेवती होय, भद्रा एटले बीज, सातम अने बारशे पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी अने उत्तराफाल्गुनी होय, विजया एटले त्रीज, आठम अने तेरशे मृगशिर, श्रवण, पुष्य, अश्विनी, भरणी अने ज्येष्ठा होय,

रिक्ता एटले चोथ, नोम अने चौदशे पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु अने मघा होय, तथा पूर्णा एटले पाचम, दशम अने पूर्णिमाए हस्त, धनिष्ठा ने रोहिणी नक्षत्र होय तो ए मृतक अवस्था नक्षत्र कहेवाय छे, माटे नंदि प्रतिष्ठा आदि शुभ कार्यमा बुद्धिवान पुरुषोए तजवा योग्य छे."

तथा अवला नामे योग आ प्रमाणे थाय छे.—

"कत्तियपभिई चउरो सणि बुहि ससि सूर वार जुत्तकमा ।
पंचमि बिइ एगारसि बारसि अवला सुहे कज्जे ॥ १ ॥"

"कृत्तिका आदि चार एटले कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर अने आर्द्रा नक्षत्र शनि, बुध, सोम अने रविवारे अनुक्रमे होय, तथा ते दिवसे अनुक्रमे पाचम, बीज, अगियारश अने बारश होय तो अवला नामनो योग थाय छे. आ योग सर्व कार्यमां अशुभ छे"

पाकश्री ग्रंथमा ऋतुने आश्रीने शुभ तथा अशुभ योग आ प्रमाणे छे.—

"कत्ति उ मग्गसिरे वि अ पंचमि गुरुवार पुणव्वसू चेव ।
सुहया उ हुंति सरए अद्दा दसमी कुजे असुहा ॥ १ ॥"

"कार्तिक अने मार्गशीर्ष मासमा पाचम, गुरुवार अने पुनर्वसु ए त्रणे एक दिवसे होय तो ते दिवसे शुभ योग कहेवाय छे तथा शरद् ऋतुमां (कार्तिक तथा मार्गशीर्ष मासमा) आर्द्रा, दशम अने मगळवार ए त्रणे एक ज दिवसे होय तो ते अशुभ योग जाणवो १ "

"पोसे माहे छट्ठी तिगुत्तराफग्गु अ कज्जकरा ।
असुह इगारसि गुरुणा फग्गुणि पुव्वा य हेमंते ॥ २ ॥"

"पोष तथा माघ मासमा छठ, शुक्रवार अने उत्तराफाल्गुनी एक ज दिवसे होय तो ते दिवसे कार्यनी सिद्धि थाय छे अर्थात् शुभ छे तथा हेमंत ऋतुमां (पोष अने माघमां) अग्यारश, गुरुवार अने पूर्वाफाल्गुनी एक ज दिवसे होय तो ते अशुभ छे २."

"फग्गुण चित्ते मासे तेरसि सफला विसाह बुहवारो ।
बारसि सुक्के साइ वसंतकाले वि वज्जिज्जा ॥ ३ ॥"

"फाल्गुन तथा चैत्र मासमां तेरश, विशाखा अने बुधवार एक ज दिवसे होय तो ते सफळ (शुभ) छे तथा वसंतकाळे (फागण अने चैत्रमा) बारश, शुक्र अने स्वाति एक ज दिवसे होय तो ते वर्ज्य छे. ३"

"वइसाह जिट्ठ सूरो पडिवय मूलो अ उत्तराफग्गू ।
सुह गिम्ह असुह तेरसि सणिवारे सवणरक्ख ॥ ४ ॥"

---

१ अहीं मासनी गणतरी पूनमीया महीना प्रमाणे करवी एटले के कार्तिक मास गुजराती लेवो होय तो आश्विन वद तथा कार्तिक शुद जाणवो

"वैशाख तथा ज्येष्ठ मासमां रविवार, पडवो अने मूळ के उत्तराफाल्गुनी एक ज दिवसे होय तो ते शुभ छे. तथा ग्रीष्म ऋतुमां (वैशाख तथा ज्येष्ठमां) तेरश, शनिवार अने श्रवण नक्षत्र एक ज दिवसे होय तो ते अशुभ छे. ४."

"आसाढ सावण बिआ उत्तरभद्दवय चंददिण सुह उ ।
पाउसि असुहो उ बुहो चउदसि पुवा य भद्दवया ॥ ५ ॥"

"आषाढ तथा श्रावण मासमां बीज, उत्तराभाद्रपद अने सोमवार एक ज दिवसे होय तो ते शुभ छे. तथा प्रावृड् ऋतुमां (आषाढ तथा श्रावणमां) बुधवार, चौदश अने पूर्वाभाद्रपद एक ज दिवसे होय तो ते अशुभ जाणवो. ५."

"भद्द व आसो मासे सत्तमि सणिवार रोहिणी सफला ।
वासारत्ते असुहा रवि कत्तिअ पुन्नमासी अ ॥ ६ ॥"

"भादरवा तथा आशो मासमां सातम, शनिवार अने रोहिणी एक ज दिवसे होय तो ते सफळ (शुभ) छे. तथा वर्षा ऋतुमां रविवार, कृत्तिका अने पूर्णिमा एक ज दिवसे होय तो ते अशुभ छे. ६."

आ छए गाथामां ऋतु अने मासना नाममां विपर्यय छे, कारण के नाममाळा विगेरे ग्रंथोमां आश्विन अने कार्तिक विगेरे बबे मासनी शरद् विगेरे ऋतु कही छे अने अहीं तो कार्तिक अने मार्गशीर्ष विगेरे बबे मासनी ऋतुओ कही छे. तथा आ गाथाओमां शिशिर ऋतु बिलकुल लीधी ज नथी अने वर्षा ऋतु तथा प्रावृड् ऋतु एक ज छतां बे जूदी जूदी लइने छ ऋतुनां नाम पूरां कर्यां छे. आ सर्व विपर्यास ते ग्रंथकर्ताए ज करेलो छे, माटे तेमनो एवो ज मत हशे एम जणाय छे.

हवे मूळ ग्रंथकार रवि योग कहे छे.—

योगो रवेर्भात्कृत ४ तर्क ६ नन्द ९, दिग् १० विश्व १३ विंशो २० डुषु सर्वसिद्ध्यै ।
आद्ये १ न्द्रिया ५ श्व ७ द्विप ८ रुद्र ११ सारी १५, राजो १६ डुषु प्राणहरस्तु हेयः ६२

अर्थ—सूर्यनुं जे नक्षत्र चालतुं होय ते नक्षत्रथी गणतां ते दिवसनुं नक्षत्र जो चोथुं होय तो चोथो रवि योग जाणवो. छठुं होय तो छठो रवि योग, नवमुं होय तो नवमो, दशमुं होय तो दशमो, तेरमुं होय तो तेरमो अने वीशमुं होय तो वीशमो रवि योग जाणवो. आटला रवि योग सर्व सिद्धिकारक छे, एटले के आ योगने दिवसे करेलुं कार्य सिद्ध थाय छे; परंतु सूर्यना नक्षत्रथी ते दिवसनुं नक्षत्र पहेलुं, पांचमुं, सातमुं, आठमुं, अग्यारमुं, पंदरमुं के सोळमुं होय तो ते योग प्राणने हरण करनारो छे तेथी ते सर्व कार्यमां तजवा योग्य छे. ६२.

आ रवि योग विषे हर्षप्रकाशमां कह्युं छे के.—

"एआए फलं कमसो विउलं सुक्खं ४ जयं च सत्तूणं ६।
लाभ ए च कज्जसिद्धी १० पुत्तुप्पत्ती १३ अ रज्जं २० च ॥ १ ॥"

"आ रवि योगनुं फळ अनुक्रमे आ प्रमाणे छे —चोथा रवि योगे कार्य करवाथी घणुं सुख थाय छे, छठे होय तो शत्रुने जीताय छे, नवमे लाभ थाय छे, दशमे कार्यसिद्धि थाय छे, तेरमे पुत्रनी उत्पत्ति थाय छे अने वीशमे राज्य मळे छे"

शुद्ध लग्ननुं जेवुं बळ होय छे, तेवुं बळ आ रवि योगनुं होय छे एम यतिवल्लभमां कह्युं छे वळी कह्युं छे के—

"इक्कस्स जए पंचाणणस्स भज्जंति गयघडसहस्सा।
तह रविजोग पणट्ठा गयणम्मि गहा न दीसंति ॥ १ ॥"

"एक सिंहना भयथी सहस्र हाथीओनो समूह नासी जाय छे, तेम रवि योगथी नाश पामेला ग्रहो आकाशमां देखाता नथी अर्थात् जो रवि योग सारो बळवान् होय तो बीजा कुयोगो नासी जाय छे"

"रविजोग राजजोगे कुमारजोगे असुद्ध दिअहे वि।
जं सुहकज्जं कीरइ तं सव्वं बहुफलं होइ ॥ १ ॥"

"अशुभ दिवसे पण जो रवि योग, राज योग के कुमार योग होय अने ते दिवसे जे शुभ कार्य कर्युं होय ते सर्व कार्य बहु फळदायक थाय छे."

आ रवि योगमां अभिजित् नक्षत्र गणेलुं नथी, कारण के ग्रंथांतरोमां सत्यावीश रवि योगोनुं ज फळ कहेलुं छे. आ योगमां बीजो, त्रीजो, बारमो, सत्तरमो, छवीशमो अने सत्यावीशमो, आटला रवि योग विषे काइ कह्युं नथी तथा तेनो निषेध पण कर्यो नथी, तेथी तेटला योगो मध्यम जाणवा. बाकीना रवि योगोनुं शुभाशुभपणुं अहीं पण केटलाकनुं साक्षात् कह्युं छे, अने केटलाकनुं फळ उपग्रहपणाए करीने हमणां ज कहेशे.

हवे सत्यावीश रवि योगोनी मध्ये जेमनी उपग्रह संज्ञा छे, ते कहे छे —

नोपग्रहास्तु भूर्ये भूता ५ द्वि ७ फणी ८ नन्द १४ तिथि १५ धृति १८ युगले १९।
रविभात्तथैकविंशादिषु पञ्चसु २१-२२-२३-२४-२५ चरति भेष्विन्दौ ॥ ६३ ॥

अर्थ—सूर्यना नक्षत्रथी चंद्रनुं (ते दिवसनुं) नक्षत्र पांचमुं, सातमुं, आठमुं, चौदमुं, पंदरमुं, अढारमुं, ओगणीशमुं, एकवीशमुं, बावीशमुं, त्रेवीशमुं, चोवीशमुं के पचीशमुं होय तो ते नक्षत्र उपग्रह कहेवाय छे आ बार उपग्रहो आवादीने माटे नथी ॥ अशुभ छे.

आ बार उपग्रहोमांना आठनी संज्ञा तथा तेमनुं विवाहादिक कार्यमां जे फळ थाय छे ते नारचंद्रमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"विद्युन्मुख १ शूला २ शनि केतू ४ ल्का ५ वज्र ६ कंप ७ निर्घाताः ।
ङ ५ ज ८ ढ १४ द १८ ध १९ फ २२ ब २३ भ २४ संख्ये रविपुरत उपग्रहा धिष्ण्ये॥१॥
फलमंगज १ पतिमरणे २ दशमदिनान्तस्तथाऽशनि निपातः ३ ।
सानुजपति ४ धननाशौ ५ दौःशील्यं ६ स्थान ७ कुलघातौ ॥ २ ॥"

"पांचमा उपग्रहनुं नाम विद्युन्मुख छे, आठमानुं शूल नाम छे, चौदमानुं अशनि, अढारमानुं केतु, ओगणीशमानुं उल्का, बावीशमानुं वज्र, त्रेवीशमानुं कंप अने चोवीशमा उपग्रहनुं नाम निर्घात छे (१). विद्युन्मुखमां विवाहादिक कार्य करवाथी पुत्रनुं मरण थाय, शूलमां करवाथी पतिनुं मरण थाय, अशनिमां करवाथी दश दिवसनी अंदर वज्रपात थाय, केतुमां करवाथी नाना भाइ सहित पतिनो नाश थाय, उल्कामां करवाथी धननो नाश थाय, वज्रमां करवाथी दुःशीलपणुं थाय, कंपमां करवाथी स्थाननो नाश थाय अने निर्घातमां करवाथी कुळनो घात (नाश) थाय."

बाकीना चार उपग्रहो सामान्य रीते अनिष्ट फळने आपनारा छे. एकाशी पद नामना वेधचक्रादिकमां पण आ रीते ज उपग्रहोनुं फळ जाणवुं.

हवे प्रसंगोपात्त आरूढ नामनो योग कहे छे. तेमां अभिजित् नक्षत्र गणवानुं छे. एटले के अठ्यावीश नक्षत्रोनी गणतरीए जाणवो.—

"द्वि २ हया ७ ङ्के ९ न्द्र १४ नृपै १६ क २१ भ्य २३ ष्टयुग्विंशति २८ प्रमे ।
सूर्यभाच्चन्द्रभे स्यादारूढस्त्याज्यः सदा बुधैः ॥ १ ॥"

"सूर्यना नक्षत्रथी चंद्रनुं नक्षत्र जो बीजे, सातमे, नवमे, चौदमे, सोळमे, एकवीशमे, त्रेवीशमे के अठ्यावीशमे होय तो ते आरूढ योग कहेवाय छे. आ योग शुभ कार्यमां डाह्या माणसे त्याग करवा लायक छे. "रूढो यात्रासु रोधकृत्" आवुं चोथुं पाद प्रत्यंतरमां छे. तेनो अर्थ ए छे के—"आ आरूढ योग यात्राने विषे रोध करनार छे."

आरूढ योग जाणवानो सहेलो उपाय नरपतिजयचर्यामां आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"सूर्यभाद्गुणयेन्दोर्भं सप्तभिर्भागमाहर ।
शून्यं द्वौ वा न शेषौ चेदारूढो नास्ति निश्चितम् ॥ १ ॥"

"सूर्यना नक्षत्रथी चंद्रनुं नक्षत्र गणवुं. पछी तेने साते भाग लेवो. तेमां जो शून्य अथवा बे शेष न रहे तो आरूढ योग नथी एम निश्चे जाणवुं अर्थात् जो शून्य के बे शेष रहे तो अवश्य आरूढ योग होय छे."

(आ आरूढ योग प्राये उत्तर दिशामां विशेष उपयोगी छे.) आ उपरथी ए सिद्ध थयुं के नवमो रवि योग (शुभ छे तोपण) यात्रादिकमां सारो नथी.

हवे दररोज थनारा आनंदादिक उपयोगो कहे छे.—

उपयोगास्त्वश्वि १ मृगा २ श्लेषा ३ कर ४ मैत्र ५ वैश्व ६ वारुणतः ७ ।
रव्यादिषु तद्दिनजप्रमिताः क्रमतोऽभिधानफलाः ॥ ६४ ॥

अर्थ—रविवारे अश्विनी नक्षत्रथी गणतां ते दिवसे (रविवारे) जेटलामुं नक्षत्र होय तेटलामो उपयोग ते दिवसे छे एम जाणवुं सोमवारे मृगशिरथी गणवुं, मंगळवारे अश्लेषाथी, बुधवारे हस्तथी, गुरुवारे अनुराधाथी, शुक्रवारे उत्तराषाढाथी अने शनिवारे शतभिषकथी गणवुं ते रीते गणतां ते दिवसनुं जेटलामुं नक्षत्र होय तेटलामो उपयोग ते दिवसे जाणवो. अहीं अभिजित् नक्षत्र गणवानुं छे. ते उपयोगोनां नाम प्रमाणे तेमनुं फळ जाणवुं

ते उपयोगोनां नामो आ प्रमाणे छे

आनन्दः १ कालदण्डश्च २ प्राजापत्यः ३ सुरोत्तमः ४ ।
सौम्यो ५ ध्वांक्षो ६ ध्वजश्चैव ७ श्रीवत्सो ८ वज्र ९ मुद्गरौ १० ॥ ६५ ॥
छत्रं ११ मित्रं १२ मनोज्ञश्च १३ कंपो १४ लुंपक १५ एव च ।
प्रवासो १६ मरणं १७ व्याधिः १८ सिद्धिः १९ शूला २० मृतौ २१ तथा ॥६६॥
मुसलो २२ गज २३ मातंगौ २४ राक्षसोऽथ २५ चरः २६ स्थिरः २७ ।
वर्धमानश्चेति २८ नाम्ना स्युरष्टाविंशतिः क्रमात् ॥ ६७ ॥

अर्थ—आनंद, कालदंड, प्राजापत्य, सुरोत्तम, सौम्य, ध्वांक्ष, ध्वज, श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर, छत्र, मित्र, मनोज्ञ, कंप, लुंपक, प्रवास, मरण, व्याधि, सिद्धि, शूल, अमृत, मुसळ, गज, मातंग, राक्षस, चर, स्थिर तथा वर्धमान, आ अठ्यावीश उपयोगोना अनुक्रमे नाम जाणवां.

आनंदादिक योगनुं कोष्टक.

योगनाम	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ आनंद	अश्विनी	मृगशीर्ष	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा
२ कालदंड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्र०
३ प्राजापत्य	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा०	स्वाति	मूळ	श्रवण	उत्तराभा०
सुरोत्तम	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा०	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती

योगनाम	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
५ सौम्य	मृगशीर्ष	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी
६ ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभा०	भरणी
७ ध्वज	पुनर्वसु	पूर्वाफा०	स्वाति	मूळ	श्रवण	उत्तराभा०	कृत्तिका
८ श्रीवत्स	पुष्य	उत्तराफा०	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
९ वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा०	शतभिषा	अश्विनी	मृगशीर्ष
१० मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभा०	भरणी	आर्द्रा
११ छत्र	पूर्वाफा०	स्वाति	मूळ	श्रवण	उत्तराभा०	कृत्तिका	पुनर्वसु
१२ मित्र	उत्तराफा०	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
१३ मनोज्ञ	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशीर्ष	अश्लेषा
१४ कंप	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभा०	भरणी	आर्द्रा	मघा
१५ लुंपक	स्वाति	मूळ	श्रवण	उत्तराभा०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा०
१६ प्रवास	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा०
१७ मरण	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशीर्ष	अश्लेषा	हस्त
१८ व्याधि	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्र०	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
१९ सिद्धि	मूळ	श्रवण	उत्तराभा०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा०	स्वाति
२० शूळ	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा०	विशाखा
२१ अमृत	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशीर्ष	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा
२२ मुसळ	अभिजित्	पूर्वाभा०	भरणी	आर्द्रा	मघा०	चित्रा	ज्येष्ठा
२३ गज	श्रवण	उत्तराभा०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा०	स्वाति	मूळ
२४ मातंग	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा०	विशाखा	पूर्वाषाढा
२५ राक्षस	शतभिषा	अश्विनी	मृगशीर्ष	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा०
२६ चर	पूर्वाभाद्र०	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्
२७ स्थिर	उत्तराभा०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा०	स्वाति	मूळ	श्रवण
२८ वर्धमान	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा०	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा

आ योगोनुं फळ तेमनां नामवडे ज जणाय तेवुं छे तेथी जूदुं कहेता नथी. केटलाक आचार्य प्राजापत्य, सुरोत्तम, मनोज्ञ, कंप, लुंपक, प्रवास, मरण, व्याधि, शूळ अने अने गज, ए दश योगने स्थाने अनुक्रमे धूम्र, प्रजापति, मानस, पद्म, लंबक, उत्पात, मृत्यु, काण, शुभ अने गद, एवां नामो पण कहे छे. आ उपयोगो विष्कंभादिक दररोजना योगोनी साथे ज सर्वदा रहेला होवाथी सार्थक नामवाळा छे.

हवे कुयोगोने विषे अपवाद कहे छे.—

यत्प्रातिकूल्यं वाराणां तिथिनक्षत्रसंभवम् ।
हूणवंगखसेष्वेव तत्त्यजेदिति केचन ॥ ६८ ॥

अर्थ—संवर्तक अने कर्क विगेरे तिथियी उत्पन्न थयेल तथा उत्पात, मृत्यु, अने उपयोगादिकने विषे नक्षत्रथी उत्पन्न थयेल यारोनुं प्रतिकूळपणुं हूण देश, वंग अने खस देशमां ज त्याज्य छे एम केटलाक कहे छे तात्पर्य ए छे के खास जरुरीआत कार्य न होय तो बीजा देशोमां पण आ योगो वर्जवा योग्य छे.

हवे शुभ अने अशुभ योगना संकरमा शुभ योगनुं प्रबळपणुं कहे छे —

सिद्धियोगः कुयोगश्च जायेतां युगपद्यदि ।
कुयोगं तत्र निर्जित्य सिद्धियोगो विजृंभते ॥ ६९ ॥

अर्थ—जो कदाच एकी वखते सिद्धि योग अने कुयोग भेळा थया होय, तो तेम कुयोगने जीतीने सिद्धि योग उल्लास पामे छे (प्रबळ थाय छे) अहीं सिद्धियोग शब्दना यौगिक अर्थ होवाथी सर्वे शुभ योगो जाणवा

हवे दिवसना (दररोजना) विष्कंभादिक योगो कहे छे.—

विष्कंभः १ प्रीति २ रायुष्मान् ३ सौभाग्यः ४ शोभन ५ स्तथा ।
अतिगंडः ६ सुकर्मा ७ च धृतिः ८ शूलं ९ तथैव च ॥ ७० ॥
गंडो १० वृद्धि ११ र्ध्रुव १२ श्चैव व्याघातो १३ हर्षण १४ स्तथा ।
वज्रं १५ सिद्धि १६ र्व्यतीपातो १७ वरीयान् १८ परिघः १९ शिवः२० ॥७१॥
सिद्धः २१ साध्य २२ शुभः २३ शुक्लो २४ ब्रह्मा २५ चैन्द्रो २६ऽथ वैधृतः२७ ।
इति सान्वयनामानो योगाः स्युः सप्तविंशतिः ॥ ७२ ॥

अर्थ—विष्कंभ १, प्रीति २, आयुष्मान् ३, सौभाग्य ४, शोभन ५, अतिगंड ६, सुकर्मा ७, धृति ८, शूल ९, गंडो १०, वृद्धि ११, ध्रुव १२, व्याघात १३, हर्षण १४, वज्र १५, सिद्धि १६, व्यतीपात १७, वरीयान् १८, परिघ १९, शिव २०, सिद्ध २१, साध्य २२, शुभ २३, शुक्ल २४, ब्रह्मा २५, इन्द्र २६ अने वैधृत २७. आ सत्यावीश योगो अन्वर्थ संज्ञावाळा एटले पोतपोतानां नाम प्रमाणे फळ आपनारा छे

आ योगोनां फळ माटे नारचंद्रनी टिप्पणीमां आ प्रमाणे विशेष कह्यो छे.—

"विक्खंभ १ सूल २ गंडे ३ अइगंडे ४ वज्ज ५ तह य वाघाए ६ ।
वइधिइ ७ सूराइकमा अइदुट्ठ मूलजोगाउ ॥ १ ॥"

"रविवारे विष्कंभ होय, सोमवारे शूळ होय, मंगळवारे गंड होय, बुधवारे अतिगंड होय, गुरुवारे वज्र होय, शुक्रवारे व्याघात होय अने शनिवारे वैधृति होय तो ते मूळ योगो अत्यंत दुष्ट छे" —

आ सत्यावीश योगोनी मध्ये जेटला दुष्ट योगो छे, तेमां पण जेटली दुष्ट घमीर्ज, ते कहे छे.—

व्यतिपातवैधृताख्यौ सकलौ परिघस्य पूर्वमर्द्धं च ।

प्रथमः पादोऽन्येष्वपि विरुद्धसंज्ञेषु हातव्यः ॥ ७३ ॥

अर्थ—व्यतीपात अने वैधृत नामना योगो समग्र (आखा) तजवा लायक छे, परिनो पहेलो अर्ध जाग त्याज्य छे, अने बाकीना विरुद्ध (अशुज) नामवाळा योगोमां थम पाद वर्जवा योग्य छे. आ योगोनो अर्ध जाग तथा एक पाद पंचांगमां लखेली रुमीर्जने अनुसारे समजवा. विरुद्ध नामवाळा योगो विष्कंज, गंरु, अतिगंरु, शूळ, व्याघात तथा वज्रपात जाणवा.

उपर जे प्रथम पाद वर्जवानुं कह्युं छे, तेमां बीजो प्रकार कहे छे.—

त्यजेद्वा पञ्च विष्कंभे षट् तु गंमातिगंरुयोः ।

घटिकाः सप्त शूले तु नव व्याघातवज्रयोः ॥ ७४ ॥

अर्थ—अथवा तो विष्कंज योगमां पहेली पांच घमी तजवी, गंरु अने अतिगंरुमां पहेली छ छ घमी, शूळमां प्रथमनी सात घमी अने व्याघात तथा वज्र योगमां प्रथमनी नव घमी वर्जवा योग्य छे.

विष्कंजादिक दुष्ट योगोमां एकार्गलवेध नामना योगनी उत्पत्ति थाय छे ते कहे छे.—

एकार्गलः कुयोगेषु चन्द्रेऽर्के च परस्परात् ।

गते साज्जिदोजर्क्षे त्याज्यः पादान्तरो न चेत् ॥ ७५ ॥

अर्थ—दुष्ट योगने दिवसे अजिजित् सहित अठ्यावीशे नक्षत्रोमांना विषम[1] नक्षत्रमां परस्पर (सामसामा) चंद्र अने सूर्य रह्या होय तो ते एकार्गल कहेवाय छे, ते तजवा योग्य छे; परंतु जो एकार्गल योग पादना आंतरावाळो न होय तो ज तजवा लायक छे.

आ एकार्गल योग दुष्ट योगोमां थाय छे एम कह्युं छे, माटे प्रीति, आयुष्मान् विगेरे शुज योगमां ते थतो ज नथी एम सूचवन कर्युं छे. कुयोग छतां पण आ योगनो संजव क्यारे थाय छे ? ते उपर चंद्र अने सूर्यनी स्थिति दर्शावी छे. अहीं अजिजित् लखेलुं होवाथी अठ्यावीश नक्षत्रो जाणवां. आ प्रमाणे लत्ताना श्लोकमां पण समजवुं. आ श्लोकनो समग्र जावार्थ आ रीते छे.—आगल कहेवामां आवे ए रीते एकार्गल चक्र करी तेमां अनुक्रमे अठ्यावीश नक्षत्रो लखवां, पछी जो चंद्रथी सूर्य अने सूर्यथी चंद्र एक बीजाथी विषम नक्षत्रे एक ज लीटीमां रहेला होय तो एकार्गल थाय छे अने ते सर्व

[1] त्रण, पांच, सात, नव इत्यादि एकी नक्षत्र विषम कहेवाय छे.

कार्यमां तजवा योग्य छे, एटले के जे नक्षत्रमां एकार्गल पडेलो होय ते नक्षत्र शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे, परंतु सूर्ये तथा चंद्रे आक्रमण करेलां नक्षत्रोनां पादोनो ... परस्पर सन्मुख नहीं रहेवारूप विशेष न होय अर्थात् तेमना पादो पासे पासे ज होय तो ते एकार्गल अवश्य वर्जवा योग्य छे अने पादना आंतरावाळो होय तो त्याग करवो वा न करवो.

आ एकार्गल योगने ज स्थापनादिकना विधिए करीने विशेष प्रकारे कहे छे.—

तिर्यक्त्रयोदशोर्ध्वैकरेखे खर्जूरके त्यजेत् ।
कुयोगे शीर्षभादर्कचन्द्रावेकार्गलदृगौ ॥ ७६ ॥

अर्थ—तेर रेखा (लीटी) आडी अने एक रेखा ऊभी ए रीते खजुरीनुं वृक्ष करवुं तेना मस्तक (शिखर) पर आगळ कहेवामां आवशे ए रीते नक्षत्र मूकवुं (लखवुं) पछी दक्षिण बाजुथी अनुक्रमे पछीनां सत्यावीश नक्षत्रो दरेक रेखाए मूकवां. पछी एक रेखारूप अर्गलने छेडे रहेलां बन्ने नक्षत्रोने विषे जो चंद्र अने सूर्य रह्या होय तो ते एकार्गल कहेवाय छे तेमा पण सन्मुख रहेलां बन्ने नक्षत्रोनां बन्ने पादमां ते सूर्य चंद्र रहेला होय तो ते आंतरा रहित एटले संपूर्ण एकार्गल थाय छे ते आ प्रमाणे —

"आद्येन विध्यते तुर्यो द्वितीयेन तृतीयकः ।
तृतीयेन द्वितीयस्तु तुर्येण प्रथमस्तथा ॥ १ ॥"

"पहेला पादवडे चोथा पादनो वेध थाय छे, बीजा पादवडे त्रीजा पादनो वेध थाय छे, त्रीजा पादवडे बीजा पादनो वेध थाय छे अने चोथा पादवडे पहेला पादनो वेध थाय छे" चोथुं अने पहेलुं तथा बीजुं अने त्रीजुं पाद, ए परस्पर आंतरारहित कहेवाय छे एम समजवुं आथी विपरीतपणे जो सूर्य चंद्र रह्या होय तो ते पादना आंतरावाळो कहेवाय छे अने तेथी ते दोषरहित छे. जेम कोइ धनुर्धर निशानने विंधवा लाग्यो, ते वखते जो तेनी दृष्टि निशानथी जरा पण चूके तो ते निशान विंधातुं नथी. तेम वेध पण जो पादना अग्र भागथी भ्रष्ट थयो होय तो ते फळदायक नथी. ते विषे यतिवल्लभमां कह्यु छे के—

"बाणाग्रदृष्टिपाताद्यल्लक्ष्यं भिनत्ति धानुष्कः ।
तद्वत्समदृष्टिगतो वेधो धिष्ण्यं प्रदूषयति ॥ १ ॥"

"जेम धनुषधारी बाणना अग्र भाग पर दृष्टि राखीने लक्ष्य (निशान) ने विंधे छे, तेम सम (सरखी) दृष्टिमां रहेलो वेध नक्षत्रने दूषित करे छे" (आ प्रमाणे बीजा ... पण जाणवु)

हवे खजुरीना मस्तक पर कयुं नक्षत्र मूकवुं तेनी रीत बतावे छे.—

खर्जूरकस्य शीर्षर्क्षमानमेकार्गले मतम् ।
योगांकः सैक ऊजोऽन्यः साष्टाविंशतिरर्द्धितः ॥ ५७ ॥

अर्थ—इष्ट दिवसे विष्कंभादिक योगोमांनो जेटलामो योग होय ते जो विषम होय तो तेमां एक उमेरवो, अने सम होय तो तेमां अठ्यावीश उमेरवा. पछी ते बन्नेने अर्धा करवा. जे संख्या आवे ते संख्यावाळुं (तेटलामुं) नक्षत्र खजुरीने मस्तके मूकवुं. ए प्रमाणे खजुरीना मस्तकना नक्षत्रनुं प्रमाण एकार्गलमां कहेलुं छे.

एकार्गल यंत्र

चन्द्र	मृगशीर्ष	रवि
रोहिणी		आर्द्रा
कृत्तिका		पुनर्वसु
भरणी		पुष्य
अश्विनी		अश्लेषा
रेवती		मघा
उत्तराभा०		पूर्वाफा०
पूर्वाभा०		उत्तराफा०
शतभिषा		हस्त
धनिष्ठा		चित्रा
श्रवण		स्वाति
अभिजित्		विशाखा
उत्तराषाढा		अनुराधा
पूर्वाषाढा		ज्येष्ठा
	मूळ	

पादवेध यंत्र

चंद्र	रवि
४	१
३	२
२	३
१	४

समजुती—इष्ट दिवसे शूळ योग नवमो छे, तेथी तेमां एक वधारी दश कर्या, तेनो अर्ध करवाथी पांच आव्या, तेथी पांचमुं नक्षत्र मृगशीर्ष छे माटे ते नक्षत्र मस्तक पर आवे. ए रीते इष्ट दिवसे गंड योग होय तो ते दशमो होवाथी तेमां अठ्यावीश उमेरी अर्ध करवाथी ओगणीश आवे छे, तेथी ओगणीशमुं मूळ नक्षत्र मस्तक पर मूकवुं. ए रीते बीजा कुयोगोमां पण जाणवुं.

मस्तकनुं नक्षत्र लाववा माटे लल्ल कहे छे के—

"शूले मूर्ध्नि मृगो मघा च परिघे चित्रा पुनर्वैधृते
व्याघाते च पुनर्वसू निगदितौ पुष्यश्च वज्रे स्मृतः ।
गंडे मूलमथाश्विनी प्रथमके मैत्रोऽतिगंडे तथा
सार्पश्च व्यतिपात इन्दुतपनावेकार्गलस्थौ यदा ॥ १ ॥"

"जो शूळ योग होय तो मस्तक पर मृगशीर्ष नक्षत्र आवे, परिघ योग होय तो मघा आवे, वैधृत होय तो चित्रा, व्याघात योग होय तो पुनर्वसु, वज्र योग होय तो पुष्य, गंड होय तो मूळ, विष्कंभ होय तो अश्विनी, अतिगंड होय तो अनुराधा अने व्यतिपात होय तो अश्लेषा नक्षत्र मस्तक पर आवे. ए प्रमाणे नक्षत्रो स्थापी पछी चंद्र तथा सूर्य जे नक्षत्रना होय ते नक्षत्र उपर स्थापवा जो चंद्र अने सूर्य एक अर्गलमां रहेला होय तो एकार्गल योग जाणवो"

हवे सात शलाकाना चक्रवडे वेध योग कहे छे —

वेध ऊर्ध्वतिरः सप्तरेखे पूर्वादितोऽग्निभात् ।
भस्य रेखाग्रगे खेटे हेयश्चेन्न पदान्तरम् ॥ ५८ ॥

अर्थ—ऊभी तथा आडी सात सात रेखाने विषे पूर्वादिक दिशाना क्रमे स्थापन करेला कृत्तिकादिक नक्षत्रथी इष्ट दिवसना नक्षत्रनी रेखाना अग्र भागमा जे नक्षत्र छे तेमा कोइ ग्रह होय तो वेध थाय छे ते त्याग करवा लायक छे, पण जो पादनुं आतरुं न होय तो त्याग करवा लायक छे. एटले के—ऊभी तथा आडी सात सात रेखा करवी, पछी तेमने छेडे पूर्वादिक दिशाना क्रमे कृत्तिकाथी आरम्भीने सात सात नक्षत्रो (अभिजित् सहित) स्थापवा पछी जे जे ग्रह जे जे नक्षत्रमां होय, ते ते ग्रह ते ते नक्षत्रनी पासे मूकवो. पछी जे रेखाने छेडे इष्ट दिवसनुं नक्षत्र आव्युं होय, ते रेखाने बीजे छेडे जे कोइ ग्रह आव्यो होय तो ते ग्रहवडे ते इष्ट नक्षत्रनो वेध थयो जाणवो. ते वेध त्याग करवा लायक छे, कारण के "क्रूर वेध होय तो मृत्यु ज थाय छे अने सौम्य वेध होय तो सर्वथा सुखनो नाश थाय छे" आ वेधनो अपवाद कहे छे.—जो ते वेध पूर्वनी रीते पादना आतरावाळो होय तो त्याग करवो वा न करवो एटले के इष्ट नक्षत्रना जे पादमां कार्य करवुं होय, अने तेनी सन्मुखना नक्षत्रना पादमां जो ते ग्रह न होय, परंतु पादने आतरे होय तो आ ग्रह वेध पादांतरित थयो, तेथी ते दूषणवाळो नथी ते विषे पूर्णभद्र कहे छे के—

"विद्धं पादं परित्यज्य कुर्यात्कार्यमशंकितः ।
सर्पदष्टाङ्गुलिच्छेदे विषवेषोद्भवः कुतः ॥ १ ॥"

"वेधवाळा पादनो त्याग करीने निःशंक रीते कार्य करवुं, केमके सर्पे डसेली अंगुलीनो छेद कर्या पछी विषना प्रवेशनी उत्पत्ति क्यांथी होय ?"

केशवार्क तो पादांतरित ग्रह वेधने पण ग्रहण करवानो निषेध करे छे. ते कहे छे के—

"विश्लेषमायाति यथाखुभिः स्वैरेणः शरेणैकदिशि हतोऽपि ।
तथाङ्घ्रिवेधादपि तारकाणां क्रूरस्य नश्येद्बलसत्त्वसंपत् ॥ १ ॥"

"जेम मृग शरवडे एक भागमा हणायो होय तोपण पोताना प्राणवडे वियोग पामे छे

एटले मरी जाय छे, तेम क्रूर ग्रहवडे नक्षत्रना पादनो वेध थवाथी पण बळ, सत्त्व अने संपत्तिनो नाश थाय छे.”

श्रीपति कहे छे के—

“ऋक्षं सौम्यग्रहैर्विद्धं पादमात्रं परित्यजेत् ।
क्रूरैस्तु सकलं त्याज्यमिति वेधविनिश्चयः ॥ १ ॥”

“जो नक्षत्रनो सौम्य ग्रहवडे वेध थयो होय तो मात्र ते पादनो ज त्याग करवो, अने क्रूर ग्रहवडे वेध थयो होय तो ते आखुं नक्षत्र तजवुं. ए प्रमाणे वेधनो निश्चय (व्यवस्था) छे.”

सात शलाकाना वेधनो यंत्र.

कृ रो मृ आ पु पु अ

भ — म
अ — पू०
सप्त रेखा
रे — उ
वेधचक्र
उ — ह
पू — चि
श — स्वा
ध — वि

श्र अ उ पू मू ज्ये अ

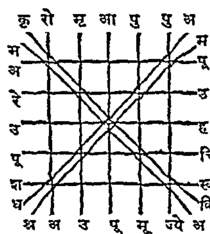
हवे विवाहमां विचारवा योग्य बीजो वेध योग पांच शलाका चक्रवडे बतावे छे.—

विवाहे पूर्ववत्पञ्च रेखा द्वे द्वे तु कोणके ।
लिखित्वाऽग्निभतो भानि वेधं तत्रापि चिन्तयेत् ॥ ३९ ॥

अर्थ—विवाहने विषे पूर्वनी जेम एटले ऊभी तथा आडी पांच पांच रेखा तथा चारे

खूणाओमां वचे रेखा करीने कृत्तिका नक्षत्रथी आरंभीने अठ्यावीश नक्षत्रोने स्थापन करी तेमां पण वेधनो विचार करवो

पंच रेखा चक्र



अहीं मूळ श्लोकमां "तत्रापि" ए पदमां "अपि" शब्द आप्यो छे, ते अव्यय छे, अने अव्ययोना अनेक अर्थ होवाथी अहीं अपि शब्दनो अर्थ अवधारण एटले निश्चय जेवो करवानो छे, तेथी एवो अर्थ थाय छे के— पूर्वे कहेलो सात रेखावाळो वेध प्रतिष्ठादिक सर्व कार्योमां जोवो, अने विवाहमां तो आ पंच रेखावाळो ज वेध जोवो ते विषे विवाह वृंदावनमां कह्युं छे के—"विवाह सिवाय बीजा कार्यमा सात रेखावाळा यंत्रनो वेध जोवो." आ वेधमां पण पूर्वनी जेम पादांतरितनी व्यवस्था जाणवी आतरा रहित ग्रहनो वेध होय तो तेनुं फळ आ प्रमाणे कह्युं छे —

"रवि विद्दा कुजि कुलखय बुहि वंझा निगु अपुत्त सणि दासी ।
गुरुवेहेण तवस्सिणि विलासिणी राहुकेऊहिं ॥ १ ॥"

"रविना वेधमां लग्न करवाथी स्त्री विधवा थाय छे, मंगळना वेधमां करवाथी कुळनो क्षय थाय, बुधना वेधमां करवाथी वंध्या थाय, शुक्रना वेधमा करवाथी पुत्र रहित थाय, शनिना वेधमा करवाथी दासी थाय, गुरुना वेधमा करवाथी तपस्विनी थाय, तथा राहु अने केतुना वेधमा करवाथी विलासवाळी थाय."

आ वेध दीक्षामां पण जोवो एम पूर्णभद्र कहे छे ते कहे छे के.—

"सूरिपयाइसु सत्तसलायं वयगहणाइसु पंचसलायं ।
कत्तिआमाइ ठविज्ज हु चक्कं जोअह ससिणो तो गहवेहं ॥ १ ॥"

"आचार्यपद तथा उपाध्यायपदादिकनी प्रतिष्ठादिकमां कृत्तिकादिक नक्षत्रोनुं सप्त शलाका चक्र स्थापी ते मध्ये चंद्रमानो ग्रहोनी साथे वेध जोवो, अने दीक्षामां पांच शलाका चक्र स्थापी चद्रमानो ग्रहोनी साथे वेध जोवो"

हवे लत्ता योग कहे छे —

लत्ता वर्ज्यैष्टभस्यार्कादीनां सान्निजिद्युपाम् ।
धृत्या १८ कृत्यु २२ डु २७ सप्त ७ हूंत् २४ पञ्चा ५ कृत्यं २२ क ए संख्यभम् ७८

अर्थ—इष्ट नक्षत्रथी अढारमा नक्षत्रने विषे रहेलो सूर्य इष्ट नक्षत्रने लातवडे हणे

छे, इष्ट नक्षत्रथी बावीशमा नक्षत्रे रहेलो चंद्र इष्ट नक्षत्रने लातवडे हणे छे, ए रीते सत्यावीशमे रहेलो मंगळ, सातमे रहेलो बुध, चोवीशमे रहेलो गुरु, पांचमे रहेलो शुक्र, बावीशमे रहेलो शनि अने नवमे रहेलो राहु इष्ट नक्षत्रने हणे छे. अहीं अभिजित् सहित अठ्यावीश नक्षत्रो लेवानां छे. लात (लत्ता) एटले पादनो प्रहार कहेवाय छे, अने ते अश्वादिकनी जेम प्राये पाछळथी मारे छे, माटे आ प्रमाणे कह्युं.

हवे जोशीओने नक्षत्रोनी गणतरी सहेलाइथी थवा माटे आगळथी लत्ता मारे ते पाठांतरवडे बतावे छे.—

लत्तयन्ति नमकाद्याः स्वर्क्षतः साभिजित्क्रमात् ।

अर्का १२ ष्टा ८ ग्नि ३ विकृत्यं २३ ग ६ तत्त्वा २५ ष्ट ८ प्रकृति २१ प्रममम् ८१

(सूर्या १२ ष्ट ८ त्रि ३ त्रयोविंश २३ षट् ६ तत्त्वा २५ ष्टै ८ कविंशकम् २१, पाठान्तरं)

अर्थ—सूर्य पोताना नक्षत्रथी बारमा नक्षत्रने आगळनी लात मारे छे, चंद्र आठमा नक्षत्रने, मंगळ त्रीजा नक्षत्रने, बुध त्रेवीशमा नक्षत्रने, गुरु छठा नक्षत्रने, शुक्र पचीशमा नक्षत्रने, शनि आठमा नक्षत्रने अने राहु एकवीशमा नक्षत्रने लत्ता मारे छे. अहीं पण अभिजित् सहित नक्षत्रो गणवां.

पाछळनी लत्ता तथा आगळनी लत्ता ए बन्ने रीते गणतां एक ज अर्थ आवे छे. जेमके इष्ट नक्षत्र अश्विनी नक्षत्र छे, त्यांथी अढारमुं नक्षत्र ज्येष्ठा छे, ते ज्येष्ठामां रहेलो सूर्य अश्विनीने पाछळथी लात मारे छे, तथा सूर्यनुं पोतानुं नक्षत्र ज्येष्ठा छे, त्यां रहेलो सूर्य आगळना बारमा नक्षत्रने एटले अश्विनीने लात मारे छे. ए रीते सर्वत्र जाणवुं.

अहीं कोइ शंका करे के—इष्ट दिवसनुं जे नक्षत्र होय ते ज नक्षत्र चंद्रनुं पण होय छे, अने त्यां रहेलो चंद्र जो पाछळना बावीशमा अथवा आगळना आठमा नक्षत्रने लात मारे तो तेमां इष्ट नक्षत्रने शुं आव्युं ? कांइ ज नहीं, तेथी इष्ट नक्षत्रने चंद्रनी लत्तानो विचार करवो व्यर्थ छे. आ शंकानुं समाधान ए छे जे चंद्र परिपूर्ण (पूर्णिमानो) थइने ज नक्षत्रने लत्ता मारे छे, पण बीजो चंद्र लत्ता मारतो नथी. ते विषे श्रीपति कहे छे के—"द्वाविंशं परिपूर्णमूर्त्तिरुडुपः संतापयेन्नेत्तरः" "परिपूर्ण मंडळवाळो चंद्र पाछळना बावीशमा नक्षत्रने संतापे छे, पण बीजो अपरिपूर्ण चंद्र संतापतो नथी." तेथी करीने गइ पूर्णिमा जे नक्षत्रमां समाप्त थइ होय ते ज चंद्रनुं नक्षत्र धारीने त्यांथी गणतरी करवी. यतिवल्लभमां पण कह्युं छे के—

"चकार यत्र नक्षत्रे राकान्तं रजनीकरः ।
ततश्चाष्टमनक्षत्रं स पुरो हन्ति लत्तया ॥ १ ॥"

"चंद्रे जे नक्षत्रमां पूर्णिमानो अंत कर्यो होय, ते नक्षत्रथी आठमा नक्षत्रने ते आगळनी लातवडे हणे छे"

हवे लत्ताने विषे अन्य आचार्यनो मत पण बतावे छे.—

अग्रतो नवमे राहोः सप्तविंशे भृगोस्तु भे ।
केचिज्ज्योतिर्विदः प्राहुर्लत्तां तामपि वर्जयेत् ॥ ७२ ॥

अर्थ—राहु पोताना नक्षत्रथी नवमा नक्षत्रने अने शुक्र सत्यावीशमा नक्षत्रने आगळनी लात मारे छे, एम केटलाक ज्योतिर्विद कहे छे, माटे ते लत्ता पण वर्जवा योग्य छे. त्रिविक्रम तो एम कहे छे के—"नख २० संख्यं तमो हन्ति" "राहु पोताना नक्षत्रथी वीशमा नक्षत्रने लत्ता मारे छे."

लत्तानुं फळ पौर्णभद्र ज्योतिषमां आ प्रमाणे कह्युं छे —

"अणुजविणासे १ नासो २ कज्जाभावा ३ भयं ४ विहवछेओ ५ ।
गुरु १ बुह २ सि अ ३ ससि ४ रवि ५ हयरिक्खेसु मरणमन्नेसु ॥ १ ॥"

"गुरुए हणेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी नाना भाइनो नाश थाय, बुधथी हणायेला नक्षत्रमा कार्य करवाथी पोतानो नाश थाय, शुक्रथी हणायेला नक्षत्रमां कार्यनो नाश थाय, चंद्रे हणेला नक्षत्रमां भय उपजे, अने रविए हणेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी वैभवनो नाश थाय, तथा बीजा (मंगळ, शनि तथा राहु) ग्रहोए हणेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी मरण थाय"

अहीं वृद्धो कहे छे के—"सौम्य ग्रहनी लत्ता अल्प दोष करे छे, केमके ते लत्ता नक्षत्रनी दुर्बळता ज करे छे, अने क्रूर ग्रहनी लत्ता तो मरण अने दारिद्र्य विगेरे अनर्थने करे छे." केशवार्क पण कहे छे के—

"उडुनि निर्दलिते शुभलत्तया न फलमस्ति बलस्य गलत्तया ।
अशुभलत्तिभमत्ति तदूढयोर्धनसुतानसुतापकरं परम् ॥ १ ॥"

"शुभ ग्रहनी लत्तावडे हणायेला नक्षत्रमा कार्य करवाथी बल रहित होवाथी कांइ पण अशुभ फळ थतुं नथी, पण अशुभ ग्रहनी लत्तावडे हणायेलुं नक्षत्र तो तेमा परणेला दंपतीना धन तथा पुत्रनो नाश करे छे अने जीवने संतापकारक थाय छे."

वळी ग्रथांतरमां आ प्रमाणे कह्युं छे —

"सौम्यलत्ताहत पातोपग्रहाद्यैश्च दूषितम् ।
भपादं वर्जयेदेव भं च केन्द्रे न चेच्छुभाः ॥ १ ॥"

"जो कदाच तत्काळ कार्य करवानुं होय, अने केंद्रमा शुभ ग्रहो होय तो सौम्य ग्रहनी हणायेला तथा पात अने उपग्रहादिकवडे दूषित थयेला नक्षत्रनुं ते पाद ज

त्याग करवुं, परंतु केंद्रमां शुभ ग्रह न होय तो सौम्य ग्रहनी लत्ताथी पण हणायेलुं आखुं नक्षत्र तजवा योग्य छे."

हवे पात योग कहे छे.—

पातः सूर्यर्क्षतोऽश्लेषा मघा चित्रानुराधिका ।
श्रुतिः पौष्णं च यत्र स्युस्त्याज्यस्तत्संख्यभेऽश्विभात् ॥ ७३ ॥

अर्थ—सूर्यना नक्षत्रथी अश्लेषा, मघा, चित्रा, अनुराधा, श्रवण अने रेवती ए नक्षत्रो जेटली संख्यावाळां अश्विनीथी गणतां होय तेटली संख्यावाळां नक्षत्रमां पात योग जाणवो, अने ते योग शुभ कार्यमां वर्जवा योग्य छे (आ योगने त्रिशूळपात पण कहे छे). भावार्थ ए छे के ज्यारे सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्रनो होय त्यारे ज्येष्ठा नक्षत्रथी अश्लेषा ओगणीशमुं छे, मघा वीशमुं छे, चित्रा चोवीशमुं छे, अनुराधा सत्यावीशमुं छे, श्रवण पांचमुं छे, अने रेवती दशमुं छे. तेथी ते दिवसे अश्विनीथी गणतां ओगणीशमुं मूळ छे, वीशमुं पूर्वाषाढा छे, चोवीशमुं शतभिषक् छे, सत्यावीशमुं रेवती छे, पांचमुं मृगशीर्ष छे, अने दशमुं मघा छे, तेथी करीने आटलां नक्षत्रोमां पात योग छे एम जाणवुं. ए रीते वीजुं पण जाणवुं. आ पात योगमां अभिजित् गणवुं नहीं.

अहीं सहेलाइने माटे आम्नाय कहे छे.—

पातं शूलस्य गंडस्य हर्षणव्यतिपातयोः ।
साध्यवैधृतयोश्चान्ते धिष्ण्यं यत्तत्र वर्जयेत् ॥ ७४ ॥

अर्थ—शूळ, गंड, हर्षण, व्यतिपात, साध्य अने वैधृत, ए छ योगने अंते जे नक्षत्र होय, ते नक्षत्रमां पात योग होय छे, अने ते पात योग वर्जवा योग्य छे.

ते छ पात योगनां नाम नरपतिजयचर्यामां अनुक्रमे आ प्रमाणे कह्यां छे.—

"पवनः १ पावकश्चैव २ कालः ३ किंकर ४ एव च ।
मृत्युकृत् ५ क्षयकृच्चेति ६ पाता नामसदृक्फलाः ॥ १ ॥"

"पवन, पावक, (अग्नि), काळ, किंकर, मृत्युकृत् अने क्षयकृत् ए छ पात योगो पोतानां नाम प्रमाणे फळ आपनारा छे."

॥ इति योगद्वारम् ॥

॥ इति श्रीमति आरंभसिद्धिवार्त्तिके तिथि १ वार २ भ ३ योग ४ परीक्षात्मकः प्रथमो विमर्शः ॥

। अथ द्वितीयो विमर्शः ।

हवे राशिद्वार कहे छे —

राशिरथ तत्र मेषोऽश्विनी च भरणी च कृत्तिकापादः ।
वृषभस्तु कृत्तिकांह्रित्रयान्विता रोहिणी समार्गार्द्धा ॥ १ ॥
मिथुनो मृगार्द्धमार्द्रा पुनर्वस्वोश्चांह्रयस्त्रयः प्रथमे ।
कर्की च पुनर्वस्वोः पादः पुष्यस्तथाऽश्लेषा ॥ २ ॥
सिंहस्तु मघाः पूर्वाः फल्गुन्यः पाद उत्तराणां च ।
कन्योत्तरात्रिपादी हस्तश्चित्रार्धमाद्यं च ॥ ३ ॥
तौली चित्रान्त्यार्द्धं स्वातिपादत्रयं विशाखायाः ।
स्याद्वृश्चिको विशाखाचतुर्थपादोऽनुराधिका ज्येष्ठा ॥ ४ ॥
धन्वी मूलं पूर्वाषाढाऽपि च पाद उत्तराषाढः ।
स्यान्मकर उत्तराषाढांह्रित्रितयं श्रुतिर्धनिष्ठार्द्धम् ॥ ५ ॥
कुंभोऽन्त्यधनिष्ठार्धं शततारा पूर्वभाद्रपात्त्रिपदी ।
मीनो भाद्रपदांह्रिस्तथोत्तरा रेवती चेति ॥ ६ ॥

अर्थ—बार राशिओ तथा तेमां आवतां नक्षत्रोना पाद आ प्रमाणे —

१ मेष राशिमा अश्विनी, भरणी तथा कृत्तिकानु प्रथम पाद आवे छे
२ वृषभ राशिमां कृत्तिकाना छेल्ला त्रण पाद, रोहिणी अने मृगशीर्ष अर्धु आवे छे.
३ मिथुन राशिमां मृगशीर्ष छेल्लुं अर्धु, आर्द्रा अने पुनर्वसुनां प्रथम त्रण पाद
४ कर्क राशिमा पुनर्वसुनुं छेल्लुं पाद, पुष्य अने अश्लेषा
५ सिंह राशिमा मघा, पूर्वाफाल्गुनी अने उत्तराफाल्गुनीनुं प्रथम पाद
६ कन्या राशिमां उत्तराफाल्गुनीना अंतना त्रण पाद, हस्त तथा चित्रा पहेलुं अर्धु.
७ तूल राशिमा चित्रा छेल्लुं अर्धु, स्वाति तथा विशाखाना प्रथम त्रण पाद
८ वृश्चिक राशिमां विशाखानुं चोथुं पाद, अनुराधा अने ज्येष्ठा
९ धन राशिमा मूळ, पूर्वाषाढा अने उत्तराषाढानुं प्रथम पाद
१० मकर राशिमा उत्तराषाढानां छेल्लां त्रण पाद, श्रवण अने धनिष्ठा अर्धु

११ कुंभ राशिमां धनिष्ठा छेल्लुं अर्धुं, शततारका तथा पूर्वाभाद्रपदनां प्रथम त्रण पाद.
१२ मीन राशिमां पूर्वाभाद्रपदनुं छेल्लुं एक पाद, उत्तराभाद्रपद अने रेवती.

राशिनी व्यवस्थामां अभिजित् नक्षत्र लेवानुं नथी, तेथी सत्यावीश नक्षत्रोने विषे दरेकनां चार चार पाद होवाथी कुल एकसो ने आठ पाद थाय छे, ते पाद अक्षरोना नियम कहेवावडे प्रथम सूचवन कर्यां छे. तेमांनां नव नव पादोए करीने एक एक राशि थाय छे. एम बार राशि कहेली छे, तेथी करीने पुरुषादिकनां नाम पाडवामां राशिनी कल्पनाए नक्षत्रना पादमां नियत करेला वर्णो (अक्षरो) ने जाणीने नामादिकना अक्षरो करवा. (तेवा अक्षरथी शरु थतुं नाम पाडवुं.) अभिजित् नक्षत्रनां त्रण पादना अक्षरो उत्तराषाढाना छेल्ला (चोथा) पादमां अंतर्गत थाय छे, अने अभिजितना छेल्ला पादना अक्षरो श्रवणना प्रथम पादमां अंतर्गत थाय छे.

हवे मेषादिक बार राशिओना वर्ण कहे छे.—

मेषाच्छोणार्जुनहरिद्रक्तश्वेतैतमेचकाः ।
पिंगपिंगलकल्माषकडालमलिना रुचः ॥ ७ ॥

अर्थ—मेषथी आरंभीने शोण (रातो), अर्जुन (श्वेत), हरित (पीळो–लीलो), रक्त (रातो), श्वेत, एत (काबरचित्रो), मेचक (काळो), पिंग (पीळो–रातो,) पिंगल (पीळो–रातो), कल्माष (काबरचित्रो), कडाल (पीळो) अने मलिन (मत्स्यनी जेवो मेलो), आ प्रमाणे बारे राशिओना वर्ण जाणवा. आ वर्ण कहेवानुं प्रयोजन विशेषे करीने नवांशमां आवशे ते एवी रीते के धातु,मूळ तथा जीवरूप पदार्थ नवांशथी ज जणाय छे. कह्युं छे के—"अंशकाज्ज्ञायते द्रव्यं" "नवांशथी द्रव्यनुं ज्ञान थाय छे." तेथी करीने धातु अने मूळ विगेरे वस्तु चोराइ होय अथवा खोवाइ होय, तेना प्रश्नमां आ वर्णवडे ते वस्तुना वर्णनुं ज्ञान थाय छे.

हवे राशिओनां स्वरूप कहे छे.—

उद्यद्घोषवतीगदं नृमिथुनं नौस्थाऽग्निसस्यान्विता,
कन्या ना च तुलाधरो धृतधनुर्धन्व्यश्वपश्चार्धकः ।
एणास्यो मकरः कुटांकितशिराः कुंभो विलोमाननं,
मीनो मीनयुगं च नामसदृशाः प्रोक्ताः परे राशयः ॥ ८ ॥

अर्थ—जेना हाथमां वीणा छे एवी स्त्री तथा जेना हाथमां गदा छे एवो पुरुष ए बन्ने सामसामां बेठां होय ते मिथुन राशिनो आकार जाणवो. डाबा हाथमां अग्नि अने जमणा हाथमां धान्य धारण करीने वहाणमां बेठेली कन्याने आकारे कन्या राशि छे. हाथमां

तुला (त्राजवा) राखीने बेठेला पुरुषने आकारे तुला राशि छे, कटीनी नीचेनो भा अश्वनी जेवो एटले चार पगवाळो अने शरीरनो उपरनो भाग पुरुष जेवो, वळी जेन हाथमां धनुष छे एवा पुरुषने आकारे धन राशि छे, मृगना जेवा मुखवाळा मगरने आका मकर राशि छे, मस्तक पर कुंभ रहेलो होय एवा पुरुषने आकारे कुंभ राशि छे ("खांध प खाली घडो रह्यो होय," एम बृहज्जातकमां कह्यु छे) एक बीजाना पुछनी सन्मुख जेन मुख रहेलां छे एवा बे मत्स्यने आकारे मीन राशि छे, तेथी करीने ज आ राशिनो उद मस्तक अने पीठथी थाय छे बाकीनी राशिओ एटले मेष, वृष, कर्क, सिंह अने वृश्चि नामनी पांच राशिओ पोतपोतानां नामने समान रूपवाळी जाणवी तेमज बारे राशिओन चेष्टा तथा स्थान विगेरे पण पोतपोताना नामनी सदृश ज जाणवां एवो संप्रदाय छे विषे सारंग कहे छे के—

"मेषो दैन्यमुपैति गर्वति वृषो नानामतिर्मन्मथः,
शूरः कर्कटको धृतिश्च वनपे कन्या च मायाविनी ।
सत्यं रज्जुतुलास्वलौ मलिनता चापश्च पापाशयो,
मौखर्यं मकरे घटे चतुरता मीने च धीरा मतिः ॥ १ ॥"

"मेष दीनताने पामे छे, वृष गर्विष्ठ थाय छे, मन्मथ (मिथुन) नाना प्रकारनी बुद्धिवाळी होय छे, कर्क शूरवीर होय छे, सिंह हिमतवान् होय छे, कन्या कपटी होय छे, तुला सत्य अने रज्जुनी जेम सरळ होय छे, वृश्चिक मलिन होय छे, धनुष (धन) पापप्रकृतिवाळी होय छे, मकर वाचाळ होय छे, कुंभ चतुर होय छे अने मीन धीर बुद्धिवाळी होय छे"

तेमज मेष अने वृष दिवसे अरण्यमां रहेनारी अने रात्रिए गाममां रहेनारी होय छे, मिथुन गाममा रहेनार छे, कर्क अने मीन जळमां रहे छे, सिंह अरण्यमा रहे छे, कन्या अने तुला गाममां रहे छे, वृश्चिक प्रवासी छे, धन अने कुंभ गाममा रहे छे, तथा मकरनो पहेलो (मुखनो) भाग अरण्यवासी छे अने बीजो भाग जळचर छे.

चोरायेली के खोवायेली वस्तुना प्रश्न वखते चोरनी चेष्टा तथा स्थान जोवा माटे आ उपयोगी छे ते ते लग्नमा उचित कार्य करवा माटे दैवज्ञवल्लभ एवु कहे छे के— "राज्याभिषेक, विरोध, साहस, कूट कर्म विगेरे तथा धातुनी खाण विगेरे संबंधी कार्य मेष लग्नमा करवाथी सिद्ध थाय छे विवाह, गृहप्रवेश, कन्यानो संबंध (वाग्दान) विगेरे ध्रुव कर्म तथा क्षेत्रनो आरंभ अने पशु वेचवा लेवाना कार्यो वृष लग्नमां करवामां आवे छे वृष लग्नमा कहेला कार्य उपरात विद्या, शिल्प अने अलंकार संबंधी कार्यो मिथुन लग्नमा सिद्ध थाय छे सेवा, भोग, मृदु शुभ कर्म, पौष्टिक कर्म, तथा वाव कूवा-

दिक जळ संबंधी कार्य कर्क लग्नमां सिद्ध थाय छे. मेष लग्नमां कहेलां कार्य उपरांत वेपार, राजसेवा तथा शत्रुनी संधि विगेरे कार्यो सिंह लग्नमां करवाथी सिद्ध थाय छे. शिल्प, औषध, भूषण, वेपार विगेरे चर अने स्थिर कार्य कन्या लग्नमां सिद्ध थाय छे. खेती, सेवा, यात्रा विगेरे तथा कन्या लग्नमां कहेलां सर्व कार्यो तुला लग्नमां सिद्ध थाय छे. ध्रुव कर्म, राजसेवा, चोरी विगेरे दारुण उग्र कार्य वृश्चिकमां सिद्ध थाय छे. यात्रा, युद्ध, व्रत विगेरे सत्कार्यो धनुषमां सिद्ध थाय छे. क्षेत्रनो आश्रय तथा जळमार्गे यात्रा विगेरे चर कार्य तथा नीच कार्य मकरमां सिद्ध थाय छे. जळमार्गे यात्रा, वहाण तैयार करवुं, बीज वाववुं, दंभ, भेद, व्रत विगेरे तथा नीच कर्म कुंभमां सिद्ध थाय छे. विद्या, अलंकार, शिल्प, पशुकर्म, वहाणनी यात्रा, अभिषेक विगेरे तथा सर्व मंगलिक कार्य मीन लग्नमां सिद्ध थाय छे.

"एतान्युक्तानि संसिद्धिं यांति शुद्धेष्वजादिषु ।
क्रूराणि क्रूरयुक्तेषु शुभानि सशुभेषु तु ॥ १ ॥"

"मेषादिक लग्न शुद्ध होय तो ए कहेलां कार्यो सिद्धिने पामे छे. क्रूर ग्रहोवडे युक्त होय तो क्रूर कार्य सिद्ध थाय अने शुभ ग्रह सहित होय तो शुभ कार्य सिद्ध थाय छे."

हवे राशिओनुं दिक्स्वामित्व तथा स्वभाव कहे छे.—

पूर्वादिदिक्षु मेषाद्याः पतयः स्युः पुनः पुनः ।
चरस्थिरद्विस्वभावाः क्रूराक्रूरा नरस्त्रियः ॥ ९ ॥

अर्थ—"पुनः पुनः" "फरी फरीने" ए पद दरेक विशेषण साथे जोडवाथी आ प्रमाणे अर्थ थाय छे.—अनुक्रमे पूर्वादिक दिशाओना मेषादिक स्वामीओ छे. एटले पूर्व दिशानो मेष, दक्षिणनो वृष, पश्चिमनो मिथुन अने उत्तरनो कर्क स्वामी छे. ए रीते सिंह विगेरे चार तथा धन विगेरे चार अनुक्रमे चार दिशाना ईश कहेवा. एटले दरेक दिशाना त्रण त्रण स्वामीओ थाय छे, आनुं प्रयोजन यात्रादिकमां छे, तथा चोरायेली के खोवायेली वस्तुना प्रश्नमां वस्तु कइ दिशाए छे ते जाणवा माटे छे. तथा मेष राशि चर छे, वृष स्थिर छे अने मिथुन द्विस्वभाव छे, कारण के तेनी पहेलां वृष छे ते स्थिर छे माटे मिथुननो प्रथम अर्ध भाग स्थिर छे, अने तेनी पछी कर्क छे ते चर छे माटे मिथुननो बीजो अर्ध भाग चर छे ए रीते द्विस्वभाव जाणवो. एम जातक वृत्तिमां कह्युं छे. "पुनः पुनः" नो संबंध होवाथी कर्क चर छे, सिंह स्थिर छे, कन्या द्विस्वभाव छे. ए रीते अनुक्रमे बारे राशिओनुं चरादिकपणुं जाणवुं. आनुं प्रयोजन ए छे जे चर राशिमां जन्मेलां बाळको ते ते स्वभाववाळां थाय छे तथा मेषने आरंभीने अनुक्रमे क्रूर अने अक्रूर तथा पुरुष अने स्त्री एमांनी एक एक संज्ञा पण आपवी. एटले के मेष क्रूर

अने पुरुष छे, वृष अक्रूर अने स्त्री छे, मिथुन क्रूर अने पुरुष छे विगेरे बारे राशि सुधी लइ जतां मेष, मिथुन विगेरे छ एकीवाळी राशिओ क्रूर तथा पुरुष छे अने वृष, कर्क विगेरे बेकीवाळी राशिओ अक्रूर (सौम्य) अने स्त्री छे आनुं फळ ए छे के क्रूर अने पुरुष राशिमां जन्मेलां बाळको क्रूर अने तेजस्वी थाय छे, तथा सौम्य अने स्त्री राशिमां जन्मेलां बाळको सौम्य अने मृदु (कोमळ) थाय छे; पण रत्नमाळामां कह्युं छे के— "मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर अने कुंभ ए पांच राशिओ क्रूर स्वामीवाळी होवाथी क्रूर छे अने बाकीनी सात राशिओ सौम्य स्वामीवाळी होवाथी सौम्य छे" वळी क्रूर राशि पण सौम्य ग्रहथी युक्त होय अथवा तेना पर सौम्य ग्रहनी दृष्टि पडती होय तो ते सौ। थाय छे, अने सौम्य राशि पण क्रूर ग्रह सहित होय अथवा तेना पर क्रूर ग्र दृष्टि पडती होय तो ते क्रूर थाय छे. ते विषे दैवज्ञवल्लभ कहे छे के—

"ग्रहयोगेक्षणाभ्यां स्याद्राशेर्भावो ग्रहोद्भवः ।
राशिः स्वभावमाधत्ते ग्रहयोगेक्षणोज्झितः ॥ १ ॥"

"ग्रहना संबंधथी तथा दृष्टिथी राशिनो भाव ग्रह जेवो थाय छे, पण ग्रह तथा दृष्टिथी रहित होय तो राशि पोताना भावने धारण करे छे"

हवे राशिओना बळ तथा उदय विषे कहे छे.—

षड् निशावलिनोऽजोक्षयुग्मकर्कधनुर्मृगाः ।
पृष्ठेनोद्यन्त्ययुग्मास्ते शीर्षेणान्ये द्विधा झषः ॥ १० ॥

अर्थ—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनुष अने मकर ए छ राशिओ रात्रिए बळवान् छे. अर्थात् बाकीनी सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ अने मीन ए छ दिवसे बळवान् छे एम जाणवु खोवायेली अथवा चोरायेली वस्तुनो समय जाणवा माटे आनुं प्रयोजन छे. तेमज दिवसे बळवान् राशिना लग्न वखते दिवसे यात्रादिक करवा शुभकारी छे, अने रात्रिए बळवान् राशिना लग्नमा रात्रे यात्रादिक करवा शुभ छे तेथी विपरीतपणुं इष्ट नथी. आ रात्रिनी बळवान् छ राशिओमाथी मिथुन विनानी पाच राशिओ पृष्ठथी उदय पामे छे एटले उदय समये तेमनुं पृष्ठ प्रथम देखाय छे तथा बीजी मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक अने कुंभ ए छ राशिओ मस्तकथी उदय पामे छे अर्थात् उदय वखते प्रथम मस्तक देखाय छे तथा मीन राशि बन्नेथी उदय पामे छे एटले के तेना उदय वखते एकी वखते पृष्ठ तथा मस्तक देखाय छे आनुं प्रयोजन ए छे जे यात्रादिकमा शीर्षना उदयवाळा लग्नमा जय थाय छे, अने पृष्ठ उदयना लग्नमा निष्फळ थाय छे विगेरे.

हवे राशिओनां उच्च स्थान कहे छे —

अज १ वृष २ मृग ३ कन्या ४ कर्क ५ मीन ६ वणिजो ७ ऽंशेः ।
दिग् १० दहना ३ ष्टाविंशति २८ तिथी १५ षुनक्षत्र २७ विंशतिभिः २० ॥११॥

अर्थ—मेष १, वृष २, मकर ३, कन्या ४, कर्क ५, मीन ६ अने तुला ७ ए सात राशिउं अनुक्रमे दश, त्रण, अठ्यावीश, पंदर, पांच, सत्यावीश अने वीश अंशे करीने अनुक्रमे सूर्यादिकनां उच्च स्थानो छे. अर्थात् मेप राशिना पहेला दश त्रिंशांशो रविनुं उच्च स्थान छे, वृषजना पहेला त्रण त्रिंशांशो चंद्रनुं उच्च स्थान छे. मकरना पहेला अठ्यावीश त्रिंशांशो मंगळनुं उच्च स्थान छे विगेरे. अहीं संप्रदाय एवो छे के—"आखी मेष राशिमां सूर्य उच्च छे, तेमां पण दश अंशो सुधी तो परम उच्च छे, अने त्यारपछी मात्र उच्च ज छे. चंद्र वृष राशिमां उच्च छे, तेमां पण त्रण अंश सुधी परम उच्च छे, अने त्यारपछी मात्र उच्च ज छे विगेरे." आ संप्रदाय लोकश्री विगेरे ग्रंथोना अभिप्रायने मळतो ...तु लघु अने बृहत् जातक तथा नारचंद्र विगेरे ग्रंथोनो अभिप्राय तो आ प्रमाणे ...ष राशिमां सूर्य उच्च छे, पण तेना ज दशमा त्रिंशांशे परम उच्च छे. चंद्र वृष ... उच्च छे, पण तेना ज त्रीजा अंशे परम उच्च छे. मंगळ मकर राशिमां उच्च छे, ...ना ज अठ्यावीशमे अंशे परम उच्च छे विगेरे." ताजिक ग्रंथमां तो परम उच्च एवी ...ज नथी, परंतु "मेष राशिमां पहेला दश भाग सुधी सूर्य उच्च छे, पण पछी तेजहीन एम कह्युं छे. ए ज प्रमाणे वृषादिकमां चंद्रादिकनुं उच्चपणुं जाणवुं.

अलंकार, मीन लग्नमां "मेषा ष तो

राशिउंनुं नीच तथा त्रिकोण स्थान कहे छे.

स्वोच्चतः सप्तमं नीचं त्रिकोणान्यथ भानुतः ।
सिंहो ५ क्ष २ मेष १ प्रमदा ६ धनु ए र्धट ७ घटाः ११ क्रमात् ॥ १२ ॥

अर्थ—पोतपोताना उच्च स्थानथी सातमुं सातमुं स्थान नीच जाणवुं. हवे रवि आदि ग्रहोनुं अनुक्रमे सिंह, वृष, मेष, कन्या, धन, तुला अने कुंभ ए राशिउं त्रिकोण स्थान कहेवाय छे.

जे जे ग्रहनुं जे जे उच्च स्थान होय ते थकी जे जे सातमुं स्थान होय ते ते ते (ग्रह)नुं नीच स्थान जाणवुं. अहीं पण दश, त्रण, अठ्यावीश, पंदर, पांच, सत्यावीश अने वीश ए प्रमाणे अंशनी संख्या जे पूर्वे कही छे, ते पण लेवी. तेथी करीने उच्चनी जेम नीचमां पण तेवी ज रीते अर्थ करवो. जेमके मेपथी सातमी तुला राशि छे, तेना पहेला दश त्रिंशांशो रविनुं नीच स्थान जाणवुं. वृष राशिथी सातमी वृश्चिक राशि छे, तेना पहेला त्रण त्रिंशांशो चंद्रनुं नीच स्थान जाणवुं विगेरे. अहीं पण संप्रदाय एवो छे के—"तुलामां रवि नीच छे, तेमां पण दश अंश सुधी परम नीच अने त्यारपछी मात्र नीच जाणवो. ए प्रमाणे चंद्रादिकमां पण कहेवुं." आ संप्रदाय पाकश्री विगेरे ग्रंथो साथे मळतो छे, परंतु जातक अने नारचंद्र विगेरे ग्रंथोनो अभिप्राय तो आ प्रमाणे छे.—"तुलामां सूर्य नीच छे, तेमां पण दशमा त्रिंशांशे परम नीच छे, ए प्रमाणे चंद्रादिकमां

पण जाणवुं" ताजिकमां तो परम नीच एवी संज्ञा ज नथी, परंतु "तुला राशिमां पहेल दश अंशो सुधी चंद्र नीचनो छे" एम कह्युं छे. ए प्रमाणे चंद्रादिकमा पण जाण: विशेष आ प्रमाणे छे.—

"कन्या राहुगृहं प्रोक्तं राहूच्चं मिथुनः स्मृतः ।
राहुनीचं धनुर्वर्णादिकं शनिवदस्य च ॥ १ ॥"

"राहुनुं घर (स्थान) कन्या राशि छे, राहुनुं उच्च स्थान मिथुन राशि कही छे, राहुनुं नीच स्थान धन राशि छे, तथा आ (राहु) ना वर्णादिक शनि प्रमाणे जाणवा"

परम उच्चपणुं तथा परम नीचपणुं साठ लिप्ताना प्रमाणवाळा ते ते अंशना मध्य भागे जाणवुं अर्थात् त्रीश लिप्ताए करीने जाणवुं परम उच्चता अने परम नीचताना समयने जाणवानो उपाय आ प्रमाणे छे —

"मासं रविबुधशुक्राः ३ सार्ध भौम ४ स्त्रयोदशाचार्य' ५ ।
त्रिंशन्मन्दो ६ ऽष्टादश राहु ७ श्चन्द्रः ८ सपाददिवसयुगम् ॥ १ ॥"

"एक राशिमां सूर्य, बुध अने शुक्र एक एक मास रहे छे, मंगळ दोढ मास रहे छे, गुरु तेर मास रहे छे, शनि त्रीश मास रहे छे, राहु अढार मास रहे छे, तथा चंद्र सवा बे दिवस रहे छे"

"त्रिंशांशो ज्ञार्कशुक्राणां दिनं ३ सार्धचतुर्घटि ।
इन्दो' ४ कुजे सार्धदिन ५ मासमेकं शनैश्चरे ६ ॥ १ ॥
अष्टादशदिनी राहो ७ स्त्रयोदशदिनी गुरोः ८ ।

"बुध, सूर्य अने शुक्रनो त्रिंशांश एक एक दिवसनो छे, चंद्रनो त्रिंशांश साडी चार घडी छे, मंगळनो त्रिंशांश दोढ दिवस छे, शनिनो त्रिंशांश एक मास, राहुनो त्रिंशांश अढार दिवस अने गुरुनो त्रिंशांश तेर दिवसनो छे."

आथी करीने आ प्रमाणे भावार्थ थयो के—मेषनी संक्रांतिमां नव दिवस पछी एक दिवस परम उच्चनो सूर्य कहेवाय वृषमा नव घडी पछीनी साडी चार घडी सुधी चंद्र परम उच्च थयो मकरमां साडी चाळीश दिवस पछी दोढ दिवस सुधी मंगळ परम उच्च छे कन्यामा चौद दिवस पछी एक दिवस सुधी बुध परम उच्च छे कर्कमा बावन दिवस पछी तेर दिवस सुधी गुरु परम उच्च छे मीनमा छवीश दिवस पछी एक दिवस सुधी शुक्र परम उच्च छे तथा तुलामा ओगणीश मास पछी एक मास सुधी शनि परम उच्च छे ए रीते परम नीचनी पण भावना जाणवी. आ प्रकार सामान्यताथी बताव्यो छे एम जाणवुं, कारण के मगळ विगेरे ग्रहो प्राये वक्र तथा अतिचारवाळा थाय छे. ते वखते आ

१ घडी.

परम उच्चनो तथा परम नीचनो समय न जाणवो, परंतु वक्र गतिवाळा तथा अतिचार-वाळा ग्रहोनी आगळ कहेवाशे ते रीते स्पष्टता कर्या पछी उपर कहेला अंशो प्रमाणे उच्च नीचनी भावना करवी. आ कहेलो समय तो सहज गतिवाळा ग्रहोने माटे ज समजवो.

ग्रहोना उच्च नीचपणानुं फळ आ प्रमाणे छे.—

"इक्को जइ उच्चत्थो हवइ गहो उन्नइं परं कुणइ ।
किं पुण वे तिन्नि गहा कुणंति को इत्थ संदेहो ॥ १ ॥"

"जो कदाच एक पण ग्रह उच्च स्थाने रह्यो होय तो परम उन्नतिने करे छे, तो पछी उच्च स्थाने रहेला वे त्रण ग्रहो परम उन्नतिने करे तेमां शो संदेह ?"

जन्मने विषे उच्च ग्रहनुं फळ आ प्रमाणे छे.—

"त्र्युच्चैर्नृपः पञ्चभिरर्धचक्री चक्री च षडुच्चैर्मुनिभिः ७ स्तथार्हन् ।"

"जन्मसमये त्रण ग्रह उच्च होय तो ते राजा थाय, पांच ग्रह उच्च होय तो वासुदेव थाय, छ उच्च होय तो चक्रवर्ती थाय अने सात ग्रह उच्चना होय तो अरिहंत (तीर्थंकर) थाय." वळी कह्युं छे के—

"त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ।
त्रिभिः स्वस्थानगैर्मंत्री त्रिभिरस्तमितैर्जडः ॥ १ ॥
अन्धं दिगंबरं मूर्खं परपिंडोपजीविनम् ।
कुर्यातामति नीचस्थौ पुरुषं चन्द्रभास्करौ ॥ २ ॥"

"जेना जन्मसमये त्रण ग्रह नीचना होय तो ते दास थाय छे, अने त्रण ग्रह उच्चना होय तो ते राजा थाय छे. त्रण ग्रहो स्वस्थाने रह्या होय तो ते मंत्री थाय छे, अने त्रण ग्रह अस्त पाम्या होय तो ते जड थाय छे. (१) चंद्र अने सूर्य जो नीच स्थाने रह्या होय तो ते पुरुषने अंध, दिगंबर (वस्त्र रहित–गरीब), मूर्ख अने भिक्षावृत्तिथी आजीविका करनार करे छे. २."

उपर मूळ श्लोकमां जे त्रिकोण संज्ञा आपी छे, ते मूळ त्रिकोण पण कहेवाय छे. त्रिकोणनुं फळ ए छे जे "त्रिकोणमां रहेला ग्रहो उच्च ग्रहना जेवुं ज अथवा तेथी कांइक न्यून फळ आपनारा छे." एम पाकश्री ग्रंथमां कह्युं छे. प्रश्न शतक वृत्तिमां त्रिकोण विगेरेने त्रिंशांशनी स्पष्टतावडे आ प्रमाणे कह्या छे.—"सिंह राशिमां वीश त्रिंशांशो त्रिकोण छे अने बाकीना दश त्रिंशांश सूर्यनुं गृह (घर–स्थान) छे. वृषभ राशिमां वे त्रिंशांशो उच्च छे, त्रीजो परम उच्च छे, अने बाकीना चंद्रनुं त्रिकोण छे. मेषमां बार त्रिंशांशो त्रिकोण छे, बाकीना अंशो मंगळनुं गृह छे. कन्यामां चौद त्रिंशांशो उच्चना छे, पंदरमो परम उच्च छे, तेनी पछीना पांच त्रिकोण छे अने बाकीना दश बुधनुं गृह

छे. धनुषमां दश त्रिंशांशो त्रिकोण छे अने वाकीना गुरुनुं गृह छे. तुलामां पंदर त्रिंशांशो त्रिकोण छे, अने वाकीना शुक्रनुं गृह छे. कुंजमां वीश त्रिंशांशो त्रिकोण छे अने वाकीना दश शनिनुं घर छे "

हवे राशिउना संवंधवाळा वार जावोने कहे छे —

लग्नाद्भावास्तनु १ ऽव्य २ भ्रातृ ३ वन्धु ४ सुता ५ रयः ६ ।

स्त्री ७ मृत्यु ८ धर्म ९ कर्मा १० य ११ व्यया १२ श्च द्वादश स्मृताः ॥१३॥

अर्थ—लग्नथी एटले प्रथम स्थानथी अनुक्रमे तनु १, ऽव्य २, भ्रातृ ३, वंधु ४, सुत ५, अरि ६, स्त्री ७, मृत्यु ८, धर्म ९, कर्म १०, आय ११, व्यय १२, आ रीते वार जावो कहेला छे

प्रश्न वखते, जन्म वखते अथवा यात्रादिकने समये जे कोइ राशि उदयमां होय ते राशिने लग्न नामे जाणवी. तेने वार आरावाळा चक्रनी आकृति करीने तेनी वच्चेना विवरमां मुख्य स्थाने स्थापन करवी वाकीनी अगीयार राशिउ मावी वाजुना अनुक्रमे अगीयार स्थानकोमा मूकवी. ए रीते कुंमळी थाय छे ते आ प्रमाणे—

२ / ३	१ लग्न	१२ / ११
४	श्री	१०
५ / ६	७	८ / ९

अहीं लग्ननी तनु जाव संज्ञा छे एटले इष्ट माणसना शरीर विषे ए तनु जावने आधारे विचार करवो त्यारपछी मावी वाजुना क्रमथी अगीयार स्थानोने विषे रहेला वीजा विगेरे स्थानोमा रहेली राशिउनी संज्ञा अनुक्रमे ऽव्य जाव २, भ्रातृ जाव ३, वंधु जाव ४, विगेरे जाणवी तेथी इष्ट माणसनुं ऽव्य, जाइ विगेरे संवंधी ते ते स्थानोने अनुसारे विचारवां. कह्युं छे के—

"यो यो जावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः ।
पापैरेवं तस्य तस्यास्ति हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥ १ ॥"

"जे जे जाव स्वामीए जोयेलो होय के युक्त होय अथवा सौम्य ग्रहोए जोयेलो के युक्त होय तो ते ते जावनी वृद्धि थाय छे ए ज रीते जो पाप ग्रहोए युक्त के जोयेलो होय तो ते ते जावनी हानि थाय ए प्रमाणे पूछनारने तेनी जन्मकुंमळी परथी कहेवुं "

विशेष ए छे जे छठा अरि जावमा जेम क्रूर ग्रहो अरि जावने हणे छे तेमज सौम्य ग्रहो पण हणे छे ज, पण पुष्ट करता नथी, अने व्ययस्थान तथा आठमा स्थानमां पण जेम सौम्य ग्रहो व्यय (खर्च)ने तथा मृत्युने पोषे छे तेम क्रूर ग्रहो पण पोषे ज छे, परंतु तेने हणता नथी कह्यु छे के—"सौम्याः षष्ठेऽरिघ्नाः सर्वे नेष्टा व्ययाष्टमगा "। "छठे स्थाने रहेला सौम्य ग्रहो अरिने हणे छे, तथा व्ययस्थाने अने आठमा स्थाने रहेला सर्वे ग्रहो अनिष्ट छे " यवनेश्वर तो कहे छे के—"अष्टमे सौम्या आयुर्वृद्धिकराः" "आठमे स्थाने सौम्य

इअ जोगपईवाउ पयडत्थपएहिं विहिअ उज्जोआ ।
मुणिमणभवणपयासं दिणसुद्धिपईविआ कुणउ ॥ १४३ ॥

आ रीते योगरूपी प्रदीप थकी प्रगट अर्थवाळां पदोए करीने जेनो उद्योत कर्यो छे एवी आ दिनशुद्धिरूपी दीपिका मुनिओनां मनरूपी भवनना प्रकाशने करो. १४३.

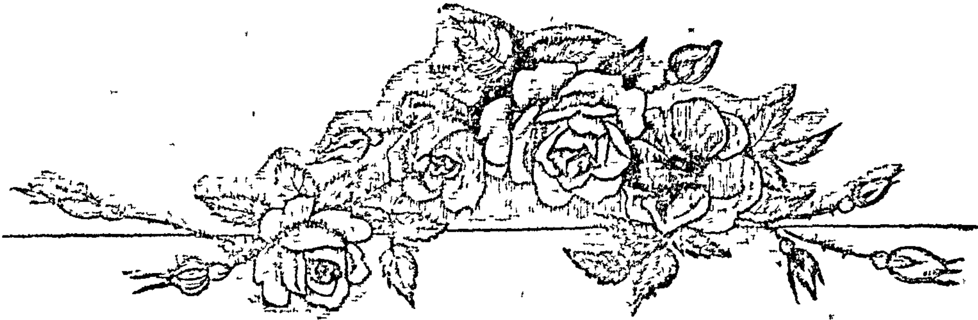
सिरिवयरसेणगुरुपट्टनाह सिरिहेमतिलयसूरीणं ।
पायपसाया एसा रयणसिहरसूरिणा विहिआ ॥ १४४ ॥

श्री वज्रसेन गुरुनी पाटना स्वामी श्री हेमतिलक सूरिना पादप्रसादथी आ दिन शुद्धि रत्नशेखर सूरिए रची छे.

॥ इति श्रीरत्नशेखरसूरिविरचिता दिनशुद्धिप्रदीपिका ॥

श्री खरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर

मुनि मंगळसागर
ज्ञानबाई बिल्डींग
पालीताणा (सौराष्ट्र)



हवे पात योग कहे छे.—

अस्से म चि अणु सव रे विसमारेहा उ सेसमभिलहिउं ।
रविरेहस्सिणि गणिए इट्ठे रिक्खे त्रिसमि पाउ ॥ १३५ ॥

अश्लेषा १, मघा २, चित्रा ३, अनुराधा ४, श्रवण ५, रेवती ६, आ नक्षत्रोथी
क्रमे रेखा करी तेमां शेष नक्षत्रो स्थापन करी ज्यां सूर्य नक्षत्र होय त्यांसुधी आ छ
क्षत्रोथी गणवुं. जे जे संख्या आवे अश्विनीथी उत्क्रमे गणतां ते ते संख्यावाळा नक्ष-
मां पात जाणवो. तात्पर्य ए छे जे सूर्य कृत्तिकानो छे तो अश्लेषादिक छ नक्षत्रथी
र्य २२—२१—१७—१४—९—४ थाय तो अश्विनीथी उत्क्रमे बावीशमुं विगेरे
नर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, स्वाति, पूर्वाषाढा अने पूर्वाभाद्रपद आदि छ नक्षत्रमां
त जाणवो. १३५

रविमुक्का निअरिक्का बार छम तिअ तिवीसं छंठं च ।
पणवीस अडिगवीसं कुणंति लत्ताइयं रिक्खं ॥ १३६ ॥

सूर्य जे नक्षत्रमां रहेल होय ते नक्षत्रथी बारमा नक्षत्रने, चंद्र आठमा नक्षत्रने,
गळ त्रीजा नक्षत्रने, बुध त्रेवीशमा नक्षत्रने, गुरु छठ्ठा नक्षत्रने, शुक्र पचीशमा नक्षत्रने
शनि आठमा नक्षत्रने अने राहु एकवीशमा नक्षत्रने लत्ता दोषथी हणेलुं करे छे. १३६

हवे वेधने कहे छे —

सत्त सिलाए कित्तिअमाई रिक्खे ठविंतु जोएइ ।
गहवेहमिठरिक्के उवरि अहो वा पयत्तेण ॥ १३७ ॥

सात शलाका (लींटी) आडी तथा उभी करवी पछी मथाळे कृत्तिकाथी अनुक्रमे
८ नक्षत्रो मूकीने इष्ट नक्षत्रने विषे प्रयत्न करीने ग्रहनो वेध जोवो, एटले के सप्त
लाका यन्त्रमां जे नक्षत्रो मूक्या होय त्यां जे ठेकाणे संभवे ते ठेकाणे सर्वे ग्रहो
कवा तेमां जो सौम्य ग्रह अने पाप ग्रह सामसामा आवे तो ते वेध समजवो.
वेध अशुभ छे १३७.

हवे ग्रहोना तथा लग्नना स्पष्टीकरण माटे तेनी युक्तिने उपयोगी सर्व षड्वर्गनुं साधारण लिप्तामान कहे छे.—

षड्वर्गेऽष्टादश१८०० नव ९०० षड् ६०० द्वे २०० सार्द्धं शतानि षष्टिश्च ६० ।
क्रमशो गृहहोरादौ लिप्ताः स्युः प्रभुरिह नवांशः ॥ २३ ॥

अर्थ—छ वर्गनी मध्ये मेषादिक गृहो (स्थानो)मांना दरेकने अढारसो अढारसो लिप्ताओ छे, होरानी लिप्ताओ नवसो छे, केमके गृहथी अर्धी होरा छे. द्रेष्काणनी लिप्ताओ छसो छे, कारण के गृहथी त्रीजे भागे द्रेष्काण छे, ए रीते नवांशोनी बसें लिप्ताओ, द्वादशांशनी दोढसो लिप्ताओ अने त्रिंशांशनी साठ लिप्ताओ छे. साठ विलिप्ता (पळ)नी एक लिप्ता (घडी) थाय छे एवुं आगळ कहेशे. आ छ वर्गनुं फळ ए छे जे—"तिथि विगेरेना बळथी चंद्रनुं बळ सो गणुं छे, तेनाथी लग्न हजार गणुं वधारे बळवान् छे, तेनाथी पण होरा विगेरे सर्वे उत्तरोत्तर पांच पांच गणा वधारे बळवान् छे." ए प्रमाणे बृहत् जातक वृत्तिमां कह्युं छे. हवे आ छए वर्गमां नवांशनुं ज प्रधानपणुं छे ते कहे छे.—आ छए वर्गमां प्रतिष्ठा, विवाह विगेरे सर्वे कार्योने विषे नवांश ज वधारे समर्थ (बळवान्) छे. ए विषे लल्ल कहे छे के—

"स्वार्द्धे नक्षत्रफलं तिथ्यर्धे तिथिफलं समादेश्यम् ।
होरायां वारफलं लग्नफलं त्वंशके स्पष्टम् ॥ १ ॥"

"नक्षत्रनुं फळ पोताना अर्ध भागमां स्पष्ट छे, तिथिना अर्ध भागमां तिथिनुं फळ स्पष्ट छे, होराने विषे वारनुं फळ स्पष्ट छे, तथा लग्ननुं फळ अंशकमां (नवांशमां) स्पष्ट छे."

अहो नवांशनुं केवुं प्राधान्य छे ? दैवज्ञवल्लभे कह्युं छे के—

"लग्ने शुभेऽपि यद्यंशः क्रूरः स्यान्नेष्टसिद्धिदः ।
लग्ने क्रूरेऽपि सौम्यांशः शुभदोऽंशो बली यतः ॥ १ ॥"

"लग्न शुभ होय छतां जो अंश (नवांश) क्रूर होय तो ते इष्ट सिद्धिने आपतो नथी, अने लग्न क्रूर होय छतां अंश सौम्य होय तो शुभकारक छे, कारण के अंश ज बळवान् छे." तेमज "क्रूर अंश (नवांश)मां रहेलो सौम्य ग्रह पण क्रूर थाय छे, अने सौम्य अंशमां रहेलो क्रूर ग्रह पण सौम्य थाय छे." एम लल्ल कहे छे. "क्रूर अंशमां रहेला सौम्य ग्रहनी दृष्टि पण दुष्ट थाय छे, अने सौम्य अंशमां रहेला क्रूर ग्रहनी दृष्टि पण शुभ (सौम्य) थाय छे." तथा ग्रहगोचरनी शुद्धिना विचारने समये "राशिना गोचरथी ग्रह शुभ होय तोपण नवांशना गोचरे करीने जो शुभ होय तो ज ते शुभ थाय छे." इत्यादि लल्ल तथा श्रीपति कहे छे.

हवे ग्रह पोताना वर्गमां रहेलो छे के बीजा वर्गमां रहेलो ? ते कहे छे.

षण्णां त्र्यादिषु वर्गेषु यो ग्रहः स्वेष्ववस्थितः।
स स्ववर्गगतो ज्ञेय एवमेवान्यवर्गगः ॥ २४ ॥

अर्थ—कोइ पण ग्रह छ वर्गमांना कोइ पण पोताना त्रण, चार अथवा उत्कृष्टथी पांच वर्गमां रहेलो होय, तो ते स्ववर्गमां रहेलो छे एम जाणवुं, अने एवी ज रीते एटले त्रण, चार के पांच वर्गमां रहेलो होय, पण ते बीजाना वर्गमां रहेलो होय तो ते अन्य वर्गमां रहेलो जाणवो

कोइ पण ग्रह उत्कृष्टथी पांच वर्ग सुधी ज आवी शके छे, परंतु कदापि छए वर्गमां आवी शकतो नथी, कारण के सूर्य अने चंद्र ए बे ग्रहो त्रिंशांशमा आवता ज नथी, तथा मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए ग्रहो होरामा आवता ज नथी आ प्रमाणे जे ग्रह पोताना पांच वर्ग सुधीमा आवतो होय ते स्ववर्गमां आवेलो होवाथी ज बळवान् छे, अने अन्य वर्गमां आवेलो होय तो ते निर्बळ छे. विशेष ए छे जे—"जे नवांशमां छ, पाच के चार गृहादिक मध्ये सौम्य ग्रहस्वामी मळे तो छ वर्गनो, पाच वर्गनो के चार वर्गनो ते नवाश सौम्य होवाथी प्रतिष्ठादिकना लग्नने विषे विशेषे करीने ग्रहण करवा लायक छे. ते सौम्य ग्रहनो आ रीते निश्चय करेलो छे.—

"सत्तमनवमा मेसे १ पंचमतइया विसे २ मिहुणि छट्ठो ३ ।
पढमतइया य कक्के ४ सिंहे छट्ठो ५ कण्णी तइओ ६ ॥ १ ॥
अट्ठमनवमा य तुले ७ विच्छियलग्गे चउत्थय नवंसो ८ ।
धणुलग्गि छट्ठसत्तमनवमा ए मयरमि पचमओ १० ॥ २ ॥
छट्ठट्ठमा य कुंभे ११ पढमो तइओ अ मीण लग्गम्मि ।
चउपणछग्ग छ वग्गो एएसु नवंसएसु सुहो ॥ ३ ॥"

"मेष लग्नमां सातमो अने नवमो नवांश, वृषमा पाचमो अने त्रीजो, मिथुनमा छट्ठो, कर्कमां पहेलो अने त्रीजो, सिंहमां छट्ठो, कन्यामां त्रीजो, तुलामां आठमो अने नवमो, वृश्चिक लग्नमा चोथो नवाश, धन लग्नमा छट्ठो, सातमो अने नवमो, मकरमां पाचमो, कुंभमा छट्ठो अने आठमो तथा मीन लग्नमां पहेलो अने त्रीजो, आटला नवाशोमा चार वर्ग, पांच वर्ग के छ वर्ग होय ते शुभ छे." आटला नवाशोमा चार वर्गनी शुद्धि तो सर्वने छे, परंतु पाच अने छ वर्गनी शुद्धि तो केटलाएक नवांशोमां संपूर्ण रीते छे, अने केटलाएकमां केटलेक अंशे ज छे तेनी स्पष्टता आ ग्रंथना छेल्ला श्लोकनी टीकामा लखेली छे, त्यांथी जाणी लेवी. केटलाएक आचार्यो त्रण ज वर्गनी शुद्धिए करीने अने बीजा

ग्रहो होय तो ते आयुष्यनी वृद्धि करनारा छे." भ्रातृ भावमां बहेन संबंधी विचार पण करवो. बंधु एटले स्वजन छे तेथी बंधु भावमां मातानो पण विचार करवो. सुत भावमां शिष्यो पण जाणवा. स्त्री एटले भार्या, तेना भावमां गमन आगमन पण जाणवा. आठमा स्थानमां रोगादिक पण जाणवा. धर्म भावमां वंशपरंपराए आवेली विद्या अपूर्व विद्या तथा अचिंतव्यो धनलाभ विगेरे जाणवा. दशमा स्थानमां कर्म एटले वेपार, ते स्थानमां माता, भाग्य, आज्ञा, ऐश्वर्य विगेरे संबंधी विचार करवा. लाभ स्थानमां नाश पामेलानी पण प्राप्तिनो विचार करवो. तथा व्यय स्थानमां सत् तथा असत् बन्ने जातना खर्च विगेरेनो विचार करवो.

जेम लग्नथी आरंभीने बार भाव कह्या तेम चंद्रथी पण बार भाव जाणवा. तेथी करीने लग्न अने चंद्रनी मध्ये जे बळवान् होय तेनाथी बार भाव विचारवा एवो आम्नाय छे.

बारे भावोनां बीजां नामो बतावे छे.—

सुहृन्मंदिरपातालहिबुकाम्बुसुखाभिधम् ।
चतुर्थमष्टमं छिद्रं चतुरस्रे उभे पुनः ॥ १४ ॥

अर्थ—सुहृद्, मंदिर, पाताल, हिबुक, अंबु अने सुख ए चोथा स्थानना नामो छे, छिद्र ए आठमा स्थाननुं नाम छे. चतुरस्र ए चोथा तथा आठमा ए बे स्थाननुं नाम छे. सुहृत् शब्दे करीने मित्रभवन, मंदिर शब्दवडे गृह भवन, पाताल शब्दवडे रसातल इत्यादिक पर्याय नामो पण अत्र लेवाय छे. ए प्रमाणे आगळ पण सर्वत्र जाणवुं. तथा पूर्वे कहेला तनु विगेरे बार भावोने स्थाने पण शरीर विगेरे पर्याय शब्दोनो पण व्यवहार करवो. आठमुं मृत्यु स्थान अनायु नामनुं पण कहेवाय छे.

त्रित्रिकोणं च नवमं त्रिकोणे नव पञ्चमे ।
सप्तमं कामजामित्रद्युनद्यूनास्तसंज्ञकम् ॥ १५ ॥

अर्थ—नवमुं स्थान त्रित्रिकोण कहेवाय छे. नवमुं अने पांचमुं स्थान त्रिकोण कहेवाय छे अने सातमुं स्थान काम, जामित्र, द्युन, द्यून अने अस्त नामे पण कहेवाय छे, अहीं काम एटले कामदेव छे, जामिने एटले बहेनने त्याग करे ते जामित्र कहेवाय छे, एटले के ते विवाहनो पर्याय शब्द छे. तथा सर्व कोइ ग्रह जे राशिमां उदय पामे छे, तेनाथी सातमी राशिमां अस्त पामे छे, तेथी सातमा स्थानने अस्त नामे पण कह्युं.

स्यातां तृतीये दुश्चिक्यविक्रमे पञ्चमे तु धीः ।
मध्यमेषूरणव्योमान्याहुर्दशमधामनि ॥ १६ ॥

अर्थ—त्रीजा स्थाननुं नाम दुश्चिक्य अने विक्रम कहेवाय छे, पांचमुं स्थान धी (बुद्धि) नामनुं कहेवाय छे, दशमा स्थानमां मध्य, मेषूरण अने व्यो[illegible] नामो कहेवाय छे,

अहीं जे चोथा स्थाननी पाताळ अने अंबु संज्ञा कही छे तथा दशमा अने व्योम संज्ञा कही छे, ते भूगोळनी रीते कही छे एम जाणवुं. भूगोळनो के—"सूर्य प्रातःकाळे पूर्व दिशामां उदय पामीने दक्षिण बाजुए फरतो फरतो दशमा स्थानरूप व्योम (आकाश)ना मध्य भागमां आवीने सायंकाळे सातमे पामे छे, अने तेज प्रमाणे रात्रिए पण फरतो फरतो मध्य रात्रिए चोथा स्था ळमां थइने पाछो प्रातःकाळे पूर्व दिशामां उदय पामे छे." आ रीते कह्युं छे. अंबुनुं (जळनुं) स्थान छे ए प्रसिद्ध छे.

उपान्त्यं सर्वतोभद्रमन्त्यं रिष्यमुदीरितम् ।
वदन्त्युपचयाह्वाँस्त्रिषड्दशैकादशान् पुनः ॥ १७ ॥

अर्थ—अगीयारमुं स्थान सर्वतोभद्र कहेवाय छे, केमके ते स्थाने रहेलो शुभकारक छे. बारमुं स्थान रिष्य कहेवाय छे लग्नथी तथा चंद्रथी गणतां दशमुं अने अगीयारमुं स्थान उपचय नामे कहेवाय छे, केमके ते स्थानोमां रहेल पण शुभ फळदायक थाय छे बाकीना स्थानो अपचय एटले हानि करना समजवुं. तेनु फळ आ प्रमाणे कह्युं छे —

"कार्य यदुक्तं तदुपैति सिद्धिं बारे ग्रहे चोपचयर्क्षभाजि ।
नीचर्क्षसंस्थेऽपचयस्थिते च यत्ने कृते चापि भवत्यसाध्यम् ॥ १ ॥"

"जे कार्य करवानुं कह्युं होय ते उपचय स्थानवाळी राशिमां रहेल ग्रहमां तथा वारमां सिद्धिने पामे छे, अने नीच राशिमां तथा अपचय स्थानमां ग्रह रह्यो होय तो यत्न कर्या छतां पण ते कार्य असाध्य थाय छे एटले सिद्ध थतुं नथी "

केन्द्रचतुष्टयकंटकनामानि वपुः १ सुखा ४ स्त ७ दशमानि १० ।
स्युः पणफराणि परत २-५-८-११ स्तेभ्योऽप्यापोक्लिमानीति ३-६-९-१२ ॥१८॥

अर्थ—पहेलुं, चोथुं, सातमुं अने दशमु ए चार स्थानो केन्द्र, चतुष्टय अने कंटक नामे कहेवाय छे, ते दरेकनी पछीनां एटले बीजुं, पांचमुं, आठमुं अने अगीयारमुं ए चार स्थानो पणफर नामे कहेवाय छे तथा तेनी पछीनां एटले त्रीजुं, छठु, नवमुं अने बारमुं ए चार स्थानो आपोक्लिम नामे कहेवाय छे केंद्रने विषे रहेला सर्वे ग्रहो संपूर्ण पराक्रमी होय छे, पणफरमां रहेला ग्रहो अर्ध पराक्रमी होय छे, अने आपोक्लिमने विषे तेथी अर्ध एटले चतुर्थांश पराक्रमवाळा होय छे एम त्रैलोक्यप्रकाशमां कह्युं छे विशेष ए छे जे—संज्ञा बे प्रकारनी होय छे, एक अन्वर्थ अने बीजी याद्दच्छिकी (रूढिवाळी) तेमां दुश्चिक्य, हिबुक, त्रिकोण, द्युन, द्यू, त्रित्रिकोण, चतुरस्र, मेपूरण, रिष्य, केंद्र, चतुष्टय, कटक, पणफर तथा आपोक्लिम अने कहेवामां आवशे एवी होरा, द्रेष्काण विगेरे

हो होय तो र्थक नहीं होवाथी याहच्छिकी कहेवाय छे, ते संज्ञाओ यवनाचार्यना मतमां
रवो. बंधु भी अहीं कही छे. तथा विक्रम, सुख, वेश्म, धी, जामित्र अने छिद्र विगेरे
शिष्यो पण न्वर्थ छे, तेथी करीने इष्ट मनुष्यनां विक्रम, सुख, घर, बुद्धि, विवाह अने हानि
स्थानमां रोग क्रमे ते ते स्थानोथी विचाराय छे. ए ज रीते लग्नथी आरंभीने प्रथम विगेरे
अचिंतव्यो नु विगेरे संज्ञाओ नियमित कहेली छे, तेथी तेने अनुसारे करीने ज आगळ पर
पिता, भाग्य णे प्रथम आदि स्थानोने ठेकाणे तनु आदि शब्दनो व्यवहार जाणी लेवो.
पण प्राप्तिनो विगेरेनो वि राशिओनां गृह (घर–स्थान), होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश अने त्रिंशांश
र्गनुं स्वरूप बतावे छे.—

जेम लग्न करीने लग्न

शाः कुजः १ शुक्रो २ बुध ३ श्चन्द्रो ४ रवि ५ र्बुधः ६ ।
७ कुजो ८ गुरु ९ र्मन्दो १० मन्दो ११ जीव १२ इति क्रमात्॥१९॥

आ छ वर्गना अधिकारमां राशिओनुं "गृह" एवुं नाम छे. तेथी करीने मेष
)थी अनुक्रमे मंगळ १, शुक्र २, बुध ३, चंद्र ४, रवि ५, बुध ६, शुक्र ७,
अर्थ— ८ ९, शनि १०, शनि ११ अने गुरु १२, आ बार स्वामीओ छे. आनुं फळ
भावः स्वामिदृष्टो युतो वा" विगेरे पूर्वे कह्या प्रमाणे छे.

छिद्र

होरा राश्यर्द्धमोजर्क्षेऽर्केन्द्वोरिन्द्वर्कयोः समे ।
द्रेष्काणा भे त्रयस्तु स्व १ पञ्चम ५ त्रित्रिकोणपाः ९ ॥ २० ॥

अर्थ—राशिनो अर्ध भाग होरा कहेवाय छे, तेथी एक एक राशिमां बबे होरा होय छे. तेमां मेष विगेरे विषम राशिमां पहेली होरा रविनी अने बीजी होरा चंद्रनी होय छे, तथा वृष विगेरे सम राशिमां पहेली होरा चंद्रनी अने बीजी होरा सूर्यनी होय छे. होरानुं फळ ए छे जे—"सूर्यनी होरामां जन्मेलां बाळक तेजस्वी थाय छे, अने चंद्रनी होरामां जन्मेलां मृदु (कोमळ) थाय छे इत्यादि" ए प्रमाणे द्रेष्काण विगेरेमां पण क्रूर तथा सौम्य स्वामीने अनुसारे क्रूरपणुं अने सौम्यपणुं समजवुं. दरेक राशिमां त्रण त्रण द्रेष्काण होय छे. तेमां जे पोतानी ज राशिनो ईश होय ते प्रथम द्रेष्काणनो ईश होय छे, तेथी पांचमी राशिनो जे स्वामी होय ते बीजा द्रेष्काणनो ईश होय छे, तथा नवमी राशिनो जे स्वामी होय ते त्रीजा द्रेष्काणनो स्वामी होय छे. हरिभद्रकृत लग्नशुद्धिमां पण कह्युं छे के—

"दिक्काणो उ तिभागो सो पढमो निअयरासिअहिवइणो ।
बीओ पंचमपहुणो तइओ पुण नवमगिहवइणो ॥ १ ॥"

"दरेक राशिनो त्रीजो भाग द्रेष्काण कहेवाय छे. तेमां पोतानी राशिना अधिपतिनो पहेलो द्रेष्काण, तेथी पांचमी राशिना स्वामीनो बीजो द्रेष्काण अने नवमा गृहना स्वामीनो त्रीजो द्रेष्काण समजवो."

बृहत् जातकमां पण कह्युं छे के—"द्रेष्काणाः स्युः स्वभवनसुतत्रित्रि [illegible] पोताना स्थानना, पांचमा स्थानना अने नवमा स्थानना स्वामीओना एम त्रण [illegible] होय छे." केटलाएक आचार्यो राशिओना सप्तांश पण कहे छे, तथा तेना स्वामीओ पण कहे छे, ते होरामकरंदमां आ प्रमाणे कह्या छे.—"स्वर्क्षादोजे युग्मभे द्यूनगेहाद्गण्यास्तज्ज्ञैः सप्तमांशाः क्रमेण" विषम (एकी राशिमां) पोतानी राशिथी सप्तमांशो गणवा. सम (बेकी राशिमां) पोतानी राशिथी सातमी राशि जे होय त्यांथी सप्तमांशो गणवा एटले मेष राशिमां पहेलो मेषनो सप्तमांश जाणवो, बीजो वृषभनो यावत् सातमो तुलानो अने वृषभ राशिमां पहेलो वृश्चिकनो, बीजो धननो यावत् सातमो वृषभनो सप्तमांश जाणवो. आ प्रमाणे तेना जाणकार पुरुषोए सप्तमांश गणवा."

हवे नवांशो कहे छे.

नवांशाः स्युरजादीनामजैणतुलकर्कतः ।
वर्गोत्तमाश्चरादौ ते प्रथमः पञ्चमोऽन्तिमः ॥ २१ ॥

अर्थ—मेषथी आरंभीने दरेक राशिमां नव नव नवांशो होय छे. तेमां मेष राशिना नवांशो मेषने आदि लइने नव सुधी गणवा, (एटले के मेष राशिमां पहेलो नवांश मेषनो, बीजो नवांश वृषनो, त्रीजो नवांश मिथुननो, ए रीते नव सुधी गणतां नवमो नवांश धननो आवे छे) ए रीते वृषना नवांशो मकरथी गणवा, मिथुनना नवांशो तुलाथी गणवा, तथा कर्कना नवांशो कर्कथी ज गणवा. ए ज प्रमाणे सिंहना नवांशो मेषथी गणवा एटले के मेषनी ज जेवा, कन्याना वृषनी जेम, तुलाना मिथुननी जेम, अने वृश्चिकना कर्कनी जेम गणवा ए ज रीते धन, मकर, कुंभ अने मीनना नवांशो पण अनुक्रमे मेष, वृष, मिथुन अने कर्कनी जेवा ज गणवा आ नवांशोनुं फळ पूर्णभद्र आ प्रमाणे लखे छे —

"ति पण चउ सत्त नवमा रासीण नवंसया सुहा जम्मे ।
पढम दु अठम अहमा छट्ठो पुण मज्झिमो नेओ ॥ १ ॥"

"जन्मने विषे राशिओनो त्रीजो, पांचमो, चोथो, सातमो अने नवमो ए पांच नवांशो सुखकारक एटले उत्तम जाणवा, पहेलो, बीजो अने आठमो ए त्रण नवांशो अधम (अशुभ) जाणवा, तथा छट्ठो नवांश मध्यम जाणवो."

वर्ग एटले समूहने विषे जे उत्तम ते वर्गोत्तम कहेवाय छे, तेमां चर राशिओमां पहेलो नवांश वर्गोत्तम जाणवो, स्थिर राशिओमां पांचमो नवांश वर्गोत्तम जाणवो, अने द्विस्वभाव राशिओमां छेल्लो एटले नवमो नवांश वर्गोत्तम छे अर्थात् आ रीते गणवाथी सर्वे राशिओमां पोतपोताना नामनो नवांश वर्गोत्तममां आवे छे वर्गोत्तमनुं फळ ए छे जे—"वर्गोत्तममां उत्पन्न थयेला मनुष्यो पोताना कुळमां प्रधान थाय छे विगेरे." छेल्लो नवांश पण अमुक राशिमां वर्गोत्तम होवाथी ते लग्नमां आदरवा योग्य छे नहीं तो ते छेल्लो

वांश अग्राह्य (तजवा योग्य) थइ जाय. ते विषे पूर्णभद्र कहे छे के—"लग्नस्याद्यन्तध्येषु बलं पूर्णाल्पमध्यमं" "आदि, अन्त अने मध्यने विषे लग्ननुं बळ (फळ) अनुमे पूर्ण, अल्प अने मध्यम छे." हर्षप्रकाशमां पण कह्युं छे के—"वग्गुत्तमं विणा दिजा व चरमं नवंसगं कहवि" "वर्गोत्तम विना कोइ पण वखत छेल्लो नवांश ग्रहण करवो हीं." वर्गोत्तमना नवांशमां रहेलो ग्रह पण वर्गोत्तम कहेवाय छे अने ते (ग्रह) अत्यंत ळवान् छे. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"बलवानुदितांशस्थः शुद्धं स्थानफलं ग्रहः ।
दद्याद्वर्गोत्तमांशे च मिश्रं शेषांशसंस्थितः ॥ १ ॥"

"उदयना अंशमां रहेलो तथा वर्गोत्तमना अंशमां रहेलो ग्रह बळवान् छे अने ते थाननुं फळ शुद्ध (पूर्ण) आपे छे, अने बाकीना अंशमां रह्यो होय तो ते मिश्र फळ आपे छे."

"यतो य एव राशिः स्यात्स एव च नवांशकः ।
प्रोक्तं स्थानफलं शुद्धमतोऽस्मिन् सोपपत्तिकम् ॥ २ ॥"

"कारण के जे राशि होय छे ते ज नवांशक होय छे (अर्थात् ते राशिना नामनो वांशक ज वर्गोत्तम होय छे) तेथी करीने आ नवांशने विषे स्थानफळ जे शुद्ध कह्युं युक्ति युक्त छे."

हवे द्वादशांश तथा त्रिंशांशनुं स्वरूप बतावे छे.

स्युर्द्वादशांशाः स्वगृहादथेशास्त्रिंशांशकेष्वोजयुजोस्तु राश्योः ।
क्रमोत्क्रमादर्थ ५ शरा ५ ष्ट ८ शैल ७ न्द्रियेषु ५ भौमार्किगुरुज्ञशुक्राः २२

अर्थ—पोताना गृह (स्थान)थी बार बार द्वादशांशो होय छे. एटले के जे नामनी राशि होय ते नामनो पहेलो द्वादशांश जाणवो, बाकीना अगीयार द्वादशांशो तेनी पछीनी अगीयार राशिना नामवाळा जाणवा. जेमके मेष राशिमां पहेलो द्वादशांश मेषनो, बीजो वृषनो, त्रीजो मिथुननो, ए रीते गणतां छेल्लो (बारमो) द्वादशांश मीननो आवे. वृष राशिमां पहेलो द्वादशांश वृषनो, बीजो मिथुननो, ए रीते अनुक्रमे गणतां छेल्लो मेषनो आवे. ए रीते मिथुन राशिमां पहेलो मिथुननो, बीजो कर्कनो, ए रीते गणतां छेल्लो वृषनो आवे. आ द्वादशांशोना ईशो जे मेषादिकना ईशो छे ते ज जाणवा. हवे दरेक राशिमां त्रीश त्रीश त्रिंशांश होय छे. तेना ईशो आ प्रमाणे जाणवा—मेष, मिथुन विगेरे विषम (एकी) राशिमां पांच, पांच, आठ, सात अने पांच त्रिंशांशोना स्वामी अनुक्रमे मंगळ, शनि, गुरु, बुध अने शुक्र जाणवा, अने सम (बेकी) राशिमां ते अंशो तथा ते स्वामीओ उत्क्रमथी एटले पश्चानुपूर्वीए जाणवा. एटले के वृष, कर्क विगेरे सम राशिमां पांच, सात, आठ, पांच अने पांच, त्रिंशांशोना स्वामी शुक्र, बुध, गुरु, शनि अने मंगळ जाणवा.

तेवा प्रकारनो उपयोग नथी एम सूचव्युं छे. केतुना स्थानना निर्णय माटे भुवनदीपकमा कह्युं छे के—

"राहुच्छाया स्मृतः केतुर्यत्र राशौ भवेदयम्।
तस्मात्सप्तमके केतू राहुः स्याद्यन्नवांशके ॥ १ ॥
तस्मादंशे सप्तमे स्यात्केतु(तो)रंशो नवांशकः।"

"केतुने राहुनी छायारूप कहेलो छे, तेथी करीने राहु जे राशिमां होय ते रा[शिथी] सातमी राशिए केतु होय छे. वळी राहु जे नवांशकमा होय छे, तेथी सातमे नवांशे वे[ते] नवांशक होय छे आनो भावार्थ ए छे जे राशिना जेटलामा नवांशकमां राहु होय [ते] राशिथी सातमी राशिना तेटलामा ज नवांशकमां केतु पण होय छे, परंतु राहुनी [स्थिति]वाळा नवांशथी गणीए तो केतुनी स्थितिवाळो नवांशक सातमो ज आवे. जेमके [मेषना] पहेला मेष नामना नवांशकमां राहु होय त्यारे तुलाना पहेला तुला नामना नव[ांशमां] केतु होय छे, तेथी मेष नामना नवांशथी गणतां तुला नामनो नवांश सातमो ज [आवे.] वळी मेषना नवमा धन नामना नवांशमा राहु होय तो तुलाना नवमा मिथुन न[ामना] नवांशमा केतु होय, तेथी धनुष (धन) नामना नवांशथी गणता मिथुन नामनो न[वांश] सातमो ज छे इत्यादि

हवे मूळ श्लोकना उत्तरार्धनो अर्थ आ प्रमाणे छे—शुक्र अने चंद्र स्त्रीरूपे छे, शनि अने बुध नपुंसक छे, अने बाकीना एटले रवि, मंगळ अने गुरु पुरुष छे. शनि अने बुध पण स्त्री ज छे एम कोइ आचार्य कहे छे आनुं फळ ए छे जे जन्मना विचारमां अथवा गयेली वस्तुना विचारमां जे ग्रह बळवान् होय तेने अनुसारे स्त्री विगेरे पोताना वर्गनो बोध थाय छे

हवे ब्राह्मणादिक वर्णोना स्वामी कहे छे —

वर्णानां जीवसितौ १ रविभौमा २ विन्दु ३ रिन्दुज ४ श्चेशाः।
संकरजानां तु शनिर्जीव १ सिता २ रं ३ ज्ञजाश्च ४ वेदानाम् ॥ २७ ॥

अर्थ—वर्णोनी मध्ये ब्राह्मणोना स्वामी गुरु अने शुक्र छे, क्षत्रियोना रवि अने मं[गळ] स्वामी छे, वैश्यनो स्वामी चंद्र छे, अने शूद्रनो स्वामी बुध छे संकरज एटले मूर्धावसिक्तथी आरंभीने रथकार (सुथार)नी जाति सुधीना निघंटुमां कहेला तेर भेदोवाळी मिश्र जाति अर्थात् गमे तेवी बे जातिथी उत्पन्न थयेला माणसो संकर कहेवाय छे, ते सर्वनो स्वामी शनि छे ऋग्वेदनो स्वामी गुरु छे, यजुर्वेदनो स्वामी शुक्र छे, सामवेदनो स्वामी मगळ छे अने अथर्ववेदनो स्वामी बुध छे आनुं फळ ए छे जे—गुरु विगेरेना [बळ] तथा अस्तमा ते ते वेदवाळाने सुख दुःखादिकनी प्राप्ति थाय छे.

हवे ग्रहोनां स्थान, दिशा, काळ, चेष्टा, दृष्टि तथा स्वाभाविक बळ ए नामनां छ प्रकारनां बळने कहे छे. तेमां प्रथम स्थानबळ कहे छे.

ते स्थानबलिनो मित्रस्वगृहोच्चनवांशगाः ।
स्त्रीराशिष्विन्दुभृगुजौ पुंराशिषु पुनः परे ॥ २८ ॥

अर्थ—ते सर्वे ग्रहो मित्रना घरमां, पोताना घरमां, पोताना उच्च स्थानमां (मित्रना उच्च स्थानमां, मित्रना नवांशमां) अने पोताना नवांशमां रह्या होय तो ते बळवान् छे. स्त्री राशिमां चंद्र अने शुक्र बळवान् छे, तथा बीजा पांच ग्रहो पुरुष राशिमां बळवान् छे. अहीं गृह (घर) शब्दना उपलक्षणथी मूळ त्रिकोण पण लेवानो छे. ते विषे त्रैलोक्यप्रकाशमां कह्युं छे के—"मित्र ५ स्वर्क्ष १० त्रिकोणो १५ च्चे २० फलं दत्तेऽङ्घ्रिवृद्धितः" "मित्रना स्थानमां रहेलो ग्रह एक पादनुं एटले विंशोपकनी अपेक्षाए पांच वसानुं फळ आपे छे, पोताना स्थानमां रहीने बे पादनुं एटले दश वसानुं फळ आपे छे, त्रिकोणमां रह्यो होय तो त्रण पादनुं एटले पंदर वसानुं फळ आपे छे, अने उच्च स्थानमां रह्यो होय तो चारे पादनुं एटले वीशे वसानुं फळ आपे छे."आगल कहेवामां आवनार अधिमित्रांशमां वर्गोत्तमांशमां अथवा लग्नना उदितांशमां रहेलो ग्रह बळवान् छे, ए तो स्फुट ज छे.

। इति स्थानबलं । १

हवे दिग्बळ कहे छे.—

लग्नायु(द्यु)त्क्रमकेन्द्राख्यदिक्षु प्राच्यादिषूद्बलाः ।
जीवज्ञौ १ भास्करक्ष्माजौ २ शनिः ३ सितसितद्युती ४ ॥ २९ ॥

अर्थ—लग्नथी आरंभीने उत्क्रम (पश्चानुपूर्वीना क्रम)थी केन्द्र नामनी पूर्वादिक [illegible]ओमां अनुक्रमे गुरु अने बुध, रवि अने मंगळ, शनि, तथा शुक्र अने चंद्र बळवान् छे. [illegible]वार्थ ए छे के—उत्क्रमथी केंद्र स्थान लेतां पहेलुं, दशमुं, सातमुं अने चोथुं स्थ[illegible] पावे. तेथी पहेलुं (लग्न) स्थान ए पूर्व दिशा थइ, तेमां गुरु अने बुध बळवान् छे. [illegible]मुं स्थान दक्षिण दिशा, तेमां रवि अने मंगळ बळवान् छे. सातमुं स्थान पश्चिम दिशा, तेमां शनि बळवान् छे, तथा चोथुं स्थान उत्तर दिशा, तेमां शुक्र अने चंद्र बळवान् छे. आ केन्द्र स्थानना आंतरामां जे अगीयारमुं अने बारमुं विगेरे बवे स्थानो रह्यां छे तेने अग्नि खूणा विगेरे चार विदिशाओ जाणवी अने तेमनुं पूर्वादिकनी जेवुं ज फळ जाणवुं, केमके विदिशाओ दिशाओने ज अनुसरे छे.

। इति दिग्बलं । २

हवे काळबळ कहे छे.—

वलिनोऽह्नि गुरुसितार्काः सदा बुधो निशि तु चन्द्रकुजमन्दाः ।
स्वदिनादिषु च सितासितपक्षद्वितयेषु शुभक्रूराः ॥ ३० ॥

अर्थ—गुरु, शुक्र अने रवि ए त्रण ग्रह दिवसे बळवान् छे, बुध रात्रि दिवस बळवान् छे, तथा चंद्र, मंगळ अने शनि ए त्रण ग्रहो रात्रिए बळवान् छे. पोताना दिवसमां, पोताना वर्षमां, पोताना मासमां अने पोतानी काळहोरामां ते ते दिनादिकना स्वामीरूप ग्रहो बळवान् छे. ते अधिपति (स्वामी)नुं आ प्रमाणे.—

"यस्य वारस्य मध्ये स्यात् शुक्लप्रतिपदो मुखम् ।
तन्मासेशः स विज्ञेयश्चैत्रे वर्षाधिपः पुनः ॥ १ ॥"

"जे वारना ग्रहमा शुक्ल प्रतिपदूनो प्रारंभ होय ते ग्रह ते मासनो स्वामी होय छे परंतु वर्षनो जे स्वामी होय ते चैत्र मासनो स्वामी होय छे"

वर्षनो स्वामी जाणवा माटे व्यवहारसारमा आ प्रमाणे छे.—

"चैत्रादिमेषसंक्रान्तिकर्कसंक्रान्तिवासराः ।
प्रतिवर्षं क्रमाज्ज्ञेया राजानो मंत्रिसस्यपाः ॥ १ ॥"

"चैत्र मासना पहेला वारने वर्षनो राजा (स्वामी) जाणवो, मेष संक्रांतिना वारने वर्षनो मंत्री जाणवो अने कर्क संक्रातिना वारने वर्षनो सस्याधिप (धान्येश) जाणवो, एम दरेक वर्षे जाणवुं."

दिवसनो स्वामी ते दिवसनो वार ज जाणवो, अने काळहोराना स्वामी तो प्रथम कह्या छे ते जाणवा आनुं फळ मुहूर्त्तसारमा कह्युं छे के—

"वर्षमासद्युहोरेशैर्वृद्धिः पञ्चोत्तरा फले ।"

"वर्षनो स्वामी (ग्रह) आखा वर्ष सुधी एक पादनुं फळ एटले पांच वसा फळ आपे छे, मासनो स्वामी आखा मासमा दश वसा फळ आपे छे, दिवसनो स्वामी आखो दिवस पंदर वसा फळ आपे छे, अने होरानो स्वामी पोतानी होरामां पोताना वारना योगने लीधे पूर्ण एटले वीशे वसा फळ आपे छे."

शुक्लपक्षमां सौम्य ग्रहो बळवान् छे अने कृष्णपक्षमां क्रूर ग्रहो बळवान् छे

। इति कालबल । २

हवे चेष्टाबळ कहे छे.—

रविचन्द्रावुदगयने विपुलस्निग्धाश्च वक्रगाश्चान्ये ।
वलिनो युधि चोत्तरगा व्यर्केन्दुयुताश्च चेष्टाभिः ॥ ३१ ॥

अर्थ—रवि अने चंद्र ए बे ग्रहो उत्तरायणमां बळवान् छे, एटले के मकर विगेरे छ राशिमां बळवान् छे, पण कर्क विगेरे छ राशिमां बळवान् नथी, अने बीजा पांच ग्रहो विपुल, स्निग्ध अने वक्र गतिवाळा होय त्यारे ते बळवान् छे. विपुल एटले घणा दिवसथी उदय पामेला अने विशाळ स्थूल बिंबवाळा होय, पण बाळक, वृद्ध के अस्त पामेला न होय. अहीं उदय थया पछी ग्रहोनुं बाळपणुं कहेवाय छे, अने अस्त थया पहेलां वृद्धत्व कहेवाय छे. सप्तर्षि कहे छे के "बाल्यावस्थामां तथा वृद्धावस्थामां सर्वे ग्रहो सात सात दिवस निर्बळ होय छे." वळी ते पांचे ग्रहो स्निग्ध होय एटले के स्पष्ट किरणवाळा अर्थात् आकाशमां देखाता होय, आ स्निग्धपणुं सूर्यथी अत्यंत दूर होय त्यारे होय छे. वळी ते पांचे ग्रहो वक्र गतिवाळा होय तो ते बळवान् होय छे. पाकश्री ग्रंथमां कह्युं छे के "वक्र गतिमां सर्वे ग्रहोनुं बळ मूळ त्रिकोणनी जेटलुं होय छे." परंतु हर्षप्रकाशमां तो एवुं कह्युं छे के—"वक्की पावो बली सुभो सिग्घो" "वक्री थयेलो बळवान् ग्रह दुष्ट छे, अने स्निग्ध बळवान् ग्रह शुभ छे." मंगळ विगेरे पांचे ग्रहोनी गति प्रश्नशतक वृत्तिमां आ प्रमाणे छे.—

"सूर्यभु(मु)क्ता उदीयन्ते शीघ्रा अर्के द्वितीयगे ।
समं तृतीयगे यान्ति मन्दा भानौ चतुर्थगे ॥ १ ॥
वक्राः पञ्चमषष्ठेऽर्के तेऽतिवक्रा नगाष्टगे ।
नवमे दशमे मार्गाः सरला लाभ ११ रिष्फगे १२ ॥ २ ॥"

"सर्वे (पांचे) ग्रहो सूर्ये भोगव्या पछी एटले सूर्यथी छूटा थया पछी उदय पामे छे, सूर्य बीजी राशिमां जाय त्यारे तेओ शीघ्र गतिवाळा थाय छे, सूर्य त्रीजे स्थाने होय त्यारे तेओ सम गति करे छे, सूर्य चोथे होय त्यारे मंद गतिवाळा होय छे, सूर्य पांचमे तथा छट्ठे होय त्यारे तेओ वक्र गतिवाळा होय छे, सूर्य सातमे अने आठमे होय त्यारे तेओ अति वक्र गतिवाळा होय छे, सूर्य नवमे अने दशमे होय त्यारे तेओ मार्गगामी थाय छे, तथा सूर्य अगीयारमे अने बारमे होय त्यारे तेओ सरल गतिवाळा (सीधा) होय छे." अहीं सूर्य पांचमे छट्ठे होय एम जे कह्युं ते शनि, मंगळ अने गुरुने आश्रीने कह्युं छे, केमके बुध अने शुक्र तो सूर्यनी समीपे रहीने ज वक्र थाय छे. ए ज रीते मार्गगामीमां, पण जाणवुं. एटले के शनि, मंगळ अने गुरुने आश्रीने ज जाणवुं.

आकाशमां एक ज नक्षत्रना पादमां परस्पर ताराओ अने ग्रहनो जे योग थवो ते युद्ध कहेवाय छे. तेथी करीने युद्धमां सूर्य रहित अने चंद्र सहित एवा सर्वे ग्रहो उत्तरमां गति करनारा होय तो तेओ चेष्टाए करीने बळवान् छे. एटले के उत्तर गामी ग्रहोनो जय थाय छे माटे ते बळवान् छे, अने दक्षिण गामीनो पराजय थाय छे माटे ते निर्बळ छे.

वराहना मतमां तो शुक्रने दक्षिण गामी होय तो बळवान् कह्यो छे. ते विषे वराह संहितामां कह्युं छे के—

"सर्वे बलिन उदक्स्था दक्षिणदिक्स्थो बली शुक्रः।"

"सर्वे ग्रहो उत्तरमां रह्या होय तो बळवान् छे, अने शुक्र तो दक्षिणमां रह्यो होय तो ते बळवान् छे । इति चेष्टाबलं । ४

हवे दृष्टिबळ कहे छे.—

सौम्यैर्दृग्बलिनो दृष्टा बले नैसर्गिके पुनः ।
मन्दारज्ञेज्यशुक्रेन्दुभास्कराः स्युर्बलोत्तराः ॥ ३२ ॥

अर्थ—सौम्य ग्रहोए तथा उपलक्षणथी मित्र ग्रहोए पण एक पाद, बे पाद, त्रण पाद के चार पादनी दृष्टिए जोयेला होय तो ग्रहो अनुक्रमे तेटला पाद एटले तेटला वसा बळवान् कहेवाय छे. । इति दृग्बलं । ५

ज्यारे बे अथवा तेथी वधारे ग्रहोनुं बीजा ग्रहनी सरखुं बळ थाय त्यारे स्वाभाविक बळे करीने ज सबळपणुं अने निर्बळपणुं जणाय छे. तेथी करीने स्वाभाविक बळ कहे छे—स्वाभाविक बळनो विचार करीए तो शनि, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र, चंद्र सूर्य ए ग्रहो उत्तरोत्तर अधिक बळवान् छे, एटले के शनिथी मंगळ वधारे बळवान्, तेनाथी बुध वधारे बळवान् विगेरे राहु तो सूर्यथी पण वधारे बळवान् छे

। इति स्वाभाविकबलं । ६

उपर जे सौम्य ग्रहोए जोयेला होय एम दृष्टिबळमा कह्युं तेमां दृष्टिनो प्रकार कहे छे—

पश्यन्ति पादतो वृद्ध्या भ्रातृ ३ व्योम्नी १० त्रित्रिकोणके ५-९ ।
चतुरस्रे ४-८ स्त्रियं ७ स्त्रीवन्मतेनाया ११ दिमा १ वपि ॥ ३३ ॥

अर्थ—सर्वे ग्रहो पोतपोताना स्थानथी त्रीजा तथा दशमा स्थानने एक पाद विंशोपकनी अपेक्षाए पांच वसा दृष्टिए जुए छे, नवमा अने पाचमा स्थानने बे पाद एटले दश वसा दृष्टिए जुए छे, चोथा अने आठमा स्थानने त्रण पाद एटले पदर वसा दृष्टिए जुए छे, अने सातमा स्थानने चारे पादनी संपूर्ण (वीशे वसा) दृष्टिए जुए छे. कोइ आचार्यनो एवो मत छे के पहेला (पोताना) अने अगीयारमा स्थानने पण स्त्रीनी एटले सातमा स्थाननी जेम पूर्ण दृष्टिए जुए छे बाकीना एटले बीजुं, छठुं अने बारमुं ए त्रण स्थानोने बिलकुल जोता नथी एम अर्थापत्तिथी सिद्ध थयुं ज्यां जेटला वसा दृष्टि होय त्यां तेटला वसा फळ पण जाणी लेवुं

अहीं कोइ शंका करे छे के—"शुं सर्वे ग्रहोनी सातमा स्थानमां ज पूर्ण दृष्टि छे? के कोइने बीजे स्थाने पण पूर्ण दृष्टि छे?" ते पर कहे छे.—

पश्येत्पूर्णं शनिर्भ्रातृव्योम्नी धर्मधियौ गुरुः।
चतुरस्रे कुजोऽर्केन्दुबुधशुक्रास्तु सप्तमम् ॥ ३४ ॥

अर्थ—शनि त्रीजा अने दशमा स्थानने पूर्ण दृष्टिए जुए छे, गुरु नवमा अने पांचमा स्थानने पूर्ण दृष्टिए जुए छे, मंगळ चोथा अने आठमा स्थानने संपूर्ण दृष्टिए जुए छे, तथा सूर्य, चंद्र, बुध अने शुक्र तो सातमा स्थानने पूर्ण दृष्टिए जुए छे.

भावार्थ—त्रीजा अने दशमा स्थान उपर बीजा ग्रहोनी एक पाद दृष्टि छे, पण शनिनी तो पूर्ण दृष्टि छे, अने नवमा तथा पांचमा पर, चोथा तथा आठमा पर अने सातमा पर जेम बीजा ग्रहोनी दृष्टि अनुक्रमे बे पाद, त्रण पाद अने संपूर्ण दृष्टि छे, ते ज रीते शनिनी पण छे, तेथी करीने शनिनी एक पाद दृष्टि कोइ पण स्थाने नथी एम सिद्ध थयुं. तथा नवमा अने पांचमा स्थान पर अन्य ग्रहोनी बे पाद दृष्टि छे, पण गुरुनी तो पूर्ण दृष्टि छे, अने जेम बीजा ग्रहोनी दृष्टि त्रीजा तथा दशमा स्थान पर, चोथा तथा आठमा स्थान पर अने सातमा स्थान पर अनुक्रमे एक पाद, त्रण पाद अने पूर्ण (चार पाद) छे तेम गुरुनी पण तेटली ज दृष्टि छे, तेथी करीने बे पाद दृष्टि कोइ पण स्थाने नथी एम सिद्ध थयुं. तथा चोथे अने आठमे स्थाने अन्य ग्रहोनी त्रण पाद दृष्टि छे, परंतु मंगळनी तो पूर्ण दृष्टि छे. जेम त्रीजे तथा दशमे स्थाने, नवमे तथा पांचमे स्थाने अने सातमे स्थाने अन्य ग्रहोनी अनुक्रमे एक पाद, बे पाद अने चारे पाद (पूर्ण) दृष्टि छे ते ज रीते मंगळनी पण छे, तेथी करीने मंगळनी त्रण पाद दृष्टि कोइ पण स्थाने नथी एम सिद्ध थयुं. सूर्य, चंद्र, बुध अने शुक्र ए चार ग्रहो तो सातमा स्थानने ज पूर्ण दृष्टिए जुए छे, बीजा कोइ पण स्थानने पूर्ण दृष्टिए जोता नथी. जे स्थानोने पादादिक दृष्टिए जुए छे, ते प्रथम कही गया छे.

ज्योतिषसारमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे के—"सर्वे ग्रहोनी (कोइ पण ग्रहनी) बीजे अने बारमे स्थाने दृष्टि पडती नथी, छठ्ठे अने आठमे स्थाने एक पाद दृष्टि पडे छे, त्रीजे अने अगीयारमे स्थाने बे पाद दृष्टि पडे छे, नवमा अने पांचमा स्थाने त्रण पाद दृष्टि पडे छे अने केंद्रनां चारे स्थानो उपर पूर्ण दृष्टि पडे छे." वळी ताजिकमां तो बीजुं, बारमुं, छठ्ठुं अने आठमुं ए चार स्थाने बिलकुल दृष्टि ज नथी.

स्थानबळ कहेती वखते मित्र स्थान अने पोतानुं स्थान ए विगेरे जे कह्युं छे तेथी स्थान मैत्र्यादिक कहे छे.—

रवेः शुक्रशनी शत्रू ज्ञः समः सुहृदः परे ।
चन्द्रस्यार्कवुधौ मित्रे कुजगुर्वादयः समाः ॥ ३५ ॥

अर्थ—शुक्र अने शनि रविना शत्रु ठे, वुध सम (नहीं शत्रु तेम नहीं मित्र) ठे, अने वीजा (चंद्र, मंगळ, गुरु) मित्रो ठे चंद्रना सूर्य अने वुध मित्र ठे, अने वाकीना मंगळ, गुरु विगेरे सम ठे. (शत्रु कोइ नथी.)

कुजस्य ज्ञो रिपुर्मध्यौ शनिशुक्रौ परेऽन्यथा ।
वुधस्य मित्रे शुक्रार्कौ शत्रुरिन्दुः समाः परे ॥ ३६ ॥

अर्थ—मंगळनो शत्रु वुध ठे, शनि अने शुक्र मध्य ठे, अने वीजा मित्र ठे वुधना मित्र शुक्र अने सूर्य ठे, चंद्र शत्रु ठे, अने वीजा सम ठे

जीवस्यार्कात्रयो मित्राण्यार्किर्मध्यः परावरी ।
कवेरमित्रे मित्रेन्दू मित्रे ज्ञार्की समावुभौ ॥ ३७ ॥

अर्थ—गुरुना रवि, चंद्र अने मंगळ ए त्रण मित्रो ठे, शनि मध्य (सम) ठे तथा वीजा (वुध अने शुक्र) शत्रु ठे. शुक्रना सूर्य अने चंद्र शत्रु ठे, वुध अने शनि मित्र ठे तथा मंगळ अने गुरु सम ठे.

मंदस्य ज्ञसितौ मित्रे गुरुर्मध्यः परेऽरयः ।
तत्कालसुहृदो द्वि २ त्रि ३ सुख ४ लाजा ११ न्त्य १२ कर्म १० गाः ॥३८॥

अर्थ—शनिना वुध अने शुक्र मित्र ठे, गुरु सम ठे, अने वीजा एटले सूर्य, चंद्र अने मंगळ ए त्रण शत्रु ठे.

शत्रु, मित्र अने समनुं यंत्र.

गृहाणि	रवि	चन्द्र	मंगळ	वुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रवः	शु श	०	वु.	च.	वु. शु	र चं	र चं. मं.
मित्राणि	च म गु	र वु	र च गु	र. शु	र. चं. मं	वु. श	वु शु.
मध्यस्थाः	वु.	मं. गु शु श	शु. श	मं गु श	श	मं. गु.	गु.

जन्ममां अथवा प्रश्नादिकना लग्नमां कोइ पण स्थाने कोइ पण ग्रह होय तेनाथी वीजे, त्रीजे, चोथे, अगीयारमे, वारमे के दशमे स्थाने जे कोइ वीजो ग्रह होय तो ते वखत सुधी एटले ते विगेरे स्थाने रह्यो होय त्यांसुधी तेनो मित्र थाय ठे. आ मैत्री कहेवाय ठे.

हवे तात्कालिक मैत्रीनुं फळ कहे छे.—

मित्रमध्यारयो येऽत्र निसर्गेणोदिताः क्रमात् ।
अधिमित्रसुहृन्मध्यास्ते स्युस्तत्कालमैत्र्यतः ॥ ३९ ॥

अर्थ—अहीं जे मित्र, मध्य अने शत्रु स्वभावे करीने कहेला छे, ते अनुक्रमे तत्काल मैत्री थकी अधिक मित्र, मित्र अने मध्य थाय छे.

अर्थापत्तिथी ज मित्र स्थानथकी अन्य जे पहेलुं, पांचमुं, छठुं, सातमुं, आठमुं अने नवमुं एटलां स्थानो ते तत्काळ वैरी स्थानो थयां. तेमनुं फळ आ प्रमाणे छे.—

"येऽत्रारिमध्यमित्राणि निसर्गेणोदिताः क्रमात् ।
अधिशत्रुद्विषन्मध्यास्ते स्युस्तत्कालवैरतः ॥ १ ॥"

"अहीं जे स्वभावे करीने अरि, मध्य अने मित्र कह्या छे, ते अनुक्रमे तत्काल वैर-पणाथी अधिक शत्रु, शत्रु अने मध्य थाय छे."

भुवनदीपकमां तो ग्रहोना मित्र अने शत्रु एवा बे ज पक्ष कह्या छे. ते आ प्रमाणे छे.—

"रवीन्दुभौमगुरवो ज्ञशुक्रशनिराहवः ।
स्वस्मिन् मित्राणि चत्वारि परस्मिन् शत्रवः स्मृताः ॥ १ ॥
राहुरव्योः परं वैरं गुरुभार्गवयोरपि ।
हिमांशुबुधयोर्वैरं विवस्वन्मन्दयोरपि ॥ २ ॥
अतिमैत्री राहुशन्योरिन्दुगुर्वोः कुजार्कयोः ।
सितज्ञयोः"

"रवि, चंद्र, मंगळ अने गुरु ए चारे परस्पर मित्रो छे, अने बीजाना शत्रु छे. तथा बुध शुक्र, शनि अने राहु ए चारे परस्पर मित्र छे, अने बीजाने विषे शत्रु छे. (१) राहु अने रविने परस्पर अत्यंत वैर छे, गुरु अने शुक्रने पण परस्पर अत्यंत वैर छे, चंद्र अने बुधने तथा सूर्य अने शनिने पण परस्पर अत्यंत वैर छे. (२) राहु अने शनिने, चंद्र अने गुरुने, मंगळ अने सूर्यने तथा शुक्र अने बुधने परस्पर अत्यंत मित्रभाव छे."

आ प्रमाणे ग्रहोने मित्र स्थान अने पोतानुं स्थान जो उच्च स्थान होय तो ते विशेषे करीने हर्ष तथा दीप्तिने देनारां छे. जेम रविने मित्रनुं गृह मेष राशि छे अने ते उच्च छे, बुधने पोतानुं घर कन्या छे अने ते उच्च छे. इत्यादि, पण शत्रुनां घरो तो उच्च होय तोपण प्रभाने आपनारां छे, पण अंदरथी सुख आपनारां नथी. जेम शुक्रने मीन स्थान उच्च छतां शत्रुनुं घर छे, अने मित्रनां घर नीच छतां कांइक प्रभाने आपनारां छे. जेम चंद्रने वृश्चिक स्थान नीच छे, तथा शत्रुनां घर नीच होय तो नाना प्रकारना अनर्थने तथा प्रभानी हानिने करनारां थाय छे. एम भुवनदीपक वृत्तिमां कह्युं छे.

हवे यवनाचार्ये कहेलो राशिमां रहेला ग्रहोनो परस्पर वेध कहे छे.—

स्याद्गोचरेणात्र शुभोऽपि विद्धः खेटोऽन्यखेटैरशुभः क्रमेण।
दुष्टोऽपि चेष्टश्च स वामवेधान्मिथो न वेधः पितृपुत्रयोस्तु ॥ ४० ॥

अर्थ—अहीं गोचरवडे शुभ थयेलो ग्रह पण कहेवाशे एवा क्रमे करीने बीजा ग्रहोए विंधावाथी अशुभ थइ जाय छे, अने गोचरवडे दुष्ट थयेलो ग्रह पण कहेवाशे एवा अनुक्रमे वाम वेधथकी इष्ट (शुभ) थाय छे, परंतु पिता अने पुत्रने परस्पर वेध थतो नथी. एटले के रवि अने शनि पिता पुत्र छे तथा चंद्र अने बुध पिता पुत्र छे, तेनो परस्पर वेध नथी.

अहीं त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेला सूर्यने नवमा विगेरे स्थानमां रहेला अन्य ग्रहोवडे जे कहेवामा आवशे ते वेध कहेवाय छे, अने नवमा विगेरे स्थानमां रहेला सूर्यने त्रीजा विगेरे स्थानमा रहेला अन्य ग्रहोवडे जे कहेवाशे ते वाम वेध कहेवाय छे. एटले के त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेलो सूर्य शुभ छे, पण जो नवमा विगेरे स्थानमां रहेला बीजा ग्रहोवडे तेनो वेध न थतो होय तो ते शुभ छे तथा नवमा विगेरे स्थानमां रहेलो सूर्य अशुभ छे, छतां जो त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेला अन्य ग्रहोवडे तेनो वेध थाय तो ते शुभ छे. ए प्रमाणे बीजा ग्रहो पण जाणवा. यतिवल्लभमा कह्युं छे के—

"एभिर्वेधैर्विद्धा विफलाः स्युर्गोचरे ग्रहाः सर्वे ।
विपरीतवेधविद्धाः पापा अपि सौम्यतां यान्ति ॥ १ ॥"

"गोचरमां रहेला सर्व ग्रहो आ वेधवडे विंधाया होय तो निष्फळ (अशुभ) छे, अने विपरीत–वाम (अवळा) वेधथी विंधायेला दुष्ट ग्रहो होय तो ते सौम्यताने पामे छे–शुभ थाय छे."

रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे के—"जे कोइ स्थाने रहेला ग्रहे इष्ट ग्रहनो वेध कर्यो होय तो ते त्यां रहीने ज पोतानुं शुभ अथवा अशुभ फळ आपे छे. ए खरुं तत्त्व छे"

जेओ गोचरना फळने ज प्रमाणरूप गणीने वेधना विषयमां मध्यस्थपणा (उदासीनता)नो आश्रय करे छे, तेमनो मत घणा आचार्योने संमत नथी ते विषे सारंग कहे छे के—

"यत्र गोचरफलप्रमाणता तत्र वेधफलमिष्यते न वा ।
प्रायशो न बहुसम्मत त्विदं स्थूलमार्गफलदो हि गोचरः ॥ १ ॥"

"जे कार्यमां गोचरना फळनी प्रमाणता छे, ते कार्यमां वेधनुं फळ गणवुं अथवा तो न गणवुं तेमां जेवी इच्छा, परंतु प्राये करीने आ वात घणाने संमत नथी, कारण के गोचर तो स्थूल मार्गे फळने आपनार छे."

यतिवल्लभमां पण कह्युं छे के—

"अज्ञात्वा वेधविधिं ग्रहगोचरपाकजातगुणदोषम् ।
ये निर्दिशन्ति मूढास्तेषां विफलाः सदादेशाः ॥ १ ॥"

"जे मूढ पुरुषो वेधना विधिने जाण्या विना ग्रहगोचरना पाकथी उत्पन्न थयेला गुण दोषने कहे छे, तेमना आदेशो सदा निष्फळ छे."

वाम (डावो) अने अवाम (जमणो) ए बे प्रकारनो वेध जन्मनी राशिथी ज गणवो.

हवे वेधनो प्रकार कहे छे.

वेधस्त्रिषड्गगनलाभगतस्य ३–६–१०–११ भानोः,
खेटैः क्रमेण नवमान्त्यसुखात्मजस्थैः ए–१२–४–५ ।
इन्दोस्तनौ त्रिरिपुमन्मथखायगस्य १–३–६–७–१०–११,
धीधर्मरिष्यधनबन्धुमृतौ ५–ए–१२–२–४–८ स्थितैश्च ॥ ४१ ॥
स्यान्मंगलस्य सहजद्विषदायगस्य ३–६–११,
सौरेस्तथा व्ययतपःसुखगैश्च १२–ए–४ वेधः ।
चान्द्रेः स्वबन्धुरिपुमृत्युखलाभगस्य २–४–६–८–१०–११,
पुत्रत्रिधर्मतनुनिर्व्ययनान्त्यगैश्च ५–३–ए–१–८–१२ ॥ ४२ ॥
वाचस्पतेः स्वतनयास्तनवायगस्य २–५–७–ए–११,
वेधस्तथान्त्यसुखविक्रमखाष्टगैश्च १२–४–३–१०–८ ।
शुक्रस्य षट्खमदनान्यजुषो १–२–३–४–५–८–ए–११—१२ ष्टसप्ता-
ख्याकाशधर्मतनयायतृतीयषष्ठैः८–७–१–१०–ए–५–११–३–६ ॥ ४३ ॥

अर्थ—त्रीजे, छठे, दशमे अने अगीयारमे स्थाने रहेला सूर्यनो अनुक्रमे नवमा, बारमा, चोथा अने पांचमा स्थाने रहेला अन्य ग्रहोवडे वेध थाय छे.

पहेले, त्रीजे, छठे, सातमे, दशमे अने अगीयारमे स्थाने रहेला चंद्रनो अनुक्रमे पांचमे, नवमे, बारमे, बीजे, चोथे अने आठमे रहेला ग्रहोवडे वेध थाय छे.

त्रीजे, छठे अने अगीयारमे स्थाने रहेला मंगळनो तथा शनिनो अनुक्रमे बारमे, नवमे अने चोथे स्थाने रहेला ग्रहोवडे वेध थाय छे.

बीजे, चोथे, छठे, आठमे, दशमे अने अगीयारमे स्थाने रहेला बुधनो अनुक्रमे पांचमे, त्रीजे, नवमे, पहेले, आठमे अने बारमे स्थाने रहेला ग्रहोवडे वेध थाय छे.

बीजे, पांचमे, सातमे, नवमे अने अगीयारमे स्थाने रहेला गुरुनो अनुक्रमे बारमे, चोथे, त्रीजे, दशमे अने आठमे रहेला ग्रहोवडे वेध थाय छे

पहेले, बीजे, त्रीजे, चोथे, पाचमे, आठमे, नवमे, अगीयारमे अने बारमे रहेला शुक्रनो अनुक्रमे आठमे, सातमे, पहेले, दशमे, नवमे, पांचमे, अगीयारमे, त्रीजे अने छठे स्थाने रहेला ग्रहोवडे वेध थाय छे

ग्रहोनो वेध यंत्र

रवेः		चन्द्रस्य		भौमशन्योः		बुधस्य		गुरोः		शुक्रस्य	
३	९	१	५	३	१२	२	५	२	१२	१	८
६	१२	३	९	६	९	४	३	५	४	२	७
१०	४	६	१२	११	४	६	९	७	३	३	१
११	५	७	२			८	१	९	१०	४	१०
		१०	४			१०	८	११	८	५	९
		११	८			११	१२			८	५
										९	११
										११	३
										१२	६

। इति राशिद्वारम् । ५

हवे उपर जे "गोचरवडे" एम कह्युं हतुं तेथी तथा क्रमे करीने पण प्राप्त थयेलुं होवाथी गोचरद्वार कहे छे —

श्रेयान् गोचरतोऽशुभानुपचये ३–६–१०–११
चन्द्रस्तु साद्यद्युने ३–६–१०–११–१–७
वक्रार्की त्रिषडायगा ३–६–११ वथ बुधस्त्व-
न्त्यान्ययुग्लाजगः २–४–६–८–१०–११ ।
जीवः स्त्रीधनधर्मलाजसुतगः ७–२–९–११–५
शुक्रोऽरिखास्तान्यगो १–२–३–४–५–८–९–११–१२
जन्मेन्दोर्ग्रहणे तमोऽप्युपचये ३–६–७–१०–११–
ऽन्येषां स्वनाद्येन्दुवत् ३–६–७–१०–११ ॥ ४४ ॥

अर्थ—गायोनी चरवानी जमिने गोचर कहे छे, तेथी लक्षणाए करीने ग्रहोने पण चालवानी जमि गोचर कहेवाय छे. जन्मना चंद्रथी आरंभीने त्रीजे, छठे, दशमे अने

अगीयारमे सूर्य रह्यो होय तो ते गोचरनी रीते शुभ छे, जन्मनी राशिना चंद्रथी ३–६–१०–११–१–७ आटले स्थाने चंद्र होय तो ते पण शुभ छे, जन्मना चंद्रथी ३–६–११ मे स्थाने मंगळ तथा शनि रह्या होय तो ते शुभ छे, बुध २–४–६–८–१०–११ मे स्थाने होय तो शुभ छे, गुरु ७–२–९–११–५ मे स्थाने रह्यो होय तो शुभ छे, शुक्र १–२–३–४–५–८–९–११–१२ मे स्थाने होय तो शुभ छे, (पूर्णभद्रे आठमुं स्थान वर्ज्य कह्युं छे.) राहु ग्रहणने दिवसे ज ३–६–१०–११ मे स्थाने होय तो शुभ छे, बीजा आचार्यना मते पहेला स्थान विना चंद्रनी जेम राहु कह्यो छे, एटले के ३–६–१०–११–७ मे स्थाने रहेलो राहु शुभ कह्यो छे.

अहीं उपर जे जन्मनो चंद्र कह्यो छे ते इष्ट पुरुषना जन्मसमये जे राशिमां चंद्र होय छे ते तेना जन्मनो चंद्र कहेवाय छे. ग्रहण एटले सूर्य तथा चंद्रनुं बन्नेनुं ग्रहण लेवुं. ग्रहण शब्द कहेवाथी एवुं जणाव्युं छे के ग्रहण विना बीजे दिवसे राहुनो गोचर गणातो नथी, परंतु "नक्षत्र गोचरने आश्रीने तो अन्य दिवसे पण राहुनो गोचर गणाय छे." एम ज्योतिषसारमां कह्युं छे. रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे के—"जन्मना लग्नथी पण उपर कहेलां स्थानोमां ज रहेला ग्रहो शुभ छे." जन्मनी राशिथी तो शुभ छे ज.

गोचरनुं फळ वराहसंहितामां आ प्रमाणे कह्युं छे—

"स्थानभ्रंश १ भय २ श्री ३ परिभव ४ दैन्या ५ रिहति ६ पथां ७ गार्त्तीः ८ ।
क्षान्ति क्षय ९ सिद्धि १० धन ११ व्ययांश्च १२ जन्मादिगो रविः कुरुते ॥ १ ॥"

"जन्मना प्रथम स्थानमां रहेलो रवि स्थानथी भ्रष्ट करे छे, बीजे स्थाने होय तो भय करे छे, त्रीजे लक्ष्मी, चोथे पराभव, पांचमे दीनता, छठे शत्रुनो पराजय, सातमे पंथ (प्रयाण), आठमे शरीरनी पीडा, नवमे शांतिनो नाश, दशमे कार्यसिद्धि, अगीयारमे धनप्राप्ति अने बारमे रह्यो होय तो खर्च करावे छे."

"तुष्ट्या १ धि २ धना ३ ज्य ४ र्थभ्रंश ५ श्री ६ सार्थयुवति ७ मृति ८ भीतीः ९ ।
सुख १० जय ११ सरुग्धनक्षय १२ मिन्दुर्जन्मादिगो दत्ते ॥ २ ॥"

"जन्मना प्रथमादिक स्थानमां रहेलो चंद्र अनुक्रमे तुष्टि १, मननी पीडा २, धन ३, लडाइ ४, धननाश ५, लक्ष्मी ६, धन सहित स्त्रीनो लाभ ७, मृत्यु ८, भय ९, सुख १०, जय ११, रोग सहित धननो क्षय १२, आटलां वानां करे छे."

"रुग् १ धननाश २ धना ३ रिभ्य ४ र्थक्षय ५ धन ६ शुग ७ स्त्रघाता ८ र्त्तीः ९ ।
शुग् १० लाभ ११ विविधदुःखानि १२ दिशति जन्मादिगो वक्रः ॥ ३ ॥"

"जन्मना प्रथमादिक स्थानमां रहेलो मंगळ अनुक्रमे रोग १, धननो नाश २, धननी

प्राप्ति ३, शत्रुथी जय ४, धनक्षय ५, धनलाभ ६, शोक ७, शस्त्रघात ८, शरीरनी पीडा ९, शोक १०, लाभ ११, तथा विविध प्रकारनां दुःखो १२ आपे छे."

"बन्धा १ र्थ २ वधा ३ र्थ ४ हृति ५ स्थान ६ वपुर्बाध ७ धन ८ महापीडाः ९।
सौख्या १० र्थ ११ वित्तनाशाः १२ स्युर्ज्ञे जन्मादिगे क्रमशः ॥ ४ ॥"

"जन्मथी प्रथमादिक स्थानमां बुध रह्यो होय तो अनुक्रमे बंधन १, धन २, वध ३, धन ४, हरण ५, स्थान ६, शरीरपीडा ७, धन ८, महापीडा ९, सुख १०, धन ११ अने धननो नाश १२, प्राप्त थाय छे."

"रोगा १ र्थ २ क्लेश ३ व्यय ४ सुख ५ भी ६ नृपमान ७ धनागम ८ श्रीदः ९।
अप्रीति १० लाभ ११ हृद्दुःखदश्च १२ जन्मादिगो जीवः ॥ ५ ॥"

"जन्मथी प्रथमादिक स्थानमां रहेलो गुरु अनुक्रमे रोग १, धन २, क्लेश ३, खर्च ४, सुख ५, जय ६, राजसन्मान ७, धनप्राप्ति ८, लक्ष्मी ९, अप्रीति १०, लाभ ११ अने हृदयना दुःख १२ ने देवावाळो थाय छे."

"अरिनाशा १ र्थ २ सुख ३ श्री ४ सुता ५ रिवृद्धि ६ शुग ७ र्थ ८ वस्त्राणि ९।
असुखा १० य ११ लाभ १२ मुशना सनापि जन्मादिगस्तनुते ॥ ६ ॥"

"जन्मथी प्रथमादिक स्थानमां रहेलो शुक्र अनुक्रमे शत्रुनो नाश १, धन २, सुख ३, लक्ष्मी ४, पुत्र ५, शत्रुवृद्धि ६, शोक ७, धन ८, वस्त्र ९, असुख १०, आवक ११ तथा लाभ १२ ने सदा विस्तारे छे–आपे छे."

"अस्थान १ धनगमा २ र्था ३ रिवृद्धि ४ सुतनाश ५ लाभ ६ दुःखभरान् ७।
पीडा ८ र्थगमा ९ र्त्ति १० श्री ११ दुःखानि १२ शनिस्तनोति जन्मादौ ॥ ७ ॥"

"जन्मथी प्रथमादिक स्थानमां रहेलो शनि अनुक्रमे अस्थान (स्थानभ्रंश) १, धननाश २, धनप्राप्ति ३, शत्रुवृद्धि ४, पुत्रनाश ५, लाभ ६, दुःखना समूह ७, पीडा ८, धननाश ९, पीडा १०, लक्ष्मी ११ अने दुःखो १२ ने विस्तारे छे."

ज्योतिषसारमां राहुनुं रूप आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"गहणे तमरासीउ नियरासी ति चउ अडिगार सुहा।
पण नव दहंऽंत मज्झिम छ सत्त इग दुन्नि अइअहमा ॥ १ ॥"

"ग्रहणने दिवसे राहुनी जे राशि होय तेनाथी पोतानी राशि त्रीजे, चोथे, आठमे के अगीयारमे होय तो ते शुभ छे, पांचमे, नवमे, दशमे अने बारमे होय तो मध्यम छे, अने छठे, सातमे, पहेले तथा बीजे होय तो अति अधम छे."

तथा

"यादृशेन शशाङ्केन संक्रान्तिर्जायते रवेः।
तन्मासि तादृशं प्राहुः शुभाशुभफलं नृणाम् ॥ १ ॥"

"जेवा चंद्रवड़े सूर्यनी संक्रांति थती होय ते मासमां मनुष्योने तेवा प्रकारनुं शुभाशुभ फळ थाय छे एम कहे छे."

आथी करीने ...च सूर्य बारमा, आठमा विगेरे अशुभ स्थानमां रह्यो होय तोपण गोचरवड़े, ताराबळवड़े तथा शुभ अवस्थादिके करीने शुभ एवा चंद्रनुं बळ होय त्यारे तेनी संक्रांति थइ होय तो ते शुभ ज छे. एम रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे.

तथा लल्ल कहे छे के—

"सितपक्षादौ चन्द्रे शुभे शुभः पक्षकोऽशुभे त्वशुभः ।
बहुले गोचरशुभदे न शुभः पक्षोऽशुभे तु शुभः ॥ १ ॥"

"शुक्लपक्षना प्रारंभमां एटले प्रतिपद् बेसे ते वखते जो चंद्र शुभ होय तो ते आखुं पखवाडीयुं शुभ जाणवुं, अने जो चंद्र अशुभ होय तो आखा पक्षने अशुभ जाणवो. कृष्णपक्षमां तो प्रतिपदनी शरुआतमां जो चंद्र शुभ होय तो ते आखा पक्षने अशुभ जाणवो ...न जो चंद्र अशुभ होय तो आखा पक्षने शुभ जाणवो."

तथा "यादृशेन ग्रहेणेन्दोर्युतिः स्यात्तादृशो हि सः" "जेवा ग्रहनी साथे चंद्रनो योग होय, तेवा ज ग्रहनी जेवो ते चंद्र थाय छे." एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे, तथा दैवज्ञवल्लभमां ज कह्युं छे के—

"अशुभोऽपि शुभश्चन्द्रः सौम्यमित्रगृहांशके ।
स्थितोऽथवाधिमित्रेण बलिष्ठेन विलोकितः ॥ १ ॥"

"अशुभ चंद्र पण सौम्य ग्रहना के मित्र ग्रहना स्थानना नवांशमां रह्यो होय तो ते शुभ छे. अथवा बळवान् अधिक मित्रे जोयेलो होय तोपण ते चंद्र बळवान् छे."

सर्व ग्रहोनुं साधारण फळ दैवज्ञवल्लभमां आ प्रमाणे छे—

"असत्फलोऽपि यः सौम्यैर्दृष्टो यः सत्फलोऽपि वा ।
क्रूरेण दृष्टोऽरिणा वा स न किञ्चित्फलप्रदः ॥ १ ॥"

"जे कोइ अशुभ फळदायक ग्रह सौम्य ग्रहे जोयेलो होय, अथवा जे कोइ शुभ फळवाळो ग्रह क्रूर ग्रहे अथवा शत्रु ग्रहे जोयेलो होय, ते ग्रह कांइ पण फळने देनारो नथी."

लल्ल कहे छे के—"नीचेऽस्तेऽरिगृहे वापि निष्फलो ग्रहगोचरः" "नीचमां, अस्तमां के शत्रुना घरमां रहेलो ग्रहगोचर निष्फळ छे."

हवे चन्द्रगोचर फळ कहे छे.

चन्द्रो जन्मत्रिषट्सप्तदशैकादशगः शुभः ।
द्विपञ्चनवमोऽप्येवं शुक्लपक्षे बली यदि ॥ ४५ ॥

अर्थ—चंद्र १, ३, ६, ७, १० अने अगीयारमा स्थानमां रह्यो होय तो ते शुज्ञ छे, तथा शुक्लपक्षमां जो बळवान् होय तो बीजे, पांचमे अने नवमे स्थाने पण शुज्ञ छे.

नारचंद्र टिप्पणीमां आ प्रमाणे विशेष कह्यो छे.—

"यात्रा १ युद्ध २ विवाहेषु ३ जन्मेन्दौ रोगसंजवे ४ ।
क्रमेण तस्करा १ जंगो २ वैधव्यं ३ मरणं ४ जवेत् ॥ १ ॥"

"जन्मना चंद्रमा यात्रा करवाथी चोरनो उपद्रव थाय, युद्ध करवाथी पराजय थाय, विवाह करवाथी विधवापणुं थाय, अने रोग उत्पन्न थयो होय तो मरण थाय."

अहीं कोइ शंका करे के चंद्रगोचर तो पहेलाना (४४ मा) श्लोकमा कही गया छे, माटे अहीं फरीथी कहेवामां आव्युं, तेथी पुनरुक्त दोष थयो तेनो जवाब ए छे जे—ते वात खरी छे, परंतु चंद्रनुं प्राधान्य बतावबाथी ते दोष नथी, केमके जेम मननो उपयोग होय तो ज सर्वे इंद्रियो पोतपोताना विषयोने ग्रहण करवामां समर्थ थाय छे, अन्यथा थती नथी, ते ज प्रमाणे चंद्र शुज्ञ होय तो ज बीजा ग्रहो शुज्ञ फळ दे छे, अन्यथा देता नथी व्यवहारप्रकाशमां कह्यु छे के—"चंद्र शुज्ञ होय तो बीजा ग्रहो शुज्ञ फळ देनारा ज प्राये होय छे, पण अशुज्ञ फळ आपनारा होता नथी." हर्षप्रकाशमां पण कह्युं छे के—"चंदस्सेव वलावलमासज्ज गहा कुणंति सुहमसुहं" "चंद्रना ज बळ अबळने पामीने बीजा ग्रहो शुज्ञाशुज्ञ करे छे."

मूळ श्लोकमा बीजे, पाचमे अने नवमे चंद्र रह्यो होय तो ते पण शुज्ञ छे, परंतु ते चद्र शुक्लपक्षमा अने वळी बळवान् होय तो ज ए प्रमाणे विशेष विधान करेलुं होवाथी पुनरुक्त दोष नथी शुक्लपक्ष कहेवाथी वृद्धि पामतो चंद्र जाणवो, पण कृष्णपक्षमा क्षय थतो होवाथी ते लेवो नहीं. बळवान् कहेवाथी शुक्लपक्षमा कृश होय तो ते बीजे, पांचमे अने नवमे शुज्ञ नथी अने कृष्णपक्षमा चद्र पुष्ट होय तोपण बीजे, पाचमे अने नवमे शुज्ञ नथी एम जाणवुं रत्नमाला जाष्यमां पण कह्युं छे के—"बीजो, पांचमो अने नवमो गुरु जेवु शुज्ञ फळ आपे छे तेवु वृद्धि पामतो शुक्लपक्षनो पुष्ट चंद्र पण बीजे, पांचमे अने नवमे स्थाने रह्यो होय तो शुज्ञ फळ आपे छे

उपरना श्लोकमां जो चंद्र बळवान् होय एम कह्युं, तेथी चंद्रनु बलाबळ कहे छे.

हीनमध्योच्चबलता तिथिवत्तुहिनद्युतेः ।
बलहानादिदं स्वस्य ग्राह्यं ताराबलं बुधैः ॥ ४६ ॥

अर्थ—चंद्रनु हीन बळपणुं, सम बळपणुं अने उच्च बळपणु तिथिनी जेम जाणवुं. तथा चद्रना बळनी हानिने बखते विद्वानोए आगळ कहेवामा आवशे एवुं ताराबळ ग्रहण करवुं, कारण के ते बखते ताराना बळे करीने तेनु बळवान्पणु छे.

शुक्ल तथा कृष्णपक्षमां पांच पांच तिथिओने आश्रीने हीन, मध्यम अने उत्तमता जे प्रमाणे कही छे, ते प्रमाणे चंद्रनुं पण हीन, मध्यम अने उच्च बळपणुं अनुक्रमे तथा उत्क्रमे जाणवुं. जातक वृत्तिमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे.—"चंद्र उदय पामे त्यारथी दश दिवस सुधी मध्यम बळवान् छे, बीजा दश दिवस सुधी अधिक बळवान् छे, अने त्रीजा दश दिवस हीन बळवाळो छे, तथा कृष्ण चतुर्दशी, अमावास्या अने शुक्ल प्रतिपद् ए त्रण दिवस तो सर्वथा बळ रहित छे, परंतु चंद्र पर सौम्य ग्रहोनी दृष्टि पडती होय तो निरंतर बळवान् छे." अन्य आचार्यो कहे छे के—"कृष्णपक्षनी अष्टमीना अर्धा भाग पछी अने शुक्ल अष्टमीना अर्धा भाग सुधी चंद्र क्षीण जाणवो, बाकीना समयमां पुष्ट जाणवो." नक्षत्र समुच्चय ग्रंथमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"उदिते च तथा चन्द्रे शुभयोगे शुभे तिथौ ।
कृष्णस्य दशमीं यावत्सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ १ ॥

"चंद्रनो उदय थाय त्यारथी आरंभीने कृष्णपक्षनी दशमी सुधी शुभ योग अने शुभ तिथिने दिवसे सर्व शुभ कार्यो करवां."

विशेष ए छे जे—"शुक्लपक्षनी बीजने रोज चंद्र उदय पामवानो छे तोपण दिवसना भागमां ते तिथि लेवी नहीं, कारण के प्राये करीने दृष्टिना विषयनो भाव (होवापणुं) अने अभावे (नहीं होवापणुं) करीने बीजनो व्यवहार करवामां आवे छे. ते विषे विवाहवृंदारकमां कह्युं छे के—

"उदेति चायं प्रतिपत्समाप्तौ कृशोऽपि वर्द्धिष्णुतया प्रशस्तः ।
द्वीपान्तरस्थो विफलस्तु तावद्यावन्न पृथ्वीनयनाध्वनीनः ॥ १ ॥"

"आ चंद्र प्रतिपद्नी समाप्तिमां उदय पामे छे. ते कृश छतां पण वृद्धि पामवानो होवाथी प्रशस्त छे. तथा बीजा द्वीपमां रहेलो ते चंद्र ज्यांसुधी जगतना लोकोनी दृष्टिना मार्गमां आव्यो न होय, त्यांसुधी ते निष्फळ छे."

उपर जे चंद्रना निर्बळपणामां तारानुं बळ लेवानुं कह्युं ते विषे कह्युं छे के—

"चन्द्राद्बलवती तारा कृष्णपक्षे तु भर्त्तरि ।
विकले प्रोषिते च स्त्री कार्यं कर्तुं यतोऽर्हति ॥ १ ॥"

"कृष्णपक्षमां तो चंद्र करतां तारा बळवान् छे, कारण के भर्ता विकलांग होय अथवा परदेश गयो होय तो स्त्री पोते ज कार्य करवाने योग्य छे."

तेथी करीने—

"कृष्णस्याष्टम्यर्द्धादनन्तरं तारकाबलं योज्यम् ।
प्रतिपत्प्रान्तोत्पन्नं सन्ध्याकालोदयं यावत् ॥ १ ॥"

"कृष्णपक्षनी अष्टमीना अर्ध भाग पछी अने शुक्ल प्रतिपदने अंते उत्पन्न थयेला संध्याकाळनो उदय थाय त्यांसुधी तारानुं बळ ग्रहण करवुं." आ प्रमाणे व्यवहारप्रकाशमा कह्युं छे.

तारानुं बळ गौण छे, एम धारवुं नहीं, केमके ताराना बळनुं प्रधानपणुं प्रगट ज छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"ताराबले शशिबलं शशिबलसंयुतसंक्रमाद्बलं भानोः ।
सूर्यबले सति सर्वेऽप्यशुभा अपि खेचराः शुभदाः ॥ १ ॥"

"तारानुं बळ होय तो चंद्रनुं बळ होय छे, चंद्रना बळथी युक्त एवी संक्रांति थवाथी सूर्यनुं बळ होय छे, अने सूर्यनुं बळ छते ज सर्वे अशुभ ग्रहो पण शुभ फळदायक थाय छे."

हवे ताराओ कहे छे —

जनिभान्नवकेषु त्रिषु जनि १ कर्म १० धान १९ संज्ञिताः प्रथमाः ।
तान्यत्रि३-१२-२१पञ्च५-१४-२३सप्तम७-१६-२५ताराः स्युर्न हि शुभाः कचन४७

अर्थ—जेना जन्मने समये जे नक्षत्रमां चंद्र होय ते नक्षत्र तेनुं जन्मनक्षत्र कहेवाय छे ते जन्मनक्षत्रथी अथवा तेनी खबर न होय तो नामना नक्षत्रथी आरंभीने नव नवनी त्रण ओळ करवी ते त्रणे नवकमा जे पहेली पहेली त्रण ताराओ होय तेनुं नाम अनुक्रमे जन्म तारा, कर्म तारा अने आधान तारा जाणवुं ते त्रणे नवकमांनी त्रीजी त्रीजी एटले ३–१२–२१, पाचमी पाचमी एटले ५–१४–२३ अने सातमी सातमी एटले ७–१६–२५, आटली ताराओ कोइ पण ठेकाणे शुभ नथी

जन्म तारादिकनी संज्ञा माटे कह्युं छे के—"आधानाद्दशमे जन्म दशमे कर्म जन्मभात्" "आधाननी ताराथी दशमी तारानी संज्ञा जन्म छे, अने जन्मनी ताराथी दशमी तारा कर्म नामनी छे"

बीजी, त्रीजी विगेरे ताराओनी संज्ञा आ प्रमाणे छे —

"संपद्विपत्क्षेमसंज्ञा प्रत्यरा साधका मृतिः ।
मैत्री परममैत्री च स्युर्द्वितीयादिमा इमाः ॥ १ ॥"

त्रणे नवकमांनी बीजी बीजी तारानुं नाम संपत् छे, त्रीजी त्रीजीनुं विपत्, चोथीनुं क्षेमा, पांचमीनुं प्रत्यरा, छठीनुं साधका, सातमीनुं मृति, आठमीनुं मैत्री अने नवमीनुं परममैत्री, एवां नामो छे. आमांनी प्रत्यराने बदले यमा एवुं पण बीजुं नाम छे.

ताराउनी स्थापना.

जन्म	संपत्	विपत्	क्षेमा	यमा	साधना	निधना	मैत्री	परममैत्री
१	२	३	४	५	६	७	८	९
कर्म	संपत्	विपत्	क्षेमा	यमा	साधना	निधना	मैत्री	परममैत्री
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
आधान	संपत्	विपत्	क्षेमा	यमा	साधना	निधना	मैत्री	परममैत्री
१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७

आ ताराउमां चोथी चोथी, छठी छठी अने नवमी नवमी ताराउ श्रेष्ठ छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"ऋक्षं न्यूनं तिथिर्न्यूना क्षपानाथोऽपि चाष्टमः ।
तत्सर्वं शमयेत्तारा षट्चतुर्थनवस्थिताः ॥ १ ॥"

"नक्षत्र न्यून एटले अशुभ होय, तिथि पण न्यून होय अने चंद्र पण आठमो (अशुभ) होय, तोपण छठी, चोथी अने नवमी तारा होय तो ते सर्वने समावी दे छे–दबावी दे छे."

पहेली, बीजी अने आठमी ए त्रण त्रण ताराउ मध्यम छे, अने त्रीजी, पांचमी, तथा सातमी ए त्रण त्रण ताराउ अधम छे ते तो पूर्वे कह्युं ज छे.

हवे ते ताराउनो विशेष कहे छे.—

जन्माधानान्विताास्तिस्रस्तास्त्यजेत्क्षौरयात्रयोः ।
शुक्लेऽप्यासूत्थिते रोगे दीर्घक्लेशोऽथवा मृतिः ॥ ४८ ॥

अर्थ—जन्म अने आधान सहित ते त्रण त्रण (त्रीजी, पांचमी अने सातमी) ताराउ क्षौर तथा यात्रामां तजवा योग्य छे. शुक्लपक्षमां पण आ ताराउने विषे रोग उत्पन्न थयो होय तो चिरकाळ सुधी क्लेश रहे छे, अथवा मरण थाय छे.

त्रण त्रण एटले दरेक उळनी त्रीजी त्रीजी, पांचमी पांचमी अने सातमी सातमी समजवी. अर्थात् नव जाणवी. वळी लल्ल कहे छे के—

"यात्रायुद्धविवाहेषु जन्मतारा न शोभना ।
शुभाऽन्यशुभकार्येषु प्रवेशे च विशेषतः ॥ १ ॥
जन्मर्क्षवदाधानं कर्मसु शस्तेषु शस्तमेव स्यात् ।
यच्च न जन्मनि कार्यं विवर्जनीयं तदाधाने ॥ २ ॥"

"यात्रा, युद्ध अने विवाहमां जन्मनी तारा सारी नथी. बीजां शुभ कार्यमां ते जन्म तारा शुभ छे, अने प्रवेशमां तो विशेष शुभ छे (१). जन्म तारानी जेवी आधान तारा

पण जाणवी एटले के ते पण बीजां शुभ कार्योमां प्रशस्त ज छे, अने जे कार्य जन्म तारामां करवानुं नथी, ते कार्य आधानमां पण वर्जवा योग्य छे (२)".

जो के शुक्लपक्षमां चंद्र ज बळवान् छे, ते वखते तारानुं प्राधान्य नथी, कारण के ते विषे कह्युं छे के—

"शुक्ले पक्षे बली चन्द्रस्तारावलमकारणम् ।
पत्यौ स्वस्थे गृहस्थे च न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ॥ १ ॥"

"शुक्लपक्षमां चंद्र ज बळवान् छे, तेमां तारानुं बळ कारण नथी, केमके पति साजो होय अने घेर ज होय तो स्त्री स्वतंत्रताने योग्य नथी"

आथी करीने शुक्लपक्षमां चंद्रनु बळ ज प्रधान छे, तोपण जन्मनी, आधाननी तथा त्रीजी त्रीजी, पांचमी पांचमी अने सातमी सातमी, ए अगीयार ताराओमां जो रोग उत्पन्न थयो होय तो दीर्घ क्लेश अथवा मरण थाय छे. एटले के बीजा ग्रहो प्रतिकूळ न होय तो दीर्घ क्लेश थाय अने बीजा ग्रहो प्रतिकूळ होय तो मरण थाय. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"यद्यपि स्याद्बली चन्द्रस्तारा तथाप्यनिष्टदा ।
जन्माधाने तृतीया च पञ्चमी सप्तमी तथा ॥ १ ॥
शेपासु तु तारासु व्याधिः साध्यो नृणां भवति जातः ।
व्याधिवदवबोद्धव्याः सर्वारम्भाश्च तारासु ॥ २ ॥"

"जो के चंद्र बळवान् होय तोपण जन्मनी, आधाननी, त्रीजी त्रीजी, पांचमी पाचमी अने सातमी सातमी ताराओ अनिष्टने आपनारी छे (१), अने बाकीनी ताराओमां मनुष्योने उत्पन्न थयेलो व्याधि साध्य थाय छे. आ व्याधिनी ज जेम ताराओने विषे करेला सर्व आरंभो जाणवा (२)"

उपर रत्नमाळा भाष्यना प्रमाणथी कह्युं हतुं के "यात्रादिकमां चंद्रने शुभ अवस्थावाळो जोवो" तेथी करीने हवे चंद्रनी अवस्था कहे छे.

चन्द्रावस्था प्रोषित १ हृत २ मृत ३ जय ४ हास ५ हर्ष ६ रति ७ निद्राः ८। भुक्ति ९ जरा १० भय ११ सुखिता राश्यंशा द्वादश यथार्थाः ॥ ४९ ॥

अर्थ—चंद्रनी आ बार अवस्थाओ छे—प्रोषिता १, हृता २, मृता ३, जया ४, हासा ५, हर्षा ६, रति ७, निद्रा ८, भुक्ति ९, जरा १०, भय ११ अने सुखिता १२ आ अवस्थाओ चंद्रनी राशिना द्वादशांशने विषे अनुक्रमे जाणवी ते अवस्थानुं फळ ते ते नामने अनुसारे छे

राशिना द्वादशांश आ रीते काढवा—एक राशिमां चंद्रनो भोग जेटली घडी होय ते भागमां जोइने निर्णय करवो जेम सामान्य रीते एकसो ने पात्रीश घडी एक राशिनो

भोगकाल चंद्रने होय छे, तेथी तेना बार भाग करतां अगीयार घमी अने पंदर पळ एक एक भागमां आवे छे. हवे इष्ट वखते (कार्य करती वखते) १३५ घमीमांथी जेटली घमी भोगवाइ होय तेने सवा अगीयार घमीए भाग लइने भोगवेलो काल काढवो, बाकीनी घमीउमांथी भोग्य काळना द्वादशांशो पण काढवा. पछी जेटलामा द्वादशांशमां कार्य करवुं होय ते द्वादशांशनुं नाम अनुक्रमे जाणी कार्य करवुं. अहीं सामान्यवमे कह्युं छे तोपण एम जाणवुं के दरेक राशिमां द्वादशांशनी रीते चंद्र बार बार अवस्थाउने भोगवे छे. ते विषे यतिवल्लभमां कह्युं छे के—

"राशौ राशौ द्वादशामूर्भुंक्तेऽवस्थाश्च चन्द्रमाः।
द्वादशांशक्रमात्सांघ्रिद्व्यहेनाख्यासदृक्फलाः ॥ १ ॥"

"चंद्र दरेक राशिमां द्वादशांशना क्रमथी सवा बे दिवसमां नामने सदृश फळवाळी बार बार अवस्थाउने भोगवे छे."

भावार्थ ए छे जे—मेष राशिमां रहेला चंद्रनी प्रोषिताथी आरंभीने बार अवस्थाउ जाणवी, वृषमां रहेला चंद्रनी हृताथी आरंभीने बार अवस्थाउ गणवी, मिथुनमां रहेला चंद्रनी मृताथी आरंभीने गणवी विगेरे.

मूळ श्लोकमां "यथार्थाः" एवुं कह्युं छे तेनो अर्थ ए छे जे—ते अवस्थाउ पोतपोतानी संज्ञाने सदृश फळवाळी छे. तेथी करीने प्रोषिता, हृता, मृता, निद्रा, जरा अने भया, ए नामनी छ अवस्थाउ तजवा योग्य छे. एम नारचंद्र टिप्पणीमां कह्युं छे. तेथी ज दिनशुद्धिमां पण कह्युं छे के—

"पइरासि वारसंसा असुहाउ चएजउ सुहो वि ससी।
एआहिं होइ असुहो सुहाहिं असुहो वि होइ सुहो ॥ १ ॥"

"दरेक राशिमां बार बार द्वादशांशो (अवस्थाउ) छे, तेमांथी अशुभ अंशोने वर्जवा, केमके चंद्र शुभ होय तोपण ए अशुभ अवस्थाउवमे अशुभ थाय छे, अने चंद्र अशुभ होय तोपण ते शुभ अवस्थाउवमे शुभ थाय छे."

हवे शनि दुष्ट छे, माटे तेनुं नक्षत्र गोचर जूदुं कहे छे.—

मन्दर्क्षतः प्रथम १ वेद ४ षट् ६ अब्धि ४ बाण ५,
त्रि ३ द्वये २ क १ चन्द्र १ मितभेषु यथाक्रमेण।
पीडा १ विभूति ५ पथ ११ बन्धन १५ धर्म २० लाभ २३,
पूजा २५ऽभिभूत्य २६ पमृतीः २७ फलमूचुरुच्चैः ॥ ५० ॥

अर्थ—जे नक्षत्रमां शनि रहेलो होय ते नक्षत्र पीमाकारी छे, तेनी पछीनां चार नक्षत्रो लक्ष्मीने आपनारां छे, त्यारपछीनां छ पंथ करावनारां छे, ते पछीनां चार बंधन करावनारां छे, ते पछीनां पांच धर्म करावनारां छे, ते पछीनां त्रण लाभ आपनारां छे, ते

पछीनां वे पूजा (सन्मान) आपनारां छे, ते पछीनुं एक पराजव आपनारुं छे, अने ते पछीनुं एक मृत्यु आपनारुं छे. अहीं शनिना नक्षत्रथी पोताना नक्षत्र सुधी गणवुं, तेमां जेटली संख्यावाळुं पोतानुं नक्षत्र होय, तेटली संख्यावाळा नक्षत्रनुं फळ जे कह्यु छे ते जाणवुं. अहीं शनिनो आकार पुरुष जेवो छे ते कह्यो नथी, तोपण जाणी लेवो. ते विषे यतिवल्लजमां कह्युं छे के—

"यस्मिन् शनिश्चरति वक्रगतं तदद्यं
चत्वारि दक्षिणकरेऽङ्घ्रियुगे च षट्कम् ।
चत्वारि वामकरगाण्युदरे च पञ्च
मूर्ध्नि त्रयं नयनयोर्द्वितयं गुदे च ॥ १ ॥"

"जे नक्षत्रमां शनि चालतो होय ते नक्षत्र तेना मुखमा मूकवुं, पछीनां चार जमणा हाथमां, पछीना छ वे पगमा, पछीना चार डावा हाथमां, पछीना पांच उदर उपर, पछीनां त्रण मस्तक उपर, पछीनां वे नेत्रमां अने पछीनां वे गुदामा मूकवा." अहीं वे गुदामां कह्या तेनुं कारण ए के ज्यारे पट्ट विगेरेमां पुरुषनो आकार चितरीए त्यारे गुदा अने गुह्यनी एकता ज जणाय छे. तेथी करीने अहीं गुदामां ज वे मूक्यां छे. मूळकारे तो ते बन्ने स्थाननी जिन्न विवक्षा करीने बन्ने स्थानमा एक एक नक्षत्र कह्युं छे

शनि नरनी स्थापना.

मुखे	१	पीडा
दक्षिण हाथे	४	लक्ष्मी
वे पगे	६	पथ
डावा हाथे	४	बधन
उदरे	५	धर्म
मस्तके	३	लाभ
वे नेत्रे	२	पूजा
गुदाए	१	पराजव
गुह्ये	१	अपमृत्यु

रुद्रयामल नामना ग्रंथमा नवे ग्रहोनां पुरुषाकारनी स्थापनाए करीने गोचरफळ कह्या छे तेमां रवि नरनुं स्वरूप मूळ ग्रथकार ज जातकाधिकारमा कहेशे बाकीना ग्रह नरो नीचे प्रमाणे.—

दृग् ३ बाहुयुग्म ६ वक्त्रेषु ३ जाना प्रत्येकतस्त्रिकम् १२ ।
हृदि सप्त १९ तथा गुह्ये चतुष्कं २३ पञ्चकं पदोः २८ ॥ १ ॥
वक्त्रे पीडा जृश चक्षुर्हृदयेषु शुज सुखम् ।
बाह्वोर्लाजं मृतिं गुह्ये ज्रमं दत्ते पदोः शशी ॥ २ ॥

चंद्र नरनी दृष्टिमां ३, बे बाहुमां ६, मुखमां ३, हृदयमां ७, गुह्यमां ४ अने बे पगमां ५ नक्षत्रो छे. तेनुं फळ—मुखमां होय तो अत्यंत देहपीडा करे, चक्षुमां होय तो शुभ फळ आपे, हृदयमां होय तो सुख आपे, बाहुमां होय तो लाभ आपे, गुह्यमां होय तो मृत्यु आपे, अने पगमां होय तो भ्रमण (देशाटण) आपे (करावे). अहीं पण चंद्रना नक्षत्रथी पोताना नक्षत्र सुधी गणतां जेटलामुं नक्षत्र ज्यां होय ते स्थाननुं फळ ते आपे छे.

चंद्र नरनी स्थापना. १

नेत्रे	३	शुभ
बन्ने हाथे	६	लाभ
मुखे	३	अतिपीडा
हृदये	७	सुख
गुह्ये	४	मरण
बन्ने पगे	५	भ्रमण

त्रयं त्रयं त्रिर्मुखदृक्शिरस्सु ए द्वयानि वामेतरबाहुकंठे १५ ।
पंचोरसि २० स्युस्त्रितयं च गुह्ये २३ चत्वारि चांह्र्योः २७ कुजचक्रमेतत् ॥ १ ॥
कीर्त्तिं शिरसि हृन्नेत्रे लाभं चरणयोर्भ्रमम् ।
गुह्येऽन्यस्त्रीरतिं दत्ते कुजः शेषेषु चाशुभम् ॥ २ ॥

मंगळ नरनां मुख, दृष्टि अने मस्तक पर त्रण त्रण मूकवां ए, डाबे हाथे, जमणे हाथे अने कंठे बबे मूकवां १५, उरःस्थळ उपर पांच मूकवां २०, गुह्यमां त्रण २३, अने बन्ने पग पर चार मूकवां २७. आ मंगळ नरनुं चक्र थयुं. तेनुं फळ—मस्तक पर होय तो कीर्त्ति आपे, हृदय अने नेत्रमां होय तो लाभ आपे, चरणमां होय तो भ्रमण करावे, गुह्यमां होय तो परस्त्री पर प्रीति आपे, अने बीजां स्थानोमां होय तो ते अशुभ छे.

मंगळ नरनी स्थापना. २

मुखे	३	रोग
नेत्रे	३	लाभ
मस्तके	३	यश
वाम करे	२	रोग
दक्षिण करे	२	शोक
कंठे	२	हिक्का
हृदये	५	लाभ
गुह्ये	३	परस्त्री रति
बन्ने पगे	४	भ्रमण

वक्त्रे द्वे जयदे जयाय शिरसि स्यात्पञ्चकं पञ्चकं
नीत्यै तत्फणगं जयाय करयोर्युग्मे चतुष्कं स्थितम् ।
अंह्र्योः पञ्च सुखाय हृत्स्थयुगलं शोकाय कंठे व्यथा-
नीत्यै स्याच्च चतुष्टयं फलमिदं केतौ तदाक्रान्तभात् ॥ १ ॥

केतु जे नक्षत्रमा होय ते नक्षत्र तथा तेनी पछीनुं एम बे नक्षत्रो तेना मुखमां मूकवा ते जय आपनारां छे, पछीनां पांच मस्तके मूकवा ते जय आपे, पछीना पांच फणा उपर मूकवां ते जय आपे, पछीनां चार बे हाथमा मूकवा ते जय आपे, पछीनां पांच बे पगमां मूकवां ते सुख आपे, पछीना बे हृदयमां मूकवां ते शोक करावे, पछीनां चार कंठे मूकवां ते पीडा तथा जय करावे

केतु नरनी स्थापना ७.

मुखे	२	जय
मस्तके	५	जय
फणे	५	जय
बे हाथे	४	जय
बे पगे	५	सुख
हृदये	२	शोक
कंठे	४	पीडा, जय

अहीं कोइ शंका करे के—आ प्रमाणे अन्य अन्य ग्रह नरोना शुभाशुभ फळनो भेद होवाथी ग्रह संबंधी ग्रहगोचर फळनो निर्णय शी रीते थइ शके? तेनो जवाब ए छे के—इष्ट समये जे ग्रह सर्वथी अधिक बळवान् होय, ते ग्रह ते वखते शुभाशुभ फळ आपे छे. आ सर्व ग्रह नरोने जन्मसमये ज केटलाक आचार्यो विचारे छे.

हवे ग्रहगोचर अशुभ होय तो तेने निष्फळ करवा माटे अष्टकवर्गने कहे छे.

गोचरेण ग्रहाणां चेदानुकूल्यं न दृश्यते ।
जन्मलग्नग्रहेभ्योऽष्टवर्गेणालोकयेत्तदा ॥ ५१ ॥

अर्थ—जो ग्रहोनुं गोचरवडे अनुकूळपणुं न देखातुं होय तो जन्मथी, लग्नथी अने ग्रहोथी अष्टवर्ग करीने जोवुं

अहीं ग्रहोने सामान्य रीते कह्या छे, तोपण "रवि, चंद्र अने गुरु ए त्रण ग्रहोनुं ज अनुकूळपणुं न देखाय तो" एवो अर्थ करवो नारचन्द्रमां पण कह्युं छे के—

"रविशशिजीवैः सबलैः शुभदः स्याद्गोचरोऽथ तदभावे ।
माह्याष्टवर्गशुद्धिर्जननविलग्नग्रहेभ्यस्तु ॥ १ ॥"

"बळवान् रवि, चंद्र अने गुरुए करीने गोचर शुभदायी थाय छे, अने ते (शुभ गोचर) ने अभावे जन्मथी, लग्नथी अने ग्रहोथी अष्टवर्गनी शुद्धि ग्रहण करवी."

अष्टवर्ग एटले राशिमां चालता ग्रहनो बीजा छ ग्रहनां स्थानोथी, पोताना स्थानथी अने लग्नना स्थानथी जे विचार करवो ते विचार अष्टवर्ग कहेवाय छे.

ते ज कहे छे.—

अर्कः स्वमन्दभौमेभ्यो नवद्व्यायाष्टकेन्द्रगः ९,२,११,८,१,४,७,१० ।
त्रिकोणायारिगो ९,५,११,६ जीवाच्छुक्राद्न्त्यारिकामगः १२,६,७ ॥ ५२ ॥
चन्द्राडुपचयस्थो ३,६,१०,११,ज्ञाद्धीधर्मोपचयान्त्यगः५,९,३,६,१०,११,१२, ।
पातालोपचयान्त्येषु ४,३,६,१०,११,१२ लग्नाच्च तरणिः शुभः ॥ ५३ ॥

अर्थ—सूर्य पोताना स्थानथी, शनिथी अने मंगळथी ९,२,११,८,१,४, ७ अने १० मे स्थाने रह्यो होय, गुरुथी ९,५,११ अने ६ठ्ठे स्थाने रह्यो होय, शुक्रथी १२, ६ अने ७ मे स्थाने रह्यो होय, चंद्रथी ३,६,१० अने ११ मे स्थाने रह्यो होय, बुधथी ५,९,३, ६,१०,११ अने १२ मे स्थाने होय, तथा लग्नथी ४,३,६,१०,११ अने १२ मे रह्यो होय तो ते सूर्य शुभ छे, एटले अष्टवर्गथी तेनी शुद्धि जाणवी

॥ इति सूर्याष्टकवर्गः ॥ १

चन्द्रश्चोपचये ३,६,१०,११, लग्नाद्भानोः साष्टस्मरे स्थितः ३,६,१०,११,८,७ ।
स्वात्सादिसप्तमे ३,६,१०,११,१,७, च्वारात्सद्व्य-
नवमात्मजे ३,६,१०,११,२,९,५ ॥ ५४ ॥
विद्रत्रिलाभात्मजकेन्द्रगो ८,३,११,५,१,४,७,१० बुधा-
द्गुरोस्तु रिष्याष्टमलाभकेन्द्रगः १२,८,११,१,४,७,१० ।
शुक्रात्त्रिपंचास्तनवायखांबुगः ३,५,७,९,११,१०,४
शुभः शनेः षट्त्रिसुतायगः ६,३,५,११ शशी ॥ ५५ ॥

अर्थ—चंद्र लग्नथी ३,६,१० अने ११ मे होय, सूर्यथी ३,६,१०,११,८ अने सातमे होय, पोताना स्थानथी ३,६,१०,११,१ अने ७ मे रह्यो होय, मंगळथी ३,६,१०,११, २,९ अने ५ मे होय, बुधथी ८,३,११,५,१,४,७ अने १० मे होय, गुरुथी १२,८,११, १,४,७ अने १० मे होय, शुक्रथी ३,५,७,९,११,१० अने ४ थे होय, तथा शनिथी ६,३,५, अने अगीयारमे होय तो ते चंद्र शुभ छे.

॥ इति चन्द्राष्टकवर्गः ॥ २

कुज इन्दोरुपचयभे ३,६,१०,११ साद्ये ३,६,१०,११,१
लग्नात्सपञ्चमे ३,६,१०,११,५ सूर्यात् ।
स्वायाष्टकेन्द्रगः २,११,८,१,४,७,१०
स्वात्सौम्यात्त्रिसुतारिलाभस्थः ३,५,६,११ ॥ ५६ ॥
जीवात्खान्त्यायारिपु १०,१२,११,६ शुक्राब्धिद्ध्यन्त्यलाभशत्रुगतः८,१२,११,६।
मन्दाल्लाभनवाष्टमकेन्द्रस्थः ११,९,८,१,४,७,१० शोभनो भौमः ॥ ५७ ॥

अर्थ—मंगळ चंद्रथी ३,६,१० अने ११ मे स्थाने होय, लग्नथी ३,६,१०,११ अने १ ले स्थाने होय, सूर्यथी ३,६,१०,११ अने ५ मे होय, पोताना स्थानथी २,११,८,१, ४,७ अने १० मे होय, बुधथी ३,५,६ अने ११ मे होय, गुरुथी १०,१२,११ अने ६ होय, शुक्रथी ८,१२,११ अने ६ छे होय, तथा शनिथी ११,९,८,१,४,७ अने १० होय तो ते मंगळ शुभ छे

॥ इति भौमाष्टकवर्गः ॥ ३

बुधोऽर्कतोऽन्त्यायनवारिधीषु १२,११,९,६,५
स्थितः स्वतः सत्रिदशादिमेषु १२,११,९,६,५,३,१०,१ ।
द्विषड्दशायाष्टसुखेषु २,६,१०,११,८,४ चन्द्रात्
लग्नात्तु तेष्वाद्ययुतेषु २,६,१०,११,८,४,१ शस्तः ॥ ५८ ॥
कुजशनितो व्यन्त्यारिषु १,२,३,४,५,७,८,९,१०,११
जीवादरिनिधनलाभरिष्यस्थः ६,८,११,१२ ।
शुक्रादापुत्राष्टमनवमायस्थो १,२,३,४,५,८,९,११ बुधः शुभदः ॥ ५९ ॥

अर्थ—बुध सूर्यथी १२,११,९,६ अने ५ मे रह्यो होय, पोताना स्थानथी १२,११, ९,६,५,३,१० अने १ ले रह्यो होय, चंद्रथी २,६,१०,११,८ अने ४ थे रह्यो होय, लग्नथी २,६,१०,११,८,४ अने १ ले रह्यो होय तो प्रशस्त छे, तथा मंगळ अने शनिथी १,२,३,४,५,७,८,९,१० अने ११ मे होय, गुरुथी ६,८,११ अने १२ मे होय, तथा शुक्रथी १,२,३,४,५,८,९ अने ११ मे होय तो बुध शुभ फळदायक छे

॥ इति बुधाष्टकवर्ग. । ४

गुरु. केन्द्रस्वरन्ध्राये १,४,७,१०,२,८,११
प्वारात्स्वात्सत्रिपूत्तमः १,४,७,१०,२,८,११,३ ।

अर्कात्सत्रिनवस्वि १,४,७,१०,२,८,११,३,७ न्दोः
स्वधीकामनवायगः २,५,७,७,११ ॥ ६० ॥
स्वादिखायसुखधीतपोऽरिषु २,१,१०,११,४,५,७,६
ज्ञाद्गुरुः स्मरयुतेषु २,१,१०,११,४,५,७,६,७ लग्नतः ।
स्वत्रिकोणरिपुखायगः २,७,५,६,१०,११ सितात्
त्र्यन्त्यधीरिपुषु ३,१२,५,६ मन्दतः शुभः ॥ ६१ ॥

अर्थ—गुरु मंगळथी १,४,७,१०,२,८ अने ११ मे होय, पोताना स्थानथी १,४,७, १०,२,८,११ अने ३ जे होय, सूर्यथी १,४,७,१०,२,८,११,३ अने ७ मे होय, चंद्रथी २,५,७,७ अने ११ मे होय, बुधथी २,१,१०,११,४,५,७ अने ६ ठे होय, लग्नथी २,१,१०,११,४,५,७,६ अने ७ मे होय, शुक्रथी २,७,५,६,१० अने ११ मे होय, तथा शनिथी ३,१२,५ अने ६ ठे होय तो ते गुरु शुभ छे.

॥ इति गुर्वष्टकवर्गः ॥ ५

शुक्रो लग्नादासुतधर्मायाष्टसु १,२,३,४,५,७,११,८
मतः स्वतः साज्ञः १,२,३,४,५,७,११,८,१० ।
शशिनः सान्त्यः १,२,३,४,५,७,११,८,१२
शनितः खायतपस्त्रिसुखधीमृतिषु १०,११,७,३,४,५,८ ॥ ६२ ॥
आयव्ययाष्टगोऽर्का ११,१२,८ द्बुधात्त्रिकोणाय-
षट्त्रिगः ७,५,११,६,३ शुभदः ।
ध्यापोक्लिमाप्तिषु ५,३,६,७,१२,११ कुजाद्गुरो-
स्त्रिकोणाष्टखायगः ७,५,८,१०,११ शुक्रः ॥ ६३ ॥

अर्थ—शुक्र लग्नथी १,२,३,४,५,७,११ अने ८ मे होय, पोताना स्थानथी १,२,३, ४,५,७,११,८ अने १० मे होय, चंद्रथी १,२,३,४,५,७,११, ८ अने १२ मे होय, शनिथी १०,११,७,३,४,५ अने ८ मे होय, सूर्यथी ११,१२ अने ८ मे होय, बुधथी ७,५,११,६ अने ३ जे होय, मंगळथी ५,३,६,७,१२ अने ११ मे होय, तथा गुरुथी ७,५,८,१० अने ११ मे होय तो ते शुक्र शुभ छे.

॥ इति शुक्राष्टकवर्गः ॥ ६

शनिः स्वात्र्यायपुत्रारि ३,११,५,६ ष्वारात्सव्ययकर्मसु ३,११,५,६,१२,१०।
केन्द्राष्टायार्थगः१,४,७,१०,८,११,२ सूर्याच्चन्द्रात् पट्त्र्यायगो ६,३,११ मतः६"
आद्यांवूपचये लग्नात् १,४,३,६,१०,११ कवेरायव्ययारिपु ११,१२,६।
गुरोः सधीपु ११,१२,६,५ साज्ञाष्टधर्मेषु ११,१२,६,१०,८,९ ज्ञाच्च निर्मितः ॥६५॥

अर्थ—शनि पोताना स्थानथी ३,११,५ अने ६ ठे होय, मंगळथी ३,११,५,६,१२ अने १० मे होय, सूर्यथी १,४,७,१०,८,११ अने २ जे होय, चंद्रथी ६,३ अने ११ मे होय, लग्नथी १,४,३,६,१० अने ११ मे होय, शुक्रथी ११,१२ अने ६ ठे होय, गुरुथी ११,१२,६ अने ५ मे होय, तथा बुधथी ११,१२,६,१०, ८ अने ९ मे होय तो ते शुभ मानेलो छे.

आ चौद श्लोकोनो भावार्थ ए छे जे—पहेला श्लोकमां जे अर्क (सूर्य) शब्द छे ते ज्यारे यात्रादिक करवानी इच्छा होय, ते समये जे राशिनो सूर्य होय ते तात्कालिक सूर्य कहेवाय छे अने "स्वमन्द" ए ठेकाणे जन्मकाळनो सूर्य ग्रहण करवानो छे. ए ज रीते शनि, मंगळ विगेरे पण जन्मकाळना ज लेवाना छे तेथी करीने तात्कालिक सूर्य विगेरे जो जन्मकाळना सूर्य, शनि विगेरेथी नवमा, बीजा विगेरेमांना कोइ पण स्थाने होये तो ते शुभ छे. ते सर्व शुभ स्थाने रेखा "।" आपे छे एवी परिभाषा छे तेथी करीने जेटला लग्नना ग्रहोथी कहेलामानां कोइ पण स्थानोमां तात्कालिक सूर्यादिक पमाय, तेटली रेखाओ देवी, अने जेटला लग्नना ग्रहोथी कहेला स्थानोमांनां जेटला स्थान न पमाय तेटलां शून्य-मींडां "०" देवा. ए रीते करवाथी दरेक ग्रहने आश्रीने आठ आठ रेखाओ संभवे छे तेमां जो चार के तेथी ओछी के तेथी वधारे रेखाओ पामीए तो अनुक्रमे ते मध्यम, अधम अने श्रेष्ठ जाणवी, अने तेम करवाथी जे ग्रहनी रेखाओ घणी होय ते ग्रह कदाच गोचरवडे अशुभ होय तोपण शुभ जाणवो, अने शून्य-मींडां घणां होय तो गोचरवडे शुभ ग्रह पण अशुभ जाणवो.

केटलाक आचार्यो कहे छे के—"कार्य वखते अष्टकवर्गनी रेखाओ मेळवाती मळती नथी, परंतु गमे ते वखते जन्मकुंडळीने ज सात वार जूदी जूदी स्थापन करीने पछी पहेली कुंडळीमा जे स्थाने सूर्य रह्यो होय, त्यांथी नवमा विगेरे आठे स्थानोमा आठ रेखाओ देवी (दरेक स्थानमां एक एक रेखा काढवी) ए ज प्रकारे शनि अने मंगळथी पण दरेकमां आठ आठ रेखाओ देवी गुरुथी चार रेखा देवी, शुक्रथी त्रण, चन्द्रथी चार, बुधथी सात अने लग्नथी छ रेखा देवी. आ प्रमाणे ते सूर्यना अष्टक-

वर्गनी कुंडळीमां सर्व मळीने सूर्यनी ४८ रेखाओ थइ. ए ज प्रमाणे बीजी, त्रीजी विगेरे चंद्रादिकना अष्टकनी कुंडळीओमां अनुक्रमे सर्व रेखाओ करवी. तेथी चंद्रनी कुंडळीमां ४९, मंगळनी कुंडळीमां ४०, बुधनी कुंडळीमां ५८, गुरुनी कुंडळीमां ५६, शुक्रनी कुंडळीमां ५२, अने शनिनी कुंडळीमां ३९ रेखाओ कुल थाय छे." कह्युं छे के—

"वसुवेदौ १ नन्दवेदौ २ खवेदौ ३ वसुसायकौ ४ ।
षड्बाणौ ५ द्विशरौ ६ नन्दवह्नी ७ रेखा इनादिजाः ॥ १ ॥"

"सूर्यथी आरंभीने अनुक्रमे ४८,४९,४०,५८,५६,५२ अने ३९ रेखाओ थाय छे."

आ प्रमाणे एक एक ग्रहना अष्टकवर्गनी कुंडळीमां बारे राशिनां स्थानोमां जेम संभवे तेम एक एक रेखा देवी (करवी), अने बाकीनां स्थानोमां शून्य मूकवी. एम करवाथी एक ग्रहने स्थाने उत्कृष्टी आठ रेखानो संभव थाय छे. त्यारपछी कार्य वखते जे ग्रह जे राशिमां होय, ते स्थान जोवुं. ते स्थानमां जो रेखानुं अधिकपणुं होय तो ते ग्रहण करवुं श्रेष्ठ छे, शून्यनुं अधिकपणुं होय तो अशुभ जाणवो.

आ बन्ने मतनुं तत्त्व सरखुं ज छे. ते रेखाओनो उपयोग आ प्रमाणे.—

"चतूरेखे मध्यफलं हीने हीनं ततोऽधिके श्रेष्ठम् ।
विफलं गोचरगणितं त्वष्टकवर्गेण निर्दिष्टम् ॥ १ ॥"

"चार रेखा आवे तो मध्यम फळ, तेथी ओछी आवे तो हीन फळ अने तेथी अधिक आवे तो श्रेष्ठ फळ जाणवुं, अने आ श्रेष्ठ फळ अष्टकवर्गे बताव्युं होय त्यारे गोचरथी गणेलुं गोचरफळ निष्फळ थाय छे."

आ सर्व एक ग्रहने आश्रीने कह्युं छे. तात्कालिकना सर्व ग्रहोनी रेखाओ मेळवीए तो सोळथी ओछी रेखा कदापि न थाय, पण सत्तरथी आरंभीने उत्कृष्टी ५६ रेखाओ सुधी थाय छे. ते वखते सत्तरथी छवीश सुधीनी अशुभ जाणवी, सत्यावीश होय तो मध्यम, अने अठ्यावीशथी आरंभीने छप्पन सुधी उत्तरोत्तर शुभ, शुभतर अने शुभतम जाणवी. कह्युं छे के—

"रेखाधिक्यं शस्तं शून्याधिक्यं तथाऽधमं कथितम् ।
एतत्संयोगे स्युः षट्पञ्चाशन्न जातु अधिकास्ताः ॥ १ ॥"

'अधिक रेखा होय तो प्रशस्त छे अने शून्य अधिक होय तो अधम कह्युं छे. ए सूर्यादिक सर्वनी रेखाओने एकठी करीए तो छप्पन थाय छे, पण तेथी अधिक थती नथी, कारण के सूर्यादिक सात ग्रहोनी दरेकनी आठ आठ रेखाओ मेळववाथी छप्पन ज थाय छे." विशेष ए छे जे—"जो के "चतूरेखं मध्यफलं" "चार रेखा मध्य फळवाळी छे" एम पूर्वे कह्युं छे, तोपण जे ग्रहना अष्टकवर्गनी शुद्धि ते वखते जोवाती होय, ते

शुद्धिना स्वामीरूप ग्रहनी रेखाओ जो पोताथी ज उत्पन्न थयेली मळती होय तो चार रेखाओ आवे ते पण श्रेष्ठ छे, अने तेम न होय तो (पोताथी उत्पन्न थयेली रेखाओ न होय तो) षड्वर्ग विगेरेना बळवाळा पोताना मित्ररूप ग्रहनी पोताथी ज उत्पन्न थयेली रेखाओ मळे तोपण चार रेखाओ प्रशस्त छे, तेम पण न होय तो ते ज शुद्धिनो स्वामीरूप ग्रह जो वामवेधे करीने शुभ होय तोपण चार रेखा प्रशस्त छे आ त्रणे प्रकारमांनो कोइ पण न होय तो चारथी अधिक रेखावाळो ग्रह पण शुभ नथी." एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

वळी उपर जे ५६ रेखाओ उत्कृष्ट कही छे, ते "राहुनी रेखा बिलकुल नथी" एवा मते करीने कह्युं छे, पण केटलाक तो राहुनी पण रेखाओ कहे छे, ते आ प्रमाणे.—

"केन्द्राष्टद्वित्रिगः १,४,७,१०,८,२,३ सूर्याद्राहू रेखाप्रदः स्मृतः ।
इन्दोस्तनुत्रिधीख्यष्टधर्मकर्मव्यये १,३,५,७,८,९,१०,१२ स्थितः ॥ १ ॥
भौमात्तनुत्रिधीरिप्ये १,३,५,१२ स्वाबुख्यष्टान्तिमे २,४,७,८,१२ बुधात् ।
जीवात्सप्रथमे २,४,७,८,१२,१ शुक्रादरिद्यूनायरिप्यगः ६,७,११,१२ ॥ २ ॥
शनेस्त्रिधीवधूलाभे ३,५,७,११ लग्नाद्राहुस्तु शोभनः ।
त्रिपञ्चसप्तनवमान्त्येषु ३,५,७,९,१२ रेखाऽस्य न स्वतः ॥ ३ ॥
त्रिचत्वारिंशदेव स्यू रेखा राह्वष्टवर्गगाः ।"

"राहु सूर्यथी १,४,७,१०,८,२ अने ३ जे स्थाने होय तो ते रेखाने आपनारो (शुभ) कह्यो छे, चन्द्रथी १,३,५,७,८,९,१० अने १२ मे होय, मंगळथी १,३,५ अने १२ मे होय, बुधथी २,४,७,८ अने १२ मे होय, गुरुथी २,४,७,८,१२ अने १ ले होय, शुक्रथी ६,७,११ अने १२ मे होय, शनिथी ३,५,७ अने ११ मे होय अने लग्नथी राहु ३,५,७,९ अने १२ मे रह्यो होय तो ते सारो छे आ राहुने पोताना स्थानथी रेखा आवती नथी आ प्रमाणे राहुना अष्टकवर्गमा कुल रेखाओ ४३ अवश्य उत्कृष्टी थाय छे"

हवे कया कार्यमां कयो ग्रह बळवान् लेवो ? ते कहे छे.—

सर्वत्रेन्दुः कुजः संख्ये बोधे ज्ञः स्थापने गुरुः ।
याने शुक्रः शनिर्मौड्ये बली भानुर्नृपेक्षणे ॥ ६६ ॥

अर्थ—सर्व शुभ कार्यमा कार्य करनारनो चंद्र बळवान् जोवो जोइए, युद्धमां मंगळ, ज्ञानमा बुध, स्थापना (पदवी, प्रतिष्ठा, विवाह विगेरे) मा गुरु, प्रयाणमां शुक्र, मुंडनमा (दीक्षामा) शनि अने राजाना एटले उपरीना दर्शनमा सूर्य बळवान् लेवो जोइए. आ सर्वत्र गोचरादिक बळ जोवुं कह्यु छे के—

"एग १ चउ २ अठ ३ सोलस ४ बत्तीसा ५ सहि ६ सयगुण ७ फलाइं ।
तिहि १ रिक्ख २ वार ३ करण ४ जोगो ५ तारा ६ ससंकबलं ७ ॥ १ ॥"

"तिथिनुं बळ एक गणुं छे, तेनाथी नक्षत्रनुं बळ चार गणुं छे, तेनाथी वारनुं बळ आठ गणुं छे, तेनाथी करणनुं बळ सोळ गणुं छे, तेनाथी योगनुं बळ बत्रीश गणुं छे, तेनाथी तारानुं बळ साठ गणुं छे अने तेनाथी चंद्रनुं बळ सो गणुं फळदायक छे."

तेथी करीने ज कह्युं छे के—

"कर्तुरनुकूलयोगिनि शुभेक्षिते शशिनि वर्द्धमाने च ।
तारायोगेऽभीष्टे सर्वेऽर्थाः सिद्धिमुपयान्ति ॥ १ ॥"

"कर्ताने अनुकूळ योगवाळो, शुभ ग्रहे जोयेल अने वृद्धि पामतो चंद्र होय तथा तारानो योग सारो होय तो तेनां सर्व कार्यो सिद्धिने पामे छे."

तेमां पण आ प्रमाणे विभाग छे.

"ग्रामे नृपतिसेवायां संग्रामव्यवहारयोः ।
चतुर्षु नामभं योज्यं शेषं जन्मनि योजयेत् ॥ १ ॥"

"गाममां, राजसेवामां, संग्राममां अने व्यवहार (वेपार)मां, ए चार कार्यमां नामनुं नक्षत्र लेवुं, अने बाकीनां दीक्षा, प्रतिष्ठा, विवाहादि कार्यमां जन्मनुं नक्षत्र लेवुं." आ नरपति जयचर्यामां कह्युं छे.

तात्कालिक लग्नमां पण सर्व कार्योमां चंद्रनुं बळ अवश्य लेवुं. तेने माटे सारंग कहे छे के—

"लग्नं देहः षट्कवर्गोऽङ्गकानि, प्राणश्चन्द्रो धातवः खेचरेन्द्राः ।
प्राणे नष्टे देहधात्वङ्गनाशो, यत्नेनातश्चन्द्रवीर्यं प्रकल्प्यम् ॥ १ ॥"

"लग्न ए शरीर छे, षड्वर्ग ए अंगो छे, चंद्र ए प्राण छे अने (सात) ग्रहो ए (सात) धातुओ छे, प्राण नाश पामवाथी देह, धातु अने अंग पण नाश पामे छे, तेथी प्रयत्नवडे पण चंद्रनुं बळ लेवुं जोइए."

मूळ श्लोकनो भावार्थ ए छे जे—ज्यारे ते ते कार्यो लग्नना बळवानपणाथी करवामां आवे, त्यारे तेना ग्रहोनुं उदयपणाए करीने अथवा लग्नमां रहेवापणाए करीने अथवा लग्नमां कहेला षड्वर्गना स्वामीपणाए करीने अथवा केंद्रमां रहेवापणाए करीने अथवा छ, कुमार विगेरेना बळवडे करीने सबळपणुं लग्नमां करवुं, अने कार्य करनार(ना), शनि माटे स्वबळ लेवुं. ज्यारे कार्य केवळ मुहूर्त्तना बळथी ज करवुं होय त्यारे ते वैडूर्य मणिने धारणा वार होरादिक लेवां.

राशिमां आवेलो कयो ग्रह क्यारे फळदायक होय? ते कहे छे.—

एल झोऽखिले फलदो राशावादावादित्यमंगलौ ।
अर्के मध्ये सुरासुराचार्यौ प्रान्ते त्विन्दुशनेश्चरौ ॥ ६७ ॥

अर्थ—बुध आखी राशिमा फळदायक छे, सूर्य अने मंगळ आदिमां, गुरु अने शुक्र मध्यमां अने चंद्र तथा शनि अंत भागमां फळ देनारा छे.

फळदायक एटले शुभ गोचरमां रहेलो ग्रह शुभ फळ आपे, अने अशुभ गोचरमां रह्यो होय तो अशुभ फळ आपे छे. बुध आखी राशिमां फळ आपे छे एटले के जे राशिने पोते आक्रमण करी होय ते आखी राशिमां. आदिमां एटले पहेला द्रेष्काणमा, मध्यमा एटले बीजा द्रेष्काणमां अने अंते एटले त्रीजा द्रेष्काणमा. आ नियम सहज (सरल) गतिमा वर्तता ग्रहोने आश्रीने कह्यो छे, पण ज्यारे वक्रताए करीने तथा अतिचारपणाए करीने ते ग्रहो बीजी राशिमा गया होय त्यारे आ प्रमाणे जाणवुं —

"पक्षं १ दशाहं २ मासं च ३ दशाहं मासपञ्चकम् ।
वक्रेऽतिचारे भौमाद्याः पूर्वराशिफलप्रदाः ॥ १ ॥"

"मंगळ वक्र गतिमा के अतिचार गतिमां होय तो पंदर दिवस सुधी पूर्वनी राशिनुं फळ आपे छे, ए प्रमाणे बुध दश दिवस, गुरु एक मास, शुक्र दश दिवस अने शनि पांच मास सुधी फळ आपे छे अहीं पूर्वनी राशि एटले के वक्री होय तो पछीनी राशि अने अतिचारी होय तो पहेलानी राशिनुं फळ आपे छे, एम जाणवुं.

प्रश्न प्रकाशकर तो आम कहे छे —

"वक्रेऽतिचारे भौमाद्याः पूर्वराशिफलप्रदाः ।
जीवः शनिश्च यत्रस्थौ तस्य राशेः फलप्रदौ ॥ १ ॥"

"मंगळ विगेरे ग्रहो वक्री के अतिचारी होय तो पूर्वराशिना फळने आपे छे, परंतु गुरु अने शनि तो जे राशिमा रह्या होय ते ज राशिना फळने आपे छे" विशेष आ प्रमाणे—

"राश्यन्तगतः खेटः परभावफलं ददाति पृच्छासु ।
अन्त्यघटीं यावदसावासीनफलं विवाहादौ ॥ १ ॥"

"प्रश्नने विषे राशिना अंत भागमा रहेलो ग्रह पछीना स्थानना फळने आपे छे, अने विवाहादिकमां तो ते ग्रह अन्त्यनी घडी सुधी ज्या रहेलो होय ते ज स्थाननुं फळ आपे अहीं राशिनो अंत्य एटले छेल्लो त्रिंशांश लेवो.

गोचर विरुद्ध (अशुभ) होय तो माणसे विशेषे करीने सत्कर्ममां (अर्थेवुं, अने अत्यंत दूरनी यात्रा, अश्वक्रीडा, विकाळे फरवुं अने युद्धमा मंगळ, शुक्र, मुण्डनमां (दाणे (विरुद्ध ग्रहगोचरमां) यात्रादिक कर्या विना निर्वाह थइ लेवो जोइए. आ सर्वनुं गोनी शांतिने माटे कहे छे —

अर्कारयो १ र्ज्ञस्य २ गुरोः ३ सितेन्द्वो ४-
मेन्दस्य ५ राहूरगयोश्च ६ तुष्ट्यै ।
सदा वहेद्विद्रुम १ हेम २ मुक्ता ३-
रूप्याणि ४ लोहं च ५ विराटजं च ६ ॥ ६७ ॥

अर्थ—सूर्य अने मंगळनी तुष्टि माटे विद्रुमने धारण करवां, बुधनी शांतिने माटे सुवर्ण पहेरवुं, गुरुनी शांति माटे मोती पहेरवां, शुक्र अने चंद्रनी शांति माटे रूपुं पहेरवुं, शनिनी शांति माटे लोढुं पहेरवुं (पासे राखवुं) अने राहु तथा केतुनी शांति माटे राजावर्त नामनो मणि पहेरवो.

अहीं कोइ शंका करे छे के—सात ग्रहोनुं तो सर्वदा गोचरफळ विचारवानुं कह्युं छे अने दिवस, मास, वर्ष तथा होरानुं स्वामीपणुं पण सात ग्रहोने ज छे, तो अहीं राहु अने केतुनुं ग्रहण केम कर्युं ? तथा तेमनुं प्रतिकूळ गोचरपणुं पण शी रीते घटे ? के जेथी करीने तेमनी शांतिने माटे विराटज मणिने वहन करवानुं कहेवुं पड्युं ? आनो जवाब ए छे जे—राहु अने केतुनुं दिवसादिकनुं स्वामीपणुं भले न होय, परंतु ग्रहपणुं तो छे ज, केमके जो तेओ ग्रह न होय तो राशि विगेरेमां तेमनो संचार शी रीते घटे ? तथा राहु गोचर पण ग्रहणने दिवसे विचारवानुं कह्युं ज छे, तेथी तेना प्रतिकूळपणामां तेनी शांतिनो उपयोग थइ शके छे, अने केतु पण ज्यारे उदय पाम्यो होय त्यारे तेनाथी उत्पन्न थयेला उपद्रवनी शांतिने माटे तेनो शांतिक उपाय उपयोगी छे.

ग्रहोनी शांति माटे बीजो प्रकार कहे छे.—

पूषादितोषाय च पद्मराग १-
मुक्ता २ प्रवालानि ३ सगारुडानि ४ ।
सपुष्परागं ५ कुलिशं ६ च नील ७-
गोमेद ८ वैडूर्य ९ मणीन् वहेत ॥ ६९ ॥

अर्थ—रविनी तुष्टि माटे पद्मराग धारण करवो, चंद्र माटे मुक्ता, मंगळ माटे परवाळां, बुध माटे सगारुड (मरकत मणि), गुरु माटे पुष्पराग, शुक्र माटे कुलिश (वज्र) शनि माटे नील मणि, राहु माटे गोमेद जातना मणि, अने केतुनी शांति माटे वैडूर्य मणिने धारण करवा.

ग्रहोनी शांतिने माटे स्नानो कहे छे.—

एलाशिलापद्मकयष्ट्युशीरसुराह्वकश्मीरजशोणपुष्पैः ।
अर्के विधौ कैरवपञ्चगव्यैः सशंखशुक्तिस्फटिकेभदानैः ॥ ७

अर्थ—सूर्य विरुद्ध (अशुभ) होय तो एलायची, मणशील, कमळ, जेठीमध, सुगंधी वाळो, देवदार, केसर अने राता कणेरनां पुष्पोथी स्नान करवुं एटले के आ सर्व वस्तु पाणीमां नाखी तेवडे स्नान करवुं. तथा ते स्नान पण ते ते ग्रहना वारने दिवसे करवु ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. चंद्र विरुद्ध होय तो शंख, छीप, स्फटिक अने हाथीना मद सहित पोयणा (कमळ) अने पंचगव्यवडे स्नान करवुं. पंचगव्य माटे पराशर आ प्रमाणे कहे छे —

"कृष्णाया गोमय मूत्रं नीलायाः कपिलाघृतम् ।
सुरभेर्दधि शुक्लायास्ताम्रायाः क्षीरमाहरेत् ॥ १ ॥"

"काळी गायनुं छाण, लीली गायनुं मूत्र, पीळी गायनुं घी, धोळी गायनुं दहीं अने राती गायनुं दुध लेवुं"

**भौमे बलाहिंगुलबिल्वकेसरैर्मांस्या फलिन्याऽरुणपुष्पचन्दनैः ।
सुवर्णमुक्तामधुगोमयाक्षतैः सरोचनामूलफलैर्बुधे पुनः ॥ ७१ ॥**

अर्थ—मंगळ विरुद्ध होय तो वळदाणा, हींगळोक, बीलानुं फळ, बकुलनुं फळ, मुरः मांसी, प्रियंगु, रातां पुष्प (जवाकुसुम) अने लाल चंदनवडे स्नान करवुं. बुध विरुद्ध होय तो सुवर्ण, मोती, मध, गायनुं छाण, अक्षत, गोरोचंदन अने नारंगीनुं फळ. एटली वस्तुवडे स्नान करवुं.

**जीवे सजातिकुसुमैः सितसर्षपयष्टिमल्लिकापत्रैः ।
मूलफलकुंकुमैलामनःशिलाभिस्तु दैत्यगुरौ ॥ ७२ ॥**

अर्थ—गुरु अशुभ होय तो जाइनां पुष्प, धोळा सरसव, जेठीमध अने मल्लिका (विचकिल)नां पांदडां करीने स्नान करवुं. शुक्र अशुभ होय तो बीजोरुं, केसर, एलायची अने मणशीलवडे स्नान करवुं

**कृष्णतिलाञ्जनलाजैः शतपुष्पीरोध्रमुस्तकबलाभिः ।
तरणितनये च गोचरविरुद्धराशिस्थिते स्नायात् ॥ ७३ ॥**

शनि गोचर विरुद्ध राशिमां रह्यो होय तो काळा तल, सौवीराजन (सोयरो), लाजा (खा ब्रीहि), शतपुष्पी (सोआ), लोधर, मोथ अने बळ नामनी औषधिए अ स्नान करवुं.

ज्ञानमा
नमा (र
आ सर्वनु

राहु केतुनी शांति माटे भास्कर आ प्रमाणे स्नान कहे छे.

"रोध्रगर्भतिलपत्रकमुस्ताहस्तिदानमृगनाभिपयोभिः ।
स्नानमेतदपरोधति राहोः साजमूत्रमिदमेव च केतोः ॥ १ ॥"

"लोधरनो गर्भ, तजनां पांदडां, मोथ, हाथीनो मद अने कस्तूरीना जळवडे स्नान करवाथी राहुनी पीडा रोकाय छे, अने ते ज स्नान बकराना मूत्र सहित करवाथी केतुनी पीडा रोकाय छे."

"सप्रियंगुरजनीद्वयमांसीकुष्ठलाजसितसर्षपचन्द्रैः ।
वारिभिः सहवचैः सहरोध्रैः स्नानमत्ति निखिलग्रहपीडाम् ॥ २ ॥"

"प्रियंगु (कांग), हळदर, जटामांसी, कुष्ठ (एक जातनी वनस्पति), लाजा, धोळा सरसव अने कपूर सहित तथा वज अने लोध्र सहित जळवडे स्नान करवाथी समग्र ग्रहोनी पीडा नाश पामे छे."

आ स्नानो राजादिकने ज उचित छे. अन्य जने तो आ प्रमाणे करवुं.—

"रत्तं १ सेअं २ रत्तं ३ नीलं ४ पीअं ५ सिअं ६ तिसु किन्हं ए ।
पूअं बलिं च कुज्जा सूराईणं विरुद्धाणं ॥ १ ॥"

"सूर्यादिक विरुद्ध होय तो तेनी शांति माटे अनुक्रमे राता १, श्वेत २, राता ३, लीला ४, पीळा ५, श्वेत ६ अने छेल्ला त्रण एटले शनि, राहु अने केतुनी शांति माटे काळा ए पदार्थोथी (पुष्पादिक, धान्यादिकथी) पूजा तथा बळिदान करवां." आ [प्र]माणे हर्षप्रकाशमां कह्युं छे.

। इति गोचरद्वारम् । ६

। इति श्रीमति आरंभसिद्धिवार्तिके राशि १ गोचर २ परीक्षात्मको द्वितीयो विमर्शः ॥ २

श्रीसूरीश्वरसोमसुन्दरगुरोर्निःशेषशिष्याग्रणी-
र्गच्छेन्द्रः प्रभुरत्नशेखरगुरुर्देदीप्यते सांप्रतम् ।
तच्छिष्याश्रवहेमहंसरचितस्यारंभसिद्धेः सुधी-
श्रृंगाराभिधवार्त्तिकस्य किल दक् २ संख्यो विमर्शोऽभवत् ॥ २ ॥

[श्री]मान् सूरीश्वर सोमसुंदर गुरुना समग्र शिष्योमां अग्रेसर अने गच्छना नायक एवा [पू]ज्य श्री रत्नशेखर गुरु हालमां देदीप्यमान वर्ते छे. तेमना शिष्य हेमहंसे रचेली आरंभ[सि]द्धिना सुधीश्रृंगार नामना वार्तिक (वृत्ति)नो आ बीजो विमर्श पूर्ण थयो.

———o<>o———

नव
ोमां
भि-

आ प्रमाणे सामान्य रीते कार्य कहीने हवे पोतपोताने स्थाने नामनो प्रकाश करवापूर्वक केटलाक उपयोगी कार्यो कहे छे.—

कृत्वाद्यचतुष्टयवर्जी विषमासु रात्रिषु न योषाम् ।
सेवेत पुत्रकामः पौष्णमघामूलभेष्वपि च ॥ ५ ॥

अर्थ—पुत्रनी इच्छावाळा पुरुषे ऋतुना प्रथमना चार दिवस वर्जीने विषम (एकी) रात्रिओमां स्त्रीने सेववी नहीं, तथा रेवती, मघा अने मूळ नक्षत्रमां पण सेववी नहीं.

विषम रात्रिने वर्जवा विषे विवेकविलासमां कह्युं छे के—

"निशाः षोडश नारीणामृतुः स्यात्तासु चादिमाः ।
तिस्रः सर्वैरपि त्याज्याः प्रोक्ता तुर्यापि केनचित् ॥ १ ॥"

"स्त्रीओने सोळ रात्रि सुधी ऋतु होय छे, तेमां प्रथमनी त्रण रात्रिओ सौने वर्जवा योग्य छे. कोइए चोथी रात्रि पण वर्ज्य कही छे."

"चतुर्थ्यां जायते पुत्रः स्वल्पायुर्गुणवर्जितः ।
विद्याचारपरिभ्रष्टो दरिद्रः क्लेशभाजनम् ॥ २ ॥"

"चोथी रात्रिए पुत्र उत्पन्न थयो होय तो ते अल्प आयुष्यवाळो, गुण रहित, विद्य अने आचारथी भ्रष्ट, दरिद्र अने क्लेशना स्थानरूप थाय छे."

विषम रात्रिमां स्त्री प्रत्ये गमन न करवा विषे कह्युं छे के—"समायां निशि पुत्रः स्या द्विषमाया च पुत्रिका" । "सम रात्रिए स्त्रीगमन करवाथी पुत्र थाय छे, अने [illegible] रात्रिए पुत्री थाय छे" मूळ श्लोकमा "विषम रात्रिए गमन न करवुं' एम जे [illegible] मुखे कह्युं छे, ते वचन युक्तिनुं सत्यापन करवा माटे कह्युं छे. ए रीते आगळ पण [illegible] मुखनी उक्तिमां जाणी लेवुं. रेवती विगेरे नक्षत्रो मूळ श्लोकमा वर्जवानां कह्या छे, विषे कह्युं छे के—

"गर्भाधाने मघा वर्ज्या रेवत्यपि यतोऽनयोः ।
पुत्रजन्मदिने मूलाश्लेषे स्तस्ते च दुःखदे ॥ १ ॥"

"गर्भ धारण करवामा मघा अने रेवती वर्ज्य छे, कारण के आ बे नक्षत्रमां गर्भ [illegible] तो पुत्रना जन्मने दिवसे अनुक्रमे मूळ तथा अश्लेषा नक्षत्र आवे छे, तेथी ते मूळ अश्लेषानो जन्म अत्यंत दु खदायी छे. मूळ तथा अश्लेषामां जन्म थवानुं प्रमाण "आधानाद्दशमे जन्म" "आधानथी दशमा नक्षत्रमा जन्म थाय छे," ए वचन छे.

रवातीभ प्रशस्तेऽह्नि जाताः स्युः सूनवः शुभाः ।
अतो मूलमपि त्याज्यं गर्भाधाने शुभार्थिभिः ॥ २ ॥

"प्रशस्त दिवसे उत्पन्न थयेलां बाळको रत्ननी जेम शुभकारक थाय छे, तेथी शुभने इच्छनार पुरुषोए गर्भाधानमां मूळ नक्षत्रनो पण त्याग करवो."

हवे स्त्रीना सीमंतनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

सीमन्तः स्यान्नृवारेषु मासि षष्ठेऽष्टमेऽपि वा ।
हस्तमूलमृगादित्यपुष्यश्रुतिषु योषिताम् ॥ ६ ॥

अर्थ—स्त्रीओनुं सीमंत कार्य पुरुष वारमां एटले रवि, मंगळ अने गुरुवारे छठे अथवा आठमे मासे अने हस्त, मूळ, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य अने श्रवण एटलां नक्षत्रमां शुभ छे. त्रिविक्रम सीमंत कार्यने पुरुष नक्षत्रमां करवानुं कहे छे. तेमां पण आ ज नक्षत्रो आवे छे, केमके आ नक्षत्रो ज (बाकीनां स्त्रीरूप होवाथी) पुरुषरूपे छे.

"अर्वाग्विवाहकालाच्च पितृचन्द्रबलं सदा ।
स्त्रीणां सीमन्त उद्वाहे ग्राह्यमन्यत्र तत्पतेः ॥ १ ॥"

"विवाह कर्या पहेलां (कन्याने) पिताना चंद्रनुं बळ सदा शुभ छे, स्त्रीओना चंद्रनुं बळ सीमंत तथा विवाहमां बळवान् छे, अने बीजां कार्योमां पतिनुं चंद्र बळ शुभ छे." एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

विष बाळकनी उत्पत्ति कहे छे.—

विषकौमारजन्म स्याद्द्वितीयाशनिसार्पभैः ।
सप्तम्यारशतर्क्षैश्च द्वादश्यर्काग्निभैस्तथा ॥ ७ ॥

अर्थ—बीज, शनि अने अश्लेषाए करीने, सातम, मंगळ अने शतभिषके करीने, तथा बारस, रविवार अने कृतिकाए करीने विष कुमार (संतति)नो जन्म थाय छे. एटले के आवा योगमां जो कोइ बाळक उत्पन्न थाय तो ते विष कन्या के विष पुत्र थाय छे. तेनुं फळ.—

"विपकन्याख्या प्रथमं पित्रोर्वंशक्षयंकरी ।
हन्ति पश्चात्पतिं श्वश्रूं श्वशुरं देवरं तथा ॥ १ ॥"

"विष कन्या प्रथम (कुमारिका अवस्थामां) माता अने पिताना वंशनो नाश करे छे, अने पछी (परण्या पछी) पतिनो, सासुनो, ससरानो अने दीयरनो नाश करे छे." विशेषमां व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—"अभिजित् नक्षत्रमां करेलुं सर्व कार्य शुभ छे, पण तेमां उत्पन्न थयेलुं बाळक प्राये जीवतुं नथी.

हवे मूळ विगेरे नक्षत्रमां उत्पन्न थयेला बाळकने आश्रीने कहे छे.—

मूलस्यांह्रिचतुष्के पितृ १ मातृ २ द्रव्यनाश ३ सौख्यानि ४ ।
बालस्य जन्मनि स्युः क्रमतः सार्पस्य तूत्क्रमतः ॥ ८ ॥

अर्थ—मूळना पहेला पादमां बाळक उत्पन्न थाय तो पितानो नाश थाय, ... जन्मे तो मातानो नाश थाय, त्रीजामां जन्मे तो द्रव्यनो नाश थाय अने चो... जन्मे तो सुख थाय. अश्लेषामां बाळक जन्मे तो तेनुं उत्क्रमथी फळ जाणवुं, एटले के अश्लेषाना पहेला पादमां जन्मे तो सुख थाय, बीजामां जन्मे तो द्रव्यनो नाश, त्रीजामां मातानो नाश अने चोथा पादमां जन्मे तो पितानो नाश थाय

वराह तो मूळना चोथा पादमां जन्मेला बाळकनुं फळ आ प्रमाणे कहे छे.—

"क्षेत्राधिपसंदृष्टे शशिनी नृपस्तत्सुहृद्भिरर्थपतिः ।
द्रेष्काणांशकपैर्वा प्रायः सौम्यैः शुभं नान्यैः ॥ १ ॥"

"आ तात्कालिक जन्मलग्नमां विचारवानुं छे.—क्षेत्राधिपे देखेला चंद्रमां एटले के ते वखते (जन्मसमये) जे राशिमां चंद्र होय ते राशिनो स्वामी जो चंद्रने जोतो होय तो मूळना चोथा पादमां जन्मेलो बाळक राजा थाय अने ते राशिना मित्रोए ते चंद्रने जोयो होय तो धनपति थाय तथा चंद्रे आक्रमण करेला द्रेष्काणनो अथवा नवांशनो स्वामी जो सौम्य होय अने ते चंद्रने जोतो होय तो ते शुभ छे अने अन्य एटले क्रूर स्वामी जोतो होय तो अशुभ छे."

केटलाक आचार्यो कहे छे के—

"मूलस्यांह्रिचतुष्के क्रमेण पशुनाशिनी १ सुखकरी च २ ।
पितृपक्षमथ क्षपयति ३ मातुलपक्षं च ४ जाता स्त्री ॥ १ ॥"

"मूळना पहेला पादमां उत्पन्न थयेली कन्या पशुनो नाश करे छे, बीजा ... जन्मी होय तो सुख करनारी थाय छे, त्रीजा पादमां जन्मी होय तो पिताना पक्षनो न... थाय छे अने चोथा पादमां जन्मी होय तो माताना पक्षनो नाश थाय छे"

"मूले जातोऽधमः स्यान्ना स्त्री तु पुण्यवती भवेत् ।
ज्येष्ठा मघा विपरीताऽश्लेषा तद्भयेऽधमा ॥ २ ॥"

"...ळमां जन्मेलो पुरुष अधम थाय छे, अने स्त्री जन्मी होय तो ते पुण्यवती ... मां जन्मे तो तेथी विपरीत थाय छे, एटले के पुरुष जन्मे तो ... अधम थाय छे, अने अश्लेषामां जन्मे तो बन्ने अधम थाय छे."

"गर्भ धारण करवा... पुत्रना जन्मने दिवसे ... ...षानो जन्म अत्यंत ... "आधानाद्दशमे जन्म" "अ... रत्नातीव प्रश... अतो मूलमपि

"...। दशमी कृष्णा शनिभौमज्ञसंयुता ।
...तुर्दशी मूलजातः संहरते कुलम् ॥ ३ ॥"

...वारे करीने सहित कृष्णपक्षनी त्रीज के दशम होय अथवा ... ते दिवसे मूळ नक्षत्र होय तेमां उत्पन्न थयेलो पुरुष

अश्लेषामां जन्मेलानुं फळ आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"सार्पांशे प्रथमे राजा द्वितीयांशे धनक्षयः ।
तृतीये जननीं हन्ति चतुर्थे पितृघातकः ॥ १ ॥"

"अश्लेषाना पहेला अंशमां (पादमां) जन्मे तो राजा थाय, बीजा अंशमां जन्मे तो धननो क्षय थाय, त्रीजा अंशमां जन्मे तो माताने हणे अने चोथामां जन्मे तो पिताने हणे."

हवे मूळ नक्षत्रनुं पुरुषस्वरूप कहे छे.—

मूर्धा १ स्य २ स्कंध ३ बाहा ४ कर ५ हृदय ६ कटी ७ गुह्य ८ जानु ए क्रमेषु १०,
स्युर्घट्यः पञ्च ५ पञ्चो ५ रग ८ करटि८करा२ष्ट ८ द्वि २ दि १० क्तर्क ६ तर्काः ६।
बालश्छत्री १ पितृघ्नो २ ऽंसलदृढबलवान् ३ राक्षसो ४ ब्रह्मघाती ५,
राजा ६ नाशी ७ स्वसौख्यावह ८ इह चपलो ए नश्वर १० श्चासु जातः ॥ए॥

अर्थ—मूळ पुरुषना मस्तक पर पांच घमी मूकवी, मुखमां ५, बे स्कंध पर ८, बे बाहुमां ८, बे हाथमां २, हृदय पर ८, कटी पर २, गुह्य पर १०, बन्ने जानुए ६ अने बन्ने पगे ६ घमी मूकवी. अहीं बे स्कंध पर आठ मूकवानी कही छे तेमां दरेक पर चार चार मूकवी. ए ज प्रमाणे बाहु विगेरेमां पण बबे जागे मूकवी. बीजे ठेकाणे पण यथायोग्य आ प्रमाणे ज जाणवुं. आ घमीउने विषे उत्पन्न थयेलो बाळक अनुक्रमे राजा १, पितृघाती २, दृढ खांधना बळवाळो ३, राक्षस ४, ब्रह्महत्यारो ५, राजा ६, नाशवंत ७, सुखी ८, चपळ ए, अने नाशवंत (अल्पायुवाळो) थाय छे अर्थात् मस्तक परनी पांच घमीउमां जन्म थयो होय तो राजा थाय, मुखनी पांच घमीमां जन्म थयो होय तो पितृघाती थाय, ए रीते अनुक्रमे जाणवुं.

मूळ पुरुषनी स्थापना.

मस्तके	५	राजा
मुखे	५	पितृहंता
बे स्कंधे	८	खांधवाळो
बे बाहुए	८	राक्षस
बे हाथे	२	ब्रह्मघाती
हृदये	८	राज्यधर
कटीए	२	अल्पायु
गुह्ये	१०	सुखी
बे जानुए	६	चपळ
बे पगे	६	अल्पायु

कोइ आचार्य आ प्रमाणे कहे छे.—

"ब्रह्महत्याकरः पाणौ यद्वा मातुलघातकः ।
गुह्यजातो धनं हन्याद्वृद्धत्वे च सुखी भवेत् ॥ १ ॥
न जीवेद्वामजंघायां पाथो वा जायते नरः ।
दक्षिणस्यां तु जंघायां जातकः स्यान्महाधनी ॥ २ ॥
कृच्छ्राज्जीवति वामेऽङ्घ्रौ दक्षिणे धनपुण्यवान् ॥'

"मूळ नक्षत्रनी हाथनी घमीमा उत्पन्न थयो होय तो ब्रह्महत्या करनार थाय, मामानो घात करे, गुह्य स्थाननी घमीमा जन्म्यो होय तो धननो नाश करे अने पणामां सुखी थाय, वाम (मावी) जंघानी घमीमां जन्म्यो होय तो जीवे नहीं जीवे तो पंथिक थाय, जमणी जंघानी घमीमा जन्म्यो होय तो महा धनवान् थाय मावा पगनी घमीमा जन्म्यो होय तो महा कष्टे जीवे, अने जमणा पगनी मा वए जन्म्यो होय तो धनवान् तथा पुण्यवान् थाय."

तो केटलाएक मूळने वृक्षरूपे कहे छे, ते आ प्रमाणे —

जो"पात् १ स्तंब २ त्वचि ३ शाखा ४ दल ५ कुसुम ६ फले ७ स्युः शिखायां ८ च घ
स्वाम्मूलडोर्वार्द्धि ४ सप्त ७ इक दशक १० नवे ए प्वं ५ ग ६ रुद्र ११ प्रमाणाः ।
स्वा"मूला १ र्थ २ भ्रातृ ३ मातृ· क्षपयति ४ पतति ५ प्रौढमंत्री ६ नृपश्च ७,
स्यादेतासु प्रसूत· श्रयति कृशतरं चायुरेतच्छिखायाम् ८ ॥ १ ॥"

"मूळ वृक्षना मूळमा ४ घमी मूकवी, थममा ७, डालमा ८, शाखामां १०, , पुष्पमा ५, फळमां ६, तथा शिखा (टोच) उपर ११ घमी मूकवी आ न्मेलानुं फळ अनुक्रमे आ प्रमाणे—मूळनो नाश करे १, अर्थनो नाश करे २, जन श करे ३, मातानो नाश करे ४, पोते नाश पामे ५, मोटो मंत्री थाय ६, थाय य ७, अने शिखामा नक्षत्र होय तो अल्पायु थाय ८" केटलाक आचार्यो कहे शिखामां नक्षत्र होय तो मोटा आयुष्यवाळो थाय

मूळ वृक्षनी स्थापना.

मूळे	४	मूळपात
थमे	७	अर्थहानि
डाले	८	भ्रातृनाश
शाखाए	१०	मातृनाश
पत्रे	ए	मरण
पुष्पे	५	मंत्री थाय
फळे	६	राज्यप्राप्ति
शिखाए	११	अल्पायु

ान्य शास्त्रमां मूळ पुरुषथी विपरीत अश्लेषा पुरुष पण आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"अश्लेषाघटिकाषष्टिरेवं स्थाप्या नराकृतिः ।
आदौ पादद्वये पञ्च जान्वोः पञ्च गुदेऽष्ट च ॥ १ ॥
नाभावष्टौ हृदि द्वौ च पाण्योरष्टौ द्वयं भुजे ।
स्कन्धयोर्दशकं वक्त्रे षट् शीर्षे षडिति क्रमात् ॥ २ ॥
मृति १ र्भ्रमः २ सुखं ३ व्याधी ४ राज्यं ५ हत्या ६ च दैत्यता ७ ।
स्कन्धिलः ८ पितृहा ९ नेता १० फलं ज्ञेयं यथाक्रमम् ॥ ३ ॥"

"अश्लेषा नक्षत्रनी ६० घडीओ आ प्रमाणे नरनी आकृतिए स्थापवी—प्रथम बे पगमां ५ घडी मूकवी, पछी अनुक्रमे बे जानुमां ५, गुदामां ८, नाभिमां ८, हृदयमां २, बे ाथमां ८, बे बाहुमां २, बे स्कंध उपर १०, मुखमां ६ अने मस्तक पर ६. तेनुं फळ अनुक्रमे पगथी आ प्रमाणे जाणवुं. मरण १, भ्रमण २, सुख ३, व्याधि ४, राज्य ५, हत्या करनार ६, राक्षसपणुं ७, खांधवाळो ८, पितानो घाती ९, राजा १०."

अश्लेषा पुरुषनी स्थापना.

बे पग	५	मरण	बे हाथ	८	हत्या करनारो
बे जानु	५	भ्रमण	बे बाहु	२	राक्षस
गुदाए	८	सुख	बे स्कंधे	१०	खांधवाळो
नाभिए	८	व्याधि	मुखे	६	पितृघाती
हृदये	२	राज्य	मस्तके	६	राजा

ए ज रीते मूळ वृक्षथी विपरीत अश्लेषा वृक्ष पण अन्य शास्त्रमां कहेलुं जाणवुं विशेष ए के घडीनो क्रम मूळ वृक्षनी जेम ज लेवो.

अश्लेषा वृक्षनी स्थापना.

शिखाए	४	अल्पायु
फळे	७	राज्यप्राप्ति
पुष्पे	८	मंत्री थाय
पत्रे	१०	मृत्यु
शाखामां	९	मातृनाश
छालमां	५	भ्रातृनाश
थडे	६	अर्थहानि
मूळे	११	मूळनाश

—
मृगशि
ोहिणी, पू
वती अने श्रीक्षविलास विगेरे ग्रंथोमां तो मूळ अने अश्लेषानां मुहूर्त्तोए करीने जन्मेल
...ो कहेलुं छे.—

"आद्यः षष्ठस्त्रयोविंशो द्वितीयो नवमोऽष्टमः ।
अष्टादशश्च मूलस्य मुहूर्त्ता दुःखदा जनौ ॥ १ ॥
त्रयोविंशपञ्चविंशौ द्वाविंशोऽष्टत्रयोदशौ ।
एकोनत्रिंशत्रिंशौ च सार्पे स्युरशुभाः क्षणाः ॥ २ ॥"

"मूळ नक्षत्रना पहेला, छठा, त्रेवीशमा, बीजा, नवमा, आठमा अने अढारमा ... र्तमां जन्म थाय तो ते दुःखदायी छे. तथा अश्लेषाना त्रेवीशमा, पचीशमा, बावीश... आठमा, तेरमा, ओगणत्रीशमा अने त्रीशमा मुहूर्त्तमां जन्म थाय तो ते पण अ... (दुःखदायी) छे." आनुं कारण ए छे जे आ मुहूर्त्तोना स्वामीओ क्रूर छे, माटे ते अशु... छे ते स्वामीओ आ प्रमाणे —

"राक्षसो १ यातुधानश्च २ सोमः ३ शक्रः ४ फणीश्वरः ५ ।
पितृ ६ मातृ ७ यमाः ८ कालो ९ वैश्वदेवो १० महेश्वरः ११ ॥ १ ॥
साध्यदेवः १२ कुबेरश्च १३ शक्रो १४ मेघो १५ दिवाकरः १६ ।
गंधर्वो १७ यमदेवश्च १८ ब्रह्मविष्णुमय १९ स्ततः ॥ २ ॥
ईश्वरो २० विष्णु २१ रिन्द्राणी २२ पवनो २३ मुनय २४ स्तथा ।
षण्मुखो २५ शृंगिरीटी २६ च गौरी २७ मातृ २८ सरस्वती २९ ॥ ३ ॥
प्रजापति ३० श्च मूलस्य त्रिंशन्मुहूर्त्तनायकाः ।
विपरीताः पुनर्ज्ञेया अश्लेषाजातबालके ॥ ४ ॥"

"मूळ नक्षत्रना त्रीश मुहूर्त्तोना नायको अनुक्रमे आ प्रमाणे छे.— राक्षस १, यातुधान (राक्षस) २, सोम ३, शक्र ४, नागेंद्र ५, पितृ ६, मातृ ७, ...म ८, काळ ९, वैश्वदेव १०, महेश्वर ११, साध्यदेव १२, कुबेर १३, शक्र १४, मेघ ...५, दिवाकर १६, गंधर्व १७, यमदेव १८, ब्रह्माविष्णु १९, ईश्वर २०, विष्णु २१, ...णी २२, पवन २३, मुनिओ २४, षण्मुख (कार्त्तिकस्वामी) २५, शृंगिरीटी २६, ...री २७, मातृ २८, सरस्वती २९ अने प्रजापति ३० आथी विपरीत (एटले छेल्लेथी ...नुक्रमे) अश्लेषाना मुहूर्त्तोना नायको जाणवा. तेमां उत्पन्न थयेला बाळकनुं पण ते ...णे (नायक प्रमाणे) फळ जाणवुं."

हवे मूळ नक्षत्रमां जन्मेला बाळक माटे शांतिनो विधि कहे छे —

त्यजेन्न वीक्षेत समाष्टकं वा, बालं पिता मूलविकारशान्त्यै ।
शतौषधीमूलमृदम्बुरत्नैः, स्नायाच्च हुत्वा सशिशुप्रसूकः ॥ १८ ॥

अर्थ—मूळना विकार (दोष)नी शांति करवा माटे पिताए ते बाळ... थयेलो पुरु..., एटले के पोताना घरथी दूर राखवो अथवा आठ वर्ष सुधी ते ...

. पछी शांतिनो होम करीने सो उंषधीनां मूळ, सात प्रकारनी माटी, तीर्थोनां जळ पंच रत्नथी बाळक तथा तेनी माता सहित पोते स्नान करवुं. उंषधीउंनी साथे व्य, हाथीनो मद, बीज सहित पंचकषाय अने सर्वौषधी पण लेवी, एटके के सुवर्ण- ़ नक्षत्रनुं राक्षसरूप करावबुं. पछी सो छिद्रवाळा घडामां ते राक्षस तथा सर्वे विगेरे नाखवुं अने तेनी विधिने जाणनार विद्वान् पासे होम करावबापूर्वक स्नान अश्लेषामां जन्मेला बाळकनो पण आ ज विधि छे, परंतु सुवर्णना राक्षसने बदले ा सर्पनुं रूप बनावबुं. आ मूळ विधान तथा अश्लेषा विधान विस्तारथी गृहस्थ- ुच्चय विगेरे ग्रंथोमां आप्युं छे. ते बहु दोष युक्त होवाथी अहीं तेनो विस्तार थी. बहु सावद्य आरंभना पापथी भय पामनार पुरुषे तो मूळ अथवा अश्ले- ाळकनो जन्म थाय त्यारे सर्व नक्षत्रोना भोगवनार नवग्रहोए पण जेनां चरण- ेवातां छे एवा श्रीमान् अरिहंतनी तथा विशेषे करीने मूळ नक्षत्रमां ज उत्पन्न श्रीसुविधि स्वामीनी अष्टोत्तरशत प्रकारी स्नात्र पूजा शास्त्रोक्त विधि प्रमाणे ववपूर्वक भणाववी. एम करवाथी पण समग्र क्षुद्र उपद्रवोनी शांति थयेली सर्वत्र ु जोवामां आवे छे.

अहीं केटलाक कहे छे के—

"विष्कंभादिकुयोगेषु कुलिके सत्रिपुष्करे ।
संक्रान्तौ दुर्दिने विष्टौ मूलाश्लेषाजबालके ॥ १ ॥
गणकेनैव कर्त्तव्यं पौष्टिकं मूलसार्पयोः ।"

विष्कंभादिक कुयोगमां, कुलिकमां, त्रिपुष्करमां, संक्रांतिमां, खराब दिवसे, विष्टिमां, ां अने अश्लेषामां बाळकनो जन्म थयो होय तो मूळ अने अश्लेषानुं पौष्टिक ाणकनी (जोशीनी) पासे ज करावबुं."

जन्मादिकमां उपयोगी नक्षत्रोना कुल्यादिक भेदो कहे छे.

कुल्यभान्यश्विनी पुष्यो मघा मूलोत्तरात्रयम् ।
द्विदैवतं मृगश्चित्राकृत्तिकावासवानि च ॥ ११ ॥
उपकुल्यानि भरणी ब्राह्मं पूर्वात्रयं करः ।
ऐन्द्रमादित्यमश्लेषा वायव्यं पौष्णवैष्णवे ॥ १२ ॥

र्थ—अश्विनी, पुष्य, मघा, मूळ, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, ाखा, मृगशीर्ष, चित्रा, कृत्तिका अने धनिष्ठा ए बार नक्षत्रो कुल्य कहेवाय छे (११) ी, रोहिणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद, हस्त, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, अश्लेषा, ति, रेवती अने श्रवण ए बार नक्षत्रो उपकुल्य कहेवाय छे.

विशेष ए छे जे आ परथी आयुष्यनुं ज्ञान पण थाय छे.—

"शतं मूर्ध्नि मुखे स्कन्धे चाशीतिर्भुजहस्तयोः ।
सप्तसप्ततिवर्षाणि हृन्नाभ्योरष्टषष्टिका ॥ १ ॥
गुह्ये षष्टिस्तथा जान्वोरष्ट षट् पादयोस्तथा ।
रविचक्रे क्रमेणैवमायुर्ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ २ ॥"

"रविना चक्रमां विद्वानोए आ प्रमाणे अनुक्रमे आयुष्य जाणवुं —मस्तक पर नक्षत्र होय तो सो वर्षनुं आयुष्य थाय, मुख अथवा स्कंध पर होय तो एंशी वर्ष, बाहु अथवा हाथमां होय तो ७७ वर्ष, हृदय अथवा नाभि पर होय तो ६८ वर्ष, गुह्ये होय तो ६० वर्ष, जानु पर होय तो ८ वर्ष अने पगमां होय तो ६ वर्षनुं आयुष्य जाणवुं."

हवे जातकर्मादिकने आश्रीने कहे छे —

स्याज्जातकर्म चरलघुमृदुध्रुवर्क्षेष्वमीषु नामापि ।
तच्चाविरुद्धमुभयोर्योनी १ गण २ राशि ३ तारका ४ वर्गैः ५ ॥१३॥

अर्थ—चर, लघु, मृदु अने ध्रुव नक्षत्रोमां जातकर्म करवुं नाम पण आ नक्षत्रोमां पाडवुं अने ते नाम बन्नेना (दंपतीना) योनि, गण, राशि, तारा अने वर्ग वडे अविरुद्ध पाडवुं.

जातकर्म करीने षष्ठीजागरणादिक पण आ चरादिक नक्षत्रोमां ज करवुं. ते नक्षत्रो पण शुभ चंद्रवडे युक्त लेवा अथवा ते नक्षत्रो उदयसमयना लेवा, अथवा ते नक्षत्रो संबंधी मुहूर्त्तमां कार्य करवुं. आ त्रण प्रकारमांथी पूर्व पूर्वने अभावे उत्तर प्रकार लेवो एटले के चंद्रबळ न होय तो उदयबळ लेवुं अने उदयबळ न होय मुहूर्त्त लेवुं. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—

"धिष्ण्यानां मौहूर्त्तिकमुदयास्तितरश्मियोगाच्च ।
अधिकबलं यथोत्तरमिति"

"नक्षत्रोनुं मुहूर्त्त बळवान् छे, ते करतां उदयबळ वधारे बळवान् छे अने ते पण चन्द्रबळ वधारे बळवान् छे एम उत्तरोत्तर वधारे बळवान् छे."

जो ते ज दिवसनुं नक्षत्र होय अने ते ज नक्षत्रना मुहूर्त्तमां कार्य कराय तो शुभ छे ते विषे शौनक कहे छे के—"नक्षत्रलक्षणाना बलमुक्तं द्विगुणितं स्वनक्षत्रे "मुहूर्त्तोनुं बळ पण नक्षत्रना जेटलुं ज कह्युं छे तेमां पण पोताना नक्षत्रमां बमणुं कह्युं ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं

ते बाळकनुं नाम पण दंपतीने अविरुद्ध करवुं. ते साथे गुरु शिष्य अने स्वामी विगेरेने पण अविरुद्ध समजवु

हवे अठ्यावीश नक्षत्रोनी योनि कहे छे.

उडूनां योन्योऽश्व १ द्विप २ पशु ३ भुजंगा ४ हि ५ शुनकौ ६-
स्व ७ जा ८ मार्जारा ९ खुद्वय १०, ११ वृष १२ मह १३ व्याघ्र १४ महिषाः १५।
तथा व्याघ्रै १६ णौ १७ ण १८ श्व १९ कपि २० नकुलद्वन्द्व २१, २२ कपयो २३
हरि २४ वाजी २५ दन्तावलरिपु २६ रजः २७ कुञ्जर २८ इति ॥ १८ ॥

अर्थ—अश्विनीथी आरंभीने नक्षत्रोनी योनि एटले उत्पत्तिस्थान अनुक्रमे आ प्रमाणे छे.—अश्व १, हाथी २, पशु (बकरो) ३, भुजंग (सर्प) ४, अहि (सर्प) ५, कूतरो ६, बिलाडो ७, बकरी ८, बिलाडो ९, पछी बे नक्षत्रोनी उंदर १०, ११, बळद १२, पाडो १३, वाघ १४, पाडो १५, व्याघ्र १६, मृग १७, मृग १८, कूतरो १९, वानर २०, पछी बे नक्षत्रोनी नोळीयो २१, २२, वानर २३, सिंह २४, घोडो २५, सिंह २६, बकरो २७ अने हाथी २८. गुरु, शिष्य अने दंपती विगेरेना योगने माटे पूर्वाचार्योए आ योनिनी कल्पना करी छे, पण सत्य नथी. ए प्रमाणे रत्नमाला भाष्यमां कहेल छे.

हवे योनिवैर कहे छे.

[श्वै]णं हरीभमहिबभ्रु पशुप्लवंगं, गोव्याघ्रमश्वमहमोतुकमूषिकं च ।
[ल]...त्तथाऽन्यदपि दम्पतिभर्तृभृत्ययोगेषु वैरमिह वर्ज्यमुदाहरन्ति ॥१९॥

अर्थ—कूतराने अने मृगने परस्पर वैर छे. ए ज रीते सिंह अने हाथी, सर्प अने नोळीयो, बकरो अने वानर, बळद अने वाघ, घोडो अने पाडो तथा बिलाडो अने उंदर, ए सर्वेने परस्पर वैर छे. आ सिवाय पण वाघ अने मृग, कूतरो अने बिलाडो इत्यादि लोकप्रचलित वेरो पण जाणवां. स्त्री पुरुष अने स्वामी सेवक विगेरेना योगमां [आ] वैर वर्जवानुं कह्युं छे. उपलक्षणथी गुरु शिष्य विगेरेमां पण वैर वर्जवुं. अर्थात् [ए]कनुं जन्मनक्षत्र अश्विनी होय तो कूतरानी योनि थइ, बीजाना जन्मनक्षत्रनी योनि [मृग]ा होय तो ते परस्पर वैर कहेवाय छे. व्यवहारप्रकाशमां विशेष आ प्रमाणे छे.—

"विहाय जन्मभं कार्ये नामभं न प्रमाणयेत् ।
जन्मभस्यापरिज्ञाने नामभस्य प्रमाणता ॥ १ ॥"

"कार्यमां जन्मना नक्षत्रनो त्याग करीने नामना नक्षत्रने प्रमाण करवुं नहीं, परंतु जन्मनक्षत्रनी खबर न होय तो नामना नक्षत्रने प्रमाण करवुं." तेमज

"द्वयोर्जन्मभयोर्मेलो द्वयोर्नामभयोस्तथा ।
जन्मनामभयोर्मेलो न कर्तव्यः कदाचन ॥ २ ॥"

"बन्नेनां जन्मनक्षत्रनो योग करवो, अथवा बन्नेनां नामनक्षत्रनो योग करवो

विचार करवो योग्य छे, केमके—"प्रभुरिह नवांशः" "अहीं नवांशो प्रभु-समर्थ छे" एम प्रथम कही गया छे.

जवाब—एम नथी, कारण के आ स्थळे पूर्वाचार्योए आ स्थूळ विचारने ज प्रमाणरूप मान्यो छे जो एम न होय तो कर्क संक्रांतिमां मकरना नवांशो पण आवे छे, तो ते नवांशोमां रहेला सूर्यने केम उत्तरायणनो नथी कहेता ? तथा विधान करेला नक्षत्रनो दिवसना भागमां अभाव होय त्यारे पण तेना उदयमां अथवा तेनां मुहूर्त्तोमां जेम जातकर्म, क्षौरकर्म विगेरे थाय छे तेम पाणिग्रहण (विवाह) पण केम नथी करातुं ? तेथी अहीं स्थूळनुं ज प्रमाणपणुं छे आथी करीने सूक्ष्म विचार अप्रमाण छे एम न जाणवुं,कारण के कह्युं छे के-

"भिन्नभिन्नफलभाग्भुवि भूयानेकधिष्ण्यदिनजोऽपि जनोऽयम् ।
सूक्ष्मतापि ननु तेन गरिष्ठा, किं तु मूलमनुरुध्य विधेया ॥ २ ॥"

"एक नक्षत्रमा, एक दिवसमा तथा एक ज लग्नमां पण उत्पन्न थयेला आ जीवो पृथ्वी पर भिन्न भिन्न फळने भोगवनारा घणा ज छे, तेथी करीने सूक्ष्मता पण मोटी (प्रमाणभूत) छे, परंतु मूळ (पूर्वाचार्योना प्रमाण) ने अनुसरीने ते सूक्ष्मतानो उपयोग करवो" लग्नमां नवांशो, द्वादशांशो, त्रिंशांशो, कळा, विकळा विगेरे उत्तरोत्तर सूक्ष्म होवाथी भिन्न भिन्न फळनो संभव छे. तेथी करीने—

अत्यन्तसूक्ष्मः स कलैकदेशो, येनाखिलानां भिदुरा फलर्द्धिः ।
नास्मादृशा दृग्विषयः स तस्मान्मूलानुकूला व्यवहारसिद्धिः ॥ ३ ॥

"ते कळानो एक विभाग अत्यंत सूक्ष्म छे के जे विभागे करीने सर्वनी फळसंपत्ति भेदवाळी छे-भिन्न भिन्न फळदायक छे, पण ते कळानो विभाग आपणी दृष्टिना विषयमां आवतो नथी, तेथी करीने मूळने अनुकूळ एटले पूर्वाचार्यना प्रमाणने अनुकूळ व्यवहारनी सिद्धि करवी." तेथी करीने जन्मादिकना लग्नमा कळा, विकळा सुधी विचार कराय छे. ते ज रीते पूर्वाचार्योए प्रमाण करेलुं छे. इत्यलं. ।

पडष्टकनी स्थापना

शत्रु षडष्टक	
६	८
वृष	धन
कर्क	कुंभ
कन्या	मेष
वृश्चिक	मिथुन
मकर	सिंह
मीन	तुला

प्रीति षडष्टक	
६	८
मेष	वृश्चिक
मिथुन	मकर
सिंह	मीन
तुला	वृष
धनु	कर्क
कुंभ	कन्या

मूळ श्लोकमां जे द्विद्वादश एटले बीजुं बारमुं कह्युं ते स्वभावथी ज दारिद्र्यकारक छे, तोपण ते दंपती विगेरेना राशिना स्वामीओनी जो परस्पर मैत्री होय अथवा उपलक्षणथी राशिना स्वामी एक ज होय, त्यारे द्विद्वादशक अत्यंत शुभ जाणवुं. जो बेमांथी एक स्वामी मध्यस्थ (उदासीन) होय अने बीजो मैत्रीवाळो होय तोपण द्विद्वादशक शुभ ज जाणवुं. अवशिष्ट एटले के जो राशिओना स्वामीओने परस्पर वैर होय अथवा एकनुं मध्यस्थपणुं अने बीजानुं वैरपणुं होय, अथवा बन्नेनुं मध्यस्थपणुं होय तो ते द्विद्वादशक अशुभ जाणवुं. ते विषे सारंग कहे छे के—

"प्रीतिरायुर्मिथो मैत्र्यां सुखं स्यात्सममित्रयोः ।
द्वयोः समत्वे न स्नेहो न सुखं समवैरिणोः ॥ १ ॥"

"राशिना बन्ने स्वामीने परस्पर मैत्री होय तो प्रीति तथा आयुष्य घणुं होय, एक मध्यस्थ अने एक मित्र होय तो सुख थाय, बन्ने मध्यस्थ होय तो प्रीति न होय, तथा एक सम अने एक वेरी होय तो सुख न होय."

द्विद्वादश (बीजुं बारमुं)नी स्थापना.

(१)

श्रेष्ठ द्विद्वादशक	
२	१२
मेष	मीन
मिथुन	वृष
सिंह	कर्क
तुला	कन्या
धनु	वृश्चिक
कुंभ	मकर

(२)

शुभ द्विद्वादशक.	
२	१२
कन्या	सिंह

(३)

अशुभ द्विद्वादशक	
२	१२
वृश्चिक	तुला
मकर	धनु
मीन	कुंभ
वृष	मेष

(४)

अशुभतर द्विद्वादशक	
२	१२
कर्क	मिथुन

आमांना पहेला यंत्रमां प्रथमनां पांच द्विद्वादशकमां ग्रहोने परस्पर मैत्री छे, अने छठ्ठामां बन्नेनो स्वामी एक ज छे. बीजा यंत्रमां एक राशिनो स्वामी मध्यस्थ छे अने बीजानो स्वामी मित्र छे, तेथी करीने आ बन्ने यंत्रो प्रीतिकारक छे. त्रीजा यंत्रमां चारेना स्वामीओ परस्पर मध्यस्थ छे. चोथा यंत्रमां एक मध्यस्थ छे अने बीजो वैरी छे अथवा "चंद्र अने बुधने परस्पर वैर छे" ए मत लइए तो बन्ने वैरी छे. तेथी करीने आ बन्ने यंत्रोनां पांचे बीया बारमां शत्रु छे. त्रिविक्रम पण कहे छे के—"सिंह राशि सिवाय बीजी सर्व विषम राशिथी बीजी राशि आवे एवां बीया बारमां अशुभ छे, अने सम

राशिथी तथा सिंह राशिथी बीजी राशि आवे एवां बीया बारमां आवे ते शुभ छे. केटलाएक कहे छे के—"नाडी विगेरे चारनी अनुकूळता होय तो परस्पर मध्यस्थपणावाळां बीया बारमां पण सारां छे." ते विषे सारंग कहे छे के—

"नाडी १ योनि २ गणा ३ स्तारा ४ चतुष्कं शुभदं यदि ।
तदौदास्येऽपि नाथानां भकूटं शुभदं मतम् ॥ १ ॥"

"जो नाडी, योनि, गण अने तारा, ए चार शुभ होय तो राशिना स्वामीओनुं उदासीनपणुं (मध्यस्थपणु) छतां पण राशिकूट शुभदायी मानेलुं छे." नाडी अने तारानुं स्वरूप आगळ कहेशे. "सिंहना बीया बारमा सिवाय बीजा सर्वे बीया बारमां अशुभ छे" एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

हवे राशिनुं नव पंचम कहे छे.—

श्रेयो मैत्र्यात्परे त्वाहुः कलिकृन्नवपञ्चमम् ।
एकऋक्षे च भिन्नांशे श्रेयः शेषेषु च द्वयोः ॥ २३ ॥

अर्थ—नव पंचम राशिना स्वामीओनी मैत्री होय तो शुभ छे, केटलाक कहे छे के क्लेशकारक छे एक राशिमा भिन्न अंशमा पण शुभ छे, अने बाकीनां । . बन्नेने शुभ छे.

"नव पंचम स्वभावथी ज क्लेशनो हेतु छे, तेमां विवाह थयो होय तो संततिने हानि करनार छे" एम व्यवहारसारमां कह्युं छे केटलाएक कहे छे के—बन्नेनी राशिओने परस्पर मैत्री होय ते नव पंचम शुभ छे, अने एकनी मैत्री तथा बीजानुं मध्यस्थपणुं होय तो ते मध्यम छे.

नव पंचमनी स्थापना

शुभ नव पंचम	
ए	ए
मेष	सिंह
वृष	कन्या
मिथुन	तुला
सिंह	धनु
तुला	कुंभ
वृश्चिक	मीन
धनु	मेष
मकर	वृष

मध्यम नव पंचम	
ए	ए
कुंभ	मिथुन
मीन	कर्क
कर्क	वृश्चिक
कन्या	मकर

विशेष ए छे जे प्रीति (शुभ) नवपंचमथी प्रीति बीया बारमुं श्रेष्ठ छे अने तेथी पण प्रीति षडष्टक सारुं छे. वळी नारचंद्र टिप्पणीमां कह्युं छे के—

"आसन्नस्तु वरो ग्राह्यो नासन्ना कन्यका पुनः ।
मृतैकमातापितरं संग्राह्यं नवपंचकम् ॥ १ ॥"

"आसन्न (नजीक)नो वर ग्रहण करवो, पण नजीकनी कन्या ग्रहण करवी नहीं, एटले के जो कन्यानी राशिथी गणतां वरनी राशि समीपे होय अने वरनी राशिथी गणतां कन्यानी राशि दूर होय तो नवपंचम विगेरे सर्व राशिकूट शुभ छे, पण कन्यानी राशिथी गणतां वरनी राशि दूर होय तो ते शुभ नथी. तोपण जो वर के कन्या बेमांथी एकनां माता पिता मरण पाम्यां होय तो नवपंचम शुभ ज छे."

मूळ श्लोकमां "एक ऋक्ष" कह्युं छे, त्यां ऋक्षनो अर्थ "राशि" एवो छे, तेथी जो बेउनी एक ज जन्मराशि होय तो नवांशना भेदथी ते शुभ छे, अने बेउनुं जन्मनक्षत्र एक होय तो ते शुभ नथी. त्रिविक्रम कहे छे के—

"एकर्क्षे जायते यत्र विवाहे वरकन्ययोः ।
मूलवेधस्तु स प्रोक्तो महादुष्टफलप्रदः ॥ १ ॥"

"जो विवाहमां वर कन्यानुं एक ज (जन्म) नक्षत्र होय तो ते मूळवेध कहेवाय छे, ते महा दुष्ट फळने आपनार छे." लल्ल पण कहे छे के—

"एकनक्षत्रजातानां परेषां प्रीतिरुत्तमा ।
दम्पत्योस्तु मृतिः पुत्रा भ्रातरो वार्थनाशकाः ॥ १ ॥"

"एक नक्षत्रमां उत्पन्न थयेला बीजाउने उत्तम प्रीति रहे छे, परंतु स्त्री पुरुषनी तो मृति (मरण) ज थाय छे. अथवा तेना पुत्रो अने भाइउ धननो नाश करनार थाय छे." तेमां पण एटले एक नक्षत्रमां पण पादनो भेद होय एटले जूदा जूदा पादमां जन्मेला होय तो ते शुभ ज छे, पण एक ज पादमां जन्म्या होय तो ते शुभ नथी. कह्युं छे के—

"नक्षत्रमेकं यदि भिन्नराश्योरभिन्नराश्योरपि भिन्नमृक्षम् ।
प्रीतिस्तदानीं निबिडा नृनार्योश्चेत्कृत्तिकारोहिणिवन्न नाडिः ॥ १ ॥"

"जो नक्षत्र एक होय अने राशि भिन्न होय, अथवा राशि एक होय अने नक्षत्र भिन्न होय तो ते स्त्री पुरुषने अत्यंत प्रीति रहे, परंतु कृत्तिका अने रोहिणी जेवी एक नाडी (नाडीवेध) न होवी जोइए. एटले के जेम कृत्तिका अने रोहिणीने नाडीवेध छे, तेवो नाडीवेध न होवो जोइए." तथा—

"नाग्निर्दहत्यात्मतनुं यथा वा द्रष्टा स्वदृष्टेर्न हि दर्शनीयः ।
एकांशकत्वे समतैव तद्वन्न भर्तृभार्याव्यवहारसिद्धिः ॥ २ ॥"

"जेम अग्नि पोताना देहने बाळतो नथी, अने जेम द्रष्टा पोतानी दृष्टिए जोवा लायक

नथी (पोतानी दृष्टिए पोताने जोइ शकतो नथी), तेम एक ज अंशमां जन्म्या होय तो समानपणुं थाय छे, माटे वर वहुना व्यवहारनी सिद्धि थइ शकती नथी." एक पाद छतां पण शुभ छे, एम केटलाक कहे छे—

"पराशरः स्माह नवांशभेदादेकर्क्षराश्योरपि सौमनस्यम् ।
एकांशकत्वेऽपि वसिष्ठशिष्यो नैकत्रपिण्डे किल नाडिवेधः ॥ ३ ॥"

"पराशर कहे छे के नवांशनो भेद होय तो एक नक्षत्र अने एक राशिमां पण प्रीति होय छे. वशिष्टनो शिष्य कहे छे के एक अंश होय तोपण एक शरीरमां अर्थात् एक नक्षत्रमां नाडीवेध अवश्य न होय."

मूळ श्लोकमां "शेषेषु च द्वयोः" एवु छे. तेमां शेष एटले वाकीना एटले के सातमे सातमे, दशमे चोथे, त्रीजे अगीयारमे राशिकूट होय तो ते श्रेष्ठ छे, कारण के आ स्थानोमां राशिओने ज परस्पर मैत्री छे, तेथी तेना स्वामीनी मैत्री विचारवानी नथी. ते विषे गदाधर कहे छे के—

"राशिकूटे शुभे लब्धे ग्रहमैत्रीं न चिन्तयेत् ।
अलाभे राशिकूटस्य ग्रहमैत्रीं तु चिन्तयेत् ॥ १ ॥"

"राशिकूट शुभ प्राप्त थयुं होय तो ग्रहनी मैत्री विचारवी नहीं, अने राशिकूट शुभ मळ्युं न होय तो ग्रहनी मैत्री विचारवी."

तेमां पण एटले सप्तम सप्तम विगेरेमां एक ज स्वामीपणुं होय तो अत्यंत श्रेष्ठ जाणवुं.

सर्वे वाकीनां राशिकूटोनी स्थापना.

शुभ तृतीयैकादश	
३	११
मेष	कुंभ
वृष	मीन
मिथुन	मेष
कर्क	वृष
सिंह	मिथुन
कन्या	कर्क
तुला	सिंह
वृश्चिक	कन्या
धन	तुला
मकर	वृश्चिक
कुंभ	धन
मीन	मकर

सप्तम सप्तम	
७	७
मेष	तुला
वृष	वृश्चिक
मिथुन	धन
कर्क	मकर
सिंह	कुंभ
कन्या	मीन

दशम चतुर्थ श्रेष्ठतर	
१०	४
वृष	कुंभ
कर्क	मेष
वृश्चिक	सिंह
मकर	तुला
कन्या	मिथुन
मीन	धन

दशम चतुर्थ श्रेष्ठ	
१०	४
मेष	मकर
मिथुन	मीन
सिंह	वृष
तुला	कर्क
धनु	कन्या
कुंभ	वृश्चिक

अहीं सप्तम सप्तममां तथा त्रण अगीयारमां स्वामीनी मैत्रीनी चिंता (विचार) करवानी नथी. दशम चतुर्थ (१०–४) मां तो पहेला चारमां मैत्री छे, अने छेल्ला बेमां एक ज स्वामी छे, तेथी ए छए राशिकूट अत्यंत श्रेष्ठ छे. बीजा दशम चतुर्थनां छए कूट स्वभावथी ज श्रेष्ठ छे.

तात्पर्य ए छे जे—प्रथम नक्षत्र योनि विगेरेनी शुद्धि बळवान् छे, तेनाथी राशिनुं वशपणुं बळवान् छे, तेनाथी पण राशिना स्वामी जे ग्रहो तेमनी मैत्री बळवान् छे, तेनाथी पण राशिओनी स्वाभाविक मैत्री बळवान् छे. ते विषे कह्युं छे के—

"स्वभावमैत्री १ सखिता स्वपत्यो २ र्वशित्व ३ मन्योन्यभयोनिशुद्धिः ४ ।
परः परः पूर्वगमे गवेष्यो हस्ते त्रिवर्गी युगपद्युतिश्चेत् ॥ १ ॥"

"राशिओनी स्वाभाविक मैत्री, तेमना स्वामीओनी मैत्री, तेमनुं वशवर्त्तिपणुं तथा परस्पर नक्षत्र योनिनी शुद्धि, पूर्व पूर्वना अभावे पर परनी गवेषणा करवी, यथा स्वाभाविक मैत्रीना अभावे तेमना स्वामीओनी मैत्री, तेना अभावे वशवर्त्तिपणुं इत्यादि; जो एक साथे स्वाभाविक मैत्री, तेमना स्वामीओनी मैत्री आदि होय तो धर्म, अर्थ अने काम त्रणे वर्ग तेना हाथमां जाणवा, परंतु तारामैत्री अने नाडीवेध शुद्धि तो सर्वत्र जोवानी ज छे. केटलाएक नवीन गाममां वसवा माटे आ प्रमाणे कहे छे.—

"जन्मराशिस्थितो ग्रामस्त्रिषष्ठः सप्तमोऽपि वा ।
स्वकीयो द्रव्यनाशाय आपदा च पदे पदे ॥ १ ॥
चतुर्थोऽष्टमको ग्रामो द्वादशो यदि वा भवेत् ।
यत्रैवोत्पद्यते अर्थस्तत्रैवार्थो विलीयते ॥ २ ॥
पञ्चमो नवमो ग्रामो द्वितीयो यदि वा भवेत् ।
दशमैकादशश्चैव शुभदः स फलप्रदः ॥ ३ ॥"

"पोतानी जन्मराशिमां रहेल ग्राम तथा जन्मराशिथी त्रीजे, छठे के सातमे होय तो द्रव्यनो नाश थाय तथा डगले डगले आपत्ति प्राप्त थाय. जन्मराशिथी चोथे, आठमे के बारमे जो होय तो अर्थ ज्यां पेदा थाय त्यांज नाश पामे. नवमे, बीजे, दशमे के अगीयारमे शुभकारी फळनो आपनार छे.

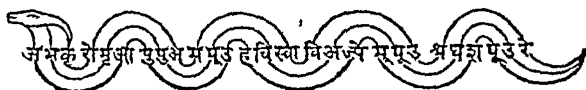
हवे ताराओ कहेवी छे. तेमां प्रथम तेनी साथे संबंध होवाथी नाडीवेध कहे छे.

चक्रे त्रिनाडिके धिष्ण्यमेकनाडिगतं शुभम् ।
गुरुशिष्यवयस्यादेर्न वधूवरयोः पुनः ॥ २५ ॥

अर्थ—त्रण नाडीवाळा चक्रमां एक नाडीमां रहेलुं नक्षत्र होय ते गुरु शिष्यने तथा

मित्रादिकने आदि शब्दथी स्वामी भृत्यादिक सर्व द्वंद्वोने शुभकारी छे, परंतु वहु वरने शुभ नथी, एटले के जेउनां जन्मनक्षत्रो अथवा नामनक्षत्रो एक नाडीमां रह्या होय तो ते नाडीवेध कहेवाय छे, अने भिन्न भिन्न नाडीमा रह्या होय तो नाडीवेध नथी एम जाणवुं,

त्रिनाडी चक्र स्थापना—



दंपतीना संबंधमां आ नाडीवेध शुभ नथी. ते विषे हर्षप्रकाशमां कह्युं छे के—

"सुअसुहिसेवयसिस्साघरपुरदेस सुह एगनाडी आ ।
कन्ना पुण परिणीआ हणइ पइं ससुरं (च) सासुं च ॥ १ ॥"

"पुत्र, मित्र, सेवक, शिष्य, घर, नगर अने देश, ए सर्वे एक नाडीमां एटले नाडीवेधमां होय तो श्रेष्ठ छे, परंतु एक नाडीमां रहेली कन्या जो परणी होय तो ते पतिने, ससराने तथा सासुने हणे छे." विशेष ए छे जे—"पुत्र, मित्रादिकने नाडीवेध होय तो विरुद्ध योनिवाळा नक्षत्रनो योग पण अशुभ नथी."

वर वहुने नाडीवेध होय तो तेनुं फळ आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"हृन्नाडिवेधतो भर्तुर्मध्यनाडीव्यधे द्वयोः ।
पृष्ठनाडीव्यधे नार्या मृत्युः स्यान्नात्र संशयः ॥ १ ॥
समासन्ने व्यधे शीघ्रं दूरवेधे चिरेण च ।
वेधान्तरभमानेऽत्र वर्षे दुष्टं प्रजायते ॥ २ ॥"

"हृदयनी नाडीनो (पहेला नक्षत्रनी नाडीनो) वेध होय तो पतिनुं मरण थाय छे, मध्य (बीजी) नाडीनो वेध होय तो बन्नेनुं मरण अने पृष्ठनी (त्रीजी) नाडीनो वेध होय तो स्त्रीनु मरण थाय छे. आ वात निःसंदेह छे तेमा पण पासेनो वेध होय तो शीघ्रताथी अशुभ थाय छे, दूर वेध होय तो चिरकाळे अने वचमा वेध होय तो नक्षत्रनी संख्या प्रमाणे (तेटले) वर्षे अशुभ थाय छे."

कदाच नक्षत्रवेधनो त्याग न थइ शके तो पादवेधनो अवश्य त्याग करवो. ते विषे नरपतिजयचर्यामां कह्युं छे के—

"एतच्चक्रं समालिख्य अश्विन्याद्यंह्रिपंक्तितः ।
वेधो द्वादशनाडीभिः कर्तव्यः पतिकन्ययोः ॥ १ ॥

एवं निरन्तरो येषां दम्पतीनां भवेद्वेधः ।
तेषां मृत्युर्न संदेहः सान्तरस्त्वल्पदुःखदः ॥ २ ॥ ”

“अश्विनीना पहेला पादनी पंक्तिथी आरंभीने चार नाडी (रेखा) ए करीने आ चक्र आलेखवुं, तेमां वर वहुनो वेध जोवो. तेमां जे दंपतीनो वेध आंतरारहित होय तो अवश्य तेमनुं मृत्यु थाय अने जो आंतरा सहित एटले दूर होय तो अल्प दुःखदायी थाय.”

वळी ते ज ग्रंथमां “दंपतीनी जेम देवता, मंत्र तथा गुरु शिष्यना योगमां पण नाडीवेध अशुभ छे,” एम कह्युं छे. ते आ प्रमाणे.—

“एकनाडीस्थिता यत्र गुरुर्मंत्रश्च देवता ।
तत्र द्वेषं रुजं मृत्युं क्रमेण फलमादिशेत् ॥ १ ॥”

“ज्यां गुरु, मंत्र अने देवता एक नाडीमां रह्या होय त्यां अनुक्रमे द्वेष, व्याधि अने मृत्युरूप फळने कहेवुं.”

प्रथम कहेला सर्वे मैत्रीना प्रकारोमां आ नाडीवेध बळवान् छे. ते विषे कह्युं छे के—

“सदा नाशयत्येकनाडीसमाजो भकूटादिकान् सर्वभेदान् प्रशस्तान्” ।

“नक्षत्र, (राशि) कूट विगेरे सर्व शुभ भेदोनो एक नाडीवेध ज नाश करे छे.”

हवे तारामैत्री कहे छे.—

द्वयेषु गुरुशिष्यादेः प्रीतिहेतोः परस्परम् ।
त्रिपञ्चसप्तमीं तारां सर्वत्र परिवर्जयेत् ॥ २५ ॥

अर्थ—परस्पर प्रीतिना हेतुरूप गुरु शिष्यादिकनां द्वयोने परस्पर त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा सर्वत्र वर्जवी. एटले के बेमांथी एकनी पण तारा त्रीजी, पांचमी के सातमी होय तो तेमनी तेवी (सारी) प्रीति थती नथी. (नव नव तारानी त्रण हारी प्रथम कही छे ते अहीं जाणवी.)

तेमां पण विशेषे करीने गुरु, वर, राजादिक स्वामी विगेरेनी तारा त्रीजी, पांचमी के सातमी न ज होवी जोइए. कह्युं छे के—

“भीरुभादचल ७ पञ्च ५ तृतीया ३ शोकवैरविपदे वरताराः” ।

“स्त्रीना नक्षत्रथी वरनी तारा सातमी, पांचमी के त्रीजी होय तो ते अनुक्रमे शोक, वैर अने विपत्तिने माटे छे.”

आ तारामैत्रीनुं प्रधानपणुं छे. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

“पुंस्त्रीराशीशयोर्मैत्र्यामेकेशत्वे च वश्यभे ।
षडष्टमादिष्वपि स्यात्तारामैत्र्या करग्रहः ॥ १ ॥”

“वर कन्यानी राशिना स्वामीओनी मैत्री छतां, अथवा तेमनुं एक स्वामीपणुं छतां,

तथा वश्यपणुं छतां, तेमज षडष्टक विगेरे छतां पण तारामैत्रीए करीने पाणिग्रहण करवामां आवे छे."

हवे वर्गमैत्री कहे छे.—

चत्वारोऽकचटा वर्गाः क्रमात्तपयशास्तथा ।
यत्नतो वर्जनीयाः स्युरितरेतरपञ्चमाः ॥ २६ ॥

अर्थ—अकारादिक स्वरोनो अ वर्ग, कादि पांचनो क वर्ग, च विगेरे पांचनो च वर्ग, ए रीते ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग, यरलवनो य वर्ग, तथा शषसहनो श वर्ग एम आठ वर्ग जाणवा. आ वर्गोमांथी परस्पर पांचमो पांचमो वर्ग यत्नथी वर्जवा योग्य छे. एटले के वर वहु विगेरेना नामना पहेला पहेला अक्षर जे जे वर्गमा आवता होय ते वर्ग एक बीजाथी पाचमो होय तो तेमना स्वामीउनु जातिवैर होवाथी ते तजवा योग्य छे.

वर्गना स्वामीउ हर्षप्रकाशमा आ प्रमाणे कहेला छे.—

"वैनतेयौ १ तु २ सिंह ३ श्वा ४ऽहि ५ मूषक ६ मृगो ७ रणाः ८ ।
क्रमादकचटादीना स्वामिनोऽमी स्मृता बुधैः ॥ १ ॥"

"अ, क, च विगेरे आठे वर्गोना स्वामी अनुक्रमे गरुड १, बिलाडो २, सिंह ३, कूतरो ४, सर्प ५, उंदर ६, मृग ७ अने घेटो ८, आ प्रमाणे पंडितोए कहेला छे. आमा दरेकथी पाचमा पांचमा साथे वैर छे."

विशेष ए छे जे—योनि १, गण २, राशि ३, ताराशुद्धि ४ अने नाडीवेध ५, आ पाच बाबतो जन्मनक्षत्रनी खबर होय तो ते जन्मनक्षत्रे करीने ज जोवी. खबर न होय तो नामना नक्षत्रवडे जोवी, पण वर्गमैत्री अने लेणादेणी तो प्रसिद्ध नामना नक्षत्रे करीने ज जोवी.

वर्ग कहेवानी साथे संबंध होवाथी परस्पर लेणादेणी जाणवानी रीत बतावे छे.—

नामादिवर्गांकमथैकवर्गे, वर्णांकमेव क्रमतोऽक्रमाच्च ।
न्यस्योभयोरष्टहृतावशिष्टेऽर्धिते विशोपाः प्रथमेन देयाः ॥ २७ ॥

अर्थ—बेउना नामना आदि अक्षरवाळा वर्गना अंक (संख्या) ने अथवा एक ज वर्गना होय तो ते नामना पहेला अक्षरोनी संख्याने जोडे जोडे मूकवी पछी तेने आठे भागी जे अवशेष रहे तेनुं अर्ध करवुं. जे आवे तेटला वसा पहेला अंकना वर्गवाळो बीजा वर्गनो देवादार छे एम जाणवुं. ए रीते क्रम अने उत्क्रमवडे जेम घटे तेम लेणुं अने देणुं यथायोग्य वाळवुं, अने बाकीनुं देणुं निश्चित करवुं, अने जो परस्पर लेणुं के देणु न आवे तो बेमांथी एकने जेने आवे तेनो निर्णय करवो.

उदाहरण—कणाद गुरु अने वल्मीक शिष्य छे. तेमना नामना वर्गनी संख्या

क्रमे मूकी त्यारे २७ सत्यावीश थया. तेने आठे जाग लेतां त्रण शेष रह्या, तेने अर्ध कर्या त्यारे दोढ रह्यो, माटे कणाद गुरु वल्मीकनो दोढ वसानो देवादार थयो. हवे (कणाद वल्मीक पासे केटलुं मागे ते जाणवा माटे) ते ज आंकने उत्क्रमे मूकतां ७२ बोंतेर थया, तेने आठे जाग लेतां कांइ पण शेष रह्युं नहीं, तेथी वल्मीक गुरुनो कांइ पण देवादार न थयो, परंतु गुरु ज शिष्यनो देवादार थयो. आ योगनिधान ग्रंथमां कहेलुं उदाहरण कह्युं छे. हवे बीजुं उदाहरण आपीए छीए.—आदिनाथ अने श्रीदत्तना वर्गना अंक मूकवाथी १८ अढार थया. तेने आठे जाग लेतां बे वध्या, तेनुं अर्ध करतां एक आव्यो. तेथी एक वसो आदिनाथ श्रीदत्तना देवादार थया. हवे ते ज अंको उत्क्रमे स्थापवाथी ८१ थया. आठे जाग्या त्यारे एक अवशेष रह्यो. तेने अर्ध करवाथी अर्ध आव्यो, तेथी श्रीदत्त आदिनाथनो अर्धो वसो देवादार थयो. परस्पर लेणदेण वाळवाथी बाकीनो अर्धो वसो आदिनाथ श्रीदत्तना देवादार थया. ए निर्णय थयो. ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. "देवा लेवामां सहेलुं पमे माटे लेणादेणी थोमी होय ते सारी," एम नारचंद्र टिप्पणमां कह्युं छे.

अहीं गर्गाचार्ये कहेलो संग्रह श्लोक आ प्रमाणे छे.—

"राशि १ ग्रहमैत्री २ गण ३, योनी ४ तारै ५ कनाथता ६ वश्यम् ७ ।
स्त्रीदूर ८ नाडियुति ९ वर्ग १० लभ्य ११ वर्ण १२ युजयो १३ द्वयेपूह्याः ॥१॥"

"गुरु शिष्य, वर वहु विगेरे द्वंद्वोमां राशि १, ग्रहमैत्री २, गण ३, योनि ४, तारा ५, एक स्वामीपणुं ६, वश्यपणुं ७, स्त्रीदूर ८, नाडीवेध ९, वर्ग १०, लेणादेणी ११, वर्ण १२ अने युजि १३, आटली १३ बाबतो जोवी. जावार्थ आ प्रमाणे जाणवो.—बेउनी राशिउनी स्वाजाविक मैत्री त्रण अगीयार, दश चार अने सप्त सप्तममां (राशि-कूटमां) जोवी. ग्रहमैत्री, प्रीति षडष्टक, प्रीति द्विद्वादशम अने प्रीति नवपंचममां जोवी. तथा गण, योनि, तारा, एक स्वामीपणुं, नाडीवेध, वर्ग अने लेणादेणी, ए सर्वे कही दीधा छे माटे स्फुट छे. वश्यपणुं आगळ कहेशे. स्त्रीदूर एटले वहुनी राशि वरनी राशिथी दूर होय तो सारी अर्थात् वहुनी राशिथी वरनी राशि पासे होय तो सारी-वर्ण एटले मीनथी आरंजीने चार चार राशिना त्रण विजाग करवा. तेमां दरेक विजागमां अनुक्रमे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्र वर्ण जाणवा. एटले के मीन ब्राह्मण, मेष क्षत्रिय, वृष वैश्य अने मिथुन शूद्र ए रीते कर्क ब्राह्मण विगेरे. आ वर्णविजाग सारावळीमां कह्यो छे. तेनुं फळ आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"यत्र वर्णाधिका नारी तत्र जर्त्ता न जीवति ।
यदि जीवति जर्त्ता स्यात्तदा पुत्रो न जीवति ॥ १ ॥"

"जे दंपमां नारी ऊंचा वर्णवाळी होय, ते दंपमां पति जीवे नहीं. जो कदाच पति जीवे तो पुत्र न ज जीवे," एम महादेव कहे छे."

युजि पण पूर्वे "पूर्वार्द्ध योगीमां परणेली स्त्रीने तेनो भर्त्ता अत्यंत वह्लभ थाय छे." ए विगेरे कहेलुं छे."

विशेष ए छे जे जिनबिंब करावनार धनिकने अनुकूळ प्रतिमा स्थापवामां तथा शिष्यनुं नाम पाडवामां मुनिजेए नक्षत्रनी योनि विगेरेनो विशेष उपयोग करवो. तेमां शिष्यना नाममां नाडीवेध श्रेष्ठ छे ते जिनेश्वरना नाममां तजवा योग्य ज छे, अने तारानो विरोध प्राये करीने जिनबिंबना अधिकारमां विचारवानो नथी. कह्युं छे के—

"योनि १ गण २ राशिभेदा ३ लभ्यं ४ वर्गश्च ५ नाडिवेधश्च ६ ।
नूतनबिंबविधाने षड्विधमेतद्विलोक्यं ज्ञैः ॥ १ ॥"

"योनि १, गण २, राशिभेद, ३, लेणादेणी ४, वर्ग ५ अने नाडीवेध ६, आ छ प्रकारनुं बळ पंडितोए नवीन जिनबिंब कराववामां जोवुं."

तेमां जिनेश्वरना जन्मनक्षत्रनी जेम जे धनिकना जन्मनक्षत्रनी खबर होय तेना जन्मनक्षत्र साथे योनि, गण, राशि अने नाडीवेध, आ चार बाबत जोवी, पण वर्ग अने लेणादेणी ए बे बाबत जोवी नहीं, केमके वर्गनुं परस्पर पांचमापणुं तथा परस्पर लेणादेणी ए बेउ बाबत जिनेश्वरनी ज जेम ते धनिकने पण प्रसिद्ध नामवडे ज ..ेप छे आ रीत सर्वत्र लेवी, परंतु जन्मनक्षत्रनी खबर न होय तो तेनी योनि विगेरे सर्व प्रसिद्ध एवा नामना ज नक्षत्रवडे जोवु . तेमां प्रथम तो जिनेश्वर तथा धनिकनुं योनि, गण अने वर्ग संबंधी परस्पर वैर अवश्य तजवुं. अथवा वैर छतां पण धनिकनी योनि विगेरे जो देवनी योनि विगेरेथी बळवान् होय तो ग्रहण करवामां हरकत नथी एटले के अल्प बळवानवडे वधारे बळवाननो पराभव थइ शकतो नथी. आ अभिप्राये करीने धनिकनी योनि बिलाडो (बळवान्) होय अने देवनी योनि उंदर (निर्बळ) होय, एटलाथी कांइ दोष नथी, अने जातिवैर न होय तो धनिकना योनि अने वर्ग अल्प बळवाळां होय तो- पण कांइ विशेष दोष नथी, कारण के शास्त्रमा योनि अने वर्गनां जातिवैरने ज वर्ज्य छे लोकमा पण ते ज प्रमाणे आदरवामां आवे छे: तथा जेमां देवनी राशिथी धनिकनी राशि समीपे होय, अने धनिकनी राशिथी देवनी राशि दूर होय एवुं प्रीति षडष्टक विगेरे ग्रहण करवुं. ते सिवाय बीजुं एटले अप्रीतिवाळुं ग्रहण न करवुं तथा तेवा प्रकारनु बीजुं कोइ शुद्ध न मळे तो ते पण एटले अप्रीतिवाळुं पण ग्रहण करवुं देव राक्षसरूपी गणवैर पण ए ज रीते जाणवु, केमके लोकमां पण वर कन्यादिकना संबंधमां बीजी अभावे देव राक्षसरूप गणवैर पण आदर करातुं जोवामां आवे छे

नाम पाडवामां तो गुरु शिष्यनो परस्पर ताराविरोध तथा शत्रु षडष्टक विगेरे सर्व (राशिकूटना) अशुभनो त्याग करवो. योनिनो विरोध पण तजवो, परंतु नाडीवेध होय तो आ योनिविरोध अशुभ नथी. ते विषे हर्षप्रकाशमां कह्युं छे के—

"दुबारस नवपंचम छक्कडग तिपणसत्तमी तारा ।
अन्नुन्नं गुरुसीसाणं नामकरणे विवज्जिज्जा ॥ १ ॥
गुरुसीसाण करिज्जा नामं न विरुद्धजोणिए रिक्खे ।
जइ हुज्ज न तं रिक्खं आरूढं एगनाडीए ॥ २ ॥"

"नाम करवामां गुरु शिष्यनुं परस्पर बीया बारमुं, नवपंचम, षडष्टक तथा त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा, आटलां वानां वर्जवां. गुरु शिष्यना परस्पर विरुद्ध योनिवाळा नक्षत्रमां नाम करवुं नहीं, परंतु जो ते नक्षत्र एक नाडी पर आरूढ थयुं न होय तो-नाडीवेधमां न होय तो अर्थात् नाडीवेधमां ते नक्षत्र होय तो विरुद्ध योनिवाळा नक्षत्रनो दोष नथी."

गण अने वर्गनो विरोध तो तजवा योग्य ज छे. लेणादेणी पण परस्पर जोवा योग्य छे. परस्परनी राशिमैत्री विगेरेनो अभाव होय तो राशिनुं वश्यपणुं ग्रहण करवुं, केमके वश्यपणुं होवाथी शत्रु षडष्टकादिकनो पण विशेष दोष संभवतो नथी. पुत्र विगेरेना नामने विषे पण प्राये सर्व बाबत शिष्यना नाम प्रमाणे ज जाणवी. पूर्णभद्र पण कहे छे के—

"जीवेन्द्वर्केषु बलिषु त्रिषु गोचरशुद्धितः ।
नामप्रथमवर्णस्य नृणां नाम विधीयते ॥ १ ॥"

"पहेला अक्षरनी गोचरशुद्धिथी गुरु, चंद्र अने सूर्य ए त्रण बळवान् होय त्यारे माणसनुं नाम करवामां आवे छे. भावार्थ ए छे जे—नाम पाडनार आचार्यादिकने जेटला वर्णो (अक्षरो) मैत्रीने भजनारा छे, ते वर्णोमांथी जे वर्णना गुरु, चंद्र अने सूर्य गोचरशुद्धिवडे बळवान् होय, ते वर्णने प्रथम (नामनी आदिमां) राखीने इष्ट (शुभ) दिवसे शिष्यादिकनुं नाम पाडवुं."

हवे कर्णवेधनुं मुहूर्त्त कहे छे.

कर्णवेधोऽह्नि सौम्यस्य मार्गे मैत्र्ये श्रुतिद्वये ।
हस्तचित्रोत्तरा ३ पौष्णाश्विनादित्यद्वये शुभः ॥ २८ ॥

अर्थ—बुधवारे दिवसमां मृगशीर्ष, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, त्रणे उत्तरा, रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु अने पुष्य नक्षत्रमां कर्णवेध करवो शुभ छे. गुरुवारे पण करवानुं व्यवहारसारमां कह्युं छे.

"दक्खिणदिसि मुत्तु गमं दिरक पइहा गमागमाइकयं ।
जं तं सव्वं सुहयं अभिजिमुहुत्तंमि अहमए ॥ ५ ॥"

"आ पंदरे मुहूर्त्तो (क्षणो)मां दक्षिण दिशाना गमन (प्रयाण)ने मूकीने बाकीनां दीक्षा, प्रतिष्ठा अने गमन आगमन विगेरे सर्व कार्य आठमा अभिजित् मुहूर्त्तमां शुभकारी छे." कह्युं छे के—

"उप्पायविट्ठि वइवायदड्ढतिहि पावगह विहिअदोसे ।
मज्झण्हगओ सूरो सव्वे ववणीय सुरककरो ॥ ६ ॥"

"उत्पात, विष्टि, व्यतिपात, दग्ध तिथि तथा पाप ग्रहोथी थयेल सर्वे दोषोने दूर करीने मध्याह्नकाळनो सूर्य सुखकारक छे" आ प्रमाणे हर्षप्रकाशमा छे

पूर्णभद्र पण कहे छे के—

"ग्रसते ग्रहचक्रमसौ रविरुदये यावदेव यामयुगम् ।
उद्वमति वमनकाले वान्तं तद्विह्वलीभवति ॥ १ ॥"

"आ रवि (सूर्य) उदयसमये बे प्रहर सुधी ग्रहोना समूहने गळे छे अने पछी वमनकाळे तेमने वमे छे, अने वमेलु एवुं ते ग्रहचक्र विह्वळ थाय छे. अर्थात् मध्याह्न समये विह्वळ थाय छे."

"विह्वलतामुपगतवति तस्मिन् विजयाह्वयो भवति योगः ।
यस्मिन् विहितं कार्यं न चलति कथमपि युगान्तेऽपि ॥ २ ॥"

"ज्यारे ते ग्रहचक्र विह्वळताने पामे छे त्यारे विजय नामनो योग थाय छे तेमां करेलुं कार्य युगना अंतमां पण कोइ पण प्रकारे चळतु नथी."

लल्ल पण कहे छे के—

"रवौ गगनमध्यस्थे मुहूर्त्तेऽभिजिदाह्वये ।
छिनत्ति सकलान् दोषाँश्चक्रमादाय माधवः ॥ १ ॥"

"रवि गगनना मध्य भागमा रह्यो होय त्यारे अभिजित् नामनुं मुहूर्त्त कहेवाय छे, ते वखते माधव (कृष्ण) चक्र लइने सर्व दोषोने हणे छे"

आ विजय मुहूर्त्त माटे केटलाएक आ प्रमाणे कहे छे —

"दुपहरघडिआऊणे दुपहरघडिएगअहिअ मज्झण्हे ।
विजय नाम मुहुत्तं पसाहगं सव्वकज्जाणं ॥ १ ॥"

"मध्याह्नसमये बे प्रहरमा एक घडी ओछी होय त्यारे तथा पछीना बे प्रहरनी एक घडी अधिक (अर्थात् मध्याह्न पछीना बे प्रहरमांनी पहेली एक घडी अने पछीनी एक घडी) कुल आ बे घडीनुं विजय नामे मुहूर्त्त कहेवाय छे, ते सर्व कार्यने साधे छे."

सायंकाळनी संध्याना समये पण विजय योग थाय छे. ते विषे हर्षप्रकाशमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"ईसिसंझामइक्कंतो किंचि उन्भिन्नताराउ ।
विजउ नाम जोगोऽयं सव्वकज्जप्पसाहउ ॥ १ ॥"

"कांइक संध्याने उल्लंघन करी गयेलो तथा कांइक ताराउ जेमां उत्पन्न थया छे एवो जे समय ते विजय नामनो योग कहेवाय छे. ते सर्व कार्यने साधे छे."

लग्ने प्रातःकाळनी संध्यामां पण यात्रा करवानुं इच्छ्युं छे. कह्युं छे के—

"आवश्यके तथा याने सौम्येऽस्ते निधनेऽपि वा ।
व्रजेदर्कोदये वाऽपि मध्याह्ने वाऽविशंकितः ॥ १ ॥"

"तथा अवश्य यात्रा (प्रयाण) करवानी होय तो सूर्योदयसमये अथवा मध्याह्न-समये तात्काळिक लग्नकुंरूळीमां सातमे अथवा आठमे स्थाने सौम्य ग्रह रह्यो होय तो-पण निःशंकपणे प्रयाण करवुं."

प्रातःकाळनी संध्यानी "उषा" अने "त्रितार" एवी पण संज्ञा छे. ते विषे पूर्णभद्र कहे छे के—

"उषाभिधानं वरयोगमेवं, त्रितारमाहुर्मुनिवृन्दवन्द्याः ।"

"मुनिउना समूहने पण वांदवा योग्य एवा महात्माउ उषा नामना श्रेष्ठ योगने त्रितार नामे पण कहे छे." वळी—"उषां प्रशंसयेद्गर्गः" "गर्ग कहे छे के उषा योग प्रशस्त छे."

आ सर्वे वचनोनुं तात्पर्य ए थयुं के त्रणे संध्याउ प्रशस्त छे. तथा—

"रात्रावार्द्रा १ तथैवाष्टौ पूर्वभद्रपदादयः ९ ।
आदित्य १० पुष्य ११ श्रुतयो १२ हस्ताद्याश्च त्रयः १५ क्रमात् ॥ १ ॥"

"रात्रिए अनुक्रमे पंदर क्षणो (मुहूर्त्तो) आ प्रमाणे जाणवा—आर्द्रा १, पूर्वाभाद्र-पदथी आठ एटले पूर्वाभाद्रपद २, उत्तराभाद्रपद ३, रेवती ४, अश्विनी ५, भरणी ६, कृत्तिका ७, रोहिणी ८, अने मृगशीर्ष ९, आदित्य (पुनर्वसु) १०, पुष्य ११, श्रवण १२, हस्तादिक त्रण एटले हस्त १३, चित्रा १४ अने स्वाति १५."

"यस्मिन् धिष्ण्ये यच्च कर्मोपदिष्टं, तद्दैवज्ञैस्तन्मुहूर्त्तेऽपि कार्यम् ।
दिक्शूलाद्यं चिन्तनीयं समस्तं, तद्वद्भैः पारिघश्च क्षणेषु ॥ २ ॥"

"जे नक्षत्रमां जे कार्य करवानुं कह्युं छे, ते कार्यने ज्योतिषना जाणनाराउए ते मुहू-र्त्तमां पण करवुं, परंतु ते मुहूर्त्तोमां पण नक्षत्रनी ज जेम दिक्शूळ विगेरे एटले नक्षत्र दिक्शूळ अने कीला विगेरे कहेवामां आवशे ते सर्वनो विचार करवो. एटले के जे दिशामां ते दिक्शूळादिक उत्पन्न थयुं होय ते दिशामां प्रयाण न करवुं. तथा चर, स्थिर

विगेरे नक्षत्रना सात प्रकारो कह्या छे ते आ नक्षत्र संबंधी क्षणने विषे पण इष्ट कार्यने अनुसरीने विचारवा. तथा परिघदंड के जे आगळ कहेवामां आवशे ते पण नक्षत्रनी ज जेम विचारीने यात्रादिक कार्य करवां." आ प्रमाणे रत्नमाळा भाष्यमां कह्युं छे.

पौराणिक क्षणोनां नामो तो आ प्रमाणे कहेलां छे —

"रौद्रः १ श्वेतो २ मैत्र ३ श्चारभटः ४ पञ्चमस्तु सावित्रः ५ ।
वैराजो ६ गान्धर्व ७ स्तथाभिजि ८ द्रोहिण ९ वलौ १० च ॥ १ ॥
विजयो ११ऽथ नैर्ऋताख्यो १२ माहेन्द्रो १३ वारुणो १४ भगश्चैव १५ ।
एते पुराणकथिता दिवसमुहूर्त्तास्तथाभिजित्कुतपः ॥ २ ॥
अभिजि १ द्विजयो २ मैत्रः ३ सावित्रो ४ बलवान् ५ सितः ६ ।
वैराजश्चेति ७ सप्त स्युः क्षणाः सर्वार्थसाधकाः ॥ ३ ॥'

"पुराणमां कहेला दिवसना क्षणोना नामो आ प्रमाणे छे.—रौद्र १, श्वेत २, मैत्र ३, चारभट ४, पांचमो सावित्र ५, वैराज ६, गाधर्व ७, अभिजित् ८, रोहिण ९, वल १०, विजय ११, निर्ऋत १२, माहेंद्र १३, वारुण १४ अने भग १५ तथा अभिजित् कुतप एटले आठमुं मुहूर्त छे आ सर्वे क्षणोमा अभिजित् १, विजय २, मैत्र ३, सावित्र ४, बळवान् (बळ) ५, सित (श्वेत) ६ अने विराज ७, ए सात क्षणो सर्वे कार्यना साधक छे."

"रौद्रो १ गन्धर्वो २ ऽर्यप ३ श्चारणाख्यो ४,
वायु ५ र्वह्नी ६ राक्षसो ७ धातृ ८ सौम्यौ ९ ।
ब्रह्मा १० जीवः ११ पौष्ण १२ विष्णू १३ समीरो १४,
रात्रावेते नैर्ऋताख्यः १५ क्षणोऽन्य. ॥ ४ ॥"

"रात्रिना क्षणो अनुक्रमे आ प्रमाणे छे —रौद्र १, गंधर्व २, अर्यप ३, चारण वायु ५, वह्नि ६, राक्षस ७, धाता ८, सौम्य ९, ब्रह्मा १०, जीव ११, पौष्ण १२, [illegible] १३, समीर १४ अने नैर्ऋत १५" आ प्रमाणे बहु उपयोगी होवाथी क्षणनो [illegible] विस्तारथी कह्यो

प्रथमनुं अने पछीना पण क्षौरने आश्रीने वर्ज्य वखत कहे छे —

अभ्यक्तस्नाताशितभूषितयात्रारणोन्मुखैः क्षौरम् ।
विद्यादिनिशासन्ध्यापर्वसु नवमेऽह्नि च न कार्यम् ॥ ३२ ॥

अर्थ—अभ्यजन (तैलमर्दन विगेरे) करेलुं होय, स्नान करेलुं होय, भोजन [illegible] होय, आभूषण पहेर्या होय, तथा यात्रामां अने रणसंग्राममा तैयार थयो होय, [illegible] क्षौर करावबुं नहीं. तथा विद्यारंभने दिवसे, रात्रिसमये, त्रणे सन्ध्या

दीवाळी विगेरे पर्व दिवसे तथा नवमे दिवसे एटले पूर्वे क्षौर कराव्युं होय ते दिवसथी गणतां नवमे दिवसे क्षौर करावचुं नहीं. अहीं "नवम" शब्दे करीने नोम तिथिनो अर्थ करवो नहीं, कारण के नोम रिक्ता तिथि छे अने रिक्ता तिथिनुं वर्जन तो प्रथम कही गया छे, तेथी जे दिवसे पूर्वे क्षौर कराव्युं होय ते दिवसथी गणतां जे नवमो दिवस आवे ते दिवसे बीजी वारनुं क्षौर करावचुं नहीं. आ नवमा दिवसनो निषेध केवळ क्षौरमां ज छे एम नथी, परंतु गृहप्रवेशादिकमां पण नवमा दिवसनो निषेध छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"निर्गमान्नवमे चाह्नि प्रवेशं परिवर्जयेत् ।
शुभे नक्षत्रयोगेऽपि प्रवेशाद्वापि निर्गमम् ॥ १ ॥"

"प्रयाण करवाना दिवसथी गणतां नवमे दिवसे नक्षत्र योग शुभ छतां पण पुरप्रवेशादिक करवो नहीं, तेमज प्रवेश कर्या पछी नवमे दिवसे प्रयाण पण करवुं नहीं."

आ नियम मांगळिक (सामान्य) क्षौरने माटे कह्यो छे. अमांगळिक (सूतक विगेरेनुं) क्षौर तो नवमे दिवसे पण थाय छे. "नीचे आसन नाख्या विना क्षौर करावचुं नहीं" एम लल्ल कहे छे.—

**षट्कृत्तिकोऽष्टवैरश्चस्त्रिमैत्रश्चतुरुत्तरः ।
पञ्चपैत्रः सकृन्मूलः क्षौरी वर्षं न जीवति ॥ ३३ ॥**

अर्थ—लगोलग छ कृत्तिकामां क्षौर करावनार, ए ज रीते आठ रोहिणीमां, त्रण अनुराधामां, चार उत्तरामां, पांच मघामां अने एक मूळ नक्षत्रमां क्षौर करावनार माणस एक वर्ष सुधी जीवे नहीं.

गणिविद्यामां तो कृत्तिका, विशाखा, मघा अने भरणी ए चार नक्षत्रोमां ज लोचकर्मनो निषेध कर्यो छे. विशेष ए छे जे—

"सर्वदापि शुभं क्षौरं राजाज्ञामृतिसूतके ।
बन्धमोक्षे मखे दारकर्मतीर्थव्रतादिषु ॥ १ ॥"

"राजानी आज्ञाए, मृत्युसूतकमां, बंधनथी मुक्त थयो होय त्यारे, यज्ञमां, स्त्रीना कार्यमां, तीर्थमां अने व्रतादिकमां (व्रतादिकना प्रारंभमां) क्षौरकर्म करावचुं ए सर्वदा एटले सर्वे वार अने नक्षत्रोमां शुभ छे." अहीं स्त्रीना कार्यमां जे कह्युं छे ते कोइना कुळनो आचार छे, एटले के जेना कुळनो रीवाज होय तेने आश्रीने छे.

हवे राजाने आश्रीने क्षौरकर्म कहे छे.

**श्मश्रुकर्म नरेन्द्राणां पञ्चमे पञ्चमेऽहनि ।
क्षौरभेषु नखोल्लेखो व्यर्के क्रूरे विशेषतः ॥ ३४ ॥**

अर्थ—शौरनां नक्षत्रोने विषे त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा विगेरे न होय त्यारे क्रूर वार (सूर्य, शनि, मंगळ) ने दिवसे पण शुभ ग्रहनी काळहोराने विषे पांचमे पांचमे दिवसे राजाओए श्मश्रुकर्म (दाढी मुछनुं क्षौर) कराववुं. नख कपाववामां पण आ ज समय लेवो, पण एक रविवार तजवो, अने शनि तथा मंगळ अने तेनी होरा विशेषे करीने ग्रहण करवी.

हवे विद्यारंभनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

विद्यां सुराध्यापकराजपुत्रसितार्कवारेषु समारभेत ।
पूर्वाश्विनीमूलकरत्रयेषु, श्रुतित्रये वा मृगपञ्चके वा ॥ ३५ ॥

अर्थ—गुरु, बुध, शुक्र अने रविवारे त्रणे पूर्वा, अश्विनी, मूळ, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य अने अश्लेषा, आटलां नक्षत्रोमां विद्यानो आरंभ करवो श्रेष्ठ छे. अहीं श्रवण, धनिष्ठा अने शततारका ए त्र बदले केटलाक एक श्रवण ज लेवानुं कहे छे. धनिष्ठा अने शततारकानो निषेध करे ;

विद्यारंभमां वारोनुं फळ व्यवहारसारमा आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"विद्यारम्भे नृणा वारा' कुर्वते भास्करादयः ।
आयु १ र्जाड्यं २ मृतिं ३ लक्ष्मीं ४ बुद्धिं ५ सिद्धिं ६ च पञ्चताम् ७ ॥१

"विद्याना आरंभमां मनुष्योने सूर्यादिक वारो आ प्रमाणे अनुक्रमे फळ आपे छे. रविवारे विद्यारंभ कर्यो होय तो आयुष्य, सोमे जडता, मंगळे मरण, बुधे लक्ष्मी, बुद्धि, शुक्रे सिद्धि अने शनिए मरण"

हवे नदीनुं (नांद मांडवानुं) मुहूर्त्त कहे छे —

नियमालोचनायोगतपोनन्द्यादि कारयेत् ।
मुक्त्वा तीक्ष्णोग्रमिश्राणि वारौ चारशनैश्चरौ ॥ ३६ ॥

अर्थ—नियम एटले समकित अथवा बार व्रतो विगेरे उच्चरवां ते, आलोचना धर्मगुरुनी पासे प्रायश्चित्त मागवा माटे पोतानुं पाप प्रकाशवुं ते, योग श्रुतनु करवा माटे विशेष प्रकारनो तपविधि, तप एटले सिद्धांतमा कहेला श्रेणी आदि प्रकारना तप, आ सर्वे नियमादिकनी नदी विगेरे एटले नांद मांडवी अथवा काइ पण धर्मोत्सवादिक कार्य करवु ते तीक्ष्ण, उग्र अने मिश्र नक्षत्रोने वर्जीने नक्षत्रोमा तथा मंगळ अने शनिने वर्जीने बीजा वारोमा करवुं. विशेष ए छे जे—

"शान्तिकं पौष्टिकं कार्यं इज्यशुक्रार्कवासरे ।
कन्याविवाहनक्षत्रे पुष्याश्विश्रवणे तथा ॥ १ ॥"

"बुध, गुरु, शुक्र अने रविवारे तथा कन्याविवाहनां नक्षत्रो उपरांत पुष्य, अश्विनी अने श्रवण नक्षत्रमां शांतिक तथा पौष्टिक कार्यो करवां."

हवे प्राये करीने ब्राह्मणादिक वर्णोने आश्रीने पंदर श्लोकोवडे संस्कारो कहे छे. तेमां प्रथम मौंजीबंध (कटिमेखळाबंध एटले उपनयन) नो संस्कार कहे छे.—

मौञ्जीबन्धोऽष्टमे गर्भाज्जन्मतो वाऽग्रजन्मनाम् ।
राज्ञामेकादशे च स्याद्वत्सरे द्वादशे विशाम् ॥ ३७ ॥

अर्थ—मौंजीबंधनुं कर्म ब्राह्मणने गर्भथी अथवा जन्मथी आठमे वर्षे थाय छे. क्षत्रियने अगीयारमे वर्षे अने वैश्यने बारमे वर्षे थाय छे. ब्राह्मणने दशमे वर्षे पण मौंजीबंध करवामां आवे छे, तेमां जे प्रमाणे कुळाचार होय ते प्रमाणे करवुं.

शाखाधिपे बलोपेते केन्द्रस्थेऽह्नि च तस्य वा ।
बले सूर्येन्दुजीवानां वर्णनाथे बलीयसि ॥ ३८ ॥
माघादौ पञ्चके मासां पौष्णाश्विन्योः करत्रये ।
श्रुतिद्वये मृगादित्यपुष्येषूपनयः श्रिये ॥ ३९ ॥ युग्मम् ॥

अर्थ—शाखाधिप (वेदाधिप गुरु, शुक्र, मंगळ अने सूर्य) छ प्रकारादिकथी बळवान् होय तथा केंद्रस्थानमां रह्यो होय त्यारे उपनय (यज्ञोपवीत) संस्कार करवो, केमके शाखाधिप निर्बळ होय तो वर्णसंकर प्रजा थवानो संभव छे. तथा ते शाखाधिपना ज वारमां उपनय संस्कार करवो. अहीं "तस्य वा" ए ठेकाणे वा शब्द कह्यो छे तेथी एवुं सूचवन कर्युं के—जो लग्नना बळथी उपनयन करातुं होय तो शाखाधिपना वारमां लग्न ग्रहण करवुं. एटले के लग्नकुंडळीमां शाखाधिप बळवान् थइने केंद्रमां रहेलो करवो, अने जो मात्र दिनशुद्धिवडे ज संस्कार करवो होय त्यारे पण वार तो शाखाधिपनो ज लेवो. तथा सूर्य, चंद्र अने गुरु बळवान् होय त्यारे अथवा वर्णनो नाथ (गुरु अने शुक्र) बळवान् होय त्यारे उपनयन संस्कार करवो. अथवा तो "सूर्य, चंद्र अने गुरु बळवान् होय तो सर्वे वर्णना नाथो बळवान् ज छे" एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे. आ संस्कार माघ विगेरे पांच मास (जेठ सुधी)मां करवो. तथा रेवती, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशीर्ष, पुनर्वसु अने पुष्य नक्षत्रमां करवो शुभ छे.

पराजितेऽरिवेश्मस्थे नीचस्थेऽस्तंगते गुरौ ।
सितेऽपि चोपनीतः स्याच्छ्रुतिस्मृतिबहिष्कृतः ॥ ४० ॥

अर्थ—बे ग्रहोनो योग थयेथी जे ग्रह दक्षिण दिशा तरफ जतो होय ते पराजित कहे-

थाय छे. तेमां पण "एक शुक्र तो उत्तरमां जतो होय तो ते पराजित कहेवाय छे," एम वराह कहे छे. तेथी करीने गुरु अने शुक्र पराजित स्थानमां रह्या होय, शत्रुना स्थानमां रह्या होय, नीच स्थाने रह्या होय अथवा अस्त पाम्या होय अने तेवा समये जो उपनयन संस्कार कर्यो होय तो ते श्रुति अने स्मृतिथी बहिष्कृत (रहित) थाय छे.

क्रमादंशेषु सूर्यादेः क्रूरो १ मन्दो २ऽतिपातकी ३ ।
पटु ४ र्यज्वा ५ च यज्वा ६ च मूर्ख ७ श्चोपनयाद्भवेत् ॥ ४१ ॥

अर्थ—लग्नमां सूर्यनो नवांश रह्यो होय अने उपनयन कर्यु होय तो ते क्रूर थाय छे चंद्रनो नवांश होय तो ते मंद थाय छे, मंगळनो नवांश होय तो अत्यंत पापी थाय बुधनो होय तो हुशियार थाय, गुरुनो होय तो यज्वा (यज्ञ करनार) थाय, शुक्रनं होय तोपण यज्वा थाय अने शनिनो नवांश लग्नमा होय तो ते मूर्ख थाय छे.

चतुष्टयेऽर्कादिषु राजसेवी १ स्याद्वैश्यवृत्तिः २ क्रमतोऽस्त्रवृत्तिः ३ ।
अध्यापकः ४ कर्मसु षट्सु विद्वान् ५ विद्यार्थयुक्तो ६ऽन्त्यजसेवकश्च ७ ॥ ४२ ।

अर्थ—केंद्रस्थानमा सूर्य होय तो ते राजसेवक थाय छे, चंद्र होय तो वैश्य वृत्ति वाळो एटले कृषि, पशुपाल विगेरे वृत्तिवाळो थाय छे, मंगळ होय तो शस्त्रनी वृत्ति वाळो थाय छे. बुध होय तो अध्यापक थाय, गुरु होय तो छ कर्ममा विद्वान् थाय, शुक्र होय तो विद्यावान् अने धनवान् थाय तथा शनि होय तो अंत्यजनो (चंडाळनो सेवक थाय केंद्रमां एकथी वधारे ग्रह होय तो जे ग्रह अधिक बळवान् होय तेनु फळ कहेवु. ए रीते सर्वत्र जाणवुं.

लग्ने गुरौ त्रिकोणे सिते सितांशे विधौ च वेदज्ञः ।
भवति यमांशे गुरुसितलग्नेषु जडो विशीलश्च ॥ ४३ ॥

अर्थ—लग्नमां गुरु होय, त्रिकोणमां शुक्र होय तथा शुक्रना अंशमां चंद्र होय एटले के गमे ते स्थाने रहेलो चंद्र शुक्रना नवांशमां रह्यो होय, तो ते वेदने जाणनार थाय छे, तथा गुरु, शुक्र अने लग्न शनिना अंशमां रह्या होय तो ते जड (मूर्ख) अने शील रहित तथा कृतघ्नी थाय छे.

विधिगुरुशुक्रैः सार्कैर्धनगुणहीनः कुजान्वितैः क्रूरः ।
सबुधैर्बुधः सशौरैः स्यादुपनीतोऽलसो विगुणः ॥ ४४ ॥

अर्थ—चंद्र, गुरु अने शुक्र जो सूर्य साथे रह्या होय अने उपनयन कर्यु होय तो धन अने गुणथी रहित थाय, मंगळनी साथे रह्या होय तो ते क्रूर थाय, बुध सा

रह्या होय तो विद्वान् थाय, अने शनि साथे रह्या होय तो ते आळसु अने गुणहीन थाय छे. आ श्लोक राज्याभिषेकना लग्नमां पण लागु पडे छे.

चन्द्रे षष्ठाष्टमे मृत्युमूर्खत्वमथवा बटोः ।
व्रतमोक्षेऽथ केशान्ते चौले चैवंविधो विधिः ॥ ४५ ॥

अर्थ—चंद्र छठे के आठमे होय तो वटुकनुं मरण थाय अथवा ते मूर्ख रहे. व्रतना मोक्षमां (मौंजीबंधन छोडवामां), केशान्त (मुंडन)मां अने चौल कर्ममां के जे पोतपोताना कुळना आचार प्रमाणे पहेले अथवा त्रीजे वर्षे करवामां आवे छे तेमां पण आ प्रमाणे ज (एटले उपरना सारा आठ श्लोकमां कह्या प्रमाणे ज) विधि जाणवो.

हवे अग्निस्थापन (अग्निहोत्र)नुं मुहूर्त्त कहे छे.

वह्नेः परिग्रहं प्राहुः कृत्तिकारोहिणीमृगैः ।
उत्तरात्रितयज्येष्ठापुष्यपौष्णद्विदैवतैः ॥ ४६ ॥

अर्थ—कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, त्रण उत्तरा, ज्येष्ठा, पुष्य, रेवती अने विशाखा नक्षत्रमां अग्निनुं स्थापन कह्युं छे.

केन्द्रोपचयधीधर्मेष्वर्केन्दुज्ञसुरार्चितैः ।
शेषैस्त्रिषड्दशायस्थैरादध्याज्जातवेदसम् ॥ ४७ ॥

अर्थ—सूर्य केंद्रस्थानमां (१-४-७-१०) रह्यो होय, चंद्र उपचय (३,६,१०,११) स्थानमां रह्यो होय, बुध पांचमे रह्यो होय, गुरु नवमे रह्यो होय, अने बीजा ग्रहो (मंगळ, शुक्र, शनि) त्रीजे, छठे, दशमे अने अगीयारमे रह्या होय त्यारे अग्नि स्थापन करवो.

उदयेऽथ नवांशे वा राशीनां जलचारिणाम् ।
उदयस्थे च शीतांशोर्वह्निरह्नाय शाम्यति ॥ ४८ ॥

अर्थ—जळचर राशिओना (कर्क, मकर, कुंभ, मीन) उदयमां अथवा नवांशमां अने चंद्रना उदयमां अग्नि तरत ज बुझाइ जाय छे.

क्रूराः कुर्युर्धने निःस्वमाढ्यं सन्तोऽन्नदं विधुः ।
हन्युश्छिद्रे ग्रहाः सर्वे लग्ने च ज्ञयमौ द्विजम् ॥ ४९ ॥

अर्थ—अग्निआधानी कुंडळीमां जो बीजा स्थानमां क्रूर ग्रह रह्या होय तो ते ब्राह्मणने निर्धन करे छे, अने सौम्य ग्रह रह्या होय तो धनाढ्य करे छे, तथा चंद्र रह्यो होय तो ते ब्राह्मणने अन्नदातार करे छे. वळी आठमा स्थानमां कोइ पण ग्रह रह्यो होय तो तेनुं मरण थाय छे, तथा लग्नमां के चंद्रनी साथे बुध अने शनि रह्या होय तो-

पण ते ब्राह्मण मरण पामे छे एम रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे. आठमा स्थाने रहेला ग्रहो विषे आ प्रमाणे विशेष जाणवुं के—आठमे स्थाने चंद्र रह्यो होय तो ते ब्राह्मणनी स्त्रीनुं मरण थाय, मंगळ होय तो ब्राह्मणनुंज मरण थाय, रवि, गुरु के शनि होय तो ते ब्राह्मण असाध्य रोगथी पीडा पामे, अने बुध के शुक्र रह्या होय तो कांइ पण फळ थाय नहीं लल्ल तो लग्नमा रहेला ग्रह विषे आ प्रमाणे कहे छे के—"लग्नमां अथवा चंद्रनी साथे बुध के शनि रह्यो होय तो लोकाग्निनी साथे ते अग्निनो संग थाय छे. अर्थात् अग्नि उत्पन्न थाय छे."

जितैरस्तमितैर्नीचशत्रुक्षेत्रगतैरपि ।
सोमभौमसुराचार्यैराहिताग्निर्न नन्दति ॥ ५० ॥

अर्थ—सोम, मंगळ अने गुरु जो पराजय पाम्या होय, अस्त पाम्या होय, नीच स्थाने रह्या होय के शत्रुना घरमां रह्या होय तो अग्निनुं आधान करनार सुखी थतो नथी.

चन्द्रेऽर्के वा त्रिशत्रुस्थे लग्ने धनुषि वा गुरौ ।
मेषस्थे खा १० स्त ७ गे वारे यज्वा स्यादात्तपावकः ॥ ५१ ॥

अर्थ—अग्निआधाननी कुण्डलीमा चंद्र के सूर्य त्रीजे के छठे स्थाने रह्यो होय, लग्नमा के धन राशिमा गुरु रह्यो होय, अने मंगळ मेष राशिमा के दशमा अथवा सातमा स्थानमा रह्यो होय तो अग्निनु आधान करनार ब्राह्मण याज्ञिक थाय छे.

। इति विप्राद्यधिकारः ।

हवे नवां वस्त्र पहेरवानुं मुहूर्त्त कहे छे—

नववाससः प्रधानं वासवपौष्णाश्विनादितिद्वितये ।
करपञ्चकध्रुवेषु च बुधगुरुशुक्रेषु परिधानम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—बुध, गुरु अने शुक्रवारे धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, तथा ध्रुव एटले रोहिणी, उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुनी अने उत्तराभाद्रपद, आ नक्षत्रोमांथी कोइ पण नक्षत्र होय, ते दिवसे नवां वस्त्र पहेरवा शुभ छे कह्युं छे के—

"नष्टप्राप्ति १ स्तदनुमरणं २ वह्निदाहो ३ऽर्थसिद्धि ४-
राखोर्भीति ५ र्मृतिरथ ६ धनप्राप्ति ७ रर्थागमश्च ८ ।
शोको ९ मृत्यु १० र्नरपतिजयं ११ संपदः १२ कर्मसिद्धि १३-
र्विद्यावाप्तिः १४ सदशन १५ मथो वल्लभत्वं जनानाम् १६ ॥ १ ॥

मित्राप्ति १७ रम्बरहृतिः १८ सलिलप्लुतिश्च १९,
रोगो २०ऽतिमिष्टमशनं २१ नयनामयश्च २२ ।
धान्यं २३ विषोद्भवभयं २४ जलभी २५ धनं २६ च,
रत्नाप्ति २७ रम्बरधृतेः फलमश्विभात् स्यात् ॥ २ ॥"

"नवां वस्त्र धारण करवामां अश्विनी नक्षत्रथी नीचे प्रमाणे अनुक्रमे फळ थाय छे. अश्विनी नक्षत्रमां वस्त्र धारण करे तो नाश पामेली वस्तुनी प्राप्ति थाय छे १, भरणीमां धारण करे तो तरत ज मरण थाय २, कृत्तिकामां अग्निदाह थाय ३, रोहिणीमां अर्थनी सिद्धि थाय ४, मृगशिरमां उंदरनो भय थाय ५, आर्द्रामां मरण थाय ६, पुनर्वसुमां धननी प्राप्ति ७, पुष्यमां अर्थनी (धननी) प्राप्ति ८, अश्लेषामां शोक ९, मघामां मृत्यु १०, पूर्वाफाल्गुनीमां राजानो भय ११, उत्तराफाल्गुनीमां संपत्तिनी प्राप्ति १२, हस्तमां कार्यसिद्धि १३, चित्रामां विद्यानी प्राप्ति १४, स्वातिमां सारुं भोजन १५, विशाखामां माणसोनी प्रीति १६, अनुराधामां मित्रनी प्राप्ति १७, ज्येष्ठामां वस्त्रनी चोरी १८, मूळमां जळमां बुडे १९, पूर्वाषाढामां रोग २०, उत्तराषाढामां अत्यंत मिष्ट भोजन २१, श्रवणमां नेत्रनो व्याधि २२, धनिष्ठामां धान्यनी प्राप्ति २३, शतभिषकमां विषनो भय २४, पूर्वाभाद्रपदमां जळनो भय २५, उत्तराभाद्रपदमां धननी प्राप्ति २६, अने रेवतीमां नवुं वस्त्र पहेरवाथी रत्ननी प्राप्ति थाय छे २७."

व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—"केवळ श्वेत वस्त्रने माटे ज आ नियम नथी, पण रातां वस्त्रने माटे पण उपर गणावेलां ज नक्षत्रो शुभ छे." व्यवहारसारमां तो एम कह्युं छे जे—"रातां वस्त्र धारण करवामां पुरुषने पण जे नक्षत्रो स्त्रीओने माटे कहेवामां आवशे ते ज शुभ छे, अने आ उपर गणावेलां नक्षत्रो तो श्वेत वस्त्रने ज आश्रीने छे." हवे वारने आश्रीने आ प्रमाणे फळ जाणवुं.—

"नवाम्बरपरीभोगे कुर्वन्त्यर्कादिवासराः ।
जीर्णं १ जलार्द्रं २ शोकं ३ च धनं ४ ज्ञानं ५ सुखं ६ मलम् ७ ॥ १ ॥"

"नवां वस्त्र धारण करवामां रवि विगेरे वारो अनुक्रमे जीर्ण[1] १, जलार्द्र[2] २, शोक ३, धन ४, ज्ञान ५, सुख ६ अने मल (मेलापणुं) ७, आ प्रमाणे फळ आपे छे." नवो कंबल धारण करवामां रवि पण शुभ छे एम कहेलुं छे. केटलाक आचार्यो कहे छे के—

"व्यापार्यते रवौ पीतं बुधे नीलं शनौ शितिः ।
गुरुभार्गवयोः श्वेतं रक्तं मंगलवासरे ॥ १ ॥"

---

१ वहेलुं फाटी जाय. २ निरंतर भीनुं ज रहे.

अर्थ—कोरुं वस्त्र छाण, अंजन के कादवथी लींपाय, फाटे के दाझे तो तेनुं शुभ के अशुभ फळ वधारे छे अने भोगवेल वस्त्र छाण, अंजन के कादवथी लींपाय, फाटे के दाझे तो तेनु शुभ के अशुभ फळ अल्प छे.

विशेष आ प्रमाणे छे.—

"छेदाकृतिः श्रिये स्याच्छत्रादिसमा गतापि रक्षोऽंशे ।
काकोलूकादिसमा न देवभागाश्रिताऽपि पुनः ॥ १ ॥"

"ते वस्त्रना छेद (फाटेला के बळेला)नी आकृति छत्र विगेरेना जेवी होय तो ते राक्षसना भागमां होवा छतां पण लक्ष्मीने माटे छे–शुभ छे, अने कागडा के घुवडना जेवी आकृति होय तो ते देवना भागमां रह्या छता पण अशुभ ज छे."

हवे कया मुहूर्त्तमां गयेलुं द्रव्य पाछुं सुलभ थाय छे ? अथवा कया मुहूर्त्ते थापण विगेरे करवी ? ते कहे छे.—

सुलभं स्वं भवेन्न्यस्तं निखातं दत्तमेव वा ।
मृदुश्रुतित्रयादित्यलघुभेषु शुभेऽहनि ॥ ५८ ॥

अर्थ—मृदु (चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशिर), श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, पुनर्वसु अने लघु (पुष्य, अभिजित्, हस्त, अश्विनी), ए नक्षत्रोमां तथा शुभ दिवसे एटले मंगळ अने शनि विनाना बीजा वारे धननो न्यास कर्यो होय (एटले थापणमां के वेपार विगेरेमां मूक्युं होय), पृथ्वी विगेरेमां दाट्युं होय, व्याजे आप्युं होय तथा अजाणतां खोवाइ गयुं होय तो ते धन पाछु फरीने सुलभ छे, एटले फरीथी मळी शके छे.

विशेष ए छे जे—"ऋणदानमथादानं क्षिप्रधिष्ण्यैर्विधीयते ।" ऋण देवुं अने लेवुं ए क्षिप्र (पुष्य, अभिजित्, हस्त अने अश्विनी) नक्षत्रमा शुभ छे. वळी कह्युं छे के—

"निधिलब्धिधनविवर्द्धनमादित्याद्ब्राह्मतः करात् पौष्णात् ।
द्वितये श्रवणत्रितयोत्तरासु मित्राधिदेवे च ॥ १ ॥"

"निधिनी प्राप्ति अने धननी वृद्धि पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, मृगशिर, हस्त, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, अनुराधा अने अभिजित् ए नक्षत्रोमां शुभकारक छे."

हवे गयेली वस्तु पाछी मळशे के नहीं ते कहे छे.—

नष्टं चतुर्भिरन्धाद्यैर्गतेऽपूर्वादिषु क्रमात् ।
तल्लभ्यते सुखा १ यत्ना २ च्छ्रुतैव ३ न सापि च ॥ ५९ ॥

अर्थ—अंधादिक चार नक्षत्रोमा गयेली चीज अनुक्रमे पूर्वादिक दिशामा गइ छे

एम जाणवुं, अने ते चीज सुखेथी मळे, यत्नथी मळे, तेनी खबर मळे अने खबर पण न मळे, ए रीते अनुक्रमे तेनुं फळ जाणवुं.

सुखेथी मळे एटले समीपे ज ते वस्तु रही छे, दूर गइ नथी एम जाणवुं. “आंधळां नक्षत्रमां गयेली वस्तु बधी पाछी मळे छे अने काणां नक्षत्रमां गयेली अर्धी पाछी मळे छे” एम केटलाक कहे छे. वळी बीजा केटलाक कहे छे के—“आंधळुं नक्षत्र पण जो बे पाद के चार पादनुं होय तो गयेली वस्तु दुःखे करीने पाछी मळे छे, पण जे नक्षत्रो त्रण पादवाळां छे एटले एक पादे लंगडां छे तेवां देखतां नक्षत्रोमां पण गयेली वस्तु पाछी मळी शके छे.”

हवे आंधळां काणां विगेरे नक्षत्रोनी संज्ञा कहे छे.—

रेवत्यादिचतुष्केषु नामानि प्रतिभं जगुः ।
अन्ध १ माकेकरं २ चिब्बं ३ सुलोचन ४ मिति क्रमात् ॥६०॥

अर्थ—रेवती नक्षत्रथी चार चार नक्षत्रोमां दरेक नक्षत्रनां नाम अनुक्रमे आंधळुं, आकेकर (काणुं), चिब्ब (चीपडावाळुं) अने सुलोचन (देखतुं) ए प्रमाणे कह्यां छे.

आंधळां, काणां विगेरे संज्ञा तथा तेमां गयेली वस्तुनी दिशा तथा ते वस्तु मळशे के नहीं ते जाणवानुं कोष्टक.—

संज्ञा.	अठ्यावीश नक्षत्रोनां नामो.							दिशा.	फळ.
आंधळां	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा०	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	पूर्व	शीघ्र मळे
काणां	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषक्	दक्षिण	यत्नथी मळे
चिब्बां	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्रपद	पश्चिम	खबर मळे
देखतां	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा०	स्वाति	मूळ	श्रवण	उत्तराभाद्रपद	उत्तर	खबर पण न मळे.

दिनशुद्धिकार आ प्रमाणे कहे छे.—

“रविरिक्खा छ बाला बारस तरुणाय नव परे थेरा ।
तरुणेहिं जाइ थेरेहिं न जाइ बाले भमइ पासे ॥ १ ॥”

“[1]रविना नक्षत्रथी छ नक्षत्र बाळक छे, त्यारपछीनां बार नक्षत्र जुवान छे अने त्यारपछीनां नव नक्षत्रो वृद्ध छे. तेमां जुवान नक्षत्रमां गयेली वस्तु जाय—पछी आवे नहीं, वृद्ध नक्षत्रमां वस्तु जाय नहीं एटले पाछी आवे खरी, अने बाळ नक्षत्रमां गयेली वस्तु पासे ज भमे छे एटले के दूर जती नथी.”

हवे प्रेत (मरेलानुं) कर्मनुं मुहूर्त्त कहे छे.

न प्रेतकर्म कुर्वीत यमले सत्रिपुष्करे ।
क्रूरमिश्रध्रुवार्द्रासु तथा मूलानुराधयोः ॥ ६१ ॥

---

१ सूर्य जे नक्षत्रमां होय ते नक्षत्रथी इष्ट दिवसनुं नक्षत्र छ सुधीमां होय तो बाळक.

अर्थ—प्रेतकार्य आटलां नक्षत्रोमां करवुं नहीं.—यमलयोगमां, पंचकमां, त्रिपुष्करयोगमां, क्रूर (भरणी, त्रणे पूर्वा अने मघा)मां, मिश्र (विशाखा अने कृत्तिका)मां, ध्रुव (त्रण उत्तरा अने रोहिणी)मां, आर्द्रामां, मूळमां तथा अनुराधामां वळी "रवि तथा मंगळ वारनो पण त्याग करवो" एम दिनशुद्धिमां कह्युं छे. वळी अन्य ग्रंथमां आ प्रमाणे कह्युं छे—

"पुष्याश्विनी स्वातिहस्ता ज्येष्ठा श्रवणरेवती ।
एषु प्रेतक्रिया कार्या रविवारं विना बुधैः ॥ १ ॥

"पुष्य, अश्विनी, स्वाति, हस्त, ज्येष्ठा, श्रवण अने रेवती, आटलां नक्षत्रोमां रविवार विना बीजा वारे डाह्या पुरुषोए प्रेतक्रिया करवी"

मृते साधौ पञ्चदशमुहूर्त्तैर्नैव पुत्रकः ।
एकस्त्रिंशन्मुहूर्त्तैस्तु द्वेप्यः शेषैस्तु भैरुभौ ॥ ६२ ॥

अर्थ—पंदर मुहूर्त्तवाळां नक्षत्रमां साधुए काळ कर्यो होय तो पुत्रक करवो नहीं, (अभिजितमा पण करवो नहीं), त्रीश मुहूर्त्तवाळामां काळ कर्यो होय तो एक पुत्रक करवो, एटले एक पुत्रक करीने साधुनी पासे राखवो, अने संस्कारसमये तेने मध्यमां नाखवो एवी रीत छे, तथा बाकीनां पीस्तालीश मुहूर्त्तवाळां नक्षत्रोमां काळ कर्यो होय तो बे पुत्रक करवा.

हवे सर्पदंश थयो होय ते जीवे के नहीं ? ते कहे छे.—

सर्पदष्टः सुपर्णेन रक्षितोऽपि न जीवति ।
मूलार्द्राभरणीयुग्ममघाश्लेषाद्विदैवतैः ॥ ६३ ॥

अर्थ—मूळ, आर्द्रा, भरणी, कृत्तिका, मघा, अश्लेषा अने विशाखा नक्षत्रमां सर्पदंश थयो होय तो तेनी गरुड रक्षा करे तोपण ते जीवे नहीं, अने बीजां नक्षत्रोमां सर्पदंश थयो होय तो ते जीवे छे.

विवेकविलासमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे —

"मूलाश्लेषामघाः पूर्वात्रयं भरणिकाश्विनी ।
कृत्तिकार्द्रा विशाखा च रोहिणी दष्टमृत्युदाः ॥ १ ॥
तिथयः पञ्चमी षष्ठ्यष्टमी नवमिका तथा ।
चतुर्दश्यप्यमावास्याऽहिना दष्टस्य मृत्युदाः ॥ २ ॥
दष्टस्य मृतये वारा भानुभौमशनैश्चराः ।
प्रातःसन्ध्यास्तसन्ध्या च संक्रान्तिसमयस्तथा ॥ ३ ॥"

"मूळ, अश्लेषा, मघा, त्रणे पूर्वा, भरणी, अश्विनी, कृत्तिका, आर्द्रा, विशाखा अने

रोहिणी, आटलां नक्षत्रोमां सर्पदंश थयो होय तो ते मरण पामे छे (१) तथा पांचम, छठ, आठम, नोम, चौदश अने अमावास्या, आ तिथिओमां सर्पदंश थयो होय तो ते मरण पामे छे (२) रवि, मंगळ अने शनिवारे तथा प्रातःकाळनी संध्या, सायंकाळनी संध्या अने संक्रांतिना समये सर्पदंश थयो होय तो ते मरण पामे छे." इत्यादि.

हवे मांदो माणस जीवशे के नहीं ? ते विषे कहे छे.—

जातरोगस्य पूर्वार्द्रास्वातिज्येष्ठाहिभैर्मृतिः ।
भवेन्नीरोगता रेवत्यनुराधासु कष्टतः ॥ ६४ ॥
मासान्मृगोत्तराषाढे विंशत्यह्नां मघासु च ।
पक्षेण तु द्विदैवत्ये धनिष्ठाहस्तयोस्तथा ॥ ६५ ॥
भरणी वारुणश्रोत्रचित्रास्वेकादशाहतः ।
अश्विनीकृत्तिकारक्षोनक्षत्रेषु नवाहतः ॥ ६६ ॥
आदित्यपुष्याहिर्बुध्नरोहिण्यार्यमणेषु तु ।
सप्ताहादिह ताराया यदि स्यादनुकूलता ॥ ६७ ॥

अर्थ—त्रणे पूर्वा, आर्द्रा, स्वाति, ज्येष्ठा अने अश्लेषामां रोग उत्पन्न थयो होय तो रोगीनुं मरण थाय छे. रेवती अने अनुराधामां रोग उत्पन्न थयो होय तो कष्टथी नीरोगी थाय. मृगशिर अने उत्तराषाढामां रोग थयो होय तो एक महीने सारुं थाय. मघामां थयो होय तो वीश दिवसे नीरोगी थाय. विशाखा, धनिष्ठा के हस्तमां थयो होय तो पंदर दिवसे सारुं थाय. अहीं वृद्धो कहे छे के—"उत्तराषाढामां रोग थयो होय तो बे मासे मृत्यु थाय अने अभिजितमां थयो होय तो बे मासे नीरोगी थाय." भरणी, शतभिषक्, श्रवण अने चित्रामां व्याधि उत्पन्न थयो होय तो अगीयार दिवसे सारुं थाय. अश्विनी, कृत्तिका अने मूळमां थयो होय तो नव दिवसे सारुं थाय. पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी अने उत्तराफाल्गुनीमां थयो होय तो सात दिवसे सारुं थाय. आ सर्व स्थळे तारानी अनुकूळता होय तो सारुं थाय एम जाणवुं. "शुक्लेऽप्यासूत्थिते रोगे दीर्घक्लेशोऽथवा मृतिः" "शुक्लपक्षने विषे पण त्रीजी, पांचमी के सातमी ताराओमां रोग उत्पन्न थयो होय तो घणो क्लेश पामे अथवा मृत्यु पामे" एम कह्युं छे.

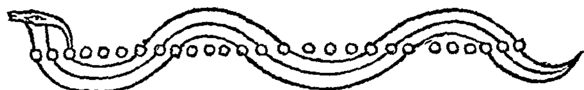
अहीं प्रसंगथी मृत्युनुं ज्ञान लखे छे.—

"अश्चाइ धरे वि सुअंगह, पनरहमाहिठवेविणु अंगह ।
बारह बाहिरि तस्स य दिज्जइ, जीवियमरण फुडं जाणिज्जइ ॥ १ ॥"

"त्रण नाडीवाळो सर्प करवो. तेमां सूर्य जे नक्षत्रमां होय ते नक्षत्र प्रथम मूकवुं,

अने त्यारपछी अनुक्रमे बीजां नक्षत्रो मूकवां (अभिजित् गणवुं नहीं). तेमां नक्षत्रो नाडी उपर आवे अने बार नक्षत्रो बहार रहे ए रीते सर्प करीने जीवित अथवा मरण स्पष्ट रीते जाणवुं

भुजंगनी स्थापना.



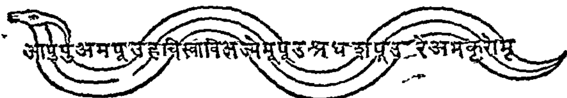
अहीं जे जे ग्रहो जे जे नक्षत्रोमां होय, ते ते ग्रहो ते ते नक्षत्र उपर मूकवा. पछी सूर्यना नक्षत्रथी रोगीना नामनक्षत्र सुधी गणवुं तेमां जो पहेली नाडीमां एटले पहेले, नवमे, तेरमे, एकवीशमे के पचीशमे रोगीनुं नक्षत्र होय तो मरण थाय, जो बीजी नाडीमां एटले बीजे, आठमे, चौदमे, वीशमे के छवीशमे रोगीनुं नक्षत्र होय तो घणुं कष्ट थाय, अने रोगीनु नक्षत्र त्रीजी नाडी उपर एटले त्रीजे, सातमे, पंदरमे, ओगणी शमे के सत्यावीशमे होय तो थोडुं कष्ट थाय बाकीनां बार नक्षत्रो उपर रोगीनुं नक्षत्र होय तो आरोग्य थाय अहीं शुभाशुभ ग्रहना वेधथी पण शुभाशुभ फळ प्रकारे कहेवुं "

यतिवल्लभमां तो आ प्रमाणे ज भुजंगचक्रने स्थापवानुं कह्युं छे, पण तेमां आर्द्रा न प्रथम मूकवानुं कहे छे ते आ प्रमाणे —

"आर्द्राद्यै' पञ्चदशभिस्त्रीणि त्रीण्यन्तरा त्यजन् ।
त्रिनाडिचक्रे चन्द्रा १ र्क २ जन्म ३ वेधे न जीवति ॥ १ ॥"

"आंतरे आंतरे त्रण त्रण नक्षत्रोने तजीने आर्द्रा नक्षत्रथी पंदर नक्षत्रोने चक्रमां स्थापवां तेमां जो चंद्र, सूर्य अने रोगीना नामना नक्षत्रनो (ए त्रणेनो) वे थाय तो ते रोगी जीवे नहीं "

त्रिनाडी चक्रनी स्थापना.



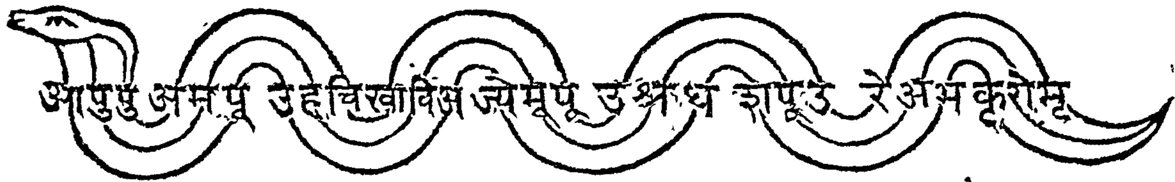
व्याधि थवाने समये जो चंद्रनुं, सूर्यनुं अने रोगीनुं नक्षत्र एक नाडी पर होय रोगीनुं मरण नीपजे.

दिनशुद्धि ग्रंथमां तो त्रण त्रण नक्षत्रनो त्याग कर्या विना ज आर्द्राथी त्रिनाडी चक्रनी स्थापना तथा फळ आ प्रमाणे कहे छे.—

"आई अद्दा मिगं अंते मझे मूलं पइठ्ठिअं ।
रवींदूजम्मनरकत्तं तिविद्धो न हु जीवइ ॥ १ ॥"

"प्रथम आर्द्रा, अंते मृगशिर अने मध्ये मूळ ए रीते मूकीने त्रिनाडी चक्र करवुं. तेमां सूर्यनुं, चंद्रनुं अने जन्मनुं नक्षत्र जो वींधाय एटले एक नाडी पर आवे तो रोगी माणस जीवे नहीं."

त्रिनाडी चक्रनी स्थापना.



"रवींदूजम्मनरकत्तं एगनाडीगया जया ।
तया दिने भवे मच्चू नन्नहा जिणभासिअं ॥ १ ॥"

"सूर्यनुं, चंद्रनुं अने जन्मनुं ए त्रणे नक्षत्रो ज्यारे एक नाडी पर आवे, ते दिवसे रोगीनुं मरण थाय छे. जिनेश्वरनुं वचन अन्यथा थतुं नथी."

अहीं कोइ आम पण कहे छे के—

"रोगिणो जन्मऋक्षस्य एकनाड्यां यदा रविः ।
यावदृक्षं रवेर्भोग्यं तावत्कष्टपरंपरा ॥ १ ॥"

"रोगीना जन्मनक्षत्रनी एक (सरखी) नाडी उपर ज्यारे सूर्य होय अने जेटलुं नक्षत्र सूर्यने भोगववानुं होय तेटला वखत सुधी रोगीने कष्टनी परंपरा रहे छे."

"रोगिणो जन्मऋक्षस्य एकनाड्यां यदा शशी ।
तदा पीडां विजानीयादष्टप्राहरिकीं ध्रुवम् ॥ २ ॥"

"रोगीना जन्मनक्षत्रनी एक (समान) नाडी उपर ज्यारे चंद्र होय त्यारे आठ पहोर सुधीनी अवश्य पीडा जाणवी."

"क्रूरग्रहास्तदाऽन्ये तु यदि तत्रैव संस्थिताः ।
तदा काले भवेन्मृत्युः सत्यमीशानभाषितम् ॥ ३ ॥"

"ते वखते बीजा क्रूर ग्रहो जो त्यां ज रहेला होय, तो ते ज वखते मृत्यु थाय छे. एवुं ईश्वरनुं वचन सत्य छे."

आ अने बीजा प्रकारोवडे विचारीने क्रूर ग्रह, दशा, चंद्रनी प्रतिकूळता, तिथि विगेरे, भेद विगेरे वडे आम्नायमां कह्या प्रमाणे जोइने रोगीना मृत्युना समयनो निर्णय करवो.

"क्षेत्र खेडवाना आरंभना दिवसनुं नक्षत्र जो दंडिकामां रह्युं होय तो बळदनी हानि थाय, यूपमां रह्युं होय तो तेना स्वामी (खेडूत)ने भय थाय, अने लांगल के योत्रमा रह्युं होय तो लक्ष्मी प्राप्त थाय."

व्यवहारप्रकाशमां पण कह्युं छे के—

"पूष्णो भुक्तभतस्त्रयं न शुभदं श्रेष्ठं चतुर्थात्त्रयम् ,
न श्रेष्ठं त्रितयं च सप्तमभतो दिग्भाच्छुभं पञ्चकम् ।
सीरेऽर्क्यं त्रितयं न पञ्चदशतोऽप्यष्टादशात् पञ्चकं,
श्रेष्ठं नैव शुभं त्रयं च विकृतेः २३ षड्विंशतेः सत्त्रयम् ॥ १ ॥"

"हळचक्रमा सूर्ये भोगवेला नक्षत्रथी प्रथमनां त्रण शुभ नथी, त्यारपछी चोथाथी त्रण सारां छे, त्यारपछी सातमाथी त्रण सारां नथी, त्यारपछी दशमाथी पांच सारा छे, त्यारपछी पंदरमाथी त्रण सारां नथी, त्यारपछी अढारमाथी पांच सारां छे, त्यारपछी त्रेवीशमाथी त्रण सारां नथी, अने त्यारपछी छवीशमाथी त्रण सारा छे."

हवे बीज वाववानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

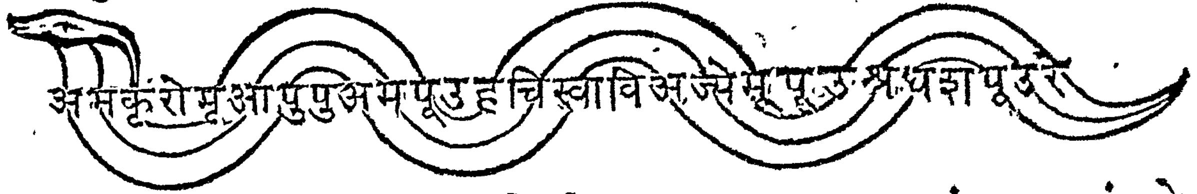
बीजोप्तौ प्रतिषिद्धानि पूर्वा भरणीद्वयम् ।
सार्पादित्यश्रुतिज्येष्ठाविशाखावारुणान्यपि ॥ ७७ ॥

अर्थ—बीज वाववामा पूर्वा ३, भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, पुनर्वसु, श्रवण, ज्ये विशाखा अने शतभिषक्, आटलां नक्षत्रो निषिद्ध छे, एटले अशुभ छे. ते सिवाय बीजां सर्वे शुभ छे; परंतु "उपर कहेला हळचक्रमां शुभ होय एवुं नक्षत्र लेवुं" । रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे विशेष आ प्रकारे छे.—

"स्थाप्योऽहिः सूर्यभुक्ताद्भान्त्रिनाड्येकान्तरक्रमात् ।
मुखे त्रीणि गले त्रीणि भानि द्वादश चोदरे ॥ १ ॥
वेदाः पुच्छे बहिः पञ्च दिनभाच्च फलं वदेत् ।
दुर्भिक्षञ्जनमन्नाप्तिः क्रमान्निष्कणतेतिभीः ॥ २ ॥"

त्रिनाडीवाळो सर्प स्थापवो. तेमां सूर्ये भोगवीने मूकेला नक्षत्रथी आरंभीने एक एक आंतरावाळा नक्षत्रो मूकवां. तेमा मुखमा त्रण, कंठमा त्रण, उदरमां बा पुच्छमा चार अने पाच बहार. पछी इष्ट दिवसे जे नक्षत्र होय तेने आश्रीने आ फळ कहेवुं तेमां जो इष्ट नक्षत्र मुखनां त्रण नक्षत्रमाथी होय तो ते दिवसे वावेलुं वि थाय एटले धान्यनी वृद्धि थाय नहीं, गळानां त्रणमांथी होय तो अंजन एटले रनी वृद्धि थाय, उदरनां बारमांथी होय तो अन्ननी वृद्धि थाय, पुच्छनां चारमांथी तो कण रहितपणुं (बगसर) थाय एटले के अनाज पाके नहीं, अने बहारनां नक्षत्रोमाथी होय तो मूषकादिक ईतिनो भय थाय.

त्रिनाडीक सर्प स्थापना.—



आ प्रमाणे रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे. तेमज व्यवहारप्रकाशमां पण कह्युं छे के—

"अर्कभुक्ताष्टमात्रीणि द्वादशाच्च त्रयं शुभम् ।
बीजोप्तौ षोडशात्रीणि एकविंशात्तथा त्रयम् ॥ १ ॥"

"सूर्ये भोगवेला नक्षत्रथी गणतां आठमा नक्षत्रथी त्रण नक्षत्रो शुभ छे, बारमाथी त्रण शुभ छे, सोळमाथी त्रण अने एकवीशमाथी त्रण सारां छे. अर्थात् आ बार नक्षत्रो शुभ छे. बीजां अशुभ छे."

कृषिने माटे ज नक्षत्र आश्री शुभाशुभ फळ कहे छे.—

कृषिरूचे सूर्यर्क्षादिषु ५ कु १ रसे ६ न्दू १ म्नि ३ नू १ रसे ६ न्दु १ युगैः ४ ।
असुख १ सुख २ मध्य ३ लाभा ४ रति ५ रति ६ मध्या ७ र्थ ८ दुःखए कृत्क्रमशः ९ए

अर्थ—सूर्यना नक्षत्रथी आरंभीने प्रथमनां पांच नक्षत्रोमां कृषि करी होय तो ते कृषि असुखकारक छे, त्यारपछीना एक नक्षत्रमां करी होय तो ते सुखकारक छे, त्यारपछीनां छ नक्षत्रमां मध्यम छे, त्यारपछीनुं एक नक्षत्र लाभकारक छे, त्यारपछीनां त्रण नक्षत्रो अरति (असुख)कारक छे, त्यारपछीनुं एक नक्षत्र रति (सुख)-कारक छे, त्यारपछीनां छ नक्षत्रो मध्यम छे, त्यारपछीनुं एक लक्ष्मी आपनार छे, अने त्यारपछीनां चार दुःखकारक छे.

अहीं कृषिना चक्रमां शनि नरनी जेम नरनो आकार नथी कह्यो तोपण जाणवो, [१]तेथी सूर्यना नक्षत्रथी आरंभीने मुख विगेरे नव अवयवोमां अठ्यावीश नक्षत्रो आ प्रमाणे स्थापवां.

कृषि नरनी स्थापना.—

मुखे	५	असुख
दक्षिण करे	१	सुख
पादद्वये	६	मध्यम
वाम करे	१	लाभ
उदरे	३	अरति

१ भरणी नक्षत्रमां रहेला सूर्यनी कल्पना करी छे, तेथी अश्विनी भुक्त थयुं, माटे अश्विनीथी आरंभ कर्यो छे.

मस्तके	१	रति
नेत्रद्वये	६	मध्यम
गुदे	१	लक्ष्मी
गुह्ये	४	दुःख

जळाशय नवुं करवानुं मुहूर्त कहे छे—

जलाशयं न कुर्वीताश्विनीभरणीमिश्रभैः ।
आजपादश्रुतिस्वातिभाग्यदारुणभैस्तथा ॥ ८० ॥

अर्थ—वाव, कूवा, तळाव विगेरे जळाशय खोदाववानुं मुहूर्त अश्विनी, भरणी, मिश्र (विशाखा अने कृत्तिका), पूर्वाभाद्रपद, श्रवण, स्वाति, पूर्वाफाल्गुनी अने दारुण एटले अश्लेषा, ज्येष्ठा, मूळ अने आर्द्रा, ए नक्षत्रोमां करवुं नहीं

हवे वृक्ष वाववानुं मुहूर्त कहे छे.—

न वृक्षरोपणं कुर्यात्क्रूरार्द्रादित्यवह्निभैः ।
अश्लेषामारुतज्येष्ठाधनिष्ठाश्रवणैरपि ॥ ८१ ॥

अर्थ—क्रूर नक्षत्रो (त्रण पूर्वा, भरणी अने मघा), आर्द्रा, पुनर्वसु, कृत्तिका, अश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा, धनिष्ठा अने श्रवण, आ नक्षत्रोमां वृक्षनुं आरोपण करवुं नहीं.

हवे नृत्य करवानुं तथा शीखवानुं अने मदिरापाननुं मुहूर्त कहे छे.—

नृत्तं मैत्रे स्याद्धनिष्ठाद्वये वा,
हस्तज्येष्ठापुष्यपौष्णोत्तरे ३ वा ।
संधानाद्यं नाचरेत् किं च मुक्त्वा,
धिष्ण्यं क्रूरं दारुणं वारुणं वा ॥ ८२ ॥

अर्थ—अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषक्, हस्त, ज्येष्ठा, पुष्य, रेवती अने त्रण उत्तरा आटला नक्षत्रमां नृत्य (नाटक) करवानो तथा शीखवानो आरंभ कराय छे. त्रण, भरणी, त्रण पूर्वा, मघा, अश्लेषा, ज्येष्ठा, मूळ, आर्द्रा अने शतभिषक्, आ नक्षत्रो सिवाय बीजां नक्षत्रोमां मदिरा विगेरेनुं आचरण (पान) न करवुं.

आ त्रीजा विमर्शमां आटला उपयोगी कार्योना नामपूर्वक तेमनां मुहूर्तो कह्यां आ सिवाय बीजां पण शुभाशुभ कार्यो छे, तेमनुं संक्षेपथी वर्णन पूर्णभद्रना अनुसारे करीए छीए.—

"रित्तितिहि असुहजोगे कूरविलग्गाइ कूरवारे अ ।
आयरइ कसिणपक्खे असुहे अन्नत्थ विवरीअं ॥ १ ॥"

अशुभ कार्यो रिक्ता तिथिमां, अशुभ योगमां, क्रूर लग्नादिकमां, क्रूर वारमां अने कृष्णपक्षमां करवा लायक छे, अने अन्यत्र एटले शुभ कार्योमां एथी विपरीत जाणवुं. 'जे लग्न क्रूर छ वर्गवाळुं, क्रूर ग्रहे अध्यास करेलुं, अथवा क्रूर ग्रहे जोयेलुं होय तेमज (आदि शब्द होवाथी) तीक्ष्ण, उग्र अने मिश्र नक्षत्रो क्रूर ग्रहे अध्यास करेलां होय, अथवा पात अने उपग्रहादिकवडे हणायेलां होय तेवा समये अशुभ कार्य करवामां आवे छे. मूळ गाथामां "क्रूरवारे अ" अहीं च शब्द होवाथी क्रूर वारमां, क्रूर होरामां तथा क्रूर करण एटले विष्टि विगेरेमां, ए रीते जाणवुं. अन्यत्र विपरीत जाणवुं. एटले के शुभ कार्यमां तिथि विगेरे सर्वे शुभ ज लेवानां छे. लग्न पण शुभ छ वर्गवाळुं, शुभ ग्रहोए अध्यासित अने शुभ ग्रहोए जोयेलुं लेवुं. नक्षत्रो पण कार्यने अनुसारे चर, लघु, मृदु अने ध्रुव तथा सौम्य ग्रहोए अध्यासित लेवानां छे. आ कार्योमां लग्ननो कांइ आग्रह थी, केमके—"लग्नं विवाहे दीक्षायां प्रतिष्ठायां च शस्यते" "विवाहमां, दीक्षामां अने तिष्ठामां लग्न लेवुं शुभ छे." एम आगल कहेवाना छे, परंतु जेओ आ उपरनां शुभ ार्योमां पण लग्ननो आदर करवा इच्छे छे, तेमने माटे ज आ (त्रीजा) विमर्शमां मौंजी-धनथी आरंभीने अग्निना आधान पर्यंतनां कार्योमां तथा आवता (चोथा) विमर्शमां यात्रामां अने गृहनुं निवेशन तथा प्रवेश करवामां सूत्रकारे ज (मूळ ग्रंथकारे ज) नुं बळ लेवानुं कह्युं छे, अने जे कार्योमां लग्ननुं बळ लेवानुं कह्युं नथी, तेओमां ा प्रमाणे जाणवुं.—

प्रथम गर्भाधान विषे कहे छे.—

शुक्रेज्ययोर्बलवतोः शेषेष्वबलेषु पुंप्रसवयोगे ।
द्विपदे लग्ने शीर्षोदयिनि च गुरुशुक्रयुतदृष्टे ॥ १ ॥
यद्वा त्रिकोणकेन्द्रस्थितयोरनयोः स्वजन्मलग्ने वा ।
लग्नोपचये चन्द्रे ऋतौ सुतार्थी व्रजेद्भार्याम् ॥ २ ॥

शुक्र अने गुरु बळवान् होय, बीजा ग्रहो बळवान् न होय, पुंप्रसव नामनो योग ा, लग्न बे पादनुं (मिथुन कन्या तुला धन कुंभ) तथा शीर्षोदयी (मीन) छे, अने गुरु तथा शुक्र सहित होय अथवा गुरु अने शुक्र देखता होय अथवा गुरु त्रिकोण के केन्द्रमां रह्या होय अथवा पोताना जन्मना लग्नमां रह्या होर लग्नमां के उपचयस्थानमां रह्यो होय त्यारे पुत्रना अर्थी पुरुषे ऋतुना ि मना चार दिवस वर्जीने) स्त्री प्रत्ये गमन करवुं.

पुंप्रसव नामनो योग जातकमां आ प्रमाणे कह्यो छे

विषमर्क्षे विषमनवांशसंस्थिता गुरुशशांकलग्नार्काः ।
पुंजन्मकराः समभेषु योषितां समनवांशगताः ॥ १

ग्नमां रह्या होय, तथा

गुरु के बुधना वर्गमां चंद्र रह्यो होय त्यारे विद्या अने शिल्पनो आरंभ करवो शुभ छे.

॥ इति विद्या ए शिल्पारंभौ १० ॥

हवे नाटक तथा काव्यना आरंभ विषे कहे छे.—

बुधे विलग्ने शशिनि ज्ञराशौ गुरुवीक्षिते ।
हिबुकस्थैः शुभैर्नृत्यं काव्यं चारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥

लग्नमां बुध रह्यो होय, बुधनी राशिमां चंद्र रह्यो होय अने तेना पर गुरुनी दृष्टि पडती होय तथा शुभ ग्रहो चोथा स्थानमां रह्या होय त्यारे डाह्या पुरुषो नृत्य तथा काव्यनो आरंभ करे छे.

॥ इति नाट्य ११ काव्यारंभौ १२ ॥

हवे मंत्रादिक ग्रहण करवानो समय कहे छे.—

शीतांशौ बुधराशिस्थे शुभेषूदयवर्त्तिषु ।
मंत्रादिग्रहणं कार्यं हित्वा पापग्रहोदयम् ॥ १२ ॥

चंद्र बुधनी राशिमा रह्यो होय, शुभ ग्रहो उदयमां वर्त्तता होय, अने पाप उदय न होय त्यारे मंत्रादिक ग्रहण करवुं

॥ इति मंत्रादिग्रहणं १३ ॥

हवे वेतालमंत्रादिकना साधवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

पित्र्यैशयाम्यमूलेन्दुभेषु शुक्रेऽष्टमेऽपि च ।
वेतालसिद्धिः पाताले भृगौ ज्ञे कुंभलग्नगे ॥ १३ ॥

मघा, भरणी, मूल अने मृगशिरमां आठमुं स्थान शुद्ध होय त्यारे तथा चोथा नमा शुक्र होय अने कुंभ लग्नमां बुध रह्यो होय त्यारे वेताल मंत्रादिक सिद्ध थाय

॥ इति वेतालमंत्रादिसाधनम् ॥ १४

हवे धर्मना आरंभनुं तथा नंदी मांडवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

हिबुकेऽर्के गुरौ लग्ने धर्मारंभो रवेर्दिने ।
गुरुज्ञलग्नवर्गे वा शुभारंभालयोर्बले ॥ १४ ॥

सूर्य चोथा स्थानमां रह्यो होय अने लग्नमां गुरु रह्यो होय त्यारे रविवारे धर्मनो आरंभ करवो, अथवा गुरु, बुध अने लग्नना वर्गमा अथवा ते (रवि अने गुरु) नुं बळ होय त्यारे शुभ कार्यना आरंभ करवा.

॥ इति धर्मारंभ १५ नन्द्यादिके ॥ १६

हवे दीक्षानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

मोक्षार्थिनां च दीक्षा स्थिरोदये कर्मगे त्रिदशपूज्ये
पापैर्धर्मभास्तैर्बलहीनैः प्रव्रजितयोगे ॥ १५ ॥

स्थिर लग्नना उदयमां गुरु दशमे स्थाने रह्यो होय, पाप ग्रहो नवमा स्थानमां रह्या होय अने बळहीन (निर्बळ) होय तथा प्रव्रजित योग होय त्यारे मोक्षना अर्थीए दीक्षा ग्रहण करवी. चार, पांच के तेथी पण वधारे ग्रहो एक स्थानमां रह्या होय त्यारे प्रव्रजित योग कहेवाय छे. तेमज जन्मवखते जे राशिमां चंद्र होय, ते राशिना स्वामीने बीजा ग्रहो जोता न होय, पण ते (स्वामी) शनिने जोतो होय, त्यारे प्रव्रजित योग थाय छे. अथवा तो ते राशिना स्वामीने शनि जोतो होय त्यारे पण प्रव्रज्या योग कहेवाय छे.

। इति दीक्षा । १७

हवे आयुष्यनां कार्यो आश्री कहे छे.—

पूर्णे चन्द्रे वेश्म ४ गेऽर्केऽम्बर १० स्थे, जीवे लग्ने वाक्पतेर्वासरे च ।
श्रीमन्त्यायुष्याणि कार्याणि कार्याण्युक्तस्तस्मिन्नेव राज्याभिषेकः ॥ १६ ॥

परिपूर्ण चंद्र चोथा स्थाने रह्यो होय, सूर्य दशमे स्थाने रह्यो होय अने गुरु लग्नमां रह्यो होय त्यारे गुरुवारने दिवसे लक्ष्मीवाळां आयुष्यनां कार्यो करवां, अने आ मुहूर्त्तमां ज राज्याभिषेक करवानुं पण कह्युं छे.

। इति आयुष्यकार्याणि । १८

हवे वस्त्र ग्रहण करवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

वस्त्रग्रहणं कुर्यात् क्रूरैस्त्यक्ताष्टमान्तिमैर्लग्ने ।
उपचयभेषु च सद्भिर्दृष्टेष्विन्दावुपचयस्थे ॥ १७ ॥

क्रूर ग्रहो आठमा के बारमा स्थानमां रहेला न होय, लग्नमां अने उपचयस्थानमां रहेला ग्रहो उपर शुभ ग्रहोनी दृष्टि पडती होय तथा चंद्र उपचयस्थानमां रह्यो होय त्यारे नवा वस्त्रनुं ग्रहण करवुं.

। इति वस्त्रव्यापारः । १९

औषधनो आरंभ करवा विषे कहे छे.—

औषधसेवा विहिता शुभाय बलवत्सु सौम्यखेटेषु ।
निधनान्त्यसप्तमरिपुत्यक्ते क्रूरे विना रिष्टम् ॥ १८ ॥

सौम्य ग्रहो बळवान् होय, क्रूर ग्रहो आठमे, बारमे, सातमे अने छठ्ठे स्थाने रह्या न होय, तथा रिष्ट योग न होय त्यारे औषधनुं सेवन कर्युं होय तो ते शुभकारक छे. (रिष्ट योगो जातकमां कह्या छे, ते जाणवा.)

। इति औषधसेवा । २०

हवे रोगथी मुक्त थयेलाने स्नान करवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

लग्ने चरे केन्द्रगते च जीवे, क्रूरे दिने रिक्ततिथौ कृशेन्दौ ।
केन्द्रत्रिकोणोपगतैश्च पापैः, स्नानं हितं रोगविमुक्तिकाले ॥ १९ ॥

हर्षप्रकाशमां कहेल ठे के—"पमिवइनवमठमिचउदसीसु गमणंकरे न वुहवारे" एकम, नोम, आठम अने चौदसे गमन करवुं, पण बुधवारे गमन न करवुं. अथवा वारनी शुद्धि यतिवल्लनमां आ प्रमाणे कही ठे.—

"चैत्राद्या द्विगुणा मासा वर्त्तमानदिनैर्युताः ।
सप्तनिस्तु हरेन्नागं यच्छेपं तद्दिनं नवेत् ॥ १ ॥
श्रीदिनः १ कलहश्चैव २ नन्दनः ३ कालकर्णिका ४ ।
धर्मः ५ क्षयो ६ जय ७ श्चेति दिना नामसदृक्फलाः ॥ २ ॥"

"चैत्रादिक मासथी गणता जेटलामो मास चालतो होय तेने बमणा करवा, तेमां रवि-वारादिकथी गणतां चालतो दिवस जेटलामो होय तेटला उमेरवा. पछी तेने साते नागवा. जेटला शेष रहे तेटलामो ते दिवस अनुक्रमे आ प्रमाणे जाणवो—श्रीदिन १, कलह २, नंदन ३, काळकर्णिका ४, धर्म ५, क्षय ६ अने जय ७. आ दिवसोनुं शुनाशुन फळ पोताना नाम प्रमाणे जाणवुं"

तिथिमां पक्ष, ठिद्र, अचम, फल्गु, दग्ध अने क्रूर ए नामनी तिथिनो त्याग करवाथी तिथिनी शुद्धि कहेवाय ठे, पूर्णिमा पण त्याज्य ठे. ते विषे व्यवहारसारमां कह्युं ठे के—"पूर्णिमायां न गन्तव्यं यदि कार्यशतं नवेत्" "सो कार्य होय तोपण पूर्णिमाने दिवसे प्रयाण करवुं नहीं.

तारानी शुद्धि माटे "जन्म तारा आधान तारा" विगेरे प्रथम कह्यु ठे, ते प्रमाणे जाणवुं यात्रामां तारानुं बळ अवश्य ग्रहण करवा योग्य ठे. नक्षत्रोमां अनिजित् पण यात्रामां श्रेष्ठ ठे ते विषे लल्ल कहे ठे के—"अनिजिति कृतप्रयाणः सर्वार्थान् साधये-न्नियतं" "अनिजितमा प्रयाण करनार सर्व कार्यने अवश्य साधे ठे.." वळी दिनशुद्धिमां आ प्रमाणे विशेष कह्युं ठे के—

"दसमि तेरसि पंचमि वीअगो, निगुसुर्ठ गमणेऽतिसुहावहो ।
शुरु पुणबसु पुस्स विसेसर्ठ, सयनिसा अणुराह वुहे तहा ॥ १ ॥"

"गमनमां दशमी, तेरस, पाचम, बीज ने शुक्रवार अति शुनकारक ठे पुनर्वसु, पुष्य अने गुरुवार विशेषे करीने शुनकारक ठे. तथा शतनिषक् अने अनुराधा बुधवारे शुनकारक ठे."

तथा चंद्र संबंधी गोचरनुं, शिव नुजग आदि दिवस रात्रि मुहूर्त्तोनुं, अने लग्नबळ होय तो मुहूर्त्त ग्रहण करवु.

"पहि कुसलु लग्गि तिहिं कज्जसिद्धि लाने मुहुत्तर्ठ होइ ।
रिस्केण आरुग्गं चदेणं सुरकसंपत्ती ॥ १ ॥"

"शुभ लग्नथी मार्गमां कुशल होय. शुभ तिथिथी कार्यसिद्धि थाय. शुभ मुहूर्त्तथी लाभ थाय. शुभ नक्षत्रथी आरोग्य थाय. अनुकूल चंद्रथी सुखप्राप्ति थाय."

तथा "शुभ लग्ने करीने सर्वे तिथ्यादिकना गुणो पमाय छे." एम लल्ल कहे छे.

हवे प्रयाणमां मध्यम अने निंद्य नक्षत्रो कहे छे.—

मध्या तु ध्रुवपूर्वाज्येष्ठाद्वयवारुणेषु यात्रा स्यात् ।
निन्द्यार्द्राभरणीद्वयचित्रात्रयसार्पपैत्रेषु ॥ ४ ॥

अर्थ—ध्रुव नक्षत्र (रोहिणी अने त्रणे उत्तरा), पूर्वा त्रणे, ज्येष्ठा, मूळ अने शतभिषकमां यात्रा मध्यम फळवाळी छे, अने आर्द्रा, भरणी, कृत्तिका, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अश्लेषा अने मघा, आटलां नक्षत्रोमां यात्रा करवी निंद्य—अशुभ छे. "आ निंद्य नक्षत्रोमां प्रयाण कर्युं होय तो ते कदापि पाछो आवतो नथी," एम व्यवहारसारमां कह्युं छे. नारचंद्रमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे के—"ज्येष्ठा अने मूळमां यात्रा करवी श्रेष्ठ छे, चित्रा, स्वाति, श्रवण अने धनिष्ठामां मध्यम छे, तथा त्रण उत्तरामां निंद्य छे.' विशेष आ प्रमाणे जाणवुं.—

"अशुभे भे शुभे घस्रे दिवा यात्रादि साधयेत् ।
शुभे भे त्वशुभे घस्रे रात्रौ यात्रादि साधयेत् ॥ १ ॥"

"अशुभ नक्षत्र होय अने शुभ दिवस होय तो दिवसने विषे प्रयाणादिक करवुं, आ नक्षत्र शुभ होय अने दिवस अशुभ होय तो प्रयाणादिक रात्रिए करवुं," कारण —"नक्षत्रं बलवद्रात्रौ दिने बलवती तिथिः" । "रात्रिए नक्षत्र बळवान् होय छे, ने तिथि दिवसे बळवान् होय छे," एम लल्ल कहे छे.

हवे नक्षत्रने आश्रीने यात्रामां दिनांशनो नियम कहे छे.—

न दिवाद्ये ध्रुवमिश्रैस्तीक्ष्णैर्मध्येऽथ लघुभिरन्त्येंऽशे ।
अंशेष्विति रात्रेरपि मैत्रो १ ग्र २ चरै ३ र्न भैर्यात्रा ॥ ५ ॥

अर्थ—दिवसना त्रण भाग करवा, तेमां पहेला भागमां ध्रुव अने मिश्र नक्षत्र होय यात्रा न करवी, बीजा भागमां तीक्ष्ण नक्षत्र होय अने त्रीजा भागमां लघु नक्षत्र होय तो यात्रा न करवी. ए ज रीते रात्रिना पण पहेला भागमां मैत्र नक्षत्र होय, बीजामां उग्र होय अने त्रीजामां चर नक्षत्र होय त्यारे यात्रा (प्रयाण) न करवी. तेना फळ विषे लल्ल कहे छे के—

"धनहानिर्मृत्युर्वा नियतो भंगः पराजयश्चैव ।
यस्मादेभिः कालैः प्रायेण विवर्जयेत्तस्मात् ॥ १ ॥"

"जेथी करीने आ उपर कहेला काळे प्रयाण कर्युं होय तो प्राये करीने धननी हानि,

मृत्यु, अवश्य भंग अथवा पराजय थाय छे, तेथी करीने ए नक्षत्रो ए काळे वर्जवा योग्य छे

आ उपर कहेला काळे पण प्रयाण थइ शके, तथा आगळ कहेवाशे एवा पण प्रयाण थइ शके एवां नक्षत्रो कहे छे —

सर्वदिग्द्वारकौ पुष्यहस्तौ मैत्राश्विनीयुतौ ।
तावेव सर्वकालीनौ मृगश्रुतिसमन्वितौ ॥ ६ ॥

अर्थ—पुष्य, हस्त, अनुराधा अने अश्विनी, ए नक्षत्रो सर्व (आठे) दिशामां द्वा(मुख)वाळां छे, एटले के आ नक्षत्रोमा परिघ के नक्षत्र दिक्शूळ होतो नथी. ना चंद्रमां कह्युं छे के श्रवण अने रेवती पण सर्व दिशामां द्वारवाळा छे. पुष्य, हस्त, मृ शिर अने श्रवण, ए नक्षत्रो सर्वकालीन (सर्व काळवाळां) छे, एटले के आ न उपरनो (पाचमो) श्लोक गणवो नहीं अर्थात् आ नक्षत्रो होय तो उपरनो अशु काळ पण शुभ गणवो

दिनशुद्धिमां तो दिग्यात्रामां छ नक्षत्रोने सर्व दिशामां सर्वकालीन कह्यां छे.—

"सवदिसि सवकाल रिद्धिनिमित्तं विहारसमयम्मि ।
पुस्सस्सिणि मिग हत्था रेवइ सवणा गहेअवा ॥ १ ॥"

"पुष्य, अश्विनी, मृगशिर, हस्त, रेवती अने श्रवण, ए छ नक्षत्रो सर्व दिशामां कालीन छे, तेमने विहारसमये समृद्धिना निमित्ते ग्रहण करवां, एटले के ए नक्ष प्रयाण करवाथी समृद्धि मळे छे "

हवे यात्रामा दिशानी शुद्धि कहेवा माटे परिघ कहे छे.—

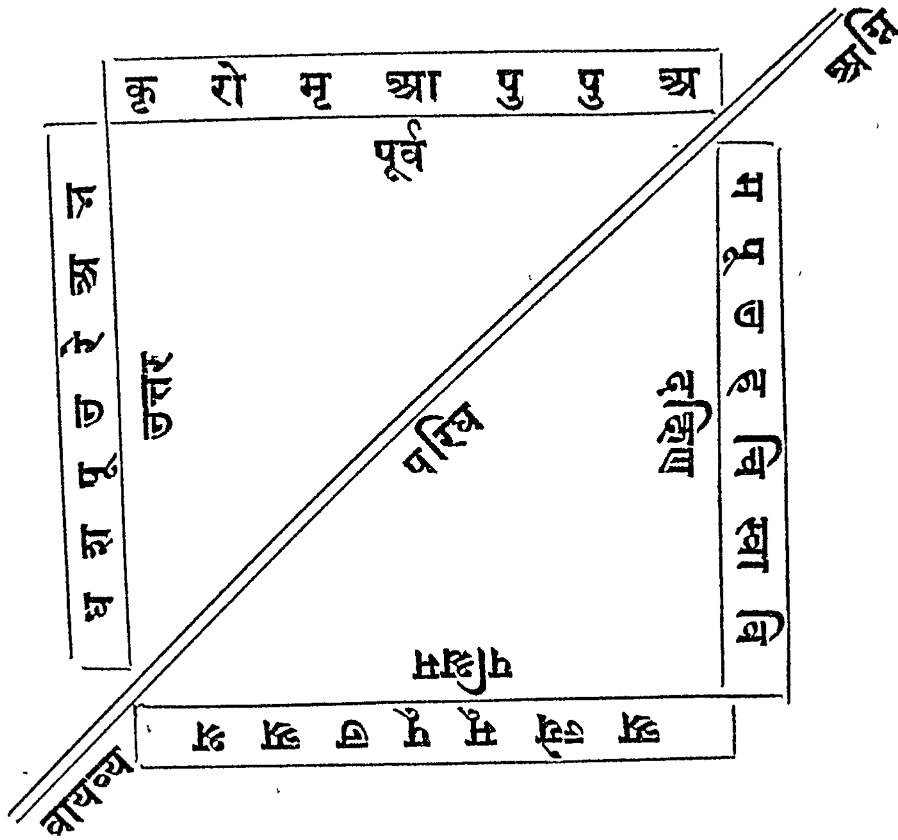
सप्त सप्त गमने वसुभक्षादुत्तराप्रभृतिदिक्षु शुभानि ।
वह्निवायुपरिघोऽत्र न लंघ्यो, मध्यमानि तु मिथः स्वदिशोः

अर्थ—उत्तर दिशाथी आरंभीने चारे दिशामां धनिष्ठा नक्षत्रथी सात सात गमन करवामा शुभ छे आ गमनमा अग्नि अने वायव्य कोणनो परिघ उल्लंघन योग्य नथी अने पोतानी बे दिशाओना नक्षत्रो परस्पर स्व कहेवाय छे, ते गमनमां म

धनिष्ठा नक्षत्रथी आरंभीने सात सात नक्षत्रो उत्तर विगेरे चारे दिशामां गमन वाने विषे शुभ छे, एटले के आ सात सात नक्षत्रो उत्तरादिक दिशाना द्वारवाळा धनिष्ठाथी सात नक्षत्रो उत्तर द्वारवाळा छे, तेथी ते नक्षत्रोमा उत्तर दिशानुं छे ए रीते चारे दिशामा जाणवुं स्थानांग सूत्र अने चंद्रप्रज्ञप्तिनी वृत्ति छे के—"धनिष्ठानी जेम कृत्तिकाथी आरंभीने, मघाथी आरंभीने अने आरंभीने सात सात नक्षत्रो अनुक्रमे पूर्व, दक्षिण अने पश्चिम दिशाना द्वारवा तेथी ते ते नक्षत्रोमा ते ते दिशामा यात्रा करवी शुभ छे"

अहीं सप्त रेखावाळा चक्रनी जेम पूर्वादिक चार दिशामां कृत्तिकाथी सात सात नक्षत्रो स्थापवां, अने अग्नि तथा वायव्य खूणामां लांबो परिघ करवो.

परिघ यंत्र.



आ अग्नि अने वायव्य खूणानी वच्चेनो रेखारूप परिघ उल्लंघन करवा योग्य नथी, एटले के धनिष्ठा विगेरे चौद नक्षत्रोमां उत्तर अने पूर्वमां ज जवुं, अने मघा विगेरे चौद नक्षत्रोमां दक्षिण अने पश्चिममां ज गमन करवुं, पण उत्तर अने पूर्वना द्वारवाळां नक्षत्रमां दक्षिण के पश्चिममां गमन न करवुं इत्यादि. तेमां पण परस्पर स्वजनरूप नक्षत्रो के जे परिघना एक भागमां (उत्तर पूर्वमां अमे दक्षिण पश्चिममां) जे नक्षत्रो रहेलां छे तेनी बन्ने दिशानां ते ते नक्षत्रो यात्रामां मध्यम छे, एटले शुभ पण नथी तेमज अशुभ पण नथी. तात्पर्य ए छे जे धनिष्ठादिक सात नक्षत्रोना कृत्तिकादिक सात नक्षत्रो स्वजन छे, अने ते (स्वजन)नी दिशा पूर्व छे, तेथी ते (पूर्व)मां गमन करवामां धनिष्ठादिक सात नक्षत्रो मध्यम छे, ए रीते कृत्तिकादिक सात नक्षत्रोना धनिष्ठादिक सात नक्षत्रो स्वजन छे अने तेनी दिशा उत्तर छे, तेथी उत्तरमां गमन करवामां कृत्तिकादिक सात नक्षत्रो मध्यम छे. ए रीते ज बीजी बे दिशामां जाणी लेवुं.

अहीं कोइ शंका करे के—आ परिघ कहेवाथी दिशाओ आश्री नक्षत्रनो नियम कह्यो,

पण विदिशा (खूणा)ओमां गमन करवा विषे नक्षत्रनो शो नियम थयो ? तेनो जव
ए छे जे—पूर्व द्वारनां नक्षत्रोमां अग्नि कोण तरफ गमन करवुं, दक्षिण द्वारनां नक्षत्रोम
नैर्ऋत्य खूणामां गमन करवुं, पश्चिम द्वारवाळामा वायव्य तरफ अने उत्तर द्वारवाळामा
ईशान तरफ गमन करवु आ रीते विदिशाओ दिशाओने अनुसरे छे, माटे तेने ।.
पण नियम प्रगट ज छे. दैवज्ञ वल्लभ पण कहे छे के—"यायात् पूर्वद्वारभैरग्निकाद्यां प्राद
क्षिण्येनैवनाशाविपूर्वाः" "पूर्व द्वारनां नक्षत्रोमां अग्नि खूणा तरफ जवुं, ए रीते बीज
विदिशाओ पण प्रदक्षिण क्रमे करीने जाणवी." पूर्णभद्र तो आ नियम साथे आ भम
विशेष कहे छे.—

"स्वामिनः सप्त भौमाद्याः क्रमतः कृत्तिकादिषु ।
प्राच्यादौ तत्सनाथेषु भेषु यात्रा महाफला ॥ १ ॥"

"कृत्तिकादिक सात नक्षत्रना अनुक्रमे मंगळथी आरंभीने चंद्र पर्यंत सात स्व .
छे. ए रीते मघादिक विगेरेमां पण मंगळथी आरंभीने ज स्वामीओ जाणवा. तेमां .
अने मंगळवारे पूर्व दिशामा गमन करवुं एम ते ते नक्षत्रोमां ते ते वारे ते ते .
गमन करवाथी महाफळ प्राप्त थाय छे"

"प्राच्यादिषु चरन् भानुः सप्तके कृत्तिकादिके ।
वितनोति दिशामस्तं यात्रा तासु कृता श्रिये ॥ २ ॥"

"कृत्तिकादिक सात सात नक्षत्रोमा पूर्वादिक दिशाओने विषे चालतो सूर्य
अस्त करे छे, तेथी ते दिशाओमां करेली यात्रा (गमन) लक्ष्मीने माटे छे."

हवे परिघनो अपवाद तथा नक्षत्र शूळ कहे छे.

उल्लंघ्यः परिघोऽपि लग्नबलतः शूलं तु भानां सदा,
हेयं तच्च पुनः सुरेश्वरदिशि ज्येष्ठाम्बुविश्वोडुभिः ।
राधावैष्णववासवाजपदभैर्याम्यां प्रतीच्यां पुन-
र्ब्राह्म्या मूलयुजा तथोत्तरदिशि स्यादर्यमर्क्षेण च ॥ ८ ॥

अर्थ—लग्नना बळथी परिघनुं पण उल्लंघन करवु, एटले के शत्रुसैन्यनुं
विगेरे एकांतिक (आवश्यक) कार्योमां गमन करवानी दिशानुं मुख शुद्ध हो
लग्न ग्रहना बळथी युक्त होय त्यारे परिघनुं उल्लंघन करवामा दोष नथी, परंतु नक्षत्र
सदा त्याग करवा लायक छे, एटले के शूळ नक्षत्र होय तो लग्ननी शुद्धि छता पण
न करवु, कारण के नक्षत्र शूळनो दोष शुद्ध लग्नथी पण नाश पामतो नथी ते विषे
हीरप्रकाशमा कह्युं छे के—"त्यजेल्लग्नेऽपि शुद्धर्क्षे शूलर्क्षे नास्ति निर्वृतिः ।" "लग्न

ठतां पण शूळ नक्षत्र वर्जवा योग छे, केमके शूळ नक्षत्रमां गमन करवाथी पाछुं अवातुं नथी." ते नक्षत्र शूळ आ प्रमाणे छे.—

ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा अने उत्तराषाढा ए पूर्व दिशामां नक्षत्र शूळ छे. दक्षिणमां विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा अने पूर्वाभाद्रपद ए नक्षत्र शूळ छे. पश्चिममां रोहिणी अने मूळ नक्षत्र शूळ छे. तथा उत्तर दिशामां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र शूळ छे. (आ नक्षत्र दिक्शूळ कहेवाय छे.)

पूर्णचन्द्र तो आ प्रमाणे नक्षत्र दिक्शूळ कहे छे.—

"पूवाइ जिठऽसाढा धणिठ पुवभद्द दाहिण दिसाए ।
रोहिणि मूलऽवराए विसाह पुवफग्गुणुत्तरओ ॥ १ ॥"

"पूर्व दिशामां ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा अने उत्तराषाढा नक्षत्र शूळ छे, दक्षिणमां धनिष्ठा अने पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र शूळ छे, पश्चिममां रोहिणी अने मूळ नक्षत्र शूळ छे, तथा उत्तरमां विशाखा अने पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र शूळ छे." "पश्चिम दिशामां पुष्य अने उत्तरमां हस्त नक्षत्र शूळ छे," एम नारचंद्रमां कह्युं छे. यतिवल्लभमां तो नक्षत्र कील आ प्रमाणे कहे छे.—

नक्षत्र कील विषे.

"ज्येष्ठा १ भद्रपदा पूर्वा २ रोहिण्यु ३ त्तरफल्गुनी ४ ।
पूर्वादिषु क्रमात्कीला गतस्यैतेषु नागतिः ॥ १ ॥
औत्सुक्याद्यदि पूर्वोक्तदंडलंघनवर्जने ।
असमर्थस्तदावश्यं दिक्कीलान् वर्जयेदिमान् ॥ २ ॥"

'पूर्वमां ज्येष्ठा, दक्षिणमां पूर्वाभाद्रपद, पश्चिममां रोहिणी अने उत्तरमां उत्तराफाल्गुनी, ए नक्षत्र कील कहेवाय छे. आ नक्षत्र कीलमां जो गमन करे तो ते पाछो आवे नहीं. जो कदाच कार्यनी उत्सुकताथी पूर्वे कहेला दंडना उल्लंघनने वर्जी न शके तो अवश्य आ दिक्कीलने वर्जवा."

लोकमां तो आ प्रमाणे कहेवाय छे.—

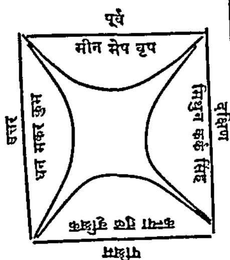
"उत्तर हत्था दक्खिण चित्ता, पुवा रोहिणि सुणि रे पुत्ता ।
पच्छिम सवणा म करिस गमणा, हरि हर बंभ पुरंदर मरणा ॥ १ ॥"

"हे पुत्र ! सांभळ. हस्त नक्षत्रमां उत्तर तरफ, चित्रामां दक्षिण तरफ, रोहिणीमां पूर्व तरफ अने श्रवणमां पश्चिम तरफ गमन करीश नहीं, केमके तेमां गमन करवाथी हरि, हर, ब्रह्मा अने इंद्र जेवानुं पण मरण थाय."

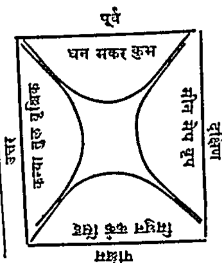
हवे वारने आश्रीने दिक्शूळ तथा विदिक्शूळ कहे छे.—

शूलं सोमे शनौ च प्राग्गुरौ दक्षिणतस्त्यजेत् ।
रवौ शुक्रे च वारुण्यामुत्तरेण कुजज्ञयोः ॥ ए ॥

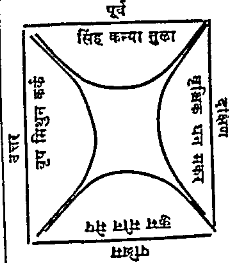
रविचार चक्र



राहुचार चक्र



चंद्र, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र, शनिचार चक्र



वत्सचार चक्र उपर आप्युं छे

अहीं प्रसंगोपात्त शिवचार लखे छे.—

"मेषेऽर्कादुत्तरादौ दिशि विदिशि शिवो मासमेकं तथा द्वौ,
संहृत्या संस्थितो विर्भ्रमति भृशमहोरात्रमध्ये तु सृष्ट्या ।
अध्यर्धे नाडिके द्वे दिशि विदिशि घटीपञ्चकं चैष तिष्ठन् ।
चन्द्रादेः प्रातिकूल्यं हरति किरति शं दक्षिणपृष्ठगोऽसौ ॥ १ ॥"

"मेष राशिमां रहेला सूर्यथी उत्तरादिक दिशामां उत्क्रमथी फरे छे दिशामां एक मास तथा विदिशामा बे मास सुधी रहे छे ते शिव एक दिवस रात्रिमां अनुक्रमे बे वार अनुक्रमे भ्रमण करे छे, तेथी दरेक दिशामा ते शिव अढी अढी घडी रहे छे, अने दरेक विदिशामा पांच पांच घडी रहे छे भावार्थ ए छे के मेषनो सूर्य होय त्यारे प्रथम अढी घडी शिव उत्तर दिशामा होय, पछी पाच घडी ईशानमां, पछी अढी घडी पूर्वमा एम एक अहोरात्रमा बे वखत फरे छे पछी वृष तथा मिथुनना सूर्य होय त्यारे बे मास ... पाच घडी वायव्यमा, पछी अढी घडी उत्तरमा एम क्रमे भ्रमण करे छे पछी कर्कमां प्रथम पश्चिममा आ प्रमाणे जाणवुं आ शिव जमणी बाजु अथवा पाछळना भागमां रह्यो होय तो चंद्रादिकनी प्रतिकूळतानो नाश करे छे तथा सुख आपे छे चंद्रादिके करीने ताराओनी तथा तेनी अवस्थाओनी पण प्रतिकूळतानो नाश करे छे एम जाणवुं.

---

१ उत्क्रमथी २ क्रमथी, १ डाबी बाजुने क्रमे., २, जमणी बाजुने क्रमे

॥ चतुर्थो विमर्शः ॥

शिवचार चक्र.

ईशान घडी २॥ / ईशान घडी २॥	पूर्व मकरेऽर्कः घडी २॥	अग्नि घडी २॥ / अग्नि घडी २॥
उत्तर मेषेऽर्कः घडी २॥		दक्षिण तुलार्कः घडी २॥
घडी २॥ वायव्य / वायव्य घडी २॥	कर्केऽर्कः घडी २॥ पश्चिम	नैर्ऋत्य घडी २॥ / नैर्ऋत्य घडी २॥

आ शिवचक्रनी स्थापना स्थूल प्रमाणवाळी छे. सूक्ष्म प्रमाणवाळी तो आ प्रमाणे छे

संक्रान्तेराद्यघस्रे स्वदिशि शर ५ पलान्येष भुक्त्वा भ्रमाभ्यां,
पश्चात्सृष्ट्या तटस्थां दिशमटति दशैवं पलान्यन्यघस्रे ।
वृद्धिः पञ्चोत्तरैवं प्रतिदिवसमहो तावदेतस्य यावत्,
संक्रान्तेरन्त्यघस्रे स्थितिरधिककुजं साधनाभीद्वयं स्यात् ॥ २ ॥

"संक्रांतिने पहेले दिवसे शिव पोतानी दिशामां बे भ्रमणे करीने पांच पळ ` बे एटले के दिवस अने रात्रिमां थइने शिव बे वार भ्रमण करे छे, तेमां पहेला पोतानी दिशामां अढी पळ शिव रहे छे अने बीजा भ्रमणमां पण बीजा अढी पळ छे. ए प्रमाणे संक्रांतिने पहेले दिवसे बे भ्रमणे करीने शिव पोतानी दिशामां पांच रहे छे. त्यारपछी सृष्टिना क्रमे बीजी दिशामां जाय छे. ए ज रीते बीजे दिवसे बीजी पांच पळो भोगववाथी दश पळ थइ (ए रीते त्रीजे दिवसे पण पांच पळो ववाथी पंदर पळ थइ). एज रीते दरेक दिवसे पांच पांच पळनी वृद्धि करतां संक्रांतिने छेल्ले दिवसे एटले त्रीशमे दिवसे शिवने पोतानी दिशामां दोढसो पळ अढी घडीनी स्थिति थाय छे." त्यारपछी फरीथी संहारे करीने बीजी दिशामां आवेला शिवनो आ प्रमाणे ज क्रम जाणवो.

शिवचारनुं फळ आ प्रमाणे छे.—

"विवादे शत्रुहनने रणे झगटके तथा ।
द्यूते चैव प्रवासे वाऽवाम पृष्ठे शिवे जयः ॥ ३ ॥

स्वराश्च शकुना दुष्टा जद्राग्रहवलं तथा ।
दिग्दोषा योगिनीमुख्या अजयाः स्युः शुभे शिवे ॥ ४ ॥"

"वादविवादमां, शत्रुने हणवामां, रणसंग्राममां, झगडामां, द्यूतमां तथा प्रवा शिव जमणो अथवा पाछळ होय तो ते जय आपनार छे. अशुभ स्वरोदय, अ॰ शकुन, जद्रा, अशुभ ग्रहोनुं बळ अने योगिनी विगेरे दिशाओना दोषो, ए सर्वे शिव शुभ होय तो निर्जयकारक छे" तथा—

"सूर्यराश्यादितः सव्ये लग्नं तत्कालसंभवम् ।
पृष्ठदक्षिणगं कृत्वा जयेद्युद्धे न संशयः ॥ १ ॥"

"सूर्यनी राशिने आदि करीने एटले सूर्य जे राशिमां होय ते राशिने पूर्व दिशामां मूकीने त्यां सृष्टिने क्रमे (सवळी-जमणी बाजुने क्रमे) तत्काळ संभवतुं जे लग्न आवे एटले ते वखते जे लग्न वर्ततुं होय तेने पाछळ अने जमणी बाजुए राखीने युद्ध करे तो जय पामे तेमां कांइ पण संशय नथी."

। इति यात्रायां समयशुद्धिः दिक्शुद्धिश्च ।

आ प्रमाणे यात्रामां समयनी शुद्धि अने दिशानी शुद्धि कही.

हवे यात्रामां ज चेष्टा निमित्त विगेरेनी शुद्धि कहे छे.

उत्सवमशनं स्नानं प्रगुणं चोपेक्ष्य मंगलमशेषम् ।
असमापिते च सूतकयुगेऽङ्गनर्त्तौ च नो यायात् ॥ २२ ॥

अर्थ—कौमुदी विगेरे उत्सव, भोजन, रोगथी मुक्त थयानुं अथवा सामान्य स्नान अने विवाह तथा पुत्रनुं अन्नप्राशन विगेरे सर्व मांगलिक कार्योनी तैयारी होय ते वखते तेनु उल्लंघन करीने तथा जन्म के मरणनुं सूतक समाप्त कर्या विना तथा ऋतुवाळी भार्या होय त्यारे प्रयाण करवुं नहीं

अवमन्य माननीयान्निर्भर्त्स्य स्त्रीं च कमपि संताड्य ।
बालमपि रोदयित्वा जिजीविषुर्नैव निर्गच्छेत् ॥ २३ ॥

अर्थ—जीववानी इच्छा राखनारे मानवा योग्य (पूज्य) मनुष्यनी अवगणना करीने स्त्रीनी तर्जना (तिरस्कार) करीने, कोइने पण ताडन करीने (मारीने), तथा बाळकने रोवडावीने गमन करवु ज नहीं

अहीं लल्लनुं आ प्रमाणेनुं वचन लक्ष्मा राखवा योग्य छे.—

प्रमत्तो व्याधितो भीतः श्रान्तः क्रुद्धो बुभुक्षितः ।
अध्वानं न प्रपद्येत क्लीववेषस्तथैव च ॥ १ ॥

रात्रौ तु मैथुनं कृत्वा प्रभाते योऽभिगच्छति ।
यात्राकालेऽथवा प्राप्ते मैथुनं यो निषेवते ॥ २ ॥
यो वा प्रस्थानके गत्वा पुनर्गृहमुपागतः ।
इत्येवमादिचेष्टाभिः सिद्धिर्नास्त्यभिगच्छतः ॥ ३ ॥"

"उन्मत्त थयेलो, व्याधिग्रस्त, भय पामेलो, थाकी गयेलो, क्रोध पामेलो, थयेलो तथा नपुंसकना वेषने धारण करेलो, आवा पुरुषे मार्गमां प्रयाण करवुं रात्रे मैथुन करीने प्रातःकाळे जे प्रयाण करे छे, अथवा प्रयाण करवानो समय प्राप्त जे मैथुनने सेवे छे, अथवा जे प्रस्थान करेले स्थळे जइने पाछो घेर आवे छे, ए [चेष्टाए करीने प्रयाण करे तेने कार्यसिद्धि थती नथी."

क्षुतगृहकलहज्वलनौतुयुद्धदुर्वचनवसनसंगाद्यम् ।
अशुभं यात्रावसरे शुभमपि शकुनागमाद्विन्द्यात् ॥ २४ ॥

अर्थ—छींक थइ होय, घरमां कंकास थयो होय, घरमां अग्नि लाग्यो होय, कानुं अथवा पाका विगेरेनुं युद्ध थतुं होय, दुर्वचन एटले "जइश नहीं, मरी एवा अमंगळ शब्द बोलाता होय, वस्त्रनो छेडो बारणा विगेरेमां भराइ गयो होय मस्तक अथडायुं होय, ठेस वागवाथी अथवा बीजा कारणथी गतिनी स्खलना थइ आवी चेष्टाओ प्रयाणसमये थइ होय तो शुभ अथवा अशुभनो विचार करीने करवुं अथवा न करवुं. आ सिवाय शकुनना शास्त्रमांथी कहेली चेष्टा विगेरे जाणवुं.

भास्करव्यवहारमां आ प्रमाणे विशेष कह्युं छे.—

"रिक्तोऽनुकूलः कुंभोऽम्भःपूरणाय प्रयोजितः ।
विद्यार्थिचौरवणिजां प्रयाणेऽतीव सिद्धिदः ॥ १ ॥"

"विद्यार्थी, चोर अने वणिकना प्रयाणमां जो कोइ माणस खाली अने अनुकूळ पाणी भरवा लइ जतो होय अने ते माणस प्रयाणमां साथे थयो होय तो कार्यनी सि थाय, एटले के जेम ते घडो पूर्ण भराइने पाछो आवशे, तेम प्रयाण करनार पण थइने पाछो आवशे एम जाणवुं." तथा रत्नमाळामां कह्युं छे के—

"आद्ये विरुद्धे शकुने प्रतीक्ष्य,
प्राणान्नृपः पञ्च च षट् च यायात् ।
अष्टौ द्वितीये द्विगुणास्तृतीये,
व्यावृत्त्य नूनं गृहमभ्युपेयात् ॥ १ ॥"

"राजाने प्रयाण वखते पहेलुं शकुन अशुभ थयुं होय तो पांच अने छ एटले अगी प्राण सुधी राह जोइने पछी प्रयाण करवुं, बीजी वखत पण अशुभ शकुन थाय

द्विगुण आठ एटले सोळ प्राण सुधी विलंब करीने पछी चालवुं, अने त्रीजी वार पण अपशकुन थाय तो पाछा फरीने घेर ज आववुं."

आ सिवाय बीजां शकुनो शकुननां आगम (शास्त्र)थी एटले वसंतराज विगेरेनां करेलां शास्त्रोथी जाणवा. अर्थात् बीजा आचार्योए पोतपोताना ग्रंथोमां यात्राना अधिकारमां प्रयाणने योग्य एवां शकुनो पण विस्तारथी कह्या छे, अमे तो अहीं तेनुं प्रस्तुत (प्रसंग) नहीं होवाने लीधे तथा शकुनना शास्त्रथी पण तेना ज्ञाननो संभव होवाथी कह्यां नथी

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्र ए चारे वर्णोने साधारण यात्राना विधिने कहीने हवे शत्रुना विजयना प्रयोजनवाळुं नृपादिकनुं प्रयाण चाळीश श्लोकोवडे कहे छे, तेमा प्रथम दुष्ट निमित्तोनो परिहार करे छे —

आकालिकीषु विद्युद्गर्जितवर्षासु वसुमतीनाथः ।
उत्पातेषु च भौमान्तरिक्षदिव्येषु न प्रवसेत् ॥ २५ ॥

अर्थ—राजाए अकाळे थती एटले गर्भ के वर्षाऋतु विना थती वीजळी, गर्जना तथा वृष्टिने विषे प्रयाण न करवुं, अहीं राजाए करीने सामंतादिक तथा आचार्यादिक पण जाणवा. तथा भौम, अंतरिक्ष अने दिव्य उत्पातोमा प्रयाण न करवुं अहीं भौम उत्पात एटले भूमिकंप विगेरे, तथा जे चर पदार्थोनुं स्थिर थवापणुं अने स्थिर पदार्थोनुं चल स्वभावपणुं अथवा पुष्प फळादिकनो विकार ए सर्व भौम एटले भूमिना उत्पात जाणवा अंतरिक्ष (आकाश)ना उत्पात उल्कापात, निर्घात (आकाशमां गडगडाट), पवननुं तोफान, गंधर्व नगर, इंद्रधनुष, रातो ऐरावण हाथी, परिवेष, दंड, परिघ विगेरे जाणवा तथा दिव्य उपद्रवो एटले चंद्र के सूर्यनुं ग्रहण, ग्रह तथा नक्षत्रनो विकार अने केतुनुं दर्शन ए विगेरे जाणवा मूळ श्लोकमा च शब्द छे तेथी राहु अने योगिनी (जोगणी) विगेरेनो पण विचार करवो "आवा समयमां सात दिवस सुधी प्रयाण करवुं नहीं" एम दैवज्ञवल्लभ कहे छे "एक दिवस तो अवश्य तजवो" एम सारंग कहे छे. "केतु जोयो होय तो सोळ दिवस सुधी प्रयाण न करवु, पण चैत्र के वैशाख मासमां जोयो होय तो ते शुभ छे" एम वराह कहे छे

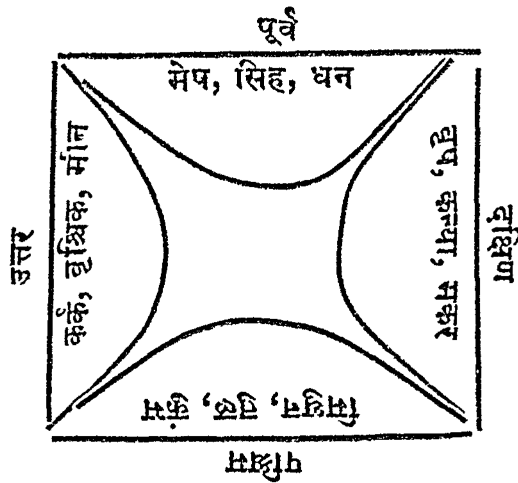
हवे यात्राने योग्य एवुं लग्न कहे छे —

यातव्यं दिग्मुखे लग्ने सिद्ध्यै शीर्षोदये तथा ।
एतद्विलोमयोर्जातु यात्रा यातुर्न सिद्धये ॥ २६ ॥

१ चद्र सूर्य विगेरेनी फरतु कुंडाळु

अर्थ—मेषादिक राशिओ अनुक्रमे पूर्वादि चार दिशाओना ईश छे, ते ज प्रमाणे सिंहादिक चार तथा धन्वादिक चार राशिओ पूर्वादिक दिशाओना ईश छे एम पूर्वे कह्युं छे. ते राशिओ ते ते दिशाना मुखवाळी छे एम ज्योतिर्विदो कहे छे, तेथी दिग्मुख लग्नमां तथा शीर्षोदयी लग्नमां प्रयाण करवाथी कार्यसिद्धि थाय छे अने तेथी उलटुं एटले उत्तर के पूर्व मुखनुं लग्न होय त्यारे अनुक्रमे दक्षिण के पश्चिममां गमन करवुं अने दक्षिण के पश्चिम मुखवाळा लग्नमां अनुक्रमे उत्तर के पूर्वमां गमन करवुं तथा पृष्ठोदय लग्नमां गमन करवुं ए सिद्धिने माटे नथी. विशेष ए छे के यात्रामां लग्न प्राये चर ज ग्रहण करवुं.

लग्ननुं दिग्मुख चक्र.



लल्ल कहे छे के—"अनिष्टदं दिक्प्रतिलोमलग्नं, पृष्ठोदये वाञ्छितकार्यनाशः" । "प्रतिलोम (उलटी) दिशामां लग्न होय अने गमन करे तो अनिष्ट फळ मळे तथा पृष्ठोदयी लग्नमां गमन करे तो इच्छित कार्यनो नाश थाय."

जन्मलग्ने शुभा यात्रा जन्मराश्युदये तु न ।
तयोश्चोपचयस्थेषु राशिष्विष्टा परेषु न ॥ २७ ॥

अर्थ—यात्रा करनार नृपादिकने जन्मलग्नमां यात्रा करवी शुभ छे, आथी करीने एवुं सूचव्युं के—प्रथम जन्मनुं लग्न जाणीने पछी यात्रानुं लग्न आपवुं जोइए, ते विना लग्न आपवुं नहीं, कारण के जन्मलग्न जाणीने दशा, आयुष्य अने ग्रहनुं बळ जोइने आपेलुं यात्रादिकनुं मुहूर्त्त फळदायक थाय छे. रत्नमाळामां कह्युं छे के—

"अज्ञातजन्मनोऽप्यन्यैर्यानं योज्यमिति स्मृतम् ।
प्रश्नलग्ननिमित्ताद्यैर्विज्ञाते सदसत्फले ॥ १ ॥"

"जन्मलग्न जाणवामां न होय तोपण प्रश्नलग्न अने निमित्त विगेरे अन्य चेष्टाए करीने शुभाशुभ फळ जाणीने प्रयाणनुं मुहूर्त्त आपवुं एम कह्युं छे."

जन्मराशिना उदयमां यात्रा करवी शुभ नथी, एटले के जन्ममां जे ठेकाणे चंद्र होय ते जन्मराशि कहेवाय छे. ते जन्मराशिनुं ज लग्न होय तो तेमां यात्रा करवी शुभ नथी. रत्नमाळामां तो "जन्मराशिना लग्नमां पण यात्रा करवी शुभ छे" एम कह्युं छे ते जन्मलग्न अने जन्मराशिनी अपेक्षाए उपचयस्थानमां एटले ३–६–१० अने ११ मा स्थानमां रहेली राशिओ यात्रामां शुभ छे ते सिवाय बीजा स्थानमां होय तो तेमा यात्रा करवी शुभ नथी. विशेष ए छे जे—"शत्रुनी जन्मराशि के जन्मलग्न अथवा ते बन्नेना स्वामी तत्कालना लग्नथी चोथे के सातमे स्थाने होय त्यारे पण यात्रा करवाथी जय थाय छे, अने जो शत्रुनी जन्मराशि अने जन्मलग्ननां उपचयस्थानो चोथे के सातमे स्थाने होय तोपण जय थाय छे," एम रत्नमाळामां कह्युं छे.

पापैरस्तांबुगैर्दृष्टे युते वा जन्मलग्नभे ।
सौम्यग्रहैस्तु नैवं चेत्तदा यातुः पराभवः ॥ २८ ॥

अर्थ—जे कोइ स्थानमां रहेली जन्मलग्ननी राशि यात्रालग्नना सातमा ने चोथा स्थानमां रहेला पापग्रहोए करीने युक्त होय अथवा तेमनी दृष्टि पडती होय, तथा ते ज जन्मलग्ननी राशि सातमा ने चोथा स्थानमा रहेला सौम्य ग्रहोए करीने युक्त के दृष्ट न होय तो (तेवे वखते) प्रयाण करनारनो पराभव थाय अर्थात् पापग्रहनी जेम सौम्य ग्रहोए युक्त अथवा दृष्ट होय तो पराभव न थाय. विशेष ए छे जे—यात्राने समये जन्मकुंडळी संबंधी आठमुं तथा छठ्ठु स्थान क्रूर अने सौम्य ग्रहोए सहित होय तो ते अशुभ छे ते विषे दैवज्ञवल्लभमा कह्यु छे के—"वधः प्रयातुस्त्वरिभिः प्रसूतौ, रंध्रारिभे क्रूरशुभान्विते चेत्" । "जन्मनुं आठमुं अने छठ्ठु स्थान जो क्रूर अने शुभ ग्रहोए युक्त होय तो ते वखते शत्रु तरफ प्रयाण करनारनो वध थाय छे."

अष्टमं स्वेन्दुलग्नाभ्यां ताभ्यां षष्ठमथ द्विषः ।
तद्राशिनाथयुक्तं वा लग्नं यातुरनर्थकृत् ॥ २९ ॥

अर्थ—जन्मकाळना चंद्रथी अने जन्मकाळना लग्नथी जे आठमुं लग्न ते यात्रामां तजवा योग्य छे अने ते बन्नेथी जे छठ्ठुं लग्न होय ते पण तजवा लायक छे तथा शत्रुना जन्मलग्नथी अने जन्मराशिथी छठे स्थाने रहेली जे राशि ते जो लग्नमां होय तो तेने पण तजवी तेमज जन्मराशिथी अने जन्मलग्नथी जे आठमी अने छठी राशि होय तथा शत्रुना जन्मलग्नथी अने जन्मराशिथी जे छठी राशि होय ते छए राशिओना स्वामीए करीने युक्त एवुं जे लग्न ते पण यात्रामां तजवा लायक छे आ सर्व प्रकारनु प्रयाण करनारने अनर्थकारक छे. आ विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"जन्मर्क्षे १ लग्नाष्टमराशिलग्ने २, षष्ठोदये ४ शत्रुजलग्नतो वा ६ ।
तद्राशिनाथै ६ रथवोदयस्थैः, करोतु यात्रां विषजक्षणं वा ॥ १ ॥"

"जन्मराशि तथा जन्मलग्नथी आठमी राशिनुं लग्न होय, अथवा शत्रुनी जन्मराशि अने जन्मलग्नथी छठुं स्थान लग्ननुं होय, अथवा ते सर्वेना स्वामीए करीने युक्त लग्न होय तो तेवा समये प्रयाण करो अथवा विषनुं भक्षण करो, ते बन्ने समान छे."

कर्कवृश्चिकमीनानामुदयेऽंशे च न व्रजेत् ।
मूर्तिस्थेऽहर्बले रात्रौ रात्रिवीर्येऽह्नि च ग्रहे ॥ ३० ॥

अर्थ—कर्क, वृश्चिक अने मीननुं लग्न होय अथवा तेनो नवांश होय ते वखते प्रयाण करवुं नहीं. तथा यात्राना लग्नमां रहेलो ग्रह जो दिवसे बळवान् होय तो रात्रे प्रयाण करवुं नहीं अर्थात् दिवसे प्रयाण करवुं अने ते ग्रह जो रात्रे बळवान् होय तो दिवसे प्रयाण करवुं नहीं अर्थात् रात्रे प्रयाण करवुं.

कर्क अने वृश्चिक ए बे कीट (कीडा) छे, तेथी तेमनुं यात्रामां असमर्थपणुं छे, माटे ते बे वर्जवा अने मीन लग्नमां प्रयाण कर्युं होय तो वक्र मार्गे भटकी भटकीने कार्य सिद्ध कर्या विना ज पाछो आवे छे. ते विषे रत्नमाळामां कह्युं छे के—

"वक्रः पन्था मीनलग्नेऽंशके वा, कार्यासिद्धौ स्यान्निवृत्तिश्च तत्र" ।

"मीनना लग्नमां अथवा नवांशमां प्रयाण कर्युं होय तो वक्र मार्गमां ज एटले अवळे मार्गे जवाय छे, अने कार्यनी सिद्धि कर्या विना पाछुं अवाय छे." तथा "घडो (कुंभ) खाली छे, तेथी कुंभनुं लग्न तथा नवांश पण तजवा योग्य छे" एम पण रत्नमाळामां कह्युं छे.

सिद्ध्यै सौम्येशलग्नानि नौयानं जललग्नेष्वपि ।
जानीयाल्लोकतश्चात्र राशीनां वश्यतां मिथः ॥ ३१ ॥

अर्थ—सौम्य स्वामीना लग्नमां प्रयाण करवाथी कार्यसिद्धि थाय छे, अने वहाणनुं प्रयाण जळचर राशिना लग्नमां अथवा तेना नवांशमां पण कार्यसिद्धिने माटे छे, अने वहाण पूर्ण थवाथी विघ्नरहितपणुं तथा लाभ ए बन्ने थाय छे. तथा अहीं राशिओनुं परस्पर वशपणुं लोकथी जाणवुं. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"चतुष्पदा ह्यंह्रिवशा विसिंहाः, सरीसृपश्चाम्बुचराश्च भक्ष्याः ।
सिंहस्य वश्या विसरीसृपाः स्युरूह्यं जनोक्तव्यवहारतोऽन्यत् ॥ १ ॥
स्थलाम्बुसंभूतसरीसृपाख्या, भवन्ति वश्या बलिनां स्वकानाम् ।
समा द्युसंस्था विषमान् भजन्ते, वश्या रजन्यां विषमाः समानाम् ॥ २ ॥"

"मेष, वृष, सिंह, धनुषनो पाछलो अर्ध भाग तथा मकरनो पहेलो अर्ध भाग, आटलां

चतुष्पद कहेवाय ठे, मिथुन, कन्या, तुला, कुंज अने धनुषनो पहेलो अर्ध जाग, आटला मनुष्य ठे, कर्क, मीन अने मकरनो पाठलो अर्ध जाग, आटलां जळचर ठे, अने एक वृश्चि सरीसृप एटले वृश्चिक हवे श्लोकना अर्थ आ प्रमाणे ठे—सिंह सिवायना चतुष्पदो म‍ ष्यने वश्य ठे, वृश्चिक अने जळचरो मनुष्यना जक्ष्य (जक्षण करवा लायक) ठे. वृश्चि विनाना सर्वे सिंहने वश ठे, वीजुं मनुष्यमा कहेला व्यवहारथी जाणवुं एटले के वृश्चि कने सिंह पण वश्य ठे सर्वे पुरुष राशिर्ठ कन्याने वश्य ठे, तथा धनुषने सर्वे वश्य विगेरे (१). जो बन्ने राशि परस्पर स्थळचर, जळचर के वृश्चिक होय त्यारे ते बन्नेनी म‍ जे बळवान् होय तेने वीजो एटले दुर्वळ वश्य होय ठे जेम मेष वृषने वश्य ठे, मी अने कर्क मकरने वश्य ठे. वृश्चिकने वीजो निर्वळ वृश्चिक वश्य होय ठे. बन्ने मेष के बन्ने वृष विगेरे बन्ने एक ज होय तोपण वृश्चिकनी जेम बळनुं अधिकपणुं विचारीने वश्यपणुं जाणवुं इष्ट लग्न दिवसे के रात्रिए होय ठे. तेमां जो दिवस होय तो सम राशिर्ठ विषम राशिने वश्य होय ठे अने रात्रि होय तो विषम राशिर्ठ सम राशिर्ठने वश्य होय ठे. आनुं फळ आगळ कहेशे "

जन्मकाले शुजैर्युक्ता द्वितीयास्तरणेश्च ये ।
निष्क्रूरा निर्विकाराश्च ते लग्ने राशयः शुजाः ॥ ३१ ॥

अर्थ—जे राशिर्ठ जन्मकाळे शुज ग्रहोए युक्त होय, तथा जे राशिर्ठ रविथी वीजी होय, आ सूर्यथी वीजी राशिनी जातकमा "वेशि" एवी सञ्ज्ञा (नाम) कही ठे. "सूर्याद्वितीयमृक्षं वेशिः" "सूर्यथी वीजुं लग्न वेशि कहेवाय ठे," एम कह्युं ठे, तथा जे राशिर्ठ निष्क्रूर एटले जन्मकाळे जे राशिमा क्रूर ग्रह न होय एवी होय, तथा जे निर्विकार होय एटले के क्रूर ग्रहे जोगवेली राशि सविकार अने चंद्रे जोगवेली होय ते निर्विकार कहेवाय ठे जन्मकाळे आवी राशिर्ठ होय तो ते यात्राना लग्नमा शुज जाणवी.

यच्च वश्यं स्वलग्नेन्द्वोर्न च वश्यं द्विषस्तयोः ।
शत्रोरेवाष्टमं ताज्यां लग्नं यातुर्जयावहम् ॥ ३३ ॥

अर्थ—जे यात्रानुं लग्न पोताना जन्मलग्नने तथा जन्मराशिने वश्य होय, अने शत्रुना जन्मलग्नने तथा जन्मराशिने वश्य न होय, वळी ते यात्रालग्न शत्रुना जन्मलग्न अने जन्मराशिथी आठमे होय, तो ते लग्न यात्रा करनारने जय आपनारु ठे.

आ प्रमाणे आठ श्लोकोवडे यात्राने योग्य लग्न कह्युं हवे "जत्ता ठवग्गसुद्धीए" 'यात्रा ठ वर्गनी शुद्धिए करीने करवी योग्य ठे' एम हर्षप्रकाशमा कह्युं ठे, माटे यात्राने योग्य एवा होरादिक पाच वर्ग कहे ठे —

विमुक्ताक्रान्तभोग्यानि राश्यर्द्धान्युष्णरश्मिना ।
ऊर्ध्वतिर्यगधोमुख्यो होराः स्युरुदयावधि ॥ ३४ ॥

अर्थ—जे होरा सूर्ये भोगवीने मूकी दीधी होय ते ऊर्ध्वमुखी कहेवाय छे, जे भोगवाती होय ते तिर्यग्मुखी कहेवाय छे अने जे हजु हवे भोगववानी छे ते अधोमुखी कहेवाय छे. त्यारपछीनी बीजी त्रण होराने ए ज रीते अनुक्रमे ऊर्ध्वमुखी, तिर्यग्मुखी अने अधोमुखी जाणवी, त्यारपछीनी पण त्रण ए ज रीते जाणवी. ए प्रमाणे त्रण त्रण होराने अनुक्रमे उदय सुधी एटले सूर्योदय सुधी ते ते नामवाळी जाणवी. अथवा उदय सुधी एटले लग्नमां अधिकार करेली होरा सुधी जाणवी. आ प्रमाणे त्रण प्रकारनी होरानी कल्पना करवी. तेथी करीने एक दिवस रात्रिमां थइने चोवीश होरा होवाथी तेमना त्रण त्रण प्रकार गणवाथी आठ वखत आवृत्ति थाय छे.

हवे त्रण प्रकारनी होरानुं फळ कहे छे.—

जयमूर्ध्वमुखी होरा विपदस्तिर्यगानना ।
अधोमुखी रणे यातुर्भङ्गं दिशति लग्नगा ॥ ३५ ॥

र्थ— [illegible] हेली ऊर्ध्वमुखी होरा युद्धमां जयने आपे छे, तिर्यग्मुखवाळी आप-
छे, तेना पग सर्पथी बाधला [illegible] आपे छे. अर्थात् लग्नमां ऊर्ध्वमुखी होरा
छे. १. बीजो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे. ते पतिने
आकृति काचबा अने कुंभना जेवी छे, ते स
पुरुष छे. सिंह जेवुं तेनुं रूप छे, तेनुं नाक, [illegible] ष कहे छे.—
तथा चतुष्पद छे. ३. [illegible] नाथः शुभेक्षितः ।
ए धनमां पहेलो द्रेष्काण नर छे पावकः (पाशकः) पापवीक्षितः ॥ ३६ ॥
वाळो अने अश्वनी जेवा शरीरवा द्रेष्काण होवाथी बारे राशिना मळीने छत्रीश द्रेष्काण
तेनुं अंग गौरवर्ण छे, ते समुद्रमांथ तथा उपलक्षणथी पुष्प, भांड (वासण) विगेरेथी
वाळो छे, हाथमां दंड राखी होय, सौम्य स्वामीए पूर्ण (चार पाद) दृष्टिए जोयेलो
धारण करनारो छे आकारवाळो होय, ते द्रेष्काण जो यात्राना लग्नमां होय तो ते शुभ
छे, अने जे द्रेष्काण यात्रालग्नमां अस्त्र, सर्प अने अग्निए करीने युक्त होय अथवा पाश एटले बंधने करीने युक्त होय, तथा क्रूर ग्रहे जोयेलो होय तेमज उपलक्षणथी क्रूर ग्रहे युक्त होय, क्रूर स्वामीवाळो होय अथवा क्रूर आकारवाळो होय तो ते अशुभ छे. कह्युं छे के—

"द्रेष्काणाकारचेष्टागुणसदृशफलं योजयेद्बुद्धिहेतो-
र्द्रेष्काणे सौम्यरूपे कुसुमफलयुते रत्नभांडान्विते च ।

११ कुंभमां पहेलो द्रेष्काण नर छे ते चर्मने धारण करनार, गीध पक्षीना जेवा मुखवाळो तथा कवल सहित छे आ खग छे. १ बीजो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे तेनां वस्त्रो मलिन छे, तेणे मस्तक पर भार राख्या छे, अग्निवडे शकट (गाडी) बळी जवाथी तेमांथी लोढुं ग्रहण करे छे. २. त्रीजो द्रेष्काण नर छे ते सिंहना जेवो छे, श्याम छे, तेना कानमा वाळ छे, तेना मस्तक पर मुगट छे, तेणे छाल, पांदडां, रस अने फळ धारण करेला छे ३

१२ मीनमां पहेलो द्रेष्काण नररूपे छे तेना हाथमां हार, मोती अने शंख छे, तेणे आभूषणो पहेर्यां छे, ते नावमा बेठो छे, अने समुद्र तरे छे १. बीजो द्रेष्काण स्त्री छे तेनुं अंग गौर छे, ते नावमा बेठी छे, अने ते समुद्रमाथी कांठा तरफ जाय छे. २ त्रीजो द्रेष्काण नर छे ते नग्न, भीरु अने चोर तथा अग्निथी व्याकुळ थयेलो छे, तेनुं अंग सर्पथी वींटायेलुं छे, ते गर्ता (खाडा)नी पासे रहेलो छे आ द्रेष्काण व्याकुळ छे. ३.

आनुं फळ चिंता तथा खोवायेली वस्तुना प्रश्नमां "द्रेष्काणोए करीने (तेने अनुसरीने) चोरो कहेला छे" ए प्रकारे छे रोगीना प्रश्नमां जो गृध्र, कोल के सर्पनो त्रिंशांश लग्नमा होय तो ते रोगीनुं मरण थाय छे बंधनथी छूटवाना प्रश्नमा सर्पनो त्रिंशांश लग्नमां आवे तो शृंखलाथी के पाशथी बंधन थाय इत्यादि. यात्राना विषयमां आ द्रेष्काणनो जेवी रीते उपयोग छे ते प्रथम कह्यो छे

द्रेष्काणना स्वामी प्रथम कह्या छे ते द्रेष्काण शुभ ग्रहे जोयेलो होय एम जे मूळ श्लोकमा कह्युं छे तेमा एवुं समजवुं के जे द्रेष्काण लग्नमा रहेलो छे, ते नामनी राशि यात्रानी कुंडळीमा जे स्थाने होय तेने जो शुभ ग्रहे जोयेली होय तो ते द्रेष्काण शुभ ग्रहे जोयेलो कहेवाय छे जेमके वृषनो बीजो द्रेष्काण कन्या छे, तेनो स्वामी बुध छे, ते सौम्य छे, तेना उपर बारमा अने पहेला स्थानमा रहेला शुक्र अने गुरुनी पूर्ण दृष्टि पडे छे ए ज रीते क्रूर स्वामीपणुं अने क्रूरदृष्टिपणुं पण जाणवुं ए ज प्रमाणे आगळ उदयास्तनी शुद्धि विगेरे कहेवाशे, तेमा पण नवांशादिकनु सौम्य अने क्रूर स्वामीपणुं तथा सौम्य अने क्रूर दृष्टिपणुं जाणवुं.

शन्यर्केन्दुकुजांस्त्यक्त्वा शुभोऽन्येषां नवांशकः ।
लग्नवद्द्वादशांशस्तु त्रिंशांशस्तु नवांशवत् ॥ ३७ ॥

अर्थ—शनि, सूर्य, चंद्र अने मंगळना नवांशने छोडीने बीजाना नवांशो शुभ छे लग्ननी जेम द्वादशांश जाणवो, अने नवांशनी जेवो त्रिंशांश जाणवो दैवज्ञवल्लभमा कह्युं छे के—

"लग्नेऽर्कस्य नवांशे वाहननाशः कुजस्य वह्निभयम् ।
इन्दोः प्रतापहानिः शनेर्नवांशे मरणमेव ॥ १ ॥"

"लग्नमां सूर्यनो नवांश होय तो वाहननो नाश थाय, मंगळनो होय तो अग्निनो भय थाय, चंद्रनो होय तो प्रतापनी हानि थाय, अने शनिनो नवांश होय तो मृत्यु ज थाय."

लग्ननी जेम द्वादशांश जाणवो, एटले के "यातव्यं दिग्मुखे लग्ने०" श्लोक (२६ मा) थी आरंभीने "यच्च वश्यं स्वलग्नेन्द्वो०" श्लोक (३३ मा) सुधीना आठ श्लोकोमां लग्न संबंधी जे जे कह्युं छे ते सर्व द्वादशांशमां पण समजवुं. त्रिंशांशने नवांशनी जेम जाणवो, एटले के शनि अने मंगळ विना बीजा ग्रहोनो त्रिंशांश शुभ छे, सूर्य अने चंद्रने तो त्रिंशांश ज छे नहीं.

। इति षड्वर्गशुद्धिः ।

आ रीते षड्वर्गनी शुद्धि कही. हवे यात्राने विषे बार भावोने कहे छे.—

तनुः १ कोशो २ भटो ३ यानं ४ मंत्रो ५ऽरि ६ र्वर्त्म ७ जीवितम् ८ ।
मनः ९ कर्म १० जंना ११ मंत्री १२ भावाः स्युरुदयादयः ॥ ३८ ॥

अर्थ—तनु १, कोश २, भट ३, यान ४, मंत्र ५, अरि ६, वर्त्म (अध्वा—मार्ग) ७, जीवित ८, मन ९, कर्म (भाग्य—व्यापार) १०, अर्जन ११, मंत्री १२. आ उदयादिक बार भाव जाणवा. आ बार स्थानोनुं शुभाशुभ फळ ग्रहना बळथी विचाराय छे.

अहीं पूर्वे कहेली बार भावोनी विचारणा प्राये करीने सरखी ज छे, पण विशेषे करीने तो यात्रामां बार भावोने आश्रीने ग्रहनो विचार आ प्रमाणे कहे छे.—

हन्ति योधायकर्मान्यान्सौम्यः कर्म चासितः ।
सौम्योऽप्यरिं सितोऽध्वानं चन्द्रश्च तनुजीविते ॥ ३९ ॥

अर्थ—क्रूर ग्रह त्रीजा, अगीयारमा अने दशमा भाव विनाना बीजा सर्व भावोने हणे छे. अर्थात् ३–११–१० भावोने पुष्ट करे छे. तेमां पण शनि दशमा भावने पण हणे छे, अर्थात् बीजा भावोने तो हणे छे ज. केवळ त्रीजा अने अगीयारमा भावने ज पुष्ट करे छे. सौम्य ग्रह पण एटले गुरु, शुक्र, बुध अने चंद्र छठ्ठा भावने हणे छे, अने बीजा सर्व भावोने पुष्ट करे छे. क्रूर ग्रह तो क्रूर होवाथी छठ्ठा स्थानने हणे छे ज एम अपि शब्दथी ज सिद्ध थाय छे. अहीं कोइ शंका करे छे के सर्व सौम्य ग्रहो छठ्ठा भाव सिवाय बीजा सर्व भावोने पुष्ट करे छे के तेमां कांइ विशेष छे ? ते उपर कहे छे के—एक शुक्र सातमा भावने पण हणे छे, अने चंद्र पहेला तथा आठमा भावने पण हणे छे. शुक्र अने चंद्र छठ्ठा भावने तो हणे ज छे. ते तो कह्युं ज छे, तेथी करीने आ प्रमाणे भावार्थ थयो.—

"ख १० स्थशनिवर्जमुपचयगाः क्रूराः सर्वगाः शुभाः सौम्याः ।
हित्वाऽस्ते ७ सितमष्टम ८ लग्न १ गशशिनं च यात्रायाम् ॥ १ ॥"

"यात्राने विषे दशमा स्थानमा रहेला शनि विनाना सर्वे क्रूर ग्रहो उपचयस्थानमां (३-६-१०-११) रह्या होय तो ते शुभ छे. अर्थात् एक शनि दशमा स्थानमा शुभ नथी सातमा भावमां रहेला शुक्रने तथा आठमा भावमा अने लग्नमां रहेला चंद्रने छोडीने सर्वे सौम्य ग्रहो सर्व भावमा रहेला शुभ छे"

आ रीते यात्रानी कुंडळीमा सामान्ये करीने बार भावोनो विचार कर्यो. हवे लग्नमां रहेला ग्रहोनो विचार करे छे —

जन्मन्यनिष्टः सौम्योऽपि न लग्नस्थः शुभो ग्रहः ।
तत्रेष्टदस्तु पापोऽपि यात्रालग्नस्थितः शुभः ॥ ४० ॥

अर्थ—सौम्य ग्रह पण जो जन्मसमये आठमे बारमे स्थाने रहेवाए करीने अशुभ होय, अने ते यात्राना लग्नमा पहेला स्थानमां रह्यो होय तो ते शुभ नथी, अने जे क्रूर ग्रह पण जन्मसमये छठे अगीयारमे स्थाने रहेवाए करीने शुभ होय, अने ते यात्राना लग्नमां पहेले स्थाने रह्यो होय तो ते शुभ छे जन्मसमयना शुभाशुभ ग्रहो विस्तारथी जातकमां आप्या छे, त्यांथी जाणवा. संक्षेपथी तो आ प्रमाणे जाणवु —

"क्रूरास्त्रिषष्ठायस्थाः सितेन्दुगुरवोऽन्तिमाष्टरिपुवर्जाः ।
व्यष्टान्तिमरिपुवर्जो बुधः प्रशस्तो जननसमये ॥ १ ॥"

"जन्मसमये क्रूर ग्रहो त्रीजे, छठे अने अगीयारमे स्थाने रह्या होय तो ते शुभ छे. शुक्र, चंद्र अने गुरु ए त्रण ग्रहो बारमा, आठमा अने छठा स्थान सिवाय बीजे कोइ स्थाने रह्या होय तो ते शुभ छे. तथा बीजा, आठमा, बारमा अने छठा स्थानने वर्जीने बीजा कोइ पण स्थानमां रहेलो बुध शुभ छे"

पापोऽप्यभीष्टदो जन्मलग्नर्क्षस्वामिनोः सुहृद् ।
मूर्त्तिस्थितः शुभोऽपि स्यादशुभोऽरातिरेतयोः ॥ ४१ ॥

अर्थ—पहेला स्थानमां रहेलो पापग्रह पण जो जन्मलग्नना स्वामीनो तथा जन्मराशिना स्वामीनो मित्र होय तो ते शुभ छे, अने शुभ ग्रह पण जन्मलग्नना स्वामीनो तथा जन्मराशिना स्वामीनो शत्रु होय तो ते अशुभ छे.

सुहृद्दशापतेः १ सद्यः सफलो २ जनने बली ३ ।
क्रूरोऽपि त्रिविधो भद्रस्तनौ सौम्योऽपि नेतरः ॥ ४२ ॥

अर्थ—यात्रालग्नमा प्रथम स्थाने रहेलो पापग्रह पण जो दशापतिनो मित्र १,

सद्यः सफळ २ अने जन्मनो बळवान् ३, ए त्रण प्रकारमांनो कोइ पण होय तो ते सारो छे. ते सिवायनो सौम्य ग्रह पण सारो नथी.

यात्राने समये जे ग्रहनी दशा चालती होय ते ग्रह दशापति कहेवाय छे, तेनो जे मित्र ते दशापतिनो मित्र कहेवाय छे. विशेष ए छे जे यात्राने समये दशापति पण बळवान् होवो जोइए. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"यात्रा नैव दशापतावुपहते नैवास्तगे नाबले,
नीचस्थे न च नैव वक्रिणि नृणां देया कदाचिद्बुधैः ।"

"दशापति हणायेलो (पराजय पामेलो) होय, अस्त पाम्यो होय, बळहीन होय, नीच स्थाने रह्यो होय तथा वक्री थयो होय तो ते वखते पंडितोए मनुष्योने यात्रानुं मुहूर्त्त देवुं नहीं."

दशानो क्रम, तेनुं प्रमाण तथा तेनो विभाग विगेरे स्वरूप जातकादिक ग्रंथोथी जाणवुं. अहीं तेनुं प्रस्तुत नहीं होवाथी तथा ते स्वरूप अत्यंत विस्तारवाळुं होवाथी अहीं लखता नथी, परंतु ते स्थान (विषय)ने शून्य न राखवाने माटे एक वर्षनी दिनदशानुं प्रमाण अहीं स्थूळ दृष्टिए बतावीए छीए.—

"निजनामराशितः प्रभृति गण्यते वर्त्तमानसंक्रान्तेः ।
गतदिवसावध्येवं दिवसदशाः स्युः क्रमादेताः ॥ १ ॥
रवी १ न्दु २ भौम ३ ज्ञ ४ शनी ५ ज्य ६ राहु ७-
सकेतु ८ शुक्रेषु ९ नखाः २० खबाणाः ५० ।
अष्टाश्वि २८ षड्बाण ५६ रसाग्नि ३६ देव ३३-
देवा ३३ ति शीत्य ३४ श्वहया ७० दशाहाः ॥ २ ॥
हानिं १ धनं २ रुजं ३ लक्ष्मीं ४ दैन्यं ५ लक्ष्मीं ६ च बन्धनम् ७ ।
जयं ८ श्रियं ९ चार्कादीनां दद्युर्दिनदशाः क्रमात् ॥ ३ ॥"

"पोताना नामनी राशिथी आरंभीने वर्तमान संक्रांतिना गयेला दिवसो सुधी आ प्रमाणे अनुक्रमे दिनदशा गणवी.—रविनी २० दिवस, चंद्रनी ५० दिवस, मंगळनी २८ दिवस, बुधनी ५६ दिवस, शनिनी ३६ दिवस, गुरुनी ३३ दिवस, राहुनी ३३ दिवस, केतुनी ३४ दिवस अने शुक्रनी ७० दिवस. अहीं एम समजवानुं छे के—पोताना नामनी राशिमां जे दिवसे सूर्यनी संक्रांति बेठी होय ते दिवसथी आरंभीने चालता दिवस सुधीना दिवसो गणवा. जेटला दिवसो गया होय तेमां पहेला वीश दिवस रविनी दिनदशा जाणवी, त्यारपछीना ५० दिवस चंद्रनी दिनदशा जाणवी. ए रीते अनुक्रमे गणतां इष्ट दिवसे जे ग्रहनी दिनदशा आवे ते ग्रह दशापति कहेवाय छे. ते दशापतिनुं

फळ आ प्रमाणे छे.—सूर्यनी दिनदशा हानि कर्ता छे, चंद्रनी दिनदशा धन आपनार छे, मंगळनी दशा रोग आपे छे, बुधनी दशा लक्ष्मी आपे छे, शनिनी दशा दीनता आपे छे, गुरुनी दशा लक्ष्मी आपे छे, राहुनी दशा बंधन करावे, केतुनी दशा भय उपजावे अने शुक्रनी दिनदशा लक्ष्मी आपे छे."

मूळ श्लोकमा सद्यः सफळ ग्रह कह्यो छे, तेनो अर्थ ए छे जे—जे ग्रह इष्ट दिवसे गोचरे करीने अथवा प्रतिकूळ वेधे करीने शुभ होय ते ग्रह सद्यः सफळ कहेवाय छे, अने जे ग्रह गोचरे करीने अथवा अनुकूळ वेधे करीने अशुभ होय ते सद्य. अफळ कहेवाय छे तथा मूळ श्लोकमां जन्मनो बळवान् ग्रह कह्यो छे, तेनो अर्थ ए छे जे—जन्मकुंडळीमा जे ग्रह बळवान्, एटले सर्वोत्कृष्ट बळवाळो होय ते जन्मनो बळवान् कहेवाय छे तथा ते सिवायनो सौम्य ग्रह पण एटले के जे ग्रह वर्तमान दशाना ईशनो शत्रु होय, अथवा जे ग्रह ते वखते अफळ होय अथवा जे ग्रह जन्मकाळे निर्बळ होय तो तेवो सौम्य ग्रह पण सारो नथी.

अहीं कोइ शंका करे के—जन्मनो बळवान् ग्रह ज्यारे सारो छे त्यारे जे सर्वोत्कृष्ट बळवान् ग्रह आठमा विगेरे स्थानमा रहेवाए करीने अनिष्ट फळने आपनार छे ते पण पहेला स्थानमा ग्रहण करवा लायक थशे. आ शंकानुं समाधान ए छे के—"जन्मनः" "सौम्योऽपि" ए उपरना चाळीशमा श्लोकवडे ज तेनो निषेध थाय छे.

तान तथा कारक संज्ञा अने तेनुं फळ कहे छे.—

जन्मकाले विधोर्यद्वाऽन्योऽन्येनोपचयस्थिताः ।
तानाख्याः सौम्यवत्क्रूरा जातकोक्ताश्च कारकाः ॥ ४३ ॥

अर्थ—जन्मकुंडळीमा ज्या चंद्र रह्यो होय त्याथी उपचय (३–६–१०–११)–स्थानमां जे जे ग्रहो रहेला होय तेनी चंद्रनी अपेक्षाए तान संज्ञा कहेवाय छे तथा जन्मकाळे जे जे ग्रहो एक बीजाथी उपचयस्थानमा रहेला होय तेमनी पण परस्पर तान संज्ञा कहेवाय छे, एटले के पिता पुत्र, गुरु शिष्य विगेरेनी जेम तान शब्द पण संबंधिवाचक छे, तेथी ते संबंध वडेमा रहेलो होवाथी दरेकनी तान संज्ञा कहेवाय छे, कारण के तान शब्दनो अर्थ एवो थाय छे के "तन्वन्ति विस्तारयंति अन्योऽन्यस्य कार्यं इति तानाः." "एक बीजाना कार्यने विस्तारे एटले करे ते तान कहेवाय छे" ए ज प्रमाणे कारक संज्ञानुं बन्नेमा रहेवापणुं अने सार्थकपणुं जाणवुं ते तान संज्ञावाळा ग्रहो क्रूर होय तोपण सौम्य जेवा जाणवा तथा जातकने विषे, जे ग्रहोनी कारक संज्ञा कहेली छे ते पण क्रूर होय तोपण सौम्य जेवा जाणवा.

જાતકમાં કારક સંજ્ઞાવાળા ગ્રહો આ પ્રમાણે કહ્યા છે.—"જે ગ્રહો પોતાની રાશિમાં, પોતાના ઉચ્ચ સ્થાનમાં અથવા પોતાના ત્રિકોણમાં રહ્યા હોય, તે જો કેંદ્રસ્થાનમાં હોય તો તે સર્વે પરસ્પર કારક સંજ્ઞાવાળા કહેવાય છે. તેમની મધ્યે દશમા કેંદ્રમાં રહેલો ગ્રહ બીજા ગ્રહોનો વિશેષે કરીને કારક હોય છે. આ સર્વે ગ્રહોનું લગ્નમાં રહેલ ચંદ્રની દૃષ્ટિએ કરીને બળવાનપણું જાણવું. જેમ કર્કનું લગ્ન હોય અને લગ્નમાં ચંદ્ર હોય ત્યારે સૂર્ય, મંગળ, ગુરુ અને શનિ, એ ગ્રહો પોતપોતાના ઉચ્ચ સ્થાનમાં રહ્યા સતા પરસ્પર કારક સંજ્ઞાવાળા થાય છે. તેની સ્થાપના આ પ્રમાણે.—

૫ / ૬	૪ ગુ. ચં.	૩ / ૨
૭ શ.		૧ સૂ.
૮ / ૯	૧૦ મં.	૧૧ / ૧૨

તથા લગ્નમાં જે ગ્રહ રહેલો હોય તેના સ્થાનથી દશમા અને ચોથા સ્થાનમાં રહેલો કોઇ પણ ગ્રહ પોતાના સ્થાનમાં, પોતાના ઉચ્ચ સ્થાનમાં કે પોતાના ત્રિકોણમાં રહ્યો ન હોય તોપણ કારક થાય છે. તથા લગ્ન અને કેંદ્ર વિના પણ કોઇ પણ સ્થાને રહેલા ગ્રહના સ્થાનથી જો કોઇ પણ ગ્રહ દશમા સ્થાનને વિષે પોતાનું સ્થાન, પોતાનું ઉચ્ચ સ્થાન અને પોતાનું ત્રિકોણ, એમાંના કોઇ પણ એકને વિષે રહ્યો હોય અને સ્વાભાવિક અથવા તાત્કાલિક મૈત્રીએ કરીને યુક્ત હોય ત્યારે તે પણ તેનો કારક કહેવાય છે. કહ્યું છે કે—

"સ્વર્ક્ષોચ્ચગમૂલત્રિકોણગાઃ, કંટકેષુ યાવન્ત આશ્રિતાઃ ।
સર્વ એવ તેઽન્યોઽન્યકારકાઃ, કર્મગસ્તુ તેષાં વિશેષતઃ ॥ ૧ ॥
કર્કટોદયગતે યથોડુપે, સ્વોચ્ચગાઃ કુજયમાર્કસૂરયઃ ।
કારકા નિગદિતાઃ પરસ્પરં ૧, લગ્નગસ્ય સકલોઽમ્બરામ્બુગઃ ॥ ૨ ॥
સ્વર્ક્ષકોણોચ્ચગઃ ખેટઃ, ખેટસ્ય યદિ કર્મગઃ ।
સુહૃત્તદ્ગુણસંપન્નઃ, કારકશ્ચાપિ સંસ્મૃતઃ ॥ ૩ ॥"

"पोताना स्थानमां, पोताना उच्च स्थानमां अने मूळ त्रिकोणमां रहेला जेटला ग्रहो कंटक (१-४-७-१०) स्थानमां रह्या होय ते सर्वे परस्पर कारक कहेवाय छे. तेमा पण दशमे स्थाने रहेला ग्रह विशेषे करीने कारक कहेवाय छे जेमके कर्कना लग्नमां चंद्र रह्यो होय त्यारे पोताना उच्च स्थानमां रहेला मंगळ, शनि, सूर्य अने गुरु, ए चारे परस्पर कारक कहेला छे तथा दशमा अने चोथा स्थाने रहेलो सर्व कोइ ग्रह स्वगृह, उच्च के त्रिकोणनो न होय तोपण ते लग्ननो कारक थाय छे पोताना स्थानमां, त्रिकोणमा के उच्चमा रहेलो ग्रह जो दशमा स्थानमां होय तो ते लग्नना ग्रहनो तद्गुणने पामेलो मित्र कहेवाय छे तथा तेने कारक पण कह्यो छे"

जन्मलग्नेशयोस्तानः कारको वापि लग्नगः ।
असौम्योऽपि शुभाय स्याद्यस्तः सौम्योऽपि चान्यथा ॥ ४४ ॥

अर्थ—जन्मेश अथवा लग्नेशनो तान अथवा कारक जो लग्नमां रह्यो होय तो ते असौम्य (क्रूर) छतां पण शुभने माटे छे, अने ते सिवायनो सौम्य ग्रह पण अशुभ छे

यात्रा करवानी इच्छावाळा राजादिकना जन्मसमये जे राशिमा चंद्र रह्यो होय ते राशिनो ईश जन्मेश कहेवाय छे ते जन्मेश ग्रहनो अथवा जन्मना लग्नेश ग्रहनो जे ग्रह जन्मपत्रिमां तानरूप अथवा कारकरूप होय अने ते क्रूर होय तोपण यात्रानी लग्नपत्रिमा प्रथम स्थाने रहेलो शुभ छे, अने तेथी विपरीत एटले जे सौम्य ग्रह पण जन्मपत्रिकामा जन्मेश के लग्नेशनो तान के कारक न होय ते ग्रह यात्रानी लग्नपत्रिकामां प्रथम स्थाने रहेलो शुभ नथी अर्थात् यात्रामां तान अने कारकनुं बळ अवश्य ग्रहण करवुं जोइए दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"नायकाः स्युः प्रसूतौ ये रक्षका ये च वर्धकाः ।
ते क्रूरा अपि यात्रायां लग्नस्थाः शुभदा ग्रहाः ॥ १ ॥"

"जन्मकाळे जे ग्रहो नायक होय, जे रक्षक होय अने जे वर्धक एटले वृद्धिकारक होय ते ग्रहो क्रूर होय तोपण यात्रामां लग्न (प्रथम) स्थाने रहेला शुभ छे" आ नायक, रक्षक अने वर्धकनुं स्वरूप बृहत् जातकमाथी जाणी लेवुं

वक्री केन्द्रेऽथ तद्वर्गो लग्ने यातुर्जयापहः ।
गतिप्रमाणवर्णैर्वा विकृतश्च नभश्चरः ॥ ४५ ॥

अर्थ—वक्री ग्रह केंद्रमा रह्यो होय अथवा ते वक्री ग्रहनो वर्ग लग्नमा रह्यो होय तो यात्रा करनारना जयनो नाश करे छे तथा जे ग्रह गति, प्रमाण अने वर्णे करीने विकृत (विकारवाळो) होय ते पण यात्रालग्नमां प्रथम स्थाने रहेलो अशुभ छे

सूर्य अने चंद्र वक्री होइ शकता नथी, तेथी मंगळ विगेरे कोइ पण ग्रह यात्रासमये वक्र गतिवाळो होय ते एक ज जो यात्रालग्नमां केंद्रस्थाने रह्यो होय तो ते जयनो नाश करे छे, तो पछी बे त्रण वक्री ग्रह रह्या होय तेमां तो शुं कहेवुं ? अथवा ते ज वक्री ग्रहनो वर्ग एटले होरानो असंभव होवाथी गृह (स्थान), द्रेष्काण अने नवांश विगेरे-रूप वर्ग जो लग्नमां होय तो ते पण अशुभ छे, वक्र गतिना दिवसनी अने मार्गगतिना दिवसनी संख्या ज्योतिषसारमां आ प्रमाणे कही छे.—

"पणसट्ठि ६५ इक्कवीसा २१ बारसअहियं सयं च ११२ बावन्ना ५२ ।
चउतीस सयं च १३४ कमा वक्कदिणा मंगलाईणं ॥ १ ॥
सगसयपणाल ७४५ बिणवइ ९२ चुआलसय १४४ पंचसयचउवीसा ५२४ ।
दो अ सया चालीसा २४० मंगलमाईण मग्गदिणा ॥ २ ॥"

"मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए पांच ग्रहोना वक्र गतिना दिवसो अनुक्रमे ६५–२१–११२–५२ अने १३४ छे, तथा मंगलादिकना मार्गगतिना दिवसो अनुक्रमे ७४५–९२–१४४–५२४ अने २४० छे."

गति, प्रमाण अने वर्णे करीने विकृत ग्रह पण यात्रालग्नमां प्रथम स्थाने रहेलो शुभ नथी. तेमां अतिचारी ग्रह गतिए करीने विकृत कहेवाय छे. अतिचारी ग्रहनुं स्वरूप लल्ल आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"पक्षं १ दशाहं २ त्रिपक्षी ३ दशाहं ४ मासषट्कतयी ५ ।
अतिचारः कुजादीनामेष चारस्त्वितोऽपरः ॥ १ ॥"

"मंगलादिक ग्रहोनो अतिचार अनुक्रमे पंदर दिवस, दश दिवस, त्रण पक्ष (दोढ मास), दश दिवस अने छ मास सुधी छे. त्यारपछीना दिवसो चार कहेवाय छे."

आ उपर कहेला प्रमाणथी ओछो के अधिक प्रमाणवाळो ग्रह आकाशमां जणातो होय तो ते ग्रह प्रमाणे करीने विकृत कहेवाय छे. ए ज प्रमाणे वर्णे करीने विकृत पण जाणवो.

लल्ल तो कहे छे के—"जे ग्रहनुं जन्मनक्षत्र क्रूर ग्रह के उल्कापात विगेरेथी पीडा पामतुं होय ते ग्रह पण यात्रालग्नमां प्रथम स्थाने रहेलो शुभ नथी. ग्रहनां जन्मनक्षत्र आ प्रमाणे छे.—

"विशाखा* १ कृत्तिका २ ष्यानि ३ श्रवणो ४ भाग्य ५ मिज्यभम् ६ ।
रेवती ७ याम्य ८ मश्लेषा ९ जन्मर्क्षाण्यर्कतः क्रमात् ॥ १ ॥"

---

१ होरा चंद्र अने सूर्यनीज होय छे, ते प्रथम कही गया छे. * भर १ चित्तु २ उत्तरसाढा ३ धणि ४ उत्तरफग्गु ५ जिट्ठ ६ रेवइआ ७ । सुराइ जम्मरिक्खा एएहिं वज्जमुसल पुणो ॥ १ ॥ आ प्रमाणे प्रथम विमर्शमां छे तथा प्रथम विमर्श प्रमाणे ज लग्नशुद्धिमां तथा नारचंद्रमां पण कहेल छे, तेथी विशाखा इत्यादि उपरनो पाठ मतांतर जाणवो.

"रविनुं जन्मनक्षत्र विशाखा छे, चंद्रनुं कृत्तिका छे, मंगळनुं पूर्वाषाढा छे, बुधनुं श्रवण छे, गुरुनुं पूर्वाफाल्गुनी छे, शुक्रनुं ज्येष्ठा छे, शनिनुं रेवती छे, राहुनुं भरणी छे अने केतुनुं जन्मनक्षत्र अश्लेषा छे."

उत्तरान्तश्चरो भानोः शुभो नान्यस्तनौ ग्रहः ।
फलेन वर्गो वारश्च तनुगव्योमगोपमः ॥ ४६ ॥

अर्थ—जे ग्रह सूर्यनी उत्तरचर अथवा अन्तश्चर होय ते जो यात्रालग्नमां पहेले स्थाने रह्यो होय तो ते शुभ छे. ते सिवायनो शुभ नथी. अहीं एम जाणवुं के—इष्ट दिवसे, जे स्थाने सूर्यनो उदय अने अस्त थतो होय ते स्थान सारी रीते निर्णय करीने ध्यानमां राखवुं. तथा जे स्थाने विवक्षित (कहेवाने इच्छेला) ग्रहनो उदय तथा अस्त थतो होय ते पण ध्यानमां राखवु. पछी ते ग्रह जो सूर्यथी उत्तर दिशामां उदय अने अस्त पामतो होय तो ते ग्रह उत्तरचर कहेवाय छे, अने ते ग्रह जो सूर्यने ज स्थाने उदय अने अस्त पामतो होय तो ते अंतश्चर कहेवाय छे आ बे जातना ग्रह यात्रा-लग्नमां प्रथम स्थाने रह्या होय तो ते शुभ छे, अने ते सिवायनो बीजो एटले सूर्यथी दक्षिणचर होय तो ते अशुभ छे. आ प्रथम स्थानना ग्रहनुं स्वरूप जो के अहीं यात्राने उद्देशीने कह्युं छे, तोपण विवाहादिक सर्व शुभ कार्यना लग्नमां पण आ रीते ज समजवुं. दैवज्ञवल्लभमा विशेष आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"लग्नेऽर्कारौ शनेर्धाम्नि शुभावन्यत्र भंगदौ ।
शीतांशुरुदयप्राप्तः सर्वकार्येषु नाशदः ॥ १ ॥
जीवशुक्रशनिस्थाने स्थितो लग्ने जयार्थदः ।
स्थानेष्वर्केन्दुभौमानां शशिसूनुरनर्थदः (कः) ॥ २ ॥
मन्दारबुधसूर्याणां स्थानेषु शुभदो गुरुः ।
शुक्रेन्दुस्थानगो लग्ने धनयोधविनाशकः ॥ ३ ॥
सौम्यस्थाने सितः शस्तो लग्नस्थोऽन्यत्र नेष्टदः ।
छायापुत्रो रविस्थाने प्रीतिदोऽन्यत्र नाशदः ॥ ४ ॥
स्वस्थाने न शुभो मन्दो लग्नेऽन्यत्र शुभावहः ।
यात्रायां चन्द्रमाः शस्तो दिग्बलेन विवर्जितः ॥ ५ ॥"

"यात्रालग्ननी कुंडळीमां सूर्य अने मंगळ जो शनिना स्थानमां रह्या होय तो ते शुभ छे, बीजा कोइ स्थानमां होय तो नाशने करनारा छे, चंद्र उदयना स्थानमां रह्यो होय तो सर्व कार्यमा नाशने आपनारो छे, अने गुरु, शुक्र तथा शनिना स्थानमां रह्यो होय तो जय अने धनने आपनार थाय छे. सूर्य, चंद्र अने मंगळना स्थानमां बुध रह्यो होय

तो ते अनर्थने आपनारो छे. शनि, मंगळ, बुध अने रविना स्थानमां गुरु होय तो ते शुभ छे, तथा शुक्र अने चंद्रना स्थानमां रह्यो होय तो ते धन योद्धानो नाश करे छे. बुधना स्थानमां शुक्र रह्यो होय तो ते प्रशस्त (शुभ) छे, अने बीजे कोइ स्थाने रह्यो होय तो ते इष्ट वस्तुने आपनारो नथी (अशुभ छे). रविना स्थानमां राहु रह्यो होय तो ते प्रीतिने आपनार छे, अने बीजा कोइ स्थानमां रह्यो होय तो ते नाशने करनारो छे. शनि पोताने स्थाने रह्यो होय तो ते शुभ नथी, अने बीजा कोइ पण स्थानमां रह्यो होय तो ते शुभ छे. दिक्बळे करीने रहित एवो चंद्र यात्राने विषे प्रशस्त (शुभ) छे."

आ प्रमाणे साडा छ श्लोके करीने प्रथम स्थाने रहेला ग्रहोनी व्यवस्था कही. हवे मूळ श्लोकना उत्तरार्धवडे यात्रालग्नमां छ वर्ग तथा वारनो नियम कहे छे.—वर्ग एटले षड्वर्ग तथा वार एटले यात्राना दिवसनो वार, ए प्रथम स्थानमां रहेला होय तो तेनुं फळ दशमा स्थाने रहेला ग्रहनी जेवुं जाणवुं, एटले के "जन्मन्यनिष्ट" ए ५० मा श्लोकथी आरंभीने आ श्लोकना पूर्वार्ध सुधीमां कहेली रीते करीने जेवो ग्रह प्रथम स्थानमां शुभ अथवा अशुभ कहेलो होय, तेवाज ग्रहना गृह, होरा विगेरे छ वर्ग प्रथम स्थानमां रहेला होय तो ते शुभ अथवा अशुभ जाणवा, अने ए ज रीते यात्राने दिवसे वारनो पण निर्धार करवो. विशेष आ प्रमाणे छे.—

"उपचयकरस्य वर्गः क्रूरस्यापि प्रशस्यते लग्ने ।
चन्द्रो वा तद्युक्तो न तु विपरीतस्य सौम्यस्य ॥ १ ॥
उपचयकरग्रहदिने सिद्धिः क्रूरेऽपि यायिनां (नो) भवति ।
सौम्येऽप्यनुपचयकरे न भवति यात्रा शुभा यातुः ॥ २ ॥"

"उपचय करनारा क्रूर ग्रहनो वर्ग पण लग्नमां रह्यो होय तो ते शुभ छे, अथवा ते ग्रहे करीने युक्त चंद्र रह्यो होय तोपण ते शुभ छे, पण उपचय करनारो न होय एवो सौम्य ग्रहनो वर्ग लग्नमां होय तो ते शुभ नथी. उपचय करनारा ग्रहनो दिवस (वार) क्रूर होय तोपण ते यात्रा करनारने सिद्धि आपनारो छे, परंतु उपचय करनार न होय एवा सौम्य ग्रहने दिवसे यात्रा करनारनी यात्रा शुभकारक नथी," एम लल्ल कहे छे. वळी दैवज्ञवल्लभमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"सौम्योऽपि न शुभं दत्ते रिपोर्वारे विलग्नपः ।
वारे मित्रस्य पापोऽपि भवेच्छुभफलप्रदः ॥ १ ॥"

"लग्ननो स्वामी सौम्य होय तोपण ते शत्रुना वारने विषे शुभ नथी, अने मित्रना वारने विषे पाप स्वामी पण शुभ फळने आपनारो छे."

वळी जेनो वार शुभ अथवा अशुभ होय तेनी होरा पण तेवी ज शुभ के अशुभ जाणवी. तेनुं फळ शौनक आ प्रमाणे कहे छे.—

"रूपं ग्रहस्य वर्गे स्वदिने द्विगुणं स्वकालहोरायाम् ।
त्रिगुणमरिवर्गयोगे फलस्य पात्यस्तृतीयांशः ॥ १ ॥"

"ग्रहनुं फळ पोताना वर्गमां सरखुं ज (पूर्ण) छे, पोताने दिवसे बमणुं छे, पोतानी काळहोरामां त्रण गणुं छे, अने शत्रुना वर्गने योगे त्रीजा भागनुं फळ मळे छे."

तथा लल्ल कहे छे के—

"बलिनः कंटकसंस्था वर्षाधिपमासदिवसहोरेशाः ।
द्विगुणशुभाशुभफलदा यथोत्तरं ते परिज्ञेयाः ॥ १ ॥"

"वर्षनो स्वामी, मासनो स्वामी, दिवसनो स्वामी अने होरानो स्वामी ए कंटक (केंद्र)-स्थानमा रह्या होय तो ते बळवान् छे, तथा तेओ उत्तरोत्तर बमणा बमणा शुभाशुभ फळने आपनारा छे."

प्रथम स्थानमां रहेला ग्रहो तथा तेना षड्वर्ग विगेरेनी व्यवस्था कही हवे बाकीना केंद्रादिक स्थानने आश्रीने कहे छे.—

केन्द्रेषु ग्रहशून्येषु लग्ने वीर्येण वर्जिते ।
बलहीनैश्च सौम्यैः स्यादभिषेणयतो भयम् ॥ ४७ ॥

अर्थ—केंद्रस्थान ग्रहवडे शून्य होय, लग्न वीर्यवडे रहित होय तथा सौम्य ग्रहो बळहीन होय, ते वखते शत्रु तरफ लडवा माटे प्रयाण करनारने भय थाय छे.

केंद्रस्थान ग्रहशून्य होय एटले प्रथम तो केंद्रना एक पण स्थानमां कोइ पण सौम्य ग्रह होय तो ज यात्रा अथवां बीजा कार्य करवा शुभ छे ते सिवाय शुभ नथी जो कदाच केंद्रना कोइ पण स्थानमा कोइ पण सौम्य ग्रह न होय तो केंद्रनुं एक पण स्थान उपचयकारक क्रूर ग्रहवडे सहित होय तोपण ते शुभ छे केंद्रनां सर्व स्थानो एक पण ग्रह रहित होय तो सर्वथा अनिष्ट थाय. ते विषे रत्नमाळामां कह्युं छे के—

"पापोऽपि कामं बलवान्नियोज्यः, केन्द्रेषु शून्य न शिवाय केन्द्रम्" ।

"पापग्रह पण बळवान् करीने अवश्य केंद्रमां लाववो जोइए, केमके केंद्र शून्य होय तो ते कल्याणने माटे नथी"

विशेष एटलुं छे के—केंद्रमां सौम्य ग्रहो पापग्रहोए करीने सहित रह्या होय तो मोटा कष्टथी यात्रा सिद्ध थाय छे ते विषे लल्ल कहे छे के—

"सौम्यैश्च पापैश्च चतुष्टयस्थैः, कृच्छ्रेण संसिद्धिमुपैति यात्रा" ।

"सौम्य तथा पापग्रहो केंद्रमा रह्या होय तो कष्टे करीने यात्रा सिद्धिने पामे छे."

लग्न वीर्य रहित होय एम जे मूळ श्लोकमां कह्युं तेमां एम समजवुं के सौम्य स्वा तथा सौम्य ग्रहने अभावे करीने तथा तेमनी दृष्टिने अभावे करीने तेमज क्रूर ग्रहो स्वामी अने ग्रहोना होवापणाथी अथवा तेमनी दृष्टि पडवाथी लग्न वीर्य रहित थाय छे.

मूळ श्लोकमां सौम्य ग्रहो बळहीन होय एम कह्युं छे. तेमां ग्रहोनुं बळहीनपणुं भुवनदीपकनी वृत्तिमां अढार प्रकारे कह्युं छे.—

"स्व १ मित्रनीचगो २ वक्रः ३ स्वराश्यस्ता ४ रिवर्गगः ५ ।
लग्नाद्द्वादशगः ६ षष्ठः ७ क्रूरैर्युक्तो ८ ऽथ वीक्षितः ९ ॥ १ ॥
याम्यो १० राह्वास्य ११ पुच्छस्थो १२ बालो १३ वृद्धो १४ ऽस्तगो १५ जितः १६ ।
मुथुशिले १७ मूशरिफे पापै १८ रित्यबलो ग्रहः ॥ २ ॥"

"पोताना नीच गृहमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे १. मित्रना नीच गृहमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे २. आ बन्ने जातनो ग्रह नीच नवांशमां रह्यो होय तोपण निर्बळ जाणवो. वक्र अथवा वक्रतामां सन्मुख थयेलो ग्रह निर्बळ छे ३. पोताना गृहनी राशिथी सातमी राशिमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे ४. शत्रुरूप अथवा अधि शत्रुरूप ग्रहना गृह, होरा विगेरे छ वर्गमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे ५. लग्नथी बारमे स्थाने रहेलो ग्रह निर्बळ छे. लग्नथी छठ्ठे स्थाने रहेलो ग्रह निर्बळ छे ७. क्रूर ग्रहे करीने युक्त एवो ग्रह निर्बळ छे ८. क्रूर ग्रहे जोयेलो ग्रह पण निर्बळ छे ९. कर्कादिक छ राशिरूप दक्षिणायनमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे १०. राहुना मुखमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे ११. राहुना पुच्छमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे १२. राहुनुं मुख अने पुच्छ आ प्रमाणे जाणवुं.—

"यत्र ऋक्षे स्थितो राहुर्वदनं तद्विनिर्दिशेत् ।
मुखात् पञ्चदशे ऋक्षे तस्य पुच्छं व्यवस्थितम् ॥ १ ॥"

"जे नक्षत्रमां राहु रहेलो होय ते नक्षत्र राहुनुं मुख जाणवुं, अने मुखथी पंदरमुं जे नक्षत्र होय त्यां तेनुं पुच्छ रहेलुं छे."

बाळ एटले थोडा दिवसथी उदय पामेलो ग्रह निर्बळ छे १३. वृद्ध एटले अस्त थवामां सन्मुख थयेलो ग्रह निर्बळ छे, वृद्ध कहेवाथी अल्प तथा रुक्ष बिंबवाळो अने क्रांतिरहित एवो ग्रह पण निर्बळ जाणवो १४. अस्त एटले सूर्यनां किरणोमां प्रवेश करवाथी अस्त पामेलो ग्रह निर्बळ छे १५. जीतायेलो एटले ग्रहोना युद्धमां जे ग्रह दक्षिणगामी होय ते निर्बळ छे, वराह कहे छे के शुक्र तो उत्तरगामी होय त्यारे जीतायेलो छे १६. मुथुशिल एटले शीघ्र गतिवाळो क्रूर ग्रह मंद गतिवाळा ग्रहना एक अंशमां मळ्यो होय अने वळी ज्यांसुधी ते मंद ग्रहनी पाछळ रह्यो होय त्यांसुधी ते मुथुशिल कहेवाय छे, तेनुं बीजुं नाम इथिशाल छे. आ मुथुशिल ग्रह निर्बळ होय छे १७. ज्यारे शीघ्र गतिवाळो क्रूर ग्रह मंद गतिवाळा ग्रहना एक अंशमां मळीने पछी ते अंशने उल्लं-

न करीने आगळ जाय त्यारे ते राशि पूरी थतां सुधी मूशरिफ योग कहेवाय छे. ते पण निर्बळ छे १८. जेमके कल्पनाए करीने गुरु त्रीजा त्रिंशांशमां मंद गतिवाळो छे, ते अंशमां आवेलो सूर्यादिक क्रूर ग्रह ज्यांसुधी ते त्रीजा अंशने उल्लंघन करीने नथी जतो त्यांसुधी मुथुशिल कहेवाय छे, अने ज्यारे ते त्रीजा अंशनो त्याग करीने चोथा अंशमां जाय त्यारे राशिना अंतसुधी मूशरिफ कहेवाय छे. जो शीघ्र गतिवाळो ग्रह क्रूर ग्रहमां आवीने आ बे योगो उत्पन्न करे तो मंद गतिवाळो ग्रह निर्बळ जाणवो."

प्रश्नप्रकाशमां तो नव प्रकारे ज निर्बळता आ प्रमाणे कही छे.—

"पापः शीघ्रः १ शुभो वक्री २ बालो ३ वृद्धो ४ ऽरिभा ५ स्तगः ६।
नीचः ७ पापान्तरे ८ ऽष्टस्थ ९ इत्युक्तो बलवर्जितः ॥ १ ॥"

"क्रूर ग्रह शीघ्रगामी होय १, शुभ ग्रह वक्री होय २, बाळक ३, वृद्ध ४, शत्रुना स्थानमां रहेलो ५, अस्त पामेलो ६, नीच स्थाने रहेलो ७, क्रूर ग्रह साथे रहेलो ८, अने लग्नथी आठमे स्थाने रहेलो ९, आ नव प्रकारनो ग्रह निर्बळ कह्यो छे." आ प्रमाणे अन्यत्र पण संभव प्रमाणे दुर्बळता जाणवी.

दिगीशः केन्द्रगः श्रेयान् दिग्बली भालगस्तु न ।
बलिनौ जन्मलग्नेशौ केन्द्रोपचयगौ शुभौ ॥ ४८ ॥

अर्थ—दिक्पति केंद्रमां होय तो ते शुभ छे, पण दिग्बली अने सन्मुख रह्यो होय तो ते शुभ नथी जन्मेश अने लग्नेश बळवान् होइने केंद्र के उपचयस्थानमां रह्या होय तो ते शुभ छे.

दिगीश एटले जे दिशामां जवुं होय ते दिशानो स्वामी जे कोइ ग्रह बळवान् थइने यात्रालग्नमां कोइ पण केंद्रना स्थानमां रह्यो होय तो ते शुभ छे, परंतु गमन करवा योग्य दिशानो स्वामी ग्रह लग्नमां दिग्बळी होय तो ते शुभ नथी. ग्रहोनुं दिग्बलीपणुं पूर्वे "लग्नाद्युत्क्रमकेन्द्र०" (द्वितीय प्रकाश २९) ए श्लोकमा कह्युं छे, तथा भालग एटले जवा लायक दिशानो स्वामी ग्रह लग्नमां ते ज दिशामा रहेवा वडे करीने जनारने सन्मुख थतो होय तो ते शुभ नथी ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"दिगीश्वरो ललाटस्थो यदि वा दिग्बलान्वितः ।
वधबन्धप्रदो यातुः केन्द्रगस्तु जयार्थदः ॥ १ ॥"

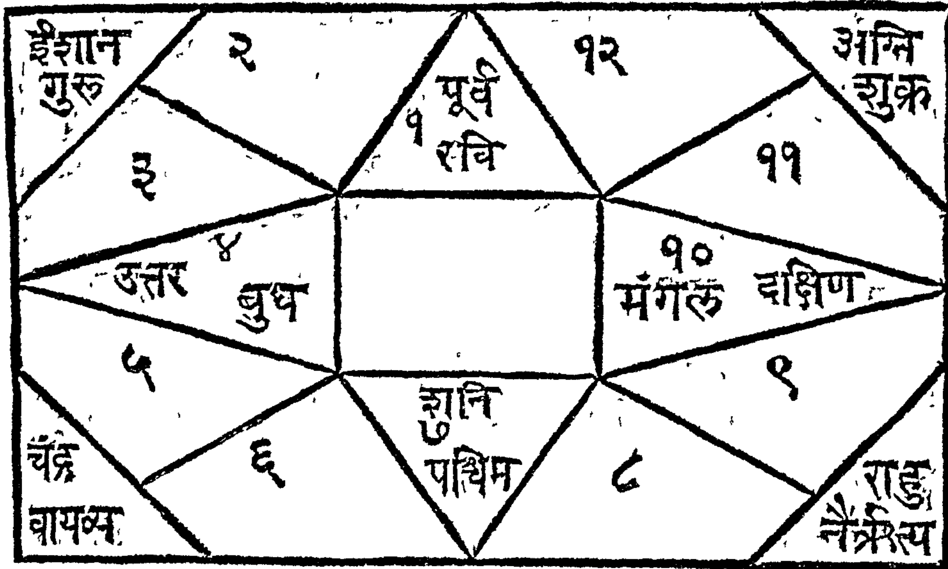
"दिशानो पति सन्मुख रह्यो होय, अथवा दिग्बळे करीने सहित होय तो प्रयाण करनारने वध बंधन करनारो थाय छे, अने केंद्रमा रह्यो होय तो जय तथा धनने आपनार थाय छे"

दिशाना पतिने सन्मुख रहेवानो प्रकार पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे कह्यो छे —

"लग्ने १ ज्ञानुर्व्यय १२ जव ११ गतः शुक्र आरो नज्रः १० स्थो,
राहुर्धर्मा ए ष्टम ८ गृहगतः सप्तमस्थो ७ ऽर्कपुत्रः ।
नीहारांशू रिपु ६ तनय ५ गो बंधु ४ गः सोमपुत्रो,
जीवस्त्रि ३ द्वि २ स्थित इति ललाटस्थिताः पूर्वतः स्युः ॥ १ ॥"

"लग्नमां (प्रथम स्थानमां) रहेलो सूर्य, बारमा अने अगीयारमा स्थानमां रहेलो शुक्र, दशमा स्थानमां रहेलो मंगळ, नवमा अने आठमा स्थानमां रहेलो राहु, सातमा स्थानमां रहेलो शनि, छठ्ठा अने पांचमा स्थानमां रहेलो चंद्र, चोथा स्थानमां रहेलो बुध अने त्रीजा तथा बीजा स्थानमां रहेलो गुरु, आ प्रमाणे पूर्वादि दिशाना अनुक्रमे रहेला ग्रहो सन्मुख कहेवाय छे."

यात्राना लग्नमां सन्मुख रहेला ग्रहनुं चक्र—



सन्मुख रहेला ग्रहनुं फळ आ प्रमाणे छे.—

"शस्त्राग्निजयं १ व्याधि २ धनक्षयो ३ बन्धनं ४ मृति ५ र्व्याधिः ६ ।
हारिः ७ सैन्यविमर्दो ८ ज्ञालगदिगधिपफलं क्रमशः ॥ १ ॥"

"पूर्व दिशानो अधिपति सन्मुख रह्यो होय तो शस्त्र अने अग्निनो जय थाय, अग्नि खूणानो स्वामी सन्मुख होय तो व्याधि थाय, दक्षिणनो स्वामी सन्मुख होय तो धननो क्षय थाय, नैर्ऋत्यनो स्वामी सन्मुख होय तो बंधन थाय, पश्चिमनो स्वामी सन्मुख होय तो मृत्यु थाय, वायव्यनो स्वामी सन्मुख होय तो व्याधि थाय, उत्तरनो स्वामी सन्मुख होय तो पराजय थाय, अने ईशाननो स्वामी सन्मुख होय तो सैन्य भांगे."

विशेष ए छे जे—"उदय पामेलो केतु अग्र भागेलो नमेलो होय अने यात्रानी दिशामां सन्मुख थयो होय तो ते शुभ छे. तथा उपचय करनार ग्रहनी दिशामां जवुं, पण अपचय करनार ग्रहनी दिशामां न जवुं." ए प्रमाणे लल्ल कहे छे.

मूळ श्लोकमां जन्मेश अने लग्नेश वळवान् कह्या छे ते आ प्रमाणे.—गंडांतमां रहेवुं, गोचरादिकनी प्रतिकूळता, गति, प्रमाण अने वर्णथी विकृतिपणुं, सूर्यथी दक्षिणगामीपणुं, पूर्वे कहेला अढार प्रकारनां दुर्बळपणांनो अभाव, छ प्रकारना वळथी युक्तपणुं तथा, शत्रुनो पराजय करवापणुं, आटलांए करीने जन्मेश अने लग्नेश वळवान् कहेवाय छे. तथा मूळ श्लोकमां सामान्य रीते केंद्र लख्यो छे, तोपण सातमा स्थानने वर्जीने ज बीजा केंद्रस्थानमा रहेलो लग्नेश शुभ छे एम जाणवुं. विशेष ए छे जे—"जन्मेश अने लग्नेश क्रूर होय तोपण तेमने सर्व कार्यमां वळवान् करीने सौम्य ग्रह जेवा ज जाणवा.

केंद्रादिकमां रहेला ग्रहोनी व्यवस्था कही. हवे यात्रानी कुंडळीमां केवा अने कया ग्रहोए प्रयाण करनारने कयो उपाय जयकारक छे ? ते कहे छे.—

सितेज्या १ विन्दु २ रार्किज्ञतमोऽन्त्याः ३ सूर्यमंगलौ ४ ।
सामादिसाधकाः केन्द्रोपचयेषु बलोत्कटाः ॥ ४ए ॥

अर्थ—यात्राकुंडळीमां शुक्र अने गुरु वळवान् थइने केंद्र के उपचयस्थानमां रह्या होय तो साम उपाये करीने जय थाय छे, ए ज रीते चंद्र रह्यो होय तो दान उपाये करीने, शनि, बुध, राहु अने केतु रह्या होय तो भेद उपाये करीने अने सूर्य तथा मंगळ रह्या होय तो दंड उपाये करीने जय थाय छे

साम एटले संधिना उपाये करीने जय थाय छे. अहीं करेलो संधि जे प्रकारे निश्चल थाय ते प्रकार कहे छे.—

"भाग्ये मैत्रे शीतरश्मौ स पुष्ये, द्वादश्यां वा शुक्रदृष्टे च लग्ने ।
अष्टम्या वा तैतिलाख्ये प्रदिष्टा, पूर्वाचार्यैरत्र संधानसिद्धिः ॥ १ ॥"

"दशमा तथा चोथा स्थानमां चंद्र होय, शुक्र लग्नने जोतो होय, बारस अथवा आठमने दिवसे पुष्य नक्षत्रमा तैतिल नामा करणमा पूर्वाचार्योए संधाननी सिद्धि कथन करेली छे."

विशेष ए छे जे—ते ते ग्रहोना लग्नमा अथवा नवांशोमां तेमज वार होराने विषे पण अनुक्रमे कहेला उपाये करीने सर्व कार्यमां सिद्धि थाय छे.

हवे जेवा ग्रहना वळे शत्रुथी पहेलां प्रयाण करवुं के पछी करवुं सफळ छे ते कहे छे.—

पौरा ज्ञजीवमन्दाः स्युरपरे यायिनो ग्रहाः ।
सफला यायिभिर्यात्रा बलिभिः स्थितिरन्यथा ॥ ५० ॥

अर्थ—बुध, गुरु अने शनि ए त्रण ग्रहो पौर (स्थायी) कहेवाय छे, अने बाकीना ग्रहो यायी कहेवाय छे तेमा जो यायी ग्रहो वळवान् होय तो शत्रुथी पहेलां ज यात्रा

करवी सफळ छे, अने स्थायी ग्रहो बळवान् होय तो पोताने स्थाने ज स्थिति करवी सफळ छे, एटले के शत्रुनी पहेलां पोते प्रयाण न करवुं. विशेष ए छे जे—"स्थायी अने यायी ग्रहो मिश्र होय एटले के बन्ने ग्रहोनुं बळवानपणुं होय तो द्वैधी भाव करवो, एटले के अर्धुं सैन्य स्थायी राखवुं अने अर्धा सैन्यने प्रयाण कराववुं. तथा सौम्य ग्रहो बळवान् होय तो संधि करवी अने क्रूर ग्रहो बळवान् होय तो युद्ध करवाथी जय थाय छे. बन्ने जातना ग्रहो निर्बळ होय तो कोइ भाग्यवान् अन्य राजानो आश्रय करवो." आ सर्व योगयात्रा ग्रंथमां कह्युं छे.

आ प्रमाणे पचीश श्लोकोए करीने यात्रानी लग्नकुंडळीनुं स्वरूप विस्तारथी कह्युं. आ स्वरूप सामान्य रीते राजादिकने माटे जाणवुं, कारण के राजाओ पण नीचेना श्लोकमां कहेला योगो न मळे तोपण केवळ लग्नना बळथी पण यात्रा करी शके छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"ऐकान्तिकगन्तव्ये दैवेन निपीडिते च यातव्ये ।
केवलविलग्नयोगादपि याता सिद्धिमाप्नोति ॥ १ ॥"

"दैवयोगे अवश्य एकांते करीने यात्रा करवानी जरूर पडी होय तो केवळ लग्नना बळथी पण यात्रा करनार सिद्धिने पामे छे."

हवे शुभ तिथि, नक्षत्र, लग्न विगेरेना बळ विना पण जेवा ग्रहयोगोए करीने राजाओनी यात्रा सफळ थाय छे तेवा मात्र राजाने ज योग्य एवा यात्राने लायक ग्रहयोगो कहेवानी इच्छाथी कहे छे.—

चौराणां शकुनैर्यात्रा नक्षत्रैश्च द्विजन्मनाम् ।
मुहूर्त्तैः सिद्धयेऽन्येषां राज्ञां योगैश्च ते त्वमी ॥ ५१ ॥

अर्थ—चोरोने शकुनवडे यात्रा करवी सिद्धिने माटे छे, ब्राह्मणोने नक्षत्रनी शुद्धिए करीने यात्रा करवी शुभ छे, बीजा एटले वैश्य, शूद्र, कारीगरो विगेरेने शुभ मुहूर्त्ते करीने यात्रा करवी शुभ छे, अने राजाओने योगोवडे करीने यात्रा करवी शुभ छे, एटले के तिथि, वार अने लग्नादिकनी शुद्धि न होय तोपण राजाओने आ ग्रहयोगोमां यात्रा करवाथी कार्यसिद्धि थाय छे. दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"तिथि १ क्षण २ भ ३ वाराणां ४ साध्यं योगेन सिध्यति ।
तस्मात्सर्वेषु कार्येषु ग्रहयोगान् सुचिन्तयेत् ॥ १ ॥"

"तिथि, मुहूर्त्त, नक्षत्र अने वारोथी साधवा लायक कार्यो योगवडे सिद्ध थाय छे, तेथी सर्व कार्योमां ग्रहयोगनो सारी रीते विचार करवो."

अहीं कोइ शंका करे के—ग्रहयोगनो विचार करवो ते ठीक छे, परंतु लग्न बळवान् छतां पण ग्रहोनी सौम्यता अने क्रूरता वडे करीने विचारवानी छे, अने अहीं तो तेना विचारनो लेश पण कह्यो नथी तेनो शो हेतु छे ? आनो जवाब ए छे जे—अहीं योगनुं बळ ज प्रधानपणे कह्युं छे. जेम अन्य ओषधिना संयोगथी वत्सनाग विगेरे विष पण रसायणरूप थइने प्राणीओने जीवाडनारुं थाय छे, तेम क्रूर ग्रह पण योगना वशथी शुभदायी थाय छे. तथा जेम घी तथा मध सरखे भागे मिश्र करवाथी मृत्युने करनारुं एवुं उपविष बने छे एम चरकमां कह्यु छे, ते ज रीते शुभ ग्रहो पण योगना वशथी अशुभ थाय छे, तेथी करीने मास, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, मुहूर्त, चंद्र, तारा अने लग्ननुं विरुद्धपणुं छतां पण आ योगोए करीने यात्रा सफळ थाय छे एम सिद्ध मानवुं रत्नमाळामां पण कह्युं छे के—

"तिथौ क्षणे भे करणे च वारे, योगे विलग्ने हिमगौ नृपाणाम् ।
पापेऽपि यात्रा सफलात्र योगैः,"

"तिथि, मुहूर्त, नक्षत्र, करण, वार, योग, लग्न अने चंद्र ए सर्वे पाप एटले अशुभ होय तोपण राजाओने योगोवडे करीने यात्रा करवी सफळ छे."

आ योगोनुं बळ एकांतिक कार्यना विषयमा जाणवुं, परंतु घणी उतावळ न होय तो मास, तिथि, नक्षत्र विगेरेनुं बळ तथा आ योगोनुं बळ एम सर्व बळ जोवुं. ते विषे भास्कर कहे छे के—"अवमाधिमासयोर्न प्रतिष्ठतेऽभीष्टसिद्धयर्थी । "इष्ट सिद्धिना अर्थीए क्षय मास तथा अधिक मासमा प्रयाण न करवुं" "तथापि हि कुशललग्नि" "तोपण कुशळ (शुभ) लग्न जोवुं." इत्यादि.

हवे ग्रहयोगो कहे छे —

अर्कार्किशशिनः सिद्ध्यै राज्ञां लग्ना १ रि ६ मध्य १० गाः (१) ।
सितेज्यमन्दज्ञाराश्च लग्ना १ स्त ७ त्रि ३ सुखा २ रि ६ गाः (२) ॥ ५२ ॥

अर्थ—लग्नमां सूर्य, छठे स्थाने शनि अने दशमे स्थाने चंद्र रह्यो होय तो ते वखते राजानी यात्रा सिद्धिने माटे छे (१) लग्नमां शुक्र, सातमा भवनमां गुरु, त्रीजे स्थाने शनि, बीजे स्थाने बुध अने छठे स्थाने मंगळ रह्यो होय तो ते शुभ छे (२)

गुरुज्ञार्काश्च लग्न १ स्व २ भ्रातृपु ३ क्रमतः श्रिये (३) ।
लग्ना १ रि ६ गौ च जीवार्कौ जयदौ ऽष्टमे विधौ (४) ॥ ५३ ॥

अर्थ—लग्नमा गुरु होय, बीजा भावमां बुध होय अने त्रीजा भावमां सूर्य होय तो

१ शुभः इति प्रत्यन्तरे

ते लक्ष्मीने माटे छे–शुभ छे. (३). लग्नमां गुरु होय, छठा भावमां सूर्य होय अने आठमा सिवाय बीजा कोइ पण भावमां चंद्र होय तो ते पण शुभ छे. (४).

मन्दारौ त्र्या ३ य ११ षट्सु ज्ञसितेज्याश्चोत्कटाः श्रिये (५) ।
केन्द्रे च बलिनौ ज्ञेज्याविन्दौ त्वापोक्लिमेऽबले (६) ॥ ५४ ॥

अर्थ—शनि अने मंगळ त्रीजे, अगीयारमे अने छठे स्थाने रह्या होय तथा बुध, शुक्र अने गुरु बळवान् थइने गमे ते स्थाने रह्या होय तो ते लक्ष्मीने माटे छे–शुभ छे. (५). बुध अने गुरु बळवान् थइने केंद्रमां रह्या होय तथा चंद्र निर्बळ थइने आपोक्लिम एटले ३–६–९–१२ मे स्थाने रह्यो होय तो ते शुभ छे. (६).

श्रिये विधुः सुखे ४ऽस्ते ७, तु सितज्ञौ (७) व्यत्ययेन वा (८) ।
थाने त्रिकोणकेन्द्रस्थाः सौम्याः षट् त्र्यायगाः परे (९) ॥ ५५ ॥

अर्थ—चंद्र चोथा भावमां रह्यो होय अने शुक्र तथा बुध सातमा भावमां रह्या होय तो ते लक्ष्मीने माटे छे. (७). अथवा विपरीतपणे होय एटले के शुक्र अने बुध चोथा भावमां होय अने चंद्र सातमा भावमां होय तो ते पण लक्ष्मीने माटे छे. (८). सौम्य ग्रहो त्रिकोण अने केंद्रमां रह्या होय तथा क्रूर ग्रहो छठे, त्रीजे अने अगीयारमे रह्या होय तो ते पण यात्रामां लक्ष्मीने माटे छे. (९).

जयाय मूर्त्तौ १ मार्त्तंडः सौम्याः स्वे २ सप्तमो विधुः (१०) ।
बृहस्पतिर्वा केन्द्रस्थः शेषेषु स्वा २ य ११ वर्त्तिषु (११) ॥ ५६ ॥

अर्थ—प्रथम भावमां सूर्य होय, बीजा भावमां सौम्य ग्रह होय अने सातमा भावमां चंद्र होय तो ते जयने माटे छे. (१०). बृहस्पति (गुरु) केंद्रमां रह्यो होय अने बाकीना ग्रहो (क्रूर तथा सौम्य सर्वे) बीजा तथा अगीयारमा भावमां होय तो ते पण जयने माटे छे. (११). आ रीते अगीयार योग थया.

यातुः प्राग्दक्षिणयोर्ज्ञसितान्तर्जयकरः सुखे चेन्दुः (१२) ।
गुरुरेकान्तर आर्के (१३) ज्ञो वा शुक्राच्च (१४) चौमाद्या (१५) ॥ ५७ ॥

अर्थ—पूर्व अथवा दक्षिणमां यात्रा करनारने चोथा भावमां रहेलो चंद्र जो बुध अने शुक्रनी मध्ये रह्यो होय तो ते जयकारक छे. (१२). पश्चिम अने उत्तर दिशामां यात्रा करनारने माटे आ योगनी अपेक्षा नथी. शनिथी [1]एकांतर गृह (स्थान)मां गुरु रह्यो होय तो ते शुभ छे. (१३). शुक्रथी एकांतर गृहमां रहेलो बुध होय तो ते शुभ

---

१ जे स्थाने शनि होय तेनी पछीना एक स्थानने मूकीने बीजाज स्थानमां रह्यो होय.

छे. (१४). अने मंगळथी एकांतर गृहमां रहेलो बुध पण शुभ छे. (१५). दैवज्ञवल्लभमां पण कह्युं छे के—

"भृगुजादथवा महीसुताद्बुध एकान्तरभे स्थितो यदा ।
रविजादथवा गुरुस्तदा, व्रजतो यान्त्यरयः क्षयं रणे ॥ १ ॥"

"शुक्रथी अथवा मंगळथी एकांतर राशिमां जो बुध रह्यो होय, अथवा शनिथी एकांतर राशिमां जो गुरु रह्यो होय तो ते समये यात्रा करनारना शत्रुओ युद्धमां क्षय पामे छे"

गुरुर्जयाय लग्न १ स्थः क्रूरैर्लाभ ११ नभो १० गतैः (१६)
तथा चन्द्रेऽष्टमे षष्ठे शुक्रे लग्नगतो गुरुः (१७) ॥ ५८ ॥

अर्थ—लग्नमां (पहेला भावमां) गुरु होय, अने क्रूर ग्रहो अगीयारमे तथा दशमे स्थाने होय तो ते जयने माटे छे. (१६) चंद्र आठमा भावमां होय, शुक्र छठा भावमां होय अने गुरु लग्नमा होय तोपण ते जयने माटे छे. आ सर्व मळीने कुल १७ योगो थया हवे योगपिंड (योगनो समूह) कहे छे.—

सिद्ध्यै धी ५ धर्म ९ केन्द्रेषु बुधवाक्पतिभार्गवैः ।
योगो १ ऽधियोगो २ योगाधियोग ३ श्चैक १ द्विक २ त्रिकैः ३ ॥ ५९ ॥

अर्थ—बुध, गुरु अने शुक्र ए त्रणमांथी एक ग्रह जो पांचमा, नवमा के केन्द्रमाना कोइ पण स्थानमां होय तो ते योग कहेवाय छे तेवी ज रीते (ते ज स्थानोमां) जो बुध, गुरु अने शुक्रमाना बे ग्रहो रह्या होय तो अधियोग थाय छे, अने ते त्रणे ग्रहो ते ज स्थानोमां रह्या होय तो योगाधियोग थाय छे आ त्रणेनुं फळ दैवज्ञवल्लभमा आ प्रमाणे कह्युं छे —

"योगेन यो याति नृपोऽरिदेशं, सुखेन सोऽभ्येत्यधियोगयाता ।
प्राप्नोति कीर्ति विजयं धनं च, योगाधियोगेन महीमशेषाम् ॥ १ ॥"

"जे राजा योगे करीने शत्रुना देश उपर प्रयाण करे छे ते सुखेथी पाछो आवे छे, अधियोगमा यात्रा करनार (राजा) कीर्ति, विजय अने धन पामे छे, तथा योगाधियोगे करीने समग्र पृथ्वी पामे छे"

अहीं आ प्रमाणे आम्नाय छे जो बीजो कोइ यात्रानो योग मळे अथवा न मळे तोपण जो बुध, गुरु अने शुक्र ए त्रणमांथी कोइ पण ग्रह उपर गणावेला स्थानोमांथी कोइ पण स्थाने रह्यो होय तो ते ज वखते यात्रा करवी शुभ छे, अने बे अथवा त्रणे ग्रहो उक्त स्थानमा रह्या होय तो ते घणाज उत्तम छे

आ त्रण योगो स्थूळ दृष्टिए कह्या छे, पण सूक्ष्म दृष्टिए जोतां तो त्रणसो ने बेता-

त्रीश ३४२ योगो थाय छे. (तेउनी अत्रे अति आवश्यकता नहीं होवाथी लख्या नथी. आ ग्रंथनी मोटी टीकामां ते सविस्तर आप्या छे.)

ग्रहनी दृष्टिनी अपेक्षा रहित उपरना योगो कह्या. हवे ग्रहनी दृष्टिनी अपेक्षाए वे योग थाय छे ते कहे छे.—

शुक्रं त्र्या ३ या ११ म्बु ४ गं पश्यन् जीवो यात्रासु केन्द्रगः ।
राज्ञां दत्ते जयं क्रूरैः कलत्रादित्रयान्यगैः ॥ ६० ॥

अर्थ—यात्रालग्नमां केंद्रस्थाने रहेलो गुरु त्रीजा, अगीयारमा अने चोथा स्थानमां रहेला शुक्रने जोतो होय तथा क्रूर ग्रहो सातमा, आठमा अने नवमा सिवायनां वीजां स्थानमां रह्या होय तो ते समये प्रयाण करनार राजानो जय थाय छे.

बुधो वपुः १ सुख ४ द्वेषि ६ व्योम १० स्थो वीक्षितः शुभैः ।
जयाय राज्ञां पापेषु लग्ना १ स्त ७ व्यय १२ वर्जिषु ॥ ६१ ॥

अर्थ—पहेले, चोथे, छठे के दशमे स्थाने रहेलो बुध शुभ ग्रहोए जोयेलो होय तथा पापग्रहो पहेला, सातमा अने बारमा सिवायना वीजां स्थानोमां रह्या होय तो ते प्रयाण करनार राजाने जय आपनारा छे.

हवे सर्व योगोनो सार कहे छे.—

इति सप्तरूपकार्द्धैः सकलश्लोकत्रयेण चोक्तेषु ।
योगेषु राजयोगेष्वपि शुभदा भूभुजां यात्रा ॥ ६२ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे सात अर्धा श्लोकोए करीने तथा त्रण आखा श्लोकोए करीने योगो कह्या. ते सिवाय राजयोगोमां पण करेली यात्रा राजाउने शुभकारक छे. आ राजयोगो बृहत् जातकमां कह्या छे. ते पण यात्रामां उपयोगी छे.

ते राजयोगो सर्वे कार्यमां उपयोगी होवाथी अत्रे कहे छे.—

"वक्रार्कजार्कगुरुभिः सकलैस्त्रिभिश्च,
स्वोच्चेषु षोडश नृपाः कथितैकलग्ने ।
द्व्येकाश्रितेषु च तथैकतमे विलग्ने,
स्वक्षेत्रगे शशिनि षोडश भूमिपाः स्युः ॥ १ ॥"

"शनि, मंगळ, सूर्य अने गुरु ए चारे ग्रहो पोतपोताना उच्च स्थानमां रहीने तेमांनो एक एक ग्रह लग्नमां रह्यो होय त्यारे चार राजयोगो थाय छे, ते चारे ग्रहमांना त्रण ग्रहो पोतपोताना उच्च स्थानमां रहीने ते त्रणेमांनो एक एक ग्रह लग्नमां होय त्यारे

चार राजयोग थाय छे आ बन्ने मळीने सोळ राजयोगो थाय छे. ते ज रीते ते चार ग्रहो मांहेला बे ग्रहो उच्च स्थानमां रहीने तेमांनो एक एक ग्रह लग्नमां रह्यो होय अने चंद्र कर्कमां रह्यो होय त्यारे चार राजयोगो थाय छे, तथा ते चार ग्रहोमांथी एक एक ग्रह उच्च स्थानमा रहीने लग्नमां रह्यो होय अने कर्क राशिमां चंद्र रह्यो होय त्यारे चार राजयोगो थाय छे. आ बन्ने मळीने पण सोळ राजयोगो थाय छे, अने सर्वे मळीने बत्रीश थाय छे" ते नीचे प्रमाणे —

मेषमा सूर्य, कर्कमां गुरु, तुलामां शनि अने मकरमां मंगळ, बाकीना ग्रहो गमे ते स्थाने होय, आ प्रमाणे ग्रहनी स्थिति होय त्यारे जो मेष लग्न होय तो पहेलो राजयोग थयो, कर्क लग्नमा बीजो राजयोग थयो, तुला लग्नमा त्रीजो अने मकर लग्नमां चोथो राजयोग थयो हवे त्रण ग्रहो आश्रीने चार राजयोगो आ प्रमाणे छे—मेषनो सूर्य, कर्कनो गुरु, तुलानो शनि अने बीजा ग्रहो गमे त्या होय त्यारे मेषना लग्नमा पहेलो, कर्कना लग्नमा बीजो अने तुलाना लग्नमां त्रीजो राजयोग थयो उपला चार साथे मेळवतां सात राजयोग थया हवे मेषनो सूर्य, कर्कनो गुरु, मकरनो मंगळ अने बीजा ग्रहो गमे त्यां होय त्यारे मेष लग्नमां पहेलो, कर्क लग्नमां त्रीजो अने मकर लग्नमां त्रीजो राजयोग थयो कुल १० थया हवे मेषनो सूर्य, तुलानो शनि, मकरनो मंगळ, बाकीना गमे त्यां होय त्यारे मेष लग्न होय तो पहेलो, तुला लग्न होय तो बीजो अने मकर लग्न होय तो त्रीजो राजयोग थता कुल १३ राजयोग थया. हवे कर्कनो गुरु, तुलानो शनि, मकरनो मंगळ अने बीजा ग्रहो गमे त्यां होय त्यारे कर्क लग्न होय तो पहेलो, तुला लग्न होय तो बीजो अने मकर लग्न होय तो त्रीजो राजयोग थतां कुल १६ राजयोग थाय छे.

हवे बे ग्रह तथा एक ग्रहने आश्रीने सोळ योगो आ रीते थाय छे—कर्कनो चंद्र, मेषनो सूर्य, कर्कनो गुरु अने बाकीना ग्रहो गमे त्या होय त्यारे मेष लग्न होय तो पहेलो योग अने कर्क लग्न होय तो बीजो योग हवे मेषनो सूर्य, कर्कनो चन्द्र, तुलानो शनि, बाकीना ग्रहो गमे त्यां होय त्यारे मेष लग्नमा त्रीजो अने तुला लग्नमां चोथो योग थाय हवे मेषनो सूर्य, कर्कनो चंद्र अने मकरनो मंगळ होय त्यारे मेष लग्नमां पाचमो अने मकर लग्नमां छठ्ठो योग थाय छे हवे कर्कमा चंद्र अने गुरु तथा तुलामा शनि होय त्यारे कर्क लग्नमा सातमो अने तुला लग्नमा आठमो योग थाय छे. हवे कर्कमां गुरु अने चंद्र तथा मकरमां मंगळ होय त्यारे कर्क लग्नमा नवमो अने मकर लग्नमा दशमो योग थाय छे हवे कर्कमां चंद्र, तुलामा शनि अने मकरमां

मंगळ होय त्यारे तुला लग्नमां अगीयारमो अने मकर लग्नमां बारमो योग थाय छे. हवे एक ग्रहने आश्रीने चार योगो आ प्रमाणे.—कर्कनो चंद्र अने मेष लग्नमां सूर्य रह्यो होय त्यारे पहेलो, कर्कना लग्नमां चंद्र अने गुरु होय त्यारे बीजो, कर्कनो चंद्र अने तुला लग्नमां शनि होय त्यारे त्रीजो अने कर्कनो चंद्र तथा मकर लग्नमां मंगळ होय त्यारे चोथो योग थाय छे. उपरना चार सहित करतां सोळ थाय अने प्रथमना सोळ साथे करतां कुल बत्रीश राजयोगो थया.

हवे ५२८ राजयोगो थाय छे ते कहे छे.—

"वर्गोत्तमगते लग्ने चन्द्रे वा चन्द्रवर्जितैः ।
चतुराद्यैर्ग्रहैर्दृष्टे नृपा द्वाविंशतिः स्मृताः ॥ २ ॥"

"लग्न अथवा चंद्र वर्गोत्तममां रह्या होय, अने ते (लग्न अथवा चंद्र)ने चंद्र विनाना चार, पांच के छ ग्रहोए जोयेला होय त्यारे बावीश राजयोग थाय छे."

जे राशि लग्नमां होय ते राशिना ज नामनो जे नवांश ते वर्गोत्तम कहेवाय छे, अने ते ज नवांश लग्नमां आव्यो होय तो ते लग्न वर्गोत्तम कहेवाय छे. ए ज प्रमाणे चंद्रमां पण जाणवुं. लग्न के चंद्र वर्गोत्तमनो होय अने तेना पर चंद्र सिवाय बीजा चार, पांच के छ ग्रहोनी दृष्टि पूर्ती होय तो दरेक लग्नने आश्रीने बावीश बावीश राजयोगो थाय छे. ते आ प्रमाणे.—लग्न उपर चार ग्रहोनी दृष्टि पूर्ती होय तो पंदर भेद थाय छे, पांचनी दृष्टि पूर्ती होय तो छ भेद अने छनी दृष्टि पूर्ती होय तो एक भेद ए रीते बावीश भेद थाय छे, एटले के लग्नने रवि, मंगळ, बुध अने गुरु ए चार ग्रहोए जोयुं होय त्यारे पहेलो योग थाय छे. रवि, मंगळ, बुध अने शुक्र जोता होय त्यारे बीजो. रवि, मंगळ, बुध अने शनि जोता होय त्यारे त्रीजो. रवि, मंगळ, गुरु अने शुक्र जोता होय त्यारे चोथो. रवि, मंगळ, गुरु अने शनि जोता होय त्यारे पांचमो. रवि, मंगळ, शुक्र अने शनि जोता होय त्यारे छठो. रवि, बुध, गुरु अने शुक्र जोता होय त्यारे सातमो. रवि, बुध, गुरु अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे आठमो. रवि, बुध, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे नवमो. रवि, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे दशमो. मंगळ, बुध, गुरु अने शुक्रनी दृष्टि होय त्यारे अगीयारमो. मंगळ, बुध, गुरु अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे बारमो. मंगळ, बुध, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे तेरमो. मंगळ, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे चौदमो. तथा बुध, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे पंदरमो राजयोग थाय छे. हवे पांच ग्रहोनी दृष्टिए करीने छ योग आ प्रमाणे छे—रवि, मंगळ, बुध, गुरु अने शुक्रनी दृष्टि पूर्ती होय त्यारे पहेलो राजयोग थाय छे. रवि, मंगळ, बुध, गुरु अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे बीजो. रवि, मंगळ, बुध, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे

त्रीजो रवि, मंगळ, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे चोथो रवि, बुध, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे पांचमो. तथा मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे छठ्ठो राजयोग थाय छे. तथा छए ग्रहो एटले रवि, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए छएनी दृष्टि लग्न उपर पडती होय त्यारे एक राजयोग थाय छे आ सर्वे मळीने बावीश राजयोग थया. आ बावीश योगो मेष लग्नने वर्गोत्तम होय त्यारे थया. ए रीते वृष, मिथुन विगेरे बारे राशिना लग्नने आश्रीने बावीश बावीश राजयोगो थता कुल २६४ राजयोग थाय छे ए ज रीते प्रत्येक राशिमा वर्गोत्तम नवांशमां रहेला चंद्रने आश्रीने पण २६४ राजयोग थाय छे. ते बन्ने मळीने कुल ५२८ योगो थया.

हवे पांच योगो कहे छे.—

"यमे कुम्भेऽर्केऽजे गवि शशिनि तैरेव तनुगै-
र्नृयुक्सिंहालिस्थैः शशिजगुरुवक्रैर्नृपतयः ।
यमेन्दू तुंगेऽङ्गे सवितृशशिजौ षष्ठभवने,
तुलाऽजेन्दुक्षेत्रैः ससितकुजजीवैश्च नरपौ ॥ ३ ॥"

"कुंभनो शनि होय, मेषमां सूर्य होय, वृषमां चंद्र होय, मिथुनमां बुध होय, सिंहनो गुरु होय अने वृश्चिकनो मंगळ होय. आ रीते ग्रहो रहेला होय अने तेमा वळी कुंभ लग्न होय तो पहेलो योग, मेष लग्न होय तो बीजो अने वृष लग्न होय तो त्रीजो राजयोग थाय छे. तथा शनि अने चंद्र पोताना उच्च स्थानना एटले के तुलानो शनि अने वृषनो चंद्र होय अने वळी लग्नमा रह्या होय तथा कन्या राशिमा सूर्य अने बुध होय, तुलामा शुक्र होय, मेषनो मंगळ होय, अने कर्कनो गुरु होय आ प्रकारनी ग्रहोनी स्थितिमां तुला लग्न होय तो पहेलो योग अने वृष लग्न होय तो बीजो योग तेने पूर्वना त्रण साथे गणतां पांच राजयोग थाय छे.'

हवे त्रण राजयोगो कहे छे —

"कुजे तुङ्गेऽर्केन्द्वोर्धनुषि यमलग्ने च नृपतिः,
पतिर्भूमेश्चान्यः क्षितिसुतविलग्ने सशशिनि ।
सचन्द्रे सौरेऽस्ते सुरपतिगुरौ चापधरगे,
स्वतुङ्गस्थे भानावुदयमुपयाते क्षितिपतिः ॥ ४ ॥"

"मकरनो मंगळ होय, धनुष राशिमा सूर्य ने चंद्र होय, कोइ पण राशिमां रहेलो शनि लग्नमा होय त्यारे पहेलो राजयोग थाय छे. आ पहेला योगमां ज जो लग्नमा

मंगळ अने शनि होय तो बीजो योग थाय छे. तुलामां चंद्र अने शनि होय, धनुषमां गुरु होय अने सूर्य पोताना उच्च स्थानमां होइने एटले मेष राशिनो होइने लग्नमां रह्यो होय अर्थात् मेष राशिना लग्नमां सूर्य रह्यो होय त्यारे त्रीजो राजयोग जाणवो."

हवे फरीने बे राजयोगोने कहे छे.—

वृषे सेन्दौ लग्ने सवितृगुरुतीक्ष्णांशुतनयैः,
सुहृ ४ ज्जाया ७ ख १० स्थैर्भवति नियमान्मानवपतिः ।
मृगे मन्दे लग्ने सहजरिपुधर्मव्ययगतैः,
शशाङ्काद्यैः ख्यातः पृथुगुणयशाः पुंगणपतिः ॥ ५ ॥

वृष लग्नमां चंद्र होय, सिंहनो सूर्य होय, वृश्चिकनो गुरु होय अने कुंभनो शनि होय त्यारे पहेलो राजयोग थाय छे. मकर लग्नमां शनि होय, मीननो चंद्र होय, मिथुननो मंगळ होय, कन्यानो बुध होय, धनुषनो गुरु होय अने शुक्र तथा सूर्य गमे ते स्थाने होय त्यारे बीजो योग थाय छे.

फरीने त्रण राजयोगो कहे छे.—

न्दौ जीवे मृगमुखगते भूमितनये,
स्वतुङ्गस्थौ लग्ने भृगुजशशिजावत्र नृपती ।
सुतस्थौ वक्रार्कौ गुरुशशिसिताश्चापि हिबुके,
बुधे कन्यालग्ने भवति हि नृपोऽन्योऽपि गुणवान् ॥ ६ ॥

धनुषने विषे गुरु अने चंद्र होय, मकरमां मंगळ होय, आ प्रमाणे ग्रहनी स्थिति होय त्यारे जो मीन लग्नमां शुक्र होय तो पहेलो अने कन्या लग्नमां बुध होय तो बीजो योग थाय छे. तथा कन्या लग्नमां बुध होय, मकरमां मंगळ अने शनि होय, धनुषमां गुरु, चंद्र अने शुक्र होय त्यारे त्रीजो गुणवान् राजयोग थाय छे.

फरीथी त्रण राजयोगो कहे छे.—

झषे सेन्दौ लग्ने घटमृगमृगेन्द्रेषु सहितै-
र्यमाराकैर्योऽभूत्स खलु मनुजः शास्ति वसुधाम् ।
अजे सारे मूर्त्तौ शशिगृहगते चामरगुरौ,
सुरेज्ये वा लग्ने धरणिपतिरन्योऽपि गुणवान् ॥ ७ ॥

मीन लग्नमां चंद्र होय, कुंभनो शनि होय, मकरनो मंगळ होय अने सिंहनो अर्क (सूर्य) होय त्यारे ते माणस पृथ्वीनुं शासन करनार थाय छे. अर्थात् ते राजयोग कहेवाय छे. मेष लग्नमां मंगळ होय, चंद्रना गृहमां एटले कर्कमां गुरु होय त्यारे बीजो योग थाय छे. अथवा कर्क लग्नमां गुरु होय अने मेषनो मंगळ होय त्यारे त्रीजो राजयोग थाय छे.

कर्किणि लग्ने तत्स्थे जीवे चन्द्रसितज्ञैरायप्रासैः ।
मेषगतेऽर्के जातं विन्द्याद्विक्रमयुक्तं पृथिवीनाथम् ॥ ८ ॥

कर्क लग्नमां गुरु होय, वृषमां चंद्र, शुक्र अने बुध होय तथा मेषमां सूर्य होय त्यारे पराक्रमवन्ते युक्त एवा पृथ्वीनाथने थयेलो जाणवो एटले राजयोग थयो जाणवो.

मृगमुखेऽर्कतनये ननु संस्थे, छगकुलीरहरयोऽधिपयुक्ताः ।
मिथुनतौलिसहितौ बुधशुक्रौ, यदि तत. पृथुयशाः पृथिवीशः ॥ ९ ॥

मकर लग्नमां शनि रहेलो होय, मेषनो मंगळ होय, कर्कनो चंद्र होय, सिंहनो सूर्य होय, मिथुननो बुध होय अने तुलानो शुक्र होय त्यारे मोटा यशने करनारो राजयोग थाय छे.

स्वोच्चसंस्थे बुधे लग्ने भृगौ मेषूरणाश्रिते ।
सजीवेऽस्ते निशानाथे राजा मन्दारयोर्मृगे ॥ १० ॥

कन्या लग्नमा बुध होय, मिथुननो शुक्र होय, मीन राशिमा गुरु अने चंद्र होय तथा मकर राशिमां शनि अने मगळ होय त्यारे राजयोग थाय छे. आ सर्वे मळीने ५७९ योगो थाय छे.

आ प्रथम भांगाना राजयोगोनुं फळ कहे छे.—

अपि खलकुलजाता मानवा राज्यभाजः,
किमुत नृपकुलोत्थाः प्रोक्तभूपालयोगैः ।
नृपतिकुलसमुत्था पार्थिवा वक्ष्यमाणै-
र्भवति नृपतितुल्यस्तेष्वभूपालपुत्र॰ ॥ ११ ॥

आ उपर कहेला राजयोगोए करीने सामान्य कुळमा उत्पन्न थयेला माणसो पण राज्यने भोगवनारा थाय छे, तो क्षत्रिय कुळमां उत्पन्न थयेला माणसो राजा थाय तेमा शुं कहेवु ? तथा हवे पछी कहेवाशे एवा योगोए करीने राजकुळमा उत्पन्न थयेला माणसो राजा थाय छे, अने बीजा कुळमा उत्पन्न थयेला माणसो राजानी तुल्य (जेवा) थाय छे

ते योगो आ प्रमाणे छे —

स्वोच्चर्क्षत्रिकोणगैर्बलिष्ठैस्त्र्याद्यैर्भूपतिवंशजा नरेन्द्राः ।
पञ्चादिभिरन्यवंशजा हीनैर्वित्तयुता न भूमिपालाः ॥ १२ ॥

बळवान् एवा त्रण के चार ग्रहो पोताना उच्च स्थानमां, पोताना गृहमां के पोताना त्रिकोणमा रहेला होय तो क्षत्रिय वंशमा उत्पन्न थयेला माणसो राजा थाय छे, अने पाच, छ के सात बळवान् ग्रहो उपरना त्रण स्थानोमा रह्या होय तो सामान्य वंशमां

ઉત્પન્ન થયેલા માણસો પણ રાજા થાય છે, પરંતુ તે ગ્રહો પોતાના ઉચ્ચ વિગેરે સ્થાનમાં રહ્યા છતાં પણ જો બળહીન હોય તો તેઓ ધનવાન્ થાય છે, પણ રાજા થતા નથી. અહીં ત્રણથી સાત સુધીના પાંચ રાજયોગ થાય છે.

सिंहस्थेऽर्केऽजेन्दौ लग्ने भौमे स्वोच्चे कुंभे मन्दे ।
चापं प्राप्ते जीवे राज्ञः पुत्रं विद्याद्भूमेर्नाथम् ॥ १३ ॥

મેષ લગ્નમાં ચંદ્ર હોય, સિંહ રાશિનો સૂર્ય હોય, મંગળ પોતાના ઉચ્ચ સ્થાનનો હોય, કુંભનો શનિ હોય તથા ધનુષ રાશિનો ગુરુ હોય ત્યારે રાજવંશમાં ઉત્પન્ન થયેલો પુત્ર ભૂમિનો નાથ થાય છે એમ જાણવું. અર્થાત્ રાજયોગ થાય છે.

ફરીથી બે રાજયોગોને કહે છે.—

स्वर्क्षे शुक्रे पातालस्थे धर्मस्थानं प्राप्ते चन्द्रे ।
दुश्चिक्यांगप्राप्तिप्राप्तैः शेषैर्जातः स्वामी भूमेः ॥ १४ ॥

જ્યારે કુંભ લગ્ન હોય ત્યારે જો પાતાલ (ચોથા) સ્થાને એટલે વૃષ રાશિમાં શુક્ર રહ્યો હોય, ધર્મસ્થાનમાં એટલે તુલા રાશિમાં ચંદ્ર રહ્યો હોય, અને બાકીના એટલે રવિ, મંગળ, બુધ, ગુરુ અને શનિ એ ગ્રહો ત્રીજા, પહેલા અને અગીયારમા સ્થાનમાં એટલે મેષ, કુંભ અને ધનુષ રાશિમાં રહ્યા હોય તો રાજયોગ થાય છે. વળી જ્યારે કર્ક લગ્ન હોય ત્યારે જો પાતાલ (ચોથા) સ્થાને એટલે તુલા રાશિમાં શુક્ર હોય, મીનમાં ચંદ્ર હોય અને બાકીના રવિ વિગેરે ગ્રહો કન્યા, કર્ક અને વૃષ રાશિમાં હોય તોપણ તે રાજયોગ કહેવાય છે. સર્વ મળીને આઠ રાજયોગ થયા.

सौम्ये वीर्ययुते तनुसंस्थे वीर्याढ्ये च शुभे सुकृतस्थे ।
धर्मार्थोपचयेष्वथ शेषैर्धर्मात्मना नृपजः पृथिवीशः ॥ १५ ॥

લગ્નમાં બુધ બળવાન્ હોય, નવમા સ્થાનમાં શુક્ર કે ગુરુ બળવાન્ થઇને રહ્યો હોય અને બાકીના ગ્રહો નવમા, બીજા, ત્રીજા, છઠ્ઠા, દશમા અને અગીયારમા સ્થાનમાં રહ્યા હોય તો ક્ષત્રિયનો પુત્ર પૃથ્વીપતિ થાય છે, એટલે રાજયોગ થાય છે. સર્વ મળીને નવ રાજયોગ થયા.

હવે બીજા બે રાજયોગ કહે છે.—

वृषोदये मूर्तिधनारिलाभगैः शशांकजीवार्कसुताऽपरैर्नृपः ।
सुखे गुरौ खे शशितीक्ष्णदीधिती यमोदये लाभगतैर्नृपोऽपरैः ॥ १६ ॥

વૃષ લગ્નમાં ચંદ્ર હોય, મિથુનમાં ગુરુ હોય, તુલાનો શનિ હોય અને મીનમાં બીજા એટલે રવિ, મંગળ, બુધ અને શુક્ર હોય તો રાજયોગ થાય છે. તથા લગ્નમાં શનિ હોય, ચોથા સ્થાનમાં ગુરુ હોય, દશમા સ્થાનમાં સૂર્ય અને ચંદ્ર હોય તથા અગીયારમા સ્થા-

नमां मंगळ, बुध अने शुक्र होय त्यारे पण राजयोग थाय छे. सर्व मळीने अगीयार राजयोग थया.

फरीने बीजा बे राजयोग कहे छे.—

मेषूरणा १० य ११ तनु १ गाः शशिमन्दजीवा,
ज्ञारौ धने सितरवी हिबुके नरेन्द्रम् ।
वक्रासितौ शशिसुरेज्यसितार्कसौम्या,
होरा १ सुखा ४ स्त ७ शुभ ए खा १० प्ति ११ गताः प्रजेशम् ॥ १७ ॥

दशमा स्थानमां चंद्र होय, अगीयारमे शनि होय, लग्नमां गुरु होय, बीजे बुध अने मंगळ होय तथा चोथे स्थाने शुक्र अने रवि होय त्यारे राजयोग थाय छे वळी होरामा एटले लग्नमां मंगळ अने शनि होय, चोथे चंद्र होय, सातमे गुरु होय, नवमे शुक्र होय, दशमे सूर्य होय अने अगीयारमे बुध होय त्यारे पण राजयोग थाय छे. आ सर्वे मळीने बीजा भांगामां तेर राजयोग छे.

हवे प्रसंगने अनुसरीने बीजा योगो कहे छे.—

गुरुसितबुधलग्ने सप्तमस्थेऽर्कपुत्रे
वियति दिवसनाथे भोगिनां जन्म विद्यात् ।
शुभबलयुतकेन्द्रैः क्रूरभस्थैश्च पापै-
र्व्रजति शबरदस्युस्वामितामर्थभाक् च ॥ १७ ॥

लग्नमा गुरु, शुक्र के बुध एमांनो कोइ पण होय अथवा गुरु, शुक्र के बुधनुं लग्न होय एटले के धनुष, मीन, वृष, तुला, मिथुन के कन्या राशिनुं लग्न होय, तेमज सातमे शनि होय तथा दशमे सूर्य होय, आ प्रमाणे योग होय त्यारे ते समये उत्पन्न थयेला माणसो भोगवाळा थाय छे. वळी शुभ ग्रहोनी राशिउं (उपर कही ते ज) बळवान् होय तथा केंद्रमां होय अने वळी क्रूर ग्रहो क्रूर ग्रहनी राशिमां रहेला होय त्यारे आ प्रकारना योगमां उत्पन्न थयेल माणस भीलोनो अने चोरोनो स्वामी थाय छे तथा धनवान् थाय छे आ प्रमाणे वृहत् जातकमां कहेला राजयोगो कह्या.—

हवे बीजा पण राजयोगो आ प्रमाणे छे —

लग्ने शौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ ।
कर्मस्थाने भवेद्भौमो राजयोगस्तदा भवेत् ॥ १ ॥

लग्नमा शनि तथा चंद्र होय, त्रिकोणमा गुरु तथा सूर्य होय अने दशमा स्थानमां मंगळ होय त्यारे राजयोग १ थाय छे

धने चन्द्रशनी मेषे जीवः खे राहुभार्गवौ ।
अथवा दशमे जीवबुधशुक्रास्तथा शशी ॥ २ ॥

धन राशिमां चंद्र अने शनि होय, मेषनो गुरु होय अने दशमे स्थाने राहु तथा शुक्र होय त्यारे राजयोग थाय छे. १. अथवा दशमे स्थाने गुरु, बुध, शुक्र अने चंद्र होय त्यारे पण राजयोग थाय छे. २.

अथवा दशमे ज्ञार्कौ भौमराहू च षष्ठगौ ।
राजयोगेष्वेषु जाता राजानः स्युर्नरोत्तमाः ॥ ३ ॥

अथवा दशमे स्थाने बुध अने सूर्य होय तथा मंगळ अने राहु छठे स्थाने रह्या होय तोपण राजयोग थाय छे. ४. आ राजयोगोमां उत्पन्न थयेला उत्तम माणसो राजा थाय छे.

आदौ जीवः सितः प्रान्ते यथामध्ये निरन्तरम् ।
राजयोगं विजानीयाः कुटुम्बबलवर्द्धनम् ॥ ४ ॥

प्रथम गुरु अने छेडे शुक्र तथा मध्यमां जेम घटे तेम निरंतर ग्रहो होय तो ते राजयोग जाणवो. आ राजयोगमां कुटुंब अने बळनी वृद्धि थाय छे.

सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने यदा सितः ।
निरन्तरं ग्रहा मध्ये राजा भवति निश्चितम् ॥ ५ ॥

त्रीजे स्थाने गुरु होय, आठमे स्थाने शुक्र होय अने बीजा ग्रहो निरंतर (आंतरा रहित) मध्य भागमां होय तो ते अवश्य राजा थाय छे. अर्थात् ए राजयोग कहेवाय छे.

आदौ जीवः पञ्चमे वा दशमे चन्द्रमा भवेत् ।
राज्यवान् स्यान्महाबुद्धिस्तपस्वी वा जितेन्द्रियः ॥ ६ ॥

पहेला अथवा पांचमा स्थानमां गुरु होय अने दशमा स्थानमां चंद्र होय तो ते राज्यवान् अने बुद्धिमान् थाय छे, अथवा जितेंद्रिय तपस्वी थाय छे.

स्वक्षेत्रस्था यदा जीवबुधसूर्यसुतास्तदा ।
जातकस्य सुदीर्घायुः संपदश्च पदे पदे ॥ ७ ॥

ज्यारे गुरु, बुध अने शनि पोतपोताना स्थानमां रह्या होय त्यारे तेवा योगमां उत्पन्न थयेलो माणस दीर्घायुष्य थाय छे तथा तेने स्थाने स्थाने संपत्ति मळे छे.

द्वितृतीये सुते धर्मे कर्मण्यपि यदा ग्रहाः ।
राजयोगं विजानीया जातस्तत्रोत्कटो भवेत् ॥ ८ ॥

बीजा, त्रीजा, पांचमा, नवमा अने दशमा स्थानमां ज्यारे ग्रहो रहेला होय त्यारे ते राजयोग जाणवो. तेमां उत्पन्न थयेलो मनुष्य उत्कृष्ट थाय छे.

धने व्यये यदा लग्ने सप्तमे भवने ग्रहाः ।
छत्रयोगस्तदा नीचकुलोऽपि नृपतिर्भवेत् ॥ ९ ॥

बीजा, बारमा, पहेला अने सातमा भवनमा ग्रहो रहेला होय त्यारे छत्रयोग थाय छे. तेमां उत्पन्न थयेलो नीच कुळवाळो पण राजा थाय छे.

सिंहे जीवस्तथा शुक्रः कन्यायां मिथुने शनिः ।
स्वक्षेत्रे हिबुके भौमः स पुमान्नायको भवेत् ॥ १० ॥

सिंह राशिनो गुरु होय, कन्यानो शुक्र होय, मिथुननो शनि होय अने चोथा स्थानमां मेष अथवा वृश्चिकनो मंगळ होय तो तेमां जन्मेलो पुरुष नायक (राजा) थाय छे.

कन्याया शौरिचन्द्रौ च मृगे भौमो घटे तमः ।
सिंहे जीवो भवेज्जातो राजा शत्रुक्षयंकरः ॥ ११ ॥

कन्या राशिमा शनि अने चन्द्र होय, मकरनो मंगळ होय, कुंभनो राहु होय तथा सिंहनो गुरु होय एवा योगमा उत्पन्न थयेलो माणस शत्रुनो क्षय करनारो राजा थाय छे.

शुक्रो जीवो रविर्भौमो धने मकरकुम्भयोः ।
मीने च वत्सरे त्रिंशे जातः स्यात्सर्वकर्मकृत् ॥ १२ ॥

धन, मकर, कुंभ अने मीन राशिमा अनुक्रमे शुक्र, गुरु, रवि अने मंगळ होय तो ते योगमां उत्पन्न थयेलो माणस त्रीश वर्षनो थाय त्यारे सर्व कार्यने करनारो (समर्थ) थाय छे

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भवने सितः ।
राजमान्यो महाकामी भोगपत्नीरतस्तथा ॥ १३ ॥

लग्नमा शनि अने चंद्र होय तथा आठमा भवनमां शुक्र होय तो ते योगमा उत्पन्न थयेलो मनुष्य राजाने मान्य थाय छे, मोटी कामनावाळो तथा भोग अने पत्नीमां आसक्त थाय छे

मिथुने च यदा राहुः सिंहस्थो भूमिनन्दनः ।
वृश्चिके च यदा जीवः स पुमान्नृपतिर्भवेत् ॥ १४ ॥

मिथुनमां राहु होय, सिंहमा मंगळ होय अने वृश्चिकमा गुरु होय त्यारे ते योगमा उत्पन्न थयेलो माणस राजा थाय छे

स्वगृहे च धने जीवस्तुलाया च भवेत्सितः ।
शौरिर्मकरे मिथुने चन्द्रः स्याद्राजयोगकृत् ॥ १५ ॥

पोताना गृहमा के धन राशिमा गुरु होय, तुलामां शुक्र होय, मकरमा शनि होय अने मिथुनमा चंद्र होय तो ते राजयोग करनारो छे.

युग्मे शशी वृषे जीवः सिंहे शौरिर्मृगे कुजः ।
शुक्रस्तुलायां कन्यायां बुधार्कौ राज्ययोगदाः ॥ १६ ॥

मिथुननो चंद्र, वृषभनो गुरु, सिंहनो शनि, मकरनो मंगळ, तुलानो शुक्र अने कन्याना बुध तथा सूर्य होय तो ते राजयोगने आपनारा छे.

धने शुक्रश्च भौमश्च मीने जीवस्तुले बुधः ।
नीचश्चन्द्रो रवेर्युक्तो राजयोगोऽभिधीयते ॥ १७ ॥

धननो शुक्र तथा मंगळ होय, मीननो गुरु होय, तुलानो बुध होय तथा नीचनो चंद्र सूर्ये करीने युक्त होय तो ते राजयोग कहेवाय छे.

मीने शुक्रो बुधश्चान्त्ये लग्ने सूर्यो धने शशी ।
सहजे च भवेद्भौमो राजयोगं प्रचक्षते ॥ १८ ॥

मीननो शुक्र होय, बारमे बुध होय, लग्नमां सूर्य होय, धनमां चंद्र होय तथा त्रीजा स्थानमां मंगळ होय तो ते राजयोग कहेवाय छे.

भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने शशी भवेत् ।
उच्चेषु वा शुभाः केन्द्रे लग्ने वा जीव एककः ॥ १९ ॥

त्रीजा भवनमां गुरु होय अने अगीयारमा भवनमां चंद्र होय, अथवा उच्च स्थानमां शुभ ग्रहो होय अने केंद्रमां के लग्नमां एकलो गुरु होय तो राजयोग थाय छे.

अथवा.—

सिंहे जीवस्तुलाकीटधनुर्मकरकेषु च ।
ग्रहाः स्थाने तदा जातो देशभोगी भवेन्नरः ॥ २० ॥

सिंहनो गुरु होय तथा तुला, वृश्चिक, धन अने मकरमां पोतपोताना स्थानना ग्रहो होय तेवा योगमां उत्पन्न थयेलो मनुष्य देशनो भोक्ता (स्वामी) थाय छे.

विद्यास्थाने यदा सौम्याः कर्मस्थाने च चन्द्रमाः ।
धर्मस्थाने पुनः सौम्यास्तदा राज्यं विधीयते ॥ २१ ॥

पांचमा स्थानमां सौम्य ग्रहो होय, दशमा स्थानमां चंद्र होय अने नवमा स्थानमां सौम्य ग्रहो होय तेवा योगमां उत्पन्न थयेलाने राजयोग कहेलो छे.

युग्मे वृषे मेषमीने कुंभे च मकरे ग्रहाः ।
यद्वा ज्ञगुरुशुक्रेन्दुराहवः स्युश्चतुष्टये ॥ २२ ॥

मिथुन, वृष, मेष, मीन, कुंभ अने मकरमां सर्व [illegible] रहेला होय अथवा बुध, गुरु, शुक्र, चंद्र अने राहु ए ग्रहो चतुष्टयमां [illegible] चोथा, सातमा अने दशमा स्थानमां रह्या होय तो राजयोग थाय [illegible] छे. जो [illegible]

जमणा अंगनुं फरकवुं विगेरे कहेवाय छे तथा अंगनो स्पर्श विगेरे इंगित कहेवाय छे, दुर्गा विगेरे शकुन कहेवाय छे अने लग्न विगेरे ज्योतिष कहेवाय छे तोपण अहीं अभेद कल्पनाए करीने ते सर्वे निमित्त शब्दथीज जाणी लेवां.

हवे यात्रामां दिशानो विभाग बतावे छे.—

ऐन्द्यादि ४ दिक्षु मातङ्ग १ रथा २ श्व ३ नरवाहनैः ४ ।
व्रजेत्क्रमेण भूपालो दिक्पालोल्लासिमानसः ॥ ६४ ॥

अर्थ—राजाए पूर्व दिशामां हस्तीवडे, दक्षिणमां रथवडे, पश्चिममां अश्ववडे अने उत्तरमां शिबिकादिकवडे दिक्पालनुं मनमां स्मरण करता प्रयाण करवुं अहीं दिक्पाल एटले जवानी दिशानो पति जाणवो. ते दिक्पति आ प्रमाणे छे.—"पूर्वनो इन्द्र, अग्नि खूणानो अग्नि, दक्षिणनो यम, नैर्ऋत्यनो नैर्ऋत, पश्चिमनो वरुण, वायव्यनो वायु, उत्तरनो कुबेर अने ईशान खूणानो स्वामी ईशान छे" आमांनी जे दिशामां जवुं होय ते दिशाना स्वामीनुं तथा सूर्यादिक ग्रहोनुं आनंदपूर्वक ध्यान करतां प्रयाण करवुं. रत्नमाळामां पण कह्युं छे के—

"ध्यायन्नाशाधीश्वरं हृष्टचेताः, क्षोणीपालो निर्विलम्बं प्रयायात् ।"

"हर्षयुक्त चित्तथी दिशाना स्वामीनुं ध्यान करतां राजाए विलंब विनाज प्रयाण करवुं."

॥ इति गमद्वारम् । ८

॥ अथ वास्तुद्वारम् ॥ ९

आ प्रमाणे गमद्वार (यात्राद्वार) कह्युं. हवे वास्तुद्वार कहे छे.—

वास्तु नव्यं विभूत्यायुःकीर्तिकामो निवेशयेत् ।
ज्ञात्वाऽऽय १ र्क्ष २ व्ययां ३ शां ४ स्तु चन्द्र ५ तारावले ६ अपि ॥६५॥

अर्थ—संपत्ति, आयुष्य अने कीर्तिनी कामना(इच्छा)वाळाए आय १, नक्षत्र २, व्यय ३, अंश ४, चंद्रबळ ५ अने ताराबळ जाणीने नवीन वास्तु करवुं

घर, हाट (दुकान) अने प्रासाद विगेरे वास्तु कहेवाय छे. संपत्ति विगेरे शब्दो ग्रंथकारे आ प्रमाणे सूचव्युं छे —

"कार्यसिद्धिसुखायूंषि निमित्तशकुनादिभिः ।
ज्ञात्वा प्रष्टुर्गृहारम्भे कीर्तयेत् समयं सुधीः ॥"

"विद्वाने (जोशीए) पूछनार गृहस्थनी कार्यसिद्धि, सुख अने आयुष्यादिकने निमित्त तथा शकुन विगेरेवडे जाणीने गृहने आरंभ करवानो समय कहेवो."

अहीं "शकुनादिभिः" ए ठेकाणे आदि शब्द लखेलो छे तेथी अंगस्पर्शादिक ग्रहण करवा. अहीं कोइ शंका करे के अंगस्पर्शे करीने शी रीते निर्णय थाय? ते उपर लघु जातकमां कह्युं छे के—

"शीर्ष १ मुख २ बाहु ३ हृदयो ४ दराणि ५ कटि ६ वस्ति ७ गुह्य ८ संज्ञानि ।
ऊरू ९ जानू १० जंघे ११ चरणा १२ विति राशयोऽजाद्याः ॥"

"शीर्ष १, मुख २, बाहु ३, हृदय ४, उदर ५, कटि ६, वस्ति ७, गुह्य ८, ऊरू ९, जानु १०, जंघा ११ अने चरण १२ आ प्रमाणे मेषथी आरंभीने मीन पर्यंत बारे राशिनां अनुक्रमे अंगो जाणवां." अहीं मेषने आरंभीने एम कह्युं छे तोपण जे तात्कालिक लग्न होय तेज मस्तक जाणवुं, अने त्यारपछी अनुक्रमे बीजां अंगो जाणवां. (एटले के कोइ गृहस्थ गृहारंभना समयने पूछवा आवे ते वखते विद्वाने प्रश्नकुंडळी करवी. तेमां जे लग्न आवे ते राशिनेज शिर गणवुं अने त्यारपछीनी राशिउने अनुक्रमे मुख विगेरे चरण पर्यंत गणवां.) त्यारपछी—

"कालपुंसो यदङ्गं तत्प्रष्टा स्पृशति चेच्छुभैः ।
युक्तं विलोकितं वापि सद्मनिर्माणमादिशेत् ॥"

"उपर प्रमाणे थयेला काळपुरुषना जे कोइ अंगने पूछनार स्पर्श करे ते अंग शुभ ग्रहोए युक्त होय अथवा तेनी दृष्टि पडती होय तो ते प्रमाणे तेने गृहप्रारंभनो समय कहेवो." आ प्रमाणे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे.

हवे आय विगेरेनेज कहे छे.—

ध्वजो १ धूमो २ हरिः ३ श्वा ४ गौः ५ खरो ६ हस्ती ७ ध्वांक्षः ८ क्रमात् ।
पूर्वादिबलिनोऽष्टाया विषमास्तेषु शोभनाः ॥ ६६ ॥

अर्थ—ध्वज १, धूम २, हरि (सिंह) ३, श्वा (कूतरो) ४, गो (गाय–वळद) ५, खर (गधेडो) ६, हस्ती ७ अने ध्वांक्ष (कागडो) ८ आ आठ आयो अनुक्रमे पूर्वादिक दिशाउमां बळवान् छे. तेमांना विषम आयो (एकी आयो) सारा छे.

आ आठ आयो पूर्व, अग्नि विगेरे अनुक्रमथी आठ दिशाउमां बळवान् छे, कारण के तेउ सर्वदा ते ते दिशामांज रहेला छे. कह्युं छे के—

"ईशानान्ते च दिग्भागे पूर्वादिक्रमतः स्थिताः ।
अन्योऽन्याभिमुखा ह्येते विज्ञेया वास्तुकर्मणि ॥"

"आ आयो पूर्व विगेरे दिशाना क्रमथी ईशान खूणा पर्यंत आठे दिशामां रहेला छे, तेउ वास्तुकार्यमां परस्पर सन्मुख (साम सामा मुखे) रहेला जाणवा."

आयोनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—

काक ८	ध्वज १	धूम्र २
गज ७	श्री	सिंह ३
खर ६	वृष ५	श्वान ४

आ आठे आयोमां विषम एटले पहेलो, त्रीजो, पांचमो अने सातमो ए चार आयो सारा छे, तथा विरुद्ध (अशुभ) संज्ञाने लीधे विरुद्ध फळ आपनार होवाथी सम आयो एटले बीजो, चोथो, छठो अने आठमो ए चार सारा नथी आ आठे नामो सार्थक छे एटले पोतानां नाम प्रमाणे गुणवाळां छे

आ आयोने स्थापन (ग्रहण) करवानी व्यवस्था विवेकविलासमां आ प्रमाणे करी छे —

> "वृषं सिंहं गजं चैव खेटकर्वटकोट्टयोः ।
> द्विपः पुनः प्रयोक्तव्यो वापीकूपसरस्सु च ॥ १ ॥
> मृगेन्द्रमासने दद्याच्छयनेषु गजं पुनः ।
> वृषं भोजनपात्रेषु छत्रादिषु पुनर्ध्वजम् ॥ २ ॥
> अग्निवेश्मसु सर्वेषु गृहे वह्न्युपजीविनाम् ।
> धूमं नियोजयेत् केचित् श्वानं म्लेछादिजातिषु ॥ ३ ॥
> खरो वेश्यागृहे शस्तो ध्वांक्षः शेषकुटीषु च ।
> वृषः सिंहो गजश्चापि प्रासादपुरवेश्मसु ॥ ४ ॥"

"गामडां तथा किल्लामां वृष, सिंह अने गजनो आय देवो. वाव, कूवा अने तळावमा गजनो आय देवो आसनमां सिंहनो आय देवो. शय्यामा गजनो आय देवो. भोजननां पात्रोमां वृषनो आय देवो. छत्र विगेरेमा ध्वजनो आय देवो अग्निनां सर्व गृहोमा तथा अग्निवडे आजीविका करनारनां गृहोमां धूम आय देवो म्लेछ विगेरेनां घरोमां श्वाननो आय देवो वेश्याना घरमां खर आय देवो सारो छे बीजी कुंपडीओमां काकनो आय सारो छे प्रासाद (चैत्य—राजमहेल) तथा नगरना घरोमा वृष, सिंह अने गज ए त्रणे आयो शुभ छे."

हवे आयोनो विनिमय एटले एक आयने ठेकाणे बीजा कोइ आय लइ शकाय के नहीं ? तेनो नियम बतावे छे —

१ वृषः सिंहो गजश्चैव कुण्डे कर्कटकीटयोः । इति मुहूर्तचिन्तामणिवृत्तौ ।

ध्वजः पदे तु सिंहस्य तौ गजस्य वृषस्य ते ।
एवं निवेशमर्हन्ति स्वतोऽन्यत्र वृषस्तु न ॥ ६७ ॥

अर्थ—सिंहने स्थाने ध्वज, गजने स्थाने ते बन्ने एटले ध्वज अने सिंह, वृषने स्थाने ते त्रणे एटले ध्वज, सिंह अने गज, आ प्रमाणे एकने अभावे बीजा आयो स्थापन करवा योग्य छे, पण वृष आय पोताना स्थानथी बीजे स्थाने लेवो नहीं.

जे स्थाने सिंहनो आय प्राप्त थतो होय त्यां ध्वजनो आय लइ शकाय छे अने सिंह पण लइ शकाय छे, तेमां कांइ दोष नथी. ए रीते आगळ पण जाणवुं. गजनो आय प्राप्त थयो होय त्यां गजनो अथवा तो ध्वज अने सिंहनो आय पण देवो. वृषनो आय प्राप्त थयो होय तो ते वृषनो अथवा ध्वज, गज अने सिंहनो पण आय दइ शकाय छे, पण वृषनो आय प्राप्त थयो होय तोज वृषनो आय देवो. अर्थात् बीजा आय प्राप्त थया होय त्यां वृषनो आय देवो नहीं.

आयादिक लाववानुं करण (रीत) कहे छे.—

आयो दैर्घ्यान्ययोर्घातः फलमष्टहृतेऽधिकः ।
फलमष्टगुणं भा २७ से भं तत्राष्टहृते व्ययः ॥ ६८ ॥

अर्थ—वास्तुनी लंबाइ तथा पहोळाइने गुणतां जे आवे ते फळ कहेवाय छे. फळने आठे भाग लेतां जे शेष रहे ते आय जाणवो. फळने आठे गुणीने सत्यावीशे भागतां जे शेष रहे ते नक्षत्र जाणवुं, तथा ते नक्षत्रने आठे भाग लेतां जे शेष रहे ते व्यय जाणवो.

लंबाइ अने अन्य एटले पहोळाइ ए बेनो गुणाकार करीए त्यारे फळ थाय छे. ते फळने आठे भाग देतां बाकी जे वधे ते आय जाणवो. ए शब्दार्थ थयो. भावार्थ आ प्रमाणे—लंबाइ तथा विस्तार (पहोळाइ) ए बेने परस्पर गुणवा. गुणाकार करवाथी जे संख्या आवे ते फळ कहेवाय छे. आनुं बीजुं नाम क्षेत्रफळ पण कहेवाय छे. तेज फळना आंकने आठे भागतां जे बाकी शेष रहे ते इष्ट वास्तुनो आय जाणवो, एटले के जो आठे भागतां एक बाकी रहे तो ध्वज आय अने बे बाकी वधे तो धूम आय विगेरे जाणवुं, पण जो शून्य शेष रहे तो छेल्लो ध्वांक्ष (काक) आय जाणवो. अहीं परंपरा आ प्रमाणे छे—छ जवे करीने एक आंगळ थाय छे, चोवीश आंगळनो एक हाथ अने चार हाथनो एक दंड थाय छे. तेथी करीने ज्यां दंड के हाथवडे क्षेत्रनुं माप कर्युं होय त्यां सर्वत्र अमुक आंगळ वधारीने अथवा ओछा करीने इच्छित आय लाववो, केमके जो दंड के हाथ उपर आंगळ वधारीए नहीं अथवा तेमांथी ओछा

करीए नहीं अने आखे आखा दंड के हाथज राखीए तो ते दंड अथवा हाथना आंगळ करीने तेने आठे भागीए त्यारे शून्यज शेष रहे, तेथी ठेट्ठो ध्वाङ्क्ष (काक) आयज आवे अने ते आय उत्तम जातिना घरोमां योग्य-शुभ नथी. अहीं भावना ए छे जे—लंवाइना अने पहोळाइना आंगळनो गुणाकार करवाथी क्षेत्रफळ थाय छे, एटले के ते वास्तुक्षेत्रमां सर्व मळीने तेटलाज अंगुलो होय छे, अने आय तो आठज छे, तेथी ते क्षेत्रफळना अंगुलने आठे भागतां जे आंक शेष रहे तेटलामो ध्वजादिक आय थाय छे. ते आयमा पण विषम आय श्रेष्ठ छे, पण सम आय शुभ नथी. तेथी करीने हाथनी उपर अमुक आंगळ वधारीने अथवा अमुक आंगळ ओछा करीने कोइ पण प्रकारे तेवी लंवाइ अने पहोळाइ लेवी के जे प्रकारे क्षेत्रफळने आठे भागतां विषम (एकी) आंक वाकी शेष रहे. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"न हस्तमानेन गुणान्वितं स्याद्यदा तदा तद्गणितोक्तयुक्त्या ।
प्रदाय हित्वा यदि वाऽङ्गुलानि प्रसाधयेत् क्षेत्रफलं शुभायम् ॥"

"ज्यारे केवळ हाथनाज माने करीने क्षेत्रफळ गुण युक्त न थाय त्यारे तेना गणितनी कहेली युक्तिवडे ते हाथमा अमुक अंगुल उमेरीने अथवा तेमांथी अमुक अंगुल ओछा करीने शुभ आयवाळुं क्षेत्रफळ साधवुं" अहीं "शुभ आयवाळुं"—एम कह्युं—ते उपलक्षण होवाथी नक्षत्रादिक पण ते गृहमा जे प्रकारे अनुकूळ थाय ते प्रकारे क्षेत्रफळ साधवुं नक्षत्रना अनुकूळनो प्रकार आगळ "प्रारब्धं समुखे चन्द्रे" ए ७४ मा श्लोकमां कहेवामा आवशे अहीं वास्तुशास्त्रमा आ रीते विशेष कह्युं छे.—

"गृहेषु कर्मिहस्तेन मानं स्वामिकरेण वा ।
देवताना तु धिष्ण्येषु कर्मिहस्तेन केवलम् ॥"

"घरोने विषे कारीगरना हाथे करीने अथवा घरधणीना हाथे करीने मान करवुं, परंतु देवताना घरमा (देवालयमा) तो केवळ कारीगरना हाथे करीनेज एटले काविके करीनेज मान करवुं" तथा देवालयने विषे भींतोनुं जाडपणुं क्षेत्रफळनी अंदर गणवुं अने वीजां घरोमां भींतोने क्षेत्रफळनी वहार गणवी. ते विषे व्यवहार-प्रकाशमां कह्युं छे के—

"क्षेत्रफलान्तर्भित्तीर्देवगृहेऽपि प्रकारयेद्विद्वान् ।
आक्रम्य वाह्यभूमिं क्षेत्राद्भित्तीर्नृणां गेहे ॥"

"विद्वान् पुरुषे देवालयने विषेज भींतोने क्षेत्रफळनी अंदर करावची अने मनुष्योना घरने विषे क्षेत्रफळनी वहारनी भूमिने उलंगीने भींतो करावची."

इति आयाः

हवे वास्तुनुं जन्मनक्षत्र कहे छे.—सामान्य रीते वास्तुनुं जन्मनक्षत्र कृत्तिका छे. तेने माटे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—

"भाद्रपदतृतीयायां शनिदिवसे कृत्तिकाप्रथमपादे ।
व्यतिपाते रात्र्यादौ विष्ट्यां वास्तोः समुत्पत्तिः ॥"

"भाद्रपद मासनी त्रीज अने शनिवारने दिवसे कृत्तिका नक्षत्रना पहेला पादमां व्यतिपातना योगमां रात्रिनी आदिमां विष्टिमां वास्तुनो जन्म छे."

इष्ट वास्तुनुं जन्मनक्षत्र आ प्रमाणे आवे छे—फळने आठ गुणुं करवुं. मूळ श्लोकमां अधिक शब्द छे तेनो सर्वत्र संबंध करवो. फळने आठे गुणी सत्यावीशे भाग देतां जे अधिक शेष रहे, तेटलामुं इष्ट वास्तुनुं जन्मनक्षत्र जाणवुं. आ जन्मनक्षत्रथीज घरधणीनी साथे एटले घरधणीना जन्मनक्षत्रनी साथे षडाष्टक विगेरेनो विचार कराय छे.

उपर कहेला नक्षत्रना आंकने एटले इष्ट वास्तुनुं जन्मनक्षत्र जेटलामुं होय तेटली संख्याने आठे भाग लेतां जे बाकी शेष रहे ते (तेटलामो) व्यय जाणवो. जो आठे भाग न चाले तो ते नक्षत्रनो आंकज व्ययनो आंक जाणवो. ते व्यय त्रण प्रकारनो छे—पिशाच, यक्ष अने राक्षस. ते विषे सारंग कहे छे के—

"पैशाचस्तु समायः स्याद्राक्षसश्चाधिके व्यये ।
आयान्न्यूनतरो यक्षो व्ययः श्रेष्ठोऽष्टधा त्वयम् ॥
शान्तः १ क्रूरः २ प्रद्योतश्च ३ श्रेयान ४ थ मनोरमः ५ ।
श्रीवत्सो ६ विभवश्चैव ७ चिन्तात्मको ८ व्ययोऽष्टमः ॥"

"जे वास्तुमां व्ययनी समान (जेटलो) आय होय तो ते पैशाच व्यय कहेवाय छे, अने आय करतां व्यय अधिक होय तो ते राक्षस व्यय कहेवाय छे, तथा आय करतां व्यय ओछो होय तो ते यक्ष व्यय कहेवाय छे. तेमां आ छेल्लो यक्ष व्यय श्रेष्ठ छे. आ व्यय पण आयनी जेम आठ प्रकारनो छे. तेनां नाम आ प्रमाणे—शांत १, क्रूर २, प्रद्योत ३, श्रेयान् ४, मनोरम ५, श्रीवत्स ६, विभव ७ तथा आठमो चिंतात्मक ८.

नक्षत्रना आंकने आठे भागतां जे शेष रहे ते व्यय जाणवो एम उपर कह्युं, तेमां जो एक शेष रहे तो ते शांत व्यय जाणवो, बे शेष रहे तो क्रूर व्यय जाणवो. ए रीते गणतां शून्य शेष रहे तो छेल्लो चिंतात्मक व्यय जाणवो.

हवे अंशोने लाववानो उपाय कहे छे.—

फले व्ययेन वेश्माख्याक्षरैश्चाढ्ये त्रिभाजिते ।
अंशाः शक्रा १ न्तक २ क्ष्मापा ३ स्तेषु स्यादधमो यमः ॥ ६५ ॥

अर्थ—क्षेत्रफळना आंकमां व्ययनो आंक तथा घरना नामना अक्षरोनो आंक उमेरवो. पछी तेने त्रणे भाग देवो. भागता जो एक शेष रहे तो शक्र (इंद्र) नामनो अंश जाणवो, बे रहे तो अन्तक (यम) अने शून्य शेष रहे तो क्ष्माप (राजा) नामनो अंश जाणवो. आ त्रणे अंशोमां यम नामनो बीजो अंश अधम—अशुभ छे.

उपर घरना नामना अक्षरो कह्या, माटे घरोनां नामोने कहे छे.—

ध्रुवं १ धन्यं २ जयं ३ नन्दं ४ खरं ५ कान्तं ६ मनोरमम् ७ ।
सुमुखं ८ दुर्मुखं ९ क्रूरं १० सुपक्षं ११ धनदं १२ क्षयम् १३ ॥ ७० ॥
आक्रन्दं १४ विपुलं १५ चैव विजयं १६ चेति षोडश ।
सम्प्रत्यमीषां पस्त्यानां प्रस्तारः प्रतिपाद्यते ॥ ७१ ॥ युग्मम् ॥

अर्थ—ध्रुव १, धन्य २, जय ३, नंद ४, खर ५, कांत ६, मनोरम ७, सुमुख ८, दुर्मुख ९, क्रूर १०, सुपक्ष ११, धनद १२, क्षय १३, आक्रंद १४, विपुल १५ अने विजय १६, ए सोळ घरोना नामो छे. अहीं अगीयारमा सुपक्षने बदले विपक्ष एवुं नाम पण केटलाक कहे छे. हवे ए घरोना प्रस्तारने कहे छे.

आ ध्रुव विगेरे नामो सार्थक छे, तेथी करीने खर १, दुर्मुख २, क्रूर ३, क्षय ४, आक्रंद ५, ए नामवाळां घरो अशुभ छे. तेने माटे वास्तुशास्त्रमा कह्युं छे के—

"स्थैर्य १ धनं २ जयः ३ पुत्रा ४ दारिद्र्यं ५ सर्वसंपदः ६ ।
मनोह्लादः ७ श्रियो ८ युद्धं ९ वैषम्यं १० बान्धवा ११ धनम् १२ ॥
क्षयश्च १३ मृत्यु १४ रारोग्यं १५ सर्वसंपदि १६ ति क्रमात् ।
ध्रुवादीनां फलं ज्ञेयं"

ध्रुवादिक सोळ घरोनुं अनुक्रमे आ प्रमाणे फळ जाणवुं.—स्थिरता १, धन २, जय ३, पुत्रो ४, दारिद्र्य ५, सर्व संपत्तिओ ६, मननो आह्लाद (तुष्टि) ७, लक्ष्मी ८, युद्ध ९, विषमपणुं १०, बंधुओ ११, धन १२, क्षय १३, मृत्यु १४, आरोग्य १५ अने सर्व संपत्ति १६.

हवे प्रस्तारनो प्रकार कहे छे.—

गुरोरधो लघुं न्यस्येत् पृष्ठे स्वस्य पुनर्गुरून् ।
अग्रतस्तूर्ध्ववद्देयायावत्सर्वलघुर्भवेत् ॥ ७२ ॥

अर्थ—पहेली पंक्तिमां चारे गुरु लखवा बाकीनी पंक्तिओमां पहेला गुरुनी लघु मूकवो, अने त्यारपछी उपरनी जेम बदले गुरु मूकवा, अने जे प्रस्तारमां ५

खाली स्थान रहे ते ते स्थानोमां गुरु स्थापवा. ए रीते करतां करतां छेल्लो भंग सर्व (चारे) लघुनो थाय त्यांसुधी स्थापवा. अर्थात् चार अक्षरवाळा वृत्तनी जातिनी जेम अहीं सोळ भंग थाय छे. स्थापना—

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	—	—	—	—	—	—	—	—
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	—	—	—	—	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	—	—	—	—
ऽ	ऽ	—	—	ऽ	ऽ	—	—	ऽ	ऽ	—	—	ऽ	ऽ	—	—
ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

अहीं प्रस्तारनीज जेम नष्ट अने उद्दिष्ट विगेरे पांच प्रत्यय पण सुगम छे, परंतु ग्रंथ घणो मोटो थवाना भयथी तथा अहीं तेनो उपयोग नहीं होवाथी लखता नथी.

हवे आ सोळ भांगाए करीने घरोनां ध्रुवादिक नामो उत्पन्न थाय छे, ते कहे छे.—

पूर्वादितो गृहद्वाराद्दिक्ष्वलिन्दैर्लघूदितैः ।
प्रदक्षिणस्थैर्वेश्मानि स्युर्ध्रुवादीनि षोडश ॥ ७३ ॥

अर्थ—घरना द्वारथी प्रदक्षिणाने अनुक्रमे पूर्वादिक दिशामां लघुए जणावेला अलिंदोए करीने ध्रुव विगेरे सोळ घरो थाय छे. अलिंद एटले ओंशरी, गोजार, ओरडी विगेरे घरना नाना भागो जाणवा.

जे दिशामां घरनुं द्वार होय ते ते घरनी पूर्व दिशा जाणवी. त्यांथी जमणी बाजुनी दिशाने दक्षिण समजवी, तेथी जमणी पश्चिम अने तेथी जमणी उत्तर ए रीते दिशाओ जाणवी. ते विषे विवेकविलासमां कह्युं छे के—

"पूर्वादिदिग्विनिर्देश्या गृहद्वारव्यपेक्षया ।
भास्करोदयदिक् पूर्वा न विज्ञेया यथा क्षुते ॥"

"घरना द्वारनी अपेक्षाए करीने पूर्वादिक दिशाओ जाणवी, पण सूर्योदयनी दिशाने पूर्व न धारवी. छींकने विषे पण आज प्रमाणे दिशाओ धारवामां आवे छे." दैवज्ञवल्लभमां पण कह्युं छे के—

"गृहस्य मुखतः प्राचीं प्रकल्प्य तत्प्रदक्षिणम् ।
पर्यटद्भिरलिन्दैः स्युः प्रस्ताराद्वेश्मनां भिदाः ॥"

"घरना मुखथी (द्वारथी) पूर्व दिशा कल्पीने त्यांथी दक्षिण दक्षिण एटले जमणी जमणी बाजु अटन करता अलिंदोए करीने प्रस्तारने लीधे घरना प्रकारो थाय छे."

अहीं पहेला भांगामां चारे गुरु छे, माटे घरनी पूर्वादिक चारे दिशाओ आवरण न जाणवी, एटले के कोइ पण दिशामां अलिंद नथी एम जाणवुं, केमके जे ठेकाणे लघु

कर्युं छे एम जाणवुं. ते आ रीते–गुरु शिष्यनी जेम अहीं पण त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा तजवा लायक छे मात्र त्यां गुरु शिष्यनी परस्पर ताराओ गणाय छे, अने अहीं तो घरधणीनी ताराथी घरनी तारा सुधी गणवानु छे, कारण के घरधणीनीज प्रीति इष्ट (वांछित) छे. ते विषे सारंग कहे छे के—

"गणयेत् स्वामिनक्षत्राद्यावद्धिष्ण्यं गृहस्य च ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तारा प्रकीर्तिता ॥ १ ॥
शान्ता १ मनोरमा २ क्रूरा ३ विजया ४ कलहोद्भवा ५ ।
पद्मिनी ६ राक्षसी ७ वीरा ८ आनन्दा ९ चेति तारकाः ॥ २ ॥"

"घरस्वामीना नक्षत्रथी घरना नक्षत्र सुधी गणवुं, जे संख्या आवे तेने नवे भाग लेवो जे अंक शेष रहे तेटलामी तारा कहेली छे ते ताराओनां नाम आ प्रमाणे–शाता १, मनोरमा २, क्रूरा ३, विजया ४, कलहोद्भवा (कलह उत्पन्न करनारी) ५, पद्मिनी ६, राक्षसी ७, वीरा ८, अने आनंदा ९, आ ताराउ पोताना नामनी सदृश फळ आपनारी छे."

हवे आयादिकनुं उदाहरण आपे छे–जेम कोइ घरनी लंबाड सात हाथ अने नव आंगळनी होय तथा पहोळाड पांच हाथ अने सात आगळनी होय. अहीं बन्ने हस्तना आकने आगळ करवा छे, माटे चोवीशे गुणवा पछी तेमा उपरना अंगुल उमेर[illegible] ते करवाथी लंबाड १७७ आंगळ थड अने पहोळाड १२७ अंगुल थड ए बन्ने अंकनो परस्पर गुणाकार करवाथी २२४७९ आगळनुं क्षेत्रफळ थयुं आ क्षेत्रफळने आठे भाग लेता शेष ७ रहे छे, तेथी ते घरनो सातमो आय गज नामनो थयो. १.

हवे नक्षत्र कहे छे–क्षेत्रफळ २२४७९ ने आठे गुणतां १७९८३२ थया तेने सत्यावीशे भाग लेता शेष १२ रह्या, तेथी ते घरनुं अश्विनीथी गणता बारमु नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी थयुं हवे ते घर कल्पनाए करीने पूर्वाभिमुख छे, तेथी उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र दक्षिण बाजुनी भींते आववाथी ते सारु छे २.

हवे तेनो व्यय आ प्रमाणे छे–नक्षत्रनो आक बारनो छे तेने आठे भागतां शे चार रहे छे चोथो व्यय श्रेयान नामनो छे, ते शुभ छे. ३

तेनो अंश आ प्रमाणे छे–ते घरनु कल्पनाए करीने ध्रुव नाम छे, ते
छे अने व्ययनी संख्या चारनी छे, ते बन्ने आक क्षेत्रफळमा उमेर
वे. तेने त्रणे भाग लेता शेषमा शून्य रहे छे, तेथी राजा नामनो

ते घरनुं चन्द्रबळ नक्षत्र कहेवाने अवसरे कही दीधुं छे
कहेशे, अने ताराबळ आ प्रमाणे छे–घरधणीनु जन्मनक्षत्र
माटे धनिष्ठाथी गणता उत्तराफाल्गुनी आठमी तारा थइ

विज
नी
पाछ

हवे वास्तुनो प्रारंभ करवाना महीनाओ कहे छे.—

वैशाखे श्रावणे मार्गे पौषे फाल्गुन एव च ।
कुर्वीत वास्तुप्रारंभं न तु शेषेषु सप्तसु ॥ ७५ ॥

अर्थ—वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पोष अने फाल्गुन मासमां वास्तुनो आरंभ करवो, पण बीजा सात मासमां आरंभ करवो नहीं. वास्तुनो आरंभ एटले सूत्रपात (दोरी नाखवी ते) तथा खात मुहूर्त्त विगेरे कार्य जाणवुं.

दैवज्ञवल्लभमां घरना आरंभ विषे मासना फळने आ प्रमाणे कहे छे.—

"शोकं १ धान्यं २ मृत्युदं ३ पञ्चतां ४ च,
स्वाप्तिं ५ नैःस्व्यं ६ संगरं ७ वित्तनाशम् ८ ।
स्वं ९ श्रीप्राप्तिं १० वह्निभीतिं ११ च लक्ष्मीं १२,
कुर्युश्चैत्राद्या गृहारंभकाले ॥"

"चैत्र मासमां घर बणाववानो आरंभ कर्यो होय तो ते शोक करावे छे १, वैशाख मास धान्यवृद्धि करे छे २, ज्येष्ठ मास मृत्युने आपे छे ३, अषाढ मास पण मृत्युने करे छे ४, श्रावण मास धननी प्राप्ति करावे छे ५, भाद्रपद मास निर्धनपणुं करे छे ६, आश्विन मास युद्ध करावे छे ७, कार्तिक मास धननो नाश करे छे ८, मार्गशीर्ष मास धन प्राप्त करे छे ९, पोष मास पण धननी प्राप्ति करे छे १०, माघ मास अग्निनो भय करे छे ११, तथा फाल्गुन मास लक्ष्मी प्राप्त करे छे १२." अहीं सर्वे मासो चांद्र एटले शुक्ल प्रतिपदाथी आरंभीने जाणवा.

हवे घरना आरंभमां संक्रांतिए करीने युक्त एवा सूर्यमासो कहे छे.

धामारभेतोत्तरदक्षिणास्यं, तुलालिमेषर्षभगाजि भानौ ।
प्राक्पश्चिमास्यं मृगकुंभकर्कसिंहस्थिते द्व्यंगगते न किञ्चित् ॥ ७६ ॥

अर्थ—तुला, वृश्चिक, मेष अने वृष ए चार संक्रांतिमां उत्तर द्वारनुं के दक्षिण द्वारनुं -ु-.-- ार्द छे. मकर, कुंभ, कर्क अने सिंह ए चार संक्रांतिमां पूर्व के पश्चिम द्वारवाळुं

ग द्विस्वभाव राशि एटले मिथुन, कन्या, धन अने मीन ए चार संक्रां-

"प्रासाद (चैत्य)नो आरंभ करवो नहीं, एटले के चारे दिशानां द्वारवाळुं पण घर

ारणथीज मूळ श्लोकमा

आ प्रमाणे लख्युं छे.—"मेष, धन अने सिंह ए त्रण संक्रां-

प्रीति षडाष्टक विगेरे रा।रंभ करवाथी राजानो भय थाय छे, वृष, कन्या अने मकर

हं.नथी. परंतु नक्षत्रो कहेवा घरनो आरंभ करवाथी पुत्रादिकनुं मृत्यु थाय छे. मिथुन,

तुला अने कुंभ संक्रांतिमां पश्चिम द्वारवाळुं घर शरु करवाथी संताप विगेरे उत्पन्न थाय छे तथा कर्क, वृश्चिक अने मीन संक्रातिमा उत्तर द्वारवाळुं घर करवाथी कुळनो क्षय थाय छे."

हवे कइ दिशामां प्रथम खोदवानो आरंभ करवो ? ते कहे छे.—

भाद्रादित्रित्रिमासेषु पूर्वादिषु चतुर्दिशम् ।
भवेद्वास्तोः शिरः पृष्ठं पुच्छं कुक्षिरिति क्रमात् ॥ ७७ ॥

अर्थ—भाद्रपदादिक त्रण त्रण मासने विषे पूर्वादिक चार दिशाए अनुक्रमे वास्तुनुं शिर, पृष्ठ (पीठ), पुच्छ अने कुक्षि (पेट) होय छे.

अहीं वास्तु पुरुष जमणा अंगने दबावीने (जमणे पडखे) सुतेलो नागने आकारे रहेलो छे. तेमां भाद्रपद, आश्विन अने कार्तिक मासमां ते वास्तुनु मस्तक पूर्व दिशामा छे, दक्षिण दिशामां पृष्ठ छे, पश्चिम दिशामां पुच्छ छे अने उत्तर दिशामां कुक्षि छे मार्गशीर्ष, पोष अने माघ मासमां दक्षिण दिशाए मस्तक, पश्चिम दिशाए पृष्ठ, उत्तर दिशाए पुच्छ अने पूर्व दिशाए कुक्षि होय छे फाल्गुन, चैत्र अने वैशाख मासमा पश्चिम दिशाए शिर, उत्तर दिशाए पृष्ठ, पूर्व दिशाए पुच्छ अने दक्षिण दिशाए कुक्षि होय छे. ज्येष्ठ, अषाढ अने श्रावण मासमां उत्तर दिशाए शिर, पूर्व दिशाए [illegible] अगुल [illegible] ड. ए ६ दक्षिण दिशाए पुच्छ अने पश्चिम दिशाए कुक्षि होय छे तात्पर्य ए छे जे कुक्षिने [illegible] वक्षफवपेज प्रथम खोदवानो आरम्भ करवो. बीजी दिशामां करवो नहीं ते विषे दैवज्ञवल्लभ [illegible] नी. १. कह्युं छे के—

"शिरः खनेन्मातृपितृन्निहन्यात्, खनेच्च पृष्ठे भय [illegible] रोगपीडाः ।
पुच्छं खनेत् स्त्रीशुभगोत्रहानिः, स्त्रीपुत्ररत्नान्नव[illegible] नद्[illegible] सूनि कुक्षौ ॥"

"जो प्रथम वास्तुनुं शिर खोदे तो माता पितानो नाश था[illegible]य, पृष्ठ खोदे तो भय, रोग अने पीडा थाय, पुच्छ खोदे तो स्त्री, शुभ अने गोत्रनी (कुळनी) हानि (नाश) थाय, अने कुक्षिए खोदे तो स्त्री, पुत्र, रत्न, अन्न अने धननी प्राप्ति थाय." केटलाक आ वास्तुने ठेकाणे वत्स एवुं पण नाम कहे छे. आ वास्तुना [illegible] तेने आ अंग तथा दिशाना कहेवाए करीने खात विगेरेनी दिशानो नियम कह्यो, पण विदिशा[illegible]नो नियम वास्तुशास्त्रमां आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"ईशानादिषु कोणेषु वृषादीना त्रिके [illegible]
शेषाहेराननं त्याज्यं विलोमेन प्रसर्प[illegible]

"वृषादिक त्रण त्रण संक्रातिए ईशानादिक खूणाने [illegible]
[illegible] चालता शेषनागनु मुख त्याग करवा लायक [illegible]
[illegible] त्रण त्रण मासे फरे छे, तेथी ज्यारे तेनु मुख [illegible]

सुधी ईशानमां होय छे त्यारे अग्नि खूणामां त्रण मास सुधी नाभि होय छे, नैर्ऋत्यमां त्रण मास सुधी पुच्छ होय छे, अने वायव्य खूणो खाली होय छे. ते खाली खूणो खात विगेरेमां श्रेष्ठ छे. ज्यारे बीजा त्रण मास सुधी वायव्यमां मुख होय छे त्यारे ईशानमां नाभि, अग्निमां पुच्छ अने नैर्ऋत्य खाली होय छे. ए प्रमाणे विलोमपणाए करीने शेषनाग फरे छे. तेमां वृषादिक त्रण संक्रांति सुधी ईशानमां मुख होय छे, सिंहादिक त्रण संक्रांति सुधी वायव्यमां मुख होय छे, वृश्चिक विगेरे त्रण संक्रांति सुधी नैर्ऋत्यमां मुख होय छे, तथा कुंभादिक त्रण संक्रांति सुधी अग्निमां मुख होय छे. ए प्रमाणे—

"विदिक्त्रयं स्पृशँस्तिष्ठेत् स्ववक्त्रनाभिपुच्छकैः ।
शेषस्तत्रितयं त्यक्त्वा भूखातकार्यमाचरेत् ॥
नाभौ च म्रियते भार्या धनं पुच्छे मुखे पतिः ।
इति मत्वा शिलान्यासे भूखाते तत्रयं त्यजेत् ॥"

"शेषनाग पोतानां मुख, नाभि अने पुच्छे करीने त्रण विदिशानो स्पर्श करीने रहे छे, तेथी ते त्रणेनो त्याग करीने पृथ्वीनुं खातकर्म करवुं, केमके ते शेषनी नाभिमां खातकर्म करवाथी घरधणीनी स्त्री मरण पामे छे, पुच्छमां खोदवाथी धननो नाश थाय छे, अने मुखे खोदवाथी घरधणी मरण पामे छे. आ प्रमाणे जाणीने भूखातने विषे शिलास्थापन करती वखते ते त्रणे अवयवोनो त्याग करवो."

हवे आयादिक कहेवानुं तात्पर्य कहे छे.—

समाधिकव्ययं कर्तुः समनाम यमांशकम् ।
विरुद्धराशितारं च विनाऽन्यद्वेश्म शोभनम् ॥ ७० ॥

अर्थ—सम अथवा अधिक व्ययवाळुं, कर्तानी समान नामवाळुं, यम अंशवाळुं तथा विरुद्ध राशि अने तारावाळुं घर मूकीने बीजुं घर सारुं छे.

जे घरमां आयनी समान (जेटलो) अथवा अधिक व्यय आवतो होय तो ते घर त्याग करवा लायक छे. ए रीते सर्वत्र जाणवुं. आम कहेवाथी व्यय करतां आय अधिक होय तो ते श्रेष्ठ छे, एम जाणवुं. ते आय पण विषम (एकी) होय तो ते स्थिर होवाथी अति श्रेष्ठ छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—"कुर्यात् स्थिराधिकायं स्वयोनिभं शुद्धतारांशम्" । "स्थिर अने अधिक आयवाळुं पोतानी योनिना नक्षत्रवाळुं तथा शुद्ध तारा अने अंशवाळुं घर करवुं." तथा जे घरनुं नाम एटले तेना अक्षरो कर्ताना नामनी तुल्य होय ते घर पण त्याग करवा लायक छे. जे घरमां यमना अंशनी उत्पत्ति थती होय, जे घरनी राशिनी साथे घरधणीनी राशिनुं शत्रु षडाष्टक के बीयाबारमुं उत्पन्न थतुं होय, तथा जे घरनी तारा घरधणीनी ताराथी त्रीजी, पांचमी के सातमी होय, तेमज मूळ श्लोकमां

"फाल्गुन मासमां मीन होय तो ते निंद्य नथी, मेष राशि चैत्र मासमां होय तोपण ते निंद्य नथी, मकर राशि पोष मासमां होय तो ते पण निंद्य नथी, एम वशिष्ठ, गर्ग विगेरे ऋषिओ कहे छे." आ पाठमां आटलो विशेष जाणवो के चैत्र मासने विषे पण जो मेषना सूर्य होय तो लग्न ग्रहण करवामां दोष नथी वळी रत्नमालाभाष्यमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"कर्कादि राशिषट्कं च पूर्वार्धं पौषचैत्रयोः ।
अस्तमितं गुरुं शुक्रं त्यजेच्चूडादिकर्मणि ॥ १ ॥"

"कर्कथी आरंभीने धन सुधीनी छ संक्रातिने, पोष तथा चैत्र मासना पूर्वार्ध (पहेला पखवाडीया)ने अने गुरु तथा शुक्रना अस्तने चूडादिक कर्ममा वर्जवा." अहीं पोष तथा चैत्र मासना पूर्वार्धने तजवानुं कह्युं छे तेने नहीं सहन करतो श्रीपति आ प्रमाणे कहे छे.—

"सौम्येऽयनेऽप्यविकलौ पौषचैत्रौ परित्यजेत् ।
पक्षोऽपरः शुभः कैश्चिन्न चैतद्युक्तिमद्वचः ॥ १ ॥"

"उत्तरायणने विषे पण पोष तथा चैत्र मास संपूर्ण त्याग करवा लायक छे, केटलाक आचार्योए शुक्ल पक्षने शुभ कह्यो छे, पण ते वचन युक्तिवाळुं नथी." एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे.

मूळ श्लोकमां "विष्णु सुतेला होय" एम जे कह्युं छे ते लोकरूढिए करीने जाणवुं, एटले अषाढ शुक्ल एकादशीथी कार्तिक शुक्ल एकादशी सुधीनो काळ जाणवो मूळ श्लोकमा अधिक मास वर्जवानो कह्यो छे, ते अधिक मास आ प्रमाणे थाय छे.—कोइ पण मासनी अमावास्याने विषे एक सक्रान्ति बेठी होय अने बीजी संक्रांति त्यारपछीना मासनी प्रतिपदाने दिवसे बेठी होय त्यारे वच्चेनो जे संक्रांति रहित मास रह्यो ते अधिक मास कहेवाय छे. कह्युं छे के—

"एकोऽमावास्याया भवेद्रवेः संक्रमः परो दर्शात् ।
ऊर्ध्वं जायेत यदा तदाऽधिमासः शुभेऽनिष्टः ॥ १ ॥"

"एक सूर्यनुं संक्रमण (संक्रांति) अमावास्याने दिवसे होय अने बीजुं संक्रमण आवती अमावास्या पछी होय त्यारे वच्चेनो अधिक मास थाय छे. ते अधिक मास शुभ कार्यमां अनिष्ट छे"

विशेष आ प्रमाणे छे —

"मासद्वयेऽब्दमध्ये तु सक्रान्तिर्न यदा भवेत् ।
प्राकृतस्तत्र पूर्वः स्यादधिमासस्तथोत्तरः ॥ १ ॥"

"एकज वर्षमां ज्यारे बे मासने विषे संक्राति न होय त्यारे पूर्वनो मास प्राकृत अने

पछीनो मास अधिक जाणवो." अहीं प्राकृत एटले प्रकृति–धर्मव्यवहार ते संबंधी अर्थात् विवाह, दीक्षा, प्रतिष्ठा विगेरे शुभ कार्यने योग्य एवो अर्थ जाणवो. एक वर्षमां बे मास अधिक होय त्यारे जो पहेलाने अधिक मास कहीए तो तेमांनो पहेलो मास धर्मकर्मना व्यवहारने योग्य छे, अने बीजो नहीं, पण बीजा मासने जो अधिक गणीए तो ते बेमांनो बीजो मास धर्मव्यवहारने योग्य जाणवो एम काळनिर्णय ग्रंथमां कह्युं छे. ब्रह्मसिद्धांतमां पण कह्युं छे के—"वर्षमध्ये मासद्वयवृद्धौ प्रथममासवृद्धौ कर्मकृदाद्योऽपरस्त्वशुभ इति" "एक वर्षमां बे मासनी वृद्धि होय त्यारे पहेला मासनी वृद्धि करीए तो पहेलो मास कर्मने लायक छे अने बीजो अशुभ छे."

मूळ श्लोकमां "अधिमासे च" अहीं च शब्द छे तेथी क्षय मास पण लग्नमां तजवा योग्य छे. ते क्षय मास आ प्रमाणे जाणवो.—ज्यारे एक संक्रांति शुक्ल प्रतिपद्‌ने दिवसे होय अने बीजी संक्रांति तेज मासनी अमावास्याने दिवसे अर्थात् अमावास्या सुधीमां होय त्यारे ते बे संक्रांतिवाळो क्षय मास कहेवाय छे. ते क्षय मास कार्तिक, मार्गशीर्ष के पोष ए त्रणमांथीज कोइ एक संभवे छे. ते विषे काळनिर्णय ग्रन्थमां कह्युं छे के.—

"असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्यात्,
द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्,
ततो वर्षमध्येऽधिमासद्वयं स्यात् ॥ १ ॥"

"जे मासमां संक्रांति न होय ते अधिक मास कहेवाय छे, अने कोइक वखत एक मासमां बे संक्रांति होय एवो क्षय मास पण होय छे. ते क्षय मास कार्तिक विगेरे त्रण मासमांज होय छे, तथा ते वर्षमां बे अधिक मास आवे छे." तथा—

"यस्मिन्मासे न संक्रान्तिः संक्रान्तिद्वयमेव वा ।
मलमासः स विज्ञेयः सर्वकार्येषु वर्जितः ॥ १ ॥"

"जे मासमां संक्रांति न होय, अथवा जे मासमां बे संक्रांति होय ते मल मास जाणवो. आ मास सर्व कार्यमां वर्जित छे." आ प्रमाणे काठगृह्यमां कह्युं छे.

मूळ श्लोकमां "नीचेऽस्तं वेति" एटले लग्ननो तथा अंशनो स्वामी नीच स्थानमां रहेलो होय तो ते त्याग करवा योग्य छे. ते विषे प्रश्नप्रकाशमां कह्युं छे के—

"त्रि १ द्वि २ कगुणा ३ र्धबलः ४ खग उच्चग १ वक्र २ शीघ्र ३ नीचस्थः ४ ।"

"ग्रह उच्च स्थाने रह्यो होय तो तेनुं बळ त्रण गणुं होय छे, वक्र गतिवाळो होय तो तेनुं बळ बमणुं होय छे, शीघ्र गतिवाळो होय तो एक गणुं होय छे, अने नीच स्थानमां रह्यो होय तो तेनुं अर्ध बळ होय छे." परंतु अस्त पामेलो होय तो तेनुं कांइ पण बळ

नथी. मात्र एक बुध ग्रह अस्त पामेलो के उदय पामेलो होय तो ते विवाहादिकना लग्नमां समान फळवाळोज छे. कह्युं छे के—

"रविकिरणमध्यवर्ती चरति सदा सवितृमंडले शशिजः।
तस्मान्न दोषकृत्स्यात् सोऽस्तं यातोऽपि त्र्यांशपतिः॥ १॥"

"सूर्यनां किरणोना मध्यमां वर्तनारो बुध सर्वदा सूर्यमंडळमाज गति करे छे, तेथी करीने ते अस्त पामेलो होय तोपण बुध दोष करनार थतो नथी."

ग्रहोना उदय अने अस्तना दिवसनी संख्या सामान्य रीते आ प्रमाणे ज्योतिष-सारमां कहेली छे —

"छस्सयसठ ६६० छत्तीसा ३६ तिन्निबहुत्तर ३७२ इगपन्नासा २५१।
तिन्निबयाला ३४२ अंगारयमाई उदयदिवस कमा॥ १॥
सुन्नरवि १२० सोल १६ दसणा ३२ नंद ९ बयालीस ४२ पछिमत्थदिणा।
सोमाई तह पुवे बुहसिअ छत्तीस ३६ सगसयरी ७७॥ २॥"

"मंगळनो उदय ६६० दिवस सुधी रहे छे, बुधनो उदय ३६ दिवस रहे छे, गुरुनो उदय ३७२ दिवस, शुक्रनो २५१ अने शनिनो उदय ३४२ दिवस रहे छे (१) मंगळनो अस्त १२० दिवस सुधी रहे छे, बुधनो अस्त १६ दिवस रहे छे, गुरुनो अस्त ३२ शुक्रनो ९ अने शनिनो अस्त ४२ दिवस रहे छे आ सर्वे पश्चिम दिशामां अस्त पामे तेने आश्रीने दिवसोनी संख्या कही छे, पण पूर्वमां अस्त होय तो बुध ३६ दिवस अने शुक्र ७७ दिवस सुधी अस्त रहे छे २."

ग्रहोनो उदय अने अस्त थवानो प्रकार आ प्रमाणे छे.—

"सूर्याः १२ सप्तदश १७ त्रिरूपरिमिता १३ रुद्रा ११ नवा ९ ब्धीन्दवः १४,
कालांशाः शशिनोऽसृजोर्ज्ञगुरुण' काव्यस्य मन्दस्य च"

"सूर्यना १२ त्रिंशांशने मध्ये चंद्र आवे त्यारे तेनो अस्त थाय छे, १७ त्रिंशांशने मध्ये मंगळ आवे, १३ त्रिंशांशने मध्ये बुध आवे, ११ त्रिंशांशने मध्ये गुरु आवे, ९ त्रिंशांशने मध्ये शुक्र आवे अने १४ त्रिंशांशने मध्ये शनि आवे त्यारे तेमनो अस्त थाय छे. तेटला त्रिंशांशनी बहार होय त्यारे तेमनो उदयज होय छे." एम लंकसाधना भाष्यमां कह्युं छे

मूळ श्लोकमां "अस्तं वाप्ते" "लग्ननो तथा अंशनो स्वामी अस्त पाम्यो होय तो ते वर्ज्य छे" एम जे कह्यु छे ते उपलक्षण छे, तेथी करीने लग्ननो अथवा अंशनो स्वामी क्रूर ग्रहे करीने युक्त होय अथवा क्रूर ग्रहनी तेना पर दृष्टि पडती होय तोपण ते लग्न अशुभ जाणवुं

मूळ श्लोकमां गुरु अथवा शुक्रनो अस्त होय तो ते लग्न अशुभ छे एम कह्युं. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"अस्तमिते भृगुतनये नारी म्रियते बृहस्पतौ पुरुषः" ।

"विवाहना लग्नसमये शुक्रनो अस्त होय तो स्त्री मरण पामे छे, अने गुरुनो अस्त होय तो पुरुषनुं मरण नीपजे छे."

केटलाएक आचार्यो आम पण कहे छे.—

"अभिजिद्वारुणादित्यरेवतीसंगते सति ।
तदा लोपगते जीवे विवाहादि विवर्जयेत् ॥ १ ॥"

"अभिजित्, शतभिषक्, पुनर्वसु अने रेवतीए करीने युक्त एवो गुरु होय तो ते लोपगत कहेवाय छे. ते वखते विवाहादिक शुभ कार्यने वर्जवां." अहीं आ प्रमाणे संप्रदाय छे.—बारे महीनाओ एकांतर नक्षत्रना नामे करीने चिह्नवाळा छे. जेमके अश्विनी नक्षत्रे करीने आश्विन मास, कृत्तिकावडे कार्तिक, मृगशिरवडे मार्गशीर्ष, पुष्यवडे पौष मास विगेरे. आ रीते एकांतर गणतां पण जे जे नक्षत्र वच्चे अधिक रहेलां छे ते नक्षत्रो अभिजित्, शतभिषक्, रेवती अने पुनर्वसु छे. आ नक्षत्रोमां गुरु रहेलो होय तो ते लोपगत कहेवाय छे. ते वखते लग्न ग्रहण करवुं नहीं. तथा सारंग कहे छे के—

"अस्तं गते भृगुसुते भवेद्यदि बुधोदयः ।
पुत्राष्टकस्य जननी तदोढा कन्यका भवेत् ॥ १ ॥"

"शुक्र अस्त पाम्यो होय अने जो बुधनो उदय होय तो ते वखते विवाहित थयेली कन्या आठ पुत्रनी माता थाय छे. अर्थात् ते लग्न शुभ छे."

वळी गर्ग कहे छे के—

"शशांकजो यदोदेति गुरोरस्तमनं यदि ।
पुत्राष्टकस्य जननी तदोढा कन्यका भवेत् ॥ १ ॥"

"बुधनो उदय होय अने जो गुरुनो अस्त होय तो ते वखते विवाहित थयेली कन्या आठ पुत्रनी माता थाय छे."

"शुक्रना अस्तमां दीक्षानो दोष नथी" एम दिनशुद्धि ग्रंथमां कह्युं छे. विशेषमां एम जाणवुं के जेम गुरुना अस्तमां लग्न इष्ट नथी तेज रीते गुरु नीच स्थानमां रह्यो होय तोपण ते इष्ट नथी. ते विषे विवाहपटलमां कह्युं छे के—

"वाक्पतौ मकरराशिमुपेते, पाणिपीडनविधिर्न विधेयः ।
तत्र दूषणमुशन्ति मुनीन्द्राः, केवलं परमनीचनवांशे ॥ १ ॥"

"गुरु मकर राशिमां रहेलो होय त्यारे पाणिग्रहणनो विधि करवा योग्य नथी. तेमां पण मात्र अत्यंत नीच नवांशमांज दूषण छे एम मुनींद्रो कहे छे"

"पांचज नीच नवांशोनो त्याग करवो" एम अन्य ग्रंथमां कह्युं छे तेमा लोकरूढिए परम नीच अंश पर्यंत पहेला पांच त्रिंशांशरूप नीचांशो त्याग करेला छे जो के लोकमां सर्वत्र मात्र पांचमो त्रिंशांशज परम नीच छे, छतां पांचमा त्रिंशांश सुधीना पांचे त्रिंशांशो वर्जवानुं कह्युं ते लोकरूढिने अनुसरीने कह्युं छे एवुं ज्योतिषशास्त्रना वेत्ताउंनुं वचन छे.

मूळ श्लोकमां "जीवे सिंहस्थे" ए वचनवडे वर्षनी अने "धन्वमीनस्थितेऽर्के" ए वचनवडे मासनी शुद्धि कही. वळी कांइक मासनी शुद्धि तथा दिवस अने नक्षत्रनी शुद्धि "ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे" (मिश्रद्वार श्लोक ६) तथा "भद्रादे मृगपंचर्क्षे" (मिश्रद्वार श्लोक ७) ए श्लोकमां कहेशे समयनी शुद्धि आ प्रमाणे जाणवी.— रात्रिनो मध्य भाग अने दिवसना मध्य भागने विषे लग्न ग्रहण करवुं नहीं ते विषे गदाधर कहे छे के—

"निवसति मुहूर्त्तकालो महानिशाया च दिनदले यस्मात् ।
दश पूर्वं दश परतस्तस्माद्वर्ज्याश्चरपलानि ॥ १ ॥"

"मध्य रात्रीए तथा दिवसना मध्य भागे मुहूर्त्तकाळ रहे छे, माटे ते समये प्रथमना तथा पछीना दश दश पळनो त्याग करवो"

कोइ आचार्यो एम कहे छे के—"दिवसना पाछला भागमां एटले के मध्याह्नकाळ पछी प्रतिष्ठा, विवाह विगेरेनुं लग्न आवे नहीं (शुभ नथी), अने तेथी करीनेज गृहप्रवेशना अधिकारमा "सौम्येऽयने वासरपूर्वभागे" (वास्तुद्वार श्लोक ७९) ए श्लोकमां दिवसनो पूर्व भाग लीधो छे." आ तेमनुं कहेवुं अयुक्त छे, केमके विवाहमा दिवसना पाछला भागे सूत्रकारज लग्न लेवानी आज्ञा आपवाना छे ते बाबत "विवाहे त्वर्कार्की त्रिरिपुनिधनायेषु शुभदौ" (मिश्रद्वार श्लोक ३६) ए श्लोक आगळ कहेशे. वळी विवाहना लग्नमां अपराह्न (दिवसनो पाछलो भाग) न लइए तो सूर्यनुं आठमा स्थानमां रहेवापणु संभवतुं नथी, (अने लग्नथी सूर्य आठमे होय तो तेने शुभ कहेवामा आवशे ते शी रीते घटे ?) परंतु अपराह्नमां प्रतिष्ठादिकना लग्नने ग्रहण करवानो व्यवहार प्राये देखातो नथी अने विवाहनुं लग्न तो अपराह्नमां ग्रहण करता क्वचित् जोवामां पण आवे छे. तेथी करीने आ विषे वृद्धोज प्रमाणभूत छे.

जीर्णः शुक्रोऽहानि पञ्च प्रतीच्यां, प्राच्यां बालस्त्रीण्यहानीह हेयः ।
त्रिघ्नान्येवं तानि दिग्वैपरीत्ये, पक्षं जीवोऽन्ये तु सप्ताहमाहुः ॥ ४ ॥

अर्थ—शुक्रने पश्चिम दिशामां पांच दिवस सुधी वृद्ध जाणवो, अने पूर्व दिशामां

त्रण दिवस वाळक जाणवो, परंतु दिशाना विपरीतपणाने विषे ते दिवसो त्रण गुणा जाणवा. आ बन्ने अवस्था लग्नमां तजवा योग्य छे. गुरु बन्ने अवस्थामां एक पक्ष (पंदर दिवस) त्याग करवा योग्य छे, अने बीजा आचार्यो तो सात दिवस त्याग करवा योग्य कहे छे.

विवेचन—श्लोकमां "जीर्ण" शब्दे करीने अस्तनुं सूचन कर्युं छे, तेथी अस्त पामवानी तैयारीवाळो एवो अर्थ जाणवो. "वाळ" शब्दे करीने उदयनुं सूचन कर्युं छे अर्थात् नवो उदय पामेलो एवो अर्थ जाणवो. दिशाना विपरीतपणाने विषे एटले के जो पूर्व दिशामां अस्त थवानो होय अने पश्चिममां उदय थयो होय तो ते दिवसोने त्रण गुणा एटले पंदर अथवा नव दिवस तजवाना जाणवा, एटले के पूर्वमां उदय पामेलो शुक्र वाळ होवाथी त्रण दिवस त्याग करवो, पण पश्चिममां उदय पामे तो ते नव दिवस वाळ होवाथी तेटला दिवसो वर्जवा. तथा जो पूर्वमां अस्त पामवानो होय तो वृद्धपणाने लीधे तेना पंदर दिवस वर्जवा, पण पश्चिममां अस्त पामवानो होय तो पांच दिवस वर्जवा. मूळ श्लोकमां गुरुने पंदर दिवस तजवानुं कह्युं छे, एटले के नवो उदय पामे त्यारे ते वाळक होय छे अने अस्त पामवानी सन्मुख होय त्यारे ते वृद्ध कहेवाय छे. ते बन्ने अवस्थामां पंदर दिवस तजवा योग्य छे. "गुरु पण त्रण दिवस वाळक छे अने पांच दिवस वृद्ध छे" एम पण केटलाक कहे छे, परंतु गुरुनो पूर्व दिशामां अस्त अने पश्चिम दिशामां उदय थतो नथी. बीजाउ एटले सप्तऋषि विगेरे तो गुरु अने शुक्र ए बन्नेने बन्ने दिशामां अस्त के उदय होय तोपण सात सात दिवसनी बाल्यावस्था तथा वृद्धावस्था कहे छे. आ बन्नेनी बाल्यावस्था के वृद्धावस्था होय त्यारे लग्न लेवुं नहीं. ए तात्पर्य छे. "आ बाल्य तथा वृद्धपणानी अवस्थानी कल्पना निर्वळपणारूप तेना फळने जणाववा माटेज करेली छे, पण वास्तविक रीते तेमनी अवस्थाउ होती नथी" एम रत्नमालाभाष्यमां कह्युं छे.

विशेष आ प्रमाणे जाणवो.—

"अरिगयनीए वक्के अत्थमिए लग्गरासि निसिनाहे ।
अबले रविगुरुसुक्के सामि अदिट्ठं चयह लग्गं ॥ १ ॥"

"लग्नराशिनो स्वामी तथा चंद्र शत्रुना स्थानमां होय, नीचना होय, वक्र होय के अस्त पामेला होय, तथा रवि, गुरु अने शुक्र निर्वळ होय, तथा स्वामीनी दृष्टि न पडती होय एवुं लग्न, आ सर्वे त्याग करवा योग्य छे." आ भंगने देनारा लग्नना दोषो सर्वत्र वर्ज्य छे.

॥ इति लग्नद्वारम् ॥ १० ॥

॥ अथ मिश्रद्वारम् ॥ ११ ॥

हवे मिश्र नामनुं अगीयारमुं द्वार कहे छे. तेमां प्रथम लग्न ग्रहण करवामां ग्रहगोचरनी शुद्धि कहे छे.—

"समशुद्धावामष्टकतः शुद्धिपते रेखिकामृते वेधात् ।
शुभदे ग्रहे सति शुभा शुद्धिः स्यात्प्रोच्यते विबुधैः ॥ ८ ॥"

"अष्टकथी समशुद्धिने विषे शुद्धिपतिनी रेखा न आवती होय अने वेधथी शुभदायक ग्रह आवतो होय तो ते पण पण्डितोए शुभ शुद्धि कही छे"

"नवमद्विपञ्चमगतः समरेखोऽप्यधिकशुभफलः सूर्यः ।
संक्रमकालेन्दुबलात् समोऽपि सर्वत्र शुभदोऽर्कः ॥ ९ ॥"

"नवमा, बीजा अने पांचमा स्थानमां रहेलो समान रेखावाळो पण सूर्य अधिक शुभ फळ देनारो छे, अने संक्रांतिने वखते चंद्रना बळथी समान एवो पण सूर्य सर्वत्र शुभने देनारो छे."

"दशमाद्र्ध्वं केवललग्नबलेन स्त्रिया विवाहः स्यात् ।
शुद्धिर्नैवालोक्या रवीज्ययोः पूजयोद्वाहः ॥ १० ॥"

"दश वर्षनी वय थया पछी कन्याना विवाह मात्र लग्ननाज बळथी थाय छे तेमां सूर्य तथा गुरुनी शुद्धि जोवानीज नथी, परंतु ते सूर्य अने गुरु अशुद्ध होय तो तेमनी पूजावडे विवाह करवो. अर्थात् तेनी पूजा करवाथी दोषनो नाश थाय छे." आ सर्व व्यवहारप्रकाशमा कहेलुं छे.

वळी व्यवहारसारमां आ प्रमाणे कह्युं छे—

"जन्मद्विपञ्चनवमद्युनगः खरांशुः, पूजा च वाञ्छति न चाष्टचतुर्व्ययस्थः ।
जीवस्त्रिजन्मदशमारिगतस्तु पूजामिच्छेत् कदाचिदपि नाष्टचतुर्व्ययस्थ. ॥ १ ॥"

"सूर्य पहेले, बीजे, पाचमे, नवमे अने सातमे स्थाने रह्यो होय तो ते पूजाने चाहे छे, एटले के पूजा करवाथी तेनी शुद्धि थाय छे, परंतु आठमे, चोथे के बारमे स्थाने रह्यो होय तो ते पूजाने चाहतो नथी, एटले के ते स्थानो अत्यंत अशुभ होवाथी तेनी पूजा करवाथी पण ते अनुकूळ थतो नथी तेज प्रमाणे गुरु त्रीजे, पहेले, दशमे अने छठे स्थाने रह्यो होय तो ते पूजाने इच्छे छे, पण आठमे, चोथे के बारमे स्थाने रह्यो होय तो ते कदापि पूजाने इच्छतो नथी."

परंतु गर्गाचार्य तो एम कहे छे के—"गोचरविरुद्धे जीवे वैधव्यमेव, पूजा त्वप्रमाणम्" "जो गुरु गोचरवडे करीने विरुद्ध होय तो ते कन्याने विधवापणुंज थाय छे, अने तेनी जे पूजा करवी ते तो अप्रमाण छे."

हवे अवशेष रहेली मासशुद्धि, दिनशुद्धि अने नक्षत्रशुद्धि एक श्लोके करीने कहे छे —

ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे मासि स्यात् पाणिपीडनम् ।
न पुनस्त्रयमप्येतन्मासाहर्क्षेषु जन्मनः ॥ ६ ॥

अर्थ—मोटा पुत्र-पुत्रीनुं पाणिग्रहण ज्येष्ठ मासमां करवुं नहीं, तथा आ त्रणे कार्यो जन्मना मासमां, जन्मना दिवसमां (तिथिमां) अने जन्मना नक्षत्रमां करवां नहीं.

विवेचन—मूळ श्लोकमां "ज्येष्ठ अपत्य" कह्यो छे, तेथी पुत्र तथा पुत्री बन्ने समजवां. "पाणिपीडन" (पाणिग्रहण) ए शब्दनुं उपलक्षण होवाथी बीजां शुभ कार्यो पण जाणवां. ते विषे हर्षप्रकाशमां कह्युं छे के—"सुहकज्जे वज्जे सव्वहिं पि जिट्ठस्स जिट्ठ ति" "सर्व शुभ कार्यमां ज्येष्ठ (मोटा) अपत्य (पुत्र-पुत्री)ने ज्येष्ठ मास वर्जवो." तथा—

"जेष्ठे न ज्येष्ठयोः कार्यं नृनार्योः पाणिपीडनम् ।
तयोरेकतमे(रे) ज्येष्ठे ज्येष्ठोऽपि न विरुध्यते ॥ १ ॥"

"ज्येष्ठ पुरुष अने नारी (वर-कन्या) नुं पाणिग्रहण ज्येष्ठ मासमां करवुं नहीं, परंतु ते वर कन्यामांथी जो एक ज्येष्ठ होय तो ज्येष्ठ मास पण विरुद्ध (अशुभ) नथी."

मूळ श्लोकमां त्रणे कार्यो कह्यां छे ते दीक्षा १, प्रतिष्ठा २ अने विवाह ३ समजवां. तथा "मासाहर्भेषु" एटले जन्म संबंधी मास, दिवस (तिथि) अने नक्षत्रने विषे विवाह विगेरे वर्जवा. अहीं विवाहमां वर कन्याना, दीक्षामां शिष्यना अने प्रतिष्ठामां स्थापकना मासादिक वर्जवा एम स्वयं जाणी लेवुं. केटलाएक कहे छे के—"जो पक्ष (पखवाडीयुं) जूदो होय तो जन्ममास पण विरुद्ध नथी. जन्मतिथि पण दिवस अने रात्रिना विभागना विपर्यासे करीने अविरुद्ध छे. (एटले के जो (तिथिनी) रात्रीए जन्म होय तो दिवस विरुद्ध नथी, अने दिवसे जन्म होय तो रात्रि विरुद्ध नथी.) जन्मनक्षत्र पण राशिनुं भिन्नपणुं होय तो ते शुभज छे, एटले अशुभ (विरुद्ध) नथी. (जेमके कृत्तिकाना पहेला पादमां जन्म होय तो ते मेष राशि छे, माटे कृत्तिकाना बीजा, त्रीजा के चोथा पादमां वृष राशि होवाथी ते त्रण पाद शुभ छे.) आ त्रणे बाबत विषे व्यवहारसारमां कह्युं छे के—

"जन्ममासि विपरीतपक्षयोर्व्यत्यये दिननिशोर्जनुस्तिथौ ।
जन्मभेऽपि किल राशिभेदतः, पाणिपीडनविधिर्न दुष्यति ॥ १ ॥"

"जन्ममासमां जो विपरीत (भिन्न) पक्ष होय, जन्मनी स्थितिमां जो दिवस रात्रिनो विपर्यय (उलटपालट) होय अने जन्मनक्षत्रमां पण जो राशिनो भेद होय तो पाणिग्रहणनो विधि दूषण पामतो नथी."

अथवा तो एक (समान) पक्षमां पण आ रीते जन्ममास पण विरुद्ध नथी—शुक्ल पंचमीने रोज कार्य करवानी इच्छा छे, अने शुक्ल अष्टमी जन्मतिथि छे. आ प्रमाणे होय तो दोष नथी, कारण के ते पुरुषनो जन्ममास शुक्ल अष्टमीथी शरु थाय छे, तेथी शुक्ल पंचमी तत्त्वथी भिन्न मासमांज रहेली गणाय, पण जो आथी विपरीत होय (एटले के

"सप्तर्षिओ जे नक्षत्रमां चालता होय तेज नक्षत्रमां तेमनी प्रतिष्ठा करवी, तथा श्रीव्यास, वाल्मीकि अने अगस्त्यनी प्रतिष्ठा पण तेज नक्षत्रमा एटले जे नक्षत्रमां सप्तर्षि होय तेमांज करवी, तथा ग्रहोनी प्रतिष्ठा पुष्य नक्षत्रमां अने पोतपोताना वारमां करवी." अहीं सप्तर्षिओ जे नक्षत्रमां चाले छे एम कह्युं तेनो भावार्थ आ प्रमाणे छे —

"आसन्मघासु मुनयः शासति राज्यं युधिष्ठिरे नृपतौ ।
षड्द्विकपञ्चद्वि २५२६ मितः शककालस्तस्य राज्ञश्च ॥ १ ॥
एकैकस्मिन् धिष्ण्ये शतं शतं ते चरन्ति वर्षाणाम् ।
प्रागुत्तरतश्चैते सदोदयन्ते ससाध्वीकाः ॥ २ ॥"

"युधिष्ठिर राजा राज्य करता हता त्यारे सप्तर्षिओ मघा नक्षत्रमां हता ते राजाना शकनो काळ २५२६ वर्षनो हतो, एटले के ते राजानी पछी २५२६ वर्ष गयां त्यारे शालिवाहननो शक प्रवर्त्यो हवे ते सप्तर्षिओ सो सो वर्षे एक एक नक्षत्रमा चाले छे, एटले के एक नक्षत्रमा तेओनी सो वर्ष सुधी स्थिति छे, तेथी करीने शकना प्रारंभे तेओ पुष्य नक्षत्रमां हता एम सिद्ध थयुं ए सप्तर्षिओ अरुंधती सहित निरंतर ईशानमां उदय पामे छे" आ सप्तर्षिओना उदयनी व्यवस्था आ प्रमाणे छे —

"पूर्वे भागे भगवान्मरीचिरपरे स्थितो वशिष्ठोऽस्मात् ।
तस्याङ्गिरास्ततोऽत्रिस्तस्यासन्नः पुलस्त्यश्च ॥ १ ॥
पुलहः क्रतुरिति भगवानासन्नानुक्रमेण पूर्वाद्याः ।
तत्र वशिष्ठ मुनिवरमुपस्थिताऽरुन्धती साध्वी ॥ २ ॥"

"पूर्व भागे भगवान् मरीचि रहेला छे, तथा पश्चिम भागे वशिष्ठ रहेला छे, तेनी समीपे अंगिरा, तेनी समीपे अत्रि, तेनी समीपे पुलस्त्य, तेनी समीपे पुलह अने तेनी समीपे भगवान् क्रतु रहेला छे. आ प्रमाणे समीपना अनुक्रमे करीने पूर्व पश्चिम भागे तेओ रहेला छे तेमा वशिष्ठ मुनिवरनी समीपे साध्वी (सती) अरुंधती रहेली छे." आ सप्तर्षिनुं स्वरूप वराहसंहितामां कहेलुं छे. तथा—

"स्वतिथिक्षणनक्षत्रकरणेषु न्यसेत्सुरान् ।
वापीकूपतडागाद्यं न्यसेद्वरुणदैवते ॥ १ ॥
अहिर्बुध्नाधिपे लेप्यमारामाद्यं तथाऽनिले ।
गृहस्थापनयोगा ये तानप्यत्र विचिन्तयेत् ॥ २ ॥"

"देवोने पोतानी तिथि, क्षण, नक्षत्र अने करणमां स्थापन करवा, वाव, कुवा, तळाव विगेरेने शतभिषक् नक्षत्रमा स्थापन करवा, लेप्य मूर्तिने उत्तराभाद्रपदमा स्थापन , बगीचा विगेरेने स्वाति नक्षत्रमां स्थापन करवा, तेमज घरने स्थापन करवामा जे

योगो कह्या छे ते पण अहीं विचारवा." आ प्रमाणे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे. आ अन्य देवो विगेरेनी प्रतिष्ठा विगेरेनुं स्वरूप ज्योतिषना विद्वानोने संमत छे, माटे प्रसंगने लीधे लख्युं छे.

दीक्षायां त्वाश्विनादित्यवारुणश्रुतयः शुभाः ।
त्रिषु मैत्रं करं स्वातिर्मूलः पौष्णं ध्रुवाणि च ॥ १० ॥

अर्थ—अश्विनी, पुनर्वसु, शतभिषक् अने श्रवण, ए नक्षत्रो दीक्षामां शुभ छे. अनुराधा, हस्त, स्वाति, मूळ, रेवती अने ध्रुव (रोहिणी अने त्रणे उत्तरा), ए नक्षत्रो त्रणेमां एटले प्रतिष्ठा, दीक्षा अने विवाहमां शुभ छे.

विस्तरार्थ—दिनशुद्धि विगेरे ग्रंथमां पूर्वभाद्रपद अने पुष्यमां पण दीक्षा कही छे. कह्युं छे के—

"उत्तररोहिणिहत्थाणुराहसयभिसयपुव्वभद्दवया ।
पुस्सं पुणव्वसुरेवइ मूलास्सिणि सवणसाइ वए ॥ १ ॥"

"त्रणे उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अनुराधा, शतभिषक्, पूर्वभाद्रपद, पुष्य, पुनर्वसु, रेवती, मूळ, अश्विनी, श्रवण अने स्वाति, आटलां नक्षत्रो व्रत (दीक्षा)मां शुभ छे." तथा—

"मृगचित्राधनिष्ठान्यमृदुक्षिप्रचरध्रुवैः ।
शिष्यस्य दीक्षणं कार्यं तथा मूलाजपादयोः ॥ १ ॥"

"मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा विना, मृदु, क्षिप्र, चर अने ध्रुव संज्ञावाळां नक्षत्रोमां यथा—मृदु (अनुराधा, रेवती), क्षिप्र (पुष्य, अभिजित्, हस्त, अश्विनी), चर (श्रवण, स्वाति, पुनर्वसु), ध्रुव (रोहिणी, त्रण उत्तरा) तथा मूळ अने पूर्वभाद्रपद, ए नक्षत्रोमां शिष्यने दीक्षा आपवी."

मूळ श्लोकमां त्रिषु लख्युं छे तेनो अर्थ प्रतिष्ठा, दीक्षा अने विवाह ए त्रणे कार्यो जाणवां. ते त्रणे कार्योनां नक्षत्रोनी स्थापना आ प्रमाणे—

जैनप्रतिष्ठा	रो०	मृ०	पु०	पु०	म०	उ० फा०	ह०	स्वा०	अनु०	मू०	उ० पा०	श्र०	ध०	उ० भा०	रे०
दीक्षा	अ०	रो०	पुन०	उ० फा०	ह०	स्वा०	अनु०	मू०	उ० षा०	श्र०	श०	उ० भा०	रे०	०	०
विवाह	रो०	मृ०	म०	उ० फा०	ह०	स्वा०	अनु०	मू०	उ० षा०	उ० भा०	रे०	०	०	०	०

विवाहनां नक्षत्रोमां विशेष कहे छे.—

स्त्रियः प्रियत्वमुद्वाहे मूलाहिर्बुध्नवैश्वभैः ।
पौष्णब्राह्ममृगैः पुंसां मिथः शेषैस्तु पञ्चभिः ॥ ११ ॥

अर्थ—मूळ, उत्तराभाद्रपद के उत्तराषाढा नक्षत्रमां विवाह थया होय तो स्त्रीनुं प्रियपणुं थाय छे, रेवती, रोहिणी अने मृगशिरमां विवाह थया होय तो पुरुषनुं प्रियपणुं थाय छे, तथा बाकीना पांच नक्षत्रोमां विवाह थया होय तो बन्नेनुं परस्पर प्रियपणुं थाय छे.

विस्तरार्थ—स्त्रीनुं प्रियपणुं एटले के पुरुषने स्त्री जेटली वहाली लागे तेटलो पुरुष स्त्रीने वहालो न लागे, अर्थात् स्त्रीनुं सारुं सौभाग्य होय. आ मूळ विगेरे त्रण नक्षत्रो पूर्वे नक्षत्रना अधिकारमां चंद्रनी साथे उत्तरार्धना योगवाळां कह्यां छे. पुरुषनुं प्रियपणुं थाय छे एटले स्त्रीने पुरुष वहालो लागे छे, पण पुरुषने स्त्री तेवी वहाली लागती नथी, अर्थात् स्त्रीनुं तेवुं सौभाग्य न होय. आ रेवती विगेरे त्रण नक्षत्रो पूर्वार्धना योगवाळा नक्षत्रोमा गणाव्यां छे. बाकीनां पांच एटले मघा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, स्वाति अने अनुराधा, आ पांच नक्षत्रो मध्यम योगवाळां कह्यां छे. आ अगीयार नक्षत्रोज विवाहनां होवाथी बाकीनां नक्षत्रो अहीं गणाव्या नथी वळी दैवज्ञवल्लभमां कह्यु छे के—

"बलभः स्यान्नरो नार्या बलिभिः पुरुषग्रहैः ।
स्त्रीग्रहैः पुरुषस्य स्त्री सर्वैः प्रेमोभयोरपि ॥ १ ॥"

"विवाहना लग्नमां पुरुषना ग्रहो बळवान् होय तो स्त्रीने पुरुष वधारे प्रिय लागे, अने स्त्रीना ग्रहो बळवान् होय तो पुरुषने स्त्री वधारे प्रिय लागे, तथा बन्नेना ग्रहो बळवान् होय तो परस्पर प्रेम रहे."

वर्णकाद्यं विवाहर्क्षे कुमार्या वरणं पुनः ।
स्वातिपूर्वानुराधाभिर्वैश्वत्रयकृत्ताशनैः ॥ १२ ॥

अर्थ—वर्णक विगेरे कार्य विवाहना नक्षत्रमां करवां, अने कुमारीनुं वरण (वेशवाळ) स्वाति, त्रण पूर्वा, अनुराधा, वैश्वत्रय (उत्तराषाढा, श्रवण अने धनिष्ठा) तथा कृत्तिका नक्षत्रमा करवुं

विस्तरार्थ—वर्णक एटले भींत विगेरे पर चित्रनुं कर्म करवुं ते, अथवा वर वहुनुं वर्णक नामनुं मंगळकर्म छे ते. वर्णकाद्यं ए पदमां आद्य शब्द लख्यो छे, तेथी नीचेना श्लोकमां कहेलां कुसुंभादिक सर्व विवाहना कार्यो विवाहनांज नक्षत्रोमा करवां.

लग्नादर्वाग्न कुर्वीत त्रिषट्नवमे दिने ।
कुसुंभमंडपारंभवेदीवर्णयवारकान् ॥ १३ ॥

अर्थ—लग्नना दिवसनी पहेलां त्रीजे, छठे के नवमे दिवसे कुसुंभ, मंडपनो आरंभ, वेदिका, वर्णक अने यवारक (जुवारा वाववा ते) तथा उपलक्षणथी कन्यानुं वरण कार्यो करवां नहीं.

नान्ये प्रतिष्ठां जन्मर्क्षे दशमे षोडशे च भे ।
अष्टादशे त्रयोविंशे पञ्चविंशे च मन्वते ॥ १४ ॥

अर्थ—केटलाक आचार्यो प्रतिष्ठा करवा लायक प्रतिमा अने प्रतिष्ठा करावनार ए बन्नेना जन्मनक्षत्रमां जन्मनक्षत्रनुं ज्ञान न होय तो नामनक्षत्रमां तथा ते जन्म-नक्षत्रथी दशमा, सोळमा, अढारमा, त्रेवीशमा अने पचीशमा नक्षत्रमां प्रतिष्ठाने मानता नथी (प्रतिष्ठा करवानी संमति आपता नथी).

श्रीहरिभद्रसूरि तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"कारावयस्स जम्मण रिक्खं दस सोलसं तहट्ठारं
तेवीस पंचवीसं बिंवपइट्ठाइ वज्जिज्जा ॥ १ ॥"

"प्रतिष्ठा करावनारनुं जन्मनक्षत्र तथा ते जन्मनक्षत्रथी दशमुं, सोळमुं, अढारमुं, त्रेवीशमुं अने पचीशमुं, एटलां नक्षत्रो बिंबनी प्रतिष्ठामां तजवां." (अर्थात् बिंबनां जन्मादिक नक्षत्रो तजवानां कह्यां नथी.)

विशेषमां आ नक्षत्रोनी संज्ञा आ प्रमाणे छे.—

"जन्माद्यं दशमं कर्म संघातं षोडशं पुनः ।
अष्टादशं समुदयं त्रयोविंशं विनाशभम् ॥ १ ॥
मानसं पञ्चविंशं भमिति षड्भोऽखिलः पुमान् ।
जातिदेशाभिषेकैश्च नव धिष्ण्यानि भूपतेः ॥ २ ॥"

"पहेलुं नक्षत्र जन्म नामनुं छे, दशमुं कर्म नामनुं, सोळमुं संघात नामनुं, अढारमुं समुदय नामनुं, त्रेवीशमुं विनाश नामनुं अने पचीशमुं नक्षत्र मानस नामनुं छे. ए प्रमाणे समग्र पुरुष छ नक्षत्रवाळो छे. तथा जातिनक्षत्र, देशनक्षत्र अने अभिषेक-नक्षत्रे करीने राजानां नव नक्षत्रो छे."

जातिनक्षत्रो आ प्रमाणे छे.—

"विप्राणांकृत्तिकापूर्वा३ राज्ञां पुष्यस्तथोत्तराः ३ ।
सेवकानां धनिष्ठैन्द्रचित्रामृगशिरांसि च ॥ १ ॥
उग्राणां भानि वायव्यमूलार्द्राशततारकाः ।
कर्षकाणां मघाः पौष्णमनुराधा विरञ्चिभम् ॥ २ ॥
वणिजामश्विनी हस्तोऽभिजिता (दा) दित्यमेव च ।
चंडालानां श्रुतिः सार्पं यमदेवं द्विदैवतम् ॥ ३ ॥"

"ब्राह्मण जातिनां नक्षत्रो कृत्तिका तथा त्रण पूर्वा छे, राजाओनां पुष्य तथा त्रण उत्तरा छे, सेवक जातिनां धनिष्ठा, ज्येष्ठा, चित्रा अने मृगशिर छे, उग्र जातिनां स्वाति,

	कृ०	रो०	मृ०	आ०	पु०	पु०	अ०	
भ०								म०
अ०								पू०
रे०								उ०
उ०								ह०
पू०								चि०
श०								स्वा०
ध०								वि०
	श्र०	अ०	उ०	पू०	मू०	ज्ये०	अ०	

त्यारपछी—

"यस्मिन् धिष्ण्ये स्थितः खेटस्ततो वेधत्रयं भवेत् ।
ग्रहदृष्टिप्रभावेण वामदक्षिणसम्मुखम् ॥ १ ॥
वक्रगे दक्षिणा दृष्टिर्वामदृष्टिश्च शीघ्रगे ।
भौमादिपञ्चकस्य स्यान्मध्यदृष्टिश्च मध्यमे (गे) ॥ २ ॥
राहुकेतू सदा वक्रौ सदा शीघ्रौ विधूष्णगू ।
क्रूरा वक्रा महाक्रूराः सौम्या वक्रा महाशुभाः ॥ ३ ॥
वेधद्वयं भजति धिष्ण्यमिभारिदंष्ट्रासंस्थानदिग्द्वयगतोडुगतग्रहाभ्याम् ।
एकं तयाऽभिमुखसंस्थितमध्यनासापर्यन्तभागधृतधिष्ण्यगतग्रहेण ॥ ४ ॥"

"जे नक्षत्रमा कोइ पण ग्रह रह्यो होय ते नक्षत्रथी ग्रहनी दृष्टिना प्रभावने लीधे डावो, जमणो अने सन्मुख एवा त्रण वेध थाय छे (१) तेमां जो वक्र गतिवाळो ग्रह होय तो तेनी जमणी दृष्टि पडे छे, शीघ्र गतिवाळो होय तो तेनी डावी दृष्टि पडे छे, अने मगळ विगेरे पाचमाथी कोइ मध्य गतिवाळो होय तो तेनी मध्य एटले सन्मुख दृष्टि पडे छे (२) तेमां राहु अने केतु ए बे ग्रहो निरंतर वक्र गतिवाळाज होय छे, तथा चद्र अने सूर्य ए बे निरंतर शीघ्र गतिवाळाज होय छे तेमा जो क्रूर ग्रहो वक्र थया होय तो ते अत्यत क्रूर जाणवा, अने सौम्य ग्रहो वक्र थया होय तो ते अति शुभ जाणवा (३). जे नक्षत्रथी सिंहनी दाढाना संस्थाननी जेम (तिरछा) बे दिशामां जे बे नक्षत्रो रहेला होय ते बे नक्षत्रो उपर जे बे ग्रहो रहेला होय ते बे ग्रहोए करीने

प्रथमनुं नक्षत्र बे वेधने भजे (पामे) छे, तथा तेज प्रथमनुं नक्षत्र पोतानी सन्मुख रहेला मध्य नासिकाना पर्यंत भाग उपर रहेला नक्षत्र उपर जे ग्रह होय ते ग्रहे करीने त्रीजो सन्मुख वेध थाय छे (४)." आ प्रमाणे नरपतिजयचर्यामां कह्युं छे. आनुं उदाहरण आपवाथी बराबर समजाशे, माटे उदाहरण आपे छे के—कोइ कार्य मृगशिर नक्षत्रमां करवा धार्युं छे अने चित्रा नक्षत्रमां मंगळ विगेरे सात ग्रहोमांनो कोइ पण वक्री ग्रह रह्यो होय तो तेना वक्र गतिपणाने लीधे जमणी दृष्टि मृगशिर उपर पडी. तथा रेवती नक्षत्रमां सूर्यादिक सात ग्रहोमांनो कोइ पण अतिचारी (शीघ्र गतिवाळो) ग्रह होय तो तेना शीघ्र गतिपणाने लीधे डाबी दृष्टि मृगशिर उपर पडी. ए प्रमाणे बन्ने तरफथी ग्रहनी दृष्टि पडवाने लीधे ते मृगशिर नक्षत्र ग्रहभिन्न थयुं कहेवाय. वळी उत्तराषाढा नक्षत्रमां मंगळ विगेरे पांच ग्रहोमांनो कोइ पण मध्य गतिवाळो ग्रह होय तो सन्मुख दृष्टिए करीने ते मृगशिरनो त्रीजो वेध पण थयो. एज रीते बीजां नक्षत्रोना संबंधमां पण जाणवुं, परंतु आ त्रीजो सन्मुख नामनो वेध "वेधेनैकार्गलो०" ए आज विमर्शना सत्तरमां श्लोकमां कहेशे, अने बीजा बे वेधनो अहीं अधिकार छे.

अशुद्ध नक्षत्रनी शुद्धि क्यारे थाय ? ते कहे छे.—

धिष्ण्यं कार्याय पर्याप्तं चन्द्रभोगाद्ग्रहाहतम् ।
शुद्धं षड्भिर्भवेन्मासैरुपरागपराहतम् ॥ १६ ॥

अर्थ—ग्रहथी हणायेलुं नक्षत्र चंद्रवडे भोगवाया पछी शुभ कार्यने माटे पर्याप्त (योग्य) थाय छे, अने उपराग (ग्रहण) थी हणायेलुं नक्षत्र छ मासे करीने शुद्ध थाय छे.

अहीं पर्याप्त एटले योग्य थाय छे एवो अर्थ करवो. ग्रहथी हणायेलुं नक्षत्र एटले क्रूर ग्रहे भोगवीने मूकी देवाथी, भोगवातापणाथी के भोग्यपणाथी दूषित करेलुं, अथवा ग्रहोए उदय के अस्त करवाए करीने दूषित करेलुं, अथवा वक्री ग्रहे आक्रमण विगेरे करवावडे करीने दूषित करेलुं जे नक्षत्र ते. चंद्रना भोगथी एटले ग्रहे करेलो दोष दूर थया पछी जो ते नक्षत्र चंद्रे भोगव्युं होय तो ते आदरवा योग्य छे—शुभ छे. ते विषे वराह कहे छे के—

"दोषैर्मुक्तं यदा धिष्ण्यं पश्चाच्चन्द्रेण संयुतम् ।
ततः पश्चाद्विशुद्धं स्यान्नान्यथा शुभदं भवेत् ॥ १ ॥"

"दूषित नक्षत्र प्रथम तो दोषथी मुक्त थाय, अने पछी ते चंद्रवडे संयुक्त थाय—भोगवाय, त्यारपछी ते शुद्ध थाय छे, अन्यथा एटले ते पहेलां ते शुभ फळने आपनारुं थतुं

लल्ल तो आ प्रमाणे कहे छे—

"तत्सूर्येन्दोर्योगात्कर्मण्यलं प्रयाति भूयोऽपि ।
धिष्ण्यं कर्मसु शुद्धं तापनिषेकात्सुवर्णमिव ॥ १ ॥"

"ते (दूषित थयेलुं)नक्षत्र फरीथी सूर्य अने चंद्रना जोगव्या पछी शुभ कार्यने माटे योग्य थाय छे जेम अशुद्ध सुवर्ण अग्निमां तपावीने जळमां नाख्या पछी कार्य (अलंकार)करवामां शुद्ध थाय छे तेम. अर्थात् ते नक्षत्र प्रथम सूर्यवडे तपावाय छे, अने पछी चंद्रवडे शांत कराय छे."

उपरागथी एटले चंद्र के सूर्यना ग्रहणथी हणायेलुं एटले दूषित थयेलुं जे नक्षत्र होय ते ग्रहणनक्षत्र कहेवाय छे. ते छ मास सुधी शुभ कार्यमां वर्जवा योग्य छे. केटलाक आचार्यो एम कहे छे के—ज्यांसुधी ते नक्षत्रने फरीथी सूर्य न जोगवे त्यांसुधी ते वर्जवा योग्य छे. अहीं विशेष आ प्रमाणे छे.—

"पक्षान्तरेण ग्रहणद्वयं स्याद्यदा तदाद्यग्रहणोपगं भम् ।
पक्षाद्विशुद्धं भवति द्वितीयग्रहोपगं शुध्यति मासषट्कात् ॥ १ ॥"

"एक पखवाडीयाने आंतरेज जो बे ग्रहण थतां होय तो पहेला ग्रहणथी दूषित थयेलुं नक्षत्र एक पखवाडीयाए करीने (बीजुं ग्रहण आवे त्यारे)शुद्ध थाय छे, अने बीजा ग्रहणथी दूषित थयेलुं नक्षत्र छ महीने शुद्ध थाय छे" एम सप्तर्षि कहे छे.

वळी जे नक्षत्रमां केतुनो उदय थयो होय तेज नक्षत्रमा छ मास सुधी केतु रहे छे, तेथी ते नक्षत्र पण छ मास सुधी तजवा योग्य छे. तथा जे दिननक्षत्रमां मंगळ विगेरे पांच ताराग्रह माहेना कोइ पण बे ताराग्रहनो परस्पर भेद (वेध) थतो होय तो ते नक्षत्र पण छ मास सुधी तजवा योग्य छे ते विषे विवाहवृन्दावनने विषे कह्युं छे के—

"यस्मिन् धिष्ण्ये वीक्षितौ राहुकेतू, भेदस्तारास्वेटयोर्यत्र च स्यात् ।
आषण्मासाँस्तत्र लग्नेन्दुभाजि, भ्राजिष्णु स्यान्नो शुभं कर्म किञ्चित् ॥ १ ॥"

"जे दिननक्षत्रमां राहु अने केतु जोया होय, अने जे नक्षत्रमां मंगळादिक बे ताराग्रहनो परस्पर भेद-वेध थतो होय ते लग्नना चंद्रवडे शोभता एवा नक्षत्रमां छ मास सुधी कोइ पण शुभ कार्य कर्युं होय तो ते शोभावाळुं एटले शुभ फळदायक थतुं नथी."—जे दिननक्षत्रमां सूर्य के चंद्रनुं ग्रहण थतुं होय ते नक्षत्रमा राहु जोयो कहेवाय छे, अने जे नक्षत्रमा केतुनो उदय थतो होय ते नक्षत्रमा केतु जोयेलो कहेवाय छे. अहीं कोइने शंका थाय के केतुना उदयनुं नक्षत्र शी रीते जाणी शकाय? आ शंकाना उत्तरमा त्रिविक्रमशतकनी टीकामां लखेला श्लोको अहीं लखे छे—

"मेषेऽर्के सति रेवत्यां यदि याति विधुंतुदः ।
भाद्रमासोत्तरार्धे स्यात् पुष्ये केतूदयस्तदा ॥ १ ॥"

"मेष संक्रांतिमां जो रेवती नक्षत्रने विषे राहु रह्यो होय तो भादरवा मासना बीजा पखवाडीयामां पुष्य नक्षत्रने विषे केतुनो उदय थाय छे. १."

"सूर्ये वृषस्थितेऽश्विन्यां यदि याति विधुंतुदः ।
आश्विनस्योत्तरार्धे तद्रोहिण्यां केतुरीक्ष्यते ॥ २ ॥"

"वृष राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो अश्विनी नक्षत्रमां राहु रह्यो होय तो आश्विन मासना बीजा पखवाडीयाने विषे रोहिणी नक्षत्रमां केतु देखाय छे–उदय पामे छे. २."

"भरण्यां मिथुनस्थेऽर्के यदि याति विधुंतुदः ।
कार्तिकस्योत्तरार्धे तदार्द्रायां केतुदर्शनम् ॥ ३ ॥"

"मिथुन राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो भरणी नक्षत्रमां राहु रह्यो होय तो कार्तिक मासना बीजा पखवाडीयामां आर्द्रा नक्षत्रने विषे केतुनुं दर्शन थाय छे. ३."

"कर्कस्थेऽर्के कृत्तिकायां यदि याति विधुंतुदः ।
मार्गशीर्षापरार्धे तत्केतूदयः पुनर्वसौ ॥ ४ ॥"

"कर्क राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो कृत्तिका नक्षत्रमां राहु रह्यो होय तो मार्गशीर्ष मासना बीजा पखवाडीयामां पुनर्वसु नक्षत्रने विषे केतुनो उदय थाय छे. ४."

"सिंहेऽर्के सति रोहिण्यां यदि याति विधुंतुदः ।
पौषमासापरार्धे तदश्लेषायां शिखीक्ष्यते ॥ ५ ॥"

"सिंह संक्रांति होय त्यारे जो रोहिणी नक्षत्रमां राहु रहेलो होय तो पोष मासना बीजा पखवाडीयामां अश्लेषा नक्षत्रने विषे केतु देखाय छे–उदय पामे छे. ५."

"कन्यास्थेऽर्के मृगशीर्षे यदि याति विधुंतुदः ।
माघमासोत्तरार्धे तच्चित्रायां दृश्यते शिखी ॥ ६ ॥"

"सूर्य कन्या राशिमां रह्यो होय त्यारे जो राहु मृगशीर्ष नक्षत्रमां रह्यो होय तो माघ मासना बीजा पखवाडीयामां चित्रा नक्षत्रने विषे केतु देखाय छे. ६."

"तुलार्के सति आर्द्रायां यदि याति विधुंतुदः ।
फाल्गुनस्योत्तरार्धे स्यान्मूले केतूदयस्तदा ॥ ७ ॥"

"तुला राशिमां सूर्य होय त्यारे जो आर्द्रा नक्षत्रमां राहु रहेलो होय तो फाल्गुन मासना बीजा पखवाडीयामां मूळ नक्षत्रने विषे केतुनो उदय थाय छे. ७."

"वृश्चिकेऽर्के पुनर्वस्वोर्यदि याति विधुंतुदः ।
चैत्रमासोत्तरार्धे स्यात्स्वातौ केतूदयस्तदा ॥ ८ ॥"

"वृश्चिक राशिनो सूर्य होय त्यारे जो पुनर्वसु नक्षत्रमां राहु रहेलो होय तो चैत्र मासना बीजा पखवाडीयामां स्वाति नक्षत्रने विषे केतुनो उदय थाय छे. ८."

"धनुःस्थिते रवौ पुष्यं यदि याति विधुंतुदः।
वैशाखस्योत्तरार्धे स्यान्मूले केतूदयस्तदा ॥ ए ॥"

"धन राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो पुष्य नक्षत्रमां राहु रहेलो होय तो वैशा मासना बीजा पखवामीयामां मूळ नक्षत्रने विषे केतुनो उदय थाय छे. ए."

"अश्लेषा मकरस्थेऽर्के यदि याति विधुंतुदः।
ज्येष्ठमासोत्तरार्धे तज्ज्येष्ठाया दृश्यते शिखी ॥ १० ॥"

"सूर्य मकर राशिमां रह्यो होय त्यारे जो राहु अश्लेषा नक्षत्रमां रह्यो होय तो ज्येष्ठ मासना बीजा पखवामीयामां ज्येष्ठा नक्षत्रने विषे केतु देखाय छे. १०."

"कुंभस्थेऽर्के मघाधिष्ण्यं यदि याति विधुंतुदः।
आपाढमासोत्तरार्धे श्रुतौ केतूदयस्तदा ॥ ११ ॥"

"सूर्य कुंभ राशिमां रह्यो होय त्यारे जो राहु मघा नक्षत्रमां होय तो आपाढ मासना बीजा पखवामीयामां श्रवण नक्षत्रने विषे केतुनो उदय होय छे. ११."

"मीनेऽर्केऽपरफल्गुन्यां यदि याति विधुंतुदः।
श्रावणस्योत्तरार्धे तद्वारुणे दृश्यते शिखी ॥ १२ ॥"

"मीन राशिमा सूर्य रह्यो होय त्यारे जो राहु उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां होय तो श्रावण मासना बीजा पखवामीयामा शतभिषक् नक्षत्रने विषे केतु देखाय छे—उदय पामे छे. १२"

उल्कापात अने चंद्र सूर्यना परिवेपथी दूपित थयेलुं नक्षत्र पण छ मास सुधी शुभ कार्यमा वर्जवा योग्य छे एम केटलाक आचार्यो कहे छे.

वेधैकार्गलोत्पातपातलत्ताभिधैरपि।
दोपैरुपग्रहाद्यैश्च नक्षत्रं दुष्टमुत्सृजेत् ॥ २७ ॥

अर्थ—वेधवमे करीने एटले सात अने पाच रेखावाळा चक्रे करीने बतावेला वेधवमे दूपित थयेलुं तथा एकार्गल, उत्पात, पात अने लत्ता नामना दोपे करीने दूपित थयेलु, तथा उपग्रहादिके करीने दूपित थयेलुं नक्षत्र शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे.

उत्पात एटले जे दिवसे भौम विगेरे उत्पातो थया होय ते दिवसनु नक्षत्र उत्पातवमे दूपित कहेवाय छे श्लोकमा अपि शब्द होवाथी ग्रह युद्धादिकवमे दूपित थयेलुं नक्षत्र पण तजवा योग्य छे. आ सर्वे दोपोथी दूपित थयेलां नक्षत्रो ते ते दोपथी मुक्त थय पछी ज्यारे चंद्रवमे भोगवाइ जाय त्यारे ते शुद्ध थाय छे एम रत्नमाळाना भाष्यमां कह्युं छे

हवे वेळा (समय)नी शुद्धि कहे छे —

अर्केन्द्वोर्भुक्तांशकराशियुतौ क्रान्तिसाम्यनामाऽयम्।
चक्रदले व्यतिपातः पातश्चक्रे च वैधृतस्त्याज्यः ॥ २८ ॥

अर्थ—सूर्य अने चंद्रना भुक्त अंश तथा राशिने एकठा करवाथी क्रांतिसाम्य नामनो दोष थाय छे. तेमां जो ते एकठा करेला राशिनी संख्या अर्धचक्र एटले छनी आवे तो ते क्रांतिसाम्यनुं नाम व्यतिपात कहेवाय छे, अने जो चक्र एटले बारनी संख्या आवे तो तेनुं पात तथा वैधृत एवुं नाम कहेवाय छे. आ बन्ने प्रकारनो क्रांति-साम्य दोष शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे.

विस्तरार्थ—स्पष्ट करेला सूर्य अने चंद्रने अयनांशो सहित करवा. पछी तेमां भुक्त अंश तथा राशि नाखवा. तेमां जो राशिना अंकने स्थाने छनी के बारनी संख्या आवे तो क्रांतिसाम्यनो संभव छे एम जाणवुं. ते वेळा तजवा योग्य छे. ते क्रांतिसाम्य नामनो दोष जो छनी संख्यावडे थयो होय तो तेनुं व्यतिपात एवुं नाम कहेवाय छे, अने जो बारनी संख्यावडे थयो होय तो तेनां पात अने वैधृत एवां बे नाम कहेवाय छे. अहीं तात्पर्य ए छे के—आ क्रांतिसाम्यनी वेळा निश्चयथी कही शकाती नथी, कारण के वर्षे वर्षे ते वेळा अनियमित वखते आवे छे. तेने माटे विवाहवृंदावनने विषे कह्युं छे के—

"त्रिभागशेषे ध्रुवनाम्नि चैन्द्रत्र्यंशे गते सम्प्रति संभवोऽस्य।"

"विष्कंभादिक योगो मांहेना ध्रुव नामना योगनो त्रीजो भाग शेष रहे त्यारे अने ऐंद्र नामना योगना त्रण भाग वीती जाय त्यारे हालना समयमां आ क्रांतिसाम्य नामना दोषनो संभव छे."

त्यारपछी कोइए आम कह्युं छे.—

"पूर्वार्धे पुनरैन्द्रस्य पश्चिमार्धे ध्रुवस्य च।"

"ऐंद्रना पहेला अर्ध भागमां अने ध्रुवना पाछला अर्धा भागमां आ क्रांतिसाम्यनो संभव छे." हमणां तो—

"ब्रह्मणश्चरणे शेषे ध्रुवस्य चरणे गते।
तत्संभव इत्याहुर्ज्ञाः[१] ॥ १ ॥"

"ब्रह्मा नामना योगनो चोथो भाग शेष रहे त्यारे अने ध्रुव योगनो एक पाद (चोथो भाग) जाय त्यारे ते क्रांतिसाम्यनो संभव छे एम ज्योतिषशास्त्र जाणनाराओ कहे छे."

आ बाबत शी रीते निश्चय करवो? ते माटे कहे छे के—'ते वखतना सूर्य अने चंद्रने राशि, अंश विगेरे रूपे स्पष्ट करीने ते वर्षना अयनांशोने ते (स्पष्ट करेला सूर्य अने चंद्र)मां नाखवा. पछी ते बन्नेने एकठा करवा. तेमां जो राशिनी संख्या छ अथवा बार आवे तो क्रांतिसाम्यनो संभव छे एम जाणवुं. तेमां पण आ प्रमाणे विशेष जाणवुं.—जो छनी के बारनी संख्या पूरेपूरी एटले के अंश, कळा विगेरेने स्थाने शून्यज

१ जे वखते कार्य करवानुं होय ते वखतना.

पछी आवशे ? तेने माटे उपर कहेली रीते दिवस अने घडी विगेरे काढवा. ग्रहो ? ग्रहोनी गतिने स्पष्ट करवानो विधि (रीत) आगळ कहेवामां आवशे.

आ क्रांतिसाम्यना संभवनुं स्थान सूत्रकारे स्थूल प्रमाणथी कह्युं छे, तेथी अमे पण तेने अनुसरीने स्थूल प्रमाणनुंज विवरण कर्युं छे, परंतु कोइने सूक्ष्म दृष्टिथी जोवुं होय, जेमके क्रांतिसाम्यनो आरंभ क्यारे थयो ? ते केटला वखत सुधी रहीने क्यारे ते पूर्ण थयुं ? क्रांतिसाम्य शब्दनुं सार्थक नाम शुं ? एटले के एनुं क्रांतिसाम्य एवुं नाम केम कहेवायुं ? छ अने बारनी संख्यानी उत्पत्ति छतां पण क्रांतिसाम्य थतुं नथी ए क्यारे अने शी रीते ? क्रांतिसाम्य छतां पण ते क्यारे अने शी रीते दोषकारी न होय ? इत्यादि सूक्ष्म प्रमाणने इच्छनारे करणकुतूहल, भास्करसिद्धांत विगेरे ग्रंथो जोवा

अहीं कोइ शंका करे छे के—तमे प्रथम एवुं कह्युं के क्रांतिसाम्यनुं स्थान मासे मासे अने वर्षे वर्षे फरे छे, तो तेने फरवाना स्थाननी कांइ पण सीमा छे के नहीं ? आ शंकानो जवाब आपतां कहे छे के—हा, छे ते आ प्रमाणे —

"गण्डोत्तरार्धाच्छुक्लादेः क्रान्तिसाम्यस्य संभवः ।
सार्धपञ्चसु योगेषु तत्त्र्यहं परिवर्जयेत् ॥ १ ॥"

"गंडना उत्तरार्धथी अने शुक्ल योगनी आदिथी आरंभीने साडा पांच योग सुधी क्रान्तिसाम्यनो संभव छे तेना त्रण दिवस वर्जवा योग्य छे गंड योगना उत्तरार्धथी आरंभीने (एटले गंड योगना बे पाद गया पछी) साडा पाच योग सुधी (एटले वज्र योग पूर्ण थाय त्यांसुधी) तथा शुक्ल योगने पहेलेथीज आरंभीने साडा पांच योग सुधी (एटले प्रीति योगना बे पाद पूर्ण थाय त्यांसुधी) क्रांतिसाम्यनो संभव छे. आ सिवाय बीजा योगोमा तेनो सम्भवज नथी, एम संदर्भाद्य भाष्य विगेरेमा कह्यु छे अर्थात् आ बे स्थाने साडा पाच योगने विषेज क्रांतिसाम्य फर्या करे छे, ए साडा पाच योगने उल्लंघन करीने बीजा कोइ पण योगमां कोइ पण वखत क्रांतिसाम्य गयुं (थयुं) नथी तेम जशे (थशे)पण नहीं. आ क्रांतिसाम्य दोषना त्रण दिवस वर्जवाना कह्या छे, एटले के हालना समयमां ब्रह्म योगनो अन्त्य पाद अने ध्रुव योगनो आद्य पाद ए बे स्थानथी पाछळ चालतुं (रहेलुं) क्रांतिसाम्य कदाचित् गयेले (पहेले) ... छे (थाय छे)अने आगळ चालतुं (रहेलुं) क्रांतिसाम्य कदाचित् आगळने (पछीने) दिवसे जाय छे, तेथी करीने क्रांतिसाम्यना संभवना स्थानवाळो एक दिवस अने आगळ पाछळनो एक एक दिवस एम त्रण दिवस तजवाना छे. अथवा बीजी रीते पण त्रण दिवस त्याग करवानुं आ प्रमाणे कह्युं छे—

"गत १ मेष्य २ दर्तमानं ३ सुख १ लक्ष्म्या २ युषा ३ क्रमात् ।
क्रान्तिसाम्यं सृजेद्धानिं त्र्यहं तेनात्र वर्ज्यताम् ॥ १ ॥"

"जे दिवसे क्रांतिसाम्य होय ते दिवसथी पहेलानो दिवस सुखनी हानि करे छे, तेनी पछीनो दिवस लक्ष्मीनी हानि करे छे, अने क्रांतिसाम्यनो दिवस आयुषनी हानि करे छे, माटे आ त्रण दिवसो वर्जवा योग्य छे."

केटलाक आचार्यो क्रांतिसाम्यवाळो एकज दिवस वर्जवानुं कहे छे, अने बीजा केटलाक तो ते दिवसे पण क्रांतिसाम्य थवानो समयज मात्र तजवानो कहे छे. तेओ कहे छे के—

"विषप्रदिग्धेन हतस्य पत्रिणा, मृगस्य मांसं सुखदं क्षताहते ।
यथा तथैव व्यतिपातयोगे, क्षणोऽत्र वर्ज्यो न तिथिर्न वारः ॥ १ ॥"

"जेम विष लगावेला बाणथी हणायेला मृगनुं क्षत (क्षतना स्थान) विनानुं बीजुं सर्व मांस सुखकारक छे तेम व्यतिपात (क्रांतिसाम्य) योगने विषे पण ते योगनो समयज वर्जवा योग्य छे, परंतु आखी तिथि के आखो वार वर्जवा योग्य नथी."

क्रांतिसाम्यनी वेळानो निश्चित समय तथा ते क्रांतिसाम्य केटलो वखत रहे छे तेनुं परिमाण करणकुतूहल विगेरे ग्रंथमां कहेला विधिने अनुसारे जाणवुं एम प्रथम कही गया छीए. आ क्रांतिसाम्य मोटो दोष गणाय छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"खड्गाहतोऽग्निना दग्धो नागदष्टोऽपि जीवति ।
क्रान्तिसाम्यकृतोद्वाहो म्रियते नात्र संशयः ॥ १ ॥"

" खड्गथी हणायेलो, अग्निथी बळेलो अने सर्पथी डसायेलो पुरुष कदाच जीवी शके छे, परंतु क्रांतिसाम्यमां विवाहित थयेलो पुरुष मरीज जाय छे, तेमां कांइ पण संशय नथी."

आ विवाहना विषयमां तजवा योग्य अढार दोषोना संग्रहनो श्लोक आ प्रमाणे छे.

"स्युर्वेधः १ पात २ लत्ते ३ ग्रहमलिनमुडु ४ क्रूरवारा ५ ग्रहाणां,
जन्मर्क्षं ६ विष्टि ७ रर्धप्रहरक ८ कुलिको ए पग्रह १० क्रान्त्य ११ वस्थाः १२ ।
कर्कोत्पातादि १३ घंटो १४ विगतबलशशी १५ दुष्टयोगार्गलाख्या १६,
गण्डान्तो १७ दग्धरिक्ताप्रमुखतिथि १८ रथो नामतोऽष्टादशैते ॥ १ ॥"

"वेध १, पात २, लत्ता ३, ग्रहवडे मलिन (दूषित) थयेलुं नक्षत्र ४, क्रूर वार ५, ग्रहोनुं जन्मनक्षत्र ६, विष्टि ७, अर्धप्रहर ८, कुलिक ए, उपग्रह १०, क्रांति ११, अवस्था १२, कर्क, उत्पात विगेरे १३, घंट १४, निर्बळ चंद्र १५, दुष्ट योगो तथा अर्गल योग १६, गंडांत १७ तथा दग्ध अने रिक्ता विगेरे तिथि १८, आ नामना अढार दोषो जाणवा." अहीं ग्रहवडे मलिन थयेलुं नक्षत्र एटले क्रूरेण मुक्तमाक्रान्तं० (विमर्श ५. श्लोक १५) ए श्लोकमां कहेला दोषथी दूषित थयेलुं अने वळी चंद्रना भोगववावडे हजु सुधी शुद्ध थयेलुं न होय एवुं नक्षत्र. क्रूर वारे करीने क्रूर होरा पण

अहीं जाणवी (दोषमां गणवी). ग्रहोनु जन्मनक्षत्र भरचितुत्तरे० ए पूर्वोक्त श्लोकमा तथा विशाखाकृत्तिके० ए पूर्वोक्त श्लोकमां कहेलुं जाणवुं अर्धप्रहर अने कुलिकना दोष माटे सारंग कहे छे के—"यामार्धेन भवेच्छोषः कुलिकेन तनुक्षयः"—"अर्धप्रहरमां कार्य करवाथी शरीरनो शोष थाय छे अने कुलिक योगमां करवाथी शरीरनो क्षय (नाश) थाय छे." तथा—

"लग्नं पञ्चचतुर्वर्ग दूष्यते क्रूरहोरया ।
अपि षड्वर्गसंशुद्ध कुलिकेन विहन्यते ॥ १ ॥"

"लग्न पाच के चार वर्गे करीने शुद्ध होय तो ते क्रूर होराए करीने दूषण पामे छे, अने छ वर्गे करीने शुद्ध होय तोपण ते कुलिके करीने हणाय छे—दूषित थाय छे" एम रत्नमालाना भाष्यमा कह्यु छे

अहीं अर्धप्रहर अने कुलिक कहेवाए करीने काळवेळा, कंटक अने उपकुलिक पण जाणवा, तेथी ते पण शक्ति प्रमाणे त्याग करवा. उपग्रहे करीने दुष्ट रवियोगो पण अहीं जाणवा क्रातिए करीने सूर्यसंक्राति तथा क्रातिसाम्य ए बन्ने समजवा अवस्थाए करीने चंद्रनी प्रोषित विगेरे दुष्ट अवस्थाओ जाणवी. कर्क, उत्पात विगेरे, अहीं आदि शब्द छे माटे तिथि अने नक्षत्रने आश्रीने तथा तिथि अने वारने आश्री उत्पन्न थता जे मृत्यु, काण, संवर्तक अने वज्रपात विगेरे योगो कहेला छे ते सर्वे अहीं जाणवा. घंट शब्दे करीने भामाए करीने सत्यभामानी जेम यमघंट योग जाणवो अहीं यमघंटने जे जूदो पाडीने गणाव्यो छे ते तेनुं अति दुष्टपणुं जणाववा माटे गणाव्यो छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"यमघण्टे गते मृत्युः कुलोच्छेदः करग्रहे ।
कर्तुर्मृत्युः प्रतिष्ठाया शिशुर्जातो न जीवति ॥ १ ॥"

"यमघंट योगमां जो प्रयाण कर्यु होय तो ते प्रयाण करनारनुं मरण थाय छे, विवाह कर्या होय तो कुळनो नाश थाय छे, प्रतिष्ठा करी होय तो प्रतिष्ठा करनारनुं मरण थाय छे, अने जो बाळकनो जन्म थयो होय तो ते बाळक जीवतो नथी एटले मरण पामे छे"

निर्बळ चंद्रे करीने गोचरादिकवर्मे विरुद्ध (अशुभ) चंद्रने पण दूषित जाणवो, तथा कृष्णपक्षमां विरुद्ध तारा पण दूषित जाणवी दुष्ट योगो विष्कंभ विगेरेमाना जाणवा अर्गल एटले एकार्गल, आ योग विष्कंभ विगेरे योगोमाना कुयोगोमाज संभवे छे, तेथी तेनी साथेज भण्यो छे गंडाते करीने विवाहवृंदावन विगेरे ग्रथोमां कहेलो तिथ्यादिकनो संधिदोष पण जाणवो "दग्धरिक्तामसुख" आ पदमा ... शब्द लख्यो छे तेथी पक्षच्छिद्र, क्रूर तिथि, अवम तिथि तथा फल्गु तिथि पण ... ते विषे सारग कहे छे के—

"सूर्योदये यथा तारा विनश्यन्ति समन्ततः ।
यथाग्निरम्बुना लग्नं तथा वृद्धिक्षये तिथिः (थेः) ॥ १ ॥"

"जेम सूर्यनो उदय थाय त्यारे चोतरफथी ताराओ नाश पामे छे, तथा जेम जळवडे करीने अग्नि ओलवाइ जाय छे तेम तिथिनी वृद्धि अथवा क्षय थवाथी लग्न विनाश पामे छे." आ उपर कहेला अढार दोषो शुद्ध नक्षत्रना बळे करीने छाया लग्न विगेरेमां ज्यारे प्रतिष्ठा के दीक्षा विगेरे कार्य करवामां आवे छे त्यारे पण अवश्य वर्जवा योग्य छे, तो पछी घटिका लग्नने विषे त्याग करवामां तो शुं कहेवुं ? अर्थात् अवश्य वर्जवाज जोइए. आ दोषोने मध्ये केटलाक दोषोनो भंगविधि पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"लग्ने गुरुः सौम्ययुतेक्षितो वा, लग्नाधिपो लग्नगतस्तथा वा ।
कालाख्यहोरा च यदा शुभा स्याद्वेधदोषस्य तदा हि भङ्गः ॥१॥"

"विवाह समये गुरु सौम्य ग्रहे युक्त होय, अथवा सौम्य ग्रहनी तेना पर दृष्टि पडती होय, अथवा लग्ननो स्वामी होय अथवा लग्नमां रहेलो होय, तथा ज्यारे काळहोरा शुभ (सारी) होय त्यारे नक्षत्रवेध नामना दोषनो भंग थाय छे, एटले के आ दोष लागतो नथी." अहीं नक्षत्रवेधनोज भंग कह्यो छे, तेथी नक्षत्रना पाद वेधरूप दोषनो भंग थतो नथी एम जाणवुं. वळी व्यवहारप्रकाशमां तो वेधने उलटो शुभ पण कह्यो छे, ते आ रीते.—

"सौम्यैश्चरणान्तरितः शुभः शुभैः केन्द्रगैर्वेधः ।"

"पादोना आंतरामां रहेला सौम्य ग्रहोए करीने वेध शुभ छे तथा शुभ (सौम्य) ग्रहो केंद्रस्थानमां रह्या होय तो वेध शुभ छे."

॥ इति वेधदोषभंगः ॥ १ ॥

"एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तर्युदयादिदोषाः ।
लग्नेऽर्कचन्द्रेज्यबले विनश्यन्त्यर्कोदये यद्वदहो तमांसि ॥ १ ॥"

"एकार्गल, उपग्रह, पात, लत्ता, जामित्र अने कर्तरीनो उदय ए विगेरे दोषो सूर्य, चंद्र अने गुरुए करीने बळवान् लग्न होय तो नाश पामे छे. जेम सूर्यना उदये अंधकार नाश पामे छे तेम." आ प्रमाणे सप्तर्षिओ कहे छे. तथा केटलाक आचार्यो कहे छे के—

"अंगेषु वंगेषु वदन्ति पातं, सौराष्ट्रयाम्ये खचरस्य लत्ताम् ।
उपग्रहं मालवसैन्धवेषु, गण्डान्तयुक्तिं सकले पृथिव्याम् ॥ १ ॥"

"अंग तथा वंग देशमां पात दोष वर्जवानो कह्यो छे, सौराष्ट्र देश तथा दक्षिण देशमां ग्रहनी लत्ताने वर्जवानी कही छे, मालव अने सिंध देशमां उपग्रहने वर्जवानो कह्यो छे, तथा पृथ्वी पर सर्व स्थाने गंडांतने वर्जवानो कह्यो छे." वळी तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"लत्तां वंगालदेशे च पातं कौशलिके त्यजेत् ।
उपग्रहं गौरुदेशे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ १ ॥"

"वंगाल देशमा लत्तानो त्याग करवो, कोशल देशमां पातनो त्याग करवो, गौरु देशमां उपग्रहनो त्याग करवो, अने वेधनो सर्व देशमा त्याग करवो.'

॥ इति पात २ लत्तो ३ पग्रहे ४ कार्गलानां ५ भंगः ॥ ५ ॥

"होराः क्रूराः सौम्यवर्गाधिके स्युर्लग्ने मोघाः सौम्यवारे च रात्र्याम् ।
पापारिष्टं निष्फलं शक्तिभाजां, स्यात् षड्वर्गे लग्नगे सद्ग्रहाणाम् ॥ १ ॥"

"लग्नमां सौम्य ग्रहोनो वर्गाधिक होय तो तथा सौम्य वारोमा अने रात्रिमा क्रूर होरा निष्फळ थाय छे. लग्नमा सौम्य ग्रहोनो षड् वर्ग होय तो पुण्यवंतोने पापी ग्रहोनुं अरिष्ट निष्फळ थाय छे.

त्रिविक्रम पण कहे छे के—

"क्रूरस्य कालहोरा च क्रूरवारे दिवा त्यजेत् ।"

"क्रूरनी काळहोरा क्रूर वारने विषे दिवसे तजवी," एटले के जो दिनवार क्रूर होय अने दिवसे कार्य करवुं होय तो क्रूर होरा तजवी, परंतु जो सौम्य (शुभ) काळहोरा होय तो ते क्रूर वारना दोषनो नाश करे छे, माटे ते ग्रहण करवा योग्य छे, अने जो वारज सौम्य होय तो दिवसे अथवा रात्रिए होरा जोवानी काइ जरुर नथी.

॥ इति सूर्येन्दुग्रहणवर्ज्यग्रहमलिनोक्त १ क्रूरवारहोरा २ दोषयोर्भंगः ॥ ७ ॥

जन्मनक्षत्रना दोषनो भंग आगळ कहेवाता कर्कादिकना भंगनी जेमज जाणवो ८ विष्टि दोषनो भंग छे नहीं. जो कदाच तेनो भंग होय तो "विष्टिपुच्छे ध्रुवं जय." "विष्टिना पुछमा कार्य करवाथी निश्चे जय थाय छे" इत्यादि जाणवुं ९ अवस्था दोषनो भंग आगळ शिवचक्रवरु कहेवाता निर्बळ चंद्रना दोषना भंगनी जेम जाणवो.१०

कर्क, उत्पात विगेरे दोषोनो भंग आ रीते छे —

"अयोगास्तिथिवारर्क्षजाता येऽमी प्रकीर्तिताः ।
लग्ने ग्रहबलोपेते प्रभवन्ति न ते क्वचित् ॥ १ ॥
यत्र लग्नं विना कर्म क्रियते शुभसंज्ञकम् ।
तत्रैतेषां हि योगाना प्रभावाज्जायते फलम् ॥ २ ॥"

"तिथि, वार अने नक्षत्रथी उत्पन्न थयेला जे कुयोगो कहेला छे ते ग्रहना बळे करीने युक्त एवा लग्नने विषे कोइ पण वखत समर्थ थता नथी—बाध करी शकता नथी, परंतु ज्यां लग्न विनाज शुभ कार्य करवामा आवे त्यांज आ योगो समर्थ होवाथी तेनुं फळ थाय छे" एम व्यवहारसारमा कह्युं छे

॥ इति कर्कोत्पातादिदोषभंगः ॥ ११ ॥

यमघंटनी दूषित घमीओ आ प्रमाणे जाणवी.—

"पनरस १ तेर २ बारस ३ एगा ४ सग ५ सत्त ६ अठ ७ घमिआओ ।
जमघंटस्स उ दुठा रविमाइसु सत्तवारेसु ॥ १ ॥"

"रविवारथी आरंभीने सात वारोने विषे यमघंटनी दुष्ट घमीओ आ प्रमाणे जाणवी— रविवारे पंदर घमी, सोमवारे तेर घमी, मंगळवारे अढार घमी, बुधवारे एक घमी, गुरुवारे सात घमी, शुक्रवारे सात घमी अने शनिवारे आठ घमी तजवा योग्य छे." आ प्रमाणे श्रीहरिभद्र सूरिए कह्युं छे. बीजा तो एम कहे छे के—

"तिथि १५ रस ६ रुद्रा ११ म्बरगुण ३० सार्धहया ७॥ ऋतु ६० खगुण ३० मितघटिकाः ।
त्याज्या घंटे रव्यादिष्वाद्या उत्तरास्तु शनिबुधयोः ॥ १ ॥"

"रविवारे यमघंटनी पहेली पंदर घमीओ तजवी, सोमवारे पहेली छ घमी तजवी, मंगळवारे पहेली अगीयार घमी, बुधवारे छेल्ली त्रीश घमी, गुरुवारे पहेली साडीसात घमी, शुक्रवारे पहेली साठ घमी अने शनिवारे छेल्ली त्रीश घमी तजवा योग्य छे." बाकीनी घमीओ अदुष्ट एटले अशुभ नथी.

॥ इति यमघंटदोषभंगः ॥ १२ ॥

निर्बळ चंद्रनो दोष "लग्ने गुरोर्बरस्य०" (विमर्श ५ श्लोक ५)ए श्लोकमां कहेला पंदर प्रकार मांहेला कोइ पण प्रकारे करीने चंद्रनी अनुकूळता सर्वथा न थाय तो शिवचक्रना बळे करीने हणाय छे, केमके शिवचक्र चंद्रादिकना प्रतिकूळपणाने हणे छे एम कह्युं छे. १३. विष्कंभ विगेरे योगोमां जे दुष्ट योगो छे तेमनी दुष्ट घमीओज अवश्य तजवानी छे, बीजी घमीओ तजवामां जेवी इच्छा एम कह्युं छे, माटे ते दोषनो भंग प्रगटज छे. १४. गंमांत तो लग्न, तिथि अने नक्षत्रना त्रीजा त्रीजा भागने आंतरे थाय छे, तेथी ते दोषनो भंग नथी. तथा सर्वे तिथिओ, नक्षत्रो अने योगोनी संधिमां जे संधि नामनो दोष कह्यो छे तेनो भंग आ प्रमाणे छे.—

"धिष्ण्यस्यादावन्ते त्यजेच्चतस्रो घटीः करग्रहणे ।
यदि शुद्धे द्वे धिष्ण्ये विवाहयोग्ये तदा श्रेष्ठे ॥ १ ॥"

"पाणिग्रहणमां नक्षत्रनी आदिनी तथा अंतनी चार घमीओ तजवी. तेमां जो ते बन्ने नक्षत्रो विवाहने योग्य होय तो ते श्रेष्ठ छे. (अर्थात् तेनी घमीओ तजवानी जरुर नथी.)" एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे. तथा—

"गुरुर्भृगुर्वा केन्द्रे वा त्रिकोणे वा यदा भवेत् ।
भसन्धिस्तिथिसन्धिश्च योगसन्धिर्न दोषदः ॥ १ ॥
येऽन्ये सन्धिकृता दोषास्ते सर्वे विलयं ययुः ।
इति प्रोक्तं तु गर्गेण वशिष्ठात्रिपराशरैः ॥ २ ॥"

"मेषांशे स्थापितो देवो वह्निदाहभयावहः १ ।
वृषांशे म्रियते कर्ता स्थापकश्च ऋतुत्रये २ ।
मिथुनांशः शुभो नित्यं भोगदः सर्वसिद्धिदः ३ ॥ १ ॥ षट्पदी ॥"

"मेषांशमां देवनी प्रतिष्ठा करवाथी अग्निना दाहरूप भय उत्पन्न थाय छे १, वृषांशमां स्थापना करवाथी प्रतिष्ठाना कर्ता गुरु तथा स्थापना करनारनुं त्रण ऋतुमा एटले छ मासनी अंदर मृत्यु थाय छे २, अने मिथुनांश निरंतर शुभ छे, भोगने आपनार छे, अने सर्व सिद्धिने करनार छे ३"

"कुमारं तु हन्ति कर्कः कुलनाश ऋतुत्रये ।
विनश्यति ततो देवः षड्भिरब्दैर्न संशयः ४ ॥ २ ॥"

"प्रतिष्ठामां जो कर्कांश लीधो होय तो ते कुमारने (प्रतिष्ठा करनारना पुत्रने) हणे छे, अने त्रण ऋतुमा एटले छ मासमा तेना कुळनो नाश थाय छे त्यारपछी छ वर्षनी अदर देव (प्रतिमा)नो पण नाश थाय छे, तेमां संशय नथी."

"सिंहांशे शोकसंतापः कर्तृस्थापकशिल्पिनाम् ।
संजायते पुनः ख्याता लोकेऽर्चा सर्वदैव हि ५ ॥ ३ ॥"

"सिंहांशमां स्थापना करवाथी प्रतिष्ठाकारक गुरु, स्थापना करनार अने शिल्पी (कारीगर)ने शोक सताप उत्पन्न थाय छे, परंतु ते प्रतिमा सर्वदा लोकमा प्रसिद्धिने पामे छे–पूजाय छे."

"भोगः सदैव कन्यांशे देवदेवस्य जायते ।
धनधान्ययुतः कर्ता मोदते सुचिरं भुवि ६ ॥ ४ ॥"

"कन्यांशमा प्रतिष्ठा करवाथी सर्वदा देवाधिदेवने भोग (पूजा) प्राप्त थाय छे, अने प्रतिष्ठा करनार धन धान्यथी युक्त थइने चिर काळ सुधी पृथ्वी पर आनंद पामे छे"

"उच्चाटनं भवेत् कर्तुर्वधश्चैव सदा भवेत् ।
स्थापकस्य भवेन्मृत्युस्तुलांशे वत्सरद्वये ७ ॥ ५ ॥"

"तुलांशमां प्रतिष्ठा करवाथी प्रतिष्ठाकारक गुरुनुं उच्चाटन (नाश) थाय छे, अने निरतर तेनो वंध थाय छे, तथा बे वर्षनी अंदर प्रतिष्ठा करनारनुं मरण थाय छे."

"वृश्चिके च महाकोप राजपीडासमुद्भवम् ।
अग्निदाहं महाघोरं दिनत्रये विनिर्दिशेत् ८ ॥ ६ ॥"

---

१ 'मेषांशे स्थापित निम्ब वह्निदाहभयावह ।' इत्यपि प्रत्यन्तरे

"वृश्चिकांशमां प्रतिष्ठा करी होय तो त्रण दिवसमां राजपीडाथी उत्पन्न थयेलो महाकोप तथा महा भयंकर अग्निनो दाह थाय एम कहेवुं."

"धन्वांशे धनवृद्धिः स्यात् सद्भोगं च सदा सुरैः ।
प्रतिष्ठापककर्तारौ नन्दतः सुचिरं भुवि ए ॥ ७ ॥"

"धनांशमां प्रतिष्ठा करवाथी धननी वृद्धि थाय छे, अने निरंतर देवो पासेथी सारा भोग प्राप्त थाय छे, तथा प्रतिष्ठा करनार अने आचार्य चिर काळ सुधी पृथ्वी पर आनंद पामे छे."

"मकरांशे भवेन्मृत्युः कर्तृस्थापकशिल्पिनाम् ।
वज्राद्यस्त्राद्या विनाशस्त्रिभिरब्दैर्न संशयः १० ॥ ८ ॥"

"मकरांशमां प्रतिष्ठा करी होय तो प्रतिष्ठापक आचार्य, प्रतिष्ठा करावनार तथा शिल्पीनुं मृत्यु थाय छे, तथा त्रण वर्षनी अंदर वज्रथी के शस्त्रथी तेनो (बिंबनो) नाश थाय छे, तेमां कांइ पण संशय नथी."

"घटांशे भिद्यते देवो जलपातेन वत्सरात् ।
जलोदरेण कर्ता च त्रिभिरब्दैर्विनश्यति ११ ॥ ए ॥"

"कुंभांशमां प्रतिष्ठा करी होय तो एक वर्षनी अंदर जळना पडवाथी देव (प्रतिमा) भेदाय छे—नाश पामे छे, अने प्रतिष्ठा करनार त्रण वर्षमां जलोदरना व्याधिथी नाश पामे छे."

"मीनांशे त्वर्च्यते देवो वासवाद्यैः सुरासुरैः ।
मनुष्यैश्च सदा पूज्यो विना कारापकेन तु १२ ॥ १० ॥"

"मीनांशमां प्रतिष्ठा करवाथी ते देव (प्रतिमा) इंद्र विगेरे सुर असुरोए पूजाय छे, तथा करावनार विना बीजा सर्व मनुष्योए पण सदा पूजाय छे, अर्थात् करावनार मरण पामे छे."

रत्नमाळामां तो मंगळने वर्जीने बीजा सर्वे ग्रहोना छ वर्गो प्रतिष्ठामां शुभ कह्या छे.

हवे दीक्षाने विषे लग्नांशो कहे छे.—

व्रताय राशयो द्व्यङ्गाः स्थिराश्चापि वृषं विना ।
मकरश्च प्रशस्याः स्युर्लग्नांशादिषु नेतरे ॥ २१ ॥

अर्थ—दीक्षाने विषे, लग्नमां तथा नवमांशमां द्विस्वभाव राशिओ, वृष विनानी स्थिर राशिओ अने मकर राशि, एटली राशिओ शुभ छे. ते सिवायनी बीजी राशि शुभ नथी. अर्थात् मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ अने मीन, ए आठ राशिओ शुभ छे, बीजी मेष, वृष, कर्क अने तुला ए चार राशिओ लग्नमां, नवांशोमां अने "आदि" शब्द कह्यो छे माटे द्वादशांशमां पण त्याग करवा लायक छे. ते विषे कह्युं

"भृगोरुदय १ वारां २ श ३ भवने ४ क्षण ५ पञ्चके ।
चन्द्रांशो १ दय २ वारे च ३ दर्शने च ४ न दीक्षयेत् ॥ १ ॥"

"शुक्रनो उदय एटले शुक्र लग्नमां रह्यो होय १, शुक्रवार २, लग्नमां शुक्रनो i
३, शुक्रनुं भवन वृष अने तुला ४, तथा शुक्रनुं ईक्षण एटले संपूर्ण दृष्टिवडे शुक्र ल
के सातमा स्थानने जोतो होय ५, आ पांच वखते दीक्षा देवी नहीं. तथा चंद्रनो अं
चंद्रनो नवांशो १, चंद्रनो उदय एटले चन्द्र लग्नमा रह्यो होय २, चंद्रनो वार-सोमव
३, तथा चंद्रनुं दर्शन ४, आ चार वखते दीक्षा लग्न देवुं नहीं" ए प्रमाणे
वर्गनी शुद्धि जाणवी. तथा—

"जीवमन्दबुधार्काणां षड्वर्गो वारदर्शने ।
शुभावहानि दीक्षायां न शेषाणां कदाचन ॥ १ ॥"

"गुरु, शनि, बुध अने सूर्यनो षड्वर्ग, वार अने दर्शन एटले दृष्टि, एटलां दीक्ष
विषे शुभ छे, अने बीजा (चंद्र, मंगळ अने शुक्र)ना षड्वर्गादिक कदापि शुभ नथी."व
हर्षप्रकाशमां तो वृषांश शुक्रवारे होय तोपण ते वर्गोत्तम होवाथी शुभ कह्यो छे कह्युं छे के

"मेसविसाणं मुत्तूण सेसरासीण पंचमे अंसे ।
न य दिक्खिज्ज जओ सो विणसइ तह तह पओगाओ ॥ १ ॥"

"मेष अने वृषना पांचमा अंश विना बीजी राशिओना पांचमा अंशमां दीक्षा देवी
नहीं, कारण के ते तथा तथा प्रयोगथी नाश पामे."

हवे विवाहमां लग्न अने अंश विगेरे कहे छे.—

विवाहे नाग्रहः कोऽपि लग्नानामिह केवलम् ।
नवांशा धनुराद्यार्धयुग्मकन्यातुलाः शुभाः ॥ २२ ॥

अर्थ—विवाहने विषे लग्ननो काइ पण आग्रह नथी अहीं तो केवळ धननो पूर्वार्ध, मिथुन, कन्या अने तुला एटली राशिना नवांशोज शुभ छे

आग्रह एटले अमुक लग्नो ग्रहण करवां अने अमुक लग्नो त्याग करवां ,। ` नियम ते * आग्रह कहेवाय छे जेम प्रतिष्ठा अने दीक्षामां लग्न संबंधी नियम छे तेम विवाहमा खास नियम नथी केवळ आ विवाहना विषयमां गमे ते लग्न हो, परतु नवांशो तो उपर कहेलाज मनुष्य जाति होवाथी ग्रहण करवा बीजा ग्रहण करवा नहीं रत्नमालाभाष्यमा कह्युं छे के—"मनुष्यांशेभ्योऽन्यत्रासती दरिद्रा च स्यात्" "मनुष्य जातिना अंशोथी अन्य अंशोमा विवाह करवाथी ते स्त्री असती अने दरिद्र थाय छे" वळी केटलाक कहे छे के—"धनुषि पराभवयुक्ता" "धनांश लग्न करवाथी

परणेली स्त्री पराज्ञवे करीने युक्त थाय बे," परंतु ग्रंथकारना मतमां तो धननो उत्तरार्धज विरुद्ध बे, अने पूर्वार्ध तो मनुष्य जाति बे, तेथी शुज्ञ बे. वळी रत्नमाळामां तो लग्ननो पण नियम आ प्रमाणे कह्यो बे.—

"कन्या नृयुग्मं च वणिग्विलग्ने, स्थितो विवाहः शुज्ञमादधाति ।"

"जो लग्नमां कन्या, मिथुन के तुला राशि रही होय तो तेमां करेलो विवाह शुज्ञकारक बे." आ लग्नोमां पण नवांशानो नियम उपर कह्या प्रमाणेज जाणवो. ते विषे ज्ञास्कर कहे बे के—

"निन्द्येऽपि लग्ने द्विपदांश इष्टः, कन्यादिलग्नेष्वपि नान्यज्ञागः ।"

"लग्न निंद्य (अशुज्ञ) होय तोपण मनुष्यना नवांशाज इष्ट बे, अने कन्यादिक शुज्ञ लग्नोमां पण बीजो (मनुष्य सिवायनो) अंश इष्ट नथी." वळी व्यवहारप्रकाशमां तो आ प्रमाणे कहे बे.—

"धन्वांशो न बुधास्ते ज्ञौमास्ते नो तुलांशकः कार्यः ।
न तुलांशश्चरलग्ने देयस्तुलमकरसंस्थेन्दौ ॥ १ ॥"

"बुधनो अस्त होय तो धननो नवांशो लेवो नहीं, मंगळनो अस्त होय त्यारे तुलनो अंश देवो नहीं, अने तुल तथा मकरनो चंद्र होय त्यारे चर लग्नमां तुलनो अंश देवो नहीं."

हवे सर्व (त्रणे) प्रकारनां लग्नने विषे साधारण नियम कहे बे.—

**त्रिष्वपि क्रूरमध्यस्थौ शुक्रक्रूराश्रितद्युनौ ।
नेष्टौ लग्नविधू केन्द्रस्थितसौम्यौ तु तौ मतौ ॥ २३ ॥**

अर्थ—त्रणे (प्रतिष्ठा, दीक्षा अने विवाह)ने विषे बे क्रूर ग्रहनी मध्यमां (वच्चे) जो लग्न के चंद्र रहेलो होय तो ते इष्ट (शुज्ञ) नथी. तथा लग्न के चंद्रथी सातमुं स्थान शुक्र के क्रूर ग्रहे आश्रित कर्युं होय तो ते पण इष्ट नथी, परंतु जो लग्न के चंद्रथी केंद्रनां चारे स्थानमां सौम्य ग्रहो रह्या होय तो ते (लग्न अने चंद्र) इष्ट बे.

त्रणेने विषे एटले प्रतिष्ठा, दीक्षा अने विवाहने विषे बे क्रूर ग्रहनी मध्यमां रहेला जो लग्न के चंद्र होय एटले के लग्ननी बन्ने बाजुए एटले बीजा अने बारमा स्थानने विषे क्रूर ग्रहो होय, अने तेज रीते चंद्रनी पण बन्ने बाजुए क्रूर ग्रहो होय तो आ बन्ने प्रकारे क्रूर कर्तरी कहेवाय बे. आ प्रत्येक क्रूर कर्तरी त्रण त्रण प्रकारनी बे—अति दुष्टा १, दुष्टा २ अने अल्प दुष्टा ३. तेमां जो धन एटले बीजा स्थानमां रहेलो क्रूर ग्रह वक्री होय, अने व्यय (बारमा)स्थानमां रहेलो क्रूर ग्रह मध्यम गतिवाळो तो

मूळ श्लोकमां जे शुक्रक्रूर० कह्युं छे तेनो अपवाद मूळ श्लोकमांज केन्द्रस्थित० विगेरे पदोथी कहे छे.—लग्नथी अने चंद्रथी जो चारे केन्द्रस्थानमां सौम्य ग्रहो हं तो शुक्र के क्रूर ग्रहे आश्रय करेला सातमा स्थानवाळा लग्न अने चंद्र शुभ मानेला एटले के कोइक वखत आदर करवा लायक पण छे. वळी सारंग तो चंद्रथी के स्थानमा रहेला क्रूर ग्रहनो दोष आ प्रमाणे कहे छे.—

"लग्ना १ म्बु २ सप्त ३ व्योम ४ स्थो भवेत्क्रूरग्रहो विधोः ।
आपीडा १ चैव संपीडा २ भृग्वाद्या ३ वर्तिताः ४ क्रमात् ॥ १ ॥
आत्मनो १ बन्धुवर्गस्य २ जायायाः ३ कर्मणः ४ क्रमात् ।
विनाशो जायते नूनं तद्वेलाकार्यकारिणः ॥ २ ॥"

"चंद्रथी पहेले १, चोथे २, सातमे ३ अने दशमे ४ स्थाने जो क्रूर ग्रह रह्यो हं तो ते अनुक्रमे आपीडा १, संपीडा २, भृग्वादिक ३ अने वर्तिता ४ एवे नामे कहेव छे. ते वेळाए कार्य करवाथी अनुक्रमे पोतानो १, बंधुवर्गनो २, स्त्रीनो ३ अ कर्मनो ४ नाश थाय छे." एटले के चंद्रथी पहेले स्थाने क्रूर ग्रह होय तो ते आपी कहेवाय छे, अने तेनुं फळ आत्मानो नाश छे विगेरे

अहीं कोइने शंका थाय के— आ स्थळे लग्न अने चंद्रना गुण तथा दोष सर केम कह्या ? आ शंकानो जवाब ए छे जे—

"लग्नबलाच्छारीरं चन्द्रबलान्मानसं ग्रहाः सर्वे ।
दद्युर्भावाश्रयजं शुभमशुभं वा फलं नियमात् ॥ १ ॥"

"सर्वे ग्रहो लग्नना बळथी शरीर संबंधी अने चंद्रना बळथी मन संबंधी भावना आश्रयथी उत्पन्न थतुं शुभ अथवा अशुभ फळ अवश्य आपे छे" एम व्यवहार-प्रकाशमां कह्युं छे.

हवे चंद्रथी सातमा स्थानमा रहेला क्रूर ग्रहथी उत्पन्न थता जामित्र नामना दोषनो भंग कहे छे

गुरुर्बुधश्च शीतांशुसप्तमक्रूरदोषहृत् ।
पुष्टयेन्दुं दृशा पश्यन् लग्न१खा१०म्बु४त्रिकोण९-५गः ॥ २४ ॥

अर्थ—लग्नमा, दशमा स्थानमा, चोथा स्थानमां के त्रिकोण (९-५)मां रहेलो अथवा बुध जो पुष्ट दृष्टिए करीने चंद्रने जोतो होय तो ते चंद्रथी सातमा रहेला क्रूर ग्रहथी उत्पन्न थता दोषने हरण करे छे अहीं पुष्ट दृष्टिए करीने संपूर्ण दृष्टिए अथवा त्रिपाद दृष्टिए करीने एम जाणवुं.

हवे दीक्षासमये चंद्रनी साथे रहेला बीजा ग्रहोनुं फळ कहे छे —

दीक्षायां कुरुते चन्द्रः क्रमाद्भौमादिनिर्युतः ।
कलिं १ भियं २ मृतिं ३ नैःस्व्यं ४ विपदं ५ नृपभीभयम् ६ ॥ २५ ॥

अर्थ—दीक्षासमये जो चंद्र मंगळनी साथे रह्यो होय तो ते क्लेशने करे छे, बुधनी साथे रह्यो होय तो भयने करे छे, गुरुनी साथे रह्यो होय तो मृत्युने करे छे, शुक्रनी साथे होय तो निर्धनपणुं करे छे, शनिनी साथे होय तो विपत्तिने करे छे, अने सूर्यनी साथे रह्यो होय तो ते राजभय उत्पन्न करे छे.

मंगळथी आरंभीने सूर्य सुधी अनुक्रमे क्लेश विगेरे उपर कहेलां फळो जाणवां. विशेष ए छे जे "नीचेऽस्तं वास्ते०" (विमर्ष ५, श्लोक ३) ए ठेकाणे ग्रहोना अस्तमयना विषयमां जे काळांशो कहेला छे तेमना अर्ध भागमां जो ग्रहोनो योग होय तो ते योग दूषित छे, अने जो ते ग्रहो ते काळना अर्ध विभागने पाम्या न होय अथवा तेने उल्लंघन करी गया होय तो कहेला दोषो उत्पन्न थाय खरा, परंतु ते दोषो पाछा निवृत्ति पण पामे छे. ते विषे शौनक कहे छे के—

"योगा यथोक्तफलदाः कालार्धविभागसंश्रितानां तु ।
अप्राप्तातीतानामिच्छामात्रं फलं तेषाम् ॥ १ ॥"

"काळना अर्ध विभागने आश्रय करेला (पामेला) ग्रहोना योगो कह्या प्रमाणे फळने आपनारा होय छे, परंतु ते अर्ध विभागने पाम्या न होय अथवा तेने उल्लंघन करी गया होय तो ते योगोनुं फळ इच्छामात्रज छे."

हवे विवाह अने दीक्षा ए बन्नेनो साधारण नियम कहे छे.—

विवाहदीक्षयोर्लग्ने द्यूनेन्दू ग्रहवर्जितौ ।
शुभौ केचित्तु जीवज्ञयुक्तमिन्दुं शुभं विदुः ॥ २६ ॥

अर्थ—विवाह तथा दीक्षाना लग्नमां सातमुं स्थान तथा चंद्र ए बन्ने स्थान ग्रहे करीने रहित होय तो ते शुभ छे. केटलाएक तो गुरु अने बुधे करीने युक्त एवो चंद्र होय तो तेने शुभ कहे छे.

सातमुं स्थान ग्रहे करीने रहित होय तो ते शुभ छे. तेने माटे सप्तर्षि कहे छे के—

"वैधव्यं १ सापत्न्यं २ वन्ध्यात्वं ३ निष्प्रजत्वं ४ दौर्भाग्यम् ५ ।
वेश्यात्वं ६ गर्भच्युति ७ रर्काद्या लग्नतोऽस्तगाः कुर्युः ॥ १ ॥"

"लग्नथी सातमे स्थाने सूर्य रहेलो होय तो ते विवाहित थयेली कन्याने विधवापणुं करे छे, चंद्र रह्यो होय तो सपत्नी (शोक्य)ने करे छे, मंगळ रह्यो होय तो वंध्यापणुं करे छे, बुध रह्यो होय तो प्रजारहितपणुं (वंध्यापणुं) करे छे, गुरु रह्यो होय तो दुर्भाग्यपणुं करे छे, शुक्र रह्यो होय तो वेश्यापणुं करे छे, अने शनि रह्यो होय तो गर्भपात करे छे."

चंद्र पण एकलोज रह्यो होय तो ते शुज्ञ ठे. केटलाएक बुध अने गुरु सहित चंद्रने शुज्ञ कहे ठे, कारण के तेर्ज बुध अने गुरु सिवायना वीजा ग्रहोनी साथ रहेला चंद्रनुं फळ आ प्रमाणे कहे ठे.—

"रविणा १ सणि २ जोमेहिं ३ सुक्क ४ केकहिं ५ राहुणा ६ ।
एगरासिगए चंदे जुइदोसो पवुच्चइ ॥ १ ॥
दरिद्दा १ समणी २ चेव मरणं ३ समवत्तिआ ४ ।
कवालिणी अ ५ कुस्सीला ६ कमा नारी विवाहिआ ॥ २ ॥"

" चंद्र जे राशिमां (स्थानमां) रह्यो होय तेज राशिमां जो रवि १, शनि २, मंग ३, शुक्र ४, केतु ५ के राहु ६ रह्यो होय तो ते युति दोष कहेवाय ठे ते युति दोष विवाहित थयेली नारी अनुक्रमे आ प्रमाणे फळ पामे ठे.—रविनी युति होय तो ते २ दरिद्र थाय ठे १, शनिनी युति होय तो ते साध्वी थइ जाय ठे २, मगळनी युति हं तो ते मरण पामे ठे ३, शुक्रनी युति होय तो ते सपत्नीवाळी थाय ठे ४, केतुनी यु होय तो ते कापालिनी (परिव्राजिका) थाय ठे ५, अने राहुनी युति होय तो कुशीळवाळी (कुलटा) थाय ठे ६."

शुक्र अने चंद्रनी युति विवाहने विषे सर्वथा त्याग करवा योग्य ठे एम व्यवहा सारमां कह्युं ठे, पण सत्यसूरि तो आ प्रमाणे कहे ठे —

"अन्यर्क्षेऽन्यगृहे वा कुजवुधगुरुशुक्रशौरिजिः सार्धम् ।
न जवति दोषाय शशी प्रदक्षिणं याति यदि चैषाम् ॥ १ ॥"

"अन्य नक्षत्रमां के अन्य स्थानमां मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र के शनिनी साथे चंद्र रह्यो होय, अने वळी जो ते चंद्र ते मंगळादिकनी दक्षिण (जमणी) बाजुए चाल होय तो ते चंद्र दोषने माटे नथी "

विशेषमां दैवज्ञवल्लज्ञ कहे ठे के—"द्व्याद्यैः क्रूरैर्युते चन्द्रे व्यसुः प्रव्रजितः शुभैः ।
"बे अथवा तेथी अधिक क्रूर ग्रहोए करीने अथवा सौम्य ग्रहोए करीने युक्त ए चंद्र होय त्यारे जो दीक्षा लीधी होय तो ते मरण पामे ठे."

उपर त्रेवीशमा श्लोकमां लग्नथी के चंद्रथी सातमा स्थानमां शुक्र के क्रूर ग्रह होय तो तेने जामित्र दोष कह्यो ठे, ते दोषनो मतांतरे करीने अपवाद (जंग) कहे ठे

पञ्चपञ्चाशमेवांशं जामित्रं परमं परे ।
अंशाडुज्झन्ति लग्नेन्द्वोर्गर्हितग्रहदूषितम् ॥ २७ ॥

केटलाक आचार्यो कहे ठे के लग्न अने चंद्रनो जे अंश कार्य वखते

ार कर्यो होय ते अंशथी पंचावनमोज अंश निंदित (शुक्र के क्रूर) ग्रहे करीने दूषित होय तो ते परम जामित्र नामनो दोष छे, माटे तेनो त्याग करवो.

लग्न अने चंद्रना अधिकार करेला अंशथी पंचावनमोज अंश निंदित ग्रहे करीने ुक्त होय तो ते निंदित ग्रहनाज कारणथी परम जामित्र नामनो दोष थाय छे, माटे नेज केटलाक आचार्यो तजे छे—तजवानुं कहे छे. भावार्थ ए छे जे—जेटलामो वांशो लग्नने विषे अधिकार (स्वीकार) कर्यो होय तेटलामोज सातमा स्थाननी ाशिमां रहेलो नवांशो पंचावनमो होय छे. तेज रीते चंद्र पण जे राशिमां जेटलामा ावांशामां होय ते राशिथी सातमी राशिनो तेटलामो नवांशो चंद्रना नवांशाथी चावनमो होय छे, तेथी लग्नना अंशथी अथवा चंद्रना अंशथी पंचावनमा नवांशामां ो क्रूर ग्रह के शुक्र होय तो ते परम जामित्र नामनो दोष थाय छे. जेम मेष राशिना हेला अंशमां लग्न अथवा चंद्र होय अने तुलाना पहेला अंशमां क्रूर ग्रह के शुक्र ोय, अथवा मेषना बीजा अंशमां लग्न के चंद्र होय अने तुलाना पण बीजा अंशमां क्रूर ग्रह के शुक्र होय, अथवा एज रीते त्रीजा, चोथा विगेरे अंशोमां ते ते प्रमाणे होय तो ते अवश्य तजवा योग्य छे. कह्युं छे के—

"लग्नेन्दुसंयुतादंशात् पञ्चपञ्चाशदंशके ।
ग्रहोऽन्यो यद्यसौ दोषो न गुणैरपि हन्यते ॥ १ ॥"

"लग्न के चंद्रना अधिकार करेला अंशथी पंचावनमा अंशने विषे जो कोइ ग्रह आवतो होय, अने जो ते दोषरूप थतो होय तो ते दोष बीजा गुणोए करीने पण हणातो नथी" एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे, परंतु जो पंचावनमा अंशथी न्यून अथवा अधिक अंशे शुक्र के क्रूर ग्रह होय तो ते जामित्र नामनोज दोष कहेवाय छे, पण ते रम जामित्र थतो नथी. जेमके मेष राशिना त्रीजा अंशमां लग्न के चंद्र होय, अने तुलाना पहेला के बीजा अंशमां शुक्र के क्रूर ग्रह होय त्यारे ते त्रेपनमो के चोपनमो अंश थयो, अने ज्यारे मेषना पहेला अंशमां लग्न के चंद्र होय, अने तुलाना बीजा, त्रीजा के चोथा अंशमां क्रूर ग्रह के शुक्र होय त्यारे ते मेषना पहेला अंशथी छप्पनमो, सत्तावनमो के अट्ठावनमो अंश थयो. विगेरे स्थळे केवळ जामित्र दोष थाय छे, अने आ दोष अत्यंत दुष्ट नथी एवो तेनो मत छे. आ मत घणाने पण संमत छे.

हवे प्रतिष्ठाने आश्रीने ग्रहोनी युति अने दृष्टिनुं फळ कहे छे—

स्थापने स्युर्विधौ युक्ते दृष्टे चाऽऽरादिभिः क्रमात् ।
अग्निभी १ ऋद्धि २ सिद्धार्चा ३ श्री ४ पञ्चत्वा ५ ग्निभीतयः ६ ॥ २८ ॥

अर्थ—प्रतिष्ठाने विषे जो चंद्र मंगळे करीने युक्त अथवा दृष्ट (जोयेलो) होय तो अग्निनो भय थाय १, बुधे करीने युक्त के दृष्ट होय तो समृद्धि प्राप्त थाय २, गुरुए करीने युक्त के दृष्ट होय तो सिद्धार्चा एटले प्रतिमा अधिष्ठायक देव सहित (प्रभाव-वाळी) थाय ३, शुक्रे करीने युक्त के दृष्ट होय तो लक्ष्मी प्राप्त थाय ४, शनिए करीने युक्त के दृष्ट होय तो मृत्यु थाय ५, अने रविए करीने युक्त के दृष्ट होय तो अग्निनो भय थाय ६. वळी "गुरुणा सर्वपूजिता-" "चंद्र जो गुरुए करीने युक्त के दृष्ट होय तो ते प्रतिमा सर्वने पूजवा लायक थाय छे" एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे आ श्लोकमां सामान्यथी दृष्टि शब्द कह्यो छे, तोपण पुष्ट एटले संपूर्ण अथवा त्रिपाद दृष्टि जाणवी.

हवे सर्व शुभ कार्यनां लग्नोमा साधारण रीते तजवा योग्य समय छ श्लोके करीने कहे छे-

जन्मराशिं जनेर्लग्नं ताभ्यामन्त्यं तथाऽष्टमम् ।
लग्नलग्नांशयोश्चेशौ लग्नात् षष्ठाष्टमौ त्यजेत् ॥ ९९ ॥

अर्थ—जन्मनी राशिने, जन्मना लग्नने, ते बन्नेथी बारमा तथा आठमा (लग्न,) तथा लग्न अने लग्नांशना स्वामीओ जो लग्नथी छठ्ठे के आठमे होय तो तेने तजवा

जन्मनी राशिने तजवी एटले जन्मनी जे राशि होय ते राशि लग्नकुंडळीमां भुवनमां आववी न जोइए, अने ते जन्मराशि दीक्षामां शिष्यनी, प्रतिष्ठामा स्थापक अने सिद्ध ए बन्नेनी तथा विवाहमा वर अने कन्या ए बन्नेनी तजवानी छे. ए प्रमाणे आगळ पण सर्वत्र जाणवुं जन्मनुं लग्न अहीं वर्जवानुं कह्युं छे, परंतु नारचंद्रमा ते वर्ज्यु नथी. जन्मराशि अने जन्मलग्नथी बारमा तथा आठमा लग्नने अहीं वर्जवानां कह्यां छे ते प्रमाणे कोइए चोथाने पण वर्जवानुं कह्युं छे ते विषे व्यवहारप्रकाशमा कह्युं छे के—

"दम्पत्योरुपचयभं जन्मर्क्षाद्धुदयतश्च शुभलग्नम् ।
निधनं व्ययं च हिबुकं नेष्टं शेषाणि मध्यानि ॥ १ ॥"

"वर वहुनी जन्मराशिथी तथा जन्मलग्नथी उपचय (३-६-११)स्थानमां रहेली राशि जो विवाहसमये लग्नमां होय तो ते शुभ लग्न छे, अने आठमा, बारमा के चोथा स्थाननी राशि जो लग्नमा होय तो ते अशुभ छे, अने बाकीनां लग्नो मध्यम छे." तथा

"चतुर्थद्वादशे कार्ये लग्ने बहुगुणे यदि ।
अष्टमं तु न कर्तव्यं यदि सर्वगुणान्वितम् ॥ १ ॥"

"जो चोथुं अने बारमुं लग्न घणा गुणवाळुं होय तो ते करवा लायक छे-शुभ छे परतु जो आठमुं लग्न सर्व गुणे करीने युक्त होय तोपण ते करवा लायक नथी". गर्ग कहे छे विशेष ए छे जे—

"अष्टमर्क्षोदयोद्भूतदोषो नश्यति भावत· ।
लग्नेशाष्टमराशीशौ मिथो मित्रे यदा तदा ॥ १ ॥"

"जो लग्ननो स्वामी अने आठमी राशिनो स्वामी परस्पर मित्र होय तो आठमी राशिथी अने लग्ननी राशिथी उत्पन्न थयेलो दोष जावथी नाश पामे छे" एम बृहस्पति कहे छे.

"तथा चतुर्थं रिष्पं वा मित्रत्वेन शुभं स्मृतम् ।
गुरुणा भृगुणा केन्द्रत्रिकोणस्थेन चेक्षितम् ॥ १ ॥"

"तथा चोथुं अने बारमुं लग्न परस्पर मित्रपणाए करीने युक्त होय, अने केन्द्र के त्रिकोणमां रहेला गुरु के शुक्रनी तेना पर दृष्टि पमती होय तो ते शुभ कहेलुं छे" एम सारंग कहे छे. तथा—

"होराष्टमं जन्मगृहाष्टमं वा, लग्नं शुभं झेज्यसितेक्षितं चेत् ।"

"जो आठमी होरानुं लग्न होय के जन्मना स्थानथी आठमा स्थाननी राशिनुं लग्न होय, अने तेना पर जो बुध, गुरु के शुक्रनी दृष्टि पमती होय तो ते लग्न शुभ छे" एम केशव कहे छे. तथा—

"जन्मगृहजन्मभाभ्यामष्टमभवनं मृतिप्रदं लग्ने ।
व्ययहिबुककेन्द्रसंस्थैः शुभग्रहैः शोभनं बलिभिः ॥ १ ॥"

"जन्मनी राशिथी के जन्मना ग्रहथी आठमुं भवन जो लग्नमां होय तो ते मृत्यु आपनारुं छे, परंतु जो बारमा, चोथा के केन्द्रस्थानमां बळवान् शुभ ग्रहो होय तो ते शुभ छे" एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

मूळ श्लोकमां लग्नलग्नांशयोश्च ए पदमां च शब्द लख्यो छे, तेथी द्रेष्काणनो स्वामी पण लग्नथी छठे के आठमे होय तो ते पण तजवा योग्य छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"लग्नस्थेऽपि गुरौ दुष्टः षष्ठस्थो लग्ननायकः ।"

"लग्नमां गुरु रह्यो होय तोपण जो लग्ननो स्वामी छठा स्थानमां रह्यो होय तो ते दुष्ट-अशुभ छे." लक्ष्मीधर पण कहे छे के—

"विलग्नाधिपतौ षष्ठे वैधव्यं स्यात्तथांशपे ।
द्रेष्काणाधिपतौ मृत्युर्विलग्ने बलवत्यपि ॥ १ ॥"

"लग्ननो स्वामी तथा नवांशानो स्वामी जो छठे स्थाने रह्यो होय तो विधवापणुं प्राप्त थाय छे, अने द्रेष्काणनो स्वामी छठे होय तो लग्न बळवान् छतां पण मृत्यु थाय छे."

लग्ननो स्वामी आठमे स्थाने होय तो ते अशुभज छे, तेथी पण (ते करतां पण) जो आठमा भवनमां रहेलो लग्ननो स्वामी लग्नना द्रेष्काणथी बावीशमा द्रेष्काणमां होय तो ते घणोज अशुभ छे. वळी जो लग्ननो स्वामी अने आठमा भवननो स्वामी एकज द्रेष्काणमां रह्या होय तो ते करतां पण अत्यंत वधारे अशुभ छे. लग्नना, नवमांशना

सर्व कार्योमां शुभ ग्रहनी संस्था दैवज्ञवल्लभमां आ प्रमाणे कही छे.—

"लग्नादुपचयस्थे ३–६–१०–११ऽर्केऽन्त्या १२ स्त ७ कर्मा १० य ११ गे विधौ ।
क्षोणीपुत्रेऽर्कपुत्रे च दुश्चिक्य ३ रिपु ६ लाभ ११ गे ॥ १ ॥
त्यक्तरिष्या १२ ष्टमे ८ सौम्ये जीवेऽष्टा ८ रि ६ व्ययो १२ ज्झिते ।
सर्वकार्याणि सिध्यन्ति त्यक्तषट्सप्तमे सिते ॥ २ ॥"

"लग्नथी उपचय (३–६–१०–११) स्थानमां सूर्य रह्यो होय, बारमा, सातमा, दशमा अने अगीयारमा स्थानमां चंद्र रह्यो होय, मंगळ अने शनि त्रीजा, छठ्ठा अने अगीयारमा स्थानमां रह्या होय, बुध बारमा अने आठमा सिवाय बीजा कोइ पण स्थानमा रह्यो होय, गुरु आठमा, छठ्ठा अने बारमा सिवाय बीजा कोइ पण स्थानमां रह्यो होय, तथा शुक्र छठ्ठा अने सातमा स्थान सिवाय बीजा कोइपण स्थानमां रह्यो होय तो सर्व कार्यो सिद्ध थाय छे" आ उत्तम अने अशुभ (अधम) ए बे प्रकारनी संस्थाथी जे ग्रहो बाकी रह्या होय ते मध्यम सस्थामां जाणवा. यंत्र आ प्रमाणे—

	उत्तम	मध्यम.	अधम
रवि	३–६–१०–११	२–४–५–८–९–१२	१–७
चंद्र	१२–७–१०–११	३–२–४–५–९	६–८–१
मंगळ	३–६–११	२–४–५–९–१०–१२	१–७–८
बुध	१–२–३–४–५–६–७–९–१०–११	१२	८
गुरु	१–२–३–४–५–७–९–१०–११	६–१२	८
शुक्र	१–२–३–४–५–८–९–१०–११–१२	०	६–७
शनि	३–६–११	२–४–५–८–९–१०–१२	१–७
राहु	३–६–११	२–५–८–९–१०–१२	१–४–७
केतु	३–६–११	२–५–८–९–१०–१२	१–४–७

आ रीते सर्व कार्यमा सामान्य रीते ग्रहोनी संस्था छे. हवे दीक्षाना लग्नमां (विशेष) शुभ ग्रहोनी संस्थाने कहे छे.—

दीक्षायां तरणिर्धन २ त्रि ३ तनया ५ रि ६स्थः शशी द्वि २ त्रि ३ षट् ६–
व्योम १० स्थः क्षितिभूस्त्रि३षड्६दशमगो१०ऽङ्ज्यो व्यया १२ ष्टो ८ ज्झितौ
१–२–३–४–५–६–७–९–१०–११ ।
शुक्रोऽन्त्या १२ रि ६ सुत ५ त्रि ३ धर्म ९ धन २ गो मन्दो धन २ भ्रातृ३षट्६,
पुत्र५छिद्र ८ गतश्च शोभनतमः सर्वे च लाभस्थिताः ॥ ३५ ॥

अर्थ—दीक्षानी लग्नकुण्डळीमा जो सूर्य बीजे, त्रीजे, पांचमे के छठ्ठे स्थाने रह्यो ते अत्यत शुभ छे, चंद्र बीजे, त्रीजे, छठ्ठे के दशमे स्थाने रह्यो होय तो ते शुभ

मंगळ त्रीजे, छठे के दशमे स्थाने रहेलो शुभ छे, बुध तथा गुरु बारमा तथा आठमा सिवायना १–२–३–४–५–६–७–९–१०–११ स्थानोमां रहेला शुभ छे, शुक्र बारमे, छठे, पांचमे, त्रीजे, नवमे के बीजे स्थाने रहेलो शुभ छे, तथा शनि बीजे, त्रीजे, छठे, पांचमे के आठमे रहेलो शुभ छे. वळी सर्वे ग्रहो अगीयारमे स्थाने रह्या होय तो ते शुभ छे. आ सर्वे ग्रहो उपर कहेलां स्थानोमां रह्या होय तो दीक्षाना लग्नमां श्रेष्ठ होवाथी तेउ रेखा आपनारा छे एम जाणवुं. हर्षप्रकाश विगेरे ग्रंथोमां तो ग्रहोनी उत्तमादिक त्रण प्रकारनी रचना आ प्रमाणे कही छे.—

"दु पण छ रवि ति दु छ ससी कुज ति छ दह बुह ति दु छ पण दसमो ।
किंद तिकोणे य गुरू सुक्को ति अ छ नव बारसमो ॥ १ ॥
मंदो दु पण छ अट्ठमो सुक्क विणा सविगारसहा सुहया ।
चंदाउ कूर सत्तम अइअसुहा दिक्खसमयम्मि ॥ २ ॥
रवि ति ३ ससि सत्त दसमो बुहेग चउ सत्त नव गुरू ति छ दो ।
सुक्को दु पंच सणि तिअ मज्झिम सेसा असुह सवे ॥ ३ ॥"

"दीक्षाने समये रवि बीजे, पांचमे अने छठे रह्यो होय, चंद्र त्रीजे, बीजे के छठे रह्यो होय, मंगळ त्रीजे, छठे के दशमे होय, बुध त्रीजे, बीजे, छठे, पांचमे के दशमे होय, गुरु केंद्र के त्रिकोण (१–४–७–१०–९–५)स्थाने होय, शुक्र त्रीजे, छठे, नवमे के बारमे होय, शनि बीजे, पांचमे, छठे के आठमे होय तथा शुक्र विना बीजा सर्वे ग्रहो अगीयारमे स्थाने होय तो आ सर्वे शुभ (उत्तम) छे. तेमज चंद्रथी सातमे स्थाने क्रूर ग्रह रह्या होय तो ते अत्यंत अशुभ छे. तथा रवि त्रीजे स्थाने रह्यो होय, चंद्र सातमे के दशमे स्थाने होय, बुध पहेले, चोथे, सातमे के नवमे स्थाने होय, गुरु त्रीजे, छठे के बीजे स्थाने होय, शुक्र बीजे के पांचमे होय अने शनि त्रीजे स्थाने होय तो ते सर्वे मध्यम छे. बाकीना सर्वे अशुभ छे." स्थापना नीचे प्रमाणे.—

	उत्तम.	मध्यम.	अधम.
रवि	२–५–६–११	३	१–४–७–८–९–१०–१२
चंद्र	२–३–६–११	७–१०	१–४–५–८–९–१२
मंगळ	३–६–१०–११	०	१–२–४–५–७–८–९–१२
बुध	३–२–६–५–१०–११	१–४–७–९	८–१२
गुरु	१–४–७–१०–९–५–११	३–६–२	८–१२
शुक्र	३–६–९–१२	२–५	१–७–४–८–१०–११
शनि	२–५–६–८–११	३	१–४–७–९–१०–१२
राहु केतु	३–६–११	२–५–८–९–१०–१२	१–४–७

रविचन्द्रकुजैर्नीचे १ लग्नेशे शत्रुराशिगे २ ।
निर्वीर्ये चापि जामित्रे ३ युवत्या निरपत्यता ॥ ३९ ॥

अर्थ—रवि, चंद्र अने मंगळ नीचना होय तो एक योग १. लग्नना स्वामी शत्रुनी राशिमा रह्यो होय तो बीजो योग. २. अथवा सातमुं स्थान वीर्य रहित होय तो त्रीजो योग. ३. आ त्रणमांथी कोइ पण योग होय तो ते स्त्री संतति रहित थाय छे. स्वामी, सौम्य ग्रहनी युति के दृष्टिनो अभाव तथा ते ग्रहोनुं क्रूर होवापणुं ए वगेरे सातमा स्थाननुं वीर्य रहितपणुं जाणवुं.

तथा—

जामित्रेशः पतिः स्त्रीणां श्वशुरौ भृगुभास्करौ ।
तैरुच्चादिस्थितैस्तेषां श्रेयः स्यादन्यदन्यथा ॥ ४० ॥

अर्थ—जे ग्रह सातमा स्थाननो स्वामी होय ते स्त्रीनो पति जाणवो, तथा शुक्र सूर्य स्त्रीना सासु अने ससरो जाणवा आ ग्रहो उच्च विगेरे स्थाने रह्या होय तेओनुं (पति विगेरेनुं) श्रेय-शुभ थाय छे, अने अन्यथा एटले उच्चादिक स्थाने रह्या होय तो तेउनुं अश्रेय-अशुभ थाय छे.

"श्वशुरौ" एटले शुक्र सासु अने सूर्य ससरो ए बेनो एकशेष समास "श्वशुरौ" थयुं छे "तैः" एटले ते सातमा स्थाननो स्वामी विगेरे. "उच्चादि" पोताना उच्च स्थाने रह्यो होय तो दीप्त १, पोतानी राशिमा होय तो स्वस्थ २, मि स्थानमा होय तो मुदित ३, पोताना वर्गमां रह्यो होय तो शांत ४, प्रगट धारण करतो होय तो शक्त ५, पोताना नीच स्थानने उल्लंघन करीने पोताना उ स्थाननी सन्मुख थयो होय तो प्रवृद्धवीर्य ६, पोताना अंशमां रह्यो छतो ग्रहोए जोयेल होय तो अधिवीर्य ७, सूर्यथी हणायेलो होय तो विकल ८, शत्रुना स्थानमां होय तो खळ ९, ग्रहे जीतायेलो होय तो पीडित १०, अने राशिमा रह्यो होय तो दीन ११ आ प्रमाणे लल्ल कहेली ग्रहोनी अगीयार शुभ अवस्थामा रहेला सातमा स्थानना स्वामी,- शुक्र अने सूर्ये करीने ते पति, स अने ससरानुं श्रेय-शुभ थाय छे, अने अन्यथा एटले आ अवस्थामानी अशुभ स्थामां रहेला सातमा स्थानना स्वामी, शुक्र अने सूर्ये करीने अनुक्रमे ते पति, स अने ससरानुं अश्रेय थाय छे.

तथा—

लग्नोदितांशः स्वेशेन युतो दृष्टोऽथवा नृणाम् ।
तद्वज्जामित्रगः स्त्रीणामिष्टोऽनिष्टो विपर्यये ॥ ४१ ॥

अर्थ—लग्ननो उदितांश जो पोताना स्वामीए युक्त अथवा दृष्ट होय तो ते पुरुषो (वर)ने इष्ट-शुभ छे. वळी सातमा स्थानमां रहेलो पण तेज प्रमाणे होय तो ते स्त्रीओने इष्ट-शुभ छे, अने तेथी विपरीत होय तो अनिष्ट—अशुभ छे.

लग्नमां अधिकार करेलो जे उदयी नवांशो होय ते लग्नोदितांश कहेवाय छे. ते नवांशाना नामनी राशि कुंडळीमां कोइ पण स्थाने रही होय, परंतु जो ते पोताना स्वामीए युक्त अथवा दृष्ट होय तो ते लग्नोदितांश स्वेशयुतदृष्ट कहेवाय छे. ते पुरुषोने एटले वरने इष्ट छे. तथा लग्नमां रहेलो जेटलामो अंश उदयी छे तेटलामो सातमा स्थाननो अंश जो प्रथमनीज जेम एटले स्वेशयुतदृष्ट होय तो स्त्रीओने एटले कन्याने शुभ फळदायी छे; परंतु तेथी विपरीत एटले उदयी लग्नांश जो स्वेशयुतदृष्ट न होय तो पतिनुं मरण थाय छे, अने तेटलामो सातमा स्थाननो अंश जो स्वेशयुतदृष्ट न होय तो वहुनुं मरण थाय छे.

अहीं तात्पर्य आ प्रमाणे छे.—आ एक उदय अने अस्तनो प्रकार छे. ते विषे यतिवल्लभमां कह्युं छे के—

"लग्नोदिते तत्प्रभुणा नवांशे, दृष्टे युते वोदयशुद्धिरुक्ता ।
तत्सप्तमांशे तु कलत्रभाजि, स्वस्वामिनैवं कथितास्तशुद्धिः ॥ १ ॥"

"लग्ननो उदयी नवांशो जो तेना स्वामीए दृष्ट अथवा युक्त होय तो ते उदयशुद्धि कही छे, अने स्त्रीना (सातमा) स्थानने भजनारो तेनो सातमो अंश पोताना स्वामीए दृष्ट के युक्त होय तो ते अस्तशुद्धि कही छे." अहीं "तत्सप्तमांशे" तेनो सातमो अंश एम जे कह्युं छे तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे.—लग्नमां जेटलामो अंश उदय पामेलो होय तेटलामो कलत्र (स्त्री) नामना सातमा स्थाननो अंश लग्नना उदितांशथी गणीए तो सातमोज थाय छे. आ एक प्रकारनी उदयशुद्धि अने अस्तशुद्धिनी रीत छे, अने बीजी रीत आगळ कहेशे, अने ते उदयास्तशुद्धिना बन्ने प्रकारो विवाहना लग्नमां अवश्य ग्रहण करवा योग्य छे.

वळी भास्कर नामना आचार्य तो तेटलामो (जेटलामो लग्नोदितांश होय तेटलामो) पांचमा स्थानमां रहेलो पुत्र नवांशो पण स्वेशयुतदृष्ट होवो जोइए एम इच्छे छे. ते कहे छे के—

"नाथायुक्तेक्षिता लग्नभार्यापुत्रनवांशकाः ।
क्रमात् पुंस्त्रीसुतान् घ्नन्ति न घ्नन्ति युतवीक्षिताः ॥ १ ॥"

"लग्नना, स्त्रीना (सातमा स्थानना) अने पुत्रना (पांचमा स्थानना) नवांशो पोत-

पोताना स्वामीए युक्त के दृष्ट न होय तो ते अनुक्रमे पुरुष (वर)ने, वहुने अने पुत्र हणे छे, परंतु जो युक्त के दृष्ट होय तो ते तेउने हणता नथी."

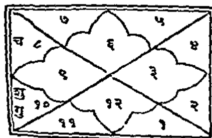
हवे नव श्लोकवडे सर्व कार्यमां साधारण एवा ग्रहसंस्थारूप शुभाशुभ योगोने कहे छे.

लाभेऽर्कारौ शुभा धर्मे श्रीवत्सो यद्यरौ शनिः १ ।
अर्धेन्दुर्विक्रमे मन्दो रविर्लाभे रिपौ कुजः २ ॥ ४२ ॥

अर्थ—जो अगीयारमा स्थानमा रवि अने मंगळ होय, नवमा स्थानमां शुभ ग्रहो (सौम्य ग्रहो) होय अने छठा स्थानमा शनि होय तो ते श्रीवत्स योग कहेवाय छे. १ अहीं "यद्यरौ" एटले "जो अरि (शत्रु) स्थानमां" एम "जो" शब्द लखवाथी आ तात्पर्य छे —जे जे ग्रहो जे जे स्थाने नियमित कर्या छे ते ते ग्रहो ते ते स्थाने होवा जोइए, अने बीजा ग्रहो गमे ते स्थाने होय तोपण आ योग थाय छे. ए प्रमाणे सर्व योगोमा जेम संभवे तेम जाणवुं. विक्रम (३) स्थानमा शनि होय, लाभ (११) स्थानमां रवि होय अने रिपु (६) स्थानमा मंगळ होय तो बीजो अर्धेन्दु नामनो योग थाय छे. २.

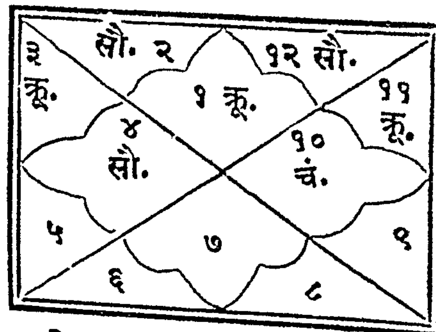
शंखः शुभग्रहैर्बन्धुधर्मकर्मस्थितैर्भवेत् ३ ।
ध्वजः सौम्यैर्विलग्नस्थैः क्रूरैश्च निधनाश्रितैः ४ ॥ ४३ ॥
गुरुर्धर्मे व्यये शुक्रो लग्ने ज्ञश्चेत्तदा गजः ५ ।
कन्यालग्नेऽलिगे चन्द्रे हर्षः शुक्रेज्ययोर्मृगे ६ ॥ ४४ ॥

अर्थ—बंधु (४) स्थानमां, धर्म (९) स्थानमा अने कर्म (१०) स्थानमां शुभ ग्रहो रह्या होय तो शख योग थाय छे ३ लग्नमां सौम्य ग्रहो रह्या होय अने निधन (८) स्थानमां क्रूर ग्रहो रह्या होय तो ध्वज योग थाय छे ४ धर्म (९) स्थानमा गुरु रह्यो होय, व्यय (१२) स्थानमां शुक होय अने लग्नमा बुध होय तो गज योग थाय छे ५ कन्या राशिनुं लग्न होय, अने वृश्चिक (८) राशिमां चंद्र रह्यो होय, तथा मकर राशिमां शुक्र अने गुरु रहेला होय तो हर्ष योग थाय छे ६. अहीं हर्ष योगमा कन्या लग्ननो नियम करवाथी एवु जणावे छे के बीजा योगोमां लग्नमो कांइ पण नियम नथी. हर्ष योगनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—



धनुरष्टमगैः सौम्यैः पापैर्व्ययगतैर्भवेत् ७ ।
कुठारो भार्गवे षष्ठे धर्मस्थेऽर्के शनौ व्यये ८ ॥ ४५ ॥
मुशलो(लं)बन्धुगे भौमे शनावन्त्येऽष्टमे विधौ ९ ।
चक्रं च प्राचि चक्रार्धे चन्द्रात् पापशुभैः क्रमात् १० ॥ ४६ ॥

अर्थ—आठमा स्थानमां सौम्य ग्रहो रह्या होय, अने बारमा स्थानमां पाप ग्रहो रह्या होय तो धनुष् योग थाय छे. ७. छठ्ठा स्थाने शुक्र होय, धर्म (९) स्थाने सूर्य होय अने बारमे स्थाने शनि होय तो कुठार योग थाय छे. ८. बंधु (४) स्थाने मंगळ होय, बारमे स्थाने शनि होय अने आठमे स्थाने चंद्र होय तो मुशळ योग थाय छे. ९. चंद्र (कुंडळी)ना पूर्व अर्ध भागमां प्रथम चंद्र अने त्यारपछी पाप ग्रह अने शुभ ग्रह एवा क्रमथी चंद्र योग थाय छे. १०. एटले के लग्नना जेटला नवांशो उदित होय तेटला दशमा स्थानना नवांशोनी पछी प्रदक्षिणाने क्रमे गमन करतां (जतां) चोथा स्थानना तेटलाज अंशो सुधी चक्र (कुंडळी)नो पूर्वार्ध कहेवाय छे. ते पूर्वार्धमां प्रथम चंद्र मूकवो, अने त्यारपछीनां स्थानोमां प्रथम पाप ग्रह अने त्यारपछीना स्थानमां शुभ ग्रह मूकवो. ए अनुक्रमे ग्रहोनी संस्थाने विषे चक्र योग थाय छे. चक्र योगनी स्थापना—



कूर्मः पुत्रा ५ र्थ २ रन्ध्रा ८ न्त्ये १२ ष्वारमन्देन्दुभास्करैः ११
वापी पापैस्तु केन्द्रस्थै १२ र्योगाः स्युर्द्वादशेत्यमी ॥ ४७ ॥

अर्थ—पांचमा स्थानमां मंगळ, बीजा स्थाने शनि, आठमा स्थाने चंद्र अने बारमा स्थाने सूर्य होय तो कूर्म योग थाय छे. आ प्रमाणे आ कूर्म योगमां स्थानोनो अने ग्रहोनो अनुक्रम जाणवो. ११. तथा केन्द्रमां पाप ग्रहो रह्या होय तो वापी नामनो योग थाय छे. १२. आ रीते आ बार योगो थाय छे.

रत्नमाळामां गज विगेरे चार योगोनुं लक्षण आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"तनुनवभवगैः क्रमेण योगो, बुधविबुधार्चितपङ्क्तिभिर्गजः स्यात् १ ।
व्ययरिपुहिबुकेषु वक्रशुक्रद्युमणिसुतैः क्रमशः कुठार एषः २ ॥ १ ॥

रविकविरविजेन्दुभिः क्रमेण, व्ययधनपङ्गनिधनेषु कूर्म एषः ३ ।
व्ययनिधनतनूषु मन्दचन्द्रारुणकिरणैर्मुशलं जगुर्मुनीन्द्राः ४ ॥ २ ॥"

"पहेला स्थानमा बुध, नवमा स्थानमां गुरु अने अगीयारमा स्थानमां पंगु (शनि) रह्यो होय तो गज योग थाय छे. १. बारमा स्थानमां शनि, छठ्ठा स्थानमां शुक्र अने चोथा स्थानमां बुध रह्यो होय तो कुठार योग थाय छे. २ बारमा स्थानमां सूर्य, बीजा स्थानमां शुक्र, छठ्ठा स्थानमां शनि अने आठमा स्थानमा चंद्र होय तो कूर्म योग थाय छे ३. बारमा स्थानमा शनि, आठमा स्थानमां चंद्र अने पहेला स्थानमां सूर्य होय तो मुशळ योग थाय छे. ४ एम मुनींद्रो कहे छे."

एन्यः श्रीवत्सपूर्वाः षट् पूर्वे सर्वेषु कर्मसु ।
श्रेयस्तमा धनुर्मुख्यास्त्वन्यथा स्युः परुत्तरे ॥ ४८ ॥

अर्थ—आ बारे योगमांना श्रीवत्सादिक पहेला छ योगो सर्व कार्यमा अत्यंत शुभ छे, अने धनुष् विगेरे बाकीना छ योगो अन्यथा एटले अत्यंत अशुभ छे. विशेष आ प्रमाणे छे-

"उदयट्ठमगे मम्मं १ नवपंचमि कूरकंटयं भणियं २ ।
दसमचउत्थे सल्लं ३ कूरा उदयत्थिअं छिद्दं ४ ॥ १ ॥
मम्मदोसेण मरणं कंटयदोसेण कुलक्खओ होइ ।
सल्लेण रायसत्तू छिद्दे पुत्तं विणासेइ ॥ २ ॥"

"क्रूर ग्रहो पहेले अने आठमे स्थाने रह्या होय तो मर्म नामनो दोष थाय छे. १. नवमे अने पाचमे स्थाने रह्या होय तो क्रूरकटक कह्यो छे २. दशमे अने चोथे स्थाने रह्या होय तो शल्य थाय छे ३ अने पहेले तथा सातमे स्थाने रह्या होय तो छिद्र दोष थाय छे. ४ मर्म दोषे करीने पोतानुं मरण थाय छे, कंटक दोषे करीने कुळनो क्षय थाय छे, शल्य दोषे करीने राजा शत्रुरूप थाय छे, अने छिद्र दोष होय तो पुत्रनो विनाश थाय छे" एम पूर्णभद्र कहे छे

आनन्द १ जीव २ नन्दन ३ जीमूत ४ जय ५ स्थिरा ६ मृता ७ योगाः ।
ज्ञगुरुसितैः प्रत्येकं द्विकत्रिकैश्चापि लग्नगतैः ॥ ४९ ॥

अर्थ—बुध, गुरु अने शुक्र ए दरेक दरेक, बबे अने त्रणे लग्नमा रह्या होय तो तेणे करीने अनुक्रमे आनंद १, जीव २, नदन ३, जीमूत ४, जय ५, स्थिर ६ अने अमृत ७, ए सात योग थाय छे

लग्नमा रहेला दरेक बुध, गुरु अने शुक्रे करीने अनुक्रमे आनंदादिक त्रण योग थाय (एटले के लग्नमा बुध होय तो आनंद १, गुरु होय तो जीव २, अने शुक्र

तो नंदन ३ योग थाय छे,) लग्नमां बुध अने गुरु रह्या होय तो जीमूत ४ योग थाय छे, बुध अने शुक्र होय तो जय ५ योग थाय छे, गुरु अने शुक्र होय तो स्थिर ६ योग थाय छे, तथा लग्नमां बुध, गुरु अने शुक्र त्रणे रह्या होय तो अमृत ७ योग थाय छे. अहीं द्विकनो अर्थ बबे अने त्रिकनो अर्थ त्रण थाय छे.

योगा यथार्थनामानः सर्वेषूत्तमकर्मसु ।
ऐश्वर्यराज्यसाम्राज्यविधातारः क्रमादमी ॥ ५० ॥

अर्थ—आ साते योगो सर्व उत्तम कार्यमां यथार्थ नामवाळा होवाथी शुभ छे, तथा आ योगो अनुक्रमे ऐश्वर्य, राज्य अने साम्राज्यने करनारा छे. राजाओने जे शासन करे ते सम्राट् कहेवाय छे, तेथी साम्राज्यनो अर्थ चक्रवर्तीपणुं थाय छे. अनुक्रमे ऐश्वर्यादिकने करनारा छे एटले के एक एक ग्रहवाळो योग होय तो ऐश्वर्य आपे, बबे ग्रहनो योग होय तो राज्य आपे, अने त्रणे ग्रहनो योग होय तो साम्राज्य आपे. आ रीते सर्व (१२-४-७) मळीने त्रेवीश योग थाय छे.

हवे प्रतिष्ठाना लग्नमां रेखाने आपनारी ग्रहसंस्था कहे छे.—

प्रतिष्ठायां श्रेष्ठो रविरुपचये ३-६-१०-११ शीतकिरणः,
स्वधर्माढ्ये तत्र २-३-६-९-१०-११ क्षितिजरविजौ त्र्यायरिपुगौ ३-११-६ ।
बुधस्वर्ग्याचार्यौ व्ययनिधनवर्जौ १-२-३-४-५-६-७-९-१०-११भृगुसुतः,
सुतं यावल्लग्नान्नवमदशमायेष्वपि तथा१-२-३-४-५-९-१०-११ ॥ ५१ ॥

अर्थ—प्रतिष्ठामां सूर्य जो उपचय (३-६-१०-११)स्थानमां रह्यो होय तो ते श्रेष्ठ छे. चंद्र धन (२) अने धर्म (९) स्थान सहित पूर्वनां स्थानोमां (२-३-६-९-१०-११) रह्यो होय तो ते श्रेष्ठ छे. मंगळ अने शनि त्रि, आय अने रिपु (३-११-६) स्थानमां श्रेष्ठ छे. बुध अने गुरु व्यय (१२) तथा निधन (८) ए बे स्थान सिवाय बाकीनां (१-२-३-४-५-६-७-९-१०-११) स्थानोमां श्रेष्ठ छे. तथा शुक्र लग्नथी सुत (पांचमा) भुवन सुधी (१-२-३-४-५) तथा नवमा, दशमा अने अगीयारमा स्थाने रहेलो श्रेष्ठ छे.

वळी त्रिविक्रमे भंग देनारा ग्रहो आ प्रमाणे कह्या छे.—

“लग्नमृत्युसुतास्तेषु पापा रन्ध्रे शुभाः स्थिताः ।
त्याज्या देवप्रतिष्ठायां लग्नषष्ठाष्टगः शशी ॥ १ ”

"पाप ग्रहो एटले रवि, मंगळ, शनि अने राहु जो पहेला, आठमा, पांचमा सातमा स्थानमां रह्या होय, शुभ ग्रहो आठमा स्थानमां रह्या होय, अने चंद्र पहेला, छठ्ठा के आठमा स्थानमां रह्यो होय तो आ रीतनी ग्रहसंस्था देवनी प्रतिष्ठामा तजवा योग्य छे" आथी करीने एक पण ग्रह भंग देनारा स्थानमां रह्यो होय तो रेखाए करीने अधिक एवा पण लग्नने विषे प्रतिष्ठा करवी नहीं, परंतु भंग देनार स्थान एक पण न होय अने केटलाक ग्रहो इष्ट होय तथा केटलाक ग्रहो अनिष्ट होय तोपण रेखाए करीने अधिक एवा लग्नने विषे प्रतिष्ठा करवी. वळी केटलाक आचार्योए "छठ्ठो चंद्र प्रतिष्ठामा रेखा आपनार छे" एम कह्युं छे, ते अमुक प्रकारना योगने आश्रीनेज कह्युं छे, अन्यथा प्रकारे ते रेखा आपनार थतो नथी एम जाणवुं आ प्रमाणे त्रिविक्रमशतकनी टीकामां कह्युं छे.

वळी नारचंद्रमा तो उत्तम १, मध्यम २, विमध्यम ३ अने अधम ४ ए रीते ग्रहोनी चार भंगी कही छे. ते आ प्रमाणे —

"त्रिरिपा १ चासुतसे २ स्वत्रिकोणकेन्द्रे ३ विरैस्मरेऽन्त्रा ४ स्त्र्यर्थे ५ ।
लाभे ६ क्रूर १ बुधा २ चिंत ३ भृगु ४ शशि ५ सर्वे ६ क्रमेण शुभाः ॥ १ ॥"

"क्रूर ग्रहो (रवि, मंगळ, शनि, राहु) त्रीजे तथा छठ्ठे स्थाने शुभ छे बुध पहेलेथी सुत स्थान सुधी (१–२–३–४–५) तथा ख (१०) स्थानमां शुभ छे गुरु स्व (२), त्रिकोण (९–५) अने केन्द्र (१–४–७–१०) स्थानमां शुभ छे शुक्र उपरनां सा[illegible] स्थानो (२–९–५–१–४–७–१०)मांथी धन (२) अने स्मर (७) स्थान रहि[illegible] एटले ९–५–१–४–१० ए पाच स्थानोमां शुभ छे चद्र अग्नि (३) अने अर्थ (२ स्थानोमा शुभ छे तथा सर्वे ग्रहो लाभ (११) स्थानमां शुभ छे." वळी

"खेऽर्कः केन्द्रारिधर्मेषु शशी ज्ञोऽरिनवास्तगः ।
षष्ठेज्यः स्वत्रिग. शुक्रो मध्यमाः स्थापनक्षणे ॥ २ ॥
आरेन्द्वर्काः सुतेऽस्तारिरिष्ये शुक्रस्त्रिगो गुरुः ।
विमध्यमा. शनिर्धीखे सर्वे शेषेषु निन्दिताः ॥ ३ ॥ "

"दशमे स्थाने रहेलो सूर्य, केन्द्र (१–४–७–१०), अरि (६) अने धर्म (९) स्थाने रहेलो चद्र, छठ्ठे, सातमे अने नवमे स्थाने बुध होय, छठ्ठे स्थाने गुरु होय, शुक्र बीजे के त्रीजे स्थाने होय तो ते प्रतिष्ठाने समये मध्यम छे. मंगळ, चंद्र अने सूर्य पांचमे स्थाने रह्या होय, शुक्र छठ्ठे, सातमे के बारमे स्थाने होय, गुरु त्रीजे स्थाने होय, [illegible] के दशमे स्थाने होय तो ते विमध्यम जाणवा शेष स्थानोमां सर्वे ग्रहो

प्रतिष्ठाने विषे ग्रहसंस्थानो यंत्र.

	उत्तम.	मध्यम.	विमध्यम.	अधम.
रवि	३-६-११	१०	५	१-२-४-७-८-९-१२
चंद्र	२-३-११	१-४-६-७-९-१०	५	८-१२
मंगळ	३-६-११	०	५	१-२-४-७-८-९-१०-१२
बुध	१-२-३-४-५-१०-११	६-७-९	०	८-१२
गुरु	१-२-४-५-९-७-१०-११	६	३	८-१२
शुक्र	१-४-५-९-१०-११	२-३	६-७-१२	८
शनि	३-६-११	०	५-१०	१-२-४-७-८-९-१२
रा.के.	३-६-११	२-४-५-८-९-१०-१२	०	१-७

पूर्वोक्त ग्रहसंस्थाना फळने आ प्रमाणे कहे छे.—

"प्रासादभंग १ हानी २ धनं ३ स्वजन ४ पुत्रपीड ५ रिपुघाताः ६ ।
स्त्रीमृति ७ मृति ८ धर्मगमाः ९ सुख १० र्द्धि ११ शोका १२ स्तनोः प्रभृति सूर्यात् ॥ १ ॥"

"प्रतिष्ठा लग्नमां जो सूर्य पहेले स्थाने रह्यो होय तो प्रासादनो नाश थाय १, बीजे होय तो हानि थाय २, त्रीजे होय तो धन मळे ३, चोथे होय तो स्वजनने पीडा थाय ४, पांचमे होय तो पुत्रपीडा थाय ५, छठे होय तो शत्रुनो नाश थाय ६, सातमे होय तो स्त्रीनुं मरण थाय ७, आठमे होय तो पोतानुं मरण थाय ८, नवमे होय तो धर्मनो नाश थाय ९, दशमे होय तो सुख मळे १०, अगीयारमे होय तो ऋद्धि मळे ११ अने बारमे होय तो शोक थाय १२."

"कर्तृविनाश १ धनागम २ सौभाग्य ३ द्वन्द्व ४ दैन्य ५ रिपुविजयाः ६ ।
शशिनोऽसुख ७ मृति ८ विघ्ना ९ नृपपूजा १० विषय ११ वसुहानी १२ ॥ २ ॥"

"चंद्र पहेले स्थाने होय तो प्रतिष्ठा करनारनो नाश थाय १, बीजे होय तो धननी प्राप्ति थाय २, त्रीजे होय तो सौभाग्य थाय ३, चोथे होय तो युद्ध थाय ४, पांचमे होय तो दीनता थाय ५, छठे होय तो शत्रुनो जय थाय ६, सातमे होय तो असुख थाय ७, आठमे होय तो मरण थाय ८, नवमे होय तो विघ्न थाय ९, दशमे होय तो राजाथी सन्मान मळे १०, अगीयारमे होय तो विषयविकारनी हानि थाय ११ अने बारमे होय तो धननी हानि थाय १२."

"दहनं १ सुरगृहभंगो २ भूलाभो ३ रोग ४ पुत्रशस्त्रमृती ५ ।
रिपु ६ नारी ७ स्वजन ८ गुणभ्रंशा ९ रोगा १० र्थ ११ हानयो १२ भौमात् ॥ ३ ॥"

"मंगळ पहेले स्थाने होय तो प्रासाद बळी जाय १, बीजे होय तो देवनो प्रासाद भांगी जाय २, त्रीजे होय तो पृथ्वीनो लाभ थाय ३, चोथे होय तो रोग थाय ४,

"बुध लग्नमां रह्यो होय, अथवा गुरु चतुष्टय (१-४-७-१०) स्थानमां रह्यो होय अने शुक्र हिबुक (४) स्थानमां रह्यो होय त्यारे इन्द्र, कार्तिकस्वामी, यक्ष, चंद्र अने सूर्यनी प्रतिष्ठा करवी."

"यस्य ग्रहस्य यो वर्गस्तेन युक्ते निशाकरे ।
प्रतिष्ठा तस्य कर्तव्या स्वस्ववर्गोदयेऽपि वा ॥ ६ ॥"

"जे ग्रहनो जे वर्ग होय ते वर्गे करीने युक्त चंद्र होय त्यारे ते ग्रहनी प्रतिष्ठा करवी, अथवा पोतपोताना वर्गनो उदय होय त्यारे करवी."

"अस्मात्कालाद्भ्रष्टास्ते कारकसूत्रधारकर्तॄणाम् ।
क्षयमरणबन्धनामयविवादशोकादिकर्तारः ॥ ७ ॥"

"आ उपर कहेला समयथी रहित काळे प्रतिष्ठा करी होय तो ते ते देवो करावनार, सुथार अने करनारना क्षय, मरण, बंधन, व्याधि, विवाद अने शोक विगेरेने करनारा थाय छे"

विशेष ए छे जे—रेखा आपनारा दरेक ग्रहोए करीने सर्व कार्योमां वीश विशोपक-वाळुं लग्न थाय छे ते आ प्रमाणे.—

"अद्धुठ विसा रविणो पण ससिणो तिन्नि हुंति तह गुरुणो ।
दो दो बुहसुक्काणं सड्ढा सणिभोमराहूणं ॥ १ ॥"

"सूर्यना साडा त्रण वसा, चंद्रना पांच वसा, गुरुना त्रण, बुधना तथा शुक्रना बबे अने शनि, मंगळ तथा राहुना दोढ दोढ वसा होय छे." आ सर्व मळीने वीश वसा एटले विशोपक थाय छे"

हवे प्रतिष्ठाना लग्नमा विशेष कहे छे.

बलहीनाः प्रतिष्ठायां रवीन्दुगुरुभार्गवाः ।
गृहेश १ गृहिणी २ सौख्य ३ स्वानि ४ हन्युर्यथाक्रमम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—जो प्रतिष्ठामा सूर्य, चंद्र, गुरु अने शुक्र बळहीन होय तो तेओ अनुक्रमे घरना स्वामीने, तेनी स्त्रीने, सुखने तथा धनने हणे छे, एटले के सूर्य बळहीन होय तो घरना स्वामीनो नाश थाय छे, चंद्र बळहीन होय तो तेनी स्त्रीनो नाश थाय छे विगेरे अहीं बळहीन एटले पहेला अढार प्रकारे अथवा नव प्रकारे ग्रहोनी निर्बळता कही छे ते जाणवी. अथवा तो नीच, क्रूर ग्रहे युक्त के अस्त पामेलो जे ग्रह होय ते निर्बळज कह्यो छे

तथा—

तनु १ बन्धु ४ सुत ५ द्यून ७ धर्मेषु ९ तिमिरान्तकः ।
सकर्मसु १० कुजार्की च संहरन्ति सुरालयम् ॥ ५३ ॥

अर्थ—पहेला, चोथा, पांचमा, सातमा के नवमा स्थानमां जो सूर्य रह्यो होय अने उपरनां (पांच) स्थानोमां के दशमा स्थानमां मंगळ के शनि रह्यो होय तो ते देवालयनो नाश करे छे.

हवे सर्व कार्यमां शुभ ग्रहोनी शक्ति तथा तेना फळने कहे छे.—

सौम्यवाक्पतिशुक्राणां य एकोऽपि बलोत्कटः ।
क्रूरैरयुक्तः केन्द्रस्थः सद्योऽरिष्टं पिनष्टि सः ॥ ५४ ॥

अर्थ—बुध, गुरु अने शुक्रमांनो कोइ पण एक बलोत्कट (बलिष्ठ) होय तेमज क्रूर ग्रह तेनी साथे रहेलो न होय अने ते पोते केंद्रस्थानमां रह्यो होय तो ते तत्काळना रिष्ट योगनो नाश करे छे.

अहीं बलोत्कट कह्यो छे, तेथी ग्रहोने विषे वीश प्रकारे बळ कहेलुं छे. ते आ प्रमाणे.—

"स्व १ मित्र २ र्क्षो ३ च्च ४ मार्गस्थ ५ स्व ६ मित्रवर्गगो ७ दितः ८ ।
जयी ९ चोत्तरचारी च १० सुहृ ११ त्सौम्यावलोकितः १२ ॥ १ ॥
त्रिकोण १३ यगतो लग्नात् १४ हर्षी १५ वर्गोत्तमांशगः १८ ।
मुथुशिलं १९ मूशरिफं २० यदि सौम्यैर्ग्रहैः सह ॥ २ ॥
सर्वयोगे भवेदेवं बलानां विंशतिर्ग्रहे ।
यावद्बलयुताः खेटास्तावद्विशोपकाः फलम् ॥ ३ ॥"

"ग्रह पोताना स्थानमां रहेलो होय १, मित्रना स्थानमां रहेलो होय २, पोताना नक्षत्रमां रहेलो होय ३, उच्च स्थाने रहेलो होय ४, मार्गमां रहेलो (मार्गी) होय ५, पोताना वर्गमां रहेलो होय ६, मित्रना वर्गमां रहेलो होय ७, उदय पामेलो होय ८, जयवाळो होय ९, उत्तरचारी होय १०, मित्रे जोयेलो होय ११, सौम्य ग्रहे जोयेलो होय १२, त्रिकोणमां रहेलो होय १३, लग्नथी अगीयारमे स्थाने रहेलो होय १४, त्रण प्रकारनो हर्षी होय १५, वर्गोत्तमना नवांशकमां रहेलो होय १८, सौम्य ग्रहनी साथे [1]मुथुशिल योग होय १९, सौम्य ग्रहनी साथे [2]मूशरिफ योग होय २०, आ सर्व योग थाय तो ग्रहने विषे वीश वसा बळ थाय. जेटला बळवाळा ग्रहो होय तेटला विशोपका (वसा) फळ जाणवुं."

उपर त्रण प्रकारनो हर्षी ग्रह कह्यो छे. तेमां ग्रहोनुं हर्षस्थान चार प्रकारे कहेलुं छे ते आ प्रमाणे.—

"गो ९ त्र्य ३ ङ्गै ६ का १ य ११ धी ५ रिष्य १२ स्थानानि भास्करादिषु ।
हर्षस्थानमिदं पूर्वं १ सर्वेषु स्वोच्चभं परम् ॥ १ ॥

---

१ 'मुथुशिल, २ मूशरिफ, आ बे योगनुं स्वरूप चतुर्थ प्रकाशना ४७ श्लोकना अर्थमां छे.

पण जोडवां—जाणवां. दोषो एटले पादगत वेध, क्रांतिसाम्य विगेरे असाध्य दोषो सिवायना बीजा दोषोने हणे छे एम पोतानी मेळे जाणवुं. वळी एंशी, सो अने हजार एवा शब्दो अहीं लख्या छे ते घणा, अतिघणा अने तेथी पण घणा जाणवा, परतु कहेली संख्यावाळाज न जाणवा. अभिप्राय ए छे के बुध, गुरु अने शुक्र बलिष्ठ अने पोताना उच्च स्थानमां रहेला होय तो प्रतिष्ठादिक कार्य करवुं शुभ छे. एज प्रमाणे आगळ पण जाणवुं.

आ त्रणे ग्रहो केंद्रमां रह्या होय तो तेनी केटली शक्ति होय ते कहे छे—

बुधो विनार्केण चतुष्टयेषु, स्थितः शतं हन्ति विलग्नदोषान् ।
शुक्रः सहस्रं विमनोभवेषु, सर्वत्र गीर्वाणगुरुस्तु लक्षम् ॥ ५६ ॥

अर्थ—सूर्यनी साथे नहीं रहेलो बुध चारमांथी कोइ पण केंद्रस्थानमा रह्यो होय तो ते लग्नना सो दोषोने हणे छे, सूर्य विनानो शुक्र सातमा सिवाय बाकीना कोइ पण केंद्रस्थानमा रह्यो होय तो ते लग्नना हजार दोषोने हणे छे अने सूर्य विनानो गुरु सर्वत्र एटले चारमांना कोइ पण केंद्रस्थानमां रह्यो होय तो ते लग्नना लाख दोषोने हणे छे.

विनाऽर्केण सूर्य विना ए पद त्रणेनी साथे जोडवुं विमनोभवेषु एटले सातमा स्थानने वर्जीने बाकीना केन्द्रस्थानोमां. सर्वत्र एटले केंद्रना चारे स्थानोमा. रत्नमालाना भाष्यमां विमनोभवेषु ए पद त्रणे ग्रहोने विषे जोड्युं छे ते विवाह अने दीक्षाने आश्रीने अहीं पण अवश्य जोडवु, केमके "विवाहदीक्षयोर्लग्ने द्यूनेन्दुग्रहवर्जितौ ।" "विवाह अने दीक्षाना लग्नमां सातमुं तथा चंद्रनु स्थान ए बे स्थान ग्रहरहित होवा जोइए" एम कह्युं छे मूळमां लाख दोषोने हणवानुं कह्युं ते विषे कह्युं छे के—

"तिथिवासरनक्षत्रयोगलग्नक्षणादिजान् ।
सबलान् हरतो दोषान् गुरुशुक्रौ विलग्नगौ ॥ १ ॥
त्रिकोणकेन्द्रगा वाऽपि भङ्गं दोषस्य कुर्वते ।
वक्रनीचारिगा वाऽपि ज्ञजीवभृगवः शुभाः ॥ २ ॥"

"लग्नमां रहेला गुरु अने शुक्र तिथि, वार, नक्षत्र, योग, लग्न अने मुहूर्त्तथी उत्पन्न थयेला बळवान् दोषोने (पण) हणे छे बुध, गुरु अने शुक्र जो त्रिकोण के केंद्रमा रह्या होय तो ते दोषनो नाश करे छे, तथा ते बुध, गुरु अने शुक्र वक्र होय नीचना होय अथवा शत्रुना स्थानमा रहेला होय, परतु शुभ होय, तो ते पण दोषनो नाश करे छे" अहीं "शुभ होय तो" एम जे कह्युं तेनो भावार्थ आ प्रमाणे छे.—

"वक्रारिनीचराशिस्थः शुभकृत्प्रोच्यते गुरुः ।
स्वोच्चायस्थः स्ववर्गस्थो भृगुणा ज्ञेन वा युतः ॥ १ ॥"

"जो गुरु वक्री होय, नीच स्थानमां रह्यो होय अथवा शत्रुना स्थानमां रह्यो होय, परंतु पोताना उच्च अंशमां रह्यो होय, पोताना वर्गमां रह्यो होय अने शुक्र के बुधनी साथे रह्यो होय तो ते शुभ कहेवाय छे" एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

विशेष ए छे के—अहीं दोषो बे प्रकारना जाणवा. तेमां केटलाक दोषो पोते एकलाज लग्नने हणे छे—दूषित करे छे, अने केटलाक बे त्रण मळीनेज लग्नने हणे छे, पण एकला हणी शकता नथी. तेमां एकला दोषो आ प्रमाणे छे.—

दीक्षामां पूर्णिमा तिथि १, प्रतिष्ठामां मंगळवार २, प्रतिष्ठादिकमां गुरुने चंद्रनुं बळ न होय ते ३, शिष्य अने स्थापकने गुरु, चंद्र अने सूर्य ए त्रणेनां बळ होवां जोइए ते न होय ते ४, विवाहमां वरने चंद्रनुं बळ न होय ते ५, कन्याने गुरु, चंद्र अने सूर्य ए त्रणेनां बळ होवां जोइए ते न होय ते ६, शिष्य, स्थापक, वर अने कन्याने जन्मनी राशिनुं लग्न १०, ते चारेने जन्मलग्ननुं लग्न होय ते १४, तथा ते चारेने जन्मराशिथी आठमुं लग्न १८, जन्मलग्नथी आठमुं लग्न २२, जन्मराशिथी बारमुं लग्न २६, अने जन्मलग्नथी बारमुं लग्न ३०, तेज शिष्यादिक चारेने जन्मनी राशिथी आठमा स्थानमां रहेला ग्रहोनुं तात्कालिक लग्नमां (लग्नकुंडळीमां) पहेला भवनमां रहेवापणुं ३४, अथवा जन्मलग्नथी आठमा स्थानमां रहेला ग्रहोनुं तात्कालिक लग्नमां पहेला भवनमां रहेवापणुं ३८, ते चारेनां जन्मनक्षत्रो ४२, प्रतिष्ठादिक सर्व कार्यना लग्नमां क्रूर ग्रहोए भोगवीने मूकेलुं ४३, भोग्य (भोगववानुं) ४४, अने आक्रमण करेलुं नक्षत्र, ४५ अथवा ग्रहविद्ध नक्षत्र ४६, ग्रहभिन्न (ग्रहे भेदेलुं) नक्षत्र ४७, ग्रहोना उदयवडे दूषित थयेलुं ४८, तथा अस्तवडे दूषित थयेलुं ४९, वक्र ग्रहे आक्रमण करेलुं ५०, उल्कापात विगेरे उत्पातथी दूषित थयेलुं नक्षत्र ५१, लग्नगंडांत ५२, तिथिगंडांत ५३, नक्षत्रगंडांत ५४, एकार्गल ५५, विष्टि ५६, व्यतिपात ५७, वैधृत ५८, क्रांतिसाम्य ५९, संक्रांतिनी पूर्वनी तथा पछीनी सोळ घडीओ ६०, अर्धयाम ६१, कुलिक ६२, ग्रहणनुं नक्षत्र ६३, ग्रहणथी दूषित थयेला दिवसो ६४, लग्नथी ६५ चंद्रथी ६६ के ते बन्नेथी ६७ सातमे स्थाने रहेलो क्रूर ग्रह, ते त्रणेथी सातमे स्थाने रहेलो शुक्र ७०, अशुभ वार तथा होरा ७१, अशुभ स्थाने रहेला ग्रहो ७२, भावरीतिथी पण निषिद्ध स्थानमां आवता ग्रहो ७३, लग्ननी ७४, चंद्रनी अथवा ते बन्नेनी ७६ आगळ पाछळना पंदर त्रिंशांशनी मध्ये बे क्रूर ग्रहो आववाथी क्रूर कर्तरी थाय छे ते, लग्ननो स्वामी ७७, नवांशानो स्वामी ७८ अथवा ते बन्ने ७९ भावे करीने छठ्ठा होय ते, अथवा ते त्रणे भावे करीने आठमा होय ते ८२, नहीं कहेलो नवांशक ८३, आश्रितपणाए करीने

१ जे वखते कार्य करवुं होय तेज वखते.

चंद्रथी अशुद्ध थयेलुं लग्न ७४, के क्रूर ग्रहथी अशुद्ध थयेलुं लग्न ७५, अथवा तेमनो नवांशक ७७, उदयनी अशुद्धि ७८ तथा अस्तनी अशुद्धि ७९.

"एषां मध्यादेकेनापि हि दोषेण दूष्यते लग्नम् ।
त्रिभिर्दोषैर्मिलितैर्येन शुभं तानथो वक्ष्ये ॥ १ ॥"

"आ उपर गणावेला दोषोमांना एक दोषे करीने पण लग्न दूषित थाय छे. हवे ...ओ मळीने लग्नने अशुभ करे छे ते दोषोने हुं कहीश—कहुं छुं"

"जे लग्नने विषे चंद्रनी ... ...स्था १ यमाहिरक्षोऽग्निपः क्षणो यत्र २ । स्वामी होय २, तथा मरणावस्था होय १, ज मुहूर्त्तमशुभाय ॥ २ ॥" अवम (क्षय) अथवा त्रण दिवसने स्पर्श ... राक्षस के अ तिथि होय तो ते लग्न अशुभने माटे छे."

"पापग्रहलत्ता १ चेदुपग्रहः २ स्याद्वरायुधः पातः ३ ।
ज्ञात्वैवं त्रिभिरेतैर्भवेत्तदा लग्नमशुभाय ॥ ३ ॥"

"जो पाप (दुष्ट) ग्रहनी लत्ता होय १, उपग्रह होय २ तथा श्रेष्ठ आयुधवाळो पात होय ३, आ प्रमाणे आ त्रण कुयोगोवडे दूषित थयेलुं लग्न होय तो ते अशुभने माटे छे."

"द्विव्ययगाश्चेत्क्रूराः १ सौम्यानां केन्द्रसंस्थितिर्न भवेत् २ ।
लग्नपतिर्दुष्टयुतो ३ भवेत्तदा लग्नमशुभाय ॥ ४ ॥"

"जो क्रूर ग्रहो बीजा के बारमा स्थानमां रह्या होय १, सौम्य ग्रहो केंद्रस्थानमां रहेला न होय २ अने लग्ननो स्वामी दुष्ट (क्रूर) ग्रहनी साथे रहेलो होय ३ तो ... लग्न अशुभने माटे छे"

"शुभदृग्हीनं लग्नं १ प्रसूतिभं नो शुभैर्युतं दृष्टम् २ ।
केन्द्रस्थाश्चेन्न शुभा ३ भवेत्तदा लग्नमशुभाय ॥ ५ ॥"

"जो शुभ ग्रहनी दृष्टि रहित लग्न होय १, जन्मनी राशि शुभ ग्रहोए सहित के दृष्ट न होय २ तथा केंद्रस्थानमां शुभ ग्रहो न होय ३ तो ते लग्न अशुभने माटे छे" अहीं प्रसूतिभं एटले शिष्य, स्थापक, कन्या अने वरनी जन्मराशि शुभ ग्रहोए युक्त अथवा दृष्ट न होय एम जाणवुं

"रविजीवौ समरेखौ शुद्धौ १ लग्नेऽपि मध्यभावफलौ २ ।
केन्द्रगतौ नो सौम्यौ ३ भवेत्तदा लग्नमशुभाय ॥ ६ ॥"

"जो सूर्य अने गुरु शुद्धिने विषे सम रेखावाळा होय १ अने लग्नने विषे पण मध्यम फळवाळा होय २, तथा केंद्रमां बे सौम्य ग्रहो रहेला न होय ३ तो ते लग्न अशुभने माटे छे."

"व्ययगः सौरो १ नवमे पापखगः सद्ग्रहैर्वियुक्तः स्यात् २ ।
भृगुसुतयुक्तश्चन्द्रो ३ भवेत्तदा लग्नमशुभाय ॥ ७ ॥"

"जो बारमा स्थानमां शनि होय १, नवमा स्थानमां शुभ ग्रह रहित एकलो पाप ग्रहज रह्यो होय २ अने चंद्र शुक्रे करीने युक्त होय ३ तो ते लग्न अशुभने माटे छे." प्रतिष्ठामां शुक्र अने चंद्रनो योग श्रेष्ठ छे, तेथी विवाहादिकमां आ योग अशुभ जाणवो.

"अन्त्यचतुर्थं लग्नं १ जन्मतिथि २ र्मास एव जन्माख्यः ३ ।
फाल्गुनमीनार्कयुति ४ र्भवेत्तदा लग्नमशुभाय ॥ ८ ॥"

"बारमुं के चोथुं लग्न होय १, जन्मनी तिथि होय २, जन्मनो मास होय ३ तथा फाल्गुन मासमां मीन संक्रांति होय ४ तो ते लग्न अशुभने माटे छे."

आ सर्वे समुदायवाळा दोषो बुध, गुरु अने शुक्र केंद्रादिक स्थानमां रह्या होय तो हणाय छे. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—

"हन्ति शतं दोषाणां शशिजः समुदायिनां हि केन्द्रस्थः ।
शुक्रो हन्ति सहस्रं बली गुरुर्लक्षमेकं हि ॥ १ ॥"

"केंद्रमां रहेलो बुध समुदायवाळा सो दोषोने हणे छे, बळवान् शुक्र हजारने हणे छे अने गुरु लाख समुदायी दोषोने हणे छे."

जे एकला दोषो छे ते बे प्रकारना छे—साध्य अने असाध्य. तेमां गंडांत, विष्टि, परम जामित्र अने वेध विगेरे दोषो असाध्य छे. आ दोषो होय त्यारे सर्व ग्रहोनुं बळ विगेरे विविध गुणो छतां पण लग्न ग्रहण करवा लायक नथी. कह्युं छे के—

"एकोऽपि दूषयेद्दोषः प्रवृद्धं गुणसंचयम् ।
सम्पूर्णं पञ्चगव्येन मद्यबिन्दुर्घटं यथा ॥ १ ॥"

"जेम दुध, दहीं, घी विगेरे पंच गव्ये करीने संपूर्ण भरेला घडाने एकज मदिरानुं बिंदु दूषित करे छे तेम वृद्धि पामेला गुणसमूहने एकज दोष दूषित करे छे."

जे साध्य दोषो छे तेमना प्रतिकारने बे श्लोकवडे कहे छे.—

लग्नजातान्नवांशोत्थान् क्रूरदृष्टिकृतानपि ।
हन्याज्जीवस्तनौ दोषान् व्याधीन् धन्वन्तरिर्यथा ॥ ५७ ॥

अर्थ—लग्नथी उत्पन्न थयेला, नवांशकथी उत्पन्न थयेला अने क्रूर दृष्टिए करेला पण दोषोने पहेला स्थानमां रहेलो गुरु हणे छे. जेम शरीरमां रहेला व्याधिओने धन्वंतरि हणे छे तेम.

तनौ एटले मूर्ति (पहेला) स्थानमां रहेलो अति बलिष्ठ गुरु आ दोषोने हणे छे. लग्नथी उत्पन्न थयेला एटले "जन्मराशिं जनेर्लग्नं" (विमर्श ५, श्लोक २९) ए श्लोकमा कहेला दोषोने. नवांशकथी उत्पन्न थयेला एटले जे नवांशकनो अधिकार कर्यो न होय अर्थात् निषेध कर्यो होय ए विगेरेथी उत्पन्न थयेला दोषोने. क्रूर दृष्टिए करेला एटले "स्थापने स्युर्विधौ दृष्टे युक्ते च" (विमर्श ५, श्लोक २८) ए श्लोकमां कहेला छे ते दोषोने हणे छे. आथी करीने—

"दर्शने यदि स्यादंशद्वादशकमध्यगः क्रूरः ।
इन्दोर्लग्नस्य तथा न शुभः सर्वेषु कार्येषु ॥ १ ॥"

"चंद्र अने लग्ननी दृष्टिए जो बार अंश सुधीमां क्रूर ग्रह रहेलो होय तो ते कोइ पण (शुभ) कार्यमां शुभ नथी."

आ श्लोकनो भावार्थ आ प्रमाणे छे.—पोतपोताना त्रिंशांशमां रहेला लग्न, चंद्र अने बीजा सर्वे ग्रहो तात्कालिक (जे काळे कार्य करवानुं होय ते काळना) स्पष्ट करवा, पछी जे ग्रहोए लग्न अने चंद्र देखाता होय एटले लग्न अने चंद्र उपर जे ग्रहोनी दृष्टि पडती होय ते ग्रहोना अने लग्न तथा चंद्रना भोगवायेला त्रिंशांशो बाद करवा. तेमां जो बाकी बार सुधी रहे तो क्रूर ग्रह अशुभ जाणवो, अने सौम्य ग्रह होय तो ते शुभ जाणवो जेमके—वीशमा अंशमां रहेलो शनि आठमा अंशमां रहेला लग्न के चंद्रने जुवे छे, तेथी वीशमाथी आठने बाद करतां बाकी बार रहे छे, माटे ते अशुभ छे ए प्रमाणे अगीयार, दश विगेरे बाकी रहे तो ते पण वर्जवा योग्य छे, परंतु बार करतां वधारे अंशमा रहेला क्रूर ग्रहनी दृष्टि दोषवाळी—वर्ज्य नथी.

मूळ श्लोकमां "क्रूर दृष्टिए करेला पण" एम पण एटले अपि शब्द लख्यो छे तेथ क्रूर ग्रहनी साथे रहेवाथी पण उत्पन्न थयेला दोषो अहीं जाणवा. ते विषे "दीक्षार कुरुते चन्द्र." (विमर्श ५, श्लोक २५) ए श्लोकमा कह्यु छे. व्याधीन् एटले जे शरीरमां रहेला व्याधिओने धन्वंतरि हणे छे

हवे शुभ ग्रहोनी दृष्टिनी केटली शक्ति होय छे ? ते कहे छे —

लग्नात् क्रूरो न दोषाय निन्द्यस्थानस्थितोऽपि सन् ।
दृष्टः केन्द्रत्रिकोणस्थैः सौम्यजीवसितैर्यदि ॥ ५८ ॥

अर्थ—क्रूर ग्रह लग्नथी निंद्य स्थानमां रहेलो होय तोपण जो ते केंद्र के त्रिकोणमा रहेला बुध, गुरु अने शुक्रे जोयेलो होय (आ ग्रहोनी तेना पर दृष्टि पडती होय) तो ते दोषने माटे नथी.

निंद्य स्थान एटले आ पांचमा विमर्शमां "त्रिष्वपि क्रूरमध्यस्थौ" (श्लो० २३), "नवेजन्मनि जन्मर्क्षात्" (३१), "शनिस्त्रिकोणकेन्द्रस्थ" (३२), "रविः कुजोऽर्कजो राहुः" (३३), "तनुबन्धुसुतद्यून" (५३), इत्यादि श्लोकोमां कहेला ते ते दोषोनो आ अपवाद छे. "दृष्टः" एटले जोयेलो एम सामान्य रीते कह्युं छे, तोपण अहीं पुष्ट दृष्टि जाणवी. वळी जो ते क्रूर ग्रहने बुध, गुरु अने शुक्र साथे स्वाभाविक अथवा तात्कालिक मैत्री होय तो दृष्टिथी अधिक विशेष थयो एम जाणवुं. केंद्र अने त्रिकोणमां रहेला एटलुं कह्युं छे तेना उपलक्षणथी पोताना उच्च स्थानमां रहेला ए विगेरे वरू अत्यंत बलिष्ठ होय ते पण जाणवा. कह्युं छे के—

"कूरा हवंति सोमा सोमा दुगुणं फलं पयछंति ।
जइ पासइ किंदठिउं तिकोणपरिसंठिउं वि गुरू ॥ १ ॥"

"जो केंद्रमां रहेलो अथवा त्रिकोणमां रहेलो गुरु क्रूर ग्रहोने जोतो होय तो ते क्रूर ग्रहो सौम्य थइ जाय छे, अने सौम्य ग्रहोने जोतो होय तो ते बमणा शुभ फळने आपे छे."

हवे शुभ ग्रहोनी संस्थाने कहे छे.—

त्रिकोणकेन्द्रायगतैः शुभग्रहैर्विसप्तमेनासुरपूजितेन च ।
स्युः क्रूरचन्द्रे रिपुदविक्रमा३य ११ गैः,कर्तुःश्रियः सन्निहिताश्च देवताः ॥५५॥

अर्थ—शुभ ग्रहो त्रिकोण, केंद्र अने अगीयारमां स्थाने रह्या होय, तेमां पण शुक्र सातमा सिवाय बीजां स्थानोमां रह्यो होय, तथा क्रूर ग्रहो अने चंद्र छठा, त्रीजा अने अगीयारमा स्थाने रह्या होय. आवी ग्रहसंस्था समये कार्य कर्युं होय तो कर्ताने लक्ष्मी मळे छे अने प्रतिमानी सांनिध्यमां देवता रहे छे.

सातमा स्थानने वर्जीने केंद्र अथवा त्रिकोणमां रहेलो शुक्र जाणवो. क्रूरचन्द्रैः एटले क्रूर ग्रहो अने चंद्र. ते चंद्र अने क्रूर ग्रहो प्रतिष्ठादिक लग्नमां त्रीजे, छठे अने अगीयारमे स्थाने रह्या होय तोज ते शुभ छे. अहीं आ प्रमाणे अपवाद छे.—

"पापोऽपि कर्तृजन्मेशः केन्द्रस्थः शस्यते ग्रहः ।
अशून्यानि च केन्द्राणि मूर्तौ जीवज्ञभार्गवाः ॥ १ ॥"

"कर्ताना जन्मनो स्वामी पापी—क्रूर होय तोपण जो ते ग्रह केंद्रमां रह्यो होय तो ते शुभ छे, अने केंद्रस्थान अशून्य होय तो ते वखाणवा लायक छे, तथा पहेला स्थानमां रहेला बुध, गुरु अने शुक्र शुभ छे." भावार्थ ए छे के—कर्ता एटले प्रतिष्ठा करावनार, श्रावक, दीक्षा लेनार शिष्य अथवा दीक्षा देनार गुरुना जन्मने विषे अथवा नामने विषे जे राशि होय तेनो स्वामी पापी होय तोपण जो ते केंद्रमां रह्यो होय तो शुभ छे, अने केंद्रस्थाने शुभ ग्रहो सहित होय तो ते श्रेष्ठ छे, पण शून्य होय तो ते श्रेष्ठ नथी.

पोताना स्वामीए (ते बन्ने राशिने) जोयेल होय तो. योगे—उदयांश अने अस्तांशना नामवाळी बन्ने राशिओ पोतपोताना स्वामीए अधिष्ठित होय तो.

आ उदय अने अस्तनी शुद्धिना प्रकरणथी मात्र दृष्टिनुज काम छे, तेथी ते दृष्टि पुष्ट अथवा अपुष्ट गमे ते होय तेमां कांइ पण विशेष जाणवो नहीं

विवाहेषु द्वयोर्ग्राह्या विशुद्धिरुदयास्तयोः ।
प्रतिष्ठादीक्षयोस्तावानस्तशुद्धौ तु नाग्रहः ॥ ६१ ॥

अर्थ—विवाहने विषे उदय अने अस्त बन्नेनी शुद्धि अवश्य ग्रहण करवी, परंतु प्रतिष्ठा अने दीक्षामां अस्तनी शुद्धि माटे एटलो बधो आग्रह नथी.

ग्राह्या ए शब्दमा आवश्यक अर्थमां घ्यण् प्रत्यय थयेलो होवाथी "अवश्य ग्रहण करवी" एवो अर्थ थाय छे. अस्तशुद्धि माटे आग्रह नथी एटले के उदयशुद्धि तो सर्व कार्यना लग्नमां होवीज जोइए ए अभिप्राय छे

आ बाबतमां हरिभद्र सूरि तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"वयगहणपइट्ठासु उदयत्थविसुद्धिवज्जिअं पि सुहं ।
मन्नति केइ लग्गं त च मय बहुमयं नेयं ॥ १ ॥"

"केटलाएक आचार्यो व्रतग्रहण (दीक्षा) अने प्रतिष्ठामां उदय अने अस्तनी शुद्धि रहित लग्नने पण शुभ माने छे. आ मत घणाने संमत छे एम जाणवुं."

आ रीते ग्रहण करवा लायक लग्ननो अने तेना नवांशादिकनो गुण दोषनी चिंता (विचार) करवापूर्वक निर्णय कर्या छतां पण ते समय क्यारे आवे छे ? ते जाणवा माटे लग्नथी काळ लाववानो प्रकार कहेवानो छे तेमां प्रथम लग्ननुं मान (प्रमाण) कहे छे –

मध्ये मेषझषौ पलैर्नगयनै २२७ र्मातङ्गतत्त्वै २५८ र्वृषः,
कुम्भो वा मिथुनः पुनर्मकरवत्तर्काभ्रधूमध्वजैः ३०६ ।
कर्की धन्विवदम्बराम्बुधिगुणै ३४० रम्भोधिरामैरलिः ३४०,
सिंहश्चाथ कनीघटौ ग्रहरदे ३२९ रुद्यन्त्यमी राशयः ॥ ६२ ॥

अर्थ—मध्य देशमा मेष अने मीन राशि २२७ पळोए करीने उदय पामे छे, वृष अने कुम्भ २५८ पळोए करीने उदय पामे छे, मिथुन अने मकर ३०६ पळोए करीने उदय पामे छे, कर्क अने धन ३४० पळे, सिंह अने वृश्चिक ३४० पळे तथा कन्या अने तुला ३२९ पळोए करीने उदय पामे छे

मध्ये एटले "हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं" "हिमालय अने विंध्याचळ पर्वतनो मध्य" इत्यादि निघंटुमा कहेवाथी मध्य देशमा आ आ राशिओ आटला आटला पळोए करीने

उदय पामे छे. पळ एटले एक घडीनो साठमो भाग. एक पळनुं प्रमाण साठ गुरु अक्षरोए करीने थाय छे. ते साठ गुरु अक्षरवाळो कामक्रीडा नामनो छंद (श्लोक) होय छे. ते आ प्रमाणे.—

"देवः श्रीसर्वज्ञो विश्वश्रीशः सिद्धिस्त्रीकान्तः,
कामद्रुद्रोहाग्निर्मायादोषाभ्रास्वान्नीरागः।
चन्द्रश्वेतश्लोकः स्याद्वादारामाब्दो लोकार्च्यो,
वीतापायः शान्तो लोकेभ्योऽसंख्यं सौख्यं देयात् ॥ १ ॥"

"विश्वनी लक्ष्मीना स्वामी, सिद्धिरूपी स्त्रीना पति, कामदेवरूपी वृक्षनो नाश करवामां अग्नि समान, मायारूपी रात्रीनो नाश करवामां सूर्य समान, राग रहित, चंद्र जेवा उज्ज्वळ कीर्तिवाळा, स्याद्वादरूपी आराम (बाग)ने नवपल्लवित करवामां मेघ समान, त्रिभुवनना लोकने पूज्य, कष्ट रहित अने शांत एवा श्रीसर्वज्ञ देव लोकोने असंख्य सुख आपो."

एक पळना मानवाळो आवो श्लोक साठ वार बोलवाथी एक घडी थाय छे. अहीं कोइ शंका करे के—"पळना प्रमाणवाळा श्लोकनुं बोलवुं शीघ्र शीघ्रतरपणे अथवा मंद मंदतरपणे पण संभवे छे, तेथी आ कहेलुं पळनुं मान शी रीते मळतुं आवे?" आनो उत्तर ए छे जे—"शीघ्रता अने मंदता रहित मध्यमपणे बोलवुं एज अहीं इच्छेलुं छे, केमके सर्व व्यवहारो लोकमां मध्यम प्रमाणे करीनेज प्रवर्ते छे. अथवा सूक्ष्म दृष्टिवाळाने आ बीजी रीते पण जाणवुं के—संगीतशास्त्रमां प्रसिद्ध एवा पंचमातृक नामना ताळने अविच्छिन्नपणे (एक धाराए) चोवीश वार हाथ अने मुखवडे सम्यक् प्रकारे स्पष्ट करवाथी सर्वथा प्रकारे विसंवाद विनाज एक जळपळ थाय छे." ताळनुं स्वरूप तथा तेने स्पष्ट करवानो विधि संगीतशास्त्रने जाणनाराओ पासेथी जाणवो.

मूळ श्लोकमां भनयनैः २२७ कह्या छे. तेमां आ प्रमाणे संप्रदाय छे.—

"लङ्कोदया नागतुरङ्गदस्त्रा २७८, गोऽङ्काश्विना २९९ रामरदा ३२३ विनाड्यः।
क्रमोत्क्रमस्थाश्चरखंडकैः स्वैः, क्रमोत्क्रमस्थैश्च विहीनयुक्ताः ॥ १ ॥
मेषादिषण्णामुदयाः स्वदेशे, तुलादितोऽमी च षडुत्क्रमस्थाः।"

"लंका नगरीना उदयनुं-लग्ननुं मान २७८–२९९ अने ३२३ पळोनुं छे. आ पळोने अनुक्रमे तथा उत्क्रमे स्थापन करवा. (तेथी करीने मेषथी कन्या सुधीना लग्ननुं मान थयुं. हवे तेज पाछा उत्क्रमे करीने तुलाथी मीन सुधीनुं मान जाणवुं. ते नीचेनी स्थापनाथी स्पष्ट समजाशे.) पछी जे देशना लग्ननुं मान करवुं होय ते देशना पोताना चरखंडोए[1] करीने अनुक्रमे रहेला उपरना (२७८–२९९–३२३) त्रण अंकने अनुक्रमे

[1] चरखंडनी समजुती हमणांज नीचे कहेशे.

श्रीमद्गौर्जरपत्तने स्वजझषौ तत्त्वाक्षिभि २२५ गोघटौ,
षट्तत्त्वैः २५६ शरखाग्निभिश्च ३०५ मिथुनो मार्गाननो वा पलैः ।
कर्की क्ष्मातिशये ३४१ धनुर्वेदलिवत्सिंहो द्विवेदत्रिकैः ३४२,
कन्येन्दुत्रिदशै ३३१ स्तुलावदुदयं यान्तीति मेषादयः ॥ ६३ ॥

अर्थ—श्रीमत् गुर्जर देशना पाटणमां मेष अने मीन लग्न २२५ पळोए करीने उदय पामे छे, वृष अने कुंभ २५६ पळोए करीने, मिथुन अने मकर ३०५ पळोवडे, कर्क अने धन ३४१ पळोवडे, सिंह अने वृश्चिक ३४२ पळोवडे तथा कन्या अने तुला लग्न ३३१ पळोवडे उदय पामे छे, एटले के आटला आटला (उपर कहेला) पळोवडे ते ते मेषादिक लग्नो उदय पामे छे तेनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—

मेष	२२५	मीन
वृष	२५६	कुंभ
मिथुन	३०५	मकर
कर्क	३४१	धन
सिंह	३४२	वृश्चिक
कन्या	३३१	तुला

हवे लग्नोनुं उदय संबंधी घडीओनुं मान अने होरादिकनुं पळमान प्रसंग होवाथी लखे छे.—

लग्नाना मानं		होराणां मानं	द्रेष्काणना मानं	नवांशाना मानं	द्वादशांशानां मान	त्रिंशांशाना मानं
	घटी-पल	पल-अक्षर	पल-अक्षर	पल-अक्षर-व्यक्षर	पल-अक्षर	पल-अक्षर
मेष	३-४५	११२-३०	७५	२५	१८-४५	७-३०
वृष	४-१६	१२८	८५-२०	२८-२६-४०	२१-२०	८-३२
मिथुन	५- ५	१५२-३०	१०१-४०	३३-५३-२०	२५-२५	१०-१०
कर्क	५-४१	१७०-३०	११३-४०	३७-५३-२०	२८-२५	११-२२
सिंह	५-४२	१७१	११४	३८	२८-३०	११-२४
कन्या	५-३१	१६५-३०	११०-२०	३६-४६-४०	२७-३५	११- २
तुला	५-३१	१६५-३०	११०-२०	३६-४६-४०	२७-३५	११- २
वृश्चिक	५-४२	१७१	११४	३८	२८-३०	११-२४
धन	५-४१	१७०-३०	११३-४०	३७-५३-२०	२८-२५	११-२२
मकर	५- ५	१५२-३०	१०१-४०	३३-५३-२०	२५-२५	१०-१०
कुंभ	४-१६	१२८	८५-२०	२८-२६-४०	२१-२०	८-३२
मीन	३-४५	११२-३०	७५	२५	१८-४५	७-३०

विशेष आ प्रमाणे छे.—

"रेवत्युदयादश्व्यादीन्युज्झन्ति जलपलैः क्रमशः ।
चित्रान्तान्यृतुनन्दै ए६ र्द्विखरूपै १०२ रष्टखावनिभिः १०८ ॥ १ ॥
शरकुभिः ११५ खद्विकुभि १२० र्युगगुणरूपै १३४ र्वसुदधिमृगांकैः १४८ ।
शशिपञ्चकुभि १५१ स्त्रिशरद्माभिः १५३ करविषयवसुधाभिः १५२ ॥ २ ॥
त्रीषुकुभि १५३ रष्टयुगकुभि १४८ रगचतुरेकैः १४७ षडब्धिकुभि १४६ रेवम् ।
हस्तादेः प्रतिलोमं स्वात्याद्युदये क्रमान्मानम् ॥ ३ ॥
अभिजिच्च वसुजिनै २४८ रिति ऋक्षाणामुदयपलसंस्था ।"

"रेवतीनो उदय थया पछी अश्विनीथी आरंभीने चित्रा पर्यंतनां नक्षत्रो अनुक्रमे नीचे लखेला जळपळोए करीने उदय पामे छे. अश्विनी ए६, भरणी १०२, कृत्तिका १०८, रोहिणी ११५, मृगशिर १२०, आर्द्रा १३४, पुनर्वसु १४८, पुष्य १५१, अश्लेषा १५३, मघा १५२, पूर्वाफाल्गुनी १५३, उत्तराफाल्गुनी १४८, हस्त १४७ अने चित्रा १४६ जळपळोए करीने उदय पामे छे. हस्तादिकना उत्क्रमे करीने स्वाति, विशाखा विगेरेना उदयनुं मान जाणवुं. तथा अभिजित् नक्षत्र २४८ जळपळोए करीने उदय पामे छे. आ प्रमाणे नक्षत्रोना उदयना पळोनी संस्था जाणवी." स्थापना नीचे प्रमाणे.—

रे.	ए६	अ.
उ.	१०२	भ.
पू.	१०८	कृ.
श.	११५	रो.
ध.	१२०	मृ.
श्र.	१३४	आ.
उ.	१४८	पु.
पू.	१५१	पु.
मू.	१५३	अ.
ज्ये.	१५२	म.
अ.	१५३	पू.
वि.	१४८	उ.
स्वा.	१४७	ह.
	१४६	चि.
अभिजित्	२४८	

आ नक्षत्रोमां अभिजितने वर्जीने अश्विनीथी सवा बबे नक्षत्रोनुं मान मेळववाथी उपर कहेलुं राशिनुं मान थाय छे. (जेमके—अश्विनी ए६, भरणी १०२ अने कृत्ति-

काना पहेला पादना पळो २७ मेळववाथी २२५ पळ थया, तेथी घडी ३ पळ ४५ मेष राशिना लग्ननुं मान थयुं कृत्तिकानां पाछलां त्रण पादना पळो ८१, रोहिणीना ११५ अने मृगशिरना बे पादना पळो ६० मेळववाथी कुल पळो २५६ थया, तेथी घडी ४ पळ १६ वृष राशिनुं मान थयुं. ए रीते सर्वत्र जाणवुं)

हवे राशिओनी विशेष संज्ञाने तथा तेना प्रमाणने कहे छे.—

द्वादशराशिर्भगणो राशिस्तु त्रिंशता भवति भागैः ।

भागे षष्टिर्लिप्ता लिप्ता षष्ट्या विलिप्ताभिः ॥ ६४ ॥

अर्थ—बार राशि मळीने एक भगण (नक्षत्रोनो समूह) कहेवाय छे. (एटले के बार राशि अने भगण ए बे नाम समान छे,) त्रीश भागे करीने एक राशि थाय छे, एक भागमां ६० लिप्ता होय छे, अने एक लिप्ता ६० विलिप्ताए करीने थाय छे.

भागनुं बीजुं नाम त्रिंशांश पण कहेवाय छे तेनुं मान आ रीते छे—

"लग्नाना सर्वदेशेषु यन्मानं घटिकादिकम् ।

तच्च द्विघ्नं पलाद्य स्यान्मानं त्रिंशाशकस्य हि ॥ १ ॥"

"सर्व देशोमां लग्नोनुं जे घटिकादिक मान कह्युं छे ते बमणुं करवाथी जे संख्या आवे तेटला पळादिक त्रिशांशनुं मान थाय छे." (कारण के एक घडीना बे त्रिशांश होय छे, तेथी घडीने बमणी करीए तो तेटला पळ एक त्रिंशांशना थाय छे.)

लिप्तानुं बीजुं नाम कळा अने विलिप्तानुं बीजुं नाम विकळा पण छे विशेष ए के— एक विलिप्ता (विकळा)नी साठ परम विकळा होय छे. ते परम विकळानुं बीजु नाम अक्षर कहेवाय छे एक अक्षरना पण साठ व्यक्षरो होय छे, परंतु ते (व्यक्षर) अत्यंत सूक्ष्म काळ होवाथी व्यवहारने योग्य नथी

लग्नोनुं मान कह्युं. हवे सूर्यने स्पष्ट करवा माटे बारे सक्रांतिओनी अंतराल (वच्चेनी) घडीओने कहे छे—

सङ्क्रान्त्यन्तरनाडिका अथ धृति १८ मेंषादितोऽश्वेषुभिः५७,

भूतेभैः८५ मुनिगोभिः९७रष्टवसुभिः८८ नेत्रर्तुभिः६२ र्भैः२७ स्तथा ।

अत्यष्टिश्च १७ समन्विता त्रिनवभिः९३ खेटर्तुभिः६९ खर्तुभिः ६०,

सप्ताङ्कैः६७ र्निधिकुञ्जरैः८९ रथ धृति १८ श्चन्द्रेक्षणैश्च २१ क्रमात् ॥६५॥

अर्थ—हवे संक्रांतिनी अंतराल घडीओ मेष राशिथी अनुक्रमे आ प्रमाणे छे—मेष अने वृष संक्रांतिनी वच्चे १८५७ घडीओ होय छे, एटले के मेष संक्रांति बेसे त्यारथी १८५७ घडीओ जाय त्यारे वृष संक्रांति बेसे, अने त्यारपछी १८८५ घडीओ जाय त्यारे ~ संक्रांति बेसे. अर्थात् मेष संक्रांति १८५७ घडी सुधी रहे छे, वृष संक्रांति १८८५

घमी सुधी होय छे. एज रीते मिथुननी घमीर्ठ १०ए७ छे, कर्कनी १०००, सिंहनी १०६२, कन्यानी १०२७, तुलानी १७ए२, वृश्चिकनी १७६ए, धननी १७६०, मकरनी १७६७, कुंजनी १७०ए अने मीननी १०२१ घमीर्ठ छे.

सूर्यनी संक्रांति—संक्रमण बार राशिर्जने विषे होय छे. तेमना आंतरामां एटली एटली घमीर्ठ होय छे. मूळ श्लोकमां "धृति" शब्द लख्यो छे, ते अढार अक्षरनी छंदोजाति छे, तेथी अढारनी संख्या जाणवी, अने "अत्यष्टि" शब्द सत्तर अक्षरनी छंदोजाति होवाथी तेनो अर्थ सत्तरनी संख्या जाणवी. मेषादिक थकी एटले मेष अने वृष संक्रांतिनी वच्चे धृति एटले १० अश्वेषुन्निः एटले ५७ वमे सहित एटले के अढारसोने सतावनवमे युक्त करवा तेटली घमीर्ठ होय छे. ए रीते आगळ पण जाणवुं.

संक्रांतिर्जना अंतरनी न्नुक्तिनो यंत्र.—

मेष	१०५७	वृष	तुला	१७ए२	वृश्चिक
वृष	१००५	मिथुन	वृश्चिक	१७६ए	धन
मिथुन	१०ए७	कर्क	धन	१७६०	मकर
कर्क	१०००	सिंह	मकर	१७६७	कुंज
सिंह	१०६२	कन्या	कुंज	१७०ए	मीन
कन्या	१०२७	तुला	मीन	१०२१	मेष

हवे सूर्यने स्पष्ट करवा माटे आ उपर कहेली घमीर्उए करीने सूर्यने स्पष्ट करवानी रीत बतावे छे.—

स्फुटोऽथ न्नानुर्गतनामिकाज्यः, संक्रान्तितः खज्वलना ३० हताज्यः ।
न्नागादिन्निः स्वान्तरन्नुक्तिलब्धै, राश्यादिकःस्याद्गतराशियुक्तैः ॥ ६६ ॥

अर्थ—चालती संक्रांतिनी वीती गयेली घमीर्जने त्रीशे गुणवी, पछी तेने उपर कहेली पोतानी अन्तरन्नुक्तिवमे न्नाग देवो. तेम करवाथी न्नागादिक (अंश विगेरे) आवे छे, अने गयेली राशिए युक्त करवाथी राशि विगेरेरूप सूर्य स्पष्ट थाय छे.

इष्ट (कार्य) समये चालती संक्रातिनी जेटली घमीर्ठ गइ होय ते सर्वने एकत्र करी त्रीशे गुणवी. स्वान्तरन्नुक्ति-पोतानी अंतरन्नुक्ति अने संक्रांतिनी अंतराल घमीर्ठ ए बन्नेनो एकज अर्थ छे. पछी पोतानी अंतरन्नुक्तिवमे न्नाग दइने अंश, कळा अने विकळारूप त्रण प्रकारनुं फळ ग्रहण करवुं (काढवुं). पछी गयेली राशिए एटले जेटली

१४०४ वर्षे करीने २३ अंशो, ५५ कळा अने चार विकळा वधे छे. ए प्रमाणे अयनांशनी वृद्धि कहेली छे. पछी तेज क्रमे करीने हानि पामता ते अयनांशो तेटलाज एटले १४०४ वर्षे करीने खाली थइ जशे. ए प्रमाणे वारंवार ते अयनांशोनी वृद्धि अने हानि जाणवी. लग्नमां, क्रांतिसाम्यमां अने चर लाववामां आ अयनांशोनो उपयोग छे. कह्युं छे के—

"अयनांशाः सदा देया लग्ने क्रान्तौ चरागमे ।"

"लग्नमां, क्रांतिसाम्यमां अने चर लाववामां हमेशां अयनांशो देवा."

हवे उदाहरणमां लीधेला इष्ट काळने विषे अयनांशो लाववा माटे आ रीत छे.—

"आषाढे विक्रमं नन्दसप्तेषू ५७९ नं त्रिधा कु १ चू १ ।
नखैं २० र्निघ्नं भजेत् षष्ट्या लब्धे स्युरयनांशकाः ॥ १ ॥"

"अषाढ मासथी शरु थता विक्रम संवतमांथी ५७९ बाद करी बाकी रहे तेने त्रण वार स्थापन करवा. पछी ते त्रणेने अनुक्रमे १-१-२० वडे गुणवा. पछी तेने छेल्ला अंकथी साठे भाग दइ दइने पूर्व पूर्व अंकमां नाखवाथी अयनांशो थाय छे."

भावार्थ ए छे के—चैत्र मासथी शालिवाहननो शक शरु थाय छे. तेमां १३५ नाखवाथी विक्रम संवत् थाय छे ते संवत् अषाढ मासथी शरु थाय छे ते स्थापन करवो. ते संवत् प्रकृत उदाहरणमां १५१२ छे तेमांथी ५७९ बाद करतां शेष ९३३ रहे छे आ अंकने त्रण वार स्थापन करी तेने अनुक्रमे १-१-२० वडे गुणवा (तेथी ९३३-९३३-१८६६० थाय छे) तेने छेल्लेथी साठे भाग दइ दइने उपर उपर चढाववाथी १५ अंश, ५२ कळा अने ४४ विकळा थइ. आ अयनांशनुं मान १५१२ मा वर्षमां सूक्ष्म दृष्टिथी आवे छे, परंतु दरेक वर्षे काइक अधिक एवी एक एक कळाज वधे छे. एवुं स्थूळ मानज घणा ज्योतिर्विदोने संमत छे, तेथी अमे पण स्थूळ मानज अहीं लइए छीए, तेथी करीने १५१२ मा वर्षे १५ अंश अने ३४ कळा आवे छे आ अयनांशने स्पष्ट करेला सूर्यमां नाखवाथी अंश ३१, कळा ३७ अने विकळा ३० थाय छे हवे दरेक राशिनुं मान ३० अंशज होय छे, तेथी आ अयनांशनी अपेक्षाए करीने जोतां सूर्ये आखी मेष राशि भुक्त थइ गइ, अने वृष राशिनो १ अंश, ३७ कळा अने ३० विकळा पण भुक्त थइ एम सिद्ध थयुं स्थापना—१-१-३७-३० आ सायन अथवा सायनांश एटले अयनांश सहित सूर्य थयो.

हवे प्रकृत उदाहरणमां वृषनो उदय छे. तेनुं मान २५६ पळो छे. तेने त्रण वार स्थापन करवा—२५६-२५६-२५६. पछी सूर्ये भोगवेला मानमांथी अंशादिकनी अपेक्षाए शेष अंशादिक काढीए (एटले के अंश १, कळा ३७ अने विकळा ३० काढीए)

त्यारे अंश २७, कळा ३३, विकळा ३० रहे. आ त्रण अंकवडे उपरनी त्रण राशिउं अनुक्रमे गुणतां ७१६७–५६३२–७६०० थाय छे. तेने साठे भाग दइ दइने पूर्व पूर्वनी राशिमां नाखवाथी ७२६५ थाय छे. तेने ३० वडे भाग देतां २४२ पळो लाध्या. आ सूर्य भोग्य पळमान आगळ पर उपयोगमां आवशे, माटे स्थापी राखवुं.

हवे इष्ट लग्ननुं भुक्त लाववावडे करीने इष्ट समयने स्पष्ट करवा माटे कहे छे.—

इष्टाद्भुक्तनवांशकैर्दशगुणैस्त्र्याप्तैर्लवाद्यं फलं,
लग्नं सायनमूर्ध्वराशिसहितं सैकप्रवृत्त्यंशकम् ।
तद्भुक्तेन लवादिना तदुदयः क्षुण्णो हृतस्त्रिंशता,
भास्वद्भोग्ययदान्तरोदययुतः कालः पलात्मा भवेत् ॥ ६७ ॥

अर्थ—इष्ट लग्नना भुक्त नवांशोने दशे गुणी त्रणे भाग देतां जे अंशादिक फळ आवे ते लग्न जाणवुं. तेने अयन सहित करवुं. पछी उपर (पहेलां) राशि सहित (गयेली राशि सहित) करवुं. पछी एक प्रवृत्त्यंश सहित करवुं. तेटला अंशादिक भुक्त थया, ते भुक्तवडे ते (लग्न)ना उदयने गुणवो. पछी तेने त्रीशे भाग देवो. पछी ते सूर्य भोग्य अने आंतरोदय सहित करीए त्यारे तेटला पळरूप इष्ट समय स्पष्ट थाय छे.

लग्नमां जे नवांशक इष्ट होय तेनी पहेलां जेटला नवांशक गया होय तेने दशे गुणी त्रणे भागवा. जे लाधे ते अंश, कळा अने विकळारूप त्रण प्रकारनुं फळ थाय छे. तेनेज लग्न जाणवुं. ते लग्नने अयन सहित तथा व्यतीत थयेली राशि सहित करीने तेमां एक प्रवृत्त्यंश एटले अधिकार करेला नवांशकनो त्रीजो भाग नाखवो, परंतु प्रतिष्ठा अने विवाहमां जो धनुष् राशिनो नवांशक लीधो होय तो तेमां नवांशकना त्रीजा भागनुं पण अर्ध नाखवुं, केमके ते कार्यमां धनुषना नवांशकनो पहेलो अर्ध भागज इच्छेलो छे. आ रीते करवाथी जेटला अंश, कळा अने विकळा थाय तेटला भुक्त जाणवा. ते भुक्त एवा अंश, कळा अने विकळावडे करीने इष्ट लग्ननुं पळरूप मान त्रण वार स्थापन करीने गुणवुं. पछी तेने प्रथमनी जेम साठे भाग दइ दइने पूर्व पूर्वमां नाखी उपरनो (पहेलो) जे एक आवे तेने त्रीशे भाग देतां जे पळ अने अक्षररूप मान आवे ते इष्ट लग्ने भुक्त (भोगवेलुं) कहेवाय छे. तेनी अंदर पूर्वे आणेलुं सूर्य भोग्य नाखवुं, तथा सूर्ये आक्रमण करेली राशिनी अने इष्ट लग्ननी अंतराले जेटलां लग्नो रह्यां होय तेनां पळरूप मानोने पण तेमां नाखवां. आ रीते करवाथी जे अंक आवे तेटला पळोए करीने सूर्योदय पछी इष्ट लग्ननो इष्ट अंश आवे छे.

उदाहरण—प्रकृत उदाहरणमां कर्क लग्ननो त्रीजो कन्या नवांशक ग्रहण कर्यो छे, तेथी इष्ट एवा कन्या नवांशकनी पहेलां बे नवांशो व्यतीत थया छे, माटे

बेने दशे गुणतां वीश थया. तेने त्रणे भागतां ६ त्रिंशांशो लाध्या अने शेष ² रह्या, एटले के जेटला त्रण भागे करीने एक त्रिंशांशक थाय तेटला बे भाग, तेथी करीने अंश ६ अने कळा ४० थाय छे, कारण के एक एक (दरेक) त्रिंशांशनी ६० कळाओ होवाथी बे त्रिभागे करीने ४० कळाओज थाय छे. आ लग्न थयुं. तेने अयन सहित करवुं छे, माटे अयनांश १५ अने कळा ३४ भेळववी. (२२–१४ थाय छे.) तथा जेटली राशिओ व्यतीत थइ होय तेटलो अंक राशिने स्थाने मूकवो. ते अहीं कर्क लग्न ग्रहण करेलु होवाथी त्रणनो अंक आवशे, तथा अंशना अंकमा एक नवांशांश अने ७ कळा नाखवी कारण के दरेक नवांशकमां त्रण त्रिंशांशो अने वीश कळाओ होय छे. तेनो त्रीजो भाग तेटलोज (१–७) थाय छे, तेथी करीने त्रण राशिओ व्यतीत थइ अने चोथी कर्क राशिना २३ अंशो अने २१ कळाओ पण व्यतीत थइ, तेथी (३–२३–२१) एटलु भुक्त थयुं अहीं भुक्त (व्यतीत थयेली) राशिनो उपयोग नथी, तेथी तेणे भुक्त एटले चालता कर्क लग्नवडे भुक्त एवा अंश २३ कळा २१ वडे तेनो उदय एटले अहीं प्रकृत होवाथी कर्कनो उदय ३४१ पळना स्वरूपवाळो छे तेने बे वार स्थापन करीने गुणवो जो विकळा होत तो त्रण वार स्थापन करीने त्रीजो अंक विकळावडे पण गुणात, पण अहीं तो विकळा नथी, तेथी बे वार स्थापन करवानुं कह्युं छे आ रीते करवाथी-(३४१ ने बे वार २३ अने २१ वडे गुणवाथी) ७८४३–७१६१ थाय छे बीजा अंकने ६० वडे भाग देता भागमा ११९ आव्या. तेने प्रथमना अंकमा नाखवाथी ७९६२ थया तेने त्रीशे भागता २६५ पळो लाधी शेष १२ रह्या तेने ६० वडे गुणी ३० वडे भाग देता अक्षर २४ लाध्या आ पळ २६५, अक्षर २४ कर्क लग्ननुं भुक्त थयुं तेने सूर्यना भोग्य सहित तथा आंतरोदयना लग्नना पळो सहित करवुं छे, तेथी अहीं सूर्यना भोग्य पळ २४२ छे, अने आंतरोदय तो मिथुनज छे तेनुं मान ३०५ पळो छे. ते त्रणेने एकत्र करवाथी ८१२ पळो एटले के १३ घडी अने ३२ पळो थया आटलो वखत सूर्योदयथी जाय त्यारे कर्क लग्ननो कन्या नवांशक आवे छे

अहीं विशेष आ प्रमाणे छे —

"द्वयोर्नवांशयोः शुद्धिः प्रतिष्ठाया विलोक्यते ।
आद्येऽधिवासना बिम्बे द्वितीये च शलाकिका ॥ १ ॥
संस्थाप्य लग्नमानं गुणयेन्मध्यनवांशकैः ।
नवभिस्तु हृते भागे लब्धेऽन्तरपलागमः ॥ २ ॥"

"प्रतिष्ठामा बे नवांशकनी शुद्धि होवी जोइए तेमा पहेला नवांशकमां बिंबनी

---

१ बे त्रिंशांशनी १२० कळा थइ तेनो त्रीजो भाग ४० थाय.

अधिवासना करवी, अने बीजामां अंजनशलाका करवी. ते शुद्धि जोवानी रीत आ प्रमाणे—लग्ननुं मान स्थापन करीने तेने मध्य (वच्चे)ना नवांशकोवडे गुणवुं. पछी तेने नववडे भाग देवाथी जे लाधे ते अंतर पळो आवे छे."

अहीं मात्र कल्पित उदाहरण आ प्रमाणे जाणवुं.—प्रतिष्ठामां आज कर्क लग्ननो त्रीजो कन्या नवांशक अने आठमो कुंभ नवांशक ग्रहण करवाना छे, तेथी कुंभ नवांशकनी पहेलां कन्यादिक पांच नवांशको छे, माटे कर्क लग्ननुं मान जे ३४१ छे तेने पांचे गुणीए त्यारे १७०५ थाय छे. तेने नवे भाग देतां भागमां १८९ पळो (एटले घडी ३ पळ ९)आवे छे. तेने त्रीजो कन्या नवांशक ग्रहण करवा माटे स्पष्ट करेला १३ घडी अने ३२ पळरूप काळमां नाखवाथी घडी १६, पळ ४१ थया. आटलो वखत जाय त्यारे कुंभना नवांशकनी वेळा आवे छे.

हवे लग्नना अंश (नवांशक)नो समय स्पष्ट करवा माटे अयनांशनी अपेक्षा विना बीजो प्रकार कहे छे. अथवा तो.—

संक्रान्तिराशेर्गतनाडिकाघ्ने, माने दिवा निश्यथ सप्तमस्य ।
संक्रान्तिभोगेन हृते तदीयत्र्यंशान्विते शेषमिहार्कभोग्यम् ॥ ६९ ॥

अर्थ—दिवसे लग्न होय तो संक्रांतिनी राशिनुं मान गयेली घडीओवडे गुणवुं, अने रात्रिए लग्न होय तो सातमी राशिनुं मान गयेली घडीओवडे गुणवुं. पछी तेने संक्रांतिनी भुक्तिवडे भाग दइ तेमां तेज राशिनो त्रीजो भाग नाखवो. शेष रहे ते अहीं सूर्य भोग्य जाणवुं.

दिवसनुं लग्न होय तो सूर्यसंक्रांतिनी राशिनुं मान संक्रांतिना समयथी आरंभीने लग्नना समय सुधीमां जेटली घडीओ गइ होय तेटली घडीओवडे गुणवुं. रात्रिनुं लग्न होय तो सूर्यसंक्रांतिनी राशिथी जे सातमी राशि होय तेनुं मान गुणवुं. त्यारपछी पोतानी (संक्रांतिनी) अंतरभुक्तिवडे तेने भाग देवो. भागमां जे आवे तेमां प्रस्तुत राशिनो त्रीजो भाग जूदो पाडीने नाखवो. तेम करवाथी जे थाय ते सूर्य भुक्त कहेवाय छे. ते सूर्य भुक्तने सूर्यसंक्रांतिनी राशिमांथी बाद करवुं. जे शेष रहे ते सूर्य भोग्य कहेवाय छे.

जेमके प्रकृत उदाहरणमांज दिवसना लग्नमां सूर्यसंक्रांतिनी राशि मेष छे. तेनुं मान २२५ छे. संक्रांतिना समयनी पछी अने लग्ननी पहेलां जे गयेली घडीओ ९९४ छे ते बन्नेनो गुणाकार करतां २२३६५० थया. तेने पोतानी अंतरभुक्ति १८५७ वडे भाग लेतां १२० पळ लाध्या. त्यारपछी सूर्यसंक्रांतिनी राशिना माननो त्रीजो भाग तेमां नाखवो, एटले के अहीं मेषनुं मान २२५ छे, तेने त्रणे भागतां ७५ लाध्या. ते पूर्वना १२० मां

नाखवाथी १९५ थया. आ सूर्य भुक्त थयुं. सूर्यसंक्रांतिनी राशि मेषना मानरूप २२५ पळमांथी ते १९५ बाद करीए त्यारे बाकी ३० पळो रहे. आ सूर्य भोग्य थयुं. आ प्रमाणे दिवसना लग्नमां जाणवुं हवे रात्रिनुं लग्न होय त्यारे सूर्यसंक्रांतिनी राशिथी सातमी राशिनो सूर्य भुक्त घमीर्ड साथे गुणाकार, तेनी अंतरभुक्तिवमे भागाकार विगेरे सर्व सूर्यसंक्रांतिनी राशिनी प्रमाणेज करवु.

भुक्तेऽथ लग्नस्य तदंशकाच्च, दद्यात्त्रिभागावुदयप्रवृत्त्योः ।
तल्लग्नभुक्तं च तथाऽर्कभोग्यं, कालोऽन्तरालोदययुक् पलात्मा ॥ ७० ॥

अर्थ—त्यारपछी तेना अंशनी (इष्ट नवांशक)नी पहेला लग्नना भुक्तमां उदय अने प्रवृत्तिना त्रिभागो नाखवा ते लग्न भुक्त कहेवाय छे. त्यारपछी ते लग्न भुक्त तथा सूर्य भोग्यने अंतरालना उदय सहित करवाथी जे आवे तेटला पळोवाळो काळ इष्ट लग्ननो छे एम जाणवुं.

अथ–त्यारपछी तदंशकात् एटले इष्ट नवांशकनी, पहेला लग्नना भुक्तने विषे उदय अने प्रवृत्तिना त्रिभागो नाखवा एवो संबंध छे. भावार्थ आ प्रमाणे छे.—अधिकार करेला नवांशकनी पहेला जेटलुं लग्ननु भुक्त होय तेने स्पष्ट करीने तेने विषे तेज लग्ननं त्रिभाग अने प्रवृत्त्यंश नामना तेज नवांशकना त्रिभागने नाखवा. त्यारपछी ते लग्न भुक्त पूर्वे आणेलु सूर्य भोग्य अने अंतराल लग्ननुं पळमान ए त्रणेने एकत्र करवां जेटल पळो आवे तेटला पळोए करीने सूर्योदय पछी इष्ट लग्ननो इष्ट नवांशक आवे छे.

जेमके—अहीं कर्कनुं मान ३४१ छे. तेने नववमे भाग देवाथी ३८ पळो एक नवांशकनु मान थयु. हवे अहीं इष्ट नवांशक (कन्या नामनो) त्रीजो छे, तेनी पहेला बे नवांशो गया छे, तेथी ३८ ने बमणा करता ७६ पळो थया आटलुं ते लग्न भुक्त थयुं त्यारपछी तेमा कर्क लग्नना मान ३४१ ने त्रणे भाग देता ११४ पळो लाध्या. अ उदयनो त्रिभाग थयो तेने लग्न भुक्त ७६ पळोमा नाखवाथी १९० थया. त्यारपछी जे नवांकश ग्रहण कर्यो छे तेनुं मान ३८ पळनुं छे, तेनो त्रिभाग १२ पळ थाय छे. ते पण तेमा (१९० मा) नाखवाथी २०२ थया पछी सूर्य भोग्य पळो ३०, तथा सूर्यसंक्रांतिनी (मेष) राशिने अने इष्ट लग्न (कर्क)ने अतराले वृष अने मिथुन छे तेमनुं मान २५६–३०५ छे सर्वनी स्थापना—२०२–३०–२५६–३०५ आ सर्वे एकत्र करवाथी ७९३ पळो थया तेने ६० वमे भाग देता घमी १३ पळ १३ लाध्या आटलो काळ सूर्योदयथी जाय त्यारे कन्या नवांशक आवे छे आ बीजी रीत होवाथी पळोमा पूर्वनी करता फारफेर आव्यो तेमा काइ दोष नथी एम बीजे ठेकाणे पण जाणवुं

आ प्रमाणे लग्नने आश्रीने समय लाववानी रीत कही. हवे तेनी प्रतीतिने माटे बे श्लोके करीने समयने आश्रीने लग्न लाववानी रीत बतावे छे.—

त्यक्त्वार्कभोग्यं च पलात्मकालाद्भागादिभोग्यं तरणौ निदध्यात् ।
क्रमेण शेषानुदयान् विशोध्य, राशीन्न्यसेत्तत्प्रमिताँश्च भानौ ॥ ७१॥

अर्थ—पळरूप करेला काळमांथी सूर्य भोग्य बाद करवुं. पछी अंशादिक भोग्यने सूर्यमां नाखवुं. पछी अनुक्रमे शेष उदयोने शोधी (बाद करी) तेटली राशिओने सूर्यमां नाखवी.

कोइक माणस घडी, पळ विगेरे इष्ट काळ बोलीने प्रश्न करे के—"ए वखते कयुं लग्न, अंश विगेरे छे." ते वखते तेणे कहेली घडी विगेरे सर्वना पळो करवा. पछी ते पळरूप करेला काळमांथी सूर्य भोग्य जेटला पळो होय तेटला बाद करवा. पछी अयनांशो सहित स्पष्ट करेला सूर्ये जे राशि आक्रांत करी होय ते राशिनुं शेष रहेलुं जे अंश, कळा अने विकळारूप सूर्य भोग्य होय तेने सूर्यमां अने सायनांश स्पष्ट करेला सूर्य-मांज नाखवुं, एटले के ते राशि संपूर्ण करीने लखवी. त्यारपछी ते पळरूप करेला काळमांथी सूर्ये आक्रांत करेली राशिनी पछीनां पळरूप लग्नो (पछीनां लग्नोना पळो) जेटलां नीकळे तेटलां काढीने तेटली राशिनो अंक सूर्यना अंकमां नाखवो.

शेषादथ खगुण ३० गुणादविशुद्धोदयहृताद्भागेन ।
भागादिना सनाथो दिननाथो निरयनांशको लग्नम् ॥ ७२ ॥

अर्थ—त्यारपछी शेषने ३० वडे गुणवा. पछी तेने अशुद्ध उदय (लग्न)वडे भाग देतां प्राप्त थयेला (लाधेला) अंशादिकवडे सूर्यने सहित करवो. पछी ते सूर्यने अय-नांश रहित करवो. एम करवाथी लग्न आवशे.

त्यारपछी (एटले पळरूप लग्नो काढ्या पछी) शेष रहेला एटले के जे शेषमांथी लग्न शोधी न शकाय (राशि काढी न शकाय) तेवा शेषने ३० वडे गुणवा. तेने अशुद्ध (नहीं शोधेला–नहीं बाद करेला) लग्नना मानवडे भाग देतां जे अंश, कळा अने विकळा लाधे तेने सूर्यमां नाखवा. पछी तेमांथी अयनांशो बाद करवा. शेष रहे ते इष्ट काळे स्पष्ट लग्न अने नवांशक थया.

आ उदाहरण पहेला प्रकारमां भावे छे.—कोइए घडी १३, पळ ३२ कह्या. तेना पळो कर्या त्यारे ८१२ पळो थया. तेमांथी सूर्य भोग्य २४२ पळो बाद कर्या. शेष ५७० रह्या. हवे अयनांशो सहित करेलो स्पष्ट सूर्य राशि १–१–२७–२० छे. तेमां वृष राशिनुं

उत्तर—ज्यारे कळानो अंक साठनी अपेक्षाए अर्ध (३०) करता वधारे होय त्यारे ते आखो गणीने त्रिशांशमा भेळवाय छे अने एज प्रमाणे विकळा पण त्रीशथी अधिक होय तो कळामा एक नाखवामा आवे छे तथा जातक विगेरे ग्रंथोमा अंशायु, पिंडायु, दशा अने अंतर्दशा विगेरे लाववामा कळा विगेरेनी स्पष्टतानो विशेष उपयोग छे, माटे अहीं तेनो वधारे विस्तार करता नथी.

आ प्रमाणे दिवसे लग्नना अंशो लाववानी रीत कही. हवे रात्रिने विषे ते लाववानी रीत बतावे छे—

"रात्रौ तु मूर्ध्नि यद्धिष्ण्यं तस्माद्भदशमष्टमम् ।
उदेति पूर्वस्यां तेन लग्नोदयविनिर्णय· ॥ १ ॥"

"रात्रिए जे नक्षत्र माथे (मध्यमां) होय तेनाथी आठमुं नक्षत्र पूर्व दिशामां उदय पामे छे, तेणे करीने लग्नना उदयनो निर्णय करवो.'

तथा रेवतीनो उदय थया पछी अश्विनीनो उदय थाय त्यांसुधी अश्विनीनाज चारे पाया उदय पामे छे. एज रीते अश्विनीनो उदय थया पछी भरणीनो उदय थाय त्यांसुधी भरणीनाज चारे पायानो उदय थाय छे ए प्रमाणे मस्तक पर रहेला नक्षत्रना पायानी कल्पनाए करीने उदय पामेलो नवांशक पण निश्चय करवो. आ प्रमाणे लग्ननुं स्पष्टीकरण कर्युं.

हवे प्राये करीने दिवसे काळनुं ज्ञान शंकु छायाने आधीन छे, तेथी करीने काळथकी छाया अने छायाथी काळ आणीने बतावे छे तेमा प्रथम सूक्ष्म रीते दिनमान लाववानी रीत आ प्रमाणे छे.

"दत्तायनांशा रविभुक्तभागाः, पलेन गुण्या दिनवृद्धिहान्योः ।
षष्ट्याप्तिलब्ध घटिकाद्यमेतत्स्यादाढ्यमूनं प्रथमद्युमानात् ॥ १ ॥"

"सूर्ये भोगवेला अंशोमां अयनांशो नाखवा पछी तेने दिवसनी वृद्धि अथवा हानिना पळोवडे गुणवा. तेने ६० वडे भाग देवाथी जे घडी विगेरे लाधे ते संक्रांतिना पहेला दिवसना मानमां नाखवा अथवा ओछा करवा"

इष्ट दिवसने विषे सूर्ये पोते आक्रमण करेली राशिना जेटला त्रिंशांशो भोगव्या होय तेमा ते वर्षना अयनांशो नाखी तेने उपर (प्रथम) जे राशि आवी होय ते राशि संबंधी पूर्वे कहेला कर्कत्यादि (पत्र १७)ने आधारे दिननी वृद्धि अथवा हानिना जे पळो होय तेवडे गुणी साठे भागता जे लाधे ते घडी विगेरेने रसदिनाढ्य (१–१९ ना अर्थमा पत्र १७) इत्यादि श्लोकमा कहेला मुख्य अहर्मान (दिनमान)मा मकरादिक

છ રાશિમાં સૂર્ય હોય તો નાખવા, અને કર્કાદિક છ રાશિમાં સૂર્ય હોય તો તેમાંથી બાદ કરવા. એમ કરવાથી સ્પષ્ટ દિનમાન આવશે. તે દિનમાનને સાઠ ઘડીના પ્રમાણવાળા રાત્રિ દિવસના માનમાંથી શોધીએ ત્યારે શેષ રહેલું રાત્રિમાન સ્પષ્ટ થાય છે. આ દિનમાન તથા રાત્રિમાન કુલિકને સ્પષ્ટ કરવો એ વિગેરેમાં ઉપયોગી છે.

ઉદાહરણ—અહીં–ઇષ્ટ દિવસે મેષ રાશિનો સૂર્ય થયા પછી સત્તરમે દિવસે પ્રાતઃકાળે ઘડી ૧૩ પળ ૩૨ સમયે "સ્ફુટોઽથ ભાનુઃ" (૫–૬૬) ઇત્યાદિ રીતિએ કરીને સ્પષ્ટ કરેલા સૂર્યવડે ભોગવાયેલા અંશો ૧૬, કળા ૩, વિકળા ૩૦ થઇ છે. તેમાં અયનાંશ ૧૫, કળા ૩૪ નાખવાથી રાશિ ૧, અંશ ૧, કળા ૩૭, વિકળા ૩૦ થાય છે. અહીં અયનાંશ સહિત કરેલા સૂર્યે મેષ રાશિ સંપૂર્ણ ભોગવી, તથા વૃષ રાશિનો અંશ ૧, કળા ૩૭, વિકળા ૩૦ પણ ભોગવી એમ સિદ્ધ થયું, તેથી અહીં વૃષ રાશિ સંબંધી દિવસની વૃદ્ધિ પળ ૨, અક્ષર ૫૨ છે, તેથી અંશાદિક અંકો ગોમૂત્રિકાની રીતે બે સ્થાને સ્થાપન કરી એક સ્થાને ૨ વડે અને બીજે સ્થાને ૫૨ વડે ગુણવાના છે.

સ્થાપના—

૨	૫૨
૧	૧
૩૭	૩૭
૩૦	૩૦
ગુણવાથી	
૨	
૭૪	૫૨
૬૦	૧૯૨૪
	૧૫૬૦

છેલ્લા (૧૫૬૦) અંકને ૬૦ વડે ભાગ દેતાં ભાગમાં ૨૬ આવ્યા, તેને ઉપર (૧૯૨૪) માં નાખ્યા ત્યારે ૧૯૫૦ થયા. આ રાશિને પહેલી રાશિના નીચલા અંક ૬૦ માં નાખવાથી ૨૦૧૦ થયા. તેને ૬૦ વડે ભાગ દેતાં ૩૩ લાધ્યા. તેને ઉપરના (૫૨) અંકમાં નાખવાથી ૮૫ પળ થયા. તેમાં પહેલી રાશિમાં સમ પંક્તિએ રહેલા અંક ૭૪ માં નાખવાથી ૧૫૯ થયા. તેને ૬૦ વડે ભાગ દેતાં શેષ ૩૯ અક્ષર રહ્યા, અને ભાગમાં ૨ પળ આવ્યા, તેને ઉપરના બે પળમાં નાખવાથી પળો ૪ થયા. તેને ૬૦ વડે ભાગ દેતાં ભાગ ચાલતો નથી, માટે ઘડીને સ્થાને શૂન્ય આવી. સ્થાપના–ઘડી ૦, પળો ૪, અક્ષર ૩૯. આ રાશિને વૃષના પહેલા દિવસના અહર્માન ઘડી ૩૧, પળ ૪૬ માં નાખવાથી ઘડી ૩૧,

पळ ५०, अक्षर ३९ थया. आ ते दिवसनुं स्पष्ट मान थयुं, तथा ते दिवसनी रात्रिनुं मान घडी २८, पळो ९, अक्षर २१ थाय छे. (६० मांथी ३१–५०–३९ बाद करवाथी)

हवे एज मानथी मध्य छाया लाववानी रीत कहे छे —

"ज्येष्ठाद्दिनाद्दिनं शोध्यं शेषाद्दशगुणात्स्वतः ।
त्यजेत्सप्तशरै ५७ र्लब्धं सूर्यै १२ र्मध्याह्न्यः स्मृताः ॥ १ ॥"

"मोटा दिनमानमांथी इष्ट दिवसनुं दिनमान बाद करवुं बाकी रहेलाने दशे गुणवा. पछी तेने ५७ वडे भाग देवो जे लाधे तेने १२ वडे भाग देवो. जे लाधे ते मध्याह्नना पाद (पाँया–पगलां) जाणवा.".

इष्ट दिवसनुं अहर्मान (दिनमान) मोटा अहर्मानमाथी दूर करवुं. शेष रहे तेने दशे गुणवा त्यारपछी "स्वतः" एटले तेज अंकने नीचे मूकी ५७ वडे भाग देता जे लाधे ते मुख्य अंकमांथी बाद करवुं जो भाग न चाले अने ५७ नी अपेक्षाए उपरनो अंक अर्धथी अधिक होय तो एक आखो ग्रहण करीने मुख्य अंकमाथी बाद करवो. त्यारपछी तेने १२ वडे भाग देवो. जे लाधे ते मध्याह्ननी छायाना पाद जाणवा, अने शेष रहे ते अंगुल जाणवा

जेमके—अहीं इष्ट दिनमान (घडी ३१, पळ ५०, अक्षर ३९) ने मोटा दिनमान घडी ३३, पळ ४० माथी बाद कर्युं त्यारे घडी १, पळ ५७, अक्षर २१ रह्या आ शेष होवाथी तेने दशवडे गुणी ६० वडे भाग दइ दइने उपर उपर नाखवाथी नीचे (शेष) ३३ रह्या अने उपर (भागमा) १९ आव्या आ (१९)ने ५७ वडे भागी शकाशे नहीं तेमज ५७ नी अपेक्षाए अर्धथी अधिक पण नथी, तेथी ते रीत कर्या विनाज ते (१९)ने बारे भाग देता १ पाद लाध्यो. शेष अंगुल ७ अने ३३ व्यंगुल थया. आ प्रमाणे इष्ट दिवसनी मध्याह्न छाया थइ

हवे आ मध्याह्न छायाथी इष्ट काळनी छाया लाववानी रीत कहे छे.—

"खमही कर २१० हतदिवसे विहृते वाञ्छितपलैर्द्युगतशेषैः ।
लब्धं मध्यपदैर्युग् नग ७ रहितं स्यात् पदच्छाया ॥ १ ॥
शेषमर्क १२ गुणं कृत्वा वाञ्छितैस्तु पलैर्हृतम् ।
लब्धमङ्गुलसंज्ञं स्यादेवं छायाङ्गुलागमः ॥ २ ॥"

"इष्ट दिनमानने २१० वडे गुणवुं तेने वाछित दिनना (मध्याह्न पहेला होय तो) गयेला पळोए[1] अथवा (मध्याह्न पछी होय तो) शेष पळोए भाग देवो जे लाधे तेने

[1] वाछित (इष्ट) दिवसनी जेटली घडी तथा पळ होय ते सर्वना पळ करवा.

मध्याह्ननी छायाना पादे करीने युक्त करी तेमांथी ७ बाद करतां जे रहे ते पाद छाया जाणवी. भाग देतां जे शेष रह्या होय तेने बारे गुणी तेज वांछित पळोए भाग देवो. जे लाधे ते अंगुल (शेष रहे ते व्यंगुल) थाय छे. आ प्रमाणे छायाना अंगुल (अने व्यंगुल) आवे छे."

उदाहरण—इष्ट दिवसनुं दिनमान घडी ३१, पळ ५०, अक्षर ३९ छे, ते सर्वने २१० वडे गुणवाथी ६५१०, १०५००, ८१९० थया. तेने ६० वडे भाग दइ दइ उपर उपर नाखवाथी नीचे (छेल्ले) ३०, तेनी उपर (पहेलां) १६, अने तेनी पण उपर ६६८७ थया. पछी "द्युगत" एटले दिवसनो पूर्व भाग होय तो गयेला पळोवडे अने दिवसनो पाछलो भाग होय तो शेष (बाकी रहेला) पळोवडे भाग देवो एम कह्युं छे, तेथी अहीं प्रथम आणेली घडी १३, पळ ३२ छे तेना पळो ८१२ थया. आ ८१२ वडे तेनो (६६८७) भाग देवो. भागमां ८ आव्या, ते पाद थया. शेष १९१ रह्या. तेने १२ वडे गुणी नीचेना १६ नाखवाथी २३०८ थया. तेने ८१२ वडे भाग देतां भागमां २ अंगुल लाध्या. शेष ६८४ रह्या. तेने व्यंगुल लाववा माटे ६० वडे गुणी नीचेना ३० मेळववाथी ४१०७० थया. तेने पण ८१२ वडे भाग देतां भागमां ५० व्यंगुल आव्या. शेष ४७० रह्या तेनो त्याग करवो, (अथवा अर्ध उपर होवाथी ५० मां एक वधारी ५१ व्यंगुल करवा,) तेथी पाद ८, अंगुल २, व्यंगुल ५० (५१) थया. तेमां मध्याह्ननी छायाना पाद १, अंगुल ७, व्यंगुल ३३ नाखवाथी पाद ९, अंगुल १०, व्यंगुल २३ (२४) थया. पादना अंकमांथी ७ बाद करतां पाद २, अंगुल १०, व्यंगुल २३ (२४) थया. आ सात अंगुलनी शंकु छाया १३ घडी अने ३२ पळ समये थइ एम सिद्ध थयुं.

हवे तेनी प्रतीतिने माटे एज छायाथी आ काळ लावे छे.—

"साद्रि ७ शङ्कुपदैरर्क १२ गुणैर्मध्याङ्गुलोनितैः ।
द्विवेद ४२ घ्ने दिने भक्ते द्युगतं शेषमाप्यते ॥ १ ॥"

"शंकुना पादमां ७ उमेरी बारे गुणी अंगुल करवा. (तेमां उपर वधेला अंगुल पण नाखवा.) पछी मध्याह्ननी छायाना अंगुल करी तेमांथी बाद करवा. जे शेष रहे तेणे करीने इष्ट दिवसना दिनमानने (घडी, पळ अने अक्षरने) ४२ वडे गुणीने भाग देवो. जे आवे ते गयेलो दिवस जाणवो एटले तेटली घडी अने पळ दिवस चड्यो छे एम जाणवुं."

जेमके—अहीं शंकुना पाद २ छे, तेमां ७ नाखवाथी ९ थया. तेने बारे गुणवाथी

---

१ आ ८ मां मध्याह्ननी छाया नाखी तेमांथी ७ बाद करवाना छे. ते शेषनी रीत बताव्या पछी कहेशे.

१०० अंगुल थया. तेमां उपर वधेला अंगुल १० नाखवाथी ११० थया हवे मध्याह्ननी छाया पाद १, अंगुल ७ छे, तेना अंगुल करवाथी १९ थया ते १९ ने ११० मांथी बाद करतां ९१ रह्या हवे ते दिवसना दिनमानना त्रण अंकने पृथक् पृथक् ४२ वडे गुणी ६० वडे भाग दइ दइने उपर उपर नाखवाथी नीचे ४२, तेनी उपर २८, अने तेनी पण उपर १३३७ आवे छे तेने ९१ वडे भाग देतां १३ घडी लाधी. शेष ५० रह्या. तेने ६० वडे गुणी तेमां नीचेना २८ भेळववाथी ३०२८ थया तेने ९१ वडे भाग देता पळ ३० लाध्या शेष ५८ रह्या तेने ६० वडे गुणी नीचेना ४२ नाखवाथी ३५२२ थया. तेने पण ९१ वडे भाग देता अक्षर ३८ लाध्या. शेष ५७ रह्या. ते (५७) ९१ नी अपेक्षाए अर्धाधिक होवाथी अक्षरमां एक वधार्यो, तेथी अक्षर ३६ थया. आ (३६) पण ६० नी अपेक्षाए अर्धाधिक होवाथी पळमां एक वधार्यो, तेथी पळ ३१ थया, तेथी करीने २ पाद, १० अंगुल अने २४ व्यंगुलनी छाया होय त्यारे १३ घडी अने ३१ पळ जेटलो दिवस चढेलो होय एम सिद्ध थयुं, अने दिवसना पाछला भागमा जो आ छाया लइए तो तेटला घडी, पळ दिवस बाकी रह्यो छे एम जाणवुं आ बीजी रीत होवाने लीधे एक बे पळनो फरक पडे तेमां काइ पण दोष नथी एम जाणवुं आ रीते प्रसंगने लीधे छाया अने काळ लाववानी रीत कही

हवे प्रकृत होवाथी ग्रहोनुं अने तेमनी गतिनुं स्पष्टीकरण कहे छे —

"गतेष्टनाड्यो गुणिता खखेभैः, ८००-६००-४००-२०० सर्वर्क्षनाडीविहृताः कलाद्यम्।
भुक्तर्क्षयुक्तं सकला ग्रहाः स्युः, पष्ट्या हृतेऽभ्रष्टशतेषु भुक्तिः ॥ १ ॥"

"इष्ट दिवसे जे ग्रह होय तेनी गयेली घडीओ ८००–६००–४०० के २०० वडे गुणवी. त्यारपछी तेने नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग देवो जे आवे ते कळादिक जाणवा पछी तेमां भोगवाइ गयेली नक्षत्रोनी कळाओ नाखवी ते कळा पण ८००–६००–४०० के २०० होय छे पछी तेने ६० वडे भाग देता जे आवे ते अंशादिक जाणवा (आ रीते ग्रहो स्पष्ट थाय छे) पछी ८०० विगेरेने साठे गुणी नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग देवाथी ते ग्रहोनी गति आवे छे"

---

१ उपर दिनमान घडी ३१, पळ ५०, अक्षर ३९ लखेला छे. गणितनी रीते पण तेटलाज थाय छे, परन्तु अहीं घडी ३१–५०–४१ लइने गणित कर्युं होय तेम जणाय छे अन्यथा गणित मळतु आवतु नथी प्रथमना गणितमा ३९ ने बदले अर्धाधिक वधेला करीने ४० तो थइ शके छे तेने बदले ४१ अक्षर लीधा, तेनु कारण बीजी रीत होवाथी तेटलो फरक लेवामा अडचण नथी एम धारवु योग्य छे.

आ श्लोकनुं भाष्य आ प्रमाणे छे.—

"इष्टात्प्रागगतनाड्योऽष्टशताद्यैर्गुणितास्ततः ।
सर्वर्क्षघटिकाभक्ताः कलाद्याः स्युरिति स्फुटम् ॥ १ ॥
भुक्तऋक्षाष्टशत्यादिप्रमाणसहितास्ततः ।
षष्टिभक्तेऽंशकादि स्याच्छेषे षष्टिगुणे ततः ॥ २ ॥
सर्वर्क्षघटिकाभक्ते लब्धं स्याद्विकलादिकम् ।
एवं स्पष्टा ग्रहाः सर्वे कर्तव्या गणकोत्तमैः ॥ ३ ॥"

"इष्ट ग्रहनी पहेलां जेटली घडीओ गइ होय तेने आठसो विगेरे वडे गुणवी. त्यारपछी नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग देवो, भाग देतां जे आवे ते कळादिक स्पष्ट रीते आवे छे. त्यारपछी भोगवायेलां नक्षत्रोनुं जे आठसो विगेरे प्रमाण छे तेने ते कळाओमां नाखवुं. पछी तेने ६० वडे भाग देतां जे लाधे ते अंशादिक जाणवा. तथा ते ८०० विगेरेने ६० वडे गुणी नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग देवो. जे लाधे ते कळा अने शेष रहे ते विकळारूप ते ग्रहोनी गति स्पष्ट थाय छे. आ रीते गणित जाणनाराओए सर्वे ग्रहो स्पष्ट करवा."

अहीं आठसो विगेरे कह्युं छे तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे.—आखा नक्षत्रनी गत नाडीओवडे गुणवा होय तो ते आखा नक्षत्रनो भोगवटो आठसो कळानो छे, माटे आठसो-वडे गुणाकार करवो, अने ज्यां नक्षत्रना त्रण पादनी, बे पादनी के एक पादनी गत नाडीओ इष्ट होय त्यां अनुक्रमे छसो, चारसो अने बसोवडे गुणाकार करवो एम जाणवुं. नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग देवानुं कह्युं त्यां पण आखा (चार पादवाळा) नक्षत्रनी, त्रण पादवाळा, बे पादवाळा के एक पादवाळा नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे ते ते ठेकाणे भागाकार जाणवो. एज प्रमाणे भोगवायेलां नक्षत्रोना आठसो विगेरे प्रमाणे करीने सहित करवानुं कह्युं छे, त्यां पण एक, बे के त्रण पाद भोगवाइ गयानो संभव होय त्यारे पण अनुक्रमे २००–४०० के ६०० कळाओनो लाधेली कळाओमां प्रक्षेप करवो एम जाणवुं. "ऋक्ष" शब्दनो अर्थ "राशि" पण थइ शके छे, तेथी ते ग्रहे जेटली राशिओ भोगवी होय ते राशिनो अंक पण माथे (उपर) लखवो.

आज अर्थ स्पष्टपणे कहे छे.—

"इन्दोर्गुण्या गता घट्योऽष्टशत्या प्रतिभं सदा ।
भौमसूर्यज्ञशुक्राणां गुण्या अष्टशतादिभिः ॥ १ ॥
शनिवाक्पतिराहूणां द्विशत्या पादगत्वतः ।
गता घट्यो हता भांह्रिघट्यासं स्यात्कलादिकम् ॥ २ ॥

राहोर्वामगतित्वेन लब्धा या विकलाः कलाः ।
शोध्यास्ता द्विशतीमध्याच्छेषं भोग्यकला इह ॥ ३ ॥"

"चंद्रनी गत घडीओने ८०० वडे गुणवी मंगळ, सूर्य, बुध अने शुक्रनी गत घडीओ ८०० विगेरे वडे गुणवी. एक पादमां रहेला होवाथी शनि, गुरु अने राहुनी गत घडीओ २०० वडे गुणवी पछी तेने नक्षत्रना पादनी सर्व घडीओवडे भाग देवाथी जे लाधे ते कळादिक भुक्त थाय छे, परंतु राहु वाम गतिवाळो होवाथी जे कळा विकळा लाधे ते बसोमांथी बाद करवी. जे बाकी रहे ते भोग्य कळादिक थाय छे."

चंद्रनी गत घडीओ ८०० वडे गुणवानी कही तेनुं कारण ए छे जे—सर्वत्र चंद्रनो चार (गति) नक्षत्रनी अपेक्षाए करीनेज टीपणामा लख्यो होय छे. मंगळ विगेरेने आठसो विगेरेथी गुणवानुं कह्यु तेनुं कारण ए के—भौमादिकनो चार टीपणामा नक्षत्रनी अपेक्षाए तेमज राशिनी अपेक्षाए पण लखेलो होय छे, तथा शनि विगेरेनो चार तो नक्षत्रना एक पादनीज अपेक्षाए लखेलो होय छे, तेथी एक पादनी अपेक्षाएज तेओनी वर्तना करवी, एटले के नक्षत्रना एक पादनी गयेली ५८ घडीओ २०० वडे गुणता जे आवे तेने नक्षत्रना एक पादथी बीजा पादमां जता वच्चे जेटली घडीओ होय ते सर्व घडीओवडे भाग देवो. जे कळादिक लाधे ते भुक्त थाय छे, परंतु राहुनी वाम गति होवाथी जे लावे ते २०० माथी बाद करवी शेष रहे ते राहुए ते पादनुं थयुं एम जाणवुं पछी तेमा भोग्य नक्षत्रनी ८०० विगेरे घडीओ नाखवी अहीं राशि पण जेटली भोग्य होय तेज उपर लखवी आ प्रमाणे सूर्यादिक ग्रहोनी वर्तना को' वखत एक पादनी अपेक्षाए अने कोइ वखत बे त्रण पादनी अपेक्षाए पण करवामा छे मात्र आज रीतिए करीने सूर्यादिक सात ग्रहो भुक्तनी अपेक्षाए स्पष्ट थाय छे, अने राहु तो भोग्यनी अपेक्षाए स्पष्ट थाय छे. जो राहुनी राशिना अंकमा ७ नाखीए तो केतु पण भोग्यनी अपेक्षाएज स्पष्ट थाय छे

(ग्रहोनी गति लाववानी रीत—) उपरना प्रथम श्लोकमां "पष्ट्या हतेष्वष्टशतेषु भुक्तिः" (आठसोने साठे गुणता भुक्ति आवे छे) आ ठेकाणे "सर्वर्क्षनाडीविहृतेषु" (नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग दीधेला एवा आठसो) एटलुं अध्याहार छे, तेथी करीने तेनो आवो अर्थ थाय छे—आठसोने अथवा संभव प्रमाणे छसो, चारसो के बसोने साठे गुणी नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे अथवा संभव प्रमाणे त्रण, बे के एक पादनी घडीओवडे भाग देवाथी जे जे फळ आवे तेटली कळा विकळारूप ग्रहोनी दिवस सबंधी गतिनुं मान जाणवुं.

हवे अहीं तत्काळ (इष्ट काळ)ना नव ग्रहोने स्पष्ट करीने उदाहरण बतावे छे. तेमां सूर्य तो प्रथमज स्पष्ट करी बताव्यो छे, परंतु तेनी गति कही नथी, तेथी तेनुं बारे संक्रांतिमां अनुक्रमे कळा विकळारूप दिवसनी गतिनुं मान प्राये करीने आ प्रमाणे होय छे.—

"वस्वर्था निधयो ५८-९ नवेषुसधृति ५९-१८ द्विःषट्शरं ५६-५६ न्यूनिका,
षष्टिर्द्वादश ५७-१२ कुञ्जरेषुगगनं ५८-० चैकोनषष्टिर्हयाः ५९-७ ।
षष्टिर्विश्वयुता ६०-१३ कुषट्च सगुणा ६१-३ कङ्कं द्वियुग्विंशतिः ६१-२२,
कङ्कं सन्निधि ६१-९ षष्टिका युगयुगं ६०-२२ खेटेषु धृत्या युतम् ५९-१८ ॥ १ ॥"

"मेष राशिनी संक्रांतिमां सूर्यनी गति कळा ५८, विकळा ९ होय छे, एज रीते वृष—५९-१८, मिथुन—५६-५६, कर्क—५७-१२, सिंह—५८-०, कन्या—५९-७, तुला—६०-१३, वृश्चिक—६१-३, धन—६१-२२, मकर—६१-९, कुंभ—६०-२२, मीन—५९-१८."

ते दिवसे चंद्र पुष्य नक्षत्र (तथा कर्क राशि)मां छे. तेनी गत घमीउं कार्य वखते १७ छे. तेने ८०० वमे गुणतां १३६०० थया. तेने पुष्यनी सर्व घमीउं ६६ वमे नाग देतां लाधेली कळा २०६, विकळा ३, शेष ४२. आ (४२) ६६ नी अपेक्षाए अर्धाधिक होवाथी विकळा ४ थइ. पछी पुनर्वसुना छेल्ला पादनी २०० कळाउं उपरनी कळा (२०६) मां नाखवाथी कळा ४०६ थइ. तेने ६० वमे नाग देतां लाध्या अंश ६, कळा ४६, विकळा ४. भुक्त राशि त्रण होवाथी तेने उपर लख्यो, तेथी ते वखते स्पष्ट चंद्र राशि ३-६-४६-४ थयो. तेनी गति कळा ७२७, विकळा १६ छे.

ते दिवसे मंगळ उत्तरनाद्रपदमां (तथा मीन राशिमां) छे. ते वखते गत घमीउं १४९ छे. ते आ रीते—उत्तरनाद्रपदमां मंगळ ४४. ते दिवसनी शेष घमीउं १६, कार्यना दिवसनी घमीउं १३ अने वच्चेना बे दिवसनी घमीउं १२० छे, ते सर्व मळवाथी १४९ थाय छे. तेने ८०० वमे गुणवाथी ११९२०० थाय छे. तेने नक्षत्रनी सर्व घमीउं १०२२ वमे नागवाथी कळा ११६, विकळा ३८ थाय छे. पूर्वनाद्रपदना छेल्ला पादनी २०० कळाउं उपरनी कळाउंमां नाखवाथी ३१६ थाय छे. तेने ६० वमे नाग देतां अंश ५, कळा १६, विकळा ३८ थइ. गत राशि ११ नो अंक उपर मूकवाथी स्पष्ट मंगळ राशि ११-५-१६-३८ थयो. तेनी गति कळा ४६, विकळा ५८ छे.

ते दिवसे बुध वृष राशिमां कृत्तिका नक्षत्रमां छे. ते वखते गत घमीउं १७० छे. ते आ रीते.—वृषमां बुध २३. ते दिवसे शेष घमीउं ३७, कार्यना दिवसनी घमीउं १३,

वच्चेना बे दिवसनी घमीर्उ १२०, ते सर्व मळी १७० थाय छे. तेने कृत्तिकाना त्रण पादज वृषमा रहेला होवाथी ६०० वडे गुणतां १०२००० थया त्यारपछी तेने वृषे बु० थी आरंभीने रोहि० बु० त्यांसुधीना त्रण पादनी जे घमीर्उ छे ते सर्व घमीर्उ ४५७ छे. तेवडे भाग देतां कळा २२३, विकळा ११, शेष ३१३ रह्या ते ४५७ नी अपेक्षाए अर्धाधिक होवाथी विकळा १२ थइ. कळाउने ६० वडे भाग देतां अंश ३ लाध्या. तेनी उपर भुक्त राशि १ मूकवाथी स्पष्ट बुध १–३–४३–१२ थया. तेनी गति ६०० ने ६० वडे गुणी त्रण पादनी घमीर्उ ४५७ वडे भाग देता कळा ७०, विकळा ४६ आवे छे.

ते दिवसे गुरु आर्द्रांना पहेला पादमा छे ते वखते गत घमीर्उ २७६ छे ते आ रीते —रौद्रे प्र० गु० ३७. ते दिवसनी शेष घमीर्उ २३, कार्यना दिवसनी घमीर्उ १३ अने वच्चेना चार दिवसनी घमीर्उ २४० मळीने २७६ थाय छे. तेने गुरु एक पादमा रहेल होवाथी २०० वडे गुणता ५५२०० थया, तेने आर्द्रांना पहेला पादनी सर्व भोग घमीर्उ ११८२ वडे भाग देता कळा ४६, विकळा १८ थइ कळामां अर्धा मृगशिरनी कळा ४०० नाखवाथी ४४६ कळा थइ तेने ६० वडे भाग देता अंश ७ लाध्या. उपर भुक्त बे राशि मूकवाथी स्पष्ट गुरु २–७–२६–१८ थयो. तेनी गति लाववा माटे २०० ने ६० वडे गुणी आर्द्रांना एक पादनी सर्व घमीर्उ (११८२) वडे भाग देतां कळा १०, विकळा ४ थइ

ते दिवसे शुक्र पूर्वभाद्रपदमा छे ते वखते गत घमीर्उ ५४१ छे ते आ रीते.— "पू. भ. सित" पूर्वभाद्रपद शुक्र १२. ते दिवसनी शेषघमीर्उ ४८, इष्ट दिन घमीर्उ १३ तथा वच्चेना आठ दिवसनी घमीर्उ ४८० मळी ५४१ थाय छे. तेने पूर्वभाद्रपदना त्रण पाद कुंभना होवाथी ६०० वडे गुणतां ३२४६०० थाय छे. तेने "मीने सि०" मीनना शुक्र, तेनी पहेलानी सर्व घमीर्उ ५८२ वडे भाग देता कळा ५५७ विकळा ४४ थइ कळाम, उ भुक्त नवांशकनी कळा १२०० नाखवाथी कळा १७५७, विकळा ४४ थइ तेने ६० वडे भाग देता अंशो २९ लाध्या उपर १० राशि देवाथी स्पष्ट शुक्र राशि १०–२९–१७–४४ थयो. तेनी गति कळा ६१, विकळा ५१ थाय छे

ते दिवसे वक्र शनि अनुराधाना चोथा पादमां छे ते वखते गत घमीर्उ १४७७ छे. ते आ रीते —"पुनरनु० च श०" ३६ ते दिवसनी शेष घमीर्उ २४, इष्ट दिन घमीर्उ १३ अने वच्चेना २४ दिवसनी घमीर्उ १४४० मळवाथी १४७७ थाय छे तेने शनि एक पादमा रहेलो होवाथी २०० वडे गुणतां २९५४०० तेने चोथा पादनी सर्व भोग घमीर्उ ४१८२ वडे भाग देता कळा ७०, विकळा ३८ थइ तेने शनि वक्र होवाथी २०० माथी

बाद करतां कळा १२९, विकळा २२ रही. तेमां चार नवांशकनी कळा ८०० नाखवाथी कळा ९२९ थइ. तेने ६० वडे भाग देतां अंश १५ लाध्या. उपर ७ राशि देवाथी स्पष्ट शनि राशि ७–१५–२९–२२ थयो. तेनी गति कळा २, विकळा ५२ छे.

ते दिवसे राहु चित्राना छेल्ला पादमां छे. ते वखते गत घडीओ १२८३ छे. ते आ रीते.—चित्रा० च० रा० ५०. ते दिवसनी शेष घडीओ १०, कार्य दिन घडीओ १३ अने वच्चेना २१ दिवसनी घडीओ १२६० मळी १२८३ थाय छे. तेने राहु एक पादमां रहेलो होवाथी २०० वडे गुणतां २५६६०० थया. तेने चित्राना छेल्ला पादनी सर्व भोग घडीओ ३७७४ वडे भाग देतां कळा ६७, विकळा ५९ थइ. तेने २०० मांथी बाद करतां कळा १३२, विकळा १ रही. कळामां कन्या राशिमां रहेला चित्राना त्रीजा पादनी २०० कळाओ नाखवाथी ३३२ कळा थइ. तेने ६० वडे भाग देतां अंश ५ लाध्या. उपर ६ राशि देवाथी भोग्यनी अपेक्षाए स्पष्ट राहु ६–५–३२–१ थयो. तेनी गति कळा ३, विकळा ११ आवे छे.

राहुनी राशिना अंकमां ६ नाखवाथी स्पष्ट केतु राशि ०–५–३२–१ थाय छे. तेनी गति राहु प्रमाणे जाणवी.

ते काळना स्पष्ट करेला नव ग्रहोनी तथा तेमनी गतिनी स्थापना.—

रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
०	३	११	१	२	१०	७	६	०
१६	६	५	३	७	२९	१५	५	५
३	४६	१६	४३	२६	१७	२९	३२	३२
३०	४	३८	१२	१८	४४	२२	१	१
५८	७२७	४६	७८	१०	६१	२	३	३
९	१६	५८	४६	४	५१	५२	११	११

अहीं कोइने शंका थाय के—ग्रहोने अने तेनी गतिने स्पष्ट करवानुं शुं फळ? तेनो जवाब आ छे.—प्रथम कार्यने समये स्पष्ट करेला ग्रहना काळ पछी अने बीजुं कार्य जे वखते करवुं होय ते वखतनी पहेलां जेटली घडीओ गइ होय ते घडीओने बे वार स्थापन करवी. पछी तेने कळा विकळारूप प्रतिदिननी गतिवडे अनुक्रमे गुणवी. पछी तेने साठे भागतां जे कळादिक लाधे तेने प्रथमना कार्यनी वेळाए स्पष्ट करेला ग्रहोने मध्ये नाखवा, पण जो वक्री ग्रह होय तो तेमांथी अने भोग्यनी अपेक्षाए स्पष्ट करेला राहुमांथी बाद करवा. तेम करवाथी बीजा कार्यनी वेळाए ग्रहो स्पष्ट थाय छे.

वच्चेना वे दिवसनी घमीर्ड १२०, ते सर्व मळी १७० थाय छे. तेने कृत्तिकाना त्रण पादज वृषमा रहेला होवाथी ६०० वमे गुणतां १०२००० थया. त्यारपछी तेने वृषे बु० थी आरंभीने रोहि० बु० त्यांसुधीना त्रण पादनी जे घमीर्ड छे ते सर्व घमीर्ड ४५७ छे. तेवमे भाग देता कळा २२३, विकळा ११, शेष ३१२ रह्या ते ४५७ नी अपेक्षाए अर्धाधिक होवाथी विकळा १२ थइ. कळार्डने ६० वमे भाग देतां अंश ३ लाध्या. तेनी उपर भुक्त राशि १ मूकवाथी स्पष्ट बुध १-३-४३-१२ थया. तेनी गति ६०० ने ६० वमे गुणी त्रण पादनी घमीर्ड ४५७ वमे भाग देतां कळा ७०, विकळा ४६ आवे छे.

ते दिवसे गुरु आर्द्राना पहेला पादमां छे. ते वखते गत घमीर्ड २७६ छे. ते आ रीते—रौद्रे प्र० गु० ३७. ते दिवसनी शेष घमीर्ड २३, कार्यना दिवसनी घमीर्ड १३ अने वच्चेना चार दिवसनी घमीर्ड २४० मळीने २७६ थाय छे. तेने गुरु एक पादमां रहेल होवाथी २०० वमे गुणता ५५२०० थया, तेने आर्द्राना पहेला पादनी स घमीर्ड ११९२ वमे भाग देता कळा ४६, विकळा १० थइ कळामां अर्धा मृग कळा ४०० नाखवाथी ४४६ कळा थइ तेने ६० वमे भाग देता अंश ७ लाध्या. उपर भुक्त बे राशि मूकवाथी स्पष्ट गुरु २-७-२६-१० थयो. तेनी गति लाववा माटे २०० ने ६० वमे गुणी आर्द्राना एक पादनी सर्व घमीर्ड (११९२) वमे भाग देतां कळा १०, विकळा ४ थइ

ते दिवसे शुक्र पूर्वभाद्रपदमां छे ते वखते गत घमीर्ड ५४१ छे ते आ रीते.—"पू. भ सित" पूर्वभाद्रपद शुक्र १२. ते दिवसनी शेष घमीर्ड ४८, इष्ट दिन घमीर्ड १३ तथा वच्चेना आठ दिवसनी घमीर्ड ४८० मळी ५४१ थाय छे तेने पूर्वभाद्रपदना त्रण पाद कुंभना होवाथी ६०० वमे गुणता ३२४६०० थाय छे. तेने "मीने सि०" मीनना शुक्र तेनी पहेलानी सर्व घमीर्ड ५०२ वमे भाग देता कळा ५५७ विकळा ४४ थइ. कळामां छ भुक्त नवांशकनी कळा १२०० नाखवाथी कळा १७५७, विकळा ४४ थइ. तेने ६० वमे भाग देता अंशो २९ लाध्या. उपर १० राशि देवाथी स्पष्ट शुक्र राशि १ १७-४४ थयो. तेनी गति कळा ६१, विकळा ५१ थाय छे.

ते दिवसे वक्र शनि अनुराधाना चोथा पादमां छे ते वखते गत घमीर्ड १४७७ छे. ते आ रीते.—"पुनरनु० च श०" ३६ ते दिवसनी शेष घमीर्ड २४, इष्ट दिन घमीर्ड १३ अने वच्चेना २४ दिवसनी घमीर्ड १४४० मळवाथी १४७७ थाय छे. तेने शनि एक पादमां रहेलो होवाथी २०० वमे गुणता २९५४०० तेने चोथा पादनी सर्व भोग घमीर्ड ४१०२ वमे भाग देतां कळा ७०, विकळा ३० थइ तेने शनि वक्र होवाथी २०० मांथी

बाद करतां कळा १२९, विकळा २२ रही. तेमां चार नवांशकनी कळा ८०० नाखवाथी कळा ९२९ थइ. तेने ६० वडे भाग देतां अंश १५ लाध्या. उपर ७ राशि देवाथी स्पष्ट शनि राशि ७–१५–२९–२२ थयो. तेनी गति कळा २, विकळा ५२ छे.

ते दिवसे राहु चित्राना छेल्ला पादमां छे. ते वखते गत घडीओ १२८३ छे. ते आ रीते.—चित्रा० च० रा० ५०. ते दिवसनी शेष घडीओ १०, कार्य दिन घडीओ १३ अने वच्चेना २१ दिवसनी घडीओ १२६० मळी १२८३ थाय छे. तेने राहु एक पादमां रहेलो होवाथी २०० वडे गुणतां २५६६०० थया. तेने चित्राना छेल्ला पादनी सर्व भोग घडीओ ३७७४ वडे भाग देतां कळा ६७, विकळा ५९ थइ. तेने २०० मांथी बाद करतां कळा १३२, विकळा १ रही. कळामां कन्या राशिमां रहेला चित्राना त्रीजा पादनी २०० कळाओ नाखवाथी ३३२ कळा थइ. तेने ६० वडे भाग देतां अंश ५ लाध्या. उपर ६ राशि देवाथी भोग्यनी अपेक्षाए स्पष्ट राहु ६–५–३२–१ थयो. तेनी गति कळा ३, विकळा ११ आवे छे.

राहुनी राशिना अंकमां ६ नाखवाथी स्पष्ट केतु राशि ०–५–३२–१ थाय छे. तेनी गति राहु प्रमाणे जाणवी.

ते काळना स्पष्ट करेला नव ग्रहोनी तथा तेमनी गतिनी स्थापना.—

रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
०	३	११	१	२	१०	७	६	०
१६	६	५	३	७	२९	१५	५	५
३	४६	१६	४३	२६	१७	२९	३२	३२
३०	४	३८	१२	१८	४४	२२	१	१
५८	७२७	४६	७८	१०	६१	२	३	३
९	१६	५८	४६	४	५१	५२	११	११

अहीं कोइने शंका थाय के—ग्रहोने अने तेनी गतिने स्पष्ट करवानुं शुं फळ? तेनो जवाब आ छे.—प्रथम कार्यने समये स्पष्ट करेला ग्रहना काळ पछी अने बीजुं कार्य जे वखते करवुं होय ते वखतनी पहेलां जेटली घडीओ गइ होय ते घडीओने बे वार स्थापन करवी. पछी तेने कळा विकळारूप प्रतिदिननी गतिवडे अनुक्रमे गुणवी. पछी तेने साठे भागतां जे कळादिक लाधे तेने प्रथमना कार्यनी वेळाए स्पष्ट करेला ग्रहोने मध्ये नाखवा, पण जो वक्री [illegible] होय तो तेमांथी अने भोग्यनी अपेक्षाए स्पष्ट करेला [illegible]मांथी बाद करवा. तेम करवाथी बीजा कार्यनी वेळाए ग्रहो स्पष्ट थाय छे.

उदाहरण—पूर्वे कहेलाज वर्ष, मास अने पक्षनी (१९५२ ना वैशाख सुदि) १२ ने दिवसे हस्त नक्षत्रमां सूर्य छते ८ घडी दिवस चडे ते समये कोइए कार्य करवा धार्युं छे, तेथी आ वेळा अने पूर्वे कहेली वेळानुं अंतर ३५५ घडीनुं छे ते आ रीते—पूर्वे वैशाख सुदि ७ ने दिवसे १३ घडीओ कहेली छे, माटे ते दिवसनी शेप घडीओ ४७ रही, तथा हस्तना सूर्यवाळा दिवसनी (सुदि १२ नी)८ घडीओ छे, तथा वचेना पाच दिवसनी घडीओ ३०० थइ. ते सर्व मळी ३५५ घडीओ थइ. हवे मेपमा रहेला सूर्यनी गति कळा ५८, विकळा ९ छे तेवडे वेचार स्थापन करेला ३५५ ने गुणवा स्थापना—५८।९।३५५ गुणता २०५९० ३१९५ नीचेना अंकने ६० वडे भाग देता ५३ लाध्या, तेने उपरना अंकमां नाखवाथी २०६४३ थया तेने ६० वडे भाग देता कळा ३४४ लाधी शेप विकळा ३ रही एज प्रमाणे वीजा चंद्रादिक ग्रहोनी कळा विकळा लावीए त्यारे ते आ प्रमाणे थाय छे.—

	रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
कळा	३४४	४३०२	२७७	४६६	५९	३६५	१६	१८	१८
विकळा	३	५९	५३	२	३३	५६	५७	५०	५०

आ कळा विकळावडे संस्कार करेला पूर्वना ग्रहो वीजा कार्य समये आवा प्रकारना थाय छे —

रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
०	५	११	१	२	११	७	६	०
२१	१८	९	११	८	५	१५	५	५
४७	२९	५४	२९	२५	२३	१२	१३	१३
३३	३	३१	१४	५१	४०	२५	११	११

हवे जे ग्रहो तरतज वक्र थया होय अथवा वक्र थवानी तैयारीमां होय, तथा मार्गीभूत (मार्गे रहेला) होय अथवा मार्गनी सन्मुख होय तेमनुं स्पष्टीकरण कहे छे

"वक्राग्रपश्चिमे भुक्ता भोग्या मार्गाग्रपश्चिमे ।
अन्तरांशकला ग्राह्यास्तासा सीमा च सर्वभम् ॥ १ ॥
वक्रादूर्ध्वं फलं लब्धं भुक्तभागौघतस्त्यजेत् ।
सभोग्यभुक्तभागौघाच्याज्यं मार्गादितः फलम् ॥ २ ॥"

१—३४४ ने ६० वडे भाग देता ५ अंश आव्या ते १६ मा नाखवाथी २१ थया. शेप ४४ कळा रही ते ३ मा नाखता ४७ थइ शेप रहेली ३ विकळा ३० मा नाखवाथी ३३ विकळा थइ

"वक्र थयेला ग्रहनी पछीनी अने पहेलांनी भुक्त एवी अने मार्गी थयेला ग्रहनी पछीनी तथा पहेलांनी भोग्य एवी अंतरांश कळाओ ग्रहण करवी, अने ते सर्व कळाओनी जे सीमा ते सर्वभ कहेवाय छे. १. वक्री थया पछी लाधेलुं जे फळ ते भुक्त अंश–कळाना समूहमांथी बाद करवुं, अने मार्गी थया पछी ते लाधेलुं फळ भोग्य सहित करेला भुक्त अंश–कळाना समूहमांथी बाद करवुं."

आ बे श्लोकोनुं भाष्य आ प्रमाणे छे.—

"वक्रात् पूर्वगता नाड्यो हताः स्वर्क्षकलादिभिः ।
सीमान्तसर्वभघटीविभक्ताः स्युः स्फुटं कलाः ॥ ३ ॥
शेषे षष्टिगुणे सर्वर्क्षलब्धे विकलागमः ।
भुक्तर्क्षयुक्ते तत्राङ्के षष्टिभक्तेऽंशकादिकम् ॥ ४ ॥
वक्रपश्चादपीत्थं स्यात्सीमाधीण्येऽग्रतः स्थिते ।
लब्धं फलं पुनस्त्याज्यं भुक्तभागौघतस्तदा ॥ ५ ॥
मार्गात् पूर्वगता घट्यो गुण्या भोग्यकलादिभिः ।
शेषं प्राग्वद्भोग्ययुक्तभुक्तांशेभ्यः फलं त्यजेत् ॥ ६ ॥
मार्गपश्चात्तु रूढ्येति वक्रिमार्गिग्रहाः स्फुटाः ।"

"वक्रीनी पहेलां गयेली कळाओ पोताना नक्षत्रनी कळाओए गुणवी. तेने सीमान्तनी सर्व नक्षत्रनी घडीओए भाग देवाथी स्फुट कळाओ थाय छे. शेषने ६० वडे गुणी सर्व नक्षत्रनी घडीओए भाग देतां विकळा आवे छे. पछी ते अंकने भुक्त नक्षत्रनी घडीओ सहित करीने ६० वडे भाग देतां अंशादिक आवे छे. हवे वक्री थया पछी पण एज प्रमाणे सीमा नक्षत्र आगळ रहे छते करवुं, परंतु ते वखते भुक्त अंशोना समूहथी लाधेला फळने बाद करवुं. हवे मार्गी थयानी पूर्वे गयेली घडीओ भोग्य कळादिके करीने गुणवी. बीजुं प्रथमनी जेम भोग्य सहित करेला भुक्त अंशोमांथी फळने बाद करवुं, परंतु मार्गी थया पछी तो रूढिथी जाणवुं. आ प्रमाणे वक्री अने मार्गी ग्रहो स्फुट थाय छे."

आ श्लोकोनी व्याख्या आ प्रमाणे छे.—वक्राग्रपश्चिमे एटले ग्रहनुं वक्रपणुं थवा पछी अने पहेलां. मार्गाग्रपश्चिमे एटले मार्गी थया पछी अने पहेलां. अन्तरांशकला ग्राह्याः एटले जेम स्वाभाविक गतिवाळा ग्रहने स्पष्ट करवा माटे गयेली इष्ट घडीओने ८०० कळावडे गुणवानुं कह्युं छे तेम अहीं (गयेली इष्ट घडीओने) वक्री अने मार्गी थवाना

१ आनी रीत आगळ टीकाना विस्तारथी जणाशे.

समये टीप्पणमां लखेला स्पुष्ट अंशो अने कळाओए करीने गुणवी विशेष (तफावत) ए के वक्री थयेला ग्रहनी बन्ने तरफनी (पछीनी अने पहेलानी) स्पुष्ट कळाए करीने अने मार्गी थयेला ग्रहनी बन्ने तरफनी जोग्य कळाए करीने गुणाकार करवो. तासां सीमा च सर्वजं एटले प्रस्तावने लीधे तासां–ते सर्व नाभीओ (घमीओ)ने. जावार्थ ए छे जे–जेम बीजे ठेकाणे सर्व नक्षत्रनी घमीओवमे जाग देवानो कह्यो तेम इष्ट समये ते ग्रहे आक्रमण करेलु नक्षत्र के तेनो पाद जे वखते स्पर्श्यो होय त्यारथी आरंजीने वक्री के मार्गी थाय त्यांसुधीनी अथवा वक्री के मार्गी थवाना समयथी आरंजीने बीजा नक्षत्रमां के तेना पादमां संक्रमण थाय त्यांसुधीनी जे सर्व घमीओ होय ते घमीओवमे जाग देवो त्यारपछी वक्रादूर्ध्व एटले जो वक्री थया पछी ग्रहने स्पष्ट करवानो होय तो जे कळादिक फळ लाधेलु होय ते वक्री थवाना समये टीप्पणमां लखेला स्पुष्ट अंश अने कळादिकमाथी बाद करवु, अने वक्री थया पहेलां ग्रह स्पष्ट करवानो होय तो गयेली इष्ट घमीओने कहेली रीत प्रमाणे स्पुष्ट कळावमे गुणी तथा सर्व घमीओवमे जाग दइ जे लाधे तेने स्पुष्ट नक्षत्रनी कळाए युक्त करवुं, ए रीत सुगमज छे मार्गादितः एटले के जो मार्गी थया पहेला ग्रहने स्पष्ट करवानो होय तो मार्गी थवाने समये टिप्पनकमां लखेला स्पुष्ट अंशो अने कळाओमां तेनीज जोग्य कळादिक मेळवीने पछी ते एकंदर थयेला अंकमाथी लाधेली कळादिक बाद करवी, अने मार्गी थया पछी ग्रहने स्पष्ट करवो होय तो रुढिए करीने करवो एटले के—जेम स्वाजाविक गतिवाळा ग्रहोनी कळाओ लावीने तेमा स्पुष्ट नक्षत्रनी कळाओ मेळवाय छे तेज रीते ते मेळवणी अहीं पण करवी आ प्रमाणे वक्री अने मार्गी थयेला तथा वक्री अने मार्गी थवानी सन्मुख थयेला ग्रहो स्पष्ट थाय छे आनु उदाहरण बुध अने शुक्रने आश्रीने लखे छे, कारण के प्राये करीने आ बे ग्रहो घणी वार वक्री अने मार्गी थाय छे.

तेमा वक्री थया पछीनी रीत आ प्रमाणे करवी —

वृष राशिमा वक्री थयेला बुधनुं गणित आ प्रमाणे छे —वक्री थयेला दिवसनी शेष घमीओ २६, लग्नना दिवसनी घमीओ १० तथा अंतराळना (वचेना) चार दिवसोनी घडीओ २४० ए सर्व मळीने २७६ थइ आ अंक जूदो राखी मूकवो. हवे बुध जे दिवसे वक्र थयो ते दिवसे वृष राशिनुं स्पुष्ट काढवा माटे टिप्पनकमां जोयुं तो अंश २५, कळा ४४ छे ते सर्वने कळारूप करता १५४४ कळा थइ तेमाथी कृत्तिकाना त्रण पाद अने रोहिणीना चारे पादनी मळी १४०० कळाओ बाद करीए त्यारे शेष १४४ रहे छे. आ मृगशीर्षनु स्पुष्ट आव्युं. आटलावमे "वक्राग्रपश्चिमेऽन्तरांशकला स्पुटा ग्राह्याः"—

"वक्रीनी पछीनी तथा पहेलांनी भुक्त अंश कळाउं ग्रहण करवी." एटलानी व्याख्या पूरी थइ. त्यारपछी आ १४४ मृगशिरना भुक्तवडे पूर्वे आणेली २७६ गत इष्ट घडीउंने गुणवाथी ३०७४४ थाय छे. त्यारपछी टिप्पनकमां जोवुं, अने वक्रीना दिवसथी आरंभीने रोहिणीमां बुध ७ घडी होय त्यांसुधीनी सर्व घडीउं एकत्र मेळववी. ते आ रीते.– वक्रीना दिवसनी शेष घडीउं २६, रोहिणीमां आवेलो बुध घडी ७, तथा अंतराळना ६ दिवसनी घडीउं ३६० मळी ३०३ थइ. आ सर्व नक्षत्रनी घडीउंवडे पूर्वे कहेला अंक ३०७४४ ने भाग देतां भागमां कळा १०१ आवी अने शेष विकळा ७ रही. आने पूर्वे कहेला मृगशिरना भुक्त १४४ मांथी बाद करीए त्यारे कळा ४२, विकळा ५२ रहे छे. आटलाए करीने "वक्रादूर्ध्वं फलं लब्धं भुक्तभागौघतस्त्यजेत्—" "वक्रीनी पछी जे फळ लाध्युं तेने भुक्त अंशना समूहमांथी बाद करवुं." एटलानी व्याख्या पूरी थइ. पछी ते कळा ४२, विकळा ५२ ने कृत्तिकाना त्रण पादनी अने रोहिणीना चारे पादनी मळी १४०० घडीउंमां नाखवाथी १४४२ कळा अने ५२ विकळा थइ. कळाने ६० वडे भाग देतां भागमां २४ अंशो आव्या. ते उपर भुक्त राशि एक देवाथी स्पष्ट बुध राशि १–२४–२–५२ थयो.

हवे ते बुधनी गति आ प्रमाणे लाववी.—आठसोने ठेकाणे अहीं १४४ नो अंक छे, तेने ६० वडे गुणी सर्व नक्षत्रनी घडीउं ३०३ वडे भाग देतां कळा २१, विकळा ५० थइ. आ वक्र थया पछी लग्नने दिवसे बुधनी गति आवी. गतिने स्पष्ट करवानुं फळ प्रथमनी जेमज जाणवुं. विशेष ए के—आ गतिवडे गत इष्ट घडीउंने पूर्वे कहेली रीत प्रमाणे गुणवाथी जे कळादिक फळ लाधे ते बीजा कार्यसमये पूर्व कार्यना समयना ग्रहोमांथी बाद करीए त्यारे बीजा कार्यसमयना ग्रहो स्पष्ट थाय छे.

हवे वक्र थया पहेलांनी वर्तना आ प्रमाणे.—पुनर्वसुमां शुक्र घडी ५० छे. ते दिवसनी पछीने बीजे दिवसे १० घडी पछी लग्न लीधेलुं छे, तेथी लग्नना दिवसनी घडी १० अने पुनर्वसुमां शुक्र आव्यो ते दिवसनी शेष घडी १ मळी ११ घडीउं थइ. त्यारपछी शुक्र क्यारे वक्र थशे ? ते माटे टिप्पनकमां जोवुं. त्यारे लग्नना दिवसनी पछी वक्री शुक्र घडी ४०, अंश २१, कळा १० ए प्रमाणे टिप्पनकमां लखेलुं जोयुं. तेमां अंश विगेरेनी कळा करवाथी १२७० थइ. तेमांथी मृगशिरना बे पादनी अने आर्द्राना चारे पादनी मळी १२०० कळाउं बाद करतां शेष कळा ७० रही. आ पुनर्वसुनुं भुक्त थयुं. आटलावडे "वक्रादग्रे पूर्वं चान्तरांशकला भुक्ता ग्राह्याः"—"वक्रनी पछीनी अने पहेलांनी भुक्त अंतरांश कळा (वच्चे रहेला अंश–कळा) ग्रहण करवी." एटलानी व्याख्या थइ. त्यारपछी आ पुनर्वसुनी भुक्त कळा ७० वडे गत इष्ट घडीउं ११ ने गुणतां

भनी घमीर्ड ७४२ वमे भाग देवाथी कळा ७१ तथा विकळा ३२ आवी. आ रीते आवेलुं कळादिक फळ पूर्वे आपेला ग्रहोमां भेळववुं. आ रीते बीजा ग्रहोनी वर्तना पण उपर कह्या प्रमाणे पोतानी बुद्धिथी करवी आ सर्व गणित ज्योतिर्विदोने निरंतर उपयोगी होवाथी तथा प्रसंग होवाथी देखाड्युं छे.

हवे विवाहमां गोधूलिक लग्न कहे छे —

सन्ध्यालग्नमपि श्रेयो गोखुरोत्खातधूलिभिः ।
गोपानां हीनवर्णानां प्राच्यां च स्यात्करग्रहे ॥ ७३ ॥

अर्थ—गोवाळना, नीच वर्णना अने पूर्व देशमां रहेनारना विवाहमां गायनी खरीए उमामेली धूळवमे जणातुं संध्या लग्न पण श्रेय (शुभ) छे

सूर्यना अस्त वखते सूर्यनुं अर्ध बिंब देखातुं होय त्यारथी आरंभीने गायनी खरीथी उमेली धूळ ज्यासुधी शांत न थइ होय त्यासुधी गोधूलिक लग्नने समय होय छे, तेथी करीनेज अही श्लोकमा "धूलिभिः" एम कह्युं छे. अर्थात् ज्यांसुधी तारा न देखाय त्यासुधी जाणवुं जो सूर्य वादळाथी ढंकायेल होय तो प्रपुन्नाट नामनी उपधिना पत्रनुं मळी जवुं, पक्षीउना समूहनो कोलाहल थवो तथा तेमनुं पोतपोताना माळा तरफ जवा माटे उत्सुकपणुं ए विगेरे चिह्नोवमे लग्नसमयनो निर्णय करवो मूळ श्लोकमां "श्रेयो"–शुभ छे एम कह्यु ते लोकरूढिथी कह्युं छे तथा "हीनवर्णना" एटले नीच वर्ण ए शब्द सामान्य रीते कह्यो छे, कारण के गदाधर कहे छे के—

"घटिकालग्नाभावेऽङ्गीकार्यं गोरजोऽपि विप्रैश्च ।"

"घटिका लग्नने अभावे ब्राह्मणोए गोरज (गोधूलिक) लग्न पण अंगीकार करवुं '
हवे गोधूलिक लग्नमा केटली शुद्धि होवी जोइए ते कहे छे —

शीतद्युतिं षष्ठमथाष्टमं च, भद्रार्धयामौ कुलिकं च हित्वा ।
विनाऽपि लग्नांशखगानुकूल्यं, गोधूलिकं प्राग्रहरं वदन्ति ॥ ७४ ॥

अर्थ—छठो तथा आठमो चंद्र, भद्रा, अर्धयाम अने कुलिकने छोमीने लग्ननो नवांशक अने नक्षत्रनी अनुकूळता न होय तोपण गोधूलिक लग्नने श्रेष्ठ कहे छे

लग्नथी छठे के आठमे चंद्र होय तो ते कन्याना मृत्युने देनार छे तथा "मंगळ पण पहेला के आठमा स्थानमा रह्यो होय तो ते पतिना मृत्युने करनार होवाथी तजवा योग्यज छे' एम सारंग कहे छे अर्धयाम तथा कुलिकने तजवाना लख्या छे, तेथी

एवुं सूचवन थाय छे के गोधूलिक लग्नमां गुरु अने शनिवार तजवाना छे, कारण के ते दिवसे अनुक्रमे अर्धयाम अने कुलिकनी उत्पत्ति छे. (गुरुवारे अर्धयाम अने शनिवारे कुलिक थाय छे.) केशवार्क तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"सार्के शनौ चिरविचित्रशिखण्डिसूनौ, तत्केवलं कुलिकयामदलोपलम्भात् ।"

"शनिवारे सूर्य छतां गोधूलिक लग्न करवुं, केमके सूर्यास्त पछी कुलिक योग थाय छे, तथा गुरुवारे सूर्यास्त पछी करवुं, कारण के ते पहेलां अर्धयाम योग थाय छे."

मूळमां खग शब्द लख्यो छे तेनो अर्थ ग्रहो थाय छे. तेमनी अनुकूळता विना पण एम मूळमां लख्युं छे तोपण क्रांतिसाम्य विगेरे मोटा दोषो अवश्य त्याग करवा योग्य छे. तेने माटे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—

"क्रूरैर्युतनक्षत्रं व्यतिपातं वैधृतिं च संक्रान्तिम् ।
क्षीणं चन्द्रं ग्रहणभशनिगुरुदिनक्रान्तिसाम्यानि ॥ १ ॥
दम्पत्योरष्टमभं लग्नात् षष्ठाष्टमं च शीतांशुम् ।
रविजीवयोरशुद्धिं विवर्ज्य गोधूलिकं शुभदम् ॥ २ ॥
गोधूलिकापरिणयने येषां केन्द्रोपगः शुभो न मृतौ ।
भौमो नोदयनिधने तेषां सौख्यानि नान्येषाम् ॥ ३ ॥"

"क्रूर ग्रहवडे युक्त नक्षत्र, व्यतिपात, वैधृति, संक्रांति, क्षीण चंद्र, ग्रहण नक्षत्र, शनिवार, गुरुवार, क्रांतिसाम्य, लग्नथी स्त्री पुरुषने आठमुं नक्षत्र, छठो के आठमो चंद्र तथा रवि अने गुरुनी अशुद्धि, आटलांने वर्जीने गोधूलिक लग्न शुभदायक छे. गोधूलिकना विवाहमां जेओने केन्द्रमां शुभ ग्रह होय अने मृत्यु (८) स्थानमां शुभ ग्रह न रह्यो होय, तथा उदय (१) अने निधन (८) स्थानमां मंगळ रहेलो न होय तेमने सुख छे, बीजाने नथी."

मूळ श्लोकमां "प्राग्रहरं" एटले बीजा दोषोए आ (गोधूलिक) जीती शकाय तेवुं नथी, माटे प्रधान-श्रेष्ठ छे. ते विषे सारंग कहे छे के—

"जामित्रं न विचिन्तयेद्ग्रहयुतं लग्नाच्छशाङ्कात्तथा,
नो वेधं न कुवासरं न च गतं नागामि भं पाप्मभिः ।
नो होरां न नवांशकं न च खगान्मूर्त्यादिभावस्थितान्,
हित्वा चन्द्रमसं षडष्टमगतं गोधूलिकं शस्यते ॥ १ ॥"

"जामित्र (७) स्थाननो विचार करवो नहीं, लग्नथी तथा चंद्रथी ग्रहवडे युक्तपणुं

---

१ जामित्र स्थान शुद्ध छे के अशुद्ध छे ? तेनो विचार करवो नहीं. ए रीते सर्वत्र जाणवुं.

विचारवुं नहीं, वेधनो विचार करवो नहीं, अशुभ दिवसनो विचार करवो नहीं, क्रूर ग्रह साथे रहेला अने रहेशे एवा नक्षत्रनो विचार करवो नहीं, होरानो विचार करवो नहीं, नवांशकनो विचार करवो नहीं, तथा मूर्त्ति (१०) आदिक स्थानोमां रहेला ग्रहोनो पण विचार करवो नहीं. मात्र छठा अने आठमा चंद्रनो त्याग करवाथीज गोधूलिक लग्न प्रशस्त–शुभ छे."

आ श्लोकमां जो के छठा आठमा चंद्रनो त्यागज अपेक्षित छे, बीजुं कांइ पण अपेक्षित नथी एम कह्युं छे, तोपण आ प्रमाणे जाणवुं.—गोधूलिक लग्न लीधुं होय तो-पण विवाहनुंज नक्षत्र अने तेनी शुद्धि होवी जोइए, तथा वर्ष, मास, पक्ष अने दिवसनी शुद्धि पण अवश्य होवी जोइए

अहीं कोइ शंका करे के—जो बीजा दोषोए नहीं जीती शकाय एवुं होवाथी गोधूलिक लग्न प्रधान छे तो पूर्वे कहेला लग्नादिकनां फळोनुं अप्रधानपणुं थशे? उत्तर—खरी वात छे, केमके उल्लंघन न करी शकाय एवा कुळ अने देशना धर्मने अनुसरवाथी कोइ वार ते लग्नादिक फळोने अप्रधानपणानी प्राप्ति आवे तोपण ते अनिष्ट नथी–इष्टज छे. कह्युं छे के—

"न शास्त्रदृष्ट्या विदुषां कदाचिदुल्लंघनीयाः कुलदेशधर्माः ।
देशे गतोऽप्येकविलोचनानां, निमील्य नेत्रं निवसेन्मनीषी ॥ १ ॥"

"विद्वानोए कोइ वखत पण शास्त्रनी दृष्टिने लीधे कुळ, देश अने धर्मनुं उल्लंघन करवु नहीं, केमके डाह्यो माणस एक नेत्रवाळाना देशमा गयो होय तो तेणे त्यां पोतानुं एक नेत्र बंध करीनेज वसवुं जोइए"

आ रीते अमुक कुळ अने देशमा गोधूलिकनुंज प्रधानपणुं छे, परंतु लग्नादिकना फळनुं प्रधानपणुं नथी, तेथी काइ पण दोष आवतो नथी वळी अमुक कुळ अने देशना धर्म मात्र गोधूलिकनाज विषयवाळा छे एम नथी, परंतु ग्रहगोचरादिक विषयवाळा पण छे जेमके—विवाहमा नागरलोको छठा आठमा विगेरेने गणता (अपेक्षा राखता) नथी, भार्गवना वंशजोमा भाद्रपद शुक्ल दशमने दिवसेज विवाह करवानी रीत छे, आ कुळधर्म छे देशधर्मो आ प्रमाणे छे जेमके—गौड देशना लोको गोचर-वडे श्रेष्ठ एवा सूर्यनी अपेक्षा राखे छे अने गुरुनी अष्टक वर्ग करीने अपेक्षा करे छे. दक्षिणना लोको गुरुने गोचरवडे करीने श्रेष्ठ इच्छे छे अने सूर्यने अष्टक वर्ग करीने श्रेष्ठ इच्छे छे लाट देशना लोको सूर्यने तथा गुरुने अष्टक वर्ग करीने तथा गोचरवडे

करीने श्रेष्ठ इच्छे छे. मालव देशना लोकोने गोचर प्रमाणरूप नथी, परंतु अष्टक वर्गज प्रमाण छे. बीजा देशोमां गोचर तथा अष्टक वर्ग बन्ने प्रमाण छे.

हवे पूर्वे कहेला छाया लग्ननी जेवाज बळवाळा ध्रुव लग्नने कहे छे.—

स्युर्दीक्षास्थापनादीनि ध्रुवचक्रे तिरःस्थिते ।
ऊर्ध्वे खातध्वजोच्छ्रायप्रायाणि प्रायशः श्रिये ॥ ७५ ॥

अर्थ—ध्रुवचक्र तिरछुं रह्युं होय त्यारे दीक्षा, स्थापना विगेरे कार्यो शुभदायक छे, अने खात, ध्वजारोपण विगेरे उंचाइ जेवां कार्यो ध्रुवचक्र ऊर्ध्व रह्युं होय त्यारे प्राये करीने कल्याणने माटे छे.

स्थापना एटले प्रतिष्ठा. आदि शब्दथी बीजुं पण स्थिर कर्म जाणवुं. तिरः एटले तिरछुं. ऊर्ध्वे एटले उंचुं रहे छते. ध्रुवनी चोतरफ रहेलुं शृंखलक (चक्र) काबुं भमतुं भमतुं एक रात्रि दिवसमां बे वार तिरछुं अने बे वार ऊर्ध्व आवे छे. तेथी करीने—

"तिर्यगूर्ध्वं स्थिते चक्रे तत्प्रान्तगततारके ।
समसूत्रे यदा स्यातां ध्रुवलग्नं भवेत्तदा ॥ १ ॥"

"ध्रुवचक्र तिरछुं अने ऊर्ध्व रहे छते ज्यारे तेना छेडा पर रहेला बे ताराओ सरखी लाइनमां आवे त्यारे ध्रुव लग्न थाय छे."

ते ध्रुव लग्नना समयनो अतिसूक्ष्म दृष्टिए करीने अथवा ध्रुवने फरवाना यंत्रवडे करीने निश्चय करवो, अने स्थूळ दृष्टिए तो पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे निर्णय कर्यो छे.—

"उदए महाधणिट्ठाण उड्ढं अणुराहकित्ति धुव तिरिउं त्ति"

"मघा अने धनिष्ठानो उदय होय त्यारे ध्रुव ऊर्ध्व होय छे, अने अनुराधा तथा कृत्तिकानो उदय होय त्यारे ध्रुव तिरछुं होय छे."

परंतु नक्षत्रनुं उदयप्रमाण बराबर स्पष्ट रीते दृष्टिगोचर थइ शकतुं नथी, तेथी मस्तक पर (माथे—आकाशना मध्यमां) रहेला नक्षत्रनी अपेक्षाए ध्रुव लग्ननुं स्वरूप कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे—अश्लेषा अने श्रवण नक्षत्र मस्तक परथी उतरतां होय त्यारे ध्रुव तिरछुं होय छे, तथा भरणी अने विशाखा नक्षत्र मस्तक परथी उतरतां होय त्यारे ध्रुव ऊर्ध्व होय छे. तथा—

"स्यादूर्ध्वो मृगकर्के तु समस्तिर्यक् तुलाजयोः ।
यथा तथा तु शेषेषु लग्नेषु स्याध्ध्रुवं ध्रुवः ॥ १ ॥"

"मकर अने कर्क राशिनुं लग्न होय त्यारे ध्रुव ऊर्ध्व होय छे, तथा तुला अने मेष राशिनुं लग्न होय त्यारे ते तिरछुं होय छे, अने बीजां लग्नो होय त्यारे ते अवश्य गमे ते रीते—अनियमित होय छे."

"ते ध्रुव लग्ननो समय ते काळे जे लग्ननो उदय होय तेना नवांशक जेटलोज होय छे," एम केटलाक कहे छे. वळी बीजा कहे छे के-"ते नवांशकनो मात्र मध्यना त्रिभाग जेटलोज होय छे" आ ध्रुव लग्ननुं तिरछापणुं तथा ऊर्ध्वपणुं रात्रिने आश्रीनेज कहेवाय छे, परंतु दिवसने आश्रीने कहेवातुं नथी, कारण के दिवसे तो ते सूर्यना किरणोथी लुप्त थाय छे

मूळ श्लोकमां "प्रायाणि" एम प्राय शब्द लखेलो होवाथी यात्रादिक कार्य पण ग्रहण करवुं ते माटे कह्युं छे के—

"पृष्ठतो वा रविं कृत्वा गच्छेद्दक्षिणगं तथा ।
उत्तानपादपुत्रस्य शेखरे चोर्ध्वसंस्थिते ॥ १ ॥"

"उत्तानपादना पुत्र (ध्रुव)नुं शेखर (मस्तक) ऊर्ध्व रहेलुं होय त्यारे सूर्यने पाछळ करीने अथवा दक्षिण (जमणो) करीने प्रयाण करवुं."

हर्षप्रकाशमां पण ध्रुव लग्न कह्युं छे ते आ प्रमाणे.—

"जइ पुण तुरियं कज्जं हविज्ज लग्गं न लब्भए सुद्धं ।
ता छायाधुवलग्गं गहिअव्वं सयलकज्जेसु ॥ १ ॥"

"जे कार्य जलदी करवा लायक होय अने शुद्ध लग्न न मळतुं होय तो समग्र कार्यमां छाया लग्न अने ध्रुव लग्न ग्रहण करवां"

हवे अहीं प्रसंगोपात्त राजादिकना अभिषेकनुं मुहूर्त कहे छे.—

अभिषिक्तो महीपाल. श्रुतिज्येष्ठा लघुध्रुवैः ।
मृगानुराधापौष्णैश्च चिरं शास्ति वसुन्धराम् ॥ ७६ ॥

अर्थ—श्रवण, ज्येष्ठा, लघु (पुष्य, अभिजित, हस्त, अश्विनी), ध्रुव (रोहिणी, त्रण उत्तरा), मृगशिर, अनुराधा अने रेवती नक्षत्रमां राजाने अभिषेक कर्यो होय तो ते चिर काळ सुधी पृथ्वीनुं राज्य करे छे. आ तेर नक्षत्रो अभिषेकना छे.

सबलत्वे जन्मदशालग्नेशानां कुजार्कयोरपि च ।
राज्ञां शुभोऽभिषेकः सितगुरुशशिनां च वैपुल्ये ॥ ७७ ॥

अर्थ—जन्मेश, दशेश, लग्नेश, मंगळ अने सूर्य आटला ग्रहोनुं सबळपणु होय, तथा शुक्र, गुरु अने चंद्रनुं विपुलपणुं होय त्यारे राजानो अभिषेक करवो शुभ छे.

जन्मवखते जे राशिमा चंद्र होय ते राशिनो ईश जन्मेश कहेवाय छे, अभिषेकने वखते जे ग्रहनी दशा होय ते दशेश कहेवाय छे, तथा जन्मवखते लग्ननो जे पति होय ते लग्नेश कहेवाय छे विपुलपणु एटले घणा दिवसथी उदय थयेलो होवाथी मोटा बिंबनु होवापणु तथा सारा-घणा किरणवाळापणु

भूत्यै स्वस्वत्रिकोणो १ च्च २ गृह ३ मित्रर्क्ष ४ गैर्ग्रहैः ।
अभिषेको न नीचारिक्षेत्रगास्तमितैः पुनः ॥ ७८ ॥

अर्थ—पोताना त्रिकोणमां, पोताना उच्च स्थानमां, पोताना स्थानमां अने पोताना मित्रना स्थानमां ग्रहो रहेला होय त्यारे अभिषेक करवो ए भूति–आबादीने माटे छे (शुभ छे), परंतु ग्रहो नीच के शत्रुना स्थानमां रहेला होय के अस्त पामेला होय तो ते शुभ नथी.

अहीं "स्वस्व" पोतपोतानुं" ए शब्द त्रिकोण विगेरे चारे शब्दमां जोडवो. आ ग्रहो आवी रीतना होय तोज अभिषेक करवो श्रेष्ठ छे. ते विषे कह्युं छे के—

"सुहृत्त्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्थाः, श्रियं च कीर्तिं च दिशन्ति खेटाः ।
अस्तंगताः शत्रुभनीचगा वा, भयाय शोकाय भवन्ति राज्ञाम् ॥ १ ॥"

"मित्र, त्रिकोण, स्वगृह अने उच्च स्थानमां रहेला ग्रहो लक्ष्मीने तथा कीर्तिने आपे छे, अने अस्त पामेला होय के शत्रुना स्थानमां रह्या होय के नीच स्थानमां रह्या होय तो ते राजाने भयने माटे तथा शोकने माटे थाय छे."

मूळ श्लोकमां (त्रिकोण विगेरेमां रहेला) "ग्रहो होय" एम सामान्य रीते कह्युं छे तोपण विशेषे करीने गुरु, चंद्र अने शुक्र, तथा जन्मवार, दशानो वार, लग्नेशनो वार अने दिनवार ग्रहण करवा. ते माटे लल्ल कहे छे के—

"विशेषाज्जन्मलग्नेशदशेशदिनभर्तृषु ।
यस्मात्तस्मात्प्रयत्नेन सौस्थ्यमेषां प्रकल्पयेत् ॥ १ ॥"

"जे कारण माटे जन्मनो स्वामी, लग्ननो स्वामी, दशानो स्वामी अने दिननो स्वामी (अभिषेकने विषे) विशेष उपयोगी छे ते कारण माटे ते ग्रहोनुं सुस्थपणुं (सारां स्थानोमां रहेवापणुं) प्रयत्नवडे करवुं."

ताराबले शशिबले शुद्धौ तिथिवारधिष्ण्ययोगानाम् ।
त्रिषडायस्थैः पापैः सौम्यैस्त्र्यायत्रिकोणकेन्द्रगतैः ॥ ७९ ॥

अर्थ—तारानुं बळ अने चंद्रनुं बळ होय त्यारे तथा तिथि, वार, नक्षत्र अने योगनी शुद्धि होय त्यारे, त्रीजे, छठे अने अगीयारमे स्थाने पाप ग्रहो रह्या होय, अने सौम्य ग्रहो त्रीजे, अगीयारमे, त्रिकोणमां अने केन्द्रमां रह्या होय त्यारे राज्याभिषेक करवो शुभ छे.

तारा अने चंद्र ए बन्नेनुं बळ राज्याभिषेकमां अवश्य ग्रहण करवुं, तेथी करीने शुक्ल-

	उत्तम	मध्यम
रवि	३–११	१–२–४–५–६–७–८–९–१०–१२
चंद्र	१–२–३–४–५–७–९–१०–११	६–८–१२
मंगळ	३–६–११	१–२–४–५–७–८–९–१०–१२
बुध	१–२–३–४–५–७–९–१०–११	६–८–१२
गुरु	१–२–३–४–५–७–९–१०–११	६–८–१२
शुक्र	१–२–३–४–५–७–९–१०–११	६–८–१२
शनि	३–११	१–२–४–५–६–७–८–९–१०–१२
राहु	३–६–११	१–२–४–५–७–८–९–१०–१२

दैवज्ञवल्लभमां विशेष ए छे जे —

"राजयोगाः खयोगाश्च चन्द्रयोगास्तथायुषः ।
सर्वेऽप्यत्र विकल्प्याः स्युर्वास्तुलग्नगुणाश्च ये ॥ १ ॥"

"राजयोगो, खयोगो, चंद्रयोगो तथा आयुष्यना योगो अने वळी जे वास्तु लग्नना गुणो छे ते सर्वे अहीं विचारवा—ग्रहण करवा," एटले के पूर्वे कहेला राजयोगो, खयोगो एटले सूर्यने बीजा ग्रहो साथे जे संयोग थवो ते खयोगो, चंद्रने बीजा ग्रहो साथे जे संयोग थवो ते चंद्रयोगो कहेवाय छे, आयुष्यना योगो एटले पूर्वे जे अरिष्ट योगो कहेला छे तेमने नाश करनारा जे योगो छे तेओ आयुष्यने हितकारक होवाथी आयुष्यना योगो कहेवाय छे. आ सर्वेनुं स्वरूप जातकथी जाणवुं अत्र एटले अभिषेकना लग्नमां विचारवा वास्तु लग्नना गुणो पूर्वे कहेला छे ते जाणवा

वळी सर्व ग्रहोना बळे करीने युक्त एवुं लग्न न मळे तो सर्वे कार्योमां आ प्रमाणे जाणवुं —

"पञ्चभिः शस्यते लग्नं ग्रहैर्बलसमन्वितैः ।
चतुर्भिरपि चेत्केन्द्रे त्रिकोणे वा गुरुर्भृगुः ॥ १ ॥"

"बळे करीने युक्त एवा पांच ग्रहोए करीने लग्न वखाणवा लायक छे अथवा जो केंद्रमां के त्रिकोणमा गुरु अने शुक्र होय तो बळे करीने युक्त एवा चार ग्रहोए करीने पण ते लग्न प्रशस्य छे"

अहीं "पाच ग्रहोए करीने" एम कह्युं छे तोपण आ प्रमाणे विशेष जाणवो — गुरु, सूर्य अने चंद्र ए त्रणमांथी एकनुं पण बळ न होय अने बीजा पाच बळवान् होय तोपण ते लग्न आदर करातुं नथी, एटले प्रशस्य नथी एम रत्नमालाभाष्यमा कह्युं छे वळी केटलाएक कहे छे के—

"त्रयः सौम्यग्रहा यत्र लग्ने स्युर्बलवत्तराः ।
बलवत्तदपि ज्ञेयं शेषैर्हीनबलैरपि ॥ १ ॥"

"जे लग्नमां त्रण सौम्य ग्रहो अत्यंत बळवान् होय ते लग्न पण बीजा ग्रहो हीन बळवाळा छतां पण बळवान् छे एम जाणवुं."

॥ इति एकादशं मिश्रद्वारम् ॥ ११

हवे समग्र ग्रंथना अर्थनुं समर्थन करे छे.—

इत्युक्तखेटबलशालिनि दोषमुक्ते,
लग्ने शुभैश्च शकुनैः शशिनः प्रवाहे ।
कार्याणि भूमिजलतत्त्वगतौ कृतानि,
निर्दम्भमाभ्युदयिकीं प्रथयन्ति लक्ष्मीम् ॥ ७६ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे कहेला ग्रहोना बळे करीने शोभता अने दोषे करीने रहित एवा लग्नने विषे शुभ शकुन जोइने चंद्र नाडी वहेती होय त्यारे तेमां पण पृथ्वी तत्त्व के जळ तत्त्वनी गति होय त्यारे (तेवा समये) करेलां कार्यो दंभ रहित अभ्युदयनी लक्ष्मीने विस्तारे छे.

खेऽटन्ति—आकाशमां गति करे ते खेट कहेवाय छे, अहीं अट् धातुथकी अच् प्रत्यय थयो छे, अने "तत्पुरुषे कृति०" ए सूत्रथी सप्तमी विभक्तिनो अलुक् थवाथी खेट शब्द सिद्ध थयो छे. खेट एटले ग्रहो, तेमनुं बळ. आम कहेवाथी तिथि विगेरेनुं बळ पण जाणवुं. दोषमुक्ते एटले मोटा दोष रहित, कारण के सर्वथा निर्दोष लग्न घणा दिवसोए करीने पण मळी शकतुं नथी, तेथी थोडा दोषवाळुं अने घणा गुणवाळुं लग्न ग्रहण करीने कार्यो करवां, परंतु सर्वथा निर्दोष लग्न आवशे त्यारे कार्य करशुं एम धारीने घणो विलंब करवो नहीं, कारण के धन, यौवन अने आयुष्यनी स्थिरता छे नहीं. एवो अहीं अभिप्राय छे. कह्युं छे के—

"यस्मादशेषगुणसंपदहोभिरल्पैर्होराविदाऽपि गणकेन न लभ्यतेऽत्र ।
तस्मादनल्पगुणसंयुतमल्पदोषं, लग्नं नियोज्यमखिलेष्वपि मङ्गलेषु ॥ १ ॥"

"जेथी करीने समग्र गुणनी संपदावाळुं लग्न होराने जाणनार गणक (जोशी) पण थोडा दिवसमां मेळवी शकतो नथी तेथी करीने सर्व शुभ कार्यमां घणा गुणवाळुं तथा अल्प दोषवाळुं लग्न ग्रहण करवुं."

"स्वल्पो नानर्थकृद्दोषो लग्ने बहुगुणे भवेत् ।
तोयबिन्दुरिव क्षिप्तः समिद्धे कृष्णवर्त्मनि ॥ २ ॥"

"सळगता अग्निमां नाखेला जळना बिंदुनी जेम घणा गुणवाळा लग्नने विषे थोडो दोष अनर्थ करनार थतो नथी"

मूळ श्लोकमा शकुन जोवानुं कह्युं छे ते शकुन जांघिक–जासुद विगेरे छे शकुननुं प्रधानपणुं व्यवहारप्रकाशमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"नक्षत्रस्य मुहूर्त्तस्य तिथेश्च करणस्य च ।
चतुर्णामपि चैतेषां शकुनो दण्डनायकः ॥ १ ॥"

"नक्षत्र, मुहूर्त्त, तिथि अने करण, ए चारेनो दंडनायक शकुन छे."

अहीं शकुनना संबंधमां अंगनुं फरकवुं, मननी प्रसन्नता ए विगेरे निमित्त पण जाणवां आ शुभ शकुनादिके करीने लग्ननी शुद्धिनो निर्णय करी तेवा लग्नने ग्रहण करवाथी कार्य करनारनो जय थाय छे लल्ल पण कहे छे के—

"अपि सर्वगुणोपेतं न ग्राह्यं शकुनं विना ।
लग्नं यस्मान्निमित्तानां शकुनो दण्डनायकः ॥ १ ॥"

"लग्न सर्व गुणोए करीने युक्त होय तोपण शकुन विना ते ग्रहण करवुं नहीं, कारण के सर्व निमित्तनो दंडनायक शकुन छे"

मूळ श्लोकमां "शशिनः प्रवाहे–" "चंद्र नाडी वहेती होय त्यारे" एम कह्युं छे. ते विषे अध्यात्म शास्त्रमा डावी अने जमणी नासिका अनुक्रमे चंद्र अने सूर्य नामनी छे, तेथी करीने—

"सार्ध घटीद्वयं नाडिरेकैकार्कोदयाद्वहेत् ।
अरघट्टघटीभ्रान्तिन्यायान्नाड्यो· पुनः पुनः ॥ १ ॥
शतानि तत्र जायन्ते निःश्वासोच्छ्वासयोर्नव ।
खखपड्कुकरैः २१६०० सङ्ख्याऽहोरात्रे सकले पुनः ॥ २ ॥
षट्त्रिंशद्गुरुवर्णाना या वेला भणने भवेत् ।
सा वेला मरुतो नाड्या नाड्यां सञ्चरतो लगेत् ॥ ३ ॥"

"जेम अरघट्ट (रेंट)नी घडीओ अनुक्रमे एक पछी एक फर्या करे छे तेम आ चंद्र अने सूर्य नाडीमांनी एक एक (दरेक) नाडी सूर्योदयथी आरंभीने अढी अढी घडी वहेती रहे छे (एटले सूर्योदयने आरंभीने अढी घडी सुधी चंद्र नाडी वहे छे, पछीनी अढी घडी सुधी सूर्य नाडी वहे छे, पछीनी अढी घडी चद्र नाडी वहे छे विगेरे.) ते दरेक नाडीमां नवसो उच्छ्वास निःश्वास थाय छे, तेथी करीने एक रात्रि दिवसमां थइने कुल २१६०० उच्छ्वास निःश्वास थाय छे छत्रीश गुरु अक्षरो बोलता जेटलो वखत लागे छे तेटलो वखत एक नाडीमाथी बीजी नाडीमा संचार करता वायुने लागे छे.

(एटले के एक नाडीमांथी बीजी नाडीमां जतां वायुने तेटली वार लागे छे, अर्थात् तेटलो वखत बन्ने नासिकामां समान वायु रहे छे.)"

तेमां वाम (डाबी) नासिका पेसता वायुए करीने पूर्ण थाय त्यारे सर्व शुभ कार्यनो आरंभ करवो. कह्युं छे के—

"लाभे दानेऽध्ययने गुरुदेवाभ्यर्चने विषविनाशे ।
पुरमन्दिरप्रवेशे गमागमादौ शुभा वामा ॥ १ ॥"

"लाभमां, दानमां, भणवामां, गुरु अने देवनी पूजामां, विष उतारवामां, नगर अने घरमां प्रवेश करती वखते तथा जवा आववामां वाम नाडी शुभ छे." तथा—

"पूजाद्रव्यार्जनोद्वाहे दुर्गाद्रिसरिदाक्रमे ।
गमागमे जीविते च गृहक्षेत्रादिसंग्रहे ॥ १ ॥
क्रये विक्रयणे दृष्टौ सेवायां विद्विषो जये ।
विद्यापट्टाभिषेकादौ शुभेऽर्थे च शुभः शशी ॥ २ ॥"

"पूजामां, द्रव्य उपार्जन करवामां, विवाहमां, तथा किल्लो, पर्वत अने नदीने उल्लंघन करवामां, जवा आववामां, जीवितमां, घर क्षेत्र विगेरे लेवामां, क्रय विक्रयमां, दृष्टिमां, सेवामां (नोकरी रहेवामां), शत्रुनो जय करवामां, विद्याना आरंभमां अने राज्याभिषेकमां ए विगेरे शुभ कार्यमां चंद्र एटले चंद्र नाडी (वाम नाडी) शुभ छे."

मूळ श्लोकमां "भूमिजलतत्त्वगतौ—" "पृथ्वी तत्त्व अने जळ तत्त्वनी गति होय त्यारे" एम कह्युं छे. ते विषे कह्युं छे के—

"वायोर्वह्नेरपां पृथ्व्या व्योम्नस्तत्त्वं वहेत्क्रमात् ।
वहन्त्योरुभयोर्नाड्योर्ज्ञातव्योऽयं क्रमः सदा ॥ १ ॥"

"वहन थइ (चालती) बन्ने नाडीमां वायु, अग्नि, जळ, पृथ्वी अने आकाशनुं तत्त्व अनुक्रमे वहे छे—चाले छे. आवो क्रम निरंतर जाणवो."

ए पांचे तत्त्वोनो प्रवाह (गति—वहेवुं ते) आ प्रमाणे छे.—

"ऊर्ध्वं वह्निरधस्तोयं तिरश्चीनः समीरणः ।
पृथ्वी मध्यपुटे व्योम सर्वगं वहते पुनः ॥ १ ॥"

"अग्नि तत्त्व ऊंचे वहे छे, जळ तत्त्व नीचे वहे छे, वायु तत्त्व तिरछुं वहे छे, पृथ्वी तत्त्व मध्य पुटमां वहे छे अने आकाश तत्त्व सर्वव्यापक थइने वहे छे."

तेनुं प्रमाण आ रीते छे.—

"पृथ्व्याः पलानि पञ्चाश ५० च्चत्वारिंश ४० त्तथाम्भसः ।
अग्नेस्त्रिंश ३० त्तथा वायोर्विंशति २० र्नभसो दश १० ॥ १ ॥"

"पृथ्वी तत्त्वनुं प्रमाण पळ ५० छे, जळ तत्त्वनुं ४० छे, अग्निनुं ३०, वायुनुं २० अने आकाश तत्त्वनुं प्रमाण १० पळनुं छे."

आ रीते एक एक नामीनुं प्रमाण १५० पळो थाय छे. आ प्रमाणे वाम नामी वहेती होय त्यारे पण ज्यारे पृथ्वी तत्त्व के जळ तत्त्व होय त्यारे शुज कार्य करवुं, परंतु अग्नि, वायु अने आकाश तत्त्वमां करवुं नहीं कह्युं छे के—

"तत्त्वान्यां जूजलान्यां स्याच्छान्ते कार्ये फलोन्नतिः ।
दीप्तास्थिरादिके कृत्ये तेजोवाय्वम्बरैः शुजम् ॥ १ ॥
पृथ्व्यप्तेजोमरुद्व्योमतत्त्वानां चिह्नमुच्यते ।
आद्ये स्थैर्यं स्वचित्तस्य शैत्यकामरुयौ परे ॥ २ ॥
तृतीये कोपसंतापौ तुर्ये चञ्चलता पुनः ।
पञ्चमे शून्यतैव स्यादथवा धर्मवासना ॥ ३ ॥"

"पृथ्वी अने जळ तत्त्ववमे शांत कार्य कर्युं होय तो फळनी उन्नति थाय छे (शात कार्यमां आ बे तत्त्व शुज छे.) दीप्त, अस्थिर विगेरे कार्य अग्नि, वायु अने आकाश तत्त्ववमे करवु शुज छे. हवे पृथ्वी, जळ, तेज, वायु अने आकाश ए पांच तत्त्वोनुं चिह्न कहे छे—पहेला पृथ्वी तत्त्वमां कार्य करवाथी पोताना चित्तनी स्थिरता थाय छे, बीजा जळ तत्त्वमां शीतळता अने कामदेवनो उदय थाय छे, त्रीजा तेज तत्त्वमां क्रोध अने संताप थाय छे, चोथा वायु तत्त्वमा मननी चंचळता थाय छे तथा पांचमा आकाश तत्त्वमां मननी शून्यताज थाय छे अथवा तो धर्मनी वासना थाय छे"

तथा—

"श्रुत्योरङ्गुष्ठकौ मध्याङ्गुल्यौ नासापुटद्वये ।
सृक्वणोः प्रान्त्यकोपान्त्याङ्गुली शेषे दृगन्तयोः ॥ १ ॥
न्यस्यान्तस्तु पृथिव्यादितत्त्वज्ञानं जवेत् क्रमात् ।
पीत १ श्वेता २ रुण ३ श्यामै ४ र्बिन्दुजिर्निरुपाधि खम् ॥ २ ॥
पीतः कार्यस्य संसिद्धिं बिन्दुः श्वेतः सुखं पुनः ।
जयं सन्ध्यारुणो ब्रूते हानिं जृङ्गसमद्युतिः ॥ ३ ॥
जीवितव्ये जये लाजे सस्योत्पत्तौ च कर्षणे ।
पुत्रार्थे युद्धप्रश्ने च गमनागमने तथा ॥ ४ ॥
पृथ्व्यप्तत्त्वे शुजे स्यातां वह्निवातौ च नो शुजौ ।
अर्थसिद्धिः स्थिरोर्व्यां तु शीघ्रमम्जसि निर्दिशेत् ॥ ५ ॥"

"बे कानमा बे अंगुठा, बे नासापुटमा बे मध्य (वचली) आंगळी, बे ओष्ठ उपर

(हृत्पच्चीमां) टचली तथा तेनी पासेनी ए बबे आंगळीउं तथा नेत्रना प्रांत जागमां शेष (अंगुठा पासेनी) बे आंगळीउं राखीने अंतःकरणमां ध्यान करवाथी पृथ्व्यादिक तत्त्वोनुं ज्ञान अनुक्रमे आ प्रमाणे थाय छे.—पीत—पीळो—वर्ण जासे तो पृथ्वी तत्त्व, श्वेत जासे तो जळ तत्त्व, अरुण—रातो जासे तो तेज तत्त्व, श्याम जासे तो वायु तत्त्व अने बिंदु एटले कांइ पण न जासे तो उपाधि रहित आकाश तत्त्व छे एम जाणवुं. पीत[1] वर्ण कार्यनी सिद्धिने कहे छे, बिंदु तथा श्वेत वर्ण सुखने कहे छे, संध्या जेवो रातो वर्ण जयने कहे छे, जमरा सरखी कांतिवाळो श्याम वर्ण हानिने कहे छे. जीवितमां, जयमां, लाजमां, धान्यनी उत्पत्तिमां, खेतीमां, पुत्रने अर्थे, युद्धना प्रश्नमां तथा जवा आववामां पृथ्वी अने जळ तत्त्व शुज छे, अग्नि अने वायु तत्त्व शुज नथी. पृथ्वी तत्त्वमां कार्य करवाथी अर्थनी सिद्धि स्थिर थाय छे, अने जळ तत्त्वमां कार्य जलदी सिद्ध थाय छे, एम जाणवुं.

वळी—

"षोडशाङ्गुलिका पृथ्वी १ जलं तु द्वादशाङ्गुलम् २ ।
तेजश्चाष्टाङ्गुलं ३ वायुश्चतुरङ्गुलको मतः ४ ॥ १ ॥
नैकमप्यङ्गुलं व्योम ५ वहतीति विनिर्णयः ।"

"पृथ्वी तत्त्व सोळ आंगळ वहे छे १, जळ तत्त्व बार आंगळ वहे छे २, तेज तत्त्व आठ आंगळ वहे छे ३, वायु तत्त्व चार आंगळ वहे छे ४ अने आकाश तत्त्व एक आंगळ पण वहेतुं नथी. ए प्रमाणे निर्णय करेलो छे." एटले के ज्यारे नासिकानो वायु नासिकानी बहार वहेतो छतो सोळ आंगळ सुधी आकाशने व्यापे छे त्यारे पृथ्वी तत्त्व छे एम सर्वत्र जाणवुं. अथवा तो आ वाक्यनी बीजी रीते पण व्याख्या थइ शके छे, ते आ प्रमाणे—दोष रहित लग्नने विषे पृथ्वी अने जळ तत्त्वनी गति होय त्यारे एवो संबंध करवो, एटले के शुद्ध लग्न होय तोपण ज्यारे पृथ्वी के जळ तत्त्व होय त्यारे शुज कार्य करवुं, परंतु अग्नि, वायु के आकाश तत्त्वमां करवुं नहीं.

कह्युं छे के—

"पृथ्वी राज्यं १ जलं वित्तं २ वह्निर्हानिं ३ समीरणः ।
उद्वेगं ४ गगनं दत्ते पञ्चतां ५ सर्वलग्नतः ॥ १ ॥"

"सर्व कार्यना लग्नने विषे पृथ्वी तत्त्व लीधुं होय तो ते राज्यने आपे छे १, जळ तत्त्व धनने आपे छे २, अग्नि तत्त्व हानि करे छे ३, वायु तत्त्व उद्वेग उपजावे छे ४ अने आकाश तत्त्व मरण आपे छे ५.

आ तत्त्वोनी उत्पत्तिनो प्रकार आ प्रमाणे छे.—

---

१ पीत वर्ण पृथ्वी तत्त्व छे, तेमां कार्य करवाथी ते कार्य सिद्ध थाय छे एम सर्वत्र जाणवुं.

"त्रिंशांशं पञ्चधा हन्याद्दशा १० ष्ट ८ षड् ६ युगा ४ श्वि २ भिः ।
भू १ जला २ ग्य ३ निल ४ व्योम्नां ५ समर्क्षे जायते मितिः ॥ १ ॥
द्व २ ब्ध्य ४ ङ्ग ६ वसु ८ दशभि १० स्तत्त्रिशांशकाहतिः ।
खा १ निला २ ग्नि ३ जले ४ ला ना ५ मोजराशौ मितिः स्मृता ॥ २ ॥"

"सम राशिमां त्रिंशाशने पाच प्रकारे स्थापीने ते दरेकने अनुक्रमे १०–८–६–४–२ वडे गुणवाथी अनुक्रमे पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु अने आकाश तत्त्वनुं प्रमाण थाय छे. तेज रीते विषम राशिमां त्रिशाशने २–४–६–८–१० वडे गुणवाथी अनुक्रमे आकाश, वायु, अग्नि, जळ अने पृथ्वी तत्त्वनुं प्रमाण थाय एम कह्युं छे.

आ बे श्लोकनो अर्थ आ प्रकारे छे.—लग्नना पळोनो जे त्रीशमो भाग ते त्रिशांश कहेवाय छे जेमके मेष लग्नना पळो २२५ छे, तेनो त्रिंशांश पळ ७ अक्षर ३० आवे छे. आ त्रिशांशने पांच वार स्थापन करी विषम राशि होवाथी तेने २–४–६–८–१० वडे गुणवाथी अनुक्रमे आकाश विगेरे तत्त्वोनुं मान आवे छे अने सम राशि होय तो १०–८–६–४–२ वडे गुणवाथी अनुक्रमे पृथ्वी विगेरे तत्त्वोनुं मान आवे छे. अथवा तो जे लग्नना जेटला पळो होय ते पळोने प्रथम १५ वडे भाग देवो. भागमां जे आवे तेने विषम राशि होय तो अनुक्रमे १–२–३–४–५ वडे गुणवाथी आकाश विगेरे तत्त्वोनुं मान आवे छे, अने सम राशि होय तो ५–४–३–२–१ वडे गुणवाथी अनुक्रमे पृथ्वी विगेरे तत्त्वोनुं मान आवे छे. एम करवाथी जे थाय छे ते नीचे स्थापनावडे स्पष्ट करी बतावे छे —

मेषमान पळ २२५	वृषमान पळ २५६
त्रिंशांश पळ ७ अक्षर ३०	त्रिशाश पळ ८ अक्षर ३२
आकाश तत्त्व पळ १५	पृथ्वी तत्त्व घडी १ पळ २५ अक्षर २०
वायु तत्त्व पळ ३०	जळ तत्त्व घडी १–८–१६
अग्नि तत्त्व पळ ४५	तेज तत्त्व पळ ५१–१२
जळ तत्त्व घडी १	वायु तत्त्व पळ ३४–८
पृथ्वी तत्त्व घडी १ पळ १५	आकाश तत्त्व पळ १७–४
मिथुनमान पळ ३०५	कर्कमान पळ ३४१
त्रिशांश पळ १० अक्षर १०	त्रिशाश पळ ११ अक्षर २२
आकाश पळ २०–२०	पृथ्वी घडी १–५३–४०
वायु पळ ४०–४०	जळ घडी १–३०–५६
तेज घडी १–१	तेज घडी १–८–१२
जळ घडी १–२१–२०	वायु पळ ४५–२८
पृथ्वी घडी १–४१–४०	आकाश पळ २२–४४

સિંહમાન પળ ૩૪૨
ત્રિંશાંશ પળ ૧૧ અક્ષર ૨૪
આકાશ પળ ૨૨–૪૮
વાયુ પળ ૪૫–૩૬
તેજ ઘડી ૧–૮–૨૪
જળ ઘડી ૧–૩૧–૧૨
પૃથ્વી ઘડી ૧–૫૪

કન્યામાન પળ ૩૩૧
ત્રિંશાંશ પળ ૧૧–૨
પૃથ્વી ઘડી ૧–૫૦–૨૦
જળ ઘડી ૧–૨૮–૧૬
તેજ ઘડી ૧–૬–૧૨
વાયુ પળ ૪૪–૮
આકાશ પળ ૨૨–૪

તુલામાન પળ ૩૩૧
ત્રિંશાંશ પળ ૧૧–૨
આકાશ પળ ૨૨–૪
વાયુ પળ ૪૪–૮
તેજ ઘડી ૧–૬–૧૨
જળ ઘડી ૧–૨૮–૧૬
પૃથ્વી ઘડી ૧–૫૦–૨૦

વૃશ્ચિકમાન પળ ૩૪૨
ત્રિંશાંશ પળ ૧૧–૨૪
પૃથ્વી ઘડી ૧–૫૪
જળ ઘડી ૧–૩૧–૧૨
તેજ ઘડી ૧–૮–૨૪
વાયુ પળ ૪૫–૩૬
આકાશ પળ ૨૨–૪૮

ધનમાન પળ ૩૪૧
ત્રિંશાંશ પળ ૧૧–૨૨
આકાશ પળ ૨૨–૪૪
વાયુ પળ ૪૫–૨૮
તેજ ઘડી ૧–૮–૧૨
જળ ઘડી ૧–૩૦–૫૬
પૃથ્વી ઘડી ૧–૫૩–૪૦

મકરમાન પળ ૩૦૫
ત્રિંશાંશ પળ ૧૦–૧૦
પૃથ્વી ઘડી ૧–૪૧–૪૦
જળ ઘડી ૧–૨૧–૨૦
તેજ ઘડી ૧–૧
વાયુ પળ ૪૦–૪૦
આકાશ પળ ૨૦–૨૦

કુંભમાન પળ ૨૫૬
ત્રિંશાંશ પળ ૮–૩૨
આકાશ પળ ૧૭–૪
વાયુ પળ ૩૪–૮
તેજ પળ ૫૧–૧૨
જળ ઘડી ૧–૮–૧૬
પૃથ્વી ઘડી ૧–૨૫–૨૦

મીનમાન પળ ૨૨૫
ત્રિંશાંશ પળ ૭–૩૦
પૃથ્વી ઘડી ૧–૧૫
જળ ઘડી ૧
તેજ પળ ૪૫
વાયુ પળ ૩૦
આકાશ પળ ૧૫

આ રીતે દરેક લગ્નમાં પાંચ પાંચ તત્ત્વો અનુક્રમે તથા ઉત્ક્રમે હોય છે. વિશેષ એ છે જે—પૃથ્વી અને જળ તત્ત્વના પળો પણ જો છ વર્ગવડે શુદ્ધ કે પાંચ વર્ગવડે શુદ્ધ હોય તો તે અત્યંત શુભ છે. તે આ પ્રમાણે—મેષ લગ્નમાં સાતમા તુલા અંશના પહેલા ૧૮ પળોમાં લગ્નની અશુદ્ધિ હોવાથી પાંચ વર્ગની શુદ્ધિ છે અને પૃથ્વી તત્ત્વ છે, તથા મેષ લગ્નમાં નવમા ધન અંશના છેલ્લા ૧૮ પળોમાં પાંચ વર્ગની શુદ્ધિ અને પૃથ્વી તત્ત્વ

लग्नमां त्रीजा मीन अंशना पहेला ७ पळोमां ७ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे, तथा वृष लग्नमां पांचमा वृष अंशना पहेला १४ पळोमां ७ वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे २. मिथुन लग्नमां छठा मीन अंशना पहेला ७ पळोमां ७ वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे, अने पाच वर्गनी शुद्धि तो द्वादशांशनी अशुद्धि होवाथी आखा नवांशकमां छे. ३ कर्क लग्नमां पहेला कर्क अंशना पहेला २७ पळोमां ७ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे, तथा कर्क लग्नमा त्रीजा संपूर्ण कन्या अंशमां ७ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे. ४. सिंह लग्नमां छठा कन्या अंशमां दश पळ पछी २७ पळोमां लग्ननी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे. ५. कन्या लग्नमां त्रीजा मीन अंशमां नव पळ पछीनी २७ पळोमां ७ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे. ६. तुला लग्नमां आठमा वृष अंशमा पहेला १७ पळोमां ७ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे, तथा तुला लग्नमां नवमा मिथुन अंशमां छेल्ला २७ पळोमां ७ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे. ७. वृश्चिक लग्नमां चोथा तुला अंशमां पहेला २७ पळोमां लग्ननी अशुद्धि होवाथी पाच वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे. ८. धन लग्नमां छठा संपूर्ण कन्या अंशमां द्रेष्काणनी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे, तथा धन लग्नमां सातमा तुला अंशमां छेल्ला ए पळोमां द्वादशाशनी अशुद्धि होवाथी पाच वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे, तथा धन लग्नमां नवमा धन अंशमां पहेला ए पळोमा द्वादशाशनी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे. ए मकर लग्नमां पांचमा वृष अंशमा पहेला १६ पळोमां लग्ननी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे १०. कुंभ लग्नमां छठा वृष अशमां छेल्ला २० पळोमां लग्ननी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे, तथा कुंभ लग्नमा आठमा वृष अशनी छेल्ला १४ पळो अने नवमा मिथुन अंशना पहेला ७ पळो कुल २१ पळोमा लग्ननी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे ११ मीन लग्नमां पहेला कर्क अंशमां पहेला १७ पळोमा ७ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे, तथा मीन लग्नमां त्रीजा २५ पळवाळा संपूर्ण कन्या अंशमां ७ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे १२

मूळ श्लोकमां "कृतानि"—"करेलां कार्यो" एम लख्युं छे. ते विषे वृद्धो कहे छे के— दीक्षा, प्रतिष्ठा, तीर्थयात्रा, पदवी आरोपण विगेरे कार्योने मध्ये जे कोइ कार्यमा जे नक्षत्र, जे वार अने जे तिथिनो अधिकार कर्यो होय ते सर्व सारी रीते शुद्ध जोइने रवि योग अने सिद्धि योगादिक सहित प्रथम दिनशुद्धि अने पछी लग्नशुद्धि अने त्यारपछी नवांशशुद्धि जोवी सर्वथा प्रकारे शुद्ध लग्न न मळी शके अने कार्य अवश्य करवानुं होय तो शुभ दिनशुद्धिमां, छाया लग्नमा, ध्रुव लग्नमां, विजय मुहूर्तमां के शुभ चोघडीयामां कार्य करवु ए समग्र ग्रंथनुं रहस्य छे.

मूळ श्लोकमां "प्रथयन्ति" लख्युं छे, एटले के आ प्रमाणे करेलां कार्यो सर्व प्रकारना उदयने विस्तारे छे.

इति श्रीमति आरंभसिद्धिवार्तिके विलग्न १ मिश्र २ द्वारपरीक्षात्मकः
पञ्चमो विमर्शः संपूर्णः ॥ ५ ॥

आ रीते श्री आरंभसिद्धिना वार्तिक—टीकामां विलग्न १ अने मिश्र २ द्वारनी परीक्षावाळो पांचमो विमर्श संपूर्ण थयो.

"श्रीसूरीश्वरसोमसुन्दरगुरोर्निःशेषशिष्याग्रणी-
र्गच्छेन्द्रः प्रभुरत्नशेखरगुरुर्देदीप्यते सांप्रतम् ।
तच्छिष्याश्रवहेमहंसरचितस्यारंभसिद्धेः सुधी-
श्रृङ्गाराभिधवार्तिकस्य बुधभाः ५ सङ्ख्यो विमर्शोऽभवत् ॥ १ ॥"

"हालमां सूरीश्वर श्री सोमसुंदर गुरुना सर्व शिष्योमां मुख्य अने गच्छना स्वामी प्रभु—पूज्यरत्नशेखर गुरु अत्यंत देदीप्यमान वर्ते छे. तेमना आज्ञाधीन शिष्य श्री हेमहंसे रचेला आ आरंभसिद्धिना सुधीश्रृंगार नामना वार्तिकनो पांचमो विमर्श संपूर्ण थयो.

"विमर्शैः पञ्चभिः प्रेष्ठविषयैरिव संवृतम् ।
न कस्याह्लाददायीदं सुधीश्रृङ्गारवार्तिकम् ॥ २ ॥"

"उत्तम पांच विषयोनी जेम पांच विमर्शोए करीने संवरेलुं आ सुधीश्रृंगार नामनुं वार्तिक कोने आह्लाद आपनार न होय ? अर्थात् सर्वने हर्ष उत्पन्न करनारुं छे."

"बहुज्योतिःशास्त्रात्मकमणिसुवर्णापणगणात्,
मया सारं सारं द्युतिमयमुपादाय किमपि ।
सुधीश्रृङ्गारोऽयं व्यरचि रुचिरः सैष सुधियां,
करे कण्ठे कर्णे हृदि च सुषमां पल्लवयतु ॥ ३ ॥"

"घणां ज्योतिःशास्त्ररूप मणि अने सुवर्णनी दुकानोना समूहथकी कांइक कांतिमय सार सार वस्तु लइने आ मनोहर सुधीश्रृंगार (विद्वानोनो अलंकार) रच्यो छे, तेथी ते आ विद्वानोना हाथमां, कंठमां, कानमां अने हृदयमां सुख उत्पन्न करो."

॥ अथ प्रशस्तिः ॥

"श्रीमच्चन्द्रकुले पुराऽजनि जगच्चन्द्रो गुरुर्यस्तपा-
चार्यख्यातिमवाप तीव्रतपसा तस्यान्वयेऽजायत ।
प्रौढः श्रीवरदेवसुन्दरगुरुस्तत्पट्टपूर्वागिरेः,
श्रृङ्गे श्रीप्रभुसोमसुन्दरगुरुर्भानुर्नवीनोऽभवत् ॥ ४ ॥"

"पहेलां श्रीमान् चंद्र कुळने विषे श्री जगच्चंद्र नामना गुरु (आचार्य) उत्पन्न थया हता के जेओ तीव्र तपवडे तपाचार्यनी ख्याति पाम्या हता. तेमना वंशमां मोटा प्रभाववाळा श्री वरदेवसुंदर नामना गुरु (आचार्य) थया, अने तेनी पाटरूपी उदयाचळ पर्वतना शिखर उपर श्री सोमसुंदर नामना गुरु नवीन सूर्यरूप थया," कारण के—

"भानोर्भानुशतानि षोडश लसन्त्येकत्र मास्याश्विने,
यच्छिष्यास्तु ततोऽधिका अपि महीमुद्द्योतयन्ते सदा ।
तस्याहं चरणावुपासिषि चिरं श्रीमत्तपागच्छप-
क्षोणीविश्रुतसोमसुन्दरगुरोश्चारित्रिचूडामणेः ॥ ५ ॥"

"सूर्यने मात्र एक आश्विन मासमाज सोळसो किरणो विलास पामे छे, परंतु जेमना तेथी पण वधारे शिष्यो निरंतर पृथ्वीने उद्योत करे छे ते साधुओमा चूडामणि समान, श्री तपा गच्छना नायक अने पृथ्वी पर प्रख्यात थयेला श्री सोमसुंदर गुरुना बे चरणोनी में चिर काळ सेवा करी छे"

"मारिर्येन निवारिताऽसुरकृता संसूत्र्य शान्तिस्तवं,
सूरिः श्रीमुनिसुन्दराभिधगुरुर्दीक्षागुरुः सैष मे ।
यस्य श्यामसरस्वतीतिविरुदं विख्यातमुर्वीतले,
गुर्वी श्रीजयचन्द्रसूरिगुरुरप्याधात्प्रसत्तिं स मे ॥ ६ ॥"

"जेमणे असुरे उत्पन्न करेली मरकी शांतिस्तव रचीने निवारी, तेओ आ श्री मुनिसुंदर सूरि नामना गुरु मारा दीक्षागुरु छे, तथा जेमनुं श्याम—काळी सरस्वती नामनुं विरुद पृथ्वी पर प्रसिद्ध छे ते श्री जयचंद्र सूरि नामना गुरुए पण मारा पर मोटी प्रसन्नता धारण करी छे."

"साम्प्रतं तु जयन्ति श्री-रत्नशेखरसूरयः ।
नानाग्रन्थकृतस्तेऽपि, पूर्वाचार्यानुकारिणः ॥ ७ ॥"

"हमणां तो पूर्वना आचार्योनी सदृश तथा विविध ग्रथोने रचनारा तेओ प्रसिद्ध श्री रत्नशेखर नामना सूरि जयवंता वर्ते छे"

"एतानाचार्यहर्यक्षान्, प्रत्यक्षानिव गौतमान् ।
वीतमायं स्तुवे स्फीत–श्रीतपागच्छनायकान् ॥ ८ ॥"

"जाणे प्रत्यक्ष गौतमस्वामीज होय एवा अने आचार्योने मध्ये सिंह समान आ वृद्धि पामेला श्री तपा गच्छना नायकोनी हुं निष्कपटपणे स्तुति करुं छु"

वळी.—

"एकोऽप्यनेकशिष्याणां, यश्चित्ताब्जान्यबोधयत् ।
तं श्रीचारित्ररत्नं भो ! भानोरत्नसमं स्तुमः ॥ ९ ॥"

"जेणे एकलाएज अनेक शिष्योनां चित्तरूपी कमळो विकसित कर्यां छे ते सूर्य समान श्री चारित्ररत्नने अमे स्तवीए छीए."

"चिन्मयानां मयाऽमीषामृषीणां सुप्रसादतः ।
हेमहंसाभिधानेन वाचनाचार्यतायुजा ॥ १० ॥
श्रीमद्विक्रमवत्सरे मनुतिथौ १५१४ शुक्लद्वितीयातिथौ,
नक्षत्रे गुरुदैवते गुरुदिने मासे शुचौ सुन्दरे ।
आशापल्लिपुरे पुरः प्रतिनिधेः श्रीमद्युगादिप्रभो-
र्ग्रन्थः सैष समर्थितः प्रथयतादाद्यं पुमर्थं सताम् ॥ ११ ॥"

"ज्ञानवाळा आ ऋषिओ (मुनिओ)नी अत्यंत कृपाथी हेमहंस नामना में वाचनाचार्ये श्रीमद्विक्रम संवत् १५१४ ना सुंदर एवा अषाढ मासमां शुक्ल पक्षनी बीज ने गुरुवारे पुष्य नक्षत्रमां आशापल्लि नामना नगरमां श्रीयुगादि प्रभुनी प्रतिमानी पासे आ ग्रंथ रच्यो छे, ते सत्पुरुषोना पहेला पुरुषार्थ—धर्मनो विस्तार करो."

"इति श्रीतपागच्छपुरन्दरश्रीसोमसुन्दरसूरिश्रीमुनिसुन्दरसूरिश्रीजयचन्द्रसूरिप्रमुखश्रीगुरुसाम्प्रतविजयमानश्रीगच्छनायकश्रीरत्नशेखरसूरिचरणकमलसेविना महोपाध्यायश्रीचारित्ररत्नगणिप्रसादप्राप्तविद्यालवेन वाचनाचार्यश्रीहेमहंसगणिना स्वपरोपकाराय संवत् १५१४ वर्षे आषाढशुक्लद्वितीयायां निर्मितमिदं सुधीशृङ्गाराख्यं श्रीआरंभसिद्धिवार्तिकं सर्वथा सावद्यवचनविरतैः सुविहिताचार्यवर्यैर्वाच्यमानं चिरं नन्दतात् ॥"

आ प्रमाणे श्री तपा गच्छना इंद्र श्री सोमसुंदर सूरि, श्री मुनिसुंदर सूरि, श्री जयचंद्र सूरि विगेरे श्री गुरु महाराजाओ अने हालमां विजय पामता श्री गच्छनायक श्री रत्नशेखर सूरिना चरणकमळने सेवता अने महोपाध्याय श्री चारित्ररत्न गणिना प्रसादथी जेने विद्यानो लेश प्राप्त थयो छे एवा वाचानाचार्य श्री हेमहंसगणिए स्व—परना उपकार माटे संवत् १५१४ आषाढ सुदि बीजने दिवसे रचेलुं आ सुधीशृंगार नामनुं आरंभसिद्धिनुं वार्तिक सर्वथा प्रकारे सावद्य वचनथी विरति पामेला श्रेष्ठ सुविहिताचार्योए वंचातुं चिर काळ आनंद पामो.

हवे ग्रंथकार पोताना अभिप्रायने प्रगट करे छे.—

"विद्यारम्भतपःक्रियाप्रभृतिकप्रारम्भवर्जं समे-
ऽप्यारम्भा अशुभाः शुभाश्च नियतं सावद्यतादूषिताः ।

सर्वारम्भविधेश्च सिद्धिकरणादारम्भसिद्ध्याह्वयो,
ग्रन्थोऽयं तत एव चाप्रकटनायोग्यो विशूकात्मसु ॥ १ ॥"

"विद्यारंभ अने तपस्यानी क्रिया विगेरे आरंभोने वर्जीने बीजा सर्व शुभ अने अशुभ आरंभो अवश्य पापव्यापारवडे दोष पामेलाज छे, तेथी करीनेज सर्व आरंभोनी सिद्धि करवाथी आ आरंभसिद्धि नामनो ग्रंथ निर्दय हृदयवाळा मनुष्यो पासे प्रगट करवो योग्य नथी "

"येन श्रीप्रभुसोमसुन्दरगुरोः काले कलौ जङ्गम-
श्रीमत्तीर्थकरस्य चारु सुचिरं सेवा कृता तस्य मे ।
एतज्ज्योतिषवार्तिकप्रणयनं नो युज्यते सर्वथा,
ग्रन्थोऽयं तदपीह येन विधिना जातस्तदाकर्ण्यताम् ॥ २ ॥"

"आ कलि काळने विषे जंगम तीर्थकररूप पूज्य श्री सोमसुंदर गुरुनी जेणे सारी रीते चिर काळ सुधी सेवा करी छे एवा मारे आ ज्योतिष शास्त्रना वार्तिकनी रचना करवी ए सर्वथा प्रकारे योग्य नथी, तोपण आ ग्रंथ जे विधिए करीने उत्पन्न थयो छे ते सांभळो."

"केचित्केचिदपि क्वचित्क्वचिदपि ग्रन्थे विशेषा मया,
दृष्टा ज्योतिषगोचराः किल समुच्चेतुं च ते चिन्तिताः ।
प्रक्रान्तश्च समुच्चयो रचयितुं संवर्धमानः पुनः,
सोऽर्थैरेव शनैः शनैः समभवद्ग्रन्थानुरूपाकृतिः ॥ ३ ॥"

"ज्योतिष संबंधी केटलाक विशेषो कोइक ग्रंथमा तथा केटलाक विशेषो बीजा कोइक ग्रंथमां में जोया, अने ते विशेषोने एकत्र करवानो में विचार कर्यो, अने पछी समूहरूप करवाने आरंभ कर्यो, त्यारे ते अर्थवडे वृद्धि पामीने धीमे धीमे एक ग्रंथने आकारे थइ गयो "

"प्राप्तः सोऽयमचिन्तितामपि यदा ग्रन्थस्य रीतिं तदा,
चित्तेऽचिन्ति मया धिया निपुणया सम्यग्विचार्यायतिम् ।
निःशूकैर्यतिभिस्तथा गृहिभिरप्यादास्यतेऽसौ यदा,
सावद्यप्रथितेर्वताधिकरणं संपत्स्यतेऽलं तदा ॥ ४ ॥"

"ज्यारे आ ग्रंथ नहीं चिंतवेली ग्रंथनी पद्धति (आकार)ने पाम्यो त्यारे में चित्तमा निपुण बुद्धिथी सारी रीते परिणाम (उत्तरकाळ)नो विचार कर्यो के निःशूक एवा मुनिओए तथा गृहस्थीओए ज्यारे आ ग्रंथ ग्रहण कराशे त्यारे आ ग्रंथ सावद्यना विस्तार (समूह)ना अधिकरणने अत्यंत पामशे ए खेदकारक छे.

" तेनैतस्य जलावमज्जनविधिर्ग्रन्थस्य निर्माप्यते,
नोत्सर्पत्यधिकाधिकाधिकरणस्फातिर्यथाऽस्मादिति ।
तत्कर्तुं तु न शक्यते स्म विविधग्रन्थोञ्छवृत्त्या हृता,
गच्छेऽत्र स्थितिमावहन्तु कथमप्येते विशेषा इति ॥ ५ ॥"

" तेथी करीने आ ग्रंथनो जळने विषे मज्जनविधि करुं के जेथी करीने आ ग्रंथ थकी अधिकाधिक अधिकरणनी वृद्धि न थाय, परंतु तेम करवुं पण शक्य नथी, कारण के आ विषयो विविध ग्रंथोमांथी उंछ वृत्तिए करीने एकत्र करेला छे, तेथी आ विशेषो कोइ पण प्रकारे आ गच्छमांज स्थितिने करो."

" एतस्मादभिसन्धितः परिहृताम्भोमज्जनः सज्जनाः,
सोऽयं ग्रन्थ उपागमत्करतले युष्माकमायुष्मताम् ।
सत्याप्योऽथ तथा कथञ्चन यथाऽऽरम्भप्रथाकारणं,
धर्म्याणामपि कर्मणां प्रणयने जात्वेष नो जायते ॥ ६ ॥"

" हे सज्जनो ! आ अभिप्रायथी त्याग कर्युं छे जळने विषे मज्जन जेनुं एवो आ ग्रंथ तमारा आयुष्यवंतना हाथमां प्राप्त थयो छे, तेथी कोइ पण रीते तथा प्रकारे आ ग्रंथ सफळ करवो के जेथी कोइ पण वखत आ ग्रंथ धर्म संबंधी कार्यो करवामां पण आरंभना विस्तारनुं कारण न थाय.

" खड्गः खण्डनहेतवे खलजनस्यादीयते धीयते,
नो सम्यग्यदि सोऽपि सौवधनिकोच्छेदाय तज्जायते ।
वेतालोऽपि विधेयतामपि गतो यत्रापि तत्रापि चेत्,
संयोज्येत यथा तथा ननु तदा स्वं साधकं बाधते ॥ ७ ॥
एवं ज्योतिषशास्त्रमेतदखिलं सावद्यसज्जात्मनां,
चैत्यादेरपि चेन्मुहूर्त्तकथने व्यापार्यते साधुभिः ।
तत्तेषामनवद्यभाषणमयं याति व्रतं सर्वथा,
लिप्यन्तेऽपि च पातकेन महता ते शास्त्रकर्त्रा समम् ॥ ८ ॥"

" खळ पुरुषोना नाशने माटे खड्ग ग्रहण करवामां आवे छे. तेने जो सारी रीते धारण न कर्युं होय तो ते पण पोताना स्वामी (धारण करनार)नाज नाशने माटे थाय छे. वळी वश थयेलो पण वेताळ जो ज्यां त्यां (जे ते कार्यमां) जेम तेम जोडवामां आवे तो ते पोताना साधकनेज बाध (पीडा) करे छे. तेज रीते आ समग्र ज्योतिष शास्त्र जो सावद्य व्यापारमां सज्ज थयेला गृहस्थीओने चैत्यादिकनां मुहूर्त्त

कहेवामां पण साधुओए व्यापार कराय तो तेओनुं सत्य भाषणमय बीजुं व्रत सर्वथा प्रकारे नाश पामे छे, अने तेओ शास्त्रकार सहित मोटा पापवडे पण लींपाय छे "

" नन्वेवं यदि जैनचैत्यरचनाश्रीतीर्थयात्रादिनः,
पुण्यस्यापि मुहूर्त्तमात्रमृपिभिर्नो देयमित्युच्यते ।
तत्पुण्योपचयः कथं नु भविता गार्हस्थ्यभाजां नृणा,
नानाग्रामनिवासिनामथ यतेः स्यात्पुण्यलाभः कथम् ॥ ९ ॥ "

" अहीं कोइ शंका करे के—जो जिनेश्वरनुं चैत्य बनाववुं, तीर्थयात्रा करवी विगेरे पुण्य कार्यनुं मुहूर्त्त मात्र पण साधुओए न देवुं एम तमोए कहेवाय छे, तो भिन्न भिन्न गामोमां वसनार गृहस्थाश्रमी माणसोने पुण्यनी वृद्धि शी रीते थशे ? अने साधुने पण पुण्यनो लाभ शी रीते थाय ?" उत्तर.—

" पुण्य स्यादनुमोदनैव यतिनां चैत्यादिनिर्मापणे,
मौहूर्ता' पुनरर्पयन्ति गृहिणामुद्वाहनादाविव ।
चैत्याद्येऽपि मुहूर्त्तमद्भुततर संवादमेषा पुन—
र्ज्योतिर्ज्ञा यतयो दिशन्त्यखिलमप्येवं सुयुक्तं भवेत् ॥ १० ॥ "

" चैत्यादिक कराववामां यतिओने अनुमोदनावडेज पुण्य थाय छे, परंतु गृहस्थीओने विवाहादिकनी जेम चैत्यादिकने विषे पण अत्यंत अद्भुत (शुभ) मुहूर्त तो जोशीओज आपे छे, किंतु ए जोशीओना समग्र संवादने ज्योतिष जाणनारा यतिओ बतावी शके छे आ रीते करवाथी सर्व युक्तियुक्त थाय छे "

" एवं सत्यपि कर्मगौरववशाद्यः पातकाभीलुकः,
शास्त्रस्यास्य बलेन वक्ष्यति जने मूढो मुहूर्त्तादिकम् ।
तस्यैवैतदघं पतिष्यति शिरस्यारम्भसंभारजं,
नैतद्ग्रन्थविधायिनस्तु मम तत्संबन्धलेशोऽपि हि ॥ ११ ॥ "

" आम छतां पण भारे कर्मना वशथी पापना भय रहित जे कोइ मूढ (यति) आ शास्त्रना बळे करीने लोकमा मुहूर्त्तादिकने कहेशे तो आरंभना समूहथी उत्पन्न थतुं आ पाप तेनाज मस्तक पर पडशे, परंतु आ ग्रंथने करनारा मने ते पापना अथवा आरंभना संबंधनो लेश पण नथी "

" तस्मात्तत्त्वमिद वदामि तदिदं शास्त्रं रहो भण्यतां,
शिष्याणामपि भाण्यतामवगतास्ते चेदघाद्भीरवः ।
पर्यायान् परिवर्धयन्तु च बुधा' सर्वेऽपि बोधस्य ते,
यस्मात्केवलमेतदेव हि फल मेऽभीष्टमेतत्कृतेः ॥ १२ ॥ "

" तेथी हुं आ रहस्यने कहुं बुं के—आ शास्त्र एकांतमां वांचो-ज्ञणो, तथा पोताना शिष्योने पण जो तेमने पापथी ज्ञीरु जाण्या होय तो सुखेथी ज्ञणावो, अने ते सर्वे पंमितो ज्ञानना पर्यायोने वृद्धि पमाको, कारण के आ कृतिनुं मात्र एज फळ मने इष्ट बे. " तेथी करीने—

" ज्ञानांशोपचयैकपेशलफलप्रस्फुर्त्तये वार्तिकं,
कुर्वाणेन मया शुज्ञाशयवशाद्यत्पुण्यकर्मार्जितम् ।
दिष्ट्या तेन ज्ञवे ज्ञवे ज्ञवतु मे सज्ज्ञानलाज्ञोदयो,
यस्मादद्भुतधाम शाश्वतचिदानन्दं पदं प्राप्यते ॥ १३ ॥ "

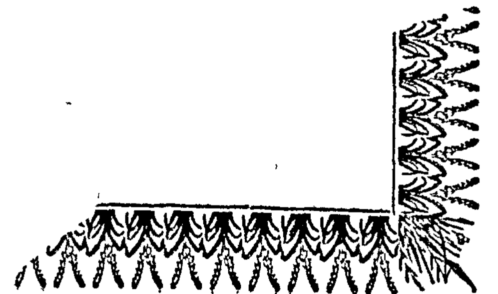
ज्ञानना पर्यायोनी वृद्धिरूप एक सुंदर फळनी स्फुर्तिने माटेज आ वार्तिकने रचतां में शुज्ञ परिणामना वशथी जे कांइ पुण्य कर्म उपार्जन कर्युं होय ते पुण्यवमे मने ज्ञव ज्ञवने विषे सत् ज्ञानना लाज्ञनो उदय थजो, के जे ज्ञानथी अद्भुत धामवाळुं शाश्वतुं चिदानंद (मोक्ष) पद मने प्राप्त थाय. "

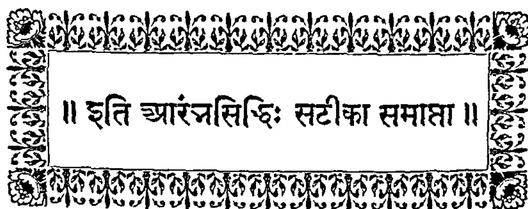
आ प्रमाणे ग्रंथकारना पोताना अज्ञिप्रायने सूचवनारां आ काव्यो (श्लोको) वांचीने तत्त्वज्ञानीउंए उपदेश करेला मार्गना अनुष्ठान माटे यत्न करवो. इति शम्.

॥ इति प्रशस्तिः ॥

॥ इति आरंज्ञसिद्धिः सटीका समाप्ता ॥






॥ इति आरंभसिद्धिः सटीका समाप्ता ॥

॥ श्रीहरिभद्राचार्यकृता ॥

। लग्नशुद्धिः ।

। लग्नशुद्धिः ।

अवितहसव्वाएसं नमिउं चोवीसमं जिणवरेसं ।
वुच्छामि समासेणं लग्गं सुगुरूवएसेणं ॥ १ ॥

जेनो सर्व आदेश सत्य छे एवा श्री चोवीशमा जिनेश्वरने नमीने सद्गुरुना उपदेशथी संक्षेपमां लग्ननी शुद्धि कहुं छुं. १.

कज्जं कुणंतयाणं सुहावहो जोइसम्मि जो भणिउं ।
कालविसेसो लग्गं कज्जं पुण बहुविहं जइ वि ॥ २ ॥
तह वि हु इह लोगुत्तरदिक्खोवट्ठावणापइट्ठाउं ।
अहिगिच्च लग्गसुधिं भणिज्जमाणं निसामेह ॥ ३ ॥

कार्य करनारने माटे ज्योतिष शास्त्रमां जे काळविशेष सुखकारक कहेलो छे ते लग्न कहेवाय छे. जो के कार्य घणां प्रकारनां छे, तोपण अहीं दीक्षा, उपस्थापना अने प्रतिष्ठा ए त्रण लोकोत्तर कार्यने आश्रीने हुं लग्ननी शुद्धि कहुं छुं ते तमे सांभळो॥२-३.

सा पुण इह विन्नेया गोअरसुद्धीइ दिवससुद्धीए ।
तस्समयउदयपत्तस्स तह वि लग्गस्स सुद्धीए ॥ ४ ॥

अने ते लग्नशुद्धि अहीं गोचरनी शुद्धिथी तथा दिवसनी शुद्धिथी जाणवी, तथा ते समयमां उदय पामेला लग्नननी शुद्धिथी पण लग्नशुद्धि थाय छे. (अर्थात् गोचरशुद्धि, दिवसशुद्धि अने लग्नशुद्धि ए त्रण द्वार छे) ४. इति द्वारम्

गुरुससिरविणो बलिणो दिक्खोवट्ठावणासु सीसस्स ।
जइ तो गोअरसुद्धी गुरुणो वि हु ससिबले संते ॥ ५ ॥

जो दीक्षा तथा उपस्थापनामां शिष्यने गुरु, चंद्र अने रवि बळवान् होय अने आचार्यने पण चंद्र बळवान् होय तो गोचरशुद्धि जाणवी. ५.

बिंबपइट्ठाइ पुणो कारावयसावयस्स बलिएसु ।
गुरुससिसूरेसु भवे गोअरसुद्धि त्ति बिंति बुहा ॥ ६ ॥

अने बिंबप्रतिष्ठामां प्रतिष्ठा करावनार श्रावकने गुरु, चंद्र अने रवि बळवान् होय तो गोचरशुद्धि थाय एम पंडितो कहे छे. ६.

दो २ पंच ५ सत्त ७ नवमि ९ क्कारसमो ११ जम्मरासिणो जीवो ।
पढम १ ति ३ छ ६ सत्त ७ दसमे १० क्कारसमो ११ ससहरो वलवं ॥७॥

जन्मनी राशिथी गुरु बीजे, पांचमे, सातमे, नवमे अने अगीयारमे होय तो ते बळवान् जाणवो, चंद्र बन्ने पक्षमां पहेले, त्रीजे, छठे, सातमे, दशमे अने अगीयारमे होय तो ते बळवान् जाणवो. ७.

दो २ पंच ५ नवमगो ९ विहु सियपक्खेसो रवी छ ति छ दसमो ।
इक्कारसमो अ वली सेसठाणेसु ते अवला ॥ ८ ॥

शुक्लपक्षमां जन्मराशिथी चंद्र बीजे, पांचमे अने नवमे होय तो बळवान् छे, जन्मराशिथी सूर्य त्रीजे, छठे, दशमे अने अगीयारमे होय तो बळवान् छे अने बाकीना स्थानोमां होय तो ते निर्बळ छे. ८.

सियपक्खे चंदवलं असिए तारावलं पि गहियव्वं ।
तं पुण ति ३ पंच ५ सत्तम ७ ताराउ मुत्तु सेसा उ ॥ ९ ॥

शुक्लपक्षमां चंद्रनुं बळ लेवुं, अने कृष्णपक्षमां तारानुं बळ पण ग्रहण करवुं. तेमा पण त्रीजी, पांचमी अने सातमी ताराने मूकीने बाकीनी ताराउ लेवी ९.

पढमा जम्मणि रिक्खे तत्तो दसमम्मि इगुणवीसे अ ।
बीआ तप्परएसुं तिसु एवं जाव नव तारा ॥ १० ॥

पहेली तारा जन्मनक्षत्रमां मूकवी, एटले के जन्मनुं नक्षत्र ए पहेली तारा गणवी तेनी नीचे दशमी तारा मूकवी अने तेनी नीचे उंगणीशमी तारा मूकवी पछी पहेली तारानी पछी बीजी, त्रीजी एम अनुक्रमे नव सुधी मूकवी, दशमीनी पछी अगीयार, बार एम अढार सुधी मूकवी अने उंगणशमीनी पासे वीश, एकवीश एम सत्यावीश सुधी मूकवी. ए त्रणे लाइननी त्रीजी त्रीजी, पाचमी पाचमी अने सातमी सातमी ताराउ अशुभ होवाथी शुभ कार्यमां लेवी नहीं १०.

जम्मं १ संपइ २ विप्पइ ३ खेमा ४ पच्चरय ५ साहणा ६ निहणा ७ ।
मित्ता ८ अइमित्ता ९ वा तारा नेआ असिअ पक्खे ॥ ११ ॥

ते कृष्णपक्षमा ताराउनां नाम अनुक्रमे आ प्रमाणे जाणवा —जन्म १, संपद् २, विपद् ३, क्षेमा ४, प्रत्यरा (यमा) ५, साधना ६, निधना ७, मित्रा ८ अने अतिमित्रा ९ एज प्रमाणे दशमी ताराथी अने उंगणीशमी ताराथी पण अनुक्रमे आ नामोज जाणवा ११.

जइ नो नज्जइ जम्मण रासी तो गणह नामरासीउ ।
अवकहमाचक्काउ सा नज्जइ तं पुण पसिद्धं ॥ १२ ॥

जो जन्मराशि जाणवामां न होय तो नामराशिथी गणवुं, अने ते नामराशि अवकहडा चक्रथी जाणवी. ते चक्र प्रसिद्ध छे. १२.

॥ इति गोचरशुद्धिः ॥ १ ॥

॥ अथ दिनशुद्धिः ॥ २ ॥

सुहमास १ वार २ तिहि ३ रिक्ख ४ जोग ५ करणे ६ दिणम्मि सगुणंमि ७ ।
निद्दोसे ८ तह निद्दोस ए सगुणरिक्खंमि १० दिणसुद्धी ॥ १३ ॥

दिनशुद्धिमां आ प्रमाणे दश द्वार छे—शुभ मास १, शुभ वार २, शुभ तिथि ३, शुभ नक्षत्र ४, शुभ योग ५, शुभ करण ६, सगुण दिवस ७, निर्दोष दिवस ८, निर्दोष नक्षत्र ए अने सगुण नक्षत्र १०. १३.

मिग्गसिराई मासठ चित्त पोसाहिए वि मुत्तु सुहा ।
जइ न गुरू सुक्को वा बालो वुड्ढो य अत्थमिउ ॥ १४ ॥

मार्गशीर्ष मासथी आरंभीने आठ मास शुभ छे, तेमां पण चैत्र, पोष अने अधिक मास वर्जीने सारा छे. तेमां पण जो गुरु के शुक्र बाळक, वृद्ध के अस्त पामेलो न होवो जोइए. १४.

दस १० तिन्नि ३ दिणे बालो पणदिण ५ पक्खं १५ च भिगुसुउ वुड्ढो ।
पच्छिमपुव्वासु कमा गुरु वि जहसंभवं एवं ॥ १५ ॥

शुक्र पश्चिम दिशामां उदय पाम्यो होय तो उदयथी दश दिवस सुधी बाळ जाणवो, अने पूर्व दिशामां उदय पाम्यो होय तो त्रण दिवस बाळ जाणवो तथा पश्चिम दिशामां अस्त पामे तो अस्त पाम्या पहेलाना पांच दिवस वृद्ध जाणवो, अने पूर्व दिशामां अस्त पामवानो होय तो ते पहेलां पंदर दिवस वृद्ध जाणवो. एज रीते गुरु पण जेम संभवे तेम जाणवो. १५. । इति मासाः ।

आइच्च बुह विहप्फइ सणिवारा सुंदरा वयग्गहणे ।
बिंबपइट्ठाइ पुणो विहप्फई सोम बुह १६ ॥

एकम ने शुक्रवार होय, बीज ने बुधवार होय, त्रीज ने मंगळवार होय, चोथ ने शनिवार होय, पाचम ने गुरुवार होय, छठ ने मंगळ के शुक्र होय, सातम ने बुध होय, आठम ने रवि के मंगळ होय, नोम ने शनि के चन्द्र होय. २८. दशम ने गुरु होय, अगीयारशने गुरु के शुक्र होय, बारश ने बुध होय, तेरश ने मंगळ के शुक्र होय, चौदश ने शनि होय तथा पूनम ने गुरु होय तो ते सिद्धि योग कहेवाय छे. ते सर्व कार्यमां शुभ छे. २९. इति तिथिवारसिद्धियोगाः ।

हत्थुत्तर ४ मूलाइं ५ रविणो सिद्धाइं पंच रिक्खाइं ।
रोहिणि १ मिअसिर २ पुस्सा ३ णुराह ४ सवणाइं ५ सोमेणं ॥३०॥

रविवारे हस्त, त्रण उत्तरा अने मूळ ए पांच नक्षत्रोमांनुं कोइ होय तो सिद्धि योग थाय छे. सोमवारे रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, अनुराधा अने श्रवण होय तो सिद्धि योग थाय छे. ३०.

उत्तरभद्दवय १ स्सिणि २ रेवइ ३ रिक्खाइं तिन्नि भोमेणं ।
कित्तिय १ रोहिणि २ मिअसिर ३ पुस्स ४ अणुराहा उ ५ पंच बुहे ३१

मंगळवारे उत्तराभाद्रपद, अश्विनी अने रेवती ए त्रण नक्षत्र होय, बुधवारे कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा ए पाच नक्षत्र होय तो सिद्धि योग जाणवो. ३१.

अस्सिणि १ पुस्स २ पुणव्वसु ३ अणुराहा ४ रेवई अ ५ गुरुवारे ।
सत्तम पढमिक्कारस रेवइ अणुराह सवण सिए ॥ ३२ ॥

गुरुवारे अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा अने रेवती होय, शुक्रवारे पुनर्वसु, अश्विनी, पूर्वाफाल्गुनी, रेवती, अनुराधा अने श्रवण होय तो सिद्धि योग थाय छे ३२

रोहिणि १ सवणं २ साई ३ सणिणा इय रिक्खवार सुह जोगा ।
अन्ने वि एवमाइ वित्थरगंथेसु जाणिज्जा ॥ ३३ ॥

शनिवारे रोहिणी, श्रवण के स्वाति होय तो सिद्धि योग थाय छे आ प्रमाणे नक्षत्र अने वारथी थता शुभ योगो छे. आ विगेरे बीजा पण योगो विस्तारवाळा ग्रंथोथी जाणी लेवा ३३ ॥ इति नक्षत्रवारसिद्धियोगाः ॥ इति सिद्धियोगाः ॥

हवे कुमार योग कहे छे

अस्सिणि १ रोहिणि २ मूलं ३ हत्थ ४ पुणव्वसु ५ विसाह ६ मह ७ सवणा ८ ।
भद्दवया वि अ पुव्वा ९ मंगल १ सिअ २ बुह ३ ससी ४ वारा ॥ ३४ ॥

दसमी १ छट्ठि २ क्कारसि ३ पडिवय ४ पंचमि ५ तिहीणमन्नयरा ।
एसो कुमारजोगो रिक्खतिहीवारजोगम्मि ॥ ३५ ॥

अश्विनी, रोहिणी, मूळ, हस्त, पुनर्वसु, विशाखा, मघा, श्रवण अने पूर्वाभाद्रपद ए नक्षत्रोमांनुं कोइ एक नक्षत्र होय अने मंगळ, शुक्र, बुध अने सोम एमांनो कोइ पण वार होय तथा दशम, छठ, अगीयारश, एकम अने पांचम एमांनी कोइ एक तिथि होय तो आ रीते नक्षत्र, तिथि अने वारना योगथी कुमार नामे योग थाय छे. ३५. इति कुमारयोगः ।

घरवेसमित्तयाधम्मसिप्पविज्जाइया सुहा भावा ।
कायव्वा एएणं विरुद्धजोगं विवज्जित्ता ॥ ३६ ॥

गृहप्रवेश, मित्रता, धर्म, शिल्पविद्या विगेरे शुभ कार्यो विरुद्ध योगने वर्जीने आवा शुभ योगमां करवां. ३६.

। इति सगुणदिनम् । ७

रयछन्नयाइ १ संकंतिगहणदड्ढाइआ य दिणदोसा २ ।
तह दिवसवारनक्खत्त असुहजोग ३ ऽद्धपहराई ४ ॥ ३७ ॥

रजश्छन्नादिक १, संक्रांति, संक्रांतिदग्ध अने ग्रहणदग्ध तिथि विगेरे दिवसना दोष २, दिवस, वार अने नक्षत्रथी थता अशुभ योग ३, तथा अर्धप्रहरादिक ४, ए चार वर्ज्य द्वार कहे छे. ३७.

रयछन्न १ मब्भछन्नं २ पयंडपवणं ३ तहा समुग्घायं ४ ।
सुरधणु ५ परिवेस ६ दिसादाहाइ ७ जुत्तं दिणं दुट्ठं ॥ ३८ ॥

रजश्छन्न एटले आकाश रजथी–धूळथी भराइ गयुं होय १, आकाश वादळांथी छवाइ गयुं होय २, प्रचंड पवन वातो होय ३, समुद्घात एटले मोटा मोटा पडछंदा जेवा अवाज थता होय ४, आकाशमां इंद्रधनुष देखातुं होय ५, परिवेस एटले चंद्र तथा सूर्यनी फरतुं जे कुंडाळुं थाय छे ते ६, तथा दिशादाह एटले सर्व दिशाओ बळती होय एवो देखाव थतो होय, आ विगेरे उत्पातवडे युक्त एवो दिवस दुष्ट—अशुभ छे. ३८. इति रजश्छन्नद्वारम् । (१)

संकंतीए पुव्वं संकंतिदिणं तयग्गिमं च दिणं ।
वज्जिज्जा तह संकंति दड्ढतिहिउ अ एआउ ॥ ३९ ॥

सूर्य संक्रांति जे दिवस बेसती होय तेनी पहेलांनो एक दिवस, तेनी पछीनो एक दिवस अने तेज एक दिवस एम ए त्रण दिवस तथा संक्रातिए करीने दग्ध तिथिओ आ आगळ गाथामां कहे छे तेने शुभ कार्यमां वर्जवी. ३९

दग्ध तिथि कहे छे.

धणुमीणगए बीआ विसे अ कुंभे अ तह चउत्थीए ।
कक्कममेसे छठी अठमि मिहुणो अ कन्ने अ ॥ ४० ॥
विछियसीहे दसमी तुले अ मयरे अ बारसी भणिया ।
एआ दड्ढतिहीउ वज्जेअव्वा पयत्तेणं ॥ ४१ ॥

धन के मीननी संक्रांतिमां बीज दग्ध तिथि कहेवाय छे. वृष के कुंभ संक्रांतिमां चोथ, कर्क के मेष संक्रातिमां छठ, मिथुन के कन्या संक्रातिमा आठम ४० वृश्चिक के सिंह संक्रातिमा दशम तथा तुला के मकर संक्रातिमा बारश ए तिथिउ दग्ध तिथि कहेवाय छे. ते शुभ कार्यमा प्रयत्ने करीने वर्जवी. ४१.

ससिसूराणं गहणं जंमि दिणंमि तमाइउ काउं ।
सत्तदिणाइं वज्जह ताइं जउ गहणदड्ढाइं ॥ ४२ ॥

चंद्र अथवा सूर्यनुं ग्रहण जे दिवस थयुं होय ते दिवसथी आरंभीने सात दिवस वर्जवा, कारण के ते ग्रहण दग्ध कहेवाय छे. ४२. । इति संक्रांतिदग्धग्रहणदग्धतिथयः ॥ इति दिनद्वारम् । (२)

सूरे बारसि सोमे इगारसी दसमि मंगले वज्जा ।
नवमि बुहे गुरु अठमि सत्तमि सुक्कम्मि सणि छठी ॥ ४३ ॥

बारश ने रविवार होय, अगीयारश ने सोमवार होय, दशम ने मंगळ होय, नोम ने बुध होय, आठम ने गुरु होय, सातम ने शुक्र होय तथा छठ ने शनिवार होय तो ते वर्ज्य छे, कारण के ते कर्क योग कहेवाय छे ४३. । इति कर्कयोगः ।

ससिसूरदिणे सत्तमि तइआ सुक्कम्मि छठि गुरुवारे ।
पडिवय तइया य बुहे विवज्जियाउ सुहे कज्जे ॥ ४४ ॥

सोम के रविवारे सातम होय, शुक्रवारे त्रीज होय, गुरुवारे छठ होय, बुधवारे पडवो के त्रीज होय तो ते शुभ कार्यमां वर्ज्य छे, केमके ते संवर्तक योग कहेवाय छे ४४. इति संवर्त्तकयोगः ।

जिठा महा विसाहा अणुराहा रविदिणम्मि वज्जिज्जा ।
आसाढाउ डुन्निय तह य विसाहा उ सोमम्मि ॥ ४५ ॥

रविवारने दिवसे जो ज्येष्ठा, मघा, विशाखा के अनुराधा होय तो ते वर्ज्य छे, सोमवारे पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा के विशाखा होय तो ते वर्ज्य छे. ४५.

सयभिस अद्द धणिठा मंगलवारम्मि पुव्वभद्दवया ।
मूलऽस्सिणि भरणी रेवईउ वज्जिज्ज बुहवारे ॥ ४६ ॥

मंगळवारे शतभिषक्, आर्द्रा, धनिष्ठा के पूर्वाभाद्रपद होय, बुधवारे मूळ, अश्विनी भरणी के रेवती होय तो ते पण वर्ज्य छे. ४६.

रोहिणि मिअसिर अद्दा सयभिसयाउ विहप्फइदिणम्मि ।
रोहिणिमहअसिलेसापुस्साइं सुहाइं नो सुक्के ॥ ४७ ॥

गुरुवारे रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा के शतभिषक् होय, शुक्रवारे रोहिणी, मघा, अश्लेषा के पुष्य होय तो ते सुखकारक नथी. ४७.

उत्तरफग्गुणि हत्थो चित्ताऽऽसाढा डुगं च एयाइं ।
पंच वि नक्खत्ताइं सणिवारे वज्जिअव्वाइं ॥ ४८ ॥

शनिवारे उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, पूर्वाषाढा के उत्तराषाढा ए पांच नक्षत्रमांनुं कोइ एक होय तो ते वर्जवा योग्य छे. ४८. इति वारनक्षत्राशुभयोगाः ।

वज्जिज्ज भरणि चित्ता उत्तरसाढा तहेव य धणिठा ।
उत्तरफग्गुणि पुस्सं रेवइ सुराइसु कमेणं ॥ ४९ ॥

रविवारे भरणी होय, सोमवारे चित्रा होय, मंगळवारे उत्तराषाढा होय, बुधवारे धनिष्ठा होय, गुरुवारे उत्तराफाल्गुनी होय, शुक्रवारे पुष्य होय अने शनिवारे रेवती होय तो ते वर्जवा योग्य छे. ४९। इति ग्रहजन्मनक्षत्राशुभयोगः । इति अशुभयोगद्वारम् । (३)

अद्धपहरो कुलीउ उवकुलिउ असुहकालहोरा य ।
एए वि हु दिणदोसा वज्जेअव्वा सुहे कज्जे ॥ ५० ॥

अर्धप्रहर, कुलिक, उपकुलिक अने अशुभ काळहोरा ए पण दिवसना दोषो छे, ते शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे. ५०.

कुज सिअ रवि बुह सणि ससि गुरुवारेसु विवज्जणिज्जो य ।
अद्धप्पहरो वि २ ति ३ चउ ४ पंच ५ छ ६ सत्त ७ ठमो ८ कमसो ॥५१॥

मंगळवारे बीजो अर्धप्रहर तजवा योग्य छे, शुक्रवारे त्रीजो, रविवारे चोथो, बुधवारे पांचमो, शनिवारे छठो, सोमवारे सातमो अने गुरुवारे आठमो अर्धप्रहर (अर्धो पहोर) तजवा योग्य छे. ५१.

दिणवाराउ जइमा सणिगुरुणो तइयमद्धपहरेसु ।
कुलिउ तह उवकुलिउ जहसंखेणं मुणेयव्वो ॥ ५२ ॥

इष्ट दिवसना वारथी जेटलामो शनिवार होय तेटलामा अर्धप्रहरने कुलिक योग जाणवो अने इष्ट दिवसना वारथी जेटलामो गुरुवार होय तेटलामा अर्धप्रहरने उपकुलिक जाणवो आ बन्ने योग अशुभ छे ५२.

आ सु बु सो स गु मं तंवलयं जाणाहि कालहोर त्ति ।
अड्ढाइज्जा घडिया दिणवाराउ गणसु पढमं ॥ ५३ ॥

रविवारे पहेली होरा रविनी, बीजी शुक्रनी, त्रीजी बुधनी, चोथी सोमनी, पांचमी शनिनी, छठी गुरुनी, सातमी मंगळनी ए रीते वलयाकारे छठ्ठे छठ्ठे वारे गणता दरेक वारे चोवीश चोवीश होरा होय छे. जे वारे गणवी होय ते वारे पहेली पोतानीज होरा गणवी. ते दरेक होरा अढी घडीनी होय छे. ५३. इति अर्द्धप्रहरादिद्वारम् । (४)

। इति मूलद्वारेषु निर्दोषमिति द्वारम् । ८

संझागयं १ धूमिय २ मालिंगिय ३ दड्ढ ४ विद्ध ५ सोवग्गहं ६ ।
लत्ता ७ पाए ८ क्कग्गल ९ दूसिअं इअ दुट्ठरिक्खाइं ॥ ५४ ॥

संध्यागत १, धूमित २, आलिंगित ३, दग्ध ४, विद्ध ५, सोपग्रह ६, लता ७, पात ८ अने एकार्गल ९, आ नव योगथी दूषित थयेलां दुष्ट नक्षत्र तजवा योग्य छे ५४

संझागयं १ रविगयं २ विड्डेरं ३ सग्गहं ४ विलंबं च ५ ।
राहुहयं ६ गहभिन्नं ७ विवज्जए सत्त नक्खत्ते ॥ ५५ ॥

सध्यासमये उदय पामेलुं नक्षत्र १, सूर्य साथे रहेलुं २, विड्वर ३, ग्रह सहित ४, विलंबी ५, राहुथी हणायेलु ६, ग्रहथी भेदायेलुं ७, ए सात नक्षत्रो शुभ कार्यमा तजवा योग्य छे. ५५

संझागयंमि कलहो आइच्चगए न होइ निव्वाणी ।
विड्डेरे परविजउ सगहंमि अ विग्गहो होइ ॥ ५६ ॥
दोसो असंगयत्तं होइ कुत्तुत्तं विलंबिनरकत्ते ।
राहुहयम्मि अ मरणं गहभिन्ने सोणिअग्गालो ॥ ५७ ॥

संध्यागत नक्षत्रमां कार्य करवाथी कलह थाय, सूर्यगतमां करवाथी निवृत्ति थाय नहीं, विड्वरमां करवाथी सामानो विजय छे, ग्रह सहितमां करवाथी विग्रह (लडाइ) थाय. ५६ । सूर्ये भोगवीने मूकेल एवा विलंबी नक्षत्रमां करवाथी असंगतिपणुं (विवाद) थाय छे, राहुथी हणायेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी मरण थाय अने ग्रहथी भेदायेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी लोहीनुं वमन थाय. ५७.

अत्थमणे संझागय १ रविगय जहिअं ठिउ उ आइच्चो २ ।
विड्डेरमवक्कारिय ३ सग्गहं कूरग्गहठिअं तु ४ ॥ ५८ ॥
रविरिक्ख पिठउ जं विलंबि ५ राहुहयं जहिं गहणं ६ ।
मझेणं जस्स गहो वच्चइ तं होइ गहभिन्नं ७ ॥ ५९ ॥

सूर्यास्तसमये जे नक्षत्र पूर्व दिशामां उगतुं होय ते संध्यागत कहेवाय छे १, जे नक्षत्रमां सूर्य रहेलो होय ते नक्षत्र रविगत कहेवाय छे २, जे नक्षत्र वक्री ग्रहे अधिष्ठित होय ते विड्वर कहेवाय छे ३, जे नक्षत्र क्रूर ग्रहे अधिष्ठित होय ते ग्रह सहित कहेवाय छे ४, ५८ । सूर्यना नक्षत्रनी पाछळ जे नक्षत्र होय ते विलंबी नक्षत्र कहेवाय छे ५, जे नक्षत्रमां ग्रहण थयुं होय ते नक्षत्र राहुथी हणायेलुं कहेवाय छे (आ ग्रहणनुं नक्षत्र ज्यांसुधी सूर्यवडे न भोगवाय त्यांसुधी अशुभ छे) ६, तथा जे नक्षत्रनी मध्ये कोइ पण ग्रह रहेलो होय ते ग्रहभिन्न—ग्रहथी भेदायेलुं नक्षत्र कहेवाय छे ७. ५९ । इति संध्यागतादीनि ७ ।

सणिमंगलाण पुरो धूमिय २ मालिंगियं च तज्जुत्तं ३ ।
आलिंगियस्स पछा जं रिक्खं तं भवे दड्ढं ४ ॥ ६० ॥

शनि अने मंगळनी सन्मुख जे नक्षत्र होय ते धूमित कहेवाय छे २, अने शनि के मंगळथी युक्त जे नक्षत्र होय ते आलिंगित कहेवाय छे ३, तथा आलिंगितनी पाछळ जे नक्षत्र होय ते दग्ध कहेवाय छे ४. ६०.

तिरियं सत्तसलाया उड्ढाउ सत्त ताण मझेणं ।
उवरिमपढमसलागाण कित्तिया तयणु सेसाणि ॥ ६१ ॥

त्रथी (पूर्वाषाढाथी) गणतां जेटलामुं (१७) थाय तेटलामुं (१७) अश्विनीथी चंद्रनुं नक्षत्र (ज्येष्ठा) होय तो एकार्गल थाय छे. ७०–७१

एकार्गलनी वीजी रीत आ प्रमाणे छे.—

तिरियं तेरस रेहा एका तम्मज्झगामिणी उड्ढं ।
काऊणं चक्कमिणं सिररिक्खं दिज्ज तस्स सिरे ॥ ७२ ॥
विसमे जोगे इक्कं अट्ठावीसं समंमि दिज्जाहि ।
अद्धी कयंमि तंमि उ जं तं इह मुणसु सिररिक्खं ॥ ७३ ॥
अस्सिणि अणुराहा वि य मियसिर मूलो पुणव्वसू पुस्सो ।
असलेस महा चित्ता विक्खंभाईसु सिररिक्खा ॥ ७४ ॥

आडी तेर रेखा करवी, तेमनी मध्ये एक ऊभी रेखा करवी, ए प्रमाणे चक्र करीने तेना मस्तक पर शिर नक्षत्र देवुं, पछी बीजां नक्षत्रो अनुक्रमे मूकवा शिर नक्षत्र कयुं समजवुं ? तेनी रीत आ प्रमाणे—विष्कंभादिक (अशुभ) योगोमांनो जे योग इष्ट दिवसे होय ते योग जो विषम (एकी) होय तो तेमा एक उमेरवो अने वेकी होय तो तेमां अठ्यावीश उमेरवा. पछी तेने अर्धा करवा. जे शेष रहे तेटलामुं नक्षत्र शिर नक्षत्र जाणवुं एटले के तेटलामु नक्षत्र मस्तक पर मूकवुं तेनां नाम आ प्रमाणे छे.— विष्कंभ योग होय तो मस्तक पर अश्विनी आवे, अतिगंड होय तो अनुराधा आवे, शूळ होय तो मृगशिर, गंड होय तो मूळ, व्याघात होय तो पुनर्वसु, वज्र होय तो पुष्य, व्यतिपात होय तो अश्लेषा, परिघ होय तो मघा अने वैधृति होय तो चित्रा नक्षत्र मस्तक पर आवे छे (शुभ योगमां एकार्गल थतोज नथी) ७२–७३–७४.

सिररिक्खाउ कमेणं सत्तावीसं पि दिज्ज रिक्खाइं ।
रेहासु तासु कमसो रिक्खेसु अ ठवसु ससिसूरे ॥ ७५ ॥
एक्काए रेहाए जइ दुन्नि वि हुंति चंद आइच्चा ।
एक्कग्गलो हु एवं जायइ नक्खत्तदोस त्ति ॥ ७६ ॥

पछी मस्तकना नक्षत्रथी अनुक्रमे ते रेखाओ उपर अनुक्रमे सत्यावीश नक्षत्रो मूकवां. पछी ते नक्षत्रो उपर ज्यां सम्भवे त्यां सूर्य अने चंद्र मूकवा. ७५. हवे जो एकज रेखा उपर सामसामा सूर्य अने चंद्र बन्ने आव्या होय तो ते एकार्गल योग थयो जाणवो. आ नक्षत्रनो दोषरूप छे. ७६ इति एकार्गलद्वारम् ।

। इति मूलद्वारेषु निर्दोषनक्षत्रद्वारम् । ९

सगुणं पुण विन्नेयं रिक्खं रविजोगसंजुअं तं च ।
रविरिक्खाउ चउत्थं ४ ठ ६ न्नव ए दस १० तेरसं १३ वीसं २० ॥ ७७ ॥

सूर्यना नक्षत्रथी चोथुं, ठडुं, नवमुं, दशमुं, तेरमुं अने वीशमुं नक्षत्र जो होय तो रवि योग जाणवो. ते रवि योगवडे युक्त एवा नक्षत्रने सगुण नक्षत्र जाणवुं. ७७.

॥ इति सगुणनक्षत्रद्वारम् ॥ १०

॥ इति दिनशुद्धिः ॥ २

इत्तो वि लग्गसुद्धी सा पुण ठवग्गसुद्धिउं होइ १ ।
उदयत्थसुद्धिउ २ तह जहुत्तगहबलगुणेणं च ३ ॥ ७० ॥

हवे लग्नशुद्धि कहीए डीए. ते (लग्नशुद्धि) ठ वर्गनी शुद्धिवडे होय ठे १, उदय अने अस्तनी शुद्धिवडे होय ठे २, तथा यथोक्त ग्रहबळना गुणवडे होय ठे. ३. ७०.

गिह १ होरा २ दिक्काणा ३ नव ४ बारस ५ तीस ६ अंसया य जहिं ।
सोमग्गहाण तणपा ठवग्गसुद्धी तहिं लग्गे ॥ ७ए ॥

लग्नना गृह १, होरा २, द्रेष्काण ३, नवांश ४, द्वादशांश ५ अने त्रिंशांश ६, ए ठएना स्वामी जो सौम्य ग्रह होय तो ते षड्वर्गशुद्धि कहेवाय ठे. ७ए.

जइ पुण ठवग्गसुद्धी संन्नवइ न चेव कह वि लग्गम्मि ।
तो पंचवग्गसुद्धी विसुद्धिहेऊ वि लग्गस्स ॥ ७० ॥

जो कदाच कोइ पण प्रकारे लग्नमां ठ वर्गनी शुद्धि न संन्नवे तो पांच वर्गनी शुद्धि पण लग्ननी शुद्धिनुं कारणरूप ठे. ७०.

एसा य बारसन्हं लग्गाणं जंमि तीसइ विन्नागे ।
संन्नवइ तयं वुढं लग्गपमाणं कहेऊणं ॥ ७१ ॥

प्रथम लग्ननुं प्रमाण कहीने पठी आ लग्नशुद्धि बार लग्नोमां जे त्रिंशांशमां संन्नवे ठे ते हुं कहीश. ७१.

दोइगुणवीस दोएगवन्न सय तिन्नि तिजुअ तेआला ।
सगयाल सत्ततीसा मेसाइ पला कमुक्कमउ ॥ ७२ ॥

मेष लग्नना २१ए पळ ठे, वृषना २५१ पळ ठे, मिथुनना ३०३, कर्कना ३४३, सिंहना ३४७ अने कन्याना ३३७ पळ ठे, तेथी उत्क्रमे बीजी ठ राशिना जाणवा, एटले के

तुलाना ३२७, वृश्चिकना ३४७, धनना ३४३, मकरना ३०३, कुंभना २५१ अने मीनना २१९ पळ छे. ७२.

विस १४ मयराण १४ चउदसे अठमए मीण ८ कक्क ८ कन्नाणं ८ ।
नायम्मि बारसे विछियस्स १२ कुंभस्स छवीसे २६ ॥ ७३ ॥
चउवीसमे तुलाए २४ मेसस्सिगवीसमंमि नागम्मि २१ ।
सीहस्स ठारसमे १८ धणमिहुणाणं च सत्तरसे १७ ॥ ७४ ॥
इय तीसइनागेसु छवग्गो हुंति पंचवग्गो वा ।
सोमग्गहाण तणउ हियइछियकज्जसिद्धिकरो ॥ ७५ ॥

वृष अने मकरनुं लग्न होय तो तेनो १४ मो त्रिंशांश, मीन, कर्क अने कन्या लग्न होय तो तेनो आठमो त्रिंशांश, वृश्चिक लग्ननो बारमो त्रिंशांश, कुंभ लग्ननो छवीशमो, तुला लग्ननो चोवीशमो, मेष लग्ननो एकवीशमो, सिंह लग्ननो अढारमो अने धन तथा मिथुननुं लग्न होय तो तेना सत्तरमा त्रिंशाशमां छ वर्गनी अथवा पांच वर्गनी शुद्धि होय छे. तेमां जो सौम्य ग्रहो स्वामीउ होय तो ते हृदयना इछित कार्यनी सिद्धि करनार थाय छे. ७३–७४–७५.

अन्ने नवंसगं चिय एगं घित्तूण सोमगहतणयं ।
पन्नणंति लग्गसुद्धिं विणा वि छवग्गसुद्धीए ॥ ७६ ॥

केटलाएक आचार्यो छ वर्गनी शुद्धि न होय तोपण सौम्य ग्रह जेनो स्वामी होय एवा एक नवांशनेज ग्रहण करीने लग्ननी शुद्धि कहे छे. ७६

गिह होराइ लग्गे गहस्स जं जस्स संतिअं होइ ।
तं संपइ पयमत्थं वुच्छं अवुहाण वोहत्थं ॥ ७७ ॥

लग्नने विषे गृह तथा होरा विगेरेने तथा जे लग्ननो जे स्वामी होय तेने हवे अज्ञात जनना बोधने माटे हुं प्रगटपणे कहुं छुं. ७७.

कुजसुक्कवुहिंदुरविवुहसियकुजगुरुसणीसणीगुरूणं ।
मेसाइया उ बारस लग्गाण घराइं जहसंखं ॥ ७८ ॥

मंगळ १, शुक्र २, बुध ३, चंद्र ४, रवि ५, बुध ६, शुक्र ७, मंगळ ८, गुरु ९, शनि १०, शनि ११ अने गुरु १२ ए मेष आदिक बार लग्नना ग्रहो अनुक्रमे छे. ७८.

। इति गृहम् ।

लग्गस्सऽ्ढं होरा सा पढमा दिणयरस्स विसमम्मि ।
बीआ य तहिं ससिणो विवज्जएणं समे लग्गे ॥ ८९ ॥

लग्ननो अर्ध भाग होरा कहेवाय छे. तेमां मेष, मिथुन विगेरे विषम (एकी) राशिमां पहेली होरा सूर्यनी अने बीजी होरा चंद्रनी छे, अने वृष, कर्क विगेरे सम राशिमां तेथी विपरीत एटले पहेली होरा चंद्रनी अने बीजी सूर्यनी छे. ८९. इति होरा ।

दिक्काणो अ तिभागो सो पढमो निययरासिअहिवइणो ।
बीओ पंचमपहुणो तइओ पुण नवमगिहवइणो ॥ ९० ॥

द्रेष्काण ए लग्ननो त्रीजो भाग छे. तेमां पहेलो द्रेष्काण पोतानी राशिना स्वामीनो होय, बीजो तेथी पांचमी राशिना स्वामीनो अने त्रीजो नवमा स्थान (राशि) ना स्वामीनो होय छे. ९०. इति द्रेष्काणः ।

मेसे मेसाईआ विसंमि मयराइया नवंसाओ ।
मिहुणम्मि तुलाईया कक्के कक्काइया हुंति ॥ ९१ ॥
पुण मेसमयरतुलकक्कडाइया चउसु सीहमाईसु ।
एवं धनुहाईसु वि नवंसया हुंति नायव्वा ॥ ९२ ॥

मेष लग्नमां मेषने आदि लइने नव नवांशो गणवा, वृषमां मकरथी गणवा, मिथुनमां तुलाथी अने कर्कमां कर्कथी गणवा. ९१. एज रीते सिंह विगेरे चार राशिमां अने धनु विगेरे चार राशिमां अनुक्रमे मेष, मकर, तुला अने कर्कथी आरंभीने नव नव नवांशो गणवा. ९२. इति नवांशाः ।

बारसभागो पयडो सो पढमो निअरासिणो होइ ।
बीओ बीयस्स उ जाव बार बारसस्स भवे ॥ ९३ ॥

दरेक राशिमां बार बार द्वादशांश होय छे. तेमां पहेलो द्वादशांश पोतानी राशिनोज होय, बीजो पछीनीज राशिनो होय, एम अनुक्रमे गणतां बारमो द्वादशांश पोत-पोतानी राशिथी बारमी राशिनो आवे छे. ९३. इति द्वादशांशाः ।

कुजसणिगुरुबुहसुक्का पण ५ पण ५ अड ८ सत्त ७ पंच ५ अंसाणं ।
विसमे तीसंसं पहू विवज्जएणं समे लग्गे ॥ ९४ ॥

दरेक राशिमां त्रीश त्रीश त्रिंशांश होय छे. तेमां विषम राशिमां पहेला पांच त्रिंशांशोनो स्वामी मंगळ छे, बीजा पांचनो शनि छे, त्यारपछीना आठनो गुरु छे, त्यार-

एटले पहेले, चोथे, सातमे अने दशमे सारो, शुक्र त्रीजे, छठ्ठे, नवमे अने बारमे सारो, तथा शनि बीजे, पांचमे अने आठमे सारो. शुक्रने छोडीने सर्व ग्रहो अगीयारमे स्थाने सारा. १०६.

गुरु बुह [1]ससिसूराणं छव्वग्गो इह सुहो न सेसाणं ।
जा उण छव्वग्गसुद्धी पुव्वुत्ता सा पइट्ठाए ॥ १०७ ॥

गुरु, बुध, चंद्र (शनि) अने रविनो छ वर्ग (छ वर्गनी शुद्धि) अहीं (दीक्षामां) शुभ छे, पण बीजा ग्रहोनी शुद्धि शुभ नथी. तथा पूर्वे जे छ वर्गनी शुद्धि कही छे ते प्रतिष्ठा आश्रीने छे. १०७

अहवा वि मज्झिमबलं काऊण सणिं गुरुं च बलवंतं ।
अबलं शुक्कं लग्गे तो दिक्खं दिज्ज सीसस्स ॥ १०८ ॥

अथवा तो लग्नमा शनिने मध्यम बळवाळो करीने, गुरुने बळवान् करीने तथा शुक्रने निर्बळ करीने शिष्यने दीक्षा देवी १०८.

दु पण छ अट्ठेक्कारस ठाणे मज्झिमबलो सणी होइ ।
लग्गगओ चउ सत्तम दसमो अ गुरू जवे बलवं ॥ १०९ ॥

बीजे, पांचमे, छठ्ठे, आठमे अने अगीयारमे स्थाने रहेलो शनि मध्यम बळवाळो होय छे, अने गुरु पहेले, चोथे, सातमे तथा दशमे होय तो ते बळवान् छे. १०९

छट्ठो दुवालसो तह अबलो सुक्को सुहो वयग्गहणे ।
दो तइय पंच छठ्ठिक्कारसमो तह बुहो सुहओ ॥ ११० ॥

तथा छठ्ठो अने बारमो शुक्र निर्बळ छे. ते व्रतग्रहणमा शुभ छे, तथा बुध बीजे, त्रीजे, पाचमे, छठ्ठे के अगीयारमे होय तो ते शुभ छे ११०.

तइए छट्ठे दसमे इक्कारसमम्मि मंगले लग्गे ।
दिक्खं पत्तो सत्तो जायइ बहुनाण तव जुत्तो ॥ १११ ॥

त्रीजे, छठ्ठे, दशमे के अगीयारमे मंगळ होय एवा लग्नने विषे दीक्षित थयेल सत्त्व (साधु) बहु ज्ञान अने तपवडे युक्त थाय छे. १११

सुक्कंगारयमंदाण सत्तमे ससहरे गहियदिक्खो ।
पीडिज्जए अवस्सं सत्थदुसीलत्तवाहीहिं ॥ ११२ ॥

शुक्र, मंगळ अने शनिथी सातमे चंद्र होय अने जो दीक्षा लीधी होय तो शस्त्र, दुःशीलपणुं अने व्याधिवडे अवश्य ते पीडाय छे ११२

1 गुरु बुह मणि सूराण इति प्रत्यन्तरे

इय दिक्खाकुंमलिया दिसिमित्तं दंसिआ मए एवं ।
वुच्छं इत्तो पइठाकुंमलियमहं समासेणं ॥ ११३ ॥

आ प्रमाणे दीक्षानी कुंमळी में दिग्मात्र देखामी छे. हवे प्रतिष्ठाकुंमळीने संक्षेपथी कहुं छुं. ११३.

गुरुबुहसुक्का सुहया लग्गगया मज्झिमो ससी लग्गे ।
सूरंगारयसणिणो वज्जेयव्वा पयत्तेणं ॥ ११४ ॥

गुरु, बुध अने शुक्र लग्नमां रह्या होय तो ते शुभ छे, चंद्र रह्यो होय तो ते मध्यम छे अने रवि, मंगळ अने शनिने लग्नमां प्रयत्नथी वर्जवा, एटले के तेओ अशुभ छे. ११४

गुरुबुहससिणो सुहया बीए ठाणम्मि मज्झिमो सुक्को ।
कज्जस्स विणासयरा दिणयरसणिमंगला बीआ ॥ ११५ ॥

बीजा स्थानमां गुरु, बुध अने चंद्र रह्या होय तो ते शुभ छे, शुक्र होय तो ते मध्यम छे अने सूर्य, शनि अने मंगळ कार्यनो विनाश करनारा छे, एटले के तेओ अशुभ छे. ११५.

तइयम्मि सुहा रविससिबुहभोमसणिच्छरा न संदेहो ।
मज्झिमओ सुरमंती सुक्को उ असुंदरो तइओ ॥ ११६ ॥

त्रीजा स्थानमां रहेला रवि, चंद्र, बुध, मंगळ अने शनि शुभ छे, तेमां कांइ पण संदेह नथी. गुरु होय तो ते मध्यम छे अने शुक्र अशुभ छे. ११६.

लग्गाओ चउत्थगया गुरुबुहसुक्का सुहावहा भणिया ।
मज्झत्थो अ चउत्थो चंदो सेसा गहा असुहा ॥ ११७ ॥

लग्नथी चोथा स्थानमां रहेला गुरु, बुध अने शुक्रने शुभावह कह्या छे, चोथे स्थाने रहेलो चंद्र मध्यम छे अने बाकीना एटले रवि, मंगळ अने शनि अशुभ छे. ११७.

रविससिकुजसुक्कसणी पंचमठाणम्मि मज्झिमा नेआ ।
बुहगुरुणो पुण दुन्नि वि सव्वत्थपसाहया तत्थ ॥ ११८ ॥

लग्नथी पांचमे स्थाने रवि, चंद्र, मंगळ, शुक्र अने शनि होय तो ते मध्यम जाणवा, अने बुध तथा गुरु ए बे ग्रहो पांचमे स्थाने होय तो सर्व अर्थना साधक छे. ११८.

रविससिकुजगुरुसणिणो छट्ठे ठाणम्मि संठिआ
सुक्कबुहा पुण छट्ठा मज्झिमया हुंति नायव्वा ॥

आ गाथा लग्नने विद्वानोए सर्वोत्तम कह्युं छे, अने सर्व विशुद्ध दिवसे पण आ लग्न सर्व कार्यमां सुखकारक छे. १३१.

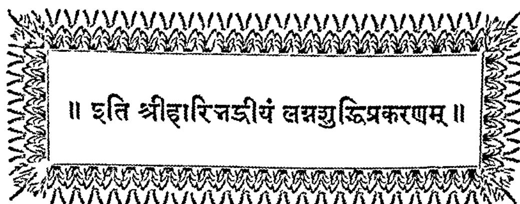
इय सुंदरे वि लग्गे सुहसउणबलेण कुणसु किच्चाइं ।
अहव निमित्तबलेणं वयणमिणं हारिजद्दं ति ॥ १३२ ॥

आ प्रमाणे सुंदर लग्नने विषे पण शुभ शकुनना बळे करीने अथवा शुभ निमित्तना बळे करीने कार्यो करवां. ए प्रमाणे चौदसो चुमाळीश ग्रंथकर्ता श्री हरिभद्र सूरि-महाराजनुं वचन छे. १३२.

इय तिविहसुद्धिजुत्तं तीए विउत्तं च संसियं लग्गं ।
जं किंचि इह अजुत्तं वुत्तं सोहिंतु तं विउसा ॥ १३३ ॥

आ प्रमाणे त्रण प्रकारनी शुद्धिथी युक्त तथा त्रण अशुद्धिथी वियुक्त (रहित) एवुं लग्न कह्युं. अहीं जे काइ अयोग्य कह्युं होय ते विद्वानोए शोधवुं. १३३.

॥ इति श्रीहारिभद्रीयं लग्नशुद्धिप्रकरणम् ॥



॥ रत्नशेखरसूरिविरचिता ॥

। दिनशुद्धिः ।

॥ अथ रत्नशेखरसूरिविरचिता ॥

॥ दिनशुद्धिः ॥

जोइमयं जोइगुरुं वीरं नमिऊण जोइदीवाउ ।
दिणसुद्धि दीविअमिणं पयडत्थं चेव पयडेमि ॥ १ ॥

ज्योतिषमय अने ज्योतिषना गुरुरूप श्रीमहावीर स्वामीने नमस्कार करीने ज्योतिषरूपी दीवा थकी आ प्रगट अर्थवाळा दिनशुद्धि नामना दीपकने हुं प्रगट करुं छुं. १.

प्रथम वारना अधिपतिउने तथा तेनी सौम्य विगेरे संज्ञाने कहे छे.

रविचंदभोमबुहगुरुसुक्कसणीया कमेण दिणनाहा ।
चं सु गु सोमा मं स र कूराय बुहो सहायसमो ॥ २ ॥

रवि, चंद्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए अनुक्रमे वारोना स्वामी छे. तेमां चंद्र, शुक्र अने गुरु ए त्रण सौम्य छे, मंगळ, शनि अने रवि ए त्रण क्रूर छे, तथा बुध सहायनी जेवो छे, एटले के सौम्य ग्रह साथे रह्यो होय तो सौम्य छे, अने क्रूर साथे रह्यो होय तो क्रूर छे, तथा एकलोज होय तो ते सौम्यज छे. २.

हवे वारने विषे होराउने कहे छे.—

चं स गु मं र सु बु वलयकमसो दिणवारमाइ उ किच्चा ।
सड्ढघडी दोमाणा होराहिव पुन्नफलजणया ॥ ३ ॥

अढी घडीनी एक होरा होवाथी एक रात्रि दिवसमां चोवीश होरा आवे छे. ते होराउना स्वामी आ प्रमाणे छे.—चंद्र, शनि, गुरु, मंगळ, रवि, शुक्र अने बुध आ वलयाकारना अनुक्रमथी दिवसना वारने प्रथम करीने अढी घडीना प्रमाणवाळी होराना अधिपतिउ छे, एटले के सोमवारे पहेली होरा चंद्रनी, बीजी शनिनी, त्रीजी गुरुनी, चोथी मंगळनी, पांचमी रविनी, छठी शुक्रनी अने सातमी बुधनी. पछी आठमी चंद्रनी, नवमी शनिनी एम अनुक्रमे चोवीशे होराना स्वामीउ जाणवा. एज रीते शनिवारे पहेली होरा शनिनी, बीजी गुरुनी, त्रीजी मंगळनी एम गणतां सातमी चंद्रनी, पछी फरीने आठमी शनिनी विगेरे. ए रीते जे दिवसे जे वार होय ते वारना नामनी पहेली होरा गणीने त्यारपछीना आ वलयमां गणावेला अनुक्रमे स्वामीउ जाणवा. आ होराना स्वामीउ वारना पूर्ण फळने आपनारा छे, एटले के सौम्य ग्रहनो

वार अने सौम्य ग्रहनी होरा ए बन्नेमां करेलुं कार्य संपूर्ण शुभ फळ आपे छे. (होरानो अधिपति सारो न होय तो वारनुं फळ $\frac{3}{4}$ मळे छे, एम अन्य ग्रन्थोमां कह्युं छे.) ३.

हवे वारनी प्रवृत्ति क्यारे थाय छे ? ते कहे छे.—

विछिअकुंभाइतिए निसिमुहि विसधणुहि कक्कितुलिमज्झे ।
मकमिहुण कन्नसिंहे निसि अंते संकमइ वारो ॥ ४ ॥

वृश्चिक अने कुंभादिक त्रण एटले कुंभ, मीन अने मेष आ चार संक्रांतिमां वारनी प्रवृत्ति रात्रिना प्रारंभे थाय छे, वृष, धन, कर्क अने तुला ए चार संक्रांतिमा रात्रिना मध्य समये वारनी प्रवृत्ति थाय छे, तथा मकर, मिथुन, कन्या अने सिंह ए चार संक्रांतिमां रात्रिने अंते वार प्रवर्ते छे. ४

हवे वारने आश्रीने सुवेळाने कहे छे.—

चउघडिअ सुवेला एग दो छच्च सूरे, पण इग अड सोमे अठ चउ सत्त भोमे।
छ तिअ अड बुहंमी पंच दो सत्त जीवे, छ अडिग चउ सुक्के तिन्नि सत्तठ पंच॥

रविवारे पहेलुं, बीजुं अने छठुं ए त्रण चोघडीयां सुवेळा कहेवाय छे, सोमवारे पांचमुं, पहेलुं अने आठमुं चोघडीयुं सुवेळा छे, मंगळवारे आठमुं, चोथुं अने सातमु, बुधवारे छठुं, त्रीजुं अने आठमुं, गुरुवारे पांचमुं, बीजुं अने सातमुं, शुक्रवारे छठुं, आठमुं, पहेलुं अने चोथुं, तथा शनिवारे त्रीजुं, सातमुं, आठमुं अने पांचमु चोघडीयुं सुवेळा छे ५.

हवे कुलिक, कंटक, उपकुलिक तथा काळवेळाने कहे छे.—

रविबुहसुक्का सत्तउ हायंता कुलिअ कंट उवकुलिआ ।
अड ति छ इग चउ सग दो सूराइसु कालवेलाउ ॥ ६ ॥

रविवारे सातमो अर्धप्रहर (चोघडीयुं) कुलिक योग कहेवाय छे, बुधवारे सातमो अर्धप्रहर कंटक योग कहेवाय छे, अने शुक्रवारे सातमो अर्धप्रहर उपकुलिक योग कहेवाय छे त्यारपछीना वारे एक एक अर्धप्रहरनी हानि करीने कुलिक, कंटक अने उपकुलिक योग कहेवा. ते नीचेना यंत्रथी जाणवा.

योग	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
कुलिक	७	६	५	४	३	२	१	अर्धप्रहर
कंटक	३	२	१	७	६	५	४	अर्धप्रहर.
उपकुलिक	५	४	३	२	१	७	६	अर्धप्रहर.

रविवारे आठमो अर्धप्रहर काळवेळा कहेवाय छे, सोमवारे त्रीजो अर्धप्रहर, मंगळवारे छठो, बुधवारे पहेलो, गुरुवारे चोथो, शुक्रवारे सातमो अने शनिवारे बीजो अर्धप्रहर काळवेळा कहेवाय छे. ६.

हवे वर्ज्य अर्धप्रहर तथा गमनादिकमां वर्ज्य दिशाने कहे छे.—

ता चउजुअ अद्धपहरा तेसिं सोलट्ठुतीसदुइगचऊ ।

चउसट्ठी मज्झपला हेया पुव्वाउ दिसि छट्ठी ॥ ७ ॥

उपर कहेली काळवेळामां चार भेळवीए तो ते वर्ज्य अर्धप्रहर थाय छे, अने ते वर्ज्य अर्धप्रहरना मध्यना रविवारथी अनुक्रमे सोळ, आठ, बत्रीश, बे, एक, चार, अने चोसठ पळो पूर्वादिक छठी छठी दिशाए यात्रादिकमां वर्जवा योग्य छे. ते नीचेना यन्त्रथी जाणवुं. ७.

	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
काळवेळा	८	३	६	१	४	७	२	अर्धप्रहर.
वर्ज्य अर्धप्रहर	४	७	२	५	८	३	६	
अर्धप्रहरना मध्य पळो	१६	८	३२	२	१	४	६४	
यात्रादिकमां वर्जवा.	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	ईशान	पश्चिम	अग्नि	उत्तर	

॥ इति वाराः ॥

हवे तिथिद्वार कहे छे. तेमां प्रथम तिथिओनां नंदादिक नामो कहे छे.—

नंदा भद्दा य जया रित्ता पुन्ना य तिहि सनामफला ।

पडिवइ छट्ठि इगारसि पमुहा उ कमेण नायव्वा ॥ ८ ॥

नंदा, भद्रा, जया, रिक्ता अने पूर्णा ए नामनी तिथिओ पोतानां नामने सदृश फळ आपनारी छे. तेमां पडवो, छठ अने अगीयारश ए नंदा कहेवाय छे. एज अनुक्रमे भद्रादिक संज्ञा पण जाणवी. ते यंत्रथी जाणवी. ८.

	नंदा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
तिथि	१	२	३	४	५
तिथि	६	७	८	९	१०
तिथि	११	१२	१३	१४	१५

शुभ कार्यमां वर्ज्य तिथिओ.—

छट्ठी रित्तट्ठमी बारसी अ अमावसा गयतिही उ ।

वुड्ढतिहि कूरदड्ढा वज्जिज्जा सुहेसु कम्मेसु ॥ ९ ॥

छठ, रिक्ता (४–९–१४), आठम, बारश, अमावास्या, क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्रूर तिथि अने दग्ध तिथि, आटली तिथिओ शुभ कार्यमां वर्जवा योग्य छे. ९.

मेसाइ चउसु चउरो तिही कमेणं च पुन्न सवेसु ।
एवं परउ सकूररासि असुहा तिही वज्जा ॥ १० ॥

मेषादिक चार संक्रातिमां कोइ क्रूर ग्रह होय तो अनुक्रमे पहेली चार तिथिओ पूर्णा तिथि सहित वर्ज्य छे. ए रीते आगळ पण जाणवुं, एटले के मेष संक्रांतिमां क्रूर ग्रह होयतो एकम अने पाचम वर्जवा योग्य छे, वृष संक्रांतिमा क्रूर ग्रह होय तो बीज अने पांचम, मिथुन संक्रातिमां क्रूर ग्रह होय तो त्रीज अने पांचम तथा कर्क संक्रांतिमां क्रूर ग्रह होय तो चोथ अने पाचम वर्जवा योग्य छे. एज रीते सिंह, कन्या, तुला अने वृश्चिक संक्रातिमां क्रूर ग्रह होय तो अनुक्रमे छठ, सातम, आठम अने नोम ए तिथिओ पूर्णा तिथि दशम सहित वर्ज्य छे. एज प्रमाणे धन, मकर, कुंभ अने मीन संक्रांतिमां पण क्रूर ग्रह होय तो अनुक्रमे अगीयारश, बारश, तेरश अने चौदश ए तिथिओ पूर्णिमा सहित वर्जवा योग्य छे. एवी रीते क्रूर ग्रहो सहित राशिओनी अशुभ तिथिओ शुभ कार्यमां वर्ज्य छे १०.

सूर्यदग्धा तिथिओ.—

छग चउ अट्ठमि छट्ठी दसमट्ठमि बार दसमि बीया उ ।
बारसि चउत्थि बीआ मेसाइसु सूरदड्ढदिणा ॥ ११ ॥

मेष राशिनी संक्रांतिमां छठ दग्धा तिथि छे, वृष संक्रांतिमां चोथ, मिथुनमां आठम, कर्कमा छठ, सिंह सक्रातिमां दशम, कन्या संक्रातिमां आठम, तुला संक्रांतिमा बारश, वृश्चिक संक्रांतिमा दशम, धन संक्रांतिमा बीज, मकर संक्रांतिमां बारश, कुंभ सक्रांतिमां चोथ अने मीन संक्रातिमां बीज ए सूर्यदग्धा तिथिओ कहेवाय छे. ११.

। यंत्रम् ।

धन मीन संक्रातिमां २, वृष कुंभ संक्रातिमां ४
मेष कर्क संक्रातिमां ६, कन्या मिथुन सक्रातिमां ८
वृश्चिक सिंह संक्रातिमां १०, मकर तुला संक्रांतिमां १२

॥ इति तिथिद्वारम् ॥

हवे करणद्वार कहे छे.—

सउणि चउप्पय नागा किंत्थुग्घा किण्ह चउद्दसि निसाओ ।
थिरकरण तीस घडिआ परओ चलकरण एयाइं ॥ १२ ॥

बव-बालव-कोलव-तेतिलक्क गर-वणिअ-विठिनामाणो ।
पायं सव्वे वि सुहा एगा विठी महापावा ॥ १३ ॥

शकुनि, चतुष्पाद, नाग अने किंस्तुघ्न ए चार करणो स्थिर छे. ते दरेक त्रीश त्रीश घमीनां होय छे. तेमां पहेलुं शकुनि कृष्ण चतुर्दशीनी रात्रे होय छे, बीजुं चतुष्पाद अमावास्याने दिवसे होय छे, त्रीजुं नाग अमावास्यानी रात्रिए होय छे अने चोथुं किंस्तुघ्न शुक्लपक्षना प्रतिपद्‌ने दिवसे होय छे, त्यारपछी चर करणोनां नाम आ प्रमाणे छे.—बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज अने विष्टि. प्राये आ सर्वे (स्थिर अने चर) करणो शुभ छे, पण एक विष्टि महा पापा—महादुष्ट छे. १२–१३.

विष्टि क्यारे होय छे ते कहे छे.—

किण्हे पक्खे दिणे भद्दा सत्तमी अ चउद्दसी ।
रत्तिं दसमि तीआए सुक्के एगदिणुत्तरा ॥ १४ ॥

कृष्णपक्षमां सातम अने चौदशना दिवसने विषे भद्रा (विष्टि) होय छे अने दशम तथा त्रीजनी रात्रिए भद्रा (विष्टि) होय छे. अने शुक्लपक्षमां एक दिवस पछी आवे छे, एटले के आठम अने पूनमना दिवसे तथा अगीयारश अने चोथनी रात्रिए भद्रा होय छे. १४.

भद्रा कइ तिथिए कया पहोरमां कइ दिशाए सन्मुख होय ते कहे छे.—

चउद्दसी अठमि सत्तमीए राका चउत्थी दसमीइ भद्दा ।
एगारसी तीअ कमा दिसाहिं तस्संखजामे भिमुहाऽतिपावा॥१५॥

यंत्र

तिथि	प्रहर	दिशा
१४	१	पूर्व
८	२	अग्नि
७	३	दक्षिण
१५	४	नैर्ऋत्य
४	५	पश्चिम
१०	६	वायव्य
११	७	उत्तर
३	८	ईशान

चौदशे पहेला पहोरमां पूर्व दिशाए भद्रा सन्मुख होय छे, आठमे अग्नि खूणामां बीजे पहोरे सन्मुख होय छे, सातमे त्रीजा पहोरे दक्षिण दिशामां, पूर्णिमाए चोथा पहोरे नैर्ऋत्य खूणामां, चोथे पांचमे पहोरे पश्चिम दिशामां, दशमे छठे पहोरे वायव्य खूणामां, अगीयारशे सातमे पहोरे उत्तर दिशामां अने त्रीजे आठमे पहोरे ईशान खूणामां भद्रा सन्मुख होय छे. आ सन्मुख भद्रा अति दुष्ट छे. १५.

भद्रानां अंग तथा तेनुं फळ कहे छे.—

पण डुग दस पण पण तिअ विठिघडी वयण कंठ उरु नाही ।
कडि पुछगा य सिद्धी खय निस्स कुबुद्धि कलह विजयकरा ॥१६॥

विष्टि (भद्रा) पहेली पांच घडी सुधी पोताना मुखमां रहे छे, त्यारपछी बे घडी कंठमां रहे छे, त्यारपछी दश घडी उरुमां रहे छे, त्यारपछी पाच घडी नाभिए रहे छे, त्यारपछी पांच घडी कटीए रहे छे अने छेल्ली त्रण घडी पुछमां रहे छे. जो भद्रा मुखमां रही होय ते वखते यात्रादिक शुभ कार्य करवामां आवे तो कार्यनी सिद्धि थाय छे, कंठे रही होय तो क्षय (नाश) करनारी थाय छे, उरुमा रहेली होय तो निर्धन करे छे, नाभिमां रही होय तो खराब बुद्धि करे छे, कटीमां रही होय तो क्लेश करावे छे अने पुछे रही होय तो विजयने करनारी थाय छे. १६

हवे करणनी अवस्थाओ बतावे छे —

किंत्थुग्घ सउणि कोलव उद्धकरण तिन्नि तिन्नि सुत्ताइं ।
तेइल नाग चउप्पय पण सेस निविठकरणाइं ॥ १७ ॥

किंस्तुघ्न, शकुनि अने कौलव ए त्रण करणो उभेला होय छे, तैतिल, नाग अने चतुष्पद ए त्रण करणो सूतेला होय छे, तथा बाकीनां पांच करणो (बव, बालव, गर, वणिज अने विष्टि) बेठेलां छे. १७

॥ इति करणद्वारम् ॥

हवे नक्षत्रो कहे छे.—

अश्विनी १, भरणी २, कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशीर्ष ५, आर्द्रा ६, पुनर्वसु ७, पुष्य ८, अश्लेषा ९, मघा १०, पूर्वाफाल्गुनी ११, उत्तराफाल्गुनी १२, हस्त १३, चित्रा १४, स्वाति १५, विशाखा १६, अनुराधा १७, ज्येष्ठा १८, मूळ १९, पूर्वाषाढा २०, उत्तराषाढा २१, अभिजित् २२, श्रवण २३, धनिष्ठा २४, शतभिषक् २५, पूर्वाभाद्रपद २६, उत्तराभाद्रपद २७ अने रेवती २८. आ अठ्यावीश नक्षत्रो छे

हवे दरेक नक्षत्रनी केटली ताराओ होय ? ते कहे छे —

ति ति छ पण ति एग चउ ति छ पण डु डु पणिग एग चउ चउरो ।
ति इगार चउ चउ तिगं ति चउ सयं डु डुग बत्तीसं ॥ १८ ॥
इअ रिक्खाणं कमसो परिअरताराभिई मुणेयव्वा ।
तारासमसंखागा तिही वि रिक्खेसु वज्जिज्जा ॥ १९ ॥

नीचेना यंत्र परथी तारानी संख्याउ जाणवी.

नक्षत्र	तारा	नक्षत्र	तारा	नक्षत्र	तारा	नक्षत्र	तारा
अश्विनी	३	पुष्य	३	स्वाति	१	अभिजित्	३
भरणी	३	अश्लेषा	६	विशाखा	४	श्रवण	३
कृत्तिका	६	मघा	५	अनुराधा	४	धनिष्ठा	४
रोहिणी	५	पूर्वाफाल्गुनी	२	ज्येष्ठा	३	शतभिषक्	१००
मृगशीर्ष	३	उत्तराफाल्गुनी	२	मूळ	११	पूर्वाभाद्रपद	२
आर्द्रा	१	हस्त	५	पूर्वाषाढा	४	उत्तराभाद्रपद	२
पुनर्वसु	४	चित्रा	१	उत्तराषाढा	४	रेवती	३२

आ प्रमाणे अनुक्रमे नक्षत्रोना परिवारभूत ताराउनुं प्रमाण जाणवुं. तारानी समान संख्यावाळी तिथि पण आ नक्षत्रोमां वर्जवा योग्य छे, एटले के अश्विनी नक्षत्र त्रीजने दिवसे होय तो ते वर्ज्य छे, रोहिणी नक्षत्र पांचमने दिवसे होय तो ते वर्ज्य छे. इत्यादि. अहीं शतभिषकनी सो ताराउ तथा रेवतीनी बत्रीश ताराउ छे, तेथी तेने तिथिनी संख्या पंदरे भाग लेतां बाकी दश अने बे रहे छे, माटे शतभिषक् नक्षत्र दशमने दिवसे होय अने रेवती नक्षत्र बीजने दिवसे होय तो ते वर्ज्य छे एम समजवुं. १८–१९.

अभिजित् नक्षत्रनी समज तथा तेनी आवश्यकता—

उ-खा अंतिमपायं सवणपढम घडिअ चउ अभीइठिई ।
लत्तोवग्गहवेहे एगग्गलपमुहकज्जेसु ॥ २० ॥

उत्तराषाढानो छेल्लो (चोथो) पाद अने श्रवणनी पहेली चार घडी आटला समय सुधी अभिजित् नक्षत्रनी स्थिति होय छे, अने लत्ता, उपग्रह, वेध तथा एकार्गल ए विगेरे कार्योमां तेनी जरुर पडे छे. २०.

नक्षत्रोना अक्षरोनो यंत्र.—

चु चे चो ला अश्विनी	डि डु डे डो अश्लेषा
लि लु ले लो भरणी	म मि मु मे मघा
अ इ उ ए कृत्तिका	मो ट टि टु पूर्वाफाल्गुनी
उ व वि वु रोहिणी	टे टो प पि उत्तराफाल्गुनी
वे वो क कि मृगशिर	पु ष ण ठ हस्त
कु घ ङ छ आर्द्रा	पे पो र रि चित्रा
के को ह हि पुनर्वसु	रु रे रो ता स्वाति.
हु हे हो डा पुष्य	ति तु ते तो विशाखा.

न नि नु ने अनुराधा.
नो य यि यु ज्येष्ठा.
ये यो न्न न्नि मूळ.
न्नु ध फ ढ पूर्वाषाढा.
न्ने न्नो ज जि उत्तराषाढा.
जु जे जो ख अभिजित्
खि खु खे खो श्रवण.
ग गि गु गे धनिष्ठा.
गो स सि सु शतभिषक्.
से सो द दि पूर्वाभाद्रपद
दु श झ थ उत्तराभाद्रपद.
दे दो च चि रेवती.

॥ इति नक्षत्रपादाक्षराणि ॥

हवे कइ राशिमां केटलां नक्षत्रो आवे ? ते कहे छे.—

किति मिग पुण असेसा उ-फ चि विसा जिठ उ-ख धणी पू-न्ना।
रेवइ अ एग दु ति चउ पायंता बार रासि कमा ॥ २१ ॥

कृत्तिकाना पहेला पादना अंत सुधी मेष राशि होय छे, मृगशीर्षना बे पादना सुधी वृष राशि होय छे, पुनर्वसुना त्रीजा पादना अंत सुधी मिथुन अने अश्लेषाना चोथा पादना अंत सुधी कर्क राशि होय छे. एज प्रमाणे उत्तराफाल्गुनीना एक पाद सुधी सिंह, चित्राना बे पाद सुधी कन्या, विशाखाना त्रण पाद सुधी तुला, ज्येष्ठाना चार पाद सुधी वृश्चिक, उत्तराषाढाना एक पाद सुधी धन, धनिष्ठाना बे पाद सुधी मकर पूर्वाभाद्रपदना त्रण पाद सुधी कुंभ अने रेवतीना चार पाद सुधी मीन राशि होय छे. २१. तेनुं यंत्र.—

१ मेष—अश्विनी ४, भरणी ४, कृत्तिका १.
२ वृष—कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशीर्ष २
३ मिथुन—मृगशीर्ष २, आर्द्रा ४, पुनर्वसु ३.
४ कर्क—पुनर्वसु १, पुष्य ४, अश्लेषा ४.
५ सिंह—मघा ४, पूर्वाफाल्गुनी ४, उत्तराफाल्गुनी १.
६ कन्या—उत्तराफाल्गुनी ३, हस्त ४, चित्रा २
७ तुला—चित्रा २, स्वाति ४, विशाखा ३.
८ वृश्चिक—विशाखा १, अनुराधा ४, ज्येष्ठा ४.
९ धन—मूळ ४, पूर्वाषाढा ४, उत्तराषाढा १.
१० मकर—उत्तराषाढा ३, श्रवण ४, धनिष्ठा २.
११ कुंभ—धनिष्ठा २, शतभिषक् ४, पूर्वाभाद्रपद ३.
१२ मीन—पूर्वाभाद्रपद १, उत्तराभाद्रपद ४, रेवती ४.

॥ इति नक्षत्रराशयः ॥

हवे चंद्रनी बार अवस्थाओ कहे छे.—

गय हरिअ मया मोया हासा किड्डा रई सयणमसणं ।
तावा कंपा सुत्था ससिवत्था बार नामफला ॥ २२ ॥

दरेक राशिमां रहेला चंद्रनी बार अवस्था होय छे ते आ प्रमाणे—गता १, हृता २, मृता ३, मोदा ४, हासा ५, क्रीडा ६, रति ७, शयन ८, अशन ९, तापा १०, कंपा ११ अने स्वस्था १२. आ बार चंद्रनी अवस्थाओ पोतपोताना नामनी सदृश फळने आपनारी छे. २२.

चंद्रनी बार अवस्था होवाथी दरेक राशिना बार बार अंशो थया. तेने आश्रीने शुभाशुभ फळ कहे छे.—

पइरासि बारसंसा असुहा उ चए जओ सुहो वि ससी ।
एयाहिं हवइ असुहो सुहाहिं असुहो वि होइ सुहो ॥ २३ ॥

दरेक राशिना बार बार अंशो छे. तेमां जे अशुभ अंशो छे ते शुभ चंद्र होय तोपण वर्जवा, कारण के ए अशुभ अंशोए करीने सारो चंद्र पण अशुभ थाय छे, अने अशुभ चंद्र पण शुभ अंशोए करीने शुभ थाय छे. २३.

दाहिणुच्चो समो चंदो उत्तरुच्चो हलोवमो ।
धणु वक्को अ सुलाभो मेसासु कमुक्कमा ॥ २४ ॥

सूर्य संक्रांतिमां नवीन उदय थयेल चंद्र अनुक्रमे करीने तथा उत्क्रमे (उलटा क्रमे) करीने दक्षिण दिशामां उंचो होय, सम होय, उत्तर दिशामां उंचो होय, हळ सदृश होय, धनुष जेवो वांको होय शूळ सदृश होय ते श्रेष्ठ छे, अर्थात् मेष तथा मीन संक्रांतिमां दक्षिण दिशामां उंचो होय, वृषभ अने कुंभमां सम होय, मिथुन अने मकरमां उत्तर तरफ उंचो होय, कर्क अने धनमां हळ समान होय, सिंह अने वृश्चिक संक्रांतिमां धनुष समान वांको होय, कन्या अने तुला संक्रांतिमां नवीन उदय थयेल चंद्र शूळ सदृश होय ते श्रेष्ठ जाणवो. बीजा काळमां अशुभ छे. २४.

॥ इति चन्द्रबलम् ॥

हवे ताराबळने कहे छे.—

जम्मा कम्मं च आहाणं तारा अट्ठ अंतरे ।
सस्सनामफला सव्वा अंतरा इअ नामिआ ॥ २५ ॥

॥ दिनशुद्धिः ॥

संपई आवई खेमा जामा साहण निहणा ।
मित्ती परममित्ती अ दुट्ठा ति सग पंचमा ॥ २६ ॥
जम्माहाणा विवज्जिज्जा गमे एयाहिं वाहिउ ।
कट्ठेण जीवई किण्हे पक्खे चंदुत्तरा इमा ॥ २७ ॥

सत्यावीश ताराउने त्रण लाइनमां मूकवी तेमां पहेली लाइनमां प्रथम जन्म, बीजी लाइनमां प्रथम कर्म अने त्रीजीमां प्रथम आधान एम आठ आठ ताराउने आंतरे ताराउनी संज्ञा जाणवी ते पोतपोताना नामनी सदृश फळ आपे छे हवे आंतरानी आठ आठ ताराउनी संज्ञा आ प्रमाणे छे (२५)—संपद् १, आपद् २, क्षेमा ३, यामा ४, साधना ५, निर्धना ६, मैत्री ७ अने परम मैत्री ८. (उपरनी एक एकने साथे गणीए त्यारे नव नव थाय छे.) तेमां त्रीजी, सातमी अने पांचमी ताराउ दुष्ट छे. २६. तेनो यंत्र नीचे प्रमाणे.—

जन्म	संपद्	आपद्	क्षेमा	यामा	साधना	निर्धना	मैत्री	परम मैत्री
कर्म	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥
आधान	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥

आमाथी जन्म अने आधान ए बे ताराउ गमनमा तजवा योग्य छे. त्रीजी, पांचमी, सातमी, जन्म अने आधान आ तारामा व्याधि थइ होय तो ते महाकष्टे जीवी शके छे, एटले के प्राये मरणज थाय. कृष्णपक्षमा आ ताराउनुं बळ चंद्र करतां अधिक होय छे.२७.

॥ इति तारावलम् ॥

हवे रवि योग कहे छे.—

चउ छठ्ठ नवम दसमं तेरस वीसं च सूररिक्खाउ ।
ससिरिक्खं होइ तया रविजोगो असुहसयदलणो ॥ २८ ॥

सूर्यना नक्षत्रथी चंद्रनुं नक्षत्र जो चोथुं, छठुं, नवमुं, दशमुं, तेरमुं के वीशमुं होय तो ते रवि योग कहेवाय छे. आ योग सेंकडो अशुभने नाश करनार छे.२८.इति रवियोगः

कुमार योग—

सोमे भोमे बुहे सुक्के अस्सिणाइं विइंतरा ।
पंचमी दसमी नंदा सुहो जोगो कुमारउ ॥ २९ ॥

सोम, मगळ, बुध के शुक्रवारे अश्विनी, रोहिणी विगेरे बबे आंतरावाळा (अ. रो पुन म ह वि. मू श्र पू-भा) नक्षत्रमानुं कोइ एक होय तथा पाचम, दशम के नंदा (एकम, छठ अने अगीयारश)मानी कोइ पण तिथि होय तो कुमार योग छे ते शुभ छे. २९

राज योग—

सूरे सुक्के बुहे जोमे जद्दा तीया य पुन्निमा ।
बिंतरा जरणीमुक्खा राजजोगो सुहावहो ॥ ३० ॥

रवि, शुक्र, बुध के मंगळवारे जद्रा (बीज, सातम अने बारश), त्रीज के पूर्णिमा होय तथा जरणी, मृगशिर विगेरे बबे आंतरावाळां (ज. मृ. पुष्य. पू–फा. चि. अनु. पू–षा. ध. उ–जा.) नक्षत्रोमांथी कोइ पण होय तो ते राज योग कहेवाय छे. ते सुखकारक छे. ३०.

स्थविर योग—

थविरो गुरु सणि तेरसि रित्तठमि कित्तिआ डुगंतरिआ ।
रुअछेआणसणाई अपुण(णो)करणं इहं कुज्जा ॥ ३१ ॥

गुरुवारे के शनिवारे तेरश, रिक्ता (चोथ, नोम अने चौदश) के आठम होय अने कृत्तिकाथी आरंजीने बबे आंतरावाळां (कृ. आ. अश्ले. उ–फा. स्वा. ज्ये. उ–षा. श. रे.) नक्षत्रोमांथी कोइ पण होय तो ते स्थविर योग कहेवाय छे. आ योगमां व्याधिनो छेद (नाश) अने अनशन विगेरे फरीथी नहीं करवानां कार्यो करवामां आवे छे. ३१.

हवे यमल तथा त्रिपुष्कर योग कहे छे.—

मंगल गुरु सणि जद्दा मिग चित्त धणिठिआ जमलजोगो ।
कित्ति पुण उ–फ विसाहा पू–ज उ–खाहिं तिपुक्करउ ॥ ३२ ॥

मंगळ, गुरु के शनिवारे जद्रा तिथि (२–७–१२) होय तथा मृगशिर, चित्रा अने धनिष्ठा नक्षत्र होय तो ते यमल नामनो योग थाय छे. तथा तेज वार अने तेज तिथिए जो कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाजाद्रपद के उत्तराषाढा होय तो त्रिपुष्कर योग थाय छे. ३२.

पंचक योग.

पंचग धणिठ अद्धा मयकिअवज्जिज्जा जामदिसिगमणं ।
एसु तिसु सुहं असुहं विहिअं डु ति पण गुणं होइ ॥ ३३ ॥

धनिष्ठाना अर्ध जागथी रेवति पर्यंत (ध. श. पू–जा. उ–जा. रे.) पंचक कहेवाय छे. आ योगमां मृतक कार्य तथा दक्षिण दिशामां गमनने वर्जवुं. आ त्रणे योगमां करेलुं शुज तथा अशुज कार्य अनुक्रमे बमणुं, त्रण गुणुं अने पांच गुणुं थाय छे. ३३.

विष्कंजादिक २७ योगो—

१ विष्कंज	८ धृति	१५ वज्र	२२ साध्य
२ प्रीति	ए शूल	१६ सिद्धि	२३ शुज
३ आयुष्मान्	१० गंक	१७ व्यतीपात	२४ शुक्ल
४ सौजाग्य	११ वृद्धि	१८ वरीयान्	२५ ब्रह्मा
५ शोजन	१२ ध्रुव	१ए परिघ	२६ ऐन्द्र
६ अतिगंम	१३ व्याघात	२० शिव	२७ वैधृति.
७ सुकर्मा	१४ हर्षण	२१ सिद्ध	

वर्जवाना योगो—

पण ठस्सग नव घमिआ विक्कंज कुगंम सूल वाघारं ।
परिहद्धदिणं वज्जे विहिइ विईपाय सयलदिणं ॥ ३४ ॥

विष्कंजनी पांच घमीर्ड शुज कार्यमां वर्ज्य छे, गंम अने अतिगंमनी ठ घमीर्ड, शूळनी सात घमीर्ड अने व्याघातनी नव घमीर्ड वर्ज्य छे. परिघनो अर्ध दिवस वर्ज्य छे तथा वैधृति अने व्यतीपातनो आखो दिवस वर्ज्य छे. ३४.

आनंदादिक २८ उपयोगनी उत्पत्ति तथा तेनुं फळ.—

अस्सिणि मिग अस्सेसा हत्थ णुराहा य उत्तरासाढा ।
सयजिसकमेण एए सूराइसु हुंति मुहरिक्खा ॥ ३५ ॥
निअवारे निअरिक्के मुहगणिए जत्तिमं ससीरिक्खं ।
तावंतिमोवर्उगो आनंदाई सनामफलो ॥ ३६ ॥

अश्विनी, मृगशिर, अश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढा अने शतजिषक्, आ नक्षत्रो अनुक्रमे रवि आदि वारोने विषे मुख नक्षत्रो होय छे, एटले के रविवारे अश्विनी, सोमवारे मृगशिर, मंगळवारे अश्लेषा, बुधवारे हस्त, गुरुवारे अनुराधा, शुक्रवारे उत्तराषाढा अने शनिवारे शतजिषक् मुख नक्षत्र कहेवाय छे. ३५ हवे पोताने वारे पोतानुं नक्षत्र मुख नक्षत्रथी गणवुं गणतां जेटलामुं चंद्र नक्षत्र (पोतानुं नक्षत्र) आवे तेटलामो आनंदादिक उपयोग जाणवो ते उपयोगो पोताना नामनी सदृश फळ आपनारा छे. उदाहरण—रविवारे रोहिणी नक्षत्र होय तो ते अश्विनीथी गणता चोथुं आवे छे, थी आनंदादिकनो चोथो शुज उपयोग थयो विगेरे ३६.

आनंदादिक २८ उपयोगनां नाम.

१ आनंद	८ श्रीवत्स	१५ धुंपक	२२ मुशळ
२ काळदंड[1]	९ वज्र	१६ प्रवास	२३ गज
३ प्राजापत्य	१० मुद्गर	१७ मरण	२४ मातंग
४ शुभ	११ छत्र	१८ व्याधि	२५ क्षय
५ सौम्य	१२ मित्र	१९ सिद्धि	२६ क्षिप्र
६ ध्वांक्ष	१३ मनोज्ञ	२० शूळ	२७ स्थिर
७ ध्वज	१४ कंप	२१ अमृत	२८ वर्धमान

हवे वारने आश्रीने शुभ तिथिओ कहे छे.—

नवमेगठमी सूरे सोमे बीआ नवमिआ।
भोमे जया य छठी अ बुहे भद्दा तिही सुहा ॥ ३७ ॥
गुरु एगारसी पुन्ना सुक्के नंदा य तेरसी।
सणिंमि अठमी रित्ता तिही वारेसु सोहणा ॥ ३८ ॥

रविवारे नोम, एकम अने आठम ए तिथिओ शुभ छे. सोमवारे बीज अने नोम शुभ छे. मंगळवारे जया (३-८-१३) अने छठ शुभ छे. बुधवारे भद्रा तिथि (२-७-१२) शुभ छे. ३७. गुरुवारे अगीयारश अने पूर्णा (५-१०-१५) शुभ छे. शुक्रवारे नंदा (१-६-११) अने तेरश शुभ छे. तथा शनिवारे आठम अने रिक्ता तिथि (४-९-१४) शुभ छे. ३८.

हवे वारने आश्रीने शुभ नक्षत्रो कहे छे.—

रेवस्सिणी धणिठा य पुण पुस्स तिउत्तरा।
सूरे सोमंमि पुस्सो अ रोहिणी अणुराहया ॥ ३९ ॥
भोमे मिगं च मूलं च अस्सेसा रेवई तहा।
बुहे मिगसिरं पुस्सा सेसा सवण रोहणी ॥ ४० ॥
जीवे हत्थ स्सिणी पू-फ विसाहाडुग रेवई।
सुक्के उ-फा उ-खा हत्थं सवणाणु पुणस्सिणी ॥ ४१ ॥
सणिंमि सवणं पू-फा महा सयभिसा सुहा।
पुव्वत्ततिहिसंजोगे विसेसेण सुहावहा ॥ ४२ ॥

---

१ मुहूर्त्त चिंतामणिमां त्रीजो धूम्र अने चोथो प्राजापत्य एटलो आ साथे फरक छे.

रविवारे रेवती, अश्विनी, धनिष्ठा, पुनर्वसु, पुष्य के त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद) होय, सोमवारे पुष्य, रोहिणी के अनुराधा होय. ३९. मंगळवारे मृगशिर, मूळ, अश्लेषा के रेवती होय, बुधवारे मृगशिर, पुष्य, अश्लेषा, श्रवण के रोहिणी होय. ४०. गुरुवारे हस्त, अश्विनी, पूर्वाफाल्गुनी, विशाखा द्विक (विशाखा अने अनुराधा) के रेवती होय, शुक्रवारे उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, हस्त, श्रवण, अनुराधा, पुनर्वसु के अश्विनी होय. ४१. तथा शनिवारे श्रवण, पूर्वाफाल्गुनी, मघा के शतभिषक् होय तो ते शुभ छे. तेमां पण उपर कहेली शुभ तिथिनो संयोग होय तो विशेषे करीने शुभ छे. ४२.

अमृतसिद्धि योग—

हत्थं मिग स्सिणी चेवाणुराहा पुस्स रेवई ।
रोहिणी वारजोगेणामिअसिद्धिकरा कमा ॥ ४३ ॥

रविवारे हस्त नक्षत्र होय, सोमवारे मृगशिर होय, मंगळवारे अश्विनी, बुधवारे अनुराधा, गुरुवारे पुष्य, शुक्रवारे रेवती अने शनिवारे रोहिणी होय तो ते अमृतसिद्धि योग थाय छे. ते अत्यंत शुभ छे. ४३.

उत्पात, मृत्यु, काण अने सिद्धि योग विषे.—

वारेसु कमसो रिक्खा विसाहाइ चउ चउ ।
उप्पायमचुकाणक्ख सिद्धिजोगावहा भवे ॥ ४४ ॥

रवि आदिक वारोमा अनुक्रमे विशाखा विगेरे चार चार नक्षत्रो मूकवां. तेम करवाथी अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु, काण अने सिद्धि योगो थाय छे. ते नीचेना यंत्रथी जाणवु. ४४.

	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उत्पात	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी
मृत्यु	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषक्	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त
काण	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
सिद्धि	मूळ	श्रवण	उत्तराभाद्र०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाति.

यमघंट तथा ग्रह जन्मनक्षत्र

म वि आ मू कि रो ह सूराइसु वज्जणिज्ज जमघंटा ।
भ चि उ–ख ध उ–फा जे रे इअ असुहा जम्मरिक्खा य ॥४५॥

रविवारे मघा, सोमवारे विशाखा, मंगळवारे आर्द्रा, बुधवारे मूळ, गुरुवारे कृत्तिका, शुक्रवारे रोहिणी अने शनिवारे हस्त होय तो यमघट थाय छे ते अशुभ छे तथा भरणी, चित्रा, उत्तराषाढा, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, ज्येष्ठा अने रेवती ए सात रवि आदिक

वारना जन्मनक्षत्र छे ते पण अशुभ छे, एटले के रविवारे भरणी नक्षत्र होय तो ते दिवसे शुभ कार्य करवुं नहीं विगेरे. ४५.

कर्क योग—

गुरि सयभिस सणि उत्तरसाढा एया विवज्जए पायं ।
बारसि एगेगहीणा सूराइसु कक्कजोगु चए ॥ ४६ ॥

गुरुवारे शतभिषक् होय अने शनिवारे उत्तराषाढा होय तो ते प्राये वर्ज्य छे. तथा बारशथी एक एक तिथि हीन करी रवि आदिक वारने विषे होय तो ते कर्क योग थाय छे. ते अशुभ छे, एटले के रविवारे बारश होय, सोमवारे अगीयारश होय, मंगळवारे दशम होय, एम गणतां छेवटे शनिवारे छठ होय तो कर्क योग थाय छे. ते त्याग करवो. ४६.

हवे वारने आश्रीने अशुभ तिथिओ कहे छे.—

छठि सत्तमि इगार चउद्दसी सूरि सोमि सग बार तेरसी ।
मंगले इग इगारसी बुहे वज्जए इग चउद्दसी जया ॥ ४७ ॥
छठि चउत्थि सहभद्दया गुरु सुक्कि बीअ सह तीइ रित्तया ।
पुन्न सत्तमि सणिंमि सव्वहा वज्जए इअ तिही विसेसओ ॥ ४८ ॥

रविवारे छठ, सातम, अगीयारश अने चौदश अशुभ छे. सोमवारे सातम, बारश अने तेरश, मंगळवारे एकम अने अगीयारश, बुधवारे एकम, चौदश अने जया (३–८–१३) ए तिथिओ वर्जवा योग्य छे. ४७. गुरुवारे छठ, चोथ अने भद्रा (२–७–१२), शुक्रवारे बीज, त्रीज अने रिक्ता (४–९–१४) तथा शनिवारे पूर्णा (५–१०–१५) अने सातम ए तिथिओ विशेषे करीने सर्वथा वर्ज्य छे. ४८.

॥ इति योगाः ॥

हवे त्रण प्रकारनुं गंडांत तथा तेनुं फळ कहे छे.—

चरमाइमतिहिलग्गरिक्ख मझेगअद्धदोघडिआ ।
तिछसत्ततरि मुत्तुं पुणो पुणो तिविह गंडंतं ॥ ४९ ॥
नहं न लब्भए अत्थं अहिदट्ठो न जीवई ।
जाओ वि मरई पायं पत्थिओ न निअत्तई ॥ ५० ॥

छेल्ली अने पहेली तिथिने मध्ये (वच्चे), छेल्ला अने पहेला लग्नने मध्ये तथा छेल्ला अने पहेला नक्षत्रने मध्ये अनुक्रमे एक, अर्ध अने बे घडीनुं गंडांत आवे छे. त्यारपछी तिथिमां त्रण त्रणने आंतरे, लग्नमां छछने आंतरे अने नक्षत्रमां सात सातने आंतरे बे तिथ्यादिकनी वच्चे तेटलाज प्रमाणवाळुं गंडांत होय छे, तेथी दरेकने आश्रीने त्रण

त्रण वार गंमांत आवे छे ते नीचेना यंत्रथी जाणवुं. ४९. गंमांतमां नाश पामेली वस्तु फरी प्राप्त थती नथी, सर्पथी मसायो होय तो ते जीवतो नथी, कोइ बाळकनो जन्म थयो होय तो ते प्राये जीवतो नथी तथा परदेश गयो होय ते पाछो आवतो नथी. ५०.

त्रण प्रकारना गंमांतनुं यंत्र.—

नाम	वेनी वच्चे	वेनी वच्चे	वेनी वच्चे	घमी
तिथि गंमांत	१५–१	५–६	१०–११	एक घमी.
लग्न गंमांत	मीन–मेष	कर्क–सिंह	वृश्चिक–धन	अर्ध घमी.
नक्षत्र गंमात	रेवती–अश्विनी	अश्लेषा–मघा	ज्येष्ठा–मूळ	वे घमी.

वज्रपात योग—

बीआणुराह तीआ तिगुत्तरा पंचमीइ महरिक्खं ।
रोहिणि छठी करमूल सत्तमी वज्जपाउं यं ॥ ५१ ॥

बीजने दिवसे अनुराधा होय, त्रीजने दिवसे त्रण उत्तरा (उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुनी अने उत्तराभाद्रपद)मांथी कोइ एक होय, पांचमने दिवसे मघा नक्षत्र होय, छठने दिवसे रोहिणी होय तथा सातमे हस्त के मूळ होय तो वज्रपात योग थाय छे. ते योग अशुभ छे. ५१.

हवे मृतक अवस्थावाळां नक्षत्रोने कहे छे.—

मूलद्दसाइचित्ता असेससयभिसय किंत्तिरेवइआ ।
नंदाए भद्दाए भद्दवया फग्गुणी दो दो ॥ ५२ ॥
विजयाए मिग सवणा पुस्सस्सिणि[2] भरणि जिठ रित्ताए ।
आसाढदुग विसाहा अणुराह पुणवसु महा य ॥ ५३ ॥
पुन्नाइकरधणिठा रोहिणि इअ मयगवत्थरिक्खाइं ।
नंदिपइठापमुहे सुहकज्जे वज्जए मइमं ॥ ५४ ॥

नंदा तिथिए मूळ, आर्द्रा, स्वाति, चित्रा, अश्लेषा, शतभिषक्, कृत्तिका के रेवती होय, भद्रा तिथिए वे भाद्रपद (पूर्वा तथा उत्तरा) अने वे फाल्गुनी (पूर्वा तथा उत्तरा) होय ५२ विजया (जया) तिथिए मृगशिर, श्रवण, पुष्य, अश्विनी, भरणी के ज्येष्ठा होय, रिक्ता तिथिए वे आषाढा (पूर्वा तथा उत्तरा), विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु के मघा होय ५३ अने पूर्णा तिथिए हस्त, धनिष्ठा के रोहिणी होय तो आ सर्व

१ नारचंद्रमा चोथने रोहिणी वज्रपात कहेल छे २ पुव्व इति प्रत्यंतरे.

मृतक अवस्थावाळां नक्षत्रो कहेवाय छे, माटे तेमां मतिमान पुरुषे दीक्षा, नंदी, प्रतिष्ठा विगेरे शुभ कार्य वर्जवा योग्य छे. ५४.

नक्षत्रोनी तीक्ष्ण उग्र विगेरे संज्ञा तथा तेनुं फळ कहे छे.—

जिट्ठद्दाऽसेस मूलं च तिक्खा रिक्खा विआहिआ ।
मिऊणि मिग चित्ता य रेवई अणुराहया ॥ ५५ ॥
पुस्सो अ अस्सिणी हत्थं अभिई लहुआ इमे ।
उग्गाणि पंच रिक्खाणि तिपुव्वा भरणी महा ॥ ५६ ॥
चरा पुणव्वसू साई सवणाइतिअं तहा ।
धुवाणि पुण चत्तारि उत्तराणि अ रोहिणी ॥ ५७ ॥
विसाहा कित्तिआ चेव दो अ मिस्सा विआहिआ ।
तिक्खे तिगिच्छं कारिज्जा मिऊ गहणधारणे ॥ ५८ ॥
लहू चरे सुहारंभो उग्गरिक्खे तवं चरे ।
धुवे पुरपवेसाई मिस्से संधिकिअं करे ॥ ५९ ॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा अने मूळ एटलां नक्षत्रो तीक्ष्ण कह्यां छे. मृगशिर, चित्रा, रेवती अने अनुराधा एटलां मृदु कह्यां छे. ५५. पुष्य, अश्विनी, हस्त अने अभिजित् आ नक्षत्रो लघु छे. त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद), भरणी अने मघा ए पांच नक्षत्रो उग्र छे. ५६. पुनर्वसु, स्वाति अने श्रवणादि त्रण (श्रवण, धनिष्ठा अने शतभिषक्) ए चर छे. त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा अने उत्तराभाद्रपद) अने रोहिणी ए चार ध्रुव छे. ५७. विशाखा अने कृत्तिका ए बे मिश्र कह्यां छे. तेमां तीक्ष्ण नक्षत्रोमां औषध शरु करवुं सारुं छे. वस्तुनुं ग्रहण तथा धारण मृदु नक्षत्रमां कराय छे. ५८. लघु नक्षत्रमां शुभ कार्यनो आरंभ करवो. उग्र नक्षत्रमां तप करवो. ध्रुव नक्षत्रमां नगरप्रवेशादिक करवा. तथा मिश्र नक्षत्रमां संधिनुं कार्य करवुं. ५९.

प्रस्थान करवा विषे—

दसधणु उवरिं सयपंच मज्झि पत्थाणि जाव दिण तिचऊ ।
थायव्वं लग्गतिहीखणरिक्खससीबलं घित्तुं ॥ ६० ॥

लग्न, तिथि, क्षण, नक्षत्र अने चंद्रनुं बळ ग्रहण करीने दश धनुषथी उपर अने पांचसो धनुषनी अंदर प्रस्थान स्थापवुं. ते प्रस्थान त्रण चार दिवस सुधी रही शके छे. ६०.

प्रयाणमां शुभ लग्नादिकनुं फळ कहे छे.—

पहि कुसलु लग्गि तिहि कज्ज सिद्धि लाभं मुहूत्तउ होइ।
रिक्खेणं आरोग्गं चंदेणं सुक्ख संपत्ती ॥ ६१ ॥

लग्न सारु होय तो मार्गमां कुशळता रहे छे, तिथि सारी होय तो कार्यनी सिद्धि थाय छे, मुहूर्त्त सारुं होय तो लाभ थाय छे, नक्षत्र सारुं होय तो शरीरे आरोग्यता रहे छे अने चंद्र सारो होय तो सुख संपत्ति मळे छे. ६१.

प्रयाणमां शुभ तिथि तथा तेनुं फळ कहे छे.—

पाडिवए पडिवत्ती नत्थि विवत्ती भणंति बीआए।
तइआइ अत्थसिद्धी विजयंगी पंचमी भणिआ ॥ ६२ ॥
सत्तमिआ बहुलगुणा मग्गा निक्कंटया दसमिआए।
आरुग्गिआ इगारसि तेरसि रिउणो निविज्जिणइ ॥ ६३ ॥

पडवाने दिवसे प्रयाण करवाथी मार्गमां प्रतिपत्ति थाय, बीजने दिवसे प्रयाण करवाथी विपदाउ न आवे, त्रीजे प्रयाण करवाथी अर्थनी सिद्धि थाय छे, पांचमे विजय थाय छे. ६२. प्रयाणमां सातम बहु गुणवाळी कही छे, दशमे प्रयाण करवाथी मार्ग निष्कंटक (शत्रु रहित) थाय छे, अगीयारशे प्रयाण करवाथी आरोग्यता रहे छे तथा तेरशे प्रयाण करवाथी शत्रुने जीते छे. ६३.

प्रयाणमां वर्ज्य तिथिउ.—

चाउदसिं पन्नरसिं वज्जिज्जा अठमिं च नवमिं च।
छट्ठिं चउत्थिं बारसिं च डुन्हं पि पक्खाणं ॥ ६४ ॥

बन्ने पखवाडीयानी चौदश, पूनम (अमास), आठम, नोम, छठ, चोथ अने बारश एटली तिथिउ प्रयाणमा वर्ज्य छे. ६४.

तिथि अने नक्षत्रने योगे प्रयाणमां शुभ वार कहे छे.—

दसमि पंचमि तेरसि बीअगो भिगुसुउ गमणेऽतिसुहावहो।
गुरु पुणवसु पुस्स विसेसउ सयभिसा अणुराह बुहे तहा॥ ६५ ॥

शुक्रवारे दशम, पाचम, तेरश के बीज होय तो ते दिवस प्रयाणमा अति सुखावह छे. गुरुवारे पुनर्वसु के पुष्य नक्षत्र होय तो ते प्रयाणमा विशेष सुखावह छे. तथा बुधवारे शतभिषक् के अनुराधा होय तो ते पण सुखावह छे. ६५.

प्रयाणमां सामान्य शुभ दिवस कहे छे —

सवदिसि सवकालं सिद्धिनिमित्तं विहारसमयंमि।
पुस्सस्सिणि मिग हत्था रेवइ सवणा गहेयवा ॥ ६६ ॥

सर्व दिशामां सर्व काळे सिद्धिने निमित्ते विहार (प्रयाण) समये पुष्य, अश्विनी, मृगशिर, हस्त, रेवती के श्रवण एटलां नक्षत्र ग्रहण करवां. ६६.

हवे प्रयाणमां अशुभ दिवसो कहे छे.—

वज्जो वारतिअं कूरं पडिवाय चउद्दसी ।
नवमट्ठमी इमाहिं तु बुहो वि न सुहो गमे ॥ ६७ ॥

प्रयाणमां रवि, मंगळ अने शनि ए त्रणे क्रूर वारने तजवा, तथा बुधवारने दिवसे जो पडवो, चौदश, नोम के आठम होय तो ते बुधवार पण गमनमां शुभकारक नथी. ६७.

हवे प्रयाणमां शुभ, मध्यम अने अशुभ नक्षत्रो गणावे छे.—

पुस्सस्सिणिमिगसिररेवइअं हत्था पुणव्वसू चेव ।
अणुराहजिट्ठमूलं नव नक्खत्ता गमणसिद्धा ॥ ६८ ॥
रोहिणी तिन्नि उ पुव्वा सवणधणिट्ठा य सयभिसा चेव ।
चित्ता साई एए नव नक्खत्ता गमणि मज्झा ॥ ६९ ॥
कित्तिअभरणिविसाहा अस्सेसमहउत्तरातिअं अद्दा ।
एए नव नक्खत्ता गमणे अइदारुणा भणिया ॥ ७० ॥

पुष्य, अश्विनी, मृगशिर, रेवती, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, ज्येष्ठा अने मूळ, ए नव नक्षत्रो गमनमां सिद्धिदायक छे. ६८. रोहिणी, त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद), श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, चित्रा अने स्वाति, ए नव नक्षत्रो गमनमां मध्यम छे. ६९. कृत्तिका, भरणी, विशाखा, अश्लेषा, मघा, त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद) अने आर्द्रा, ए नव नक्षत्रो गमनमां अत्यंत दारुण कह्यां छे. ७०.

प्रयाणमां नक्षत्रने आश्रीने अशुभ समय—

धुवेहि मिस्सेहि पभायकाले, उग्गेहि मज्झन्हि लहू परन्हे ।
मिऊ पओसे निसिमज्झि तिक्खे, चरे निसंते न सुहो विहारो ॥७१॥

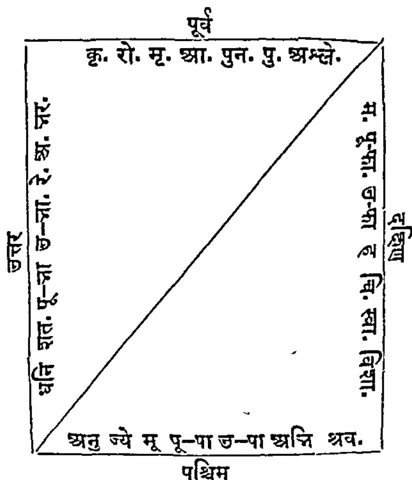
ध्रुव अने मिश्र नक्षत्रोमां प्रभातकाळे, उग्र नक्षत्रमां मध्याह्नकाळे, लघु नक्षत्रमां अपराह्नकाळे, मृदु नक्षत्रमां प्रदोषकाळे, तीक्ष्ण नक्षत्रमां मध्यरात्रिए अने चर नक्षत्रमां रात्रिने अंते (परोढीए) विहार (प्रयाण) करवो ते शुभ नथी. ७१.

हवे परिघनुं स्वरूप तथा तेनो उल्लंघननो निषेध कहे छे.—

पुव्वाइसु सग सग कित्तिआइं दिसि रिक्ख सदिसि हुंति सुहा ।
घरदिसि मज्झा वायग्गि परिहरेहा न लंघिज्जा ॥ ७२ ॥

पूर्वादिक चार दिशाओमां अनुक्रमे कृत्तिकाथी आरंभीने सात सात नक्षत्रो मूकवां. ते दिशानां नक्षत्रो कहेवाय छे. हवे प्रयाणमां स्वदिशिनुं नक्षत्र शुभकारक छे. पूर्व दिशाना नक्षत्रोमां उत्तरमां गमन करवु, तथा उत्तर दिशानां नक्षत्रोमां पूर्वमा गमन करवुं ए घरदिशि कहेवाय छे तेमज दक्षिण दिशानां नक्षत्रोमां पश्चिम तरफ गमन करवुं अने पश्चिम दिशानां नक्षत्रोमां दक्षिण तरफ गमन करवुं ते पण घरदिशि कहेवाय छे ते घरदिशिना नक्षत्रोमा गमन करवुं ते मध्यम छे वायु खूणाथी आरंभीने अग्नि खूण सुधी आडी परिघनी रेखा छे ते परिघ रेखानुं उल्लंघन करवुं नहीं. ७२.

परिघ यंत्र—



हवे दिक्शूळ तथा विदिक्शूळ कहे छे —

सूलं पुव्विं सणी सोमो दाहिणाए दिसा गुरू ।
पच्छिमाइ रवी सुक्को उत्तराए कुजो बुहो ॥ ७३ ॥
ईसाणे अ बुहो मंदो अग्गीई अ गुरू रवी ।
नेरइए ससी सुक्को भूमो वाए विवज्जाए ॥ ७४ ॥

शनिवारे अने सोमवारे पूर्व दिशामां शूळ होय छे, गुरुवारे दक्षिणमां शूळ होय छे, रवि अने शुक्रवारे पश्चिम दिशामां, मंगळ अने बुधे उत्तर दिशामां शूळ होय छे. ७३. बुधवारे अने शनिवारे ईशान खूणामां शूळ होय छे, गुरुवारे अने रविवारे अग्नि खूणामां शूळ होय छे, सोम अने शुक्रवारे नैर्ऋत्य खूणामां तथा मंगळवारे वायव्य खूणामां शूळ होय छे. ते बन्ने शूळ वर्जवा योग्य छे, एटले के जे दिशामां अथवा विदिशामां शूळ होय ते दिशा अथवा विदिशामां प्रयाण करवुं नहीं. ७४.

कारणे दिक्शूळमां अथवा विदिक्शूळमां जवुं पडे तो नीचेना पदार्थोनुं तिलक करीने जवाथी शूळनो दोष नथी. ते कहे छे.—

चंदणं दहि मट्टी अ तिल्लं पिठं तहा पुणो ।
तिल्लं खलं च वंदिज्जा सूराई सूलमुत्तरो ॥ ७५ ॥

रविवारे चंदन, सोमवारे दहीं, मंगळवारे माटी, बुधवारे तेल, गुरुवारे पिष्ट (आटो), शुक्रवारे तेल अने शनिवारे खोळनुं तिलक करीने प्रयाण करवुं. तेम करवाथी शूळ उत्तम (शुभ) थाय छे. अर्थात् शूळनो दोष लागतो नथी. ७५.

हवे दिशाने आश्रीने नक्षत्रशूळ कहे छे.—

उदयदिसि भसूलं दो असाढा य जिठा, धणिसवणविसाहा पूवभद्दा जमाए।
अह वरुणदिसाए रोहिणीपुस्समूलं, सुरगिरि दिसिहत्थोफग्गुणीदोविसाहा

बे अषाढा (पूर्वाषाढा अने उत्तराषाढा) तथा ज्येष्ठा नक्षत्र होय तो पूर्व दिशामां नक्षत्रशूळ थाय छे. धनिष्ठा, श्रवण, विशाखा अने पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र होय तो दक्षिण दिशामां नक्षत्रशूळ थाय छे. रोहिणी, पुष्य अने मूळ नक्षत्र होय तो पश्चिम दिशामां नक्षत्रशूळ होय छे, तथा हस्त, बे फाल्गुनी (पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी) अने विशाखा होय तो उत्तर दिशामां नक्षत्रशूळ होय छे. आ नक्षत्रशूळ पण प्रयाणमां शुभ नथी. ७६.

हवे वत्स कहे छे.—

मीणाइतिसंकंती पच्छिमाइसु उग्गइ। वच्छो गमे पवेसे वि न सुहो पिट्ठि संमुहो

मीन विगेरे त्रण संक्रांतिमां पश्चिमादिक दिशामां वत्स उगे छे, एटले के मीन, मेष अने वृष संक्रांतिमां पश्चिम दिशाए उगे छे, मिथुन, कर्क अने सिंह संक्रांति होय त्यारे उत्तरमां उगे छे, कन्या, तुला अने वृश्चिक संक्रांति होय त्यारे पूर्वमां उगे छे, तथा धन, मकर अने कुंभ संक्रांति होय त्यारे वत्स दक्षिणमां उगे छे. ते वत्स प्रयाणसमये तथा प्रवेशसमये पण सन्मुख के पछवाडे होय तो ते सारो नथी, अर्थात् वाम (डावे) तथा दक्षिण (जमणे) भागे होय तो ते सारो छे. ७७.

हवे योगिनी (जोगणी) कहे छे.—

इगनवगाइकमा तिहि पुव्वुत्तरअग्गिनेरदाहिणए ।
पछिमवाईसाणो जोइणि सा वामपिठि सुहा ॥ ७८ ॥

एकम अने नोम विगेरे तिथिना क्रमे करीने पूर्व, उत्तर, अग्नि, नैर्ऋत्य, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य अने ईशानमां योगिनी होय छे ते प्रयाणसमये वाम जागे अथवा पछवाडे होय तो शुभ छे. ७८

योगिनी यंत्र —

दिशा	पूर्व	उत्तर	अग्नि	नैर्ऋत्य	दक्षिण	पश्चिम	वायव्य	ईशान
तिथि	१–९	२–१०	३–११	४–१२	५–१३	६–१४	७–१५	८–३० (अमास)

हवे तत्काळनी योगिनी कहे छे —

दिणदिसि धुरि चउघडिया परउं पुव्वुत्तदिसिहि कमसो ।
तक्कालजोइणी सा वज्जेयव्वा पयत्तेण ॥ ७९ ॥

जे दिशाए जे दिवसे योगिनी होय ते दिवसे ते दिशाए पहेली चार घडी तत्काळ योगिनी रहे छे त्यारपछी पूर्वनी गाथामा कहेली दिशाना अनुक्रमे दरेक दरेक दिशाए चार चार घडी फरती फरे छे. ते तत्काळ योगिनी प्रयत्ने करीने एटले अवश्य वर्जवा योग्य छे. ७९.

राहुविचार.—

उदयत्थमणा चउ चउ घडियाइं राहु पुव्वदिसि तत्तो ।
सिद्धीए दिसि छहिं गउं सुहो पुठिदाहिणउं ॥ ८० ॥

दररोज सूर्यना उदयसमये अने अस्तसमये राहु पहेली चार चार घडी पूर्व दिशामां होय छे त्यारपछी सिद्धिने माटे छठी छठी दिशाए चार चार घडी रहे छे, एटले के सूर्योदयथी पहेली चार घडी सुधी पूर्वमां, बीजी चार घडी वायव्यमां, त्रीजी चार घडी दक्षिणमां, चोथी चार घडी ईशानमां, पाचमी चार घडी पश्चिममा, छठी चार घडी अग्नि खूणामा, सातमी चार घडी उत्तरमां अने आठमी चार घडी नैर्ऋत्यमां. त्यारपछी पाछी छठी दिशाए एटले पूर्वमा अस्तसमये आवे छे. आ राहु प्रयाणसमये पछवाडे तथा दक्षिण (जमणी) बाजुए रह्यो होय तो ते सारो छे ८०.

शिवविचार.—

चिउत्तरिगडुमासा दिसि विदिसि विसिठि सिवु तउ उदया ।
सिठि अढाई पणि घडि दिसि विदिसिं पुठिमुठि सुहो ॥ ८१ ॥

शिव चैत्र मासथी उत्तर दिशाने आरंभीने संहारक्रमे (उत्क्रमक्रमे) दिशामां एक मास, विदिशिमां बे मास ए प्रमाणे सूर्योदयसमये होय छे, एटले के चैत्रमां उत्तर दिशाए, वैशाख अने ज्येष्ठमां वायव्य खूणे, अषाढ मासमां पश्चिम दिशाए, श्रावण अने भाद्रपदमां नैर्ऋत्य खूणाए, आश्विन मासमां दक्षिण दिशाए सूर्योदयसमये होय छे इत्यादि. जे मासमां जे दिशा विदिशामां कहेल छे त्यांथी आठे दिशामां क्रमे करी दरेक दिशामां अढी घडी अने विदिशामां पांच घडी ए प्रमाणे फरे छे. तात्पर्य ए छे के चैत्र मासमां सूर्योदयसमये प्रथम अढी घडी उत्तरमां, पछी पांच घडी ईशानमां, पछी अढी घडी पूर्वमां इत्यादि क्रमे फरे छे. वैशाख तथा ज्येष्ठ मासमां प्रथम पांच घडी वायव्य खूणे, पछी अढी घडी उत्तरमां ए क्रमथी सदा फरे छे. आ शिव प्रयाणसमये पाछळ अथवा जमणो होय ते शुभकारक छे. ७१. शिवयंत्र आ प्रमाणे—

वायव्य वैशाक ज्येष्ठ घडी ५	उत्तर चैत्र घडी २॥	ईशान माघ फाल्गुन घडी ५
पश्चिम अषाढ घडी २॥	शिवचक्र	पूर्व पोष घडी २॥
श्रावण भाद्रपद घडी ५ नैर्ऋत्य	आश्विन घडी २॥ दक्षिण	अग्नि कार्तिक मार्गशीर्ष घडी ५

रविविचार.—

रवि रत्तिअंतपहराउ पुवाइसु दुन्नि दुन्नि पहर कमा ।
दाहिणपुठि विहारे वामो पुठि पवेसि सुहो ॥ ७२ ॥

रात्रिना छेल्ला पहोरथी बबे पहोर सुधी रवि पूर्वादिक चार दिशाओमां होय छे, एटले के रात्रिनो छेल्लो तथा दिवसनो पहेलो ए बे पहोर सुधी रवि पूर्वमां होय छे. पछी बीजो तथा त्रीजो प्रहर दक्षिणमां, चोथो तथा पांचमो प्रहर पश्चिममां, छठो तथा सातमो प्रहर उत्तरमां, पछी आठमो प्रहर रात्रिना अंतनो होवाथी पूर्वमां आवे छे. आ रवि प्रयाणमां दक्षिण (जमणो) तथा पाछळ सारो छे, अने प्रवेशमां डाबो तथा पाछळ सारो छे. ७२.

चंद्रविचार.—

उदयवसा अहवा दिसिदारजवसउं हवे ससीउदउं ।
सो अभिमुहो पहाणो गमणे अमिआई वरसंतो ॥ ७३ ॥

उदयना वशथी अथवा दिशि द्वारना नक्षत्रना वशथी (सवा बे दिवसे जे चंद्र जूदी जूदी राशिमां जाय छे ते) चंद्रनो उदय कहेवाय छे. अमृतने वरसावतो ते चंद्र प्रयाणमां सन्मुख होय तो ते प्रधान (सारो) छे. ७३.

शुक्रविचार.—

जहिं उग्गइ जहिं दिसि भमइ जहिं च दारत्रिहाइ ।
तिहुं परिसंमुह सुक्क पुण उदउ जि इक्कु गणइ ॥ ७४ ॥

शुक्र जे दिशामां उगे छे, जे दिशामा भमे छे अने जे द्वारनी सन्मुख रहे छे ते त्रणे प्रकारे शुक्र सन्मुख कहेवाय छे, परंतु एक उदयने आश्रीनेज गणाय छे. अर्थात् उदयने आश्रीने शुक्रनी सन्मुखता प्रयाणसमये वर्जवी. ७४.

पाश तथा काळ विषे.—

सियपडिवयाउ पुवाइसु पासु दसदिसिहिं कालु तयभिमुहो ।
कुज्जा विहारि वामो पासो कालो उ दाहिणउं ॥ ७५ ॥

शुक्लपक्षना पडवाथी आरंभीने अनुक्रमे पूर्वादिक दश दिशामा पाश होय छे, एटले के सुदि पडवाए पूर्वमा, बीजे अग्निमा, त्रीजे दक्षिणमां ए रीते गणतां आठमे ईशानमा, नोमे ऊर्ध्व दिशामा अने दशमे अधो दिशामां, पछी अगीयारशे पूर्वमा, एम फरीने गणतां वद पाचमे अधो दिशामां पाश आवे, अने त्रीजी वार वद छठे पूर्वमां ए रीते गणता वद अमावास्याए अधो दिशामा आवे. जे दिशाए पाश होय तेनी सन्मुखनी दिशाएज काळ होय छे प्रयाणसमये पाशने वाम (डावो) करवो अने काळने दक्षिण (जमणो) करवो. ७५.

हंस (नाडी) विचार.—

पुन्ननाडिदिसापायं अग्गे किच्चा सया विऊ ।
पवेसं गमणं कुज्जा कुणंतो साससंगहं ॥ ७६ ॥

पूर्ण नाडीनी दिशाना पगने आगळ करीने एटले नसकोरानी जे बाजुमा श्वास परिपूर्ण वहेतो होय ते बाजुना पगने आगळ करीने विद्वान् पुरुषे श्वासने रुंधीने सदा प्रवेश अने गमन करवु. ७६.

॥ इति प्रस्थानम् ॥

हवे चैत्य संबंधी मुहूर्त्तो कहे छे.—

चेइअसुअं धुवमिउकरपुस्स धणिठसयभिसासाई ।
पुस्सतिउत्तर-रे-रो-करमिगसवणे सिलनिवेसो ॥ ८७ ॥

चैत्यनुं खात ध्रुव, मृदु, हस्त, पुष्य, धनिष्ठा, शतभिषक् अने स्वाति नक्षत्रमां करवुं, तथा पुष्य, त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद), रेवती, रोहिणी, हस्त, मृगशिर अने श्रवण एटलां नक्षत्रोमां शिलास्थापन करवुं. ८७.

सतभिसपुस्सधणिठा मिगसिरधुवमिउ असुहिं सुहवारे ।
ससि गुरुसिए उइए गिहे पवेसिज्ज पडिमाउ ॥ ८८ ॥

शतभिषक्, पुष्य, धनिष्ठा, मृगशिर, ध्रुव अने मृदु, ए नक्षत्रोमां शुभ वारे तथा चंद्र गुरु अने शुक्रनो उदय होय त्यारे प्रतिमाने घरमां प्रवेश कराववो. ८८.

तिपुव्वमूलभरणी विसाहा, सेसा महा कित्ति अहोमुहाइं ।
रेवस्सिणी हत्थपुणाणुचित्ता, जिठामिगं साइ तिरिछगा य॥ ८९ ॥
तिउत्तरद्दासवणत्तिअं च उड्ढमुहो रोहिणिपुस्सजुत्ता ।
भूमीहराई गमणागमाई धयावरोवाइ कमेण कुज्जा ॥ ९० ॥

त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद), मूळ, भरणी, विशाखा, अश्लेषा, मघा अने कृत्तिका, आटलां नक्षत्रो अधोमुख कहेवाय छे. रेवती, अश्विनी, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, चित्रा, ज्येष्ठा, मृगशिर अने स्वाति, एटलां नक्षत्रो तिरछां कहेवाय छे. ८९. त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद), आर्द्रा, श्रवणत्रिक (श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा), रोहिणी अने पुष्य, एटलां नक्षत्रो ऊर्ध्वमुख कहेवाय छे. तेमां भूमिगृह (भोंयरा) विगेरे अधोमुख नक्षत्रमां करवा लायक छे, गमन आगमन विगेरे तिरछा नक्षत्रमां करवालायक छे अने ध्वजरोपण विगेरे कार्यो ऊर्ध्वमुख नक्षत्रोमां करवा लायक छे. ९०.

॥ इति चैत्यनिवेशः ॥

हवे प्रतिमानुं नाम पाडती वखते शुं शुं जोवानुं छे ? ते कहे छे.—

छठमत्तं तह रिक्खजोणी, वग्गठ नाडीगयरिक्खभावं ।
विसोवगा देवगणाइ एवं, सव्वं गणिज्जा पडिमाभिहाणे ॥ ९१ ॥

षडाष्टक, नक्षत्रयोनि, वर्गाष्टक, नाडीगत नक्षत्रभाव, विंशोपक अने देवगणादिक, ए सर्वे प्रतिमानां नाम पाडवामां जोवानां छे. ९१.

प्रथम पष्टाष्टक कहे छे.—

विसमा अठमे पीई समाउ अठमे रिऊ ।
सत्तुठठमं नामरासिहिं परिवज्जए ॥ ए२ ॥
वीयबारसंमि वज्जो नवपंचमगं तहा ।
सेसेसु पीई निद्दिठा जइ डुच्चागहमुत्तमा ॥ ए३ ॥

विषम राशि १–३–५–७–ए–११ थी आठमी राशिना स्वामीउने प्रीति होय छे. सम राशि २–४–६–८–१०–१२ थी आठमी राशिने शत्रुजाव छे ते शत्रुजाव जगवंतनी राशिथी प्रतिमा कारापकनी नामराशि सुधी गणीने वर्जवो. ए२ वीजी अने बारमी राशिना तथा नवमी अने पाचमी राशिउना स्वामीने परस्पर प्रीति न होय तो ते पण अवश्य वर्जवी. शेष राशिमां प्रीति कहेली छे ए३.

हवे नक्षत्रयोनि वेर कहे छे.—

आसगयमेससप्पा सप्पासविडालमेसमज्जारा ।
आखुडुगगवीमहिसी वग्घो महिसी पुणो वग्घो ॥ ए४ ॥
मिगमिगकुक्कर वानर नउलडुगं वानरो हरितुरंगो ।
हरिपसुकुंजर एए रिस्काण कमेण जोणीउ ॥ एए ॥

अश्विनी विगेरे नक्षत्रोनी अनुक्रमे आ प्रमाणे योनिउ छे —अश्विनीनी योनि अश्व छे, जरणीनी योनि हाथी छे, कृत्तिकानी मेष, रोहिणीनी सर्प, मृगशिरनी पण सर्प, आर्द्रानी श्वान, पुनर्वसुनी बिलामो, पुष्यनी मेष, अश्लेषानी बिलामो, मघानी उंदर, पूर्वाफाल्गुनीनी उंदर, उत्तराफाल्गुनीनी गाय, हस्तनी जेंश, चित्रानी वाघ, स्वातिनी जेंश, विशाखानी वाघ, अनुराधानी मृग, ज्येष्ठानी मृग ए४. मूळनी कूतरो, पूर्वाषाढानी वानर, उत्तराषाढानी नोळीयो, अजिजितनी नोळीयो, श्रवणनी वानर, धनिष्ठानी सिंह, शतजिषकनी अश्व, पूर्वाजाद्रपदनी सिंह, उत्तराजाद्रपदनी पशु-गो अने रेवतीनी योनि हाथी छे एए

गयसीहमस्समहिसं कपिमेसं साणहरिणऽहिनउलं ।
गोवग्घ बिडालुंदर वेरं नामेसु वज्जिज्जा ॥ ए६ ॥

हाथी अने सिंह, अश्व अने पामो, वानर अने मेष, श्वान अने हरण, सर्प अने नोळीयो, गाय अने वाघ तथा बिलामो अने उंदर, आउने परस्पर वेर होय छे, माटे

नाम पाड्वामां आ वेर वर्जवुं, एटले के प्रतिमाना नामनी अने प्रतिमा जरावनारना नामनी जे योनि होय ते बन्नेने जो परस्पर वेर होय तो तेवुं नाम वर्जवुं. ए६.

॥ इति नक्षत्रयोनिवैरम् ॥

हवे वर्गाष्टक कहे छे.—

गरुमो बिमालसीहो कुक्कुरसप्पो अ मूसगो हरिणो ।
मेसो अड्वग्गपइ कमेण पुण पंचमे वेरं ॥ ए७ ॥

अ वर्ग (सर्व स्वर)नो पति गरुड छे। क वर्गनो पति बिलाडो छे। च वर्गनो पति सिंह छे। ट वर्गनो पति कूतरो छे। त वर्गनो पति सर्प छे। प वर्गनो पति उंदर छे। य वर्ग (य र ल व)नो पति हरण छे। तथा श वर्ग (श ष स ह)नो पति मेष (घेटो) छे। अकारादि आठ वर्गना गरुडादि आठ स्वामीउं छे तेमने क्रमे करीने पोताना वर्गपतिथी पांचमे पांचमे वेर छे. ते वर्गवेर पण वर्जवुं. ए७.

हवे नाडीमां रहेलां नक्षत्रना जावने कहे छे.—

असिणाइतिनाडीए इगनाडिगयं सुहं जवे रिक्खं ।
गुरुसीसाणं तारा वज्जिज्ज तिपंचसत्तत्था ॥ ए८ ॥

अश्विनी विगेरे नव नव नक्षत्रोनी त्रण नाडी (लाइन) करवी, तेमां गुरु अने शिष्यनुं नक्षत्र एकज नाडीमां आव्युं होय तो ते शुज छे. वळी गुरु अने शिष्यनी त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा आवती होय तो ते वर्ज्य छे. ए८.

नाडीयंत्र स्थापना.—



हवे विंशोपक कहे छे.—

सिद्धसाहगधुरक्खर वग्गंके कमुक्कमिण अठविन्नत्ते ।
सेस अद्धकय लद्धविसो अ पडिमाउ खलु अग्गगएणं ॥ एए ॥

सिद्ध (गुरु) अने साधक (शिष्य)ना नामना पहेला अक्षरनो जे वर्गांक होय ते बन्ने आंकने क्रमे तथा उत्क्रमे (उलटा सुलटा) मूकवा, पछी तेने आठे जाग देवो.

वाकी जे शेप रहे तेने अर्ध करतां जे संख्या आवे तेटला विंशोपक (वसा) पहेला वर्गांकवाळा पासे वीजो वर्गांकवाळो मागे. जेमके गुरुना नामनो पहेलो अक्षर द एटले पांचमो वर्ग छे, अने शिष्यना नामनो पहेलो अक्षर प एटले छठो वर्ग छे. तेने क्रमे करीने मूकवाथी ५६ थाय, तेने आठे भाग देतां शेप कांइ पण रहेतुं नथी, माटे पहेला वर्गांकवाळा गुरु पासे वीजा वर्गांकवाळो शिष्य कांइ पण मागतो नथी एम समजवुं. हवे तेज आंकने उत्क्रमे मूकवाथी ६५ थाय छे, तेने आठे भाग देतां वाकी एक शेप रहे छे, तेने अर्ध करतां अर्धो विंशोपक आवे छे, माटे पहेला आंकवाळा शिष्य पासे वीजा आंकवाळा गुरु अर्ध विंशोपक मागे एम समजवुं. ९९.

हवे देवगणादिक कहे छे.—

देवस्सिणिपुणपुस्सा करसाइमिगाणुसवणरेवइआ ।
मणुअ तिपुवतिउत्तर रोहिणि भरणी अ अद्दा य ॥ १०० ॥
कित्तिअविसाहचित्ता धणिजिट्ठाऽसेसतिन्नि डुग रक्खा ।
सगणे पीई नरसुर मज्झ सेसा पुणो असुहा ॥ १०१ ॥

अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, मृगशिर, अनुराधा, श्रवण अने रेवती, आ नव नक्षत्रो देवगण छे त्रण पूर्वा, त्रण उत्तरा, रोहिणी, भरणी अने आर्द्रा, आ नव नक्षत्रो मनुष्यगण छे १०० तथा कृत्तिका, विशाखा, चित्रा, धनिष्ठादिक एटले धनिष्ठा अने शतभिषा, ज्येष्ठादिक एटले ज्येष्ठा अने मूळ तथा अश्लेषादिक एटले अश्लेषा अने मघा, आ नव नक्षत्रो राक्षसवर्ग छे. तेमां गुरु शिष्यादिकना बन्ने नामोनां नक्षत्रो एकज गणमा होय तो परस्पर घणी प्रीति रहे, एकनो मनुष्यवर्ग अने बीजानो देववर्ग होय तो मध्यम प्रीति रहे, ते सिवायना वर्ग होय तो ते अशुभ छे. १०१.

॥ इति प्रतिमाधारणागतिः शिष्यनामकरणं च ॥

हवे विद्यारंभ विषे कहे छे.—

गुरू बुहो अ सुक्को अ सुंदरा मज्झिमो रवी ।
विज्जारंभे ससी पावो सणी भोमा य दारुणा ॥ १०२ ॥
मिगसिर–अद्दा–पुस्सो तिन्नि उ पुवा उ मूलमस्सेसा ।
हत्थो चित्ताइ तहा दस वुड्ढिकराइं नाणस्स ॥ १०३ ॥

विद्यारंभमा गुरु, बुध अने शुक्र सुंदर छे, रविवार मध्यम छे, सोमवार पापी (दुष्ट) छे अने शनि तथा मंगळ अतिभयंकर (अति दुष्ट) छे. १०२. मृगशिर, आर्द्रा, पुष्य,

त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद), मूळ, अश्लेषा, हस्त अने चित्रा, आ दश नक्षत्रो ज्ञानी वृद्धि करनारां छे. १०३.

लोचकर्म विषे.—

पुणव्वसु अ पुस्सो अ सवणो अ धणिठिया ।
एएहिं चउहिं रिक्खेहिं लोअकम्माणि कारए ॥ १०४ ॥
कित्तिआहिं विसाहाहिं महाहिं भरणीहि अ ।
एएहिं चउहिं रिक्खेहिं लोअकम्माणि वज्जए ॥ १०५ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण अने धनिष्ठा, आ चार नक्षत्रोमां लोचकर्म करवुं शुभ छे. १०४. कृत्तिका, विशाखा, मघा अने भरणी, आ चार नक्षत्रोमां लोचकर्म वर्ज्य छे. (अर्थात् आ आठ सिवायनां बीजां नक्षत्रो मध्यम छे.) १०५.

कर्णवेध तथा राजाना दर्शननां नक्षत्रो.—

मिग–अणु–पुण–पुस्सा जिट्ठ–रेवऽस्सिणीआ,
सवण–कर–सचित्ता सोहणा कन्नवेहे ।
कर–सवणऽणुराहा–रेव–पुस्सऽस्सिणीआ,
मिग–धणि–धुव–चित्ता दंसणे भूवईणं ॥ १०६ ॥

मृगशिर, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, रेवती, अश्विनी, श्रवण, हस्त अने चित्रा, एटलां नक्षत्रो कर्णवेधमां सारां छे. हस्त, श्रवण, अनुराधा, रेवती, पुष्य, अश्विनी, मृगशिर, धनिष्ठा, ध्रुव (रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद) अने चित्रा, ए नक्षत्रो राजाना दर्शनमां शुभ छे. १०६.

वस्त्रधारण.—

सूरे जिन्नं ससी अद्दं मलिणं सणि धारिअं ।
भोमे दुक्खावहं होइ वत्थं सेसेहिं सोहणं ॥ १०७ ॥

नवुं वस्त्र रविवारे धारण करवाथी (पहेरवाथी) जलदी जीर्ण थाय छे, सोमवारे पहेरवाथी आर्द्र (भीनुं) रहे छे, शनिवारे धारण करवाथी मलिन रहे छे, मंगळवारे पहेरवाथी दुःखकारक थाय छे, अने बीजा (बुध, गुरु अने शुक्र) वारे नवुं वस्त्र पहेरवुं सारुं छे. १०७.

नवां पात्र वापरवा विषे.—

मिग—पुस्सऽस्सिणी हत्थाऽणुराहा चित्त—रेवई ।
सोमो गुरु अ दो वारा पत्तवावारणे सुहा ॥ १०८ ॥

मृगशिर, पुष्य, अश्विनी, हस्त, अनुराधा, चित्रा अने रेवती, ए नक्षत्रो तथा सोम अने गुरु, ए वे वारो नवां पात्र वापरवामां सारां छे. १०८.

गयेली वस्तु पाछी आववा विषे.—

जामाइमुहा चउ चउ असिणाई काण चिवड सज्जंऽधा ।
छसु वत्त जाइ सज्जे अंधे लब्भइ गयं वत्थु ॥ १०९ ॥

दक्षिण दिशाने आरंभीने चार दिशामा अश्विनीथी आरंभीने चार नक्षत्रो अनुक्रमे मूकवां. ए रीते अठ्यावीश नक्षत्रो मूकवा ते अनुक्रमे काणां, चीवडा, सज्ज (देखतां) अने आंधळा कहेवाय छे. तेमां काणा अने चीवडां नक्षत्रमां वस्तु गइ होय तो तेनी वातो थया करे अर्थात् मळवानी आशा रहे के न रहे, सज्ज नक्षत्रमां गइ होय तो ते वस्तु जायज अर्थात् पाछी आवे नहीं, अने आधळा नक्षत्रमां गइ होय तो ते पाछी आवे छे. जे दिशानुं नक्षत्र होय ते दिशामा ते वस्तु गइ छे एम पण जाणवुं. १०९.

नक्षत्रोनो यंत्र —

काणा	चीवडा	देखतां	आंधळा
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी
मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
अश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूळ	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती
वस्तु दक्षिणमां गइ छे	वस्तु पश्चिममा गइ छे	वस्तु उत्तरमां गइ छे	वस्तु पूर्वमा गइ छे

गयेली वस्तु जोवानी बीजी रीत.—

रविरिक्खा छव्वाला वारस तरुणा नव परे थेरा ।
थेरे न जाइ तरुणेहिं जाइ बाले भमइ पासे ॥ ११० ॥

सूर्यना नक्षत्रथी छ नक्षत्रो बाळक कहेवाय छे, त्यारपछीनां बार नक्षत्रो जुवान कहेवाय छे अने त्यारपछीनां नव वृद्ध कहेवाय छे. तेमां वृद्ध नक्षत्रमां गयेली वस्तु जाय नहीं (पाछी आवे), जुवान नक्षत्रमां गइ होय तो गयेली वस्तु जाय (पाछी आवे नहीं), अने बाळ नक्षत्रमां गइ होय तो ते पासेज जमे छे, एटले के छेटे जाय नहीं. ११०.

सर्पदंश विषे.—

विसाहा–कित्तिआऽसेसा मूलऽद्दा भरणी महा ।
एयाहिं अहिणा दट्ठो कट्ठेणावि न जीवइ ॥ १११ ॥

विशाखा, कृत्तिका, अश्लेषा, मूळ, आर्द्रा, भरणी अने मघा, ए नक्षत्रोमां जो सर्पदंश थयो होय तो ते कष्टे करीने पण (कोइ पण प्रकारे) जीवे नहीं. १११.

रोगनी शांति जोवा विषे.—

पुण–पुस्स उ–फा उ–भ रोहिणीहिं रोगोवसम सत्तदिणे ।
मूलऽस्सिणि कित्ति नवमे सवण–भरणि-चित्त–सयभिसेगदसे ११२
धणि–कर–विसाहिं पक्खे मह वीसइमे उ–खा मिगे मासे ।
अणुराह–रेवइ चिरं तिपुव जिट्ठऽद्द–सेस–साइ–मिइ ॥ ११३ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद अने रोहिणी, ए नक्षत्रोमां व्याधि थयो होय तो सात दिवसे तेनी शांति थाय छे, मूळ, अश्विनी अने कृत्तिकामां थयो होय तो नव दिवसे शांति थाय छे, श्रवण, भरणी, चित्रा अने शतभिषामां थयो होय तो अगीयार दिवसे शांति थाय छे. ११२. धनिष्ठा, हस्त अने विशाखामां थयो होय तो पखवाडीये शांति थाय छे, मघामां थयो होय तो वीश दिवसे शांति थाय छे, उत्तराषाढा अने मृगशिरमां थयो होय तो एक मासे शांति थाय छे, अनुराधा अने रेवतीमां थयो होय तो चिर काळे शांति थाय छे, तथा त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद), ज्येष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा अने स्वातिमां व्याधि थयो होय तो ते मरणज पामे छे. ११३.

औषध शरु करवानां नक्षत्रो.—

चरलहु मिउमूले रोगनिन्नासहेऊ, हवइ खलु पउत्तं उसहं वाहिआणं ।

चर, लघु, मृदु तथा मूळ, एटलां नक्षत्रोमां व्याधिवाळाने औषध आप्युं होय तो ते रोगना नाशनो हेतु थाय छे.

रोगथी मुक्त थयेलाना स्नान विषे.—

सिग्गु—ससि पुण—जिट्ठाऽसेस—साइ—महाहिं,
न य कइवि विहेयं रोगमुत्ते सिणाणं ॥ ११४ ॥

शुक्रवारे के सोमवारे तथा पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्लेषा, स्वाति अने मघा, एटलां नक्षत्रमां रोगथी मुक्त थयेला मनुष्ये कोइ पण प्रकारे स्नान करवुं नहीं. (एटले माथे पाणी रेडवुं नहीं.) ११४.

मृत्यु जोवा विषे —

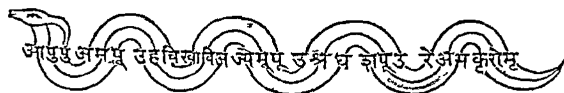
नामनक्खत्तमक्किंदू एकनाडीगया जया ।
तया दिणे नवे मच्चू नन्नहा जिणभासिअं ॥ ११५ ॥

नामराशिनुं नक्षत्र, सूर्य अने चंद्र ए त्रणे ज्यारे एक नाडीमां आवे त्यारे तेज दिवसे मृत्यु थाय छे एम जिनेश्वरनुं वचन छे ते कदापि अन्यथा न होय ११५.

आई अद्दा मिगं अंते मज्झे मूलं पइट्ठिअं ।
रविंदूजम्मनक्खत्तं तिविद्धो न हु जीवई ॥ ११६ ॥

प्रथम आर्द्रा नक्षत्र मूकवुं, छेल्लुं मृगशिर मूकवु अने मध्यमां मूळ मूकवुं. पछी सूर्य, चंद्र अने जन्मनुं नक्षत्र ए त्रणेनो वेध थाय तो ते जीवे नहीं ११६.

स्थापना —



मृतकार्यमा वर्ज्य नक्षत्रो —

धुवमिस्सुग्गनक्खत्ता मूलऽद्दा अणुराहया ।
पंचगाई रवी भोमा मयकज्जे विवज्जिया ॥ ११७ ॥

ध्रुव, मिश्र अने उग्र नक्षत्रो, तथा मूळ, आर्द्रा अने अनुराधा ए नक्षत्रो, तथा पंचकादिक (पंचक, यमल अने त्रिपुष्कर) ए योग, तथा रवि अने मंगळ ए वारो मृतकार्यमा वर्ज्य छे ११७

दो पणयालमुहुत्ते तीसमुहुत्तेगपुत्तलं काउं ।
नेरइअ दाहिणाए महा परिट्ठावणं कुज्जा ॥ ११८ ॥

पीस्तालीश मुहूर्त्तनां संजोगीयां नक्षत्रमां बे अने त्रीश मुहूर्त्तनां संजोगीयां नक्षत्रमां एक पुतळुं करीने नैर्ऋत्य के दक्षिण दिशामां ते पुतळानी महा परिष्ठापना करवी, एटले अग्नि संस्कार करवो. ११८.

तिन्नेव उत्तराइं पुणव्वसु रोहिणी विसाहा य ।
एए छ नक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥ ११९ ॥
सयभिस-भरणी साई अस्सेस-जिट्ठऽद्द छच्च नक्खत्ता ।
पनरस-मुहुत्तजोगा तीसमुहुत्ता पुणो सेसा ॥ १२० ॥

त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद), पुनर्वसु, रोहिणी, विशाखा, ए छ नक्षत्रो पीस्तालीश मुहूर्त्तनां संयोगीयां कहेवाय छे. ११९. शतभिषा, भरणी, स्वाति, अश्लेषा, ज्येष्ठा अने आर्द्रा, ए छ नक्षत्रो पंदर मुहूर्त्तनां संयोगीयां कहेवाय छे, बाकीनां पंदर नक्षत्रो त्रीश मुहूर्त्तनां संयोगीयां कहेवाय छे. १२०.

॥ इति मृतक्रिया ॥

हवे दीक्षा तथा प्रतिष्ठा विषे कहे छे.—

मास-दिण-रिक्खसुद्धिं मुणिऊणं सिद्धछायधुवलग्गे ।
बारंगुलम्मि सुद्धे दिक्खपइट्ठाइअं कुज्जा ॥ १२१ ॥

मास, दिवस अने नक्षत्र ए त्रणेनी शुद्धि जाणीने सिद्ध छाया अथवा ध्रुव लग्न होय त्यारे अथवा बार आंगळना शंकुनी छाया शुद्ध होय त्यारे दीक्षा तथा प्रतिष्ठा विगेरे शुभ कार्यो करवां. १२१.

हरिसयण अकम्मण अहिअमास गुरिसुक्कि अत्थि सिसुवुड्ढे ।
ससि नट्ठे न पइट्ठा दिक्खा सुक्कऽत्थि वि न दुट्ठा ॥ १२२ ॥

हरि शय्यामां सुता होय एटले चतुर्मासमां, अधिक मासमां, गुरु शुक्रनो अस्त होय त्यारे, गुरु शुक्रनी बाल्यावस्था के वृद्धावस्था होय त्यारे तथा चंद्रनो नाश (अस्त) होय त्यारे प्रतिष्ठा तथा दीक्षा करवी नहीं. तेमां शुक्रना अस्तमां दीक्षा दुष्ट नथी, एटले के मात्र शुक्रनो अस्त होय तो दीक्षा देवामां दोष नथी. १२२.

अवजोगकुलिअभद्दा उक्काई जत्थ तं दिणं वज्जे ।
संकंति साइदिणतिह गहणे इगु आइ सग पच्छा ॥ १२३ ॥

अवजोग, कुलिक, जद्रा (विष्टि) तथा उल्कापात विगेरे जे दिवसे होय ते दिवसने वर्जवो संक्रांतिनो दिवस, तेनी पहेलानो एक दिवस अने तेनी पठीनो एक दिवस एम त्रण दिवस वर्जवा. तथा (सूर्य चंद्रना) ग्रहणमां पहेलानो एक दिवस, एक ग्रहणनो दिवस अने त्यारपठीना सात दिवस एम नव दिवस वर्जवा. १२३.

सुद्धतिही सुहवारे सिद्धाऽमियराजजोगपमुहाइं ।
जत्थ हवंति सुहाइं सुहकज्जे तं दिणं गिज्झं ॥ १२४ ॥

शुद्ध तिथि अने शुज वारने दिवसे ज्यारे सिद्धि योग, अमृत योग अने राज योग विगेरे शुज योगो होय ते दिवस शुज कार्यमां ग्रहण करवो १२४.

हत्थऽणुराहा-साई सवणुत्तर-मूलरोहिणी पुस्सा ।
रेवइ-पुणव्वसु इअ दिक्खपइठा सुहा रिक्खा ॥ १२५ ॥

हस्त, अनुराधा, स्वाति, श्रवण, त्रण उत्तरा, मूळ, रोहिणी, पुष्य, रेवती अने पुनर्वसु, आटलां नक्षत्रो दीक्षा अने प्रतिष्ठामां शुज ठे. १२५.

अस्सिणि-सयभिस-पु-ज्ञा एसु वि दिक्खा सुहा विणिद्दिठा ।
मह-मिग-धणि-पइठा कुज्जा वज्जिज्ज सेसाइं ॥ १२६ ॥

उपर कह्यां उपरांत अश्विनी, शतजिषा अने पूर्वाजाद्रपद, एटलां नक्षत्रोमा पण दीक्षा आपवी सारी कही ठे. तथा मघा, मृगशिर अने धनिष्ठा, ए नक्षत्रोमा पण प्रतिष्ठा करवी, बाकीना नक्षत्रो वर्ज्य ठे. १२६.

कारावगस्स जम्मे दसमे सोलसमेऽठारसे रिक्खे ।
तेवीसे पणवीसे न पइठा कह वि कायव्वा ॥ १२७ ॥

प्रतिष्ठा करावनारना जन्मनुं, दशमुं, सोळमुं, अढारमुं, त्रेवीशमुं अने पचीशमुं, आटला नक्षत्रो सारा होय तोपण तेमा सर्वथा प्रतिष्ठा करवी नहीं. १२७.

संझागयं रविगयं विड्डेरं सग्गहं विलंबं च ।
राहुहयं गहभिन्नं वज्जए सत्त नक्खत्ते ॥ १२८ ॥

शुज नक्षत्र पण मध्यागत होय, सूर्यगत होय, विड्डर होय, ग्रह सहित होय, विलंबित होय, राहुथी हणायुं होय के ग्रहथी जेदायुं होय, आ सात प्रकारना नक्षत्रो वर्जवा लायक ठे. १२८.

अत्थमणे संझागय रविगय जत्थ ठिउ अ आइच्चो ।
विड्डेरमवद्दारिय सग्गह कूरग्गहठिअं तु ॥ १२ए ॥
आइच्च पिठउ क विलंबि राहुहयं जहिं गहणं ।
मझेण गहो जस्स उ गछइ तं होइ गहभिन्नं ॥ १३० ॥
संझागयम्मि कलहो होइ विवाउ विलंबि नक्खत्ते ।
विड्डेरे परविजउ आइच्चगए अनिवाणं ॥ १३१ ॥
जं सग्गहम्मि कीरइ नक्खत्ते तत्थवि ग्गहा होइ ।
राहुहयम्मि मरणं गहभिन्ने सोणि उग्गालो ॥ १३२ ॥

सूर्य अस्त समये जे नक्षत्र पूर्वमां उगे छे ते संध्यागत कहेवाय छे. जे नक्षत्रमां सूर्य रह्यो होय ते रविगत (सूर्यगत) नक्षत्र कहेवाय छे. जे नक्षत्र वक्री ग्रहे अधिष्ठित होय ते विड्डर कहेवाय छे. जे नक्षत्र क्रूर ग्रहे अधिष्ठित होय ते सग्रह कहेवाय छे. १२ए. जे नक्षत्र सूर्यनी पाछळ होय ते विलंबी कहेवाय छे. जे नक्षत्रमां ग्रहण थयुं होय ते राहुहत कहेवाय छे. जे नक्षत्रनी मध्यमां थइने कोइ ग्रह जतो होय ते ग्रहभिन्न कहेवाय छे. १३०. आ संध्यागत विगेरे नक्षत्रोमां कार्य करवाथी शुं फळ थाय छे ? ते कहे छे—संध्यागत नक्षत्रमां कार्य करवाथी कलह थाय छे, विलंबी नक्षत्रमां करवाथी विवाद थाय छे, विड्डरमां करवाथी शत्रुनो जय थाय छे, सूर्यगतमां करवाथी अनिर्वाण (अशांति) थाय छे. १३१. जे सग्रह नक्षत्रमां कार्य करे छे तेनो पण ग्रह थाय छे एटले ते पकडाय छे, राहुहतमां कार्य करवाथी मरण थाय छे अने ग्रहभिन्न नक्षत्रमां कार्य करवाथी लोहीनुं वमन थाय छे. १३२.

रविरिक्खाउ हेया उवग्गहा पंचमऽठ-चउदसमा ।
अठारस उगुणीसा बावीसा तेवीस चउवीसा ॥ १३३ ॥

सूर्यना नक्षत्रथी पांचमुं, आठमुं, चौदमुं, अढारमुं, ओगणीशमुं, बावीशमुं, त्रेवीश अने चोवीशमुं, एटलां नक्षत्रो उपग्रह कहेवाय छे. ते शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे. १३३

॥ इति उपग्रहाः ॥

एकार्गल योग विषे.—

सेगविसमजोगऋ सम अऋ चउदसंख सिरिरिक्खम् ।
दाउं चउदससिलाए ससिरवि इक्कग्गलं वज्जे ॥ १३४ ॥

प्रथम ३७ मी गाथामां विष्कंभ १, अतिगंड ६, शूळ ए, गंड १०, व्याघात १३, वज ९, व्यतीपात १७, परिघ १ए, वैधृति २७, ए नव अशुभ योगो कह्या छे. तेमां

विषम (एकी) संख्यावाळो योग होय तेमां एक वधारीने तेना अर्ध करवा अने सम (बेकी) संख्यावाळो होय तेना अर्ध करी पछी चौद वधारवा. जे संख्या आवे तेटलामुं नक्षत्र एकार्गल यंत्रने माथे मूकी त्यारपछीनां नक्षत्रो अनुक्रमे मूकवां. ते यंत्र तेर लीटी आमी अने एक उभी एम चौद लीटीनुं करवुं. पछी सूर्य अने चंद्र जे नक्षत्रमां होय ते नक्षत्र उपर सूर्य अने चंद्र मूकवा. जो ते बन्ने सामसामा आवे तो ते एकार्गल वर्जवा योग्य छे. जेमके विष्कंभ योग पहेलो छे. ते विषम छे, माटे एक उमेरवाथी बे थया. तेने अर्ध करवाथी एक आव्यो, तेथी पहेलुं अश्विनी नक्षत्र माथे मूकवुं ए रीते गंम योग दशमो छे. ते सम छे तेने अर्ध करवाथी पांच आवे तेमा चौद उमेरवाथी ओगणीश थाय, तेथी ओगणीशमुं मूळ नक्षत्र माथे मूकवुं. शूल योग नवमो छे ते विषम छे, तेथी तेमा एक उमेरवाथी दश थाय, तेनुं अर्ध पाच थाय, तेथी पांचमुं नक्षत्र मृगशिर माथे मूकवु. १३४.

	मृगशिर	
रोहिणी		आर्द्रा
कृत्तिका		पुनर्वसु
भरणी		पुष्य
अश्विनी		अश्लेषा
रेवती		मघा
उत्तरा		पूर्वा
पूर्वा		उत्तरा
शतभिषा		हस्त
धनिष्ठा		चित्रा
श्रवण		स्वाति
अभिजित्		विशाखा
उत्तरा		अनुराधा
पूर्वा		ज्येष्ठा
	मूळ	